

अमरकोश ।

भाष्योक्ता.

॥ श्रीः ॥

अमरकोशः ।

श्रीमदमरसिंहविरचितः ।



मुरादाबादवास्तव्यश्रीयुतगौडवंशावतंसभोला-
नाथात्मजपण्डितरामस्वरूपकृतभाषाटी-
कया शब्दानुक्रमणिकया च समेतः ।

—>॥ॐ॥<—

सोऽयं

क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) - यन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।

संवत् १९८२, शके १८४७.

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षेने
स्वाधीन रक्खा है ।

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी !७ वीं गली खम्बाटा
कैन निज "श्रीबेङ्गटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया ।

AMARKOSHA

OF

AMARSINGH

WITH AN INDEX AND A COMMENTARY

BY

Ramaswarupa Bholanath Pandit,

Printed and Published

BY

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS,

AT HIS

SHRI VENKATESHWAR STEAM PRESS

BOMBAY.

1925.

All rights are reserved.

करमोर शैव मठिका पुस्तका

गुप्तगंगा निशात

प्रवेशांक नं०

अमरकोशस्य अकारादिक्रमेण शब्दानुक्रमणिका ।

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|----------------------|-------------------|--------------|--------------|------------|--------------|------------------|--------|
| अ | २७७ | ११ | अक्षरविन्यास | १४६ | १६ | अग्रायी | १३६ | २१ |
| अंश | १८३ | ८९ | अक्षवती | १९५ | ४४ | अग्नि | १४ | ५७ |
| अंशु | २३ | ३३ | अक्षायकीलक | १५३ | ५६ | अग्निकण | १४ | ५३ |
| अशुभ | १२७ | ११५ | अक्षान्ति | ४३ | २४ | अग्निचित् | १३४ | १२ |
| अशुमती | ८७ | ११५ | अक्षि | { १२३ २९० | ९३ २२ | अग्निज्वाला | ८८ | १२४ |
| अशुमत्कला | ७६ | ११३ | अक्षिकूटक | १५० | ३८ | अग्नित्रय | १३५ | २० |
| अंस | १२० | ७८ | अक्षिगत | २०५ | ४५ | अग्निभू | १२ | ३९ |
| अंसल | ११३ | ४४ | अक्षिव | { ७३ १७५ | ३१ ४१ | अग्निमन्थ | ७९ | ६६ |
| अंहति | १३७ | ३० | अक्षोट | ७२ | २९ | अग्निमुखी | ७५ | ४२ |
| अंहस् | ३८ | २३ | अक्षौहिणी | १५८ | ८१ | अग्निशिव | १२९ | १२४ |
| अकरणि | २२७ | ३९ | अखंड | २०९ | ६५ | अग्निशिखा | { ८१ ११८ ९० १३६ | |
| अकूपार | ४९ | १ | अखात | ५४ | २७ | अग्न्युत्पात | { २५ १० २३७ ५८ | |
| अकृष्णकर्मन् | २०५ | ४६ | अखिल | २०९ | ६५ | अग्र | { २०७ ५८ २६३ १८३ | |
| अक्ष | { ७७ १७३ १८२ १९५ २६८ | { ५८ ४३ ८६ ४६ २२१ | अग | २३१ | १९ | अग्रज | ११३ | ४३ |
| अक्षत | १७४ | ४७ | अगद | ११५ | ५० | अग्रजन्मन् | १३२ | ४ |
| अक्षदर्शक | १४४ | ५ | अगदंकार | ११६ | ५७ | अग्रतःसर | १५६ | ७२ |
| अक्षदेविन् | १९५ | ४३ | अगम | ६८ | ५ | अग्रतस् | { २७३ २४६ ७ | |
| अक्षधूर्त | १९५ | ४३ | अगस्त्य | २१ | २० | अग्रमांस | ११७ | ६४ |
| अक्षर | २६० | १८२ | अगाध | ५२ | १५ | अग्रीय | ११३ | ४३ |
| अक्षरचंचु | १४५ | १५ | अगार | ६२ | ५ | अग्रीय | २०७ | ५८ |
| अक्षरचण | १४५ | १५ | अगुरु | { ७८ १२९ १२२ | ६२ १२६ १२७ | अग्रेदिधिषु | १०९ | २३ |
| | | | अगुरुशिशपा | ७८ | ६२ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|--------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| अग्रेसर | १५६ | ७२ | अंगारवल्ली | ८३ | ९० | अजमोदा | ९२ | १४५ |
| अग्र्य | २०७ | ५८ | अंगारशकटो | १७१ | २९ | अजशृंगी | ८८ | ११९ |
| अघ | { २८ | २३ | अंगीकार | ३० | ५ | अजस्र | १६ | ६६ |
| | { २३२ | २७ | अंगीकृत | २१७ | १०८ | अजहा | ८२ | ८६ |
| अघमर्षण | १४१ | ४७ | अंगुलिमान | १८२ | ८५ | अजा | १८० | ७६ |
| अक्या | १७८ | ६७ | अंगुलिमुद्रा | १२६ | १०८ | अजाजी | १७२ | ३६ |
| अंक | { २० | १७ | अंगुली | १२१ | ८२ | अजाजीव | १८९ | ११ |
| | { २३८ | ४ | अंगुलीयक | १२६ | १०७ | अजित | २३८ | ६२ |
| अंकुर | ६८ | ४ | अंगुष्ठ | १२१ | ८२ | अजिन | १४० | ४६ |
| अंकुश | १५१ | ४१ | अघ्नि | ११९ | ७१ | अजिनपत्रा | १०१ | २६ |
| अंकोट | ७२ | २९ | अघ्निनामक | ६९ | १२ | अजिनयोनि | ९८ | ८ |
| अंक्य | ३९ | ५ | अघ्निपणिका | ८३ | ९२ | अजिर | { ६४ | १३ |
| | { ११८ | ७० | अचंडी | १७९ | ७० | | { २६० | १८१ |
| अंग | { १७६ | ७ | अचल | ६५ | १ | अजिह्व | २१० | ७२ |
| | { २७९ | १९ | अचला | ५८ | २ | अजिह्वग | १५९ | ८६ |
| अंगद | १२६ | १०७ | अचिक्रण | २६९ | २२५ | अज्जुका | ४१ | ११ |
| अंगण | ६४ | १३ | अच्छं | ५२ | १४ | अज्झटा | ८९ | १२७ |
| अंगना | { १८ | ५ | अच्छभल | ९७ | ४ | अज्ञ | { २०३ | ३८ |
| | { १०५ | ३ | अच्युत | ८ | १९ | | { २०६ | ४८ |
| अंगविक्षेप | ४१ | १६ | अच्युताग्रज | ९ | २३ | अज्ञान | ३१ | ७ |
| अंगसंस्कार | १२८ | १२१ | अज | { १८० | ७६ | अंचित | २१५ | ९८ |
| अंगहार | ४१ | १६ | | { २३३ | ३० | अंजन | १८ | ३ |
| अंगार | १७१ | ३० | अजगंधिका | ९१ | १३९ | अंजनकेशी | ८९ | १३० |
| अंगारक | २२ | २५ | अजगर | ४७ | ५ | अंजनावती | १८ | ५ |
| अंगारधानिका | १७१ | २९ | अजगव | ११ | ३५ | अंजलि | १२१ | ८५ |
| अंगारवल्लरी | ७६ | ४८ | अजन्य | १६३ | १०९ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लो. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लो. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लो. |
|-----------|--------|-------|---------------|--------|-------|-------------|--------|-------|
| अंजसा | { २७५ | २ | अतिक्रम | { २२६ | ३३ | अतिशय | { १६ | ६६ |
| | { २७७ | १२ | | { २५४ | १५० | | { २२१ | ११ |
| अटनी | १५९ | ८४ | अतिचरा | ९२ | १४६ | अतिशस्त | १३४ | ४१ |
| अटरूष | ८६ | १०३ | अतिच्छत्र | ९६ | १६७ | अतिशोभन | २०७ | ५८ |
| अटवी | ६७ | १ | अतिच्छत्रा | ९३ | १५२ | अतिसंस्कृत | २४१ | ८० |
| अटाट्या | १३८ | ३५ | अतिजव | १५६ | ७३ | अतिसर्जन | २२५ | २८ |
| अट्ट | { ६४ | १२ | अतिथि | १३८ | ३४ | अतिसारकिन् | ११६ | ५९ |
| | { २५ | १३१ | अतिनिर्हारिन् | ३१ | १० | अतिसौरभ | ७३ | ३३ |
| अणक | २०७ | ५४ | अतिनु | ५१ | १४ | अतीक्ष्ण | २४४ | ९४ |
| अणव्य | १६६ | ७ | अतिपथिन् | ६१ | १६ | अतीत | २७८ | १७ |
| अणि | १५३ | ५६ | अतिपात | { १३९ | ३७ | अतीतनौक | ५१ | १४ |
| अणिमन् | ११ | ३६ | | { २२६ | ३३ | अतीन्द्रिय | २११ | ७९ |
| अणीयस् | २० | ३८ | अतिप्रसिद्ध | २६७ | २१८ | अतीव | २७५ | २ |
| अणु | { १६९ | २० | अतिमात्र | १६ | ६८ | अत्तिका | ४१ | १५ |
| | { २०८ | ६२ | अतिमुक्त | ८० | ७२ | अत्यन्तकोपन | २०२ | ३२ |
| अंडकोश | १२० | ७६ | अतिमुक्तक | ७२ | २६ | अत्यन्तीन | १५७ | ७६ |
| अंड | १०३ | ३७ | अतिरिक्त | २१० | ७५ | अत्यय | { १६४ | ११६ |
| अंडज | { ५२ | १७ | अतिवक्तृ | २०३ | ३५ | | { २५४ | १५० |
| | { १०२ | ३३ | अतिवाद | ३६ | १४ | अत्यर्थ | १६ | ६६ |
| | { २०६ | ५१ | अतिविषा | ८४ | ९९ | अत्यल्प | २०८ | ६२ |
| अतट | ६६ | ४ | अतिवेल | १६ | ६६ | अत्याहित | २२४ | ७७ |
| अतर्कित | ९७६ | ७ | अतिशक्तिता | १६२ | १०२ | अत्रि | २२ | २७ |
| अतलस्पर्श | ५२ | १५ | | | | अथ | २७३ | २४७ |
| अतसी | १६८ | २० | | | | अथो | २७३ | २४७ |
| अति | { २७१ | २४२ | | | | अदभ | २०८ | ६३ |
| | { ७२५ | २ | | | | | | |
| | { २७६ | ५ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|---------------------|--------|------------|--------------------|--------|-------------|---|--------|
| अदर्शन | २२३ | २२ | अधिक्षिप्त | २०५ | ४२ | अध्वग | १४६ | १७ |
| अदितिनन्दन | ७ | ८ | अधित्यका | ६७ | ७ | अध्वन् | ६१ | १६ |
| अदृशू | १७ | ६१ | अधिप | १९८ | ११ | अध्वनीन | १४६ | १७ |
| अदृष्ट | १४८ | ३० | अधिभू | १९८ | ११ | अध्वन्य | १४६ | १३ |
| अदृष्टि | ४६ | ३७ | अचल | ६५ | १ | अध्वर | १३४ | १३ |
| अद्वा | २७७ | १२ | अधिरोहिण | ६५ | १८ | अध्वर्यु | १३५ | १७ |
| अद्भुत | { ४२ १७ ४२ १९ | | अधिवासन | १३१ | १३४ | अनक्षर | ३७ | २१ |
| अद्भर | २०० | २० | अधिविन्ना | १०५ | ७ | अनंग | ९ | २५ |
| अद्य | २७९ | २० | अधिश्रयणी | १७१ | २९ | अनच्छ | ५२ | १४ |
| अद्रि | { ६५ १ २५७ ६३ | | अधिष्ठान | २४९ | १२६ | अनडुह | १७७ | ६० |
| अद्वयवादिन् | ८ | १४ | अधीन | १९९ | १६ | अनन्त | { १७ १ ४७ ४ २४२ ८१ | |
| अधम | { २५३ १४४ २०७ ५४ | | अधीर | २०१ | २६ | अनन्ता | { ४८ २ ८३ ९२ ८६ ११२ ९० १३६ ९४ १५८ | |
| अधमर्ण | १६६ | ५ | अधीश्वर | १४३ | २ | अनन्यज | ९ | २६ |
| अधर | { १२२ ९० २६२ १८९ | | अधुना | २८० | २३ | अनन्यवृत्ति | २११ | ७९ |
| अधरद्युम्न | २७९ | २१ | अधृष्ट | २०१ | २६ | अनय | २५४-१४९ | |
| अधस् | ४६ | १ | अधोऽंशुक | १२७ | ११७ | अनर्थक | ३७ | २० |
| अधामार्गव | ८२ | ८८ | अधोक्षज | ८ | २१ | अनल | १४ | ५४ |
| अधिक | १८१ | ८० | अधोभुवन | ४६ | १ | अनवधानता | ४४ | ३० |
| अधिकर्द्धि | १९८ | ११ | अधोमुख | २०२ | ३३ | अनवरत | १६ | ६६ |
| अधिकांग | १६५ | ६३ | अध्यक्ष | { १४४ ६ २६९ २२५ | | अनवस्कार | २०७ | ५६ |
| अधिकार | १४८ | ३१ | अध्यवसाय | ४४ | २९ | अनवराध्य | २०७ | ५७ |
| अधिकृत | १४४ | ६ | अध्यात्म | २५३ | १४४ | अनस | १५३ | ५५ |
| | | | अध्यापक | १३३ | ७ | | | |
| | | | अध्याहार | ३० | ३ | | | |
| | | | अध्यूढा | १०५ | ७ | | | |
| | | | अध्येषणा | १३८ | ३२ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|-------------------|--------|------------|--------------------|--------|---------------|-------------------|--------|
| अनागतार्तिवा | १०६ | २८ | अनुग्रह | २२१ | १३ | अनुष्ण | १९० | १८ |
| अनातप | २५६ | १५२ | अनुचर | २६६ | ७१ | अनुहार | २२२ | १७ |
| अनादर | ४३ | २७ | अनुज | ११६ | ४३ | अनूक | २३० | १३ |
| अनाभय | ११४ | ६० | अनुजीविन् | १४४ | ९ | अनूचान | १३३ | १० |
| अनामिका | १२१ | ८२ | अनुतर्षण | १९५ | ४३ | अनूनक | २०९ | ६५ |
| अनयासकृत् | २१४ | ९४ | अनुताप | { ४३ २५ २५४ १४८ | | अनूप | ६० | १० |
| अनारत | १६ | ६५ | अनुत्तम | २०७ | ५७ | अनूरु | २३ | ३२ |
| अनार्यतिक्त | ९२ | १४३ | अनुत्तर | २६२ | १९० | अनृजु | २०५ | ४६ |
| अनिमिष | २६७ | २१८ | अनुनय | २७९ | १८ | अनृत { | ३७ २१ १६५ २ | |
| अनिरुद्ध | ९ | २७ | अनुपद | २११ | ७८ | अनेकप | १४९ | ३४ |
| अनिल { | ७ १० १५ ६२ | | अनुपदीना | १९२ | ३० | अनेहस् | २४ | १ |
| अनिश | १६ | ६५ | अनुपमा | १८ | ४ | अनोकह | ६८ | ५ |
| अनीक { | १५७ ७८ १६२ १०४ | | अनुप्लव | १५६ | ७१ | अन्त { | १६४ १६१ २११ ८१ | |
| अनीकस्थ | १४४ | ६ | अनुबन्ध | २४४ | ९८ | अन्तःपुर | ६३ | ११ |
| अनीशिनी { | १५७ ७८ १५८ ८१ | | अनुबोध | १२८ | १२२ | अन्तक | १४ | ५९ |
| अनु | २७३ | ४८ | अनुभव | २२४ | २७ | अन्तर | २६१ | १८७ |
| अनुक | २०० | २३ | अनुभाव { | ४३ २१ २६६ २०९ | | अन्तरा | २७७ | १० |
| अनुकम्पा | ४२ | १८ | अनुमती | २५ | ८ | अंतराभवसत्त्व | २५१ १३३ | |
| अनुकर्ष | १५४ | ५७ | अनुमती | २५ | ८ | अन्तराय | २२३ | १९ |
| अनुकल्प | १३९ | ४० | अनुयोग | ३५ | १० | अन्तराल | १८ | ६ |
| अनुकामीन | १५७ | ७६ | अनुरोध | १४५ | १२ | अन्तरिक्ष | १७ | १ |
| अनुकार | २२२ | १७ | अनुलाप | ३६ | १६ | अन्तरीप | ५० | ८ |
| अनुक्रम | १३८ | ३६ | अनुलेपन | २९१ | २३ | अन्तरीय | १२७ | ११७ |
| अनुक्रोश | ४२ | १८ | अनुवर्त्तन | १४५ | १२ | अन्तरे | २७७ | १० |
| अनुग | २११ | ७८ | अनुवाक | २८८ | १७ | अन्तरेण { | २७५ ३ २७७ १० | |
| | | | अनुशय | २५४ | १४७ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|-----------|--------|---------------|-----------|--------|---------------|-----------|--------|
| अन्तर्गत | २१२ | ८६ | अत्र | { १७५ ४८ | | अपत्रपिष्णु | २०१ | २८ |
| अन्तर्धा | १९ | १२ | | { २१८ १११ | | अपथ | ६१ | १७ |
| अन्ताघ | १९ | १२ | अन्य | २१२ | ८२ | अपथिन् | ६१ | १७ |
| अन्तर्द्वार | ६४ | १४ | अन्यतर | २१२ | ८२ | अपदान्तर | २०९ | ८ |
| अन्तर्मनस् | १९७ | ८ | अन्यतरेद्युस् | २७९ | २१ | अपदिश | १८ | ५ |
| अन्तर्वत्नी | १०९ | २२ | अन्येद्युम् | २७९ | २१ | अपदेश | { ४५ ३३ | |
| अन्तर्वाणि | १९७ | ६ | अन्वक | २११ | ७८ | | { १६७ २१६ | |
| अन्तर्वेशिक | १४४ | ८ | अन्वक्ष | २११ | ७८ | अपध्वस्त | २०४ | ३९ |
| अन्तावसायिन् | १८८ | १० | अन्वय | १३२ | १ | अपभ्रंश | ३३ | २ |
| अन्तिक | २०९ | ६७ | अन्ववाय | १३२ | १ | अपयान | १६४ | ११ |
| अन्तिकतम | २०९ | ६८ | अन्वाहार्य | १३७ | ३१ | अपरस्पर | २१८ | १ |
| अन्तिकाश्रय | २२३ | १९ | अन्विष्ट | २१७ | १०५ | | | |
| अन्तिका | १७१ | २९ | अन्वेषणा | १३७ | ३२ | अपराजिता | { ८५ १०४ | |
| | | | अन्वेषित | २१७ | १०५ | | { ९३ १४९ | |
| अन्तेवासिन् | { १३४ ११ | | अप् (आप्) | ४९ | ३ | अपराद्धपृष्ठक | १५६ | ६८ |
| | { १२० २० | | अपकारगी | ३६ | १४ | अपराध | १४८ | २६ |
| अन्त्य | २११ | ८१ | अपक्रम | १६४ | १११ | अपराह | २४ | ३ |
| अत्र | ११८ | ६६ | अपघन | ११८ | ७० | अपरेद्युस् | २७९ | २० |
| अन्दुक | १५१ | ४१ | अपचय | २२२ | १६ | अपर्णा | ११ | ३७ |
| अन्ध | { ११७ ६१ | | अपचायित | २१६ | १०१ | अपलाप | ३६ | १७ |
| | { २४५ १०० | | अपचित | २१६ | १०१ | अपवर्ग | ३१ | ७ |
| अन्धकरिपु | १० | ३४ | अपचित्ति | { १३८ ३४ | | अपवर्जन | १३७ | ३० |
| अन्धकार | ४६ | ३ | | { २३९ ६७ | | अपवाद | { ३६ १३ | |
| अन्धतमस् | ४६ | ३ | अपटु | ११६ | ५८ | | { २४३ ८९ | |
| अन्धस् | १७९ | ४८ | अपत्य | ११० | २८ | अपवारण | { १९ १२ | |
| अन्धु | ५४ | २६ | अपत्रपा | ४३ | २३ | | { २४९ १२५ | |
| | | | | | | अपशब्द | ३३ | २ |

| शब्द. | पृष्ठ. श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. श्लोक. |
|------------|---------------|------------|---------------|--------------|---------------|
| अपण्टु | २१२ ८४ | अप्रहत | ५९ ५ | अभिग्रहण | २२२ १६ |
| अपसद | १९० १६ | अप्राश्य | २०८ ६० | अभिधातिन् | १४५ ११ |
| अपसर्प | १९० १३ | अप्सरस् { | ७ ११ | अभिचर | १५६ ७१ |
| अपसव्य | २१२ ८४ | १३ ५२ | | अभिचार | २२३ १९ |
| अपस्कर | १८३ ५५ | अफल | ६८ ७ | अभिजन { | १३२ १ |
| अपस्नात | १९९ १९ | अवद्ध | ३७ २० | २४६ १०८ | |
| अपहार | २२२ १६ | अवद्धमुख | २०३ ३६ | अभिजात | २४२ ८३ |
| अपांपति | ४२ २ | अबला | १०४ २ | अभिज्ञ | १९६ ४ |
| अपाङ्ग { | १२३ ९४ | अबाध | २१२ ८३ | अभितस { | २०९ ६७ |
| २३१ २१ | | अब्ज { | १९ १४ | २७४ २५६ | |
| अपान { | १५ ६३ | २३३ ३२ | | अभिधान | ३५ ८ |
| ११९ ७३ | | अब्जयोनि | ८ १७ | अभिध्या | ४३ २४ |
| अपामार्ग | ८२ ८८ | अब्द { | २७ २० | अभिनय | ४२ १६ |
| अपावृत | १९९ १५ | २४३ ८८ | | अभिनव | २११ ७७ |
| अपासन | १६४ ११३ | २५३ १४६ | | अभिनवोद्भिद | ६८ ४ |
| अपि | २७३ २४९ | अब्धि { | ४९ १ | अभिनिर्मुक्त | १४२ ५५ |
| अपिधान | १९ १३ | २४५ १०१ | | अभिनिर्माण | १६१ ९५ |
| अपिनद्ध | १५६ ५५ | अब्धिकफ | १८५ १०५ | अभिनति { | १४७ २४ |
| अपूप | १७४ ४८ | अब्रह्मण्य | ४१ १४ | २४१ ८१ | |
| अपोगड | ११३ ४६ | अभय | ९५ १६४ | अभिपन्न | २५० १२८ |
| अप्पति | १५ ६१ | अभया | ७७ ६९ | अभिप्राय | २२३ २० |
| अप्पित्त | १४ ५६ | अभाषण | १३८ ३६ | अभिभूत | २०४ ४० |
| अप्रकाण्ड | ६८ ९ | अभिक | २०० २४ | अभिभर | २६६ २१४ |
| अप्रगुण | २१० ७२ | अभिक्रम | १६१ ९६ | अभिमान { | ४३ २२ |
| अप्रत्यक्ष | २११ ७९ | अभिरुया | २५५ १५६ | २४७ ११० | |
| अप्रधान | २०८ ६० | अभिग्रह | २२१ १ | अभियोग | २२१ १३ |

| शब्द. | पृष्ठ. श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. श्लोक. |
|-------------|---------------------|---------------|---------------|-------------|----------------|
| अभिरूप | २५१ १३१ | अभीषंग | २१९ ६ | अभ्यूष | १७४ ४७ |
| अभिलाव | २२४ २४ | अभीषु | २६७ २१९ | अभ्र | { १७ १ १८ ६ |
| अभिलाष | ४४ २८ | अभीष्ट | २०७ ५३ | अभ्रक | १८४ १०७ |
| अभिलाषुक | २०० २२ | अभ्यग्र | २०९ ६७ | अभ्रपुष्प | ७२ ३० |
| अभिवादक | २०१ २८ | अभ्यन्तर | १८ ६ | अभ्रमातंग | १३ ४६ |
| अभिवादन | १३९ ४१ | अभ्यमित | ११६ ५८ | अभ्रमु | १८ ४ |
| अभिव्याप्ति | २१९ ६ | अभ्यमित्रीण | १५७ ७५ | अभ्रमुवल्लभ | १३ ४६ |
| अभिशस्त | २०४ ४३ | अभ्यमित्रीय | १५७ ७६ | अभ्रिय | १८ ८ |
| अभिशस्ति | १३८ ३२ | अभ्यमित्र्य | १६७ ७५ | अभि | ५१ १३ |
| अभिशाप | ३५ ११ | अभ्यर्ण | २०९ ६७ | अभ्रेष | १४७ २४ |
| अभिषङ्ग | २३१ २४ | अभ्यार्हित | २४२ ८३ | अमत्र | १७२ ३३ |
| अभिषव | { १९४ ४२ १४१ ४२ | अभ्यवक्त्र्पण | २२२ १७ | अमर | ७ ७ |
| अभिषेगन | १६१ १९५ | अभ्यवस्कंदन | १६३ ११० | अमरावती | १२ ४५ |
| अभिष्टुत | २१७ ११० | अभ्यवहृत् | १८ १११ | अमर्त्य | ७ ८ |
| अभिसंपात | १६२ १०५ | अभ्याख्यान | ३५ १० | अमषे | ४३ २६ |
| अभिसारिका | १६ १० | अभ्यागम | १६२ १०५ | अमर्षण | २०२ ३२ |
| अभिहार | { २२२ १७ २५८ १६८ | अभ्यागारिक | २९६ १२ | अमल | १८४ १०० |
| अभिहित | २१७ १०७ | अभ्यादान | २२४ २६ | अमला | ८९ १२७ |
| अभीक | २०० २४ | अभ्यान्त | ११६ ६८ | अमा | २७३ २५० |
| अभीक्षणम् | { २७५ १ २७७ ११ | अभ्यामर्द | १६२ १०५ | अमांस | ११३ ४४ |
| अभीप्सित | २०७ ५३ | अभ्याश | २०९ ६७ | अमात्य | १४३ ४ |
| अभीरु | ८४ १०० | अभ्यासादन | १६३ ११० | अमावस्या | २५ ८ |
| अभीरुपत्री | ८४ १०१ | अभ्युत्थान | १३८ ३४ | अमावास्या | २५ ८ |
| | | अभ्युदित | १४२ ५४ | अमित्र | १४५ ११ |
| | | अभ्युपगम | ३० ५ | अमुत्र | २७६ ८ |
| | | अभ्युपपत्ति | २२१ १३ | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|------------|--------|--------|---------------|--------|--------|
| अमृणाल | ९५ | १६४ | अम्बुवेतस् | ७३ | ३० | अरण्यानी | ६७ | १ |
| अमृत | १३ | ४८ | अम्बुसरण | ५७ | ११ | अरत्नि | १२२ | ८६ |
| | ३१ | ६ | अम्बुकृत | ३७ | २० | अरर | ६२ | १७ |
| | ४९ | ३ | अम्भस् | ४९ | ४ | अरलु | ७७ | ५७ |
| | १३७ | २८ | अम्भोरुह | ५७ | ४१ | अरविंद | ५७ | ३९ |
| | १६६ | ३ | अम्भय | ४९ | ५ | अराति | १४५ | ११ |
| अमृता | २४० | ७६ | अम्ल | ३१ | ९ | अराल | २१० | ७१ |
| | ७७ | ५८ | अम्ललोणिका | ९१ | ४० | अरि | १४५ | १० |
| | ७७ | ५९ | अम्लवेतस् | ९१ | १४१ | अरित्र | ५१ | १३ |
| | ८२ | ८२ | अम्लान | ८० | ७३ | अरिमेढ | ७६ | ५० |
| | | | अम्लिका | ७५ | ४३ | | ६३ | ८ |
| अमृतान्धसू | ७ | ८ | अय | २९ | २७ | | ७३ | ३१ |
| अमोघा | ८५ | १०६ | | २६ | १३ | अरिष्ट | ९२ | १४८ |
| अम्बर | १७ | १ | अयन | ६१ | १५ | | १७५ | ५३ |
| | २६० | १८१ | अयस् | १८४ | ९८ | | ११० | २० |
| अम्बरीष | १७१ | ३० | अयःप्रतिमा | १९३ | ३५ | | २३३ | ३६ |
| अम्बष्ठ | १८७ | २ | अयाचित | १६६ | ३ | अरिष्टदुष्टधी | २०५ | ४४ |
| अम्बष्ठा | ८० | ७१ | अयि | २७९ | १८ | | २२ | २९ |
| | ८२ | ८४ | अयोग्र | १७० | २५ | अरुण | ३२ | ३२ |
| | ९१ | १४० | अयोधन | २३४ | ३७ | | ३२ | १५ |
| अम्बा | ५१ | १४ | अर | १५ | ६४ | | २३६ | ४८ |
| अम्बिका | ११ | ३७ | अरघट्ट | २८९ | १८ | अरुणा | ८४ | ९९ |
| अम्बु | ४९ | ४ | अरणि | १३५ | १९ | अरुन्तुद | २१२ | ८३ |
| अम्बुकणा | १९ | ११ | | ६७ | १ | | ७५ | ४२ |
| अम्बुजा | ७८ | ६१ | अरण्य | २९० | २२ | अरुष्कर | २६२ | १८९ |
| अम्बुभृत् | १८ | ७ | | | | अरुस् | ११५ | ५४ |
| | | | | | | अरोक | २१६ | १०० |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | |
|-----------|--------|--------|-------------|--------|--------|-------------|-----------|--------|-----|
| अर्क { | २२ | २९ | अर्थना { | १३८ | ३२ | अर्थ | १०७ | १४ | |
| | २२४ | ४ | | २१९ | ६ | अर्थाणि | १०७ | १४ | |
| अर्कपण | ८१ | ८१ | अर्थप्रयोग | १६६ | ४ | अर्थी | १०७ | १५ | |
| अर्कवन्धु | ८ | १५ | अर्थशास्त्र | ३४ | ५ | अर्थन् | १५१ | ४४ | |
| अर्काह | ८१ | ८० | अर्थिन् { | १४४ | ९ | | २०७ | ५४ | |
| अर्गल | ६५ | १७ | | २०६ | ४९ | अर्वाक् | २७८ | १६ | |
| अर्घ | २३२ | २७ | अर्थ्य { | १८५ | १०४ | अर्शस् | ११५ | ५४ | |
| अर्थ्य | १३८ | ३३ | | २५६ | १६० | अर्शस | ११६ | ५९ | |
| अर्चा { | १३८ | ३५ | अर्दना | २१९ | ६ | अर्शोन्न | ९४ | १५७ | |
| | १९३ | ३६ | अर्दित | २१५ | ९७ | अर्शोरोगयुत | ११६ | ५९ | |
| अर्चित { | २१६ | १०१ | अर्थ | { | २० | १६ | अर्हण | १३८ | ३४ |
| | २३२ | ८५ | | { | २० | १६ | अर्हित | २१६ | १०१ |
| अर्चिस् | १४ | ५७ | अर्थचन्द्रा | ८६ | १०९ | अलक | १२३ | ९६ | |
| | २७० | २३० | अर्थनाव | ५२ | १४ | अलका | १६ | ७० | |
| अर्जक | ८१ | ८० | अर्थरात्र | २५ | ६ | अलक्त | १२९ | १२५ | |
| | ३२ | १३ | अर्थच | २९५ | ३२ | अलक्ष्मी | ४८ | २ | |
| अर्जुन { | ७५ | ४५ | अर्थहार | १२६ | १०६ | अलगर्द | ४७ | ५ | |
| | ९६ | १६७ | अर्थोरुक | १२८ | ११९ | अलंक० { | १२४ | १०० | |
| अर्जुनी | १७८ | ६७ | अर्थेइ | २८९ | १९ | | २०१ | २२ | |
| अर्णव { | ४९ | १ | | २९५ | ३३ | अलंकर्तृ | १२४ | १०० | |
| | २३७ | ५७ | अर्थक | १०३ | ३८ | अलंकर्मीण | १९९ | १८ | |
| अर्णस् | ४९ | ४ | अर्थ | २९५ | ३४ | अलंकार | ११४ | १०० | |
| अर्तन | २२५ | ३२ | अर्थ | { | १६५ | १ | अलंकृत | १२४ | १०१ |
| अर्ति | २३९ | ६८ | | { | २५३ | १४६ | अलंक्रिया | १२४ | १०१ |
| | १८३ | ९० | अर्थमन् | २२ | २८ | अलम् { | २७४ | २५२ | |
| अर्थ { | २४२ | ८६ | | | | | २७७ | ११ | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|----------|-----------|----------|-----------|---------|-------|--------|--------|
| अलर्क | { ८१ ८१ | अवगीत | २४१ ९३ | अवध्वस्त | २१४ ९४ | | | |
| | { १९१ २२ | | २४१ ७९ | अवन | २१९ ४ | | | |
| अलस | १९० १८ | अवगीर्ण | २१७ ११० | अवनत | २१० ७० | | | |
| अलात | १७१ ३० | अवग्रह | १९ ११ | अवनाट | ११३ ४५ | | | |
| अलाबू | ९४ १५६ | | १५० ३८ | अवनाय | २२४ २७ | | | |
| | | अवग्राह | १९ ११ | अवनि | ५८ ३ | | | |
| आलि | { ९९ १४ | अवचूर्णित | २१४ ९४ | अवन्तिसोम | १७३ ३९ | | | |
| | { १०२ २९ | अवज्ञा | ४३ ३२ | अवन्ध्य | ६८ ६ | | | |
| अलिक | १२३ ९२ | अवज्ञात | २१७ १०६ | अवभृथ | १३७ २७ | | | |
| अलिंजर | १७१ ३१ | अवट | ४६ २ | अवभ्रट | ११३ ४५ | | | |
| अलिन् | २०२ २९ | अवटीट | ११२ ४५ | अवम | २७ ५४ | | | |
| अलिन्द | ६४ १२ | अवटु | १२२ ८८ | अवमत | २१७ १०६ | | | |
| अलिका | २२९ १२ | अवतंस | २६९ २१७ | अवमर्द | १६२ १०९ | | | |
| अल्प | २०८ ६१ | अवतमस | ४६ ३ | अवमानना | ४३ २३ | | | |
| अल्पतनु | ११४ ४८ | अवतोका | १७८ ६९ | अवमानित | २१७ १०६ | | | |
| अल्पमारिष | ९० ११६ | अवदंश | १९४ ४० | अवयव | ११८ ७० | | | |
| अल्पसरस | ५४ २२ | अवदात | { ३२ १३ | अवर | १५० ४० | | | |
| अल्पिष्ठ | २०८ ६२ | | { २४१ ८० | अवरज | ११३ ४३ | | | |
| अल्पीयसू | २०८ ६२ | अवदान | २१९ ३ | अवरति | २२६ ३७ | | | |
| अवकर | ६९ १८ | अवदाह | ९५ १६५ | अवरवर्ण | १८७ १ | | | |
| अवकीर्णिन् | १४२ ५४ | अवदारण | १६८ १२ | अवरीण | २१४ ९४ | | | |
| अवकृष्ट | २०४ ३९ | अवदीर्ण | २११ ८९ | अवरोध | ६३ १२ | | | |
| अवकेशिन् | ६८ ७ | अवद्य | २७ ५४ | अवरोधन | ६३ ११ | | | |
| अवक्रय | १८१ ७९ | अवधारण | २६० १७८ | अवरोह | ६९ ११ | | | |
| अवगणित | २१७ १०६ | अवधि | २४५ ९९ | अवर्ण | ३६ १३ | | | |
| अवगत | २१७ १०८ | | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|------------|--------|--------|------------|--------|--------|
| अवलक्ष | ३२ | १३ | अवार | ५० | ८ | अशिखी | ११६ | ११ |
| अवलग्न | १२ | ७९ | अवासस् | २०४ | ३९ | अशुभ | २९१ | २३ |
| अवलंबित | २४६ | ८४ | अवि { | १०८ | २० | अशेष | २०९ | ६५ |
| अवलगुज | ८३ | ९५ | | २६५ | २०७ | अशोक | ७८ | ६४ |
| अववाद | १४७ | २५ | अविग्न | ७९ | ५७ | अशोकरोहिणी | ८२ | ८५ |
| अवश्यम् | २७८ | १६ | अवित | २१७ | १०६ | अश्मगर्भ | १८३ | ९२ |
| अवश्याय | १० | १८ | अविद्य | ३१ | ७ | अश्मज | १८५ | १०४ |
| अवष्टब्ध | २४६ | १०४ | अविनीत | २०० | २३ | अश्मन् | ६६ | ४ |
| अवतर | २२४ | २४ | अविरत | ६१ | ६५ | अश्मन्त | १७१ | २९ |
| अवसान | २२६ | ३८ | अविलंबित | १५ | ६५ | अश्मपुष्प | ८८ | १२२ |
| अवसित { | २१५ | ९८ | | ८१३ | ८३ | अश्मरी | ११६ | ५६ |
| | २१७ | १०८ | अविस्पष्ट | ३७ | २१ | अश्मसार | १८४ | ९८ |
| अवस्कर { | १११ | ६७ | अवीचि | ४८ | १ | अश्रान्त | १६ | ६५ |
| | १५८ | १६७ | अवीरा | १०६ | ११ | अश्रि | १६० | ९३ |
| अवस्था | २९ | २९ | अवेक्षा | २२५ | २८ | अश्रु | १२३ | ९३ |
| अवहार | ५३ | २१ | अव्यक्त | २३८ | ६२ | अश्लील | ३६ | १९ |
| अवहित्या | ४५ | ३४ | अव्यक्तराग | ३२ | १५ | अश्व | १५१ | ४३ |
| अवहेलन | ४३ | २३ | अव्यण्डा | ८२ | ८६ | अश्वकर्णक | ७५ | ४४ |
| अवाकू { | १९८ | १३ | अव्यथा { | ७७ | ५९ | अश्वस्थ | ७१ | २१ |
| | २०२ | ३३ | | ९२ | १४६ | अश्वयुक् | २१ | २१ |
| अवाकपुष्पी | ९३ | १५२ | अव्यय | २९२ | ३४ | अश्ववडव | २८८ | १६ |
| अवाग्न | २१० | ७० | अव्यवहित | २०९ | ६८ | अश्वा | १५२ | ४६ |
| अवाची | १७ | १ | अशनाया | १७६ | ५४ | अश्वाभरण | २३५ | ४४ |
| अवाच्य | ३७ | २१ | अशनायित | २०० | २० | अश्वारोह | १५४ | ६० |
| | | | अशनि | १३ | ४७ | | | |
| | | | अग्नि | २१८ | १११ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------------|--------|--------|--------------|--------|--------|--------------|--------|---------|
| अश्विन् | १३ | ५१ | असृज | ११७ | ६४ | अहम्पूर्विका | १६२ | १०० |
| अश्विनी | २१ | २१ | असौम्यस्वर | २०३ | ३७ | अहम्मति | ३१ | ७ |
| अश्विनीसुत | १३ | ५१ | अस्त | { | ६६ २ | अहर्पति | २२ | ३० |
| अश्वीय | १५२ | ४८ | | { | २१३ ८७ | अहर्मुख | २४ | २ |
| अषडक्षीण | १४७ | २२ | अस्तम् | २१८ | १७ | अहस्कर | २२ | २८ |
| अष्टापद | { | १८४ ९५ | अस्ति | २१९ | १८ | अहह | २७५२ | ५७ |
| | { | १९५ ४६ | अस्तु | २७८ | १३ | अह्वाय | ६५ | १ |
| अष्टीवत् | ११९ | ७२ | अस्त्र | १५८ | ८२ | अहि | { | ४७ ६ |
| असकृत् | २७५ | १ | अस्त्रिन् | १५६ | ६९ | | { | २७१ २३८ |
| असती | १०६ | १० | अस्थि | ११८ | ६८ | अहित | १४५ | ११ |
| असतीसुत | ११० | २६ | अस्थिर | २०५ | ४३ | अहितुण्डिका | ४८ | ११ |
| असन | ७५ | ४४ | अस्फुटवाच् | २०३ | ३७ | अहिभय | १४८ | ३० |
| असमीक्ष्यकारिन् | १९९ | १७ | अस्त्र | { | ११७ ६४ | अहिभुज | २३२ | ३० |
| असार | २०७ | ५६ | | { | १२३ ९३ | अहेह | ८४ | १०१ |
| असि | १६० | ८९ | | { | २५७ ६४ | अहो | २७७ | ९ |
| असिकनी | १०९ | १०८ | असप | १५ | ५९ | महोरात्र | २६ | १२ |
| असित | ३२ | १४ | असु | १२३ | ९३ | अह्वाय | २७५ | २ |
| असिधावक | १८८ | ७ | अस्त्रच्छन्द | १९९ | १६ | आ. | | |
| असिधेनुका | १६० | ९२ | अवन्न | ७ | ८ | आ (आः) | २७२ | २४० |
| असिपुत्री | १६० | ९२ | अस्वर | २०३ | ३७ | आम् | २७८ | १६ |
| असु | १६५ | ११९ | अस्वाध्याय | १४२ | ५३ | आकम्पित | २१२ | ८७ |
| असुधारण | १६५ | ११९ | अहंयु | २०६ | ५० | आकर | ६६ | ७ |
| असुर | ७ | १२ | अहंकार | ४३ | २२ | आकर्ष | २६८ | २२१ |
| असूक्ष्ण | ४३ | २३ | अहंकारवान् | २०६ | ५० | आकल्प | १२४ | ९९ |
| असूया | ४३ | २४ | अहन् | २४ | २ | आकार | { | २२२ १५ |
| असृग्धरा | ११७ | ६२ | अहमहमिका | १६२ | १०१ | | { | २५७ १६२ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|------------|--------|--------|------------|--------|--------|
| आकारगुप्ति | ४५ | ३४ | आग्नीध्र | १३५ | १७ | आडम्बर | १६३ | १०८ |
| आकारण | ३५ | ८ | आग्रहायणिक | २६ | १४ | | १५८ | १६८ |
| आकाश | १७ | २ | आग्रहायणी | २१ | २३ | आडि | १०१ | २५ |
| आकीर्ण | २१२ | ८५ | आड् | २७२ | २३९ | आढक | १८२ | ८८ |
| आकुल | २१० | ७२ | आङ्गिक | ४२ | १६ | आढकिक | १६७ | १० |
| आकृति | २५७ | १६२ | आङ्गिरस | २१ | २४ | आढकी | ९० | १३० |
| आक्रन्द | २४३ | ९० | आचमन | १३८ | ३६ | | २८३ | ७ |
| आक्रीड | ६७ | ३ | आचाम | १७५ | ४९ | आढ्य | १९८ | १० |
| आक्रोश | ३६ | १५ | आचार्य | १३३ | ७ | आणवीन | १३६ | ७ |
| आक्रोशन | २१९ | ६ | आचार्या | १०७ | १४ | आतङ्क | २२९ | १० |
| आक्षारण | ३६ | १५ | आचार्यानी | १०७ | १५ | आतंचन | २४८ | ११५ |
| आक्षारणा | ३६ | १५ | आचित | १८२ | ८७ | आततायिन् | २०५ | ४४ |
| आक्षारित | २०४ | ४३ | | १९ | १३ | आतप | २३ | ३४ |
| आक्षेप | ३६ | १३ | आच्छादन | १२७ | ११५ | | २८९ | २० |
| आखण्डल | १२ | ४४ | | २४९ | १२५ | आतपत्र | १४९ | ३२ |
| आखु | ९८ | १२ | आच्छुरितक | ४५ | ३४ | आतर | ५१ | ११ |
| आखुमुञ् | ९७ | ६ | आच्छोदन | १९१ | २३ | आतापि | १०० | २१ |
| आखेट | १९१ | २३ | आजक | १८० | ७७ | आतिथेय | १३७ | ३३ |
| आख्या | ३५ | ८ | आजानेय | १५१ | ४४ | आतिथ्य | १३८ | ३३ |
| आख्यात | २१७ | १०७ | आजि | १६२ | १०६ | आतुर | ११६ | ५८ |
| आख्यायिका | ३४ | ५ | | २३३ | ३२ | आतोद्य | ३९ | ५ |
| आगन्तु | १३८ | ३४ | आजीव | १६५ | १ | आत्तगर्व | २०४ | ४० |
| आगसू | १४८ | २६ | आजू | ४८ | ३ | आत्मगुप्ता | ८२ | ८६ |
| | २७० | २३० | आज्ञा | १४७ | २६ | आत्मघोष | १०० | २० |
| आगू | ३० | ५ | आज्य | १७५ | ५२ | आत्मज | १०१ | २७ |
| | | | आटि | १०१ | २५ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------------|-----------|--------|--------------|---------|--------|------------|----------|--------|
| आत्मन् | { २९ २९ | | आनक | { ४० ६ | | आपीड | १३१ १३६ | |
| | { २४७ १०९ | | | { २२८ ३ | | आपीन | १७९ ७३ | |
| आत्मन् | { ८ २६ | | आनकदुन्दुभि | ९ २२ | | आपूपिक | { १७१ २८ | |
| | { ९ २६ | | आनत | २१० ७० | | | { २२७ ४० | |
| आत्मम्भरि | २०० २१ | | आनद्ध | ३९ ४ | | आप्त | १४५ १३ | |
| आत्रेयी | १०८ २० | | आनन | १२२ ८९ | | आप्य | ४९ ६ | |
| आथर्वण | २२७ ४३ | | आनन्द | २८ २५ | | आप्यायन | २४८ ११५ | |
| आदर्श | १३२ १४० | | आनन्दथु | २८ २५ | | आप्रच्छन्न | २२० ७ | |
| आदि | २११ ८० | | आनन्दन | २१९ ७ | | आप्रपद | १२८ ११९ | |
| आदिकारण | २९ २८ | | आनर्त | २३८ ६४ | | आप्रपदीन | १२८ ११९ | |
| आदित्य | ७ ८ | | आनाय | ५२ १६ | | आप्लेव | १२८ १२१ | |
| दित्य | { ७ ८ | | आनाय्य | १३६ २१ | | आप्लाव | १२८ १२१ | |
| | { ७ १० | | आनाह | ११५ ५५ | | आबन्ध | १६८ १३ | |
| | { २२ २८ | | आनुपूर्वी | १३८ ३६ | | आभरण | १२४ १०१ | |
| आदिनव | २२५ २९ | | आन्ध्रसिक | १७१ २८ | | आभाषण | ३६ १५ | |
| आदृत | २४२ ८५ | | आन्वीक्षिकी | ३४ ५ | | आभास्वर | ७ १० | |
| आदेष्टृ (ष्टा) | १३३ ७ | | आपक | १५० ४७ | | आभीर | १७६ ५७ | |
| आद्य | २११ ८० | | आपगा | ५५ ३० | | आभीरपल्ली | ६५ २० | |
| आद्यमासक | १८२ ८५ | | आपण | ६२ २ | | आभीरी | १०७ १३ | |
| आद्यून | २०० २१ | | आपणिक | १८० ७८ | | आभील | ४९ ४ | |
| आद्योत | २२८ ३ | | आपत्प्राप्त | २०४ ४२ | | आभोग | १३१ १३७ | |
| आधार | { ६६ २९ | | आपद | १५८ ८२ | | आमगन्धिन | ३२ १२ | |
| आधि | { ४४ २८ | | आपन्न | २०४ २४ | | आमनस्य | ४२ ३ | |
| | { २४४ ९७ | | आपन्नसत्त्वा | १०९ २२ | | आमय | ११५ ५१ | |
| आधूत | २२१ ८७ | | आपमित्यक | १६६ ४ | | आमयाविन् | ११६ ५८ | |
| आधोरण | १५४ ५९ | | आपान | १९४ ४२ | | आमलक | ३९५ ३३ | |
| आध्यान | ४४ २९ | | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|-----------|--------|---------|-----------|--------|-----------|----------|--------|
| आमलकी | ७७ | ५७ | आयोधन | १६२ | १०३ | आर्यावर्त | ५९ | ८ |
| आमिक्षा | १३६ | २३ | आरकट | १८४ | ९७ | आर्षभ्य | १७७ | ६२ |
| आमिष | { ११७ ६२ | | आरग्वध | ७१ | २३ | आल | १८५ | १०३ |
| | { २६८ २२३ | | आरनालक | १७३ | ३९ | आलम्भ | १६४ | ११५ |
| आमिषाशिन् | १९९ | १९ | आरति | २२६ | ३७ | आलय | ६२ | ५ |
| आमुक्त | १५५ | ६५ | आरम्भ | २२४ | २६ | आलवाल | ५५ | २९ |
| आमोद | { २८ २४ | | आरव | ३८ | २३ | आलस्य | १९० | १८ |
| | { ३१ १० | | आरा | १९३ | ३४ | आलान | १५० | ४७ |
| | { २४३ ९१ | | आरात् | २७२ | २४२ | आलाप | ३६ | १५ |
| आमोदिन् | ३२ | ११ | आराधन | २४९ | १२५ | आलि | { ६० १४ | |
| आम्नाय | { ३३ ३ | | आराम | ६७ | २ | | { ६७ ४ | |
| | { २२० ७ | | आरालिक | १७९ | २८ | | { १०७ १२ | |
| आम्न | ७३ | ३३ | आराव | ३८ | २३ | आलिङ्ग्य | ३९ | ५ |
| आम्नाताक | ७२ | ६७ | आरेवत | ७१ | २४ | आलिन्द | ६४ | १२ |
| आम्नेडित | ३५ | १२ | आरोग्य | ११४ | ५० | आली | १६३ | १९८ |
| आयत | २०९ | ६९ | | { १२७ ११४ | | आलीढ | १५९ | ८९ |
| आयतन | ६२ | ७ | आरोह | { २११ २३८ | | आलु | १७१ | ३१ |
| आयति | { १४८ २९ | | आरोहण | ६५ | १८ | आलोक | २२८ | ३ |
| | { २४० ७२ | | आर्तराल | ८० | ७४ | आलोकन | २२५ | ३१ |
| आयत | १९९ | १६ | आर्तिव | १०८ | २१ | आवपन | १७२ | ३३ |
| आयाम | १२७ | १४ | आर्द्र | १०७ | १०५ | आवर्त | ५० | ६ |
| आयुध | १५८ | ८२ | आर्द्रक | १७३ | ३७ | आवलि | ६७ | ४ |
| आयुधिक | १५५ | ६७ | आर्य | { ४१ १४ | | आवसित | १७० | २३ |
| आयुधीय | १५५ | ६७ | | { १३२ ३ | | आवाप | ५५ | २९ |
| आयुष्मत् | १९७ | ६ | आर्या | ११ | ३७ | | | |
| आयुस् | १३५ | १२० | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|-----------|--------|------------|-----------|--------|------------|----------|--------|
| आवापक | १२६ | १०७ | | | | आसना | २२३ | २६ |
| आवाल | ५५ | २९ | आशुग | { १५ ६२ | | आसन्दी | २८४ | ९ |
| आविम | ७९ | ६७ | | { १५९ ८६ | | आसन्न | २०९ | ६६ |
| आविद्ध | { २१० ७१ | | आशुग्रीहि | १६८ | १५ | आवर्त | १९४ | ४१ |
| | { २१३ ८७ | | आशुशुक्षणि | १४ | ५५ | आसादित् | २१६ | १०४ |
| आविध | १२६ | ३६ | आश्वय | ४२ | १९ | आसर | { १९ ११ | |
| आविल | ५२ | १४ | आश्रम | १३२ | ४ | | { १६१ ९६ | |
| आवित | २७७ | १२ | आश्रया | { १४६ १८ | | आसुरी | १६९ | १९ |
| आवुक | ४१ | १२ | | { २२१ ११ | | आसेचनक | २०७ | ५३ |
| आवुत्त | ४१ | १२ | आश्रयाश | १४ | ५४ | आस्कन्दन | १६२ | १०४ |
| आवृत् | १३८ | ३६ | | { ३० ५ | | आस्कन्दिता | १५२ | ४८ |
| आवृत | २१४ | ९० | आश्रव | { २०० २४ | | आस्तरण | १५१ | ४२ |
| आवेगी | ९१ | १३७ | | { २०० २४ | | आस्था | २४३ | ८८ |
| आवेशन | ६३ | ७ | आश्रुत | २१७ | १०८ | आस्थान | १३४ | १५ |
| आवेशिक | १३८ | ३४ | आश्व | २५२ | ४८ | आस्थानी | १३४ | १५ |
| आशंसितृ | २०१ | २७ | आश्वत्थ | ७० | १८ | आस्पद | २४४ | ९४ |
| आशंसु | २०१ | २७ | आश्वयुज् | २७ | १७ | आस्फोट | ८१ | ८० |
| आशय | २२३ | २० | आश्विन | २७ | १७ | आस्फोटनी | १९३ | ३३ |
| आशर | १५ | ५९ | आश्विनय | १३ | ५१ | | { ७९ ७० | |
| आशा | { १७ १ | | आश्वीन | १५२ | ४७ | आस्फोट | { ८५ १०४ | |
| | { १६७ २१६ | | आषाढ | { १७ १६ | | आस्य | १२२ | ८९ |
| आशितंगवीन | १७६ | ५९ | | { १४० ४५ | | आस्या | २२३ | २४ |
| आशीविष | ४७ | ७ | आसक्त | १९७ | ९ | आस्रव | २२५ | २९ |
| आशिसू | २६९ | २२८ | | { १३१ १३८ | | | { ३७ २१ | |
| | { १५ ६५ | | आसन | { १४६ १८ | | आहत | { २१३ ८८ | |
| आशु | { १६८ १५ | | | { १५० ३९ | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|--------------|--------|--------|------------------|--------|--------|
| अहितलक्षण | १९७ | १० | इज्याशील | १३३ | ८ | इन्द्राणी | १२ | ४५ |
| आहव | १६२ | १०५ | इच्चर | १७७ | ६२ | इन्द्रायुध | १९ | १० |
| आहवनीय | १३५ | १९ | इडा | २३५ | ४२ | इन्द्रारि | ७ | १२ |
| आहार | १७७ | ५६ | इतर | १४० | ६१ | इन्द्रावरज | ८ | २० |
| आहाव | ५४ | २६ | इतरेद्युम् | २१२ | २८ | इन्द्रिय | ३१ | ८ |
| आहेय | ४८ | ९ | इति | २६२ | १९२ | इन्द्रियार्थ | ११७ | ६२ |
| आहो | २७६ | ५ | इतिहास | २७९ | २१ | इन्द्रियधन | ३१ | ८ |
| आहोपरुषिका | १६२ | १०१ | इत्तरी | २७३ | २४५ | इन्धन | ६९ | १३ |
| आह्वय | ३५ | ३७ | इदानीम् | १३४ | १२ | इभ | १४९ | ३५ |
| आह्वा | ३५ | ८ | इध्मा | ३४ | ४ | इभ्य | १९८ | १० |
| आह्वान | ३५ | ८ | इन्दीवर | १०६ | १० | इरम्मद | १९ | १० |
| इ | | | इन्दीवरी | २८० | २३ | इरा | १९४ | ३९ |
| इक्षु | ९५ | १६३ | इन्दु | ६९ | १३ | इरा | २५९ | १७६ |
| इक्षुगन्धा | ८४ | ९८ | इन्द्र | २४७ | १११ | इरुवला | २१ | २३ |
| | ८५ | १०४ | इन्द्रयव | ५६ | ३७ | इव | २७७ | ९ |
| | ८६ | १०० | इन्द्रवारुणी | ८४ | १०० | इष | २७ | १७ |
| | ९५ | १६३ | इन्द्रसुरस | १९ | १३ | इषु | १५९ | ८७ |
| इक्षुर | ८५ | १०४ | इन्द्राणिका | १२ | ४१ | इषुधि | १६० | ८८ |
| इक्ष्वाकु | ९४ | १५६ | इन्द्राणी | १७ | २ | इष्ट | १३७ | २८ |
| इंग | २१० | ७४ | इन्द्राणी | ७५ | ४५ | इष्ट | १७६ | ५७ |
| इंगित | २२२ | १५ | इन्द्राणी | ७९ | ६७ | इष्टकापथ | ९५ | १६५ |
| इंगुदी | ७५ | ४६ | इन्द्राणी | ९५ | १५६ | इष्टगन्ध | ३२ | ११ |
| इच्छा | ४४ | २७ | इन्द्राणी | ७९ | ६८ | इष्टार्थोद्युक्त | १९७ | ९ |
| इच्छावती | १०६ | ९ | इन्द्राणी | ७९ | ६८ | इष्टि | २३४ | ३९ |
| | | | इन्द्राणी | ११ | ३६ | इष्टवास | १५९ | ८३ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|-------------|--------|--------|----------|--------|--------|
| ई | | | ईहा | ४४ | २७ | उच्छ्रित | { २०९ | ७० |
| ईक्षण { | १२३ | ९३ | ईहामृग | १०८ | ७ | | २४ | २८५ |
| | २३५ | ३१ | उ | | | उज्जासन | १६४ | ११५ |
| ईक्षणिका | १०८ | २० | उ | २७९ | १८ | उज्ज्वल | ४२ | १७ |
| ईडित | २१७ | ११० | उक्त | २१७ | १०७ | उटज | ६२ | ६ |
| ईति | २३९ | ६८ | उक्ति | ३३ | १ | उड्ड | २१ | २१ |
| ईरण | २३७ | ५७ | उक्य | २९४ | ३० | उपड्ड | ५१ | ११ |
| ईरित | २१३ | ८७ | उक्षन् | १७७ | ५९ | उड्डीन | १०३ | ३७ |
| ईर्म | ११५ | ५४ | उखा | १७१ | ३१ | उत { | २१६ | १०१ |
| ईर्वारु | ९४ | १५५ | उख्य | १७४ | ४५ | | २७२ | २४३ |
| ईर्ण्या | ४३ | २४ | | १० | ३१ | | २७६ | ५ |
| ईलित | २१७ | १०९ | उग्र { | ४२ | २० | उताहो | २७६ | ५ |
| ईली | १६० | ९१ | | १८७ | २ | उत्क | १९७ | ८ |
| ईश { | १० | ३० | उग्रगन्धा { | ८५ | १०२ | उत्कट { | ९० | १३४ |
| | १७ | ३ | | ९२ | १४५ | | २०० | २३ |
| ईशान | १० | ३० | उच्च | २०९ | ७० | उत्कण्ठा | ४४ | २९ |
| ईशित | ११ | ३६ | उच्चटा | ९५ | १६० | उत्कर | १०४ | ४२ |
| ईशितृ | १९८ | १० | उच्चण्ड | २१२ | ८३ | उत्कर्ष | २२१ | ११ |
| ईश्वर { | १० | ३० | उच्चार | ११८ | ६७ | उत्कलिका | ४४ | २९ |
| | १९८ | १० | उच्चावच | २१२ | ८३ | उत्कार | २२६ | ३६ |
| ईश्वरा | ११ | ३६ | उच्चैःश्रवस | १२ | ४५ | उत्क्रोश | १०१ | २३ |
| ईषत | २७६ | ८ | उच्चैःधुष्ट | ३५ | १२ | उत्त | २१७ | १५० |
| ईषत्पाण्डु | ३२ | १३ | उच्चस् | २७८ | १७ | उत्तंस | २६९ | २२७ |
| ईषा | १६८ | १४ | उच्छ्रय | ६९ | १० | उत्तप्त | ११७ | ६३ |
| ईषिका { | १५० | ३८ | उच्छ्राय | ६९ | १० | उत्तम | २०७ | ५० |
| | १९३ | ३२ | | | | उत्तमर्ण | १६६ | ५ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|-------------|--------|--------|--------------|--------|--------|
| उत्तमा | १०५ | ४ | उत्साह | ४४ | २९ | उदान | १९ | ६३ |
| उत्तमांग | १२३ | ९५ | उत्साह | १४६ | १९ | उदार | १९७ | ८ |
| उत्तर | ३५ | १० | उत्साहन | २४८ | ११५ | उदासीन | १४५ | १० |
| उत्तर | २६२ | १९० | उत्साहवर्धन | ४२ | १८ | उदाहार | ३५ | ९ |
| उत्तरा | १७ | २ | उत्सुक | १९७ | ९ | उदित | २१७ | १०७ |
| उत्तरासंग | १२८ | ११७ | उत्सृष्ट | २१७ | १०७ | उदीची | १७ | २ |
| उत्तरीय | १२८ | ११८ | उत्सेध | ६९ | १० | उदीच्य | ५२ | ७ |
| उत्तरेद्युम् | २७९ | २० | उत्सेध | २४४ | ९६ | उदीच्य | ८८ | १२२ |
| उत्तान | ५२ | १६ | उदक | २८० | २३ | उदुम्बर | ७१ | २२ |
| उत्तानयज्ञ | ११२ | ४१ | उदक | ४९ | ४ | उदुम्बर | १८४ | ९७ |
| उत्थान | १४८ | ११८ | उदकथा | १०८ | २१ | उदुम्बरपर्णी | ९२ | १४४ |
| उत्थित | २४२ | ८५ | उदग्र | २०९ | ७० | उदूखल | १७० | २५ |
| उत्पत्तिवृ | २०१ | २९ | उदज | २२७ | ३९ | उदूखल | ३१५ | ९७ |
| उत्पत्ति | २९ | ३० | उदधि | ४९ | १ | उदुमनीय | १२७ | ११२ |
| उत्पत्तिष्णु | २० | १२९ | उदन्त | ३५ | ७ | उद्गाढ | १६ | ६६ |
| उत्पन्न | २४२ | ८५ | उदन्या | १७६ | ५५ | उद्गातृ | १३६ | १७ |
| उत्पला | ५६ | ३७ | उदन्वत् | ४९ | १ | उद्गार | २२६ | ३७ |
| उत्पला | ८९ | १२६ | उदपान | ५४ | २६ | उद्गीथ | २८९ | १९ |
| उत्पलशारिवा | ८६ | ११२ | उदय | ६६ | २ | उद्गूर्ण | २१३ | ८९ |
| उत्पात | १६३ | १०९ | उदर | १२० | ७७ | उद्ग्राह | २२६ | ३७ |
| उत्कुल | ६८ | ७ | उदर्क | १४८ | २९ | उद्ध | २८ | २७ |
| उत्स | ६६ | ५ | उद्वसित | ६२ | ४ | उद्धन | २२६ | ३६ |
| उत्सर्जन | १३७ | २९ | उद्विष्ट | १७५ | ५३ | उद्धाटन | १९२ | २७ |
| उत्सव | ४६ | ३८ | उदात्त | ३४ | ४ | | | |
| उत्सव | २६६ | २०९ | | | | | | |
| उत्सादन | १२८ | १२१ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------|----------|--------|------------|-----------|--------|-----------|-----------|--------|
| उद्धात | २२४ | २६ | उद्धासन | १६४ | ११५ | उपकुल्या | ८४ | ९६ |
| उद्धान | १३८ | २६ | उद्वाह | १४२ | ५६ | उपक्रम | { १३४ १३ | |
| उद्दाल | ७३ | ३४ | उद्देग | { ९६ १६९ | | उपक्रम | { २२४ १३९ | |
| उद्दित | २१४ | ९५ | | { २२१ १२ | | उपक्रम | { २५२ १३९ | |
| उद्दाव | १६४ | १११ | उन्दुरु | ९८ | १२ | उपकोश | ३६ | १३ |
| उद्धर्ष | ४६ | ३८ | उन्नत | २०९ | ७० | उपगत | २१७ | १०९ |
| उद्धव | ४६ | ३८ | उन्नतानत | २०९ | ६९ | उपगूहन | २२५ | ३० |
| उद्धात | २२४ | २६ | उन्नद्ध | २४२ | ८५ | उपग्रह | १६५ | ११९ |
| उद्धान | १७१ | २९ | उन्नय | २२१ | १२ | उपग्राह्य | १४८ | २८ |
| उद्धार | १६६ | ४ | उन्नाय | २२१ | १२ | उपग्न | २२३ | १९ |
| उद्धृत | २१३ | ९० | उन्मत्त | { ८१ ७७ | | उपचरित | २१६ | १०२ |
| उद्धव | २९ | ३० | | { ११७ ६० | | उपचाय्य | १३५ | २० |
| उद्धिज्ज | ३०६ | ५१ | उन्मथ | १६४ | ११५ | उपचित | २१३ | ८९ |
| उद्धिद् | २०६ | ५१ | उन्मदिष्णु | २०० | २३ | उपचित्रा | ८७ | ८७ |
| उद्धिद् | २०६ | १५ | उन्मनस् | १९७ | ८ | उपजाप | १४७ | २१ |
| उद्धम | २२१ | १२ | उन्माथ | { १६४ ११५ | | उपज्ञा | १३४ | १३ |
| उद्यत | २१३ | ८९ | | { १११ २६ | | उपतत्तृ | २२३ | १४ |
| उद्यम | २२१ | ११ | उन्माद | { ४४ २६ | | उपताप | ११५ | ५१ |
| उद्यान | २४८ | ११७ | | { २०० ३३ | | उपत्यका | ६७ | ७ |
| उद्योग | २९५ | ३३ | उन्मादवत् | ११७ | ६० | उपदा | १४८ | २८ |
| उद्र | ५३ | २० | उपकण्ठ | २०९ | ६७ | उपधा | १४७ | २१ |
| उद्दत्तन | १२८ | १२१ | उपकारिका | ६३ | १० | उपधान | १३१ | १३७ |
| | | | उपकार्या | ६३ | १० | उपधि | ४४ | ३० |
| उद्धान्त | { १४९ ३६ | | उपकुञ्चिका | { ८९ १२५ | | उपनाह | ४० | ७ |
| | { २१५ ९७ | | | { १७२ ३७ | | उपनिधि | १८१ | ८१ |
| | | | | | | उपनिषद् | २४३ | ९३ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|-----------|--------|--------|---------------|---------|--------|
| उपनिष्कर | ६१ | १८ | उपविषा | ८४ | ९९ | उपाध्याय | १३३ | ७ |
| उपन्यास | ३५ | ९ | उपवीत | १४१ | ४९ | उपाध्याया | १०७ | १४ |
| उपपत्ति | १११ | ३५ | उपशल्य | ६५ | २० | उपाध्यायानी | १०७ | १६ |
| उपवर्ह | १३१ | १३७ | उपज्ञाय | २२६ | ३२ | उपाध्यायी | { १०७१४ | |
| उपभृत् | १३६ | २५ | उपश्रत | २१७ | १०९ | | { १०७१५ | |
| उपभोग | २२३ | २० | उपसंख्यान | १२७ | ११७ | उपानह् | १९२ | ३० |
| उपमा { | १९३ | ३६ | उपसम्पन्न | { १३६ | २६ | उपाय(चतुष्टय) | १४६ | २० |
| | १९४ | ३७ | | { १७४ | ४५ | उपायन | १४८ | २८ |
| उपमातृ | २५९ | १७६ | उपसर | २२४ | २५ | उपालम्भ | ३६ | १४ |
| उपमान | १९३ | ३६ | उपसर्ग | १६३ | १०९ | उपावृत | १५२ | ५० |
| उपयम | १४२ | ५६ | उपसर्जन | २०८ | ६० | उपासंग | १६० | ८८ |
| उपयाम | १४२ | ५६ | उपसर्गा | १७९ | ७० | उपासन | १५९ | ८६ |
| उपरक्त { | २५ | १० | उपसूर्यक | २३ | ३२ | उपासना | १३८ | ३५ |
| | { २०५ | ४३ | उपस्कर | १७२ | ३५ | उपासित | २१६ | १०२ |
| उपरक्षण | १४९ | ३३ | उपस्थ | १२० | ७५ | उपाहिता { | २५ | १० |
| उपराग | २५ | ९ | उपस्पर्श | १३८ | ३६ | | { २१४ | ९२ |
| उपराम | १३६ | ३७ | उपहार | १४९ | २८ | उपेन्द्र | ८ | २० |
| उपरि | २६१ | १८३ | उपहर | २६१ | १८३ | उपोदिका | ९४ | १५७ |
| उपल | ६६ | ४ | उपांशु | १४७ | २३ | उपोद्धात | ३५ | ९ |
| उपलब्धार्थ | ३४ | ५ | उपाकरण | १३९ | ४० | उत्कृष्ट | १६७ | ८ |
| उपलब्धि | २९ | १ | उपाकृत | १३६ | २५ | उभयद्युस् | २७९ | २१ |
| उपलम्भ | २२४ | २७ | उपात्यय { | १३९ | ३७ | उमा { | ११ | ३६ |
| उपला | २६४ | १९९ | | { २२६ | ३३ | | १६९ | २० |
| उपवन | ६७ | २ | उपादान | २२२ | १६ | उमापति | १० | ३४ |
| उपवर्त्तन | ५९ | ८ | उपाधि { | ४४ | २८ | उम्य | १६६ | ७ |
| उपवास | १३९ | ३८ | | { १९८ | १२ | उरःसूत्रिका | १२५ | १०४ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------|--------|--------|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|
| उरग | ४७ | ८ | उल्वण | २११ | ८१ | ऊन | २५० | १२८ |
| उरच्छद | १५५ | ६४ | उल्लाघ | ११६ | ५७ | ऊम् | २७९ | १८ |
| उरण | १८० | ७६ | उलोच | १२८ | १२० | ऊररी | २७४ | २५४ |
| उरणाख्य | ९२ | १४७ | उलोल | ५० | ६ | ऊरव्य | १६५ | १ |
| उरभ्र | १८० | ७६ | उशनत् | २२ | २५ | ऊरी | २७४ | २५४ |
| उररी | २७४ | २५४ | उशीर | ९५ | १६४ | ऊरीकृत | २१७ | १०८ |
| उररीकृत | २१७ | १०८ | उषणा | ८४ | ९७ | ऊरु | ११९ | ७३ |
| उरस् | १२० | ७८ | उषर्बुध | १४ | ९४ | ऊरुज | १६५ | १ |
| उरसिल | १५७ | ७६ | उषस् | ४२ | २ | ऊरुषर्वन् | ११९ | ७२ |
| उरस्य | ११० | २८ | उषा | २७९ | १८ | ऊर्ज | २७ | १८ |
| उरस्वत् | १५७ | ७६ | उषापति | ९ | २७ | ऊर्जस्वल | १५१ | ७५ |
| उरु | २०८ | ६१ | उषित | २१५ | ९९ | ऊर्जस्विन् | १५७ | ७५ |
| उरुवृक | ७६ | ५१ | उष्ट्र | १८० | ७५ | ऊणनाभ | ९९ | १३ |
| उर्वरा | ५८ | ४ | उष्ण | २७ | १९ | ऊर्णा | १२६ | ५० |
| उर्वशी | १३ | ५२ | | १९ | १९ | ऊर्णायु | १८० | ७६ |
| उर्वी | ५८ | ३ | उष्णरश्मि | २२ | २९ | | १८६ | १०७ |
| उर्वाह | ९४ | १५९ | उष्णिका | १७५ | ५० | ऊर्ध्वक | २९ | ५ |
| उलप | ६९ | ९ | उष्णीष | २६८ | २२० | ऊर्ध्वजानु | ११४ | ४७ |
| उलक | ९९ | १५ | उष्णोपगम | २७ | १९ | ऊर्ध्वजु | ११४ | ४७ |
| | २२८ | ६ | उष्मक | २७ | १८ | ऊर्मि | ५० | ५ |
| उल्लखल | १७० | २५ | उस | २३ | ३३ | ऊर्मिका | १२६ | १०७ |
| उल्लखलक | ७३ | ३४ | उस्ना | १७८ | ६६ | ऊर्मिमत् | २१० | ७१ |
| उल्लपिन् | ५२ | १८ | | | | ऊष | ५८ | ४ |
| उल्का | २८४ | ८ | ऊ | | | ऊषण | १७२ | ३६ |
| उल्मुक | १७१ | ६० | ऊत | २१६ | १०१ | ऊषर | ५८ | ५ |
| उल्व | ११२ | ३८ | ऊधस् | १७९ | ७३ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|--------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| ऊषवत् | ५८ | ५ | ऊषुक्षिन् | १२ | ४४ | एकसर्ग | २११ | ८० |
| ऊष्मागम | २७ | १९ | ऊष्य | ९८ | १० | एकहायनी | १७८ | ६८ |
| ऊह | ३० | ३ | ऊष्यकेतु | ९ | २७ | एकाकिन् | २११ | ८२ |
| ऊ | | | | ३९ | १ | एकाग्र | २११ | ७९ |
| ऊष्य | १८३ | ९० | ऊषभ | ८७ | ११६ | एकाग्र | २६२ | १९० |
| ऊक्ष | २१ | ३१ | | १७७ | ५९ | एकाग्र्य | २११ | ८० |
| ऊक्ष | ७७ | ५७ | | २०८ | ५९ | एकान्त | १६ | ६७ |
| ऊक्ष | ९७ | ४ | ऊषि | १४० | ४३ | एकाब्दा | १७८ | ६८ |
| ऊक्षगन्धा | ९१ | १३७ | ऊष्यप्रोक्ता | ८२ | ८७ | एकायन | २११ | ७९ |
| ऊक्षगन्धिका | ८६ | ११० | | ८४ | १०१ | एकायनगत | २११ | ८० |
| ऊच् | ३४ | ३ | ए | | | एकावली | १२५ | १०६ |
| ऊजीष | १७२ | ३२ | ए | २११ | ८२ | एकाष्टील | ८१ | ८१ |
| ऊजु | २१० | ७२ | एक | २१२ | ८२ | एकाष्टीला | ८२ | ८५ |
| ऊजुरोहित | १९ | १० | | २३० | १६ | एड | ११४ | ४८ |
| ऊण | १६६ | ३ | एकक | २११ | ८२ | एडक | १८० | ७६ |
| ऊत | ३७ | ३२ | एकगुरु | १३४ | १२ | एडगज | ९२ | १४७ |
| ऊत | १६६ | ३ | एकतात्र | २११ | ७९ | एडमूक | २०३ | ३८ |
| ऊतीया | २२५ | ३२ | एकतान | ३९ | ३ | एडक | ६२ | ४ |
| ऊतु | २६ | १३ | एकदन्त | ११ | ३८ | एण | ९८ | १० |
| ऊतु | २३८ | ६१ | एकदा | २८० | २२ | एत | ३३ | १७ |
| ऊतुमती | १०८ | २१ | एकधु | १७८ | ६५ | एतर्हि | २८० | २३ |
| ऊते | २७५ | ३ | एकधुरावह | १७८ | ६५ | एध | ६९ | १३ |
| ऊत्विज् | १३५ | १७ | एकधुरीण | १७८ | ६५ | एधसू | ६९ | १३ |
| ऊद्ध | १७० | २३ | एकपदी | ६१ | १५ | एधा | २२० | १० |
| ऊद्धि | ८६ | ११२ | एकपिङ्ग | १६ | ६९ | एधित | २११ | ७६ |
| ऊभु | ७ | ८ | एकयष्टिका | १२५ | १०६ | एनस | २८ | २३ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| एरण्ड | ७६ | ५१ | ओ | | | औपयिक | १४७ | २४ |
| एला | ८८ | १२५ | ओकम् | २७० | २३३ | औपवस्तु | १३९ | ३८ |
| एलापर्णी | ९१ | १४० | ओष | ४० | ९ | औभीन | १६६ | ७ |
| एलावालुक | ८८ | १२१ | ओष | १०३ | ३९ | औरभक | १८० | ७७ |
| | २७४ | २५० | ओष | २३२ | २७ | औरस | ११० | २८ |
| एवम् | २७६ | ९ | ओंकार | ३४ | ४ | और्ध्वदेहिक | १३७ | ३० |
| | २७७ | १२ | ओजस | २७० | २३३ | और्व | १४ | ५६ |
| | २७८ | १५ | ओण्पुष्प | ८० | ७६ | औशीर | २६१ | १८६ |
| | २७८ | १६ | ओतु | ९७ | ६ | औषध | ९० | १३५ |
| एषणिका | १९३ | ३२ | ओदन | १७५ | ४८ | औषध | ११५ | ५० |
| ऐ | | | ओम् | २७७ | १२ | औष्ट्रक | १८० | ७७ |
| ऐकामारिक | १९१ | २४ | ओष | २२० | ९ | | | |
| ऐंगुद | ७० | १८ | ओषधी | ६८ | ६ | क | | |
| ऐण | ९८ | ८ | ओषधी | ९० | १३५ | क | २२८ | ५ |
| ऐणय | ९८ | ८ | ओषधीश | २० | १४ | क | २२८ | ५ |
| ऐतिह्य | १३४ | १२ | ओष्ठ | १२२ | ९० | कंस | १७२ | ३२ |
| ऐन्द्रियक | २११ | ७९ | औ | | | कंसाराति | ८ | २१ |
| ऐरावण | १३ | ४६ | औक्षक | १७७ | ३९ | ककुद | १४३ | ९२ |
| | १३ | ४६ | औचिती | २९७ | ३९ | ककुमती | ११९ | ७४ |
| ऐरावत | १८ | ३ | औचित्य | २९७ | ३९ | ककुन्दर | ११९ | ७५ |
| | ७४ | ३८ | औत्तानपादि | २१ | २० | | १७ | १ |
| ऐरावती | १९ | ९ | औत्सुक्य | २६९ | २२९ | ककुम्भ | ४० | ७ |
| ऐलविल | १६ | ६९ | औदनिक | १७१ | २८ | | ७५ | ४५ |
| ऐलेय | ८८ | १२१ | औदरिक | २०० | २१ | अक्ष | १२० | ७९ |
| ऐश्वर्य | ११ | ३६ | औपगवक | २२७ | ३९ | | २६७२१९ | |
| ऐषमस | २७९ | २० | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------|------------------------------|--------|-----------|---------------------------|--------|------------|--------------------|--------|
| कक्ष्या | { १५१ ४२ २५६ १५८ | | कटक | { ६६ ५ १२६ १०७ | | कण | { ३०८ ६२ २५३ ४६ | |
| कंक | ९९ १६ | | कटभी | ९३ १५० | | कणा | { ८४ ९६ १७२ ३६ | |
| कंकटक | १५५ ६४ | | कटभरा | { ८२ ८५ ९३ १५३ | | कणिका | ७९ ६६ | |
| कंकण | १२६ १०८ | | कटाक्ष | १२३ ९४ | | कणिश | १६९ २१ | |
| कंकतिका | १३१ १३९ | | कटाह | २९० २१ | | कंटक | २९५ ३२ | |
| कंकाल | ११८ ६९ | | कटि | ११९ ७४ | | कंटकारिका | ८३ ९३ | |
| कंकोलक | १३० १३० | | कटिप्रोथ | ११९ ७५ | | कण्टकिफल | ७८ ६१ | |
| कंगु | १६९ २० | | कटी | { १२० ७५ २९७ ३८ | | कण्ठ | १२२ ८८ | |
| कंच | १२३ ८५ | | कट्टी | { १२० ७५ २९७ ३८ | | कण्ठभूषा | १२५ १०४ | |
| कचर | २०७ ५५ | | कट्ट | { ३१ ९ ८२ ८५ २३३ ३५ | | कण्डूरा | ८२ ८६ | |
| कच्चित् | २७८ १४ | | कटु | { ३१ ९ ८२ ८५ २३३ ३५ | | कंडू | ११५ ५३ | |
| कच्छी | { ६० १० ८९ १२८ | | कटु | { ३१ ९ ८२ ८५ २३३ ३५ | | कंडूया | ११५ ५३ | |
| कच्छप | ५३ २१ | | कटु | { ३१ ९ ८२ ८५ २३३ ३५ | | कण्डोल | १७० २६ | |
| कच्छपी | २५१ १३२ | | कटुतुम्बी | ९४ १५६ | | कण्डोलवीणा | १९२ ३१ | |
| कच्छू | ११५ ५३ | | कटुरोहिणी | ८२ ८५ | | कट्टण | ९६ १६६ | |
| कच्छुर | ११६ ५८ | | कट्फल | ७४ ४० | | कथा | ३४ ६ | |
| कच्छुरा | ८३ ९२ | | कट्बंग | ७७ ५६ | | कदध्वन् | ६१ १६ | |
| कंचुक | { ४८ ९ १५५ ६३ | | कठिञ्जर | ८१ ७९ | | कदम्ब | ७५ ४२ | |
| कंचुकिन् | १४४ ८ | | कठिन | २१० ७६ | | कदम्बक | { १०३ ४० १६९ १७ | |
| | ११९ ७४ | | कठिलक | ९३ १५४ | | कदर | ७६ ५० | |
| | १५० ३७ | | कठोर | २१० ७६ | | कदर्य | २०६ ४८ | |
| कट | { १७१ २६ १५० ३७ २३३ ३४ | | कडंगर | १६९ २२ | | कदलिन् | { ८६ ११३ ९८ ९ | |
| | | | कडंब | १७२ ३५ | | | | |
| | | | कडार | ३३ १६ | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|-----------|--------|-------------|----------|--------|------------|-----------|--------|
| कदाचित् | २७५ | ४ | कपट | ४४ | ३० | कवन्ध | { ४९ ४ | |
| कदुष्ण | २३ | ३५ | कपर्द | १ | ३५ | | { १६५ ११८ | |
| कद्रु | ३३ | | कपर्दिन् | १० | ३२ | | { ९१ १३९ | |
| कद्रुद | २०३ | ३७ | कपाट | ६५ | १७ | कबरी | { १२४ ९७ | |
| कनक | १८३ | ९४ | कपाल | ११८ | ६८ | | { १७३ ४० | |
| कनकाध्यक्ष | १४४ | ७ | कपालभृत | १० | ३२ | कम् | २७४ | २५० |
| कनकालुका | १४९ | ३२ | कपि | ९७ | ३ | कमठ | ५३ | २१ |
| कनकाह्वय | ८१ | ७७ | कपिकच्छु | ८२ | ८७ | कमठी | ५४ | २४ |
| कनिष्ठ | { ११३ ४३ | | कपिस्थ | ७१ | २१ | कमंडलु | १४० | ४६ |
| | { २३४ ४१ | | कपिल | ३३ | १६ | कमन | २०० | २४ |
| कनिष्ठा | १२१ | ८२ | | १८ | ४ | | { ४९ ३ | |
| कनीनिका | १२३ | ९२ | कपिला | { ७८ ६३ | | कमल | { ५७ ४० | |
| कनीयस् | { २०८ ६२ | | | { ८८ १२० | | | { २६३ १९४ | |
| | { २७१ २३५ | | कपिवल्ली | ८४ | ९७ | कमला | ९ | २७ |
| कन्था | २८४ | ९ | कपिश | ३३ | १६ | कमलासन | ८ | १७ |
| कन्द | ९४ | १६७ | | { ७२ २७ | | कमलोत्तर | १८६ | १०६ |
| कन्दर | ६६ | ६ | कपीतन | { ७५ ४३ | | कमितृ | २०० | २३ |
| कन्दराल | { ७२ २९ | | | { ७८ ६३ | | कम्प | ४६ | ३८ |
| | { ७५ ४३ | | कपोत | ९९ | १४ | कम्पन | २१० | ७४ |
| कन्दर्प | ९ | २५ | कपोतपालिका | ६४ | १५ | कम्प्र | २१० | ७४ |
| कन्दलिन् | ९८ | ९ | कपोताङ्घ्रि | ८९ | १२९ | कम्बल | { १२७ ११६ | |
| कन्दु | १७१ | ३० | कपोल | १२२ | ९० | | { २६३ १९४ | |
| कन्दुक | १३१ | १३८ | कफ | ११७ | ६२ | कम्बलिवाहक | १५३ | ५२ |
| कन्धरा | १२२ | ८८ | कफिन् | ११७ | ६० | कम्बि | १७२ | ३४ |
| कन्यकाजात | १०९ | १४ | कफोणि | १२० | २० | कम्बु | { ५३ २३ | |
| कन्या | १०६ | ८ | | | | | { २५१ २३ | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|------------|--------|--------|------------|--------|--------|
| कम्बुग्रीवा | १२२ | ८८ | करसाखा | १२१ | ८२ | ककश | ९२ | १४६ |
| कम्प | २०० | २४ | करशीकर | १५० | ३७ | { २१० | ७६ | |
| { २२ | ३३ | | करहाट | ५७ | ४३ | { २६७ | २१७ | |
| कर { १४८ | २७ | | करहाटक | ७६ | ५२ | कर्कारु | ९४ | १५५ |
| { २५७ | १६४ | | कराल | २६५ | २०५ | कर्चूर | ९३ | १५४ |
| करक { ७८ | ६४ | | करिगार्जित | १६३ | १०७ | कर्चूरक | ९० | १३५ |
| { २२८ | ६ | | करिणी | १४९ | ३६ | कर्ण | १२३ | ९४ |
| करका | १९ | १२ | करिन् | १४९ | ३४ | कर्णजलौकस् | ९९ | १३ |
| करज { ७२ | ४७ | | करिपिप्पली | ८४ | ९७ | कर्णवार | ५१ | १२ |
| { ८९ | १२९ | | करिशावक | १४९ | ३५ | कर्णधूर | २६९ | २१७ |
| करंजक | ७६ | ४७ | करी | ८१ | ७७ | कर्णवेष्टन | १२५ | १०३ |
| करट { १०० | २० | | { २५९ | १७३ | | कर्णिका | { १२५ | १०३ |
| { २३३ | ३४ | | करीष | १७५ | ५१ | { २३० | १५ | |
| करण { १८७ | २ | | करुण | ४२ | १७ | कर्णिकार | ७८ | ६० |
| { २३७ | ५४ | | करुणा | ४२ | १८ | कर्णरिथ | १५३ | ५२ |
| करण्ड | २०८ | १८ | करटु | १०० | १९ | कर्णेजप | २०५ | ४७ |
| करतोया | ५५ | ३३ | करेणु | २ | ६ | कर्त्तरी | १९३ | ३३ |
| करपत्र | १९३ | ३४ | करोटि | ११८ | ६९ | कर्दम | ५० | ९ |
| करभ { १२१ | ८१ | | कक | १५२ | ४६ | कर्पट | १२७ | ११५ |
| { १८० | ७५ | | कर्कटक | ५३ | २१ | कर्पर | ११७ | ६८ |
| करभूषण | १२६ | १०८ | कर्कटी | १९४ | ५५ | कर्परांश | २५९ | १७५ |
| करमर्दक | ७९ | ६७ | कर्कन्धू | ७४ | ३६ | कर्परी | १८५ | १०१ |
| करम्भ | १७५ | ७८ | कर्करी | १७१ | ३१ | कर्पूर | १३० | १३० |
| कररुह | १२१ | ८३ | कर्करेडु | १०० | १९ | { १५ | ६० | |
| करवाल | १६० | ८९ | | | | { ३३ | १७ | |
| करवालिका | १६० | ९१ | | | | { १८३ | ९४ | |
| करवीर | ८१ | ७७ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|----------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| कर्मन् | २१८ | १ | कलम | १४९ | ३५ | कलुष | { २८ | २३ |
| कर्मकर | { १८९ | १५ | कलम | १७० | २४ | { ५२ | १४ | |
| { १९९ | १९ | | कलम्बी | ९४ | १५७ | कलेवर | ११९ | ७० |
| कर्मकार | १९९ | १९ | कलरव | ९९ | १४ | कलक | २३० | १४ |
| कर्मक्षम | १९९ | १८ | कलल | ११२ | ३८ | | २८ | २१ |
| कर्मठ | १९९ | १८ | कलविक | १०० | १८ | कलप | { २८ | २२ |
| कर्मण्या | १९४ | ३८ | कलश | १७१ | ३१ | { १३९ | ३९ | |
| कर्मदिन् | १३९ | ४१ | कलशी | ८३ | ९३ | { १४७ | २४ | |
| कर्मवृत्त | २१९ | ३ | कलहंस | १०१ | २३ | कल्पना | १५१ | ४२ |
| कर्मशील | १९९ | १८ | कलह | १६२ | १०४ | कल्पवृक्ष | १३ | ५० |
| कर्मशूर | १९९ | १८ | | २० | १५ | कल्पान्त | २८ | २० |
| कर्मसचिव | १४३ | ४ | कला | { २५ | ११ | कलमष | २८ | ३३ |
| कर्मार | ९५ | १६० | { २६३ | १९८ | | कलमाष | ३३ | १७ |
| कर्मेन्द्रिय | ३१ | ८ | कलाद | १८८ | ८ | { २४ | २ | |
| कर्ष | १८२ | ८६ | कलानिधि | १९ | १४ | { ११६ | ५७ | |
| कर्षक | १६६ | ६ | कलाप | २५० | १२९ | { २५६ | १५९ | |
| कर्षफल | ७७ | ५८ | कलाय | १६८ | १६ | कल्या | ३७ | १८ |
| कर्षू | २६८ | २२२ | कलि | { १६२ | १०५ | कल्याण | २८ | २५ |
| कल | ३९ | २ | { २६३ | १९४ | | कलोल | ५० | ६ |
| कलकल | ३८ | २५ | कलिका | ७० | १६ | कवच | १५२ | ६४ |
| कलंक | { २० | १७ | कलिङ्ग | { ७९ | ६७ | कवल | १५५ | ५४ |
| { २२८ | ४ | | { ९९ | १६ | | { २२ | २९ | |
| कलत्र | २६० | १७८ | कलिद्रुम | ७७ | ५८ | { १३३ | ५ | |
| कलघौत | २४१ | ७६ | कलिमारक | ७६ | ४८ | कविका | १५२ | ४९ |
| कलम्ब | { १५९ | ८७ | कलिल | २१२ | ८५ | कविय | २९६ | ३५ |
| { १७२ | ३५ | | | | | कवोष्ण | २३ | ३५ |
| | | | | | | कव्य | १३६ | २४ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृ. | श्लोक. |
|------------|------------------|--------|---------------|------------------------------|--------|--------------|---------------------|--------|
| कशा | १९२ | ३१ | काकली | ३९ | २ | काण्डेशु | ८५ | १०४ |
| कशार्ह | २०५ | ४४ | काकांगी | ८७ | ११८ | कातर | २०१ | २६ |
| कशिपु | २५० | १३० | काकिणी | २८४ | ९ | कात्यायनी | { ११ ३६ १०८ १७ | |
| कशेरु | २८६ | १३ | काकु | ३६ | १२ | कादम्ब | १०१ | २३ |
| कशेरुका | ११८ | ६९ | काकुद | १२२ | ९१ | कादम्बरी | १९४ | ३९ |
| कश्मल | १६१ | १०९ | काकेन्दु | ७४ | ३९ | छादम्विनी | १८ | ८ |
| कश्य | १५२ | ४७ | काकोदुम्बरिका | ७८ | ६१ | काद्रवेय | ४७ | ४ |
| | १९४ | ४० | काकोदर | ४७ | ७ | कानन | ६७ | १ |
| | २०५ | ४४ | काकोल | { ४८ १० १०० २१ | | कानीन | १०९ | २४ |
| कष | १९३ | ३२ | काक्षा | ४४ | २७ | कान्त | २०६ | ५२ |
| कषाय | ३१ | ९ | काक्षी | ९० | १३१ | कान्तलक | ८९ | १२८ |
| | २५५ | १५३ | काच | { १८४ ९९ १९२ ३० २३२ २८ | | कान्ता | १०५ | ३ |
| कष्ट | { ४९ ४ २३४ ३९ | | | | | कान्तार | { ६१ १७ २५९ १७२ | |
| कस्तुरी | १३० | १२९ | काचस्थाली | ७७ | ४५ | कान्तारक | ९५ | १६३ |
| कहार | ५६ | ३६ | काचित् | २१३ | ८९ | कान्तार्थिनी | १०६ | १० |
| कह | १०० | २२ | काञ्चन | १८३ | ९५ | कान्ति | { २० १७ २२० ८ | |
| कांस्यताल | ३९ | ४ | कांचनाह्वय | ७८ | ६५ | कादविक | १७१ | २८ |
| काक | १०० | २० | कांचनी | १७३ | ४१ | कादिशीक | २०४ | ४२ |
| काकचिंचा | ८४ | ९८ | कांची | १२६ | १०८ | कापथ | ६१ | १६ |
| काकतिन्दुक | ७४ | ३९ | कांजिक | १७३ | ३९ | कापोत | { १०४ ४३ १८६ १०९ | |
| काकनासिका | ८७ | ११८ | कांड | २३५ | ४३ | कापोतांजन | १८४ | १०० |
| काकपक्ष | १२३ | ९६ | काण्डपृष्ठ | २५५ | ६७ | | | |
| काकपीलुक | ७४ | ३९ | काण्डवत् | १५६ | ६९ | | | |
| काकमाची | ९३ | १५१ | काण्डीर | १५६ | ६९ | | | |
| काकमुद्रा | ८६ | ११३ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|-------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| काम | ९ | २५ | कारंडव | १०२ | ३४ | कार्प्य | ७५ | ४४ |
| | ४४ | २८ | कारम्भा | ७७ | ५६ | कार्षापण | १८२ | ८८ |
| | १७६ | ५७ | | ८६ | १११ | कार्षिक | १८२ | ८८ |
| | २५२ | १३८ | कारवी | ९३ | १५२ | | १४ | ५९ |
| कामगामिन् | १५७ | ७६ | | १७२ | ३७ | काल | २४ | १ |
| कामन् | २०० | २४ | | १७३ | ४० | | ३२ | १४ |
| कामपाल | १ | २३ | कारवेष्ट | ९३ | १५४ | | २६३ | १९४ |
| कामम् | २७७ | १३ | कारा | १६५ | ११९ | कालक | ११४ | ४९ |
| कामयितृ | २०० | २४ | कारिका | २३० | १५ | कालकटक | १०० | २१ |
| कामिनी | १०५ | ३ | कारीष | २२७ | ४३ | कालकूट | ४८ | १० |
| | २४७ | ११२ | कारु | १८७ | ५ | कालखंड | ११८ | ६६ |
| कामुक | २०० | २३ | कारुणिक | १९८ | १५ | कालधर्म | १६४ | ११६ |
| कामुका | १०६ | ९ | कारुण्य | ४२ | १८ | कालपृष्ठ | १५९ | ८३ |
| कामुकी | १०६ | ९ | कारोत्तर | १९४ | ४२ | कालमेषिका | ८३ | ९० |
| कापिल्य | ९२ | १४६ | कार्तस्वर | १८३ | ९५ | | ८६ | १०९ |
| काम्बल | १५३ | ५४ | कार्तार्तिक | १४५ | १४ | कालमेषी | ८३ | ९६ |
| काम्बविक | १८८ | ८ | कार्तिक | २७ | १७ | कालशेय | १७५ | ५३ |
| काम्बोज | १५१ | ४५ | कार्तिकिक | २७ | १८ | कालसूत्र | ४८ | २ |
| काम्बोजी | ९१ | १३८ | कार्तिकेय | १२ | ३९ | कालस्कन्ध | ७४ | ३८ |
| काम्यदान | २१९ | ३ | कास्त्र्य | २६० | १७० | | ६९ | ६८ |
| काय | ११९ | ७१ | कार्पास | १२६ | १११ | काला | ८३ | ९४ |
| | १४१ | ५० | | २९६ | ३५ | | ८६ | १०९ |
| कायस्था | ७७ | ५६ | कार्पासी | ८७ | ११६ | | १७२ | ३७ |
| कारण | २९ | २८ | कार्म | १९९ | १८ | कालागुरु | १२९ | १२७ |
| कारणा | ४९ | ३ | कार्मण | २१९ | ४ | कालानु | ८८ | १२२ |
| कारणिक | १९७ | ७ | कार्मुक | १५९ | ८३ | सार्थ | १२९ | १२६ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|--------|--------|-----------------|-----------|--------|-----------|---------|--------|
| कालाय | १६८ | १६ | काष्ठांमुवाहिनी | १११ | ११ | किन्नरेश | १६ | ६० |
| कालायस | १८४ | ९८ | काष्ठीला | ८६ | ११३ | किम् { | २७४ | ५१ |
| कालिका | २३० | १५ | कास | ११५ | ५२ | किम् { | २७६ | ५ |
| कालिन्दी | ५५ | ३२ | कासमर्द | २८९ | १९ | किम् | २७६ | ५ |
| कालिन्दीभेदन | ९ | २४ | कासर | ९७ | ४ | किमुत { | २७५ | २ |
| काली | ११ | ३६ | कासार | ५४ | २८ | किमुत { | २७६ | ५ |
| कालीयक | १२९ | १२६ | कासू | २३९ | ६७ | किम्पचान | २०६ | ४८ |
| कालेयक | ८४ | १०१ | किंवन्ती | ३४ | ७ | किम्पुरुष | १७ | ७१ |
| काल्पक | ९० | १३५ | किंशार | { १६९ २१ | १६३ | किरण | २३ | ३३ |
| काल्या | १७९ | ७० | किंशार | { २५७ १६३ | १६३ | किरात | १९० | २० |
| कावचिक | १५५ | ६६ | किंशुक | ७२ | २९ | किराततिल | ९२ | १४३ |
| कावेरी | ५६ | ३५ | किंकीदिवि | ९९ | १६ | किरि | ९७ | २ |
| काव्य | २२ | २५ | किंकर | १९० | १७ | किरीट | १२५ | १०२ |
| काश | ९५ | १६२ | किंकिणी | १२६ | ११० | किर्मीर | ३३ | १७ |
| काश्मरी | ७४ | ३५ | किंचित् | २७६ | ८ | किल | २७४ | २५४ |
| काश्मर्य | ७४ | ३६ | किंचुलक | ५३ | २२ | किलास | १५५ | ५३ |
| काश्मीर | ९२ | १४५ | किंजल्क | ५७ | ४३ | किलासिन् | ११७ | ६१ |
| काश्मीरजन्मन् | १२९ | १२४ | किटि | ९७ | २ | किलिञ्जक | १७१ | २६ |
| काश्यपि | २३ | ३२ | किट्ट | ११८ | ६५ | किलिष | { २८ २३ | २३ |
| काश्यपी | ५८ | २ | किण | २८९ | १८ | किलिष { | २६८ | २२३ |
| काष्ठ | ६३ | १३ | किणिही | ८२ | ८९ | किशोर | १५२ | ४६ |
| काष्ठकुदाल | ५१ | १३ | किण्व | १९४ | ४२ | किष्कु | २२९ | ७ |
| काष्ठतक्ष | १८८ | ९ | कितव { | ८१ १९५ | ७७ ४३ | किसलय | ७० | १४ |
| { १७ १ | ११ | ४१ | किन्नर { | ७ १७ | ११ ७१ | कीकस | ११८ | ६८ |
| काष्ठा { | २५ २३४ | ११ ४१ | | | | कीचक | ९५ | १६१ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|----------------|----------|--------|-----------|-----------|--------|
| कीनाश | १६७ | २१५ | कुज | २२ | २६ | कुड्य | ६२ | ४ |
| कीर | १०० | २१ | कुञ्चित | २१० | ७१ | कुणप | { १६५ ११८ | |
| कीर्ति | ३५ | २१ | कुञ्ज | { ६७ ८ | | { २८९ २० | | |
| कील { | १४ ५७ | | | { २३३ ३१ | | कुणि { | ८९ १२८ | |
| { २६३ १९७ | | | कुञ्जर | { १४९ ३४ | | { ११४ ४८ | | |
| कीलक | १९७ | ७३ | | { २०८ ५९ | | कुंठ | १९९ | १७ |
| कीलाल { | ४९ ३ | | कुञ्जराशन | ७१ | २० | कुण्ड | { १११ ३६ | |
| { २६४ २०० | | | कुञ्जल | १७३ | ३९ | { १७१ ३१ | | |
| कीलित | २०४ | ४२ | कुट | { ६८ ५ | | कुण्डल | २१५ | १०३ |
| कीश | ९७ | ३ | | { १७२ ३२ | | कुण्डलिन् | ४७ | ७ |
| कु { | ५८ ३ | | कुटक | १६८ | १३ | कुण्डी | १४० | ४६ |
| { २७२ २४० | | | कुटज | ७९ | ६६ | कुतप | १३७ | ३१ |
| कुकर | ११४ | ४८ | कुटन्नट | { ७७ ५७ | | कुतुक | ४४ | ३१ |
| कुकुन्द | ११९ | ७५ | | { ९० १३१ | | कुतुप | १७२ | ३३ |
| कुकूल | २६४ | २०३ | कुटिल | २१० | ७१ | कुतू | १७२ | ३३ |
| कुक्कुट | ९९ | १७ | कुटी | { ६२ ६ | | कुतूहल | ४४ | ३१ |
| कुक्कुभ | १०३ | ३५ | | { २७७ ३८ | | कुत्सा | ३६ | १३ |
| कुक्कुर { | ९० १३२ | | कुटुम्बव्यापृत | १९८ | ११ | कुत्सित | २०७ | ५४ |
| { १९१ ७७ | | | कुटुम्बिनी | १०५ | ६ | कुय { | ९६ १६६ | |
| कुक्षि | १२० | ७७ | कुट्टनी | १०८ | १९ | { १५१ ४२ | | |
| कुक्षिम्भरि | २०० | २१ | कुट्टिम | २९५ | ३४ | कुदाल | ७१ | २२ |
| कुंकुम | १२९ | १२३ | कुठर | १८० | ७४ | कुनटी | १८६ | १०८ |
| कुच | १२० | ७७ | कुठार | १६० | ९२ | कुनाशक | ८३ | ९१ |
| कुचन्दन | १३० | १३२ | कुठेरक | ८१ | ७९ | कुन्त | १६० | ९३ |
| कुचर | २०३ | ३७ | कुडंगक | २८८ | १७ | कुन्तल | १२३ | ९५ |
| कुचाग्र | १२० | ७७ | कुडव | १८२ | ८९ | | | |
| | | | कुड्मल | ७० | १६ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|---------------|--------|--------|----------------|--------|--------|
| कुन्द { | ८० | ७३ | कुम्भ { | ७३ | ३४ | कुलस्त्री | १०६ | ७ |
| | ८८ | १२१ | | १५० | ३७ | कुलाय | १०३ | ३७ |
| २८९ | १९ | | २५१ | १३४ | | कुलाल | १८८ | ६ |
| कुन्दुरु | ८८ | १२१ | कुम्भकार | १८८ | ६ | कुलाली | १८५ | १०३ |
| कुन्दुरुकी | ८८ | १२४ | कुम्भसम्भव | २१ | २० | कुलिश | १३ | ४७ |
| कुपूय | २०७ | ५४ | कुम्भिका | ५६ | ३८ | कुली | ८३ | ९४ |
| कुप्य | १८३ | ९१ | कुम्भी | ७४ | ४० | कुलीन | १३२ | ३ |
| कुवेर { | १६ | ६८ | कुम्भीर | ५३ | २१ | कुलीर | ५३ | २१ |
| | १७ | ३ | कुरंग | ९८ | ८ | कुल्माष { | १६९ | १८ |
| कुवेरक | ८९ | १२७ | कुरंगक | १९१ | २४ | | १२९० | २१ |
| कुवेराक्षी | ७७ | ५५ | कुरण्टक { | ८० | ७४ | कुल्माषाभिषुक् | १७३ | ३९ |
| कुब्ज | ११४ | ४८ | | ८० | ७५ | कुल्य | ११८ | ६८ |
| कुमार { | १२ | ४० | कुरवक | ८० | ७४ | कुल्या | ५५ | ३४ |
| | ४१ | १२ | कुरर | १०१ | २३ | कुवळ | ७४ | ३६ |
| कुमारक | ७२ | २५ | कुरवक | ८० | ७५ | | १९८ | ४२ |
| कुमारी { | ८० | ७३ | कुरुविन्द | ९५ | १५९ | कुवलय | ५६ | ३७ |
| | १०६ | ८ | कुरुविस्त | १८२ | ८६ | कुवाद | २०३ | ३७ |
| कुमुद { | १८ | ३ | कुल { | १०४ | ४१ | कुविन्द | १८८ | ६ |
| | ५६ | ३७ | | १३२ | १ | कुवेणी | ५२ | १६ |
| कुमुदप्राय | ५९ | ९ | कुलक { | ७४ | ३९ | कुश { | ९६ | १६६ |
| कुमुदवान्धव | १९ | १३ | | ९४ | १५५ | | १२६७ | २१६ |
| कुमुदिका | ७४ | ४० | कुलटा | १०६ | १० | कुशल { | २८ | २६ |
| कुमुदिनी | ५६ | ३९ | कुलत्थिका | १८५ | १०२ | | १९७ | ४ |
| कुमुद्वत् | ५९ | ९ | कुलपालिका | १०६ | ७ | कुशी | १८४ | ९९ |
| कुमुद्वती | ५६ | ३८ | कुलश्रेष्ठिन् | १८८ | ५ | कुशीलव | १८९ | १२ |
| कुम्भा | १३५ | १८ | कुलसम्भव | १३२ | २ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|--------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| कशेशय | ५७ | ४० | कूवर | १५४ | ५७ | कृतिन् | { ११३ | ६ |
| | ८९ | १२६ | कूर्च | १२३ | ९२ | | { १२६ | ४ |
| कुष्ठ | { ११५ | ५४ | कूर्चशीर्ष | ९१ | १४२ | कृत्त | २१६ | १०३ |
| | २९५ | ३४ | कूर्चिका | १७४ | ४४ | कृत्ति | १४० | ४६ |
| कुसीद | १६६ | ४ | कूर्दन | ४५ | ३३ | कृत्तिवासस् | १० | ३१ |
| कुपीदिक | १६६ | ५ | कूर्पर | १२० | ८० | कृत्या | २५६ | १५८ |
| कुसुम | ७० | १७ | कूर्पासक | १२८ | ११८ | कृत्रिमधूपक | १२९ | १२८ |
| कुसुमांजन | १८५ | १०३ | कूर्म | ५३ | २१ | कृत्स्न | २०९ | ६५ |
| कुसुमेष्टु | ९ | २६ | कूल | ५० | ४ | कृपण | २०६ | ४८ |
| कुसुम्भ | { १८६ | १०६ | कूष्माण्डक | ९४ | १५५ | कृपा | ४२ | १८ |
| | { २५१ | १३६ | कृकण | १०० | १९ | कृपाण | १६० | ८९ |
| कसृति | ४४ | ३० | कृकलास | ९८ | १२ | कृपाणी | १९३ | ३३ |
| कस्तुम्बुरु | १७३ | ३८ | कृकवाकु | ९९ | १७ | कृपालु | १९८ | १५ |
| कहना | १४२ | ५३ | कृकाटिका | १२२ | ८८ | कृपीटयोनि | १४ | ५३ |
| कुहर | ४६ | १ | कृच्छ्र | { ४९ | ४ | कृमि | ९९ | १३ |
| कुह | २५ | ९ | | { १४२ | ५२ | कृमिकोशोत्थ | १२६ | १११ |
| कुकुद | १९८ | १४ | कृत | २४१ | ७७ | कृमिघ्न | ८५ | १०६ |
| | { ६४ | १७ | कृतपुंख | १५५ | ६८ | कृमिज | १२९ | १२६ |
| कृट | { २०४ | ४३ | कृतमाल | ७१ | २४ | कृश | २०८ | ६१ |
| | { २३४ | ३७ | कृतमुख | १९६ | ४ | कृशानु | १४ | ५४ |
| कृतयन्त्र | १९१ | २६ | कृतलक्षण | १९७ | १० | कृशानुरेतस् | १० | ३३ |
| कृतशाल्मलि | ७६ | ४७ | कृतसापत्निका | १०५ | ७ | कृशाश्विन् | १८९ | १२ |
| कृतस्थ | २१० | ७३ | कृतहस्त | १५५ | ६८ | कृषि | १६५ | २ |
| कूप | ९४ | २६ | कृतान्त | { १४ | ५८ | कृषिक | { १६६ | ६ |
| | { ५० | १० | | { २३८ | ६४ | | { १६८ | १३ |
| कूपक | { ५१ | १२ | कृताभिषेका | १०५ | ५ | कृषीवल | १६६ | ६ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|--------|--------|------------|--------|--------|---------------|--------|--------|
| कृष्ट | १६७ | ८ | कैयूर | १२६ | ११७ | कैलास | १६ | ७० |
| कृष्टि | १३३ | ६ | कैलि | ४५ | ३२ | कैवर्त | ५२ | १५ |
| कृष्ण | ८ | १८ | केवल | २६४ | २०३ | कैवर्तीमुस्तक | ९० | १३२ |
| | २६ | १२ | केश | १२३ | ९५ | कैश्य | ३१ | ६ |
| | ३२ | १४ | केशपर्णी | ८२ | ८९ | कैशिक | १२३ | ९६ |
| | १७२ | ३६ | केशपाशी | १२४ | ९७ | कैश्य | १२३ | ९६ |
| कृष्णपाकफल | ७९ | ६७ | केशव | ८ | १८ | कोक | ८८ | ७ |
| कृष्णफला | ८३ | ९६ | केशवेश | ११३ | ४५ | कोकनद | ५७ | ४२ |
| कृष्णमेदि | ८२ | ८६ | | १२४ | ९७ | | ५७ | ४२ |
| कृष्णला | ८४ | ९८ | केशम्बुनाम | ८८ | १२२ | कोकनदच्छवि | ३२ | १५ |
| कृष्णलोहित | ३३ | १६ | केशिक | ११३ | ४५ | कोकिल | १०० | १९ |
| कृष्णवर्त्मन् | १४ | ५४ | केशिन् | ११३ | ४५ | कोकिलाक्ष | ८५ | १०४ |
| कृष्णवृन्ता | ७७ | ५५ | केशिनी | ८९ | १२६ | कोटर | ६९ | १३ |
| कृष्णसार | ९८ | १० | केशर | ५७ | ४३ | कोटवी | १०८ | १७ |
| कृष्णा | ८४ | ९६ | | ७२ | २५ | कोटि | १५९ | ८४ |
| कृष्णिका | १६९ | १९ | | ७८ | ६४ | | १६० | ९३ |
| कंकर | ११४ | ४९ | | ७८ | ६५ | | २३४ | ३८ |
| केका | १०२ | ३१ | केसरिन् | ९७ | १ | कोटिवर्षा | ९० | १३३ |
| केकिन् | १०२ | ३० | कैटभजित् | ८ | २२ | कोटिश | १६७ | १२ |
| केतकी | ९६ | १७० | कैडर्य | ७४ | ४० | कोट्टार | २८९ | १८ |
| केतन | १६२ | ९९ | कैतव | ४४ | ३० | कोठ | ११५ | ५४ |
| | १२४७ | ११४ | | १९५ | ४४ | कोण | ४० | ६ |
| केतु | २६८ | ६० | कैदारक | १६७ | ११ | | १६० | ९३ |
| केदर | २८९ | २० | कैदारिक | १६७ | ११ | कोदंड | १५९ | ९३ |
| केदर | १६७ | ११ | कैदार्य | १६७ | ११ | कोद्रव | १६८ | १६ |
| केनिपातक | ५१ | १३ | कैरव | ५६ | ३७ | कोप | ४३ | २६ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------|--------|--------|----------|--------|--------|--------------|-----------|--------|
| कोपना | १०५ | ४ | कोष्ण | २३ | ३५ | ककर | { ८१ ७७ | |
| कोपिन् | २०२ | ३२ | कौवकुटिक | २३० | १७ | | { १०० १९ | |
| कोमल | २२१ | ७८ | कौक्षेयक | १६० | ८९ | कतु | १३४ | १३ |
| कोयष्टिक | १०३ | ३५ | कौटतक्ष | १८८ | ९ | कतुध्वंसिन् | १० | ३४ |
| कोरक | ७० | ३५ | कौटिक | १८९ | १४ | कतुभुज | ७ | ९ |
| कोरंगी | ८९ | १२५ | कौणप | १५ | ५९ | कथन | १६४ | ११५ |
| कोरद्व | १६८ | १६ | कौतुक | ४४ | ३१ | कन्दन | { १६३ १०७ | |
| कोल | { ५१ | ११ | कौतूहल | ४४ | ३१ | | { २४९ १२३ | |
| | { ७४ | ३६ | कौद्रवीण | १६७ | ८ | कन्दित | ४५ | ३५ |
| | { ९७ | २ | कौन्ती | ८८ | १२० | क्रम | १३९ | ३९ |
| कोलक | { १३ | १२९ | कौन्तीक | १५६ | ७० | क्रमुक | { ७४ ४१ | |
| | { १७२ | ३६ | कौपीन | २४९ | १२२ | | { ७५ ४१ | |
| कोलदल | ८९ | १३० | कौमारी | ११ | ३५ | | { ९६ १६९ | |
| कोलम्बक | ४० | ७ | कौमुदी | २० | १६ | क्रमेलक | १८० | ७५ |
| कोलवल्ली | ८४ | ९७ | कौमोदकी | १० | २८ | क्रयविक्रयिक | १८० | ७८ |
| कोला | ८४ | ९७ | कौलटिनेय | ११० | २७ | क्रयिक | १८१ | ७९ |
| कोलाहल | ३८ | २५ | कौलटेय | { १०९ | २६ | क्रय्य | १८१ | ८१ |
| कोली | ७४ | ३६ | | { ११० | २७ | क्रय्य | ११७ | ६३ |
| कोविद | १३३ | ५ | कौलटेर | १०९ | २६ | क्रव्यात् | १५ | ५९ |
| कोविदार | ७१ | २२ | कौलीन | २४८ | ११६ | क्रव्याद | १५ | ५९ |
| कोश | { १०३ | ३७ | कौलेयक | १९१ | २१ | क्रायिक | १८१ | ७ |
| | { २६८ | २२१ | कौशिक | { ७२ | ३४ | क्रिया | { २१८ | १ |
| कोशफल | १३० | १३० | | { २२९ | १० | | { २५५ | १५७ |
| कोशातकी | २२९ | ८ | कौशेय | १२६ | १११ | क्रियावत् | १९९ | १८ |
| कोष | १८३ | ९१ | कौस्तुभ | १० | २८ | क्रीडा | { ४५ | ३२ |
| कोष्ठ | २३४ | ४० | ककच | १९३ | ३४ | | { ४५ | २३ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|-------------|--------|--------|---------------|--------|--------|
| कुञ्च | १०० | २२ | क्रीतकिका | ८३ | १४ | क्षपाकर | २० | १५ |
| कुध् | ४३ | २६ | क्रीव(ब) | { ११२ | ३९ | क्षम | २५३ | १४२ |
| कुष्ट | ४५ | ३५ | | { २६६ | २१३ | क्षमा | २५३ | १४२ |
| कूर | { २०६ | ४७ | केश | २२५ | २९ | क्षमितृ | २०२ | ३१ |
| | { २१० | ७६ | क्रीमन् | ११८ | ६५ | क्षमिन् | २०२ | ३१ |
| | { २६२ | १९१ | कण { | ३८ | २४ | क्षन्तृ | २०२ | ३१ |
| केतव्य | १८१ | ८१ | | २२० | ८ | | २८ | २२ |
| केय | १८१ | ८१ | कणन | ३८ | २४ | क्षय { | ११५ | ५१ |
| कोड | { ९७ | २ | कथित | २१४ | ९५ | | २२० | ७ |
| | { १२० | ७७ | काण | ३८ | २४ | | २५३ | १४६ |
| कोध | ४३ | २६ | क्षण { | २६ | ११ | क्षव { | ११५ | ५२ |
| कोधन | २०२ | ३२ | | ४६ | ३८ | | १६९ | १९ |
| कोशयुग | ६१ | १८ | | २३५ | ४७ | क्षवथु | ११५ | ५२ |
| कोष्ट | ९७ | ५ | क्षणदा | २४ | ४ | क्षान्त | २१५ | ९७ |
| कोष्टविन्ना | ८३ | ९३ | क्षणन | १६४ | ११४ | क्षान्ति | ४३ | २४ |
| कोष्ठी | ८६ | ११० | क्षणप्रभा | १९ | ९ | क्षार | १८४ | ९९ |
| कौंच | १०० | २२ | क्षतज | ११७ | ६४ | क्षारक | ७० | १६ |
| कौंचदारण | १२ | ४० | क्षतव्रत | १४२ | ५४ | क्षारमृत्तिका | ५८ | ४ |
| कुम | २२१ | १० | क्षत्तृ { | १५४ | ५९ | क्षारित | २०४ | ४३ |
| कुमय | २२१ | १० | | १८७ | ३ | क्षिति { | ५८ | २ |
| क्लिन्न | २१७ | १०५ | | २३८ | ६३ | | { २३९ | ७० |
| क्लिन्नाक्ष | ११६ | ६० | क्षत्रिय | १४३ | १ | क्षिपा | २२१ | ११ |
| क्लिशित | १२५ | ९८ | क्षत्रिया | १०७ | १४ | क्षित | २१३ | ८७ |
| क्लिष्ट { | ३७ | १९ | क्षत्रियी | १०७ | १५ | क्षिप्नु | २०२ | ३० |
| | २१५ | ९८ | क्षत्रियाणी | १०७ | १४ | क्षिप्र { | १५ | ६४ |
| क्रीतक | ८६ | १०९ | क्षपा | २४ | ४ | | २१८ | ११२ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------------------|--------|--------|--------------|--------|--------|--------------|--------|--------|
| क्षिया | २२० | ७ | क्षुर { | ८५ | १०४ | क्ष्मा | ५८ | ३ |
| क्षीर { | ४९ | ५ | क्षुर { | १५२ | ४९ | क्ष्माभृत् { | ६५ | १ |
| क्षीर { | १७५ | ९४ | क्षुरक | ७४ | ४० | क्ष्माभृत् { | १४३ | १ |
| क्षीर { | २६० | १८२ | क्षुरप्र | २८९ | २० | क्ष्वेड | ४८ | ९ |
| क्षीरविकृति | १७४ | ४४ | क्षुरन् | १८८ | २० | क्ष्वेडा { | १६३ | १०७ |
| क्षीरविदारी | ८६ | ११० | क्षुरक { | १९० | १६ | क्ष्वेडा { | २३५ | ४३ |
| क्षीरशुक्ला | ८६ | ११० | क्षुरक { | २२९ | १० | क्ष्वेडित | २९५ | ३४ |
| क्षीरावी | ८४ | १०० | क्षुरक { | २०८ | ६१ | ख | | |
| क्षीरिका | ७५ | ४५ | क्षेत्र { | १६७ | ११ | ख { | १७ | १ |
| क्षीरोद | ४९ | २ | क्षेत्र { | २६० | १८० | ख { | २३१ | १८ |
| क्षीव | २०० | २३ | क्षेत्रज्ञ { | २९ | २९ | खग { | १०२ | ३२ |
| क्षुत् | ११५ | ५२ | क्षेत्राजीव | १६६ | ६ | खग { | १५९ | ८६ |
| क्षुत | ११५ | ५२ | क्षेपण | २२१ | ११ | खग { | २३१ | १९ |
| क्षुताभिजनन | १६९ | १९ | क्षेपणी | ५१ | १३ | खगेश्वर | १० | २९ |
| क्षुद्र { | २०६ | ४८ | क्षेपिष्ठ | २१८ | २११ | खजाका | १७२ | ३४ |
| क्षुद्र { | १५९ | १७७ | क्षेम { | २८ | २६ | खज्ज | ११४ | ४९ |
| क्षुद्रघंटिका | १२६ | ११० | क्षेम { | ८९ | १२८ | खज्जन | ९९ | १५ |
| क्षुद्रशंख | ५३ | २३ | क्षोणी | ५८ | २ | खज्जरीट | ९९ | १५ |
| क्षुद्रा { | ८३ | ९४ | क्षोद | १६१ | ९९ | खट | २८८ | १७ |
| क्षुद्रा { | २५९ | १७७ | क्षोदिष्ठ | २१८ | १११ | खट्वा | १३१ | १३८ |
| क्षुद्राण्डमत्स्यसंघात | ५२ | १९ | क्षौद्र | १८६ | १०७ | खज्ज { | ९७ | ४ |
| क्षुधि | १७६ | ५४ | क्षौम { | ६४ | १२ | खज्ज { | १६० | ८९ |
| क्षुधित | २०० | २० | क्षुण्ण | १२७ | ११३ | खज्जिन् | ९७ | ४ |
| क्षुष | ६८ | ८ | क्षुण्ण | २१४ | ९१ | खण्ड { | २० | १६ |
| क्षुमा | १६९ | २० | क्षुण्ण | २१४ | ९१ | खण्ड { | ९७ | ४२ |
| | | | | | | खण्डपरशु | १० | ३१ |
| | | | | | | खण्डविकार | १७३ | ४३ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------|--------|--------|------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| खण्डिक | १६८ | १६ | खलेदारु | २६८ | १५ | गजबन्धनी | १५१ | ४३ |
| खदिर | ७६ | ४९ | खल्या | २२७ | ४२ | गजभक्ष्या | ८८ | १२३ |
| खदिरा | ९१ | १४१ | खारा | ५४ | २७ | गजानन | ११ | ३८ |
| खद्योत | १०२ | २८ | खादित | ३१८ | ११० | गजा | ६३ | ८ |
| खनि | ६६ | ७ | खारी | १८२ | ८८ | गडक | ५२ | १७ |
| खनित्र | १६८ | १२ | खारीक | १६७ | १० | गडु | २८९ | १८ |
| खपुर | ९६ | १६९ | खारीवाप | १६७ | १० | गडुल | ११४ | ४८ |
| खर { | २३ | ३५ | खिल | ५९ | ५ | गण { | १०३ | ३४० |
| | १८० | ७७ | खुर | ८९ | १३० | | १५८ | ८१ |
| खरणस् | ११३ | ४६ | खुरणस् | ११४ | ४७ | | २३५ | ४६ |
| खरणस | ११३ | ४६ | खुरणस | ११४ | ४७ | गणक | १४५ | १४ |
| खरणुप्पा | ९१ | १३९ | खेट | २०७ | ५४ | गणदेवता | ६ | १० |
| खरमञ्जरी | ८२ | ८९ | खेय | ५५ | २९ | गणनीय | २०८ | ६४ |
| खरा | ७९ | ६९ | खिला | ४५ | ३३ | गणरात्र | २४ | ६ |
| खराश्वा | ८६ | १११ | खोड | ११४ | ४९ | गणरूप | ८१ | ८० |
| खर्जू | ११५ | ५३ | ख्यात | २९७ | ९ | गणहासक | ८९ | १२८ |
| खर्जूर { | ९६ | १७० | ख्यातगर्हण | २१४ | ९३ | गणाधिप | ११ | ३८ |
| | १८४ | ९६ | ख्याति | २२० | ९ | गणिका { | ८० | ७१ |
| खर्जूनी | ९६ | १७० | | | | | १०८ | १९ |
| खर्व { | ११३ | ४६ | ग | | | गणकारिका | ७९ | ६४ |
| | २०९ | ७० | | | | गणित | २०८ | ६४ |
| खल | २०५ | ४७ | गगन | १७ | १ | गणेश | २०८ | ६४ |
| खलपू | १९९ | १७ | गंगा | ५५ | ३१ | गण्ड { | १२२ | ९० |
| खलिनी | २२७ | ४२ | गङ्गाधर | १० | ३४ | | १५० | ३७ |
| खलीन | १५२ | ४९ | गज | १४९ | ३४ | गण्डक | ९७ | ४ |
| खड्ड | २७४ | २५५ | गजता | १४९ | ३६ | गण्डकारी | ९१ | १४१ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|------------|--------|--------|--------------|--------|--------|
| गंडशैल | ६६ | ६ | गन्धवाह | १५ | ६२ | गर्गरी | १८० | ७४ |
| गंडाली | ९४ | १५९ | गन्धसार | १३० | १३१ | गर्जित { | १९ | ८ |
| गंडीर | ९४ | १५७ | गन्धाश्मन् | १८५ | १०२ | गर्जित { | १४९ | ३६ |
| गंडूपद | ५३ | २२ | गन्धिक | १८५ | १०२ | गर्त | ४६ | २ |
| गंडूपदी | ५४ | २४ | गन्धिनी | ८८ | १२३ | गर्दभ | १८० | ७७ |
| गंडूषा | २८४ | १० | गन्धोत्तमा | १९४ | ३९ | गर्दभांड | ७५ | ४३ |
| गतनासिक | ११४ | ४६ | गन्धोली | १०१ | २७ | गर्द्धन | २०० | २२ |
| गद | ११५ | ५१ | गभस्ति | २३ | ३३ | गर्भ { | ११२ | ३९ |
| गद्य | २९४ | ३१ | गभीर | ५२ | १२ | गर्भ { | २८१ | १२५ |
| गंत्री | १५३ | ५२ | गभ | १६१ | ९५ | गर्भक | १३१ | १३५ |
| गन्ध | ३१ | ७ | गमन | १६१ | ९५ | गर्भगार | ६३ | ४ |
| गंधकुटी | ८८ | १२३ | गंभारी | ७४ | ३५ | गर्भाशय | ११२ | ३८ |
| गंधन | २४७ | ११५ | गंभीर | ५२ | १५ | गर्भिणी | १०९ | २२ |
| गंधनाकुलो | ८७ | ११४ | गम्य | २१४ | ९२ | गर्भोपवातिनी | १७९ | ६९ |
| गंधफली { | ७७ | ५६ | गरण | २२६ | ३७ | गर्भुत | ९६ | १६५ |
| गंधफली { | ७८ | ६४ | गरल | ४८ | ९ | गर्व | ४३ | २२ |
| गंधमादन | ६६ | ३ | गरा | ७९ | ६९ | गर्वित | २४६ | १०३ |
| गन्धमूली | ९३ | १५४ | गरिमन् | ११ | ३६ | गर्हण | ३६ | १३ |
| गन्धरस | १८५ | १०४ | गरिष्ठ | २१८ | ११२ | गर्ह्य | २०७ | ५४ |
| गन्धर्व { | ७ | ११ | गरी | ७९ | ६९ | गर्ह्यवादिन् | २०३ | ३७ |
| गन्धर्व { | १४ | ५२ | गरुड | १० | २९ | गल | १२२ | ८८ |
| गन्धर्व { | ९८ | ११ | गरुडध्वज | ८ | १९ | गलकम्बल | १७७ | ६३ |
| गन्धर्व { | १५१ | ४४ | गरुडाम्रज | २३ | ३२ | गलन्तिका | १७१ | ३१ |
| गन्धर्व { | २५१ | १३३ | गरुत | ११३ | ३६ | गलित | २१६ | १०४ |
| गन्धर्वहस्तक | ७६ | ५० | गरुत | १० | २९ | गलोद्देश | १५२ | ४८ |
| गन्धवह | १५ | ६२ | गरुतम् | १०२ | ३४ | गरया | २२७ | ४२ |
| गन्धवहा | १२२ | ८९ | गरुतम् | २३७ | ५८ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|--------|--------|-------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| गवय | ९८ | ११ | गान | ३८ | २६ | गुच्छक | ७० | १६ |
| गवल | १८४ | १०० | गान्धार | ३८ | १ | गुच्छार्द्ध | १२५ | १०५ |
| गवाक्ष | ६३ | ९ | गायत्री | ७६ | ४९ | गुञ्जा | ८४ | ९८ |
| गवाक्षी | ९४ | १५६ | गारुत्मत | १८३ | ९२ | गुड | | |
| गवीश्वर | १७६ | ५८ | गार्भिण | १०९ | २२ | गुडपुष्प | ७२ | ३७ |
| गवेधु | १७० | २५ | गार्हपत्य | १३५ | १९ | गुडफल | ७२ | २८ |
| गवेधुका | १७० | २५ | गालव | ७३ | ३३ | गुडा | ८५ | १०५ |
| गवेषणा | १३७ | ३३ | गिर | ३३ | १ | गुडूची | ८२ | ८२ |
| गवेषित | २१७ | १०५ | गिरि { | ६५ | १ | | २९ | २९ |
| गव्य | १७५ | ५० | | २२१ | ११ | | १५९ | ८५ |
| गव्या | १७७ | ६० | गिरिकर्णी | ८५ | १०४ | गुड | १७१ | २८ |
| गव्यूत | ६१ | १८ | गिरिका | ९८ | १२ | | १९१ | २७ |
| गहन { | ६७ | १ | गिरिज | १८५ | १०४ | | १३५ | ४७ |
| | २१२ | ८५ | गिरिजा | ११ | ३७ | गुणवृक्षक | ५१ | ५२ |
| गहर { | ६६ | ६ | गिरिजामल | १८४ | १०० | गुणित | २१३ | ८८ |
| | २६१ | १८३ | गिरिमल्लिका | ७९ | ६६ | गुन्ति | २१३ | ८९ |
| गांगेय { | १८३ | ९४ | गिरिश | १० | ३१ | गुद | ११९ | १३ |
| | २५५ | १५५ | गिरीश | १० | ३१ | गुन्द्र | ९५ | १६२ |
| गांगेरुकी | ८७ | ११७ | गलित | २१८ | ११० | गुन्द्रा { | ७७ | ५५ |
| गाढ | १६ | ६७ | गीत | ३८ | २६ | | ९५ | १६० |
| गाणिक्य | १०९ | २२ | गीण | २२१ | ११ | गुप्त { | २१३ | ८९ |
| गांडीव | १५९ | ८४ | गीर्वाण | ७ | ९ | | २१७ | १०६ |
| गांडीव | १५९ | ८४ | गीप्पति | २१ | २४ | गुप्तवाद | २५८ | १६७ |
| गात्र { | ११९ | ७० | गुग्गुलु | ७३ | ३४ | गुप्ति | २४० | ७४ |
| | १५० | ४० | गुच्छ { | १२५ | १०५ | गुरण | २२१ | ११ |
| गात्रानुलेपनी | १३० | १३३ | | १६९ | २१ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|-------------|--------|--------|----------|--------|--------|
| गुरु { | २१ | २४ | गष्टि | ९३ | १५० | गोकर्णी | ८२ | ८४ |
| | १३३ | ७ | | ६२ | ४ | गोकल | १७६ | ५८ |
| | २५७ | १६२ | | ६२ | ५ | गोक्षुरक | ८४ | ९९ |
| गुर्विणी | १०९ | २२ | | २७१ | २३८ | गोचर | ३१ | ८ |
| गुल्क | ११९ | ७२ | गृहगोधिका | ९८ | १२ | गोजिह्वा | ८८ | ११९ |
| | ६८ | ९ | गृहपति | १४५ | १५ | गोडुम्बा | ९४ | १५६ |
| गुल्म { | ११८ | ६६ | गृहयालु | २०१ | २७ | गोड | २८९ | १८ |
| | १५८ | ८१ | गृहस्थूण | २९४ | ३० | | ६५ | १ |
| | २५३ | १४२ | गृहागत | १३८ | ३४ | गोत्र { | १३२ | १ |
| गुल्मिनी | ६९ | ९ | गृहाराम | ६७ | १ | | २६७ | १८० |
| गवाक | ९६ | १६९ | गृहावग्रहणी | ६४ | १३ | गोत्रभिद | १२ | ४२ |
| गुह | १२ | ३९ | गहिन् | १३२ | ३ | गोत्रा { | ५८ | ३ |
| गुहा { | ६६ | ६ | गृहीवृ | २०१ | २७ | | १७७ | ६० |
| | ८३ | ९३ | गृहक | १०४ | ४३ | गोदारण | १६८ | १४ |
| गुह्य | २५५ | १५४ | | १९९ | १६ | गोदुहि | १७६ | ५७ |
| गह्यक | ७ | ११ | गेन्दुक | १३१ | १३८ | गोधन | १७६ | ५८ |
| गुह्यकेश्वर | १६ | ६८ | गेह | ६२ | ४ | गोधा | १५९ | ८४ |
| गूढ | २१३ | ८९ | गैरिक { | ६७ | ८ | गोधापदी | ८७ | ११९ |
| गूढपाद | ४७ | ७ | | २२९ | १२ | गोधि | १२३ | ९२ |
| गूढपुरुष | १४५ | १३ | गैरेय | १८५ | १०४ | गोधिका | ५३ | २२ |
| गूय | ११८ | ६८ | | १७७ | ६० | गोधूम | १६९ | १८ |
| गून | २१५ | ९६ | गो(गौ) | १७८ | ६५ | गोनर्द | ९० | १३२ |
| गृञ्जन | ९१ | १४८ | | २३१ | २५ | गोनस | ४७ | ४ |
| गृधु | २०० | २२ | गोकण्टक | ८४ | ९९ | | १४४ | ७ |
| गृध्र | १०० | २१ | गोकण | ९८ | १० | गोप { | १७६ | ५७ |
| गृध्रसी | २८४ | १० | | १२१ | ८३ | | २५० | १३७ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------|-----------|--------|-------------|-----------|--------|-------------|-----------|--------|
| गोपति | १७७ | ६६ | गोविन्द | { ८ १९ | | ग्रंथिल | { ७४ ३७ | |
| गोपरस | १८५ | १०४ | | { २४३ ९१ | | | { ८१ ७७ | |
| गोपानसी | ६४ | १५ | गोशीर्ष | १३० | १३१ | ग्रस्त | { ३७ २० | |
| गोपायित | २१७ | १०६ | गोष्ठ | ६० | १३ | | { २१८ १११ | |
| गोपाल | १७६ | ५७ | गोष्ठपति | २५० | १३० | | { २५ ९ | |
| गोपी | ८६ | ११२ | गोष्ठी | १३४ | १५ | ग्रह | { १२० ८ | |
| | ६४ | १६ | गोष्पद | २४४ | ९४ | | { २७१ २३६ | |
| गोपुर | { ९० १३२ | | गोसंख्य | १७६ | ५७ | ग्रहणीरुजू | ११६ | ५५ |
| | २६० १८२ | | गोस्तन | १२५ | १०५ | ग्रहपति | २२ | ३० |
| गोप्यक | १९० | १७ | गोस्तनी | २५ | १०७ | ग्रहीवृ | २०१ | २७ |
| गोमत् | १७६ | ५८ | गोस्थानक | ६० | १३ | ग्राम | { ६५ १९ | |
| गोमय | १७५ | ५० | गौतम | ८ | १५ | | { २५२ १४१ | |
| गोमायु | ९७ | ५ | गौधार | ९७ | ६ | ग्रामणी | २३६ | १४१ |
| गोमिन् | १७६ | ५८ | गौधेय | ९७ | ६ | ग्रामतक्ष | १८८ | ९ |
| गोरस | १७५ | ५३ | गौधेर | ९७ | ६ | ग्रामता | २२७ | ४२ |
| गोर्द | ११८ | ६५ | | | | ग्रामाधीन | १८८ | ९ |
| गोल | २८९ | २० | गौर | { ३२ १३ | | ग्रामान्त | ६५ | २० |
| गोलक | १११ | ३६ | | { ३२ १४ | | ग्रामीणा | ७३ | ९४ |
| गोला | १८६ | १०८ | | { २६२ २८९ | | ग्राम्य | ३७ | १९ |
| गोलीढ | ७४ | ३९ | गौरी | { ११ ३६ | | ग्राम्यधर्म | १४२ | ५७ |
| | | | | { १०६ ८ | | | { ६५ १ | |
| | | | गौष्ठीने | ६० | १३ | ग्रावन् | { ६६ ४ | |
| | | | ग्रन्थ | २६० | १७९ | | { २४६ १०६ | |
| गोलोमी | { ८४ १०२ | | ग्रन्थि | ९५ | १६२ | ग्रास | १७६ | ५४ |
| | { ९४ १५९ | | ग्रन्थिक | १८६ | ११० | | { ५३ २१ | |
| | { १८६ १११ | | ग्रन्थित | २१२ | ८६ | ग्राह | { २२० ८ | |
| गोवन्दनी | ७७ | ५५ | ग्रन्थिपर्ण | ९० | १३२ | | | |
| गोविड | १७५ | ५० | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|-----------|--------|---------|----------|--------|-------------|-----------|--------|
| ग्राहिन् | ७१ | २१ | घनाघन | १४७ | ११० | घोष | ६५ | २० |
| ग्रीवा | १२२ | ८८ | घर्म | ४५ | ३३ | घोषक | ८७ | ११७ |
| ग्रीष्म | २७ | १८ | घस्मर | २०० | २० | घोषणा | ३५ | १२ |
| ग्रेवेयक | १२५ | १०४ | घस | २४ | २ | घ्राण | { १२२ ८९ | |
| ग्लस्त | २१८ | १११ | घाटा | १२२ | ८८ | घ्राणतर्पण | { २१३ ९० | |
| ग्लह | १९५ | ४५ | घांटिक | १६१ | ९७ | घ्रात | २१३ | ९० |
| ग्लान | ११६ | ९८ | | १६४ | ११६ | च | | |
| ग्लास्तु | ११६ | ५८ | घातुक | { २०१ २१ | | च | { २७२ २४१ | |
| ग्लौ | १९ | १४ | | { २०६ ४७ | | | { २७६ ५ | |
| घ | | | घास | ९६ | १६७ | चकोरक | १०३ | ३५ |
| घट | १७२ | ३२ | घुटिका | ११९ | ७२ | | { १० २८ | |
| घटना | १६३ | १०७ | घुण | २८९ | १८ | | { ५० ७ | |
| घटा | १६३ | १०७ | घूर्णित | २०२ | ३२ | चक्र | { १०० २२ | |
| घटीयन्त्र | १९२ | २७ | | { ४२ १८ | | | { १५३ ५६ | |
| घट्ट | २८९ | १८ | घृणा | { २२५ ३२ | | | { १५७ ७८ | |
| घण्टापथ | ६१ | १८ | | { २३६ ५१ | | | { २६० १८२ | |
| घण्टापाटलि | ७४ | ३९ | घृणि | २३ | ३३ | चक्रकारक | ८९ | १२९ |
| घण्टारवा | ८५ | १०७ | घृत | { १७५ ५२ | | चक्रपाणि | ८ | २० |
| | { १८ ७ | | | { २४० ७६ | | चक्रमर्दक | ९२ | १४७ |
| | { ३९ ४ | | घटि | ९७ | २ | चक्रयान | १५३ | ५१ |
| घन | { ४० ९ | | घोटक | १५१ | ४३ | चक्रला | ९५ | १६० |
| | { १६० ९१ | | घोणा | १२२ | ८९ | चक्रवर्तिन् | १४३ | २ |
| | { २०९ ६६ | | घोणिन् | ९७ | २ | चक्रवर्तिनी | ९३ | १५३ |
| | { २४७ १११ | | घोट्टा | { ७४ ३७ | | चक्रवाक | १०० | २२ |
| घनरस | ४९ | ५ | | { ९६ १६० | | चक्रवाल | { १८ ६ | |
| घनसार | १३० | १३० | घोर | ४२ | २० | | { ६५ २ | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|-------------|--------|--------|------------|--------|--------|
| चक्राङ्ग | १०१ | २३ | चतुर | १९० | १९ | चपल | { १५ | ६५ |
| चक्राङ्गी | ८२ | ८६ | चतुरंगुल | ७१ | २३ | { १८४ | ९९ | |
| चक्रिन् | ४७ | ७ | चतुरानन | ८ | १३ | { २०५ | ४६ | |
| चक्रीवत् | १८० | ७७ | चतुर्भद्र | १४३ | ५८ | चपला | { १९ | ९ |
| चक्षुःश्रवस् | ४७ | ७ | चतुर्भुज | ८ | २० | { ८४ | १६ | |
| चक्षुस् | १२३ | ९३ | चतुर्वर्ग | १४३ | ५७ | चपेट | १२१ | ८४ |
| चक्षुष्या | १८५ | १०२ | चतुष्पथ | ६१ | १७ | चमर | ९८ | १० |
| चञ्चल | २१० | ७५ | चतुरब्दा | १७८ | ६८ | चमारिक | ७१ | २२ |
| चञ्चला | २९ | १ | चतुर्हायणी | १७८ | ६८ | चमस | २९६ | ३५ |
| चंचु { | ७६ | ५१ | चत्वर { | ६४ | १३ | चमसी | २८४ | १० |
| { १०३ | ३६ | | { १३५ | १८ | | चमू { | १५७ | ७८ |
| चटक | १०० | १८ | चन | २७५ | ३ | { १५८ | ८१ | |
| चटका | १०० | १८ | चन्दन | { १२९ | १२४ | चमूरु | ९८ | ९ |
| चटकाशिरस् | १८६ | १० | { १२० | १३१ | | चम्पक | ७८ | ६३ |
| चणक | १६९ | १८ | | १९ | १३ | चय { | ६२ | ३ |
| चण्ड | २०२ | ११ | चन्द्र { | ९२ | १४६ | { १०३ | ४० | |
| चण्डा | ८९ | १२८ | | २६० | १८२ | चर { | १४५ | १३ |
| चण्डांशु | २३ | ३१ | चन्द्रक | १०२ | ३१ | { २१० | ७४ | |
| चण्डात | ८१ | ७६ | चन्द्रभाग | ५६ | ३४ | चरक | २९५ | ३३ |
| चण्डातक | १२८ | ११९ | चन्द्रमस् | १९ | १३ | चरण | ११९ | ७१ |
| { १८७ | ४ | | चन्द्रशाला | ८८ | १२५ | चरणायुध | ९९ | १७ |
| चण्डाल { | १८७ | १ | चन्द्रशेखर | १० | ३० | चरम | २११ | ८१ |
| { ११० | १९ | | चन्द्रसंज्ञ | १३० | १३० | चरमश्माभूत | ६६ | २ |
| चण्डालबलकी | १९२ | ३१ | चन्द्रहास | १६० | ८९ | चराचर | २१० | ७४ |
| चण्डिका | ११ | ३७ | चन्द्रिका | २० | १६ | चरिण्यु | २१० | ७४ |
| चतुःशाल | ६२ | ६ | | | | चरु | १३६ | २२ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|--------|--------|--------------|--------|--------|---------------|--------|--------|
| चर्चरी | २८४ | १० | चाण्डाल | १९० | २० | चिता | ४४ | २९ |
| चर्चा { | ३० | २ | चाण्डालिका | १९२ | ३१ | चिता | १६५ | ११७ |
| | १२८ | १२२ | चातक | ९९ | १७ | चिति | १६५ | ११७ |
| चर्मन् { | १४० | ४६ | चातुर्वर्ण्य | १३२ | २ | चित | २९ | ३१ |
| | १६० | ९० | चाप | १५९ | ८३ | चितविभ्रम | ४४ | २६ |
| चर्मकषा | ९२ | १४३ | चामर | १४८ | ३१ | चित्तसमुन्नति | ४३ | २२ |
| चर्मकार | १८८ | ७ | चामीकर | १८३ | ९५ | चित्ताभोग | ३० | २ |
| चर्मप्रभेदिका | १९३ | ३४ | चासुण्डा | ११ | ३५ | चित्या | १६५ | ११७ |
| चर्मप्रसेविका | १९३ | ३३ | चाम्पेय { | ७८ | ६३ | | ३३ | १७ |
| चर्मिन् { | ७९ | ४६ | | ७८ | ६५ | चित्र { | ४२ | १९ |
| | १५६ | ७१ | चार { | १४५ | १३ | | २६० | १७८ |
| चर्या | १३८ | ३५ | | २२२ | १४ | चित्रक { | ७६ | ५१ |
| चर्वित | २१८ | ११० | चारटी | ९२ | १४६ | | ८१ | ८२ |
| चल | २१० | ७४ | चारण | १८९ | १२ | | १२९ | १२३ |
| चलदल | ७१ | २० | चारु | २०६ | ५२ | चित्रकर | १८८ | ७ |
| चलन | २१० | ७४ | चार्यक्य | १२८ | १२२ | चित्रकृत | ७२ | २७ |
| चलाचल | २१० | ७४ | चालनी | १७० | २६ | चित्रतंडुला | ८५ | १०६ |
| चलित { | १६१ | ९६ | चाप | ९९ | १६ | चित्रपर्णी | ८३ | ९२ |
| | २१३ | ८७ | चिकित्सक | ११६ | ५७ | | १४ | ५६ |
| चविका | ८४ | ९८ | चिकित्सा | ११४ | ५० | चित्रभानु { | २२ | ३० |
| चव्य | ८४ | ९८ | चिकुर { | १२३ | ९५ | | २४६ | १०५ |
| चषक | १९५ | ४३ | | २०५ | ४६ | चित्रशिखंडिन् | २१ | २७ |
| चषाल | १३५ | १८ | चिकण | १७४ | ४६ | चित्रशिखंडिज | २१ | २४ |
| चाक्रिक | १६१ | ९७ | चिक्रस | २९६ | ३५ | | ८२ | ८७ |
| चांगेरी | ९१ | १४० | चिचा | ७५ | ४३ | चित्रा { | ९४ | १५६ |
| चाटकैर | १०० | १८ | चित् { | २९ | १ | | ४४ | २९ |
| | | | | २७५ | ३ | चिन्ता | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|----------|--------|-------------|-----------|-----------|-----------|--------|--------|
| चिपिटक | १७४ | ४७ | चूडा | { १०२ ३१ | चौर | १९१ | २४ | |
| चिबुक | १२२ | ९० | चूडा | { १२४ ९७ | चौरिला | १९१ | २५ | |
| चिरक्रिय | १९९ | १७ | चूडामणि | १२५ १०२ | चौर्य | १९१ | २५ | |
| चिरन्तन | २११ | ७७ | चूडाला | ९५ १६० | च्युत | २१६ | १०४ | |
| चिरप्रसूता | १७९ | ७१ | चूत | ७३ ३३ | छ | | | |
| चिरविल्व | ७६ | ४७ | चूर्ण | { १३० १३४ | छगलक | १८० | ७६ | |
| चिररात्राय | २७५ | १ | चूर्ण | { १६१ ९९ | छगलांत्री | ९१ | १३७ | |
| चिरत्व | २७५ | १ | चूर्णकुन्तल | १२३ ९६ | छत्र | १४९ | ३२ | |
| चिराय | २७५ | १ | चूर्णि | २८४ ९ | छत्रा | { ८५ १०५ | | |
| चिरिटी | १०६ | ९ | चूलिका | १५० ३८ | छत्रा | { ९६ १६७ | | |
| चिलिचिग | ५२ | १८ | चेटक | १९० १७ | छत्रा | { १७३ ३७ | | |
| चिल | { १०० २१ | २१ | चेत् | २७७ १२ | छत्राकी | ८७ ११५ | | |
| चिल | { ११६ ६० | ६० | चेतकी | ७७ ५९ | छद | { ६९ १४ | | |
| चिह्न | २० | १७ | चेतन | २९ ३० | छदन | ६९ १४ | | |
| चीन | ९८ | ९ | चेतना | २९ १ | छदिस | ६४ १४ | | |
| चीर | २९४ | ३१ | चेतसू | २९ ३१ | छन्न | ४४ ३० | | |
| चीरी | १०२ | २४ | चैत्य | ७२ ७ | छन्द | { २३३ २० | | |
| घीवर | २९४ | ३१ | चैत्र | २६ १५ | छन्द | { २४३ ८८ | | |
| | ९१ | १४१ | चैत्ररथ | १६ ७० | छन्दसु | { १३६ २२ | | |
| चुक | { १७२ ३९ | ३९ | चैत्रिक | २६ १५ | छन्दसु | { २७० २३२ | | |
| चुक | { २८९ २० | २० | चैल | { १२७ ११५ | छन्न | { १४७ २२ | | |
| चुक्रिका | ९१ | १४० | चैल | { २६४ २०२ | छन्न | { २१५ ९८ | | |
| चुल | ११६ | ६० | चोच | { ९० १३४ | छल | १६३ १०८ | | |
| चुलि | १७१ | २९ | चोरपुष्पी | ८९ १२६ | छवि | { २० १७ | | |
| चूचुक | १२० | ७७ | चोल | १२८ ११८ | छवि | { २३ ३४ | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|----------|--------|---------|----------|--------|--------|
| छाग | १८० | ७६ | जघन | ११९ | ७४ | जतुका | १०१ | २६ |
| छागी | १८० | ७६ | जघनेफला | ७८ | ६१ | जतुकृत् | ९३ | १५३ |
| छात { | ११३ | ४४ | जघन्य { | २११ | ८१ | जतूका | ९३ | १३५ |
| | २१६ | १०३ | | २५६ | १५९ | जत्रु | १२० | ७८ |
| छात्र | १३४ | ११ | जघन्यज { | ११३ | ४३ | जनक | ११० | २८ |
| छादित | २१५ | ९८ | | १८७ | १ | जनंगम | १९० | १९ |
| छान्दस | १३३ | ६ | जंगम | २१० | ७४ | जनता | २२७ | ४२ |
| छाया | २५६ | १५७ | जंगमेतर | २१० | ७३ | जनन { | २९ | ३० |
| छत्त | २१६ | १०३ | जंवा | ११९ | ७२ | १३२ | १ | |
| छिद्र | ४६ | २ | जंघाकरिक | १५६ | ७३ | जननी | ११० | २९ |
| छिद्रित | २१६ | ९९ | जंघाल | १५६ | ७३ | जनपद | ५९ | ८ |
| छिन्न | २१६ | १०३ | जटा { | ६९ | ११ | जनयित्री | ११० | २९ |
| छिन्नरुहा | ८२ | ८२ | | १२४ | ९७ | जनश्रुति | ३४ | ७ |
| छुरिका | १६० | ९२ | २३४ | ३८ | जनार्दन | ८ | १९ | |
| छेक | १०४ | ४३ | जटाजूट | ११ | ३५ | जनाश्रय | ६३ | ९ |
| छेदन | २१९ | ७ | जटाभांसी | ९० | ९३४ | जनि | २९ | ३० |
| ज | | | जटिन् | ७३ | ३२ | जनी { | ९३ | १५३ |
| जगत् { | ५९ | ६ | जटिला | ९० | १३४ | १०६ | ९ | |
| | २४१ | ८० | | २३० | ७७ | जनुस् | २९ | ३० |
| जगती { | ५९ | ६ | जठर { | २१० | ७६ | जन्तु | २९ | ३० |
| | २४० | ७१ | | २६२ | १८९ | जन्तुफल | ७१ | २२ |
| जगत्प्राण | १५ | ६२ | जड { | २० | १९ | जन्मन् | २९ | ३० |
| जगर | १५५ | ६४ | | २०३ | ३८ | जन्मिन् | २९ | ३० |
| जंगल | १९७ | ४१ | जडुल | ११४ | ४९ | जन्य { | १३३ | ५८ |
| जग्ध | २१८ | १११ | जतु | १२९ | १२५ | | १६२ | १०३ |
| जग्धि | १७६ | ५५ | जतुक | १७३ | ४० | | २५६ | १५९ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| जन्तु | २९ | ३० | जरा | ११२ | ४१ | जवन | { १५१ | ४५ |
| जप | १४१ | ४७ | जरायु | ११२ | ३८ | | { १५६ | ७३ |
| जपापुष्प | ८० | ७६ | जरायुज | २०६ | ५० | | { २३६ | ३८ |
| जम्पती | ११२ | ३८ | जल | { ४९ | ३ | जवनिका | १२८ | १२० |
| जम्वाल | ५० | ९ | | { २९१ | २३ | जन्तुतनया | ५५ | ३१ |
| जम्बीर | { ७२ | २४ | जलजन्तु | ५३ | २० | जागरा | २२३ | १९ |
| | { ८१ | ७९ | जलधर | १८ | ७ | जागरितृ | २०२ | ३२ |
| जम्बु | ७१ | १९ | जलनिधि | ४९ | २ | जागरूक | २०२ | ३२ |
| जम्बुक | { ९७ | ५ | जलनिर्गम | ५० | ७ | जागर्या | २२३ | १९ |
| | { २३८ | ३ | जलनीली | ५६ | ३८ | जांगलिक | ४८ | ११ |
| जम्बु | ७१ | १९ | जलपुष्प | २९१ | २३ | जांघिक | १५६ | ७३ |
| जम्भ | ७२ | २४ | जलमाय | ६० | १० | जात | { २९ | ३१ |
| जम्भभेदिन | १२ | ३४ | जलमुक् | १८ | ७ | | { २४२ | ८५ |
| जम्भल | ७२ | २४ | जलव्याल | ४७ | ५ | जातरूप | १८३ | ९५ |
| जम्भीर | ७२ | २४ | जलशुक्ति | ५३ | २३ | जातवेदस् | १४ | ५३ |
| | ७९ | ६० | जलाधार | ५४ | २५ | जातापत्या | १०८ | १६ |
| जय | { १६३ | ११२ | जलाशय | { ५४ | २५ | जाति | { २९ | ३१ |
| | { २३१ | १६ | | { ९५ | १६४ | | { ८० | ७२ |
| जयन | २३१ | ११ | जलोच्छ्वास | ५० | १० | जाती | ७१ | १९ |
| जयन्त | १३ | ४६ | जलौकस् | ५३ | २२ | जातीकोश | १३० | १३२ |
| जयन्ती | ७९ | ६५ | जलौका | ५३ | २२ | जातीफल | १३० | १३२ |
| जया | ७९ | ६५ | जलपाक | २०३ | ३६ | जातु | २७५ | ४ |
| जय्य | १५७ | ७४ | जलिपत | २१७ | १०७ | जातोक्ष | १७७ | ६१ |
| जरण | १७२ | ३६ | जव | { १५ | ६४ | जानु | ११९ | ७२ |
| जरत् | ११३ | ४२ | | { १५६ | ७३ | जावाल | १८९ | ११ |
| जरद्व | १७७ | ६१ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------|--------|--------|-------------|--------|--------|----------------|--------|--------|
| जामातृ | १११ | ३२ | जिह्वा | १२३ | ९१ | जीवितकाल | १६५ | १२० |
| जानि | २५३ | १४२ | जीन | ११३ | ४२ | जुगुप्सा | ३६ | १३ |
| जाम्बव | ७१ | १९ | जीमूत | १८ | ७ | जुंग | ९१ | १३७ |
| जाम्बूनद | १८४ | ९६ | जीमूत | ७९ | ६९ | जुह | १३६ | २५ |
| जायक | १२९ | १२५ | जीमूत | २३७ | ५८ | जूति | २२६ | ३८ |
| जाया | १०५ | ६ | जीरक | १७२ | ३६ | जूति | २२६ | ३८ |
| जायाजीव | १८९ | १२ | जीर्ण | ११३ | ४२ | जृम्भ | ४६ | ३९ |
| जायापती | ११२ | ३८ | जीर्णवस्त्र | १२७ | ११९ | जृम्भण | ४५ | ३५ |
| जायु | ११५ | ५० | जीर्णि | २२० | ९ | जेतृ | १५७ | ७४ |
| जार | १११ | ३५ | जीव | २१ | २४ | जेतृ | १५७ | ७७ |
| जाल | ५२ | १६ | जीव | १६५ | ११९ | जेमन | १७६ | ५६ |
| जालक | ७० | १६ | जीवक | ७५ | ४४ | जेय | १५७ | ७४ |
| जालिक | १८९ | १४ | जीवक | ९१ | १४२ | जैत्र | १५७ | ७४ |
| जाली | ८७ | ११८ | जीवजीव | १०३ | ३५ | जैत्र | १५७ | ७४ |
| जाल्म | १९० | १६ | जीवन | ४९ | ३ | जैवातृक | १९ | १४ |
| जाल्म | १२९ | १७ | जीवन | १६५ | १ | जैवातृक | १२७ | ६ |
| जिघत्सु | २०० | २० | जीवनी | ९१ | १४२ | जैवातृक | २२९ | ११ |
| जिगी | ८३ | ९० | जीवनीया | ९१ | १४२ | जोंगक | १२९ | १२६ |
| जित्तर | १५७ | ७७ | जीवनौषध | १६५ | १२० | जोत्स्नी | ८७ | ११८ |
| जिन | ८ | १३ | जीवन्तिका | ८२ | ८२ | जोषम् | २७४ | २५१ |
| जिष्णु | १२ | ४२ | जीवन्तिका | ८२ | ८३ | ज्ञ | १३३ | ५ |
| जिष्णु | १५७ | ७७ | जीवन्ती | ९१ | १४२ | ज्ञपित | २१५ | ९८ |
| जिह्वा | २१० | ७१ | जीवा | ९१ | १४२ | ज्ञप्त | २१५ | ९८ |
| जिह्वा | २५२ | १४१ | जीवातृ | १६५ | १२० | ज्ञप्ति | २९ | १ |
| जिह्वा | ४७ | ८ | जीवातृक | १८९ | १४ | ज्ञातसिद्धान्त | १४५ | १५ |
| | | | जीविका | ६५ | १ | ज्ञाति | १११ | ३४ |
| | | | | | | ज्ञातृ | २०२ | ३० |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|-----------|--------|----------|-----------|--------|----------|----------|--------|
| ज्ञातेय | १११ | ३५ | ज्ञर्षर | ४० | ८ | डिम्भा | ११२ | ४१ |
| ज्ञान | ३० | ६ | ज्ञलरी | २८४ | १० | डुडुभ | ४७ | ५ |
| ज्ञानिन् | १४५ | १४ | ज्ञष | ५२ | १७ | डुलि | ५४ | २४ |
| ज्या | { ५८ २ | | ज्ञषा | ८७ | ११७ | ढ | | |
| | { १५९ ८५ | | ज्ञाटल | ७४ | ३९ | ढका | ३९ | ६ |
| ज्याघातवारण | १५९ | ८४ | ज्ञाटलि | २९७ | ३८ | त | | |
| ज्यानि | २२० | ९ | ज्ञाबुक | ७४ | ४० | तक | १७५ | ५३ |
| ज्यायस् | { ११३ ४३ | | झिटी | { ८० ७४ | | तक्षक | २२८ | ४ |
| | { २७१ २३५ | | | { ८० ७५ | | तक्षन् | १८८ | ९ |
| ज्येष्ठ | { २६ १६ | | झिल्लिका | १०२ | २८ | तट | ५० | ७ |
| | { २३४४ ४१ | | झीरुका | १०२ | २८ | तटिनी | ५५ | ३० |
| ज्योतिरिगण | १०२ | २८ | ट | | | तडाग | ५४ | २८ |
| ज्योतिषिक | १४५ | १४ | टङ्क | १९३ | ३४ | तडित् | १९ | ९ |
| ज्योतिष्मती | ९३ | १५० | टिट्टिमक | १०३ | ३५ | तडित्वत् | १८ | ७ |
| ज्योतिस् | २७० | २३० | टीका | २८३ | ७ | तण्डक | २९५ | ३३ |
| ज्योत्स्ना | २७ | १६ | टुडुक | ७७ | ५६ | तण्डुल | ८५ | १०६ |
| ज्योत्स्नी | ८७ | ११८ | ड | | | तण्डुलीय | ९० | १३६ |
| ज्यौत्स्नी | २४ | ५ | डमर | २२२ | १४ | तत | { ३९ ४ | |
| ज्वर | { ११६ ५६ | | डमरू | ४० | ८ | | { २१२ ८६ | |
| | { २२६ ३८ | | डयन | १५३ | ५२ | ततस् | २७५ | ३ |
| ज्वलन | १४ | ५३ | डहु | ७८ | ६० | तत्काल | १४८ | २९ |
| ज्वाल | १४ | ५७ | डिडिम | ४० | ८ | तत्त्व | ४० | ९ |
| झ | | | डिडिर | १८५ | १०५ | तत्पर | १९७ | ९ |
| झटा | ८९ | ११७ | डिम्ब | २२२ | १४ | तथा | २७६ | ९ |
| झटिति | २७५ | २ | डिम्भ | { १०३ ३८ | | तथागत | ८ | १३ |
| झर | ६६ | ५ | | { १५१ १३४ | | तथ्य | ३७ | २२ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|-----------|--------|------------|-----------|--------|------------|-----------|--------|
| तद् | २७५ | ३ | तपःक्लेशसह | १४० | ४२ | | | |
| तदर्पण | १८१ | ८१ | तपन | { २२ ३१ | | तरणि | { २२ ३० | |
| तदा | २८० | २२ | | { ४८ १ | | | { ५१ १० | |
| तदात्व | १४८ | २९ | तपनीय | १८३ | ९४ | तरपण्य | ५१ | ११ |
| तदानीम् | २८० | २२ | तपस् | { २६ १५ | | तरल | { १२५ १०२ | |
| तनय | ११० | २७ | | { २७० २३२ | | | { २१० ७५ | |
| | { ११९ ७१ | | तपस्य | २६ | १५ | तरला | १७५ | ५० |
| तनु | { २०८ ६१ | | तपस्विन् | ४२ | | तरस् | { १५ ६४ | |
| | { २०९ ६६ | | तपस्विनी | ९० | १३४ | | { १६२ १०२ | |
| | { २४७ १३ | | तम | २२ | २६ | तरस | ११७ | ६३ |
| तनुत्र | १५५ | ३४ | | { २२ २६ | | तरस्विन् | { १५६ ७३ | |
| तनू | ११९ | ७१ | तमस् | { ४६ ३ | | | { २५० १२८ | |
| तनूकृत | २१५ | ९९ | | { २७० १३१ | | तरि | ५१ | १० |
| तनूनपाद् | १४ | ५३ | तमस्विनी | २४ | ४ | तरु | ६८ | ५ |
| तनूरूह | { १०३ ३६ | | तमाल | { ७९ ६८ | | तरुण | ११३ | ४२ |
| | { १२४ ९९ | | | { २९५ ३३ | | तरुणी | १०६ | ८ |
| तन्तु | १९२ | २८ | तमालपत्र | १२९ | १२३ | तर्क | ६० | ३ |
| तन्तुभ | १६९ | १७ | तमिस्र | ४६ | ३ | तर्कविद्या | ३४ | ५ |
| तन्तुवाय | { ९९ १३ | | तमिस्रा | २४ | ५ | तर्कारी | ७९ | ६५ |
| | { १८८ ६ | | तमी | २४ | ४ | तर्जनी | १२१ | ८१ |
| तन्त्र | २६१ | १८५ | तमोनुद् | २४३ | ८९ | तर्णक | १७७ | ६१ |
| तन्त्रक | १२७ | ११२ | तमोपह | २७१ | २३८ | तर्दू | १७२ | ३४ |
| तन्त्रिका | ८२ | ८२ | तरक्षु | ९७ | १ | | { १४ १३४ | |
| तन्त्री | { ४६ ३७ | | तरंग | ५० | ५ | तर्पण | { १७६ ६६ | |
| | { २५९ १७६ | | तरंगिणी | ५५ | ३० | | { २१९ ४ | |
| तप | २७ | १९ | | | | तर्मन् | १३५ | १९ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|--------------|--------|--------|---------------|--------|--------|
| तर्ष | { ४४ | २८ | तारकजित् | १२ | ४० | तिङ्मुखवन्तचय | ३३ | २ |
| | { १७६ | ५५ | तारका | { २१ | २१ | तितड | १७० | २६ |
| तल | { १५९ | ८४ | | { १२३ | ९२ | तितिक्षा | ४३ | २४ |
| | { २६४ | २०२ | तारा | २१ | २१ | तितिक्षु | २०२ | ३१ |
| तलिन | २५० | १२७ | तारुण्य | ११२ | ४० | तित्तिरि | १०२ | ३५ |
| तरुप | २५० | १३१ | तार्क्ष्य | { १० | २९ | तिथि | २४ | १ |
| तल्लज | २८ | २७ | | { २५३ | १४५ | तिनिश | ७२ | २६ |
| तट | २१५ | ९९ | तार्क्ष्यशैल | १८५ | १९२ | तितिडी | ७५ | ४३ |
| तस्कर | १९१ | २४ | | { ४० | ९ | तितिडीक | १७२ | ३५ |
| तांडव | { ४० | १० | ताल | { ९६ | १६८ | तिन्दुक | ७४ | ३८ |
| | { २९५ | ३४ | | { १२१ | ८३ | तिन्दुकी | २८४ | ८ |
| तात | ११० | २८ | | { १८५ | १०३ | तिमि | ५३ | १९ |
| तांत्रिक | १४५ | १५ | तालपत्र | १२५ | १०३ | तिमिगिल | ५३ | २० |
| तापस | १३९ | ४२ | तालपर्णी | ८८ | १२३ | तिमित | २१७ | १०५ |
| तापसतरु | ७५ | ४६ | तालमूलिका | ८७ | ११९ | तिमिर | ४६ | ३ |
| तापिच्छ | ७९ | ६८ | तालवृन्तक | १३२ | १४० | तिरस् | { २७५ | २५६ |
| तामरस | ५७ | ४० | ताला | ९ | २४ | | { २७६ | ६ |
| तामलकी | ८९ | १२७ | ताली | { ८९ | १२७ | तिरस्कारिणी | १२८ | १२० |
| तामसी | २४ | ५ | | { ९६ | १७० | तिरस्किया | ४३ | २२ |
| ताम्बूलवली | ८८ | १२० | तालु | १२२ | ९१ | तिरीट | { ७३ | ३३ |
| ताम्बूली | ८८ | १२० | तावत् | २७३ | २४६ | | { २९४ | ३० |
| ताम्रक | १८४ | ९७ | तिक्त | ३१ | ९ | तिरोधान | १९ | १३ |
| ताम्रकर्णी | १८ | ५ | तिक्तक | { ३१ | ९ | तिरोहित | १६४ | ११२ |
| ताम्रकुट्टक | १८८ | ८ | | { ९४ | १५५ | तिर्यच् | २०३ | ३४ |
| ताम्रचूड | ९९ | १७ | तिक्तशाख | ७२ | २५ | | | |
| तीर | { ३९ | २ | तिग्म | २३ | ३५ | | | |
| | { ३५७ | १६६ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|-------------|--------|--------|----------|--------|--------|
| तिलक | ७४ | ४० | तुङ्ग | ७२ | २५ | तुरंगवदन | १७ | ७१ |
| | ११४ | ४९ | | २०९ | ७० | तुरासाहू | १२ | ४४ |
| | ११८ | ६५ | तुङ्गी | ९१ | १३९ | तुरुष्क | १२९ | १२८ |
| | १२९ | १२३ | तुच्छ | २०७ | ६६ | तुला | १८२ | ८७ |
| | १७३ | ४३ | तुण्ड | १२२ | ८९ | तुलाकोटि | १२६ | १०९ |
| तिलकालक | ११४ | ४९ | तुंडिकैरी | ८७ | ११६ | तुलामान | १८२ | ८५ |
| तिलपर्णी | १३० | १३२ | तुत्थ | ९१ | १२९ | तुल्य | १९३ | ३६ |
| तिलपीज | १६९ | १९ | | १८५ | १०१ | तुल्यपान | १७६ | ५५ |
| तिलपेज | १६९ | १९ | तुत्था | ८३ | ९५ | तुवर | ३१ | ९ |
| तिलित्त | ४७ | ९ | | ८९ | १२५ | तुवारिका | ९० | १३१ |
| तिल्य | १६६ | ७ | तुत्थांजन | १८५ | १०१ | तुष | ७७ | ५८ |
| तिल्व | ७३ | ३३ | तुन्द | १२० | ७७ | | १६९ | २२ |
| तिप्य | २१ | २२ | तुन्दपरिमृज | १९० | १८ | तुषार | २० | १८ |
| | २५४ | १४७ | तुन्दिन् | ११३ | ४४ | | २० | १९ |
| तिप्यफला | ७७ | ५७ | तुन्दिभ | ११३ | ४४ | तुषित | ७ | १० |
| तीक्ष्ण | २३ | ३५ | तुन्दिभ | ११७ | ६१ | तुहिन | २० | १८ |
| | १८४ | ९८ | | ११३ | ४४ | तूण | १६० | ८८ |
| | २३६ | ५३ | तुन्दिल | ११७ | ६१ | तूणी | १६० | ८९ |
| तीक्ष्णगन्धक | ७३ | ३१ | तुन्न | ८९ | १२७ | तूणीर | १६० | ८८ |
| तीर | ५० | ७ | तुन्नवाय | १८८ | ६ | तूद | ७५ | ४१ |
| तीर्थ | १४१ | ५० | तुय (व)रिका | ९० | १३१ | तूर्ण | १५ | ६५ |
| | २४२ | ८६ | तुमुल | १६३ | १०६ | तूल | ७५ | ४२ |
| तीत्र | १६ | ६७ | तुम्बी | ९४ | १५६ | | १८५ | १०६ |
| तीत्रवेदना | ४९ | ३ | तुरग | १५१ | ४३ | तूलिका | १९३ | ३२ |
| तु | २७२ | २४२ | तुरङ्ग | १५१ | ४३ | तूवर | २५७ | १६५ |
| | २७८ | १५ | तुरंगम | १५१ | ४३ | तूष्णीम् | २७७ | ९ |
| | २७६ | ५ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|--------|--------|------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| तृष्णीशील | २०४ | ३९ | तेमन | १७४ | ४४ | त्रयी { | ३३ | ३ |
| तृष्णीक | २०४ | ३९ | तैजस | १८४ | ९९ | | ३४ | ३ |
| तृष्णीकाम् | २७७ | ९ | तैजसा | १९३ | ३३ | त्रस | २१० | २४ |
| तृण { | ९६ | १६५ | तैत्तिर | १०४ | ४३ | त्रसर | २२४ | २४ |
| | ९६ | १६७ | तैलपर्णिक | १३० | १३१ | त्रस्त | २०१ | २६ |
| तृणद्रुम | ९६ | १७० | तैलपायिका | १०१ | २६ | त्राण { | २१७ | १०६ |
| तृणधान्य | १७० | २५ | तैलपाता | २८३ | ६ | | २२० | ८ |
| तृणध्वज | ९५ | १६० | तैलीन | १६६ | ७ | त्रात | २१७ | १०६ |
| तृणराज | ९६ | १६८ | तैष | २६ | १५ | त्रायन्ती | ९३ | १५० |
| तृणशून्य | ७९ | ६९ | तोक | ११० | २८ | त्रायमाणा | ९३ | १५० |
| तृष्या | ९६ | १६८ | तोकक | ९९ | १७ | त्रास | ४२ | २१ |
| तृतीयाकृत | १६७ | ९ | तोक्म | १६८ | १६ | त्रिक { | ४० | १० |
| तृतीयाप्रकृति | ११२ | २९ | तोटक | २९४ | ३० | | १२० | ७६ |
| तृप्त | २१६ | १०३ | तोत्र { | १५० | ४१ | त्रिककुद् | ६६ | २ |
| तृप्ति | १७६ | ५६ | | १६७ | १२ | त्रिकटु | १८६ | १११ |
| तृश् { | ४४ | २७ | तोदन | १६७ | १२ | त्रिका | ५४ | २७ |
| | १७३ | ५५ | तोमर | १६० | ९३ | त्रिकूट | ६६ | २ |
| तृष्णक् | २०० | २२ | तोय | ४९ | ४ | त्रिखट्ट | २९८ | ४१ |
| तृष्णा | २३६ | ५१ | तोयपिप्पली | ८६ | १११ | त्रिखट्वी | २९८ | ४१ |
| तेजन | ९५ | १६१ | तोरण | ६४ | १६ | त्रिगुणाकृत | १६७ | ८ |
| तेजनक | ९५ | १६२ | तौर्यत्रिक | ४० | १० | त्रितक्ष | २९८ | ४१ |
| तेजनी | ८२ | ८३ | त्यक्त | २१७ | १०७ | त्रितक्षी | २९८ | ४१ |
| तेजस् { | ११७ | ६२ | त्याग | १३७ | २९ | त्रिदश | ७ | ७ |
| | २७० | २३४ | त्रपा | ४३ | २३ | त्रिदशालय | ६ | ६ |
| तेजित | २१४ | ९१ | त्रपु | १८५ | १०५ | त्रिदिव | ६ | ६ |
| त्रम | २२५ | २९ | | | | त्रिदिवेश | ७ | ७ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|-------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| त्रिपथगा | ५५ | ३१ | त्र्यंबक | १० | ३३ | दंष्ट्रिन् | ९७ | २ |
| त्रिपुटा { | ८५ | १०८ | त्र्यम्बकसख | १६ | ६८ | दध | १९० | १९ |
| | ८९ | १२५ | त्र्यषण | १८६ | १११ | दक्षिण | १९७ | ८ |
| त्रिपुरान्तक | १० | ३३ | त्व | २१२ | ८२ | दक्षिणस्थ | १५४ | ६० |
| त्रिफला | १८७ | १११ | त्वक्क्षीरी | १८६ | १०९ | दक्षिणा | १७ | १ |
| त्रिभण्डी | ८५ | १०८ | त्वक्पत्र | ९० | १३४ | दक्षिणामि | १३५ | १९ |
| त्रियामा | २४ | ४ | त्वक्सार | ९९ | १६० | दक्षिणारु | १९१ | २४ |
| त्रिलोचन | १० | ३२ | त्वच् { | ६९ | १२ | दक्षिणार्ह | १९७ | ५ |
| त्रिवर्ग { | १४३ | ५७ | | ११७ | ६२ | दक्षिणोय | १९७ | ५ |
| | १४६ | १९ | त्वच् | ९० | १३४ | दग्ध | २१५ | ९९ |
| त्रिविक्रम | ८ | २० | त्वचिसार | ९५ | १६० | दग्धिका | १७५ | ४९ |
| त्रिविष्टप | ६ | ६ | त्वरा | २२४ | २६ | | | |
| त्रिवृत् | ८५ | १०८ | त्वरित { | १५ | ६४ | | २३ | ३१ |
| त्रिवृता | ८५ | १०८ | | १५६ | ७३ | | १४६ | २० |
| त्रिसंध्य | २४ | ३ | त्वरितोदित | ३७ | २० | दण्ड { | १४६ | २१ |
| त्रिसीत्य | १६७ | ९ | त्वष्ट | २१५ | ९९ | | १५८ | ७९ |
| त्रिस्रोतस् | ५५ | ३१ | त्वष्टृ { | १८८ | ९ | | २३४ | ४२ |
| त्रिहरय | १६७ | ९ | | २३३ | ३५ | दंडधर | १४ | ५९ |
| त्रिहायणी | १७८ | ६८ | त्विद्(घ) | २३ | ३४ | दण्डनीति | ३४ | ५ |
| | ८९ | १२५ | त्विषाम्पति | २२ | ३० | दंडविष्कम्भ | १८० | ७४ |
| त्रुटि { | २०८ | ६२ | त्सरु | १६० | ९० | दंडाहत | १७५ | ५३ |
| | २३४ | ३७ | द | | | ददुम्न | ९२ | १४७ |
| त्रेता { | १३५ | २० | दंश | १०१ | २७ | ददुण | ११६ | ५९ |
| | २३९ | ६९ | दंशन | १५९ | ६४ | ददुरोगिन् | ११६ | ५९ |
| त्रोटि | १०३ | ३६ | दंशित | १५५ | ६५ | दधित्य | ७१ | २१ |
| व्यब्दा | १७८ | ६८ | दंशी | १०१ | २७ | दधिफल | ७१ | २१ |
| | | | | | | दधिसक्तु | १७५ | ७८ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------|--------|--------|-----------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| दनुज | ७ | १२ | दरत् | २८४ | ९ | दस्यु { | १४५ | ११ |
| दन्त | १२२ | ९१ | दरिद्र | २०६ | ४९ | दस्यु { | १९१ | २४ |
| दन्तधावन | ७६ | ४९ | दरी | ६६ | ६ | दस्य | १३ | ५१ |
| दन्तभाग | ५० | ४० | दर्दुर | ५४ | २४ | दहन | १४ | ५५ |
| दन्तशठ { | ७१ | २१ | दर्पक | ९ | २५ | दाक्षायणी { | ११ | ३७ |
| | ७२ | २४ | दर्पण | १३२ | १४० | | २१ | ११ |
| दन्तशठा | ९१ | १४० | दर्म | ९६ | १६६ | दाक्षाय्य | १०० | २१ |
| दन्तावल | १४९ | ३४ | दर्वि | १७२ | ३४ | दाडिम | ७८ | ६४ |
| दन्तिका | ९२ | १४४ | दर्वीकर | ४७ | ८ | दाडिमपुष्पक | ७६ | ४९ |
| दन्तिन् | १४९ | ३४ | दर्श { | २५ | ८ | दांडपाता | २८३ | ६ |
| दन्दशूक | ४७ | ८ | दर्शक | १४१ | ४८ | दात | २१६ | १०३ |
| दभ | २०८ | ६१ | दर्शन | १४४ | ६ | दास्यूह | १०० | २१ |
| दम { | १४६ | २१ | दल | २२५ | ३१ | दात्र | १६८ | १३ |
| | २१९ | ३ | दव | ६९ | १४ | दान { | १३७ | २९ |
| दमथ | २१९ | ३ | दविष्ट | २६५ | २०६ | | १४६ | २० |
| दमित | २१५ | ९७ | दवीयस् | २०९ | ६९ | | १५० | ३७ |
| दमुना | १४ | ६६ | दशन | २०९ | ६९ | दानव | ४ | १२ |
| दम्पती | ११२ | ३८ | दशनवासस् | १२२ | ९० | दानवारि | ७ | ९ |
| दम्भ | ४४ | ३० | दशनबल | १२२ | ९० | दानशौंड | १९७ | ६ |
| दम्भोलि | १३ | ४७ | दशमिन् | १२२ | ९० | दांत { | १४० | ४२ |
| दम्य | १७७ | ६२ | दशमीस्थ | ८ | १४ | | २१६ | ९७ |
| दया | ४२ | १८ | दशमिन् | ११३ | ४३ | दाति | २१९ | ३ |
| दयालु | १९८ | १५ | दशा { | १२७ | ११४ | दापित | २०४ | ४० |
| दयित | २०७ | ६३ | | २६७ | २१६ | दामन् | १७९ | ७३ |
| दर { | ४२ | २१ | दशानीकिनी | १५८ | ८१ | दामनी | १७९ | ७३ |
| | २६१ | १८४ | | | | दामोदर | ८ | १८ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|--------------|--------|--------|---------------|--------|--------|
| दाम्भिक | २३० | १७ | दित | २१६ | १०३ | दीक्षान्त | १३७ | २७ |
| दायाद | २४३ | ८९ | दितिसुत | ७ | १२ | दीक्षित | १३३ | ८ |
| दारद | ४८ | ११ | दिधिषु | १०९ | २३ | दीदिवि | १७५ | ४८ |
| दारा | १०५ | ६ | दिधिषू | १०९ | २३ | दीधिति | २३ | ३३ |
| दारित | २१६ | १०७ | दिन | २४ | २ | दीन | २०६ | ४९ |
| दारु { | ६९ | १३ | दिनान्त | २४ | ३ | दीप | १३१ | १३८ |
| | ७७ | ५३ | | | | दीपक | २२९ | ११ |
| दारुण | ४२ | २० | दिव { | ६ | ६ | दीप्ति | २३ | ३४ |
| दारुहरिद्रा | ८४ | १०२ | | १७ | १ | दीप्य | ८६ | १११ |
| दारुहस्तक | १७२ | ३४ | दिवस | २४ | २ | दीर्घ | २०९ | ६९ |
| दार्वाघाट | ९९ | १७ | दिवस्पति | १२ | ४२ | दीर्घकोशिका | ५४ | २५ |
| दार्विका { | ८८ | ११९ | दिवा | २७६ | ६ | दीर्घदर्शिन | १३३ | ६ |
| | १८५ | १०१ | दिवाकर | २२ | २८ | दीर्घपृष्ठ | ४७ | ८ |
| दार्वी | ८४ | १०२ | दिवाकीर्ति { | १८८ | १० | दीर्घवृन्त | ७७ | ५७ |
| दाव | २६५ | २०६ | | ११० | १९ | दीर्घसूत्र | ११९ | १७ |
| दाविक | ५६ | ३६ | दिविषद् | ७ | ८ | दीर्घिका | ५५ | २८ |
| दाश | ५२ | १५ | दिवौकस् { | ७ | ७ | दुःख { | ४९ | ३ |
| दाशपुर | ९० | १३१ | | २६९ | २२६ | | २१ | २३ |
| दास | १९० | १७ | दिव्यगायन | २५१ | १३३ | दुःप्रवर्षिणी | ८६ | ११४ |
| दासी | ८० | ७४ | दिव्योपपादुक | २०६ | ५० | दुःषमम् | २७८ | १४ |
| दासीसम | २९२ | २७ | दिश | १७ | १ | दुःस्पर्श | ८३ | ९१ |
| दासेय | १९० | १७ | दिश्य | १७ | २ | दुःस्पर्शा | ८३ | ९४ |
| दासेर | १९० | १७ | | २४ | १ | दुकूल | १२७ | ११३ |
| दिगम्बर | २०४ | ३९ | दिष्ट { | २९ | २८ | दुग्ध | १७५ | ५१ |
| दिग्गज | १८ | ४ | | २३३ | ३५ | दुग्धिका | ८४ | १०० |
| दिग्ध { | १६० | ८८ | दिष्टान्त | १६४ | ११६ | दुद्रुम | ९२ | १४८ |
| | २१३ | ९० | दिष्ट्या | २७७ | १० | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|-------------|----------|------------|--------|--------|-------------|--------------|-----------|
| दुन्दुभि | { ४० २५१ | ६ १३६ | दुहितृ | १०० | २८ | देव | { ७ ४१ | ७ १३ |
| दुरध्व | ६१ | १६ | दूत | १४६ | १६ | देवकीनन्दन | ८ | २१ |
| दुरालभा | ८३ | ९२ | दूती | १०८ | १७ | देवकुसुम | १२९ | १२५ |
| दुरित | २८ | २३ | दूत्य | १४६ | १६ | देवखातक | ५४ | २७ |
| दुरोदर | २५८ | १७१ | दून | २१६ | १०२ | देवखातविल | ६६ | ६ |
| दुर्ग | १४६ | १७ | दूर | २०९ | ६८ | देवच्छन्द | १२५ | १०९ |
| दुर्गति | २०६ | ४९ | दूरदार्शिन | १३३ | ६ | देवजग्धक | ९६ | १६६ |
| दुर्गति | ४८ | १ | दूर्वा | ९४ | १५८ | देवतरु | १३ | ५० |
| दुर्गन्ध | ३२ | १२ | दूषिका | ११८ | ६७ | देवता | ७ | ९ |
| दुर्गसञ्चर | २२४ | २५ | दूष्य | १२८ | १२० | देवताड | ७९ | ६९ |
| दुर्गा | ११ | ३७ | दूष्या | १५१ | ४२ | देवत्व | १४१ | ५२ |
| दुर्जन | २०५ | ४७ | | १६ | ६७ | देवदारु | ७७ | ५४ |
| दुर्दिन | १९ | १२ | दृढ | २१० | ७६ | देवद्रव्यङ् | २०२ | ३४ |
| दुर्नामक | ११५ | ५४ | | ३३५ | ४५ | देवन | { १९५ २४८ | ४५ ११७ |
| दुर्नामन् | ५४ | २५ | दृढसंधि | २१० | ७५ | देववल्लभ | ७२ | २५ |
| दुर्बल | ११३ | ४४ | दृति | २८९ | १९ | देवभूय | १४१ | ५२ |
| दुर्मनस् | १९७ | ८ | दृव्य | २१२ | ८६ | देवमातृक | ६० | १२ |
| दुर्मुख | २०३ | ३६ | दृश | १२३ | ९३ | देवमोनि | ७ | ११ |
| दुर्वर्ण | १८४ | ९६ | दृषद् | ६६ | ४ | देवर | १११ | ३२ |
| दुर्विध | २०६ | ४९ | दृष्ट | १४८ | ३० | देवल | १८९ | ११ |
| दुर्हृद् | १४५ | १० | दृष्टरजस् | १०६ | ८ | देवशिल्पिन | २३३ | ३५ |
| दुश्चयवन | १२ | ४४ | दृष्टान्त | २३८ | ६२ | देवसभा | १३ | ४८ |
| दुष्कृत | २८ | २३ | दृष्टि | १२३ | ९३ | देवसायुज्य | १४१ | ५२ |
| दुष्ट | २७९ | १९ | | २३४ | ३८ | देवाजीव | १८९ | ११ |
| दुष्पत्र | ८९ | १२८ | दृष्टेन्दु | २५ | ९ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|-------------|--------|--------|---------------|--------|--------|
| देवी { | ४१ | १३ | दोषैकदृक् | २०५ | ४६ | द्राक्षा | ८५ | १०७ |
| | ८२ | ८३ | दोस् | १२० | ८० | द्राघिष्ठ | २१८ | ११२ |
| | ९० | १३३ | दोहद | ४४ | २७ | द्राघिडक | ९० | १३५ |
| देवृ | १११ | ३२ | दोहदवती | १०९ | २१ | द्रु | ६८ | ५ |
| देश | ५९ | ८ | द्रुः (स) | १७ | २ | द्रुकिलिम | ७७ | ५३ |
| देशरूप | १४७ | २४ | द्रुति { | २० | १७ | द्रुषण | १६० | ९१ |
| देह | ११९ | ७१ | | २३ | ३४ | द्रुण | ९९ | १४ |
| देहली | ६४ | १३ | द्रुमणि | २२ | ३० | द्रुणी | २८४ | ९ |
| दैतेय | ७ | १२ | द्रुम्न | १८३ | ९० | | १५ | ६४ |
| दैत्य | ७ | १२ | द्रूत | १९५ | ४४ | द्रुत { | २१३ | ८९ |
| दैत्यगुरु | २२ | २५ | द्रूतकारक | १९५ | ४४ | | २१६ | १०० |
| दैत्या | ८८ | १२३ | द्रूतकृत् | १९५ | ४३ | | २७५ | २ |
| दैत्यारि | ८ | १९ | द्यो(द्योः) | { | ६ | द्रुम | ६८ | ५ |
| दैव्य | २५५ | १५३ | | { | १७ | द्रुमामय | १२९ | १२५ |
| दैव्य | १२७ | ११४ | द्योत | २३ | ३४ | द्रुमोत्पल | ७८ | ६० |
| दैव { | २९ | २८ | द्रप्स | १७५ | ५१ | द्रुवय | १८२ | ८५ |
| | १३६ | २४ | द्रव { | ४५ | ३२ | द्रुहिण | ८ | १७ |
| | १४१ | ५० | | { | १६४ | द्रोण { | ९९ | १४ |
| दैवज्ञ | १४५ | १४ | द्रवन्ती | ८२ | ८७ | | १८२ | ८८ |
| दैवज्ञा | १०८ | २० | | | | | २३६ | ४९ |
| दैवत { | ७ | ९ | द्रविण { | १६२ | १०२ | द्रोणकाक | १०० | २१ |
| | २७ | २१ | | { | १८३ | द्रोणक्षीरा | १७९ | ७२ |
| | | | | | २३६ | द्रोणद्रुग्धा | १७९ | ७२ |
| | | | | | २९० | | | |
| दोला { | ८३ | ९५ | द्रव्य { | १८३ | ९० | द्रोणी { | ५१ | ११ |
| | १५३ | ५३ | | { | २५५ | | ८३ | ९५ |
| दोषज्ञ | १३३ | ५ | द्राक् | २७५ | २ | द्रोहचिन्तन | ३० | ४ |
| दोषा | २७६ | ६ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|--------------|--------|--------|----------|--------|--------|
| धर्मसंहिता | ३४ | ६ | धारा | १६२ | ४९ | धूत | २१७ | १०७ |
| धर्मिणी | १०६ | १० | धाराधर | १८ | ७ | धूपायित | २१६ | १०२ |
| धव | १११ | ३५ | धारासम्पात | १९ | ११ | धूपित | २१६ | १०२ |
| | २६५ | २०६ | धार्तराष्ट्र | १०१ | २४ | धूमकेतु | २३७ | ५८ |
| धवल | ३२ | १३ | धावनी | ८३ | ९३ | धूमयोनि | १८ | ७ |
| धवला | १७८ | ६७ | धिक् | २७२ | २४० | धूमल | ३३ | १६ |
| धवित्र | १३३ | २३ | धिक्कृत | २०४ | ३९ | धूम्या | २२७ | ४२ |
| | ८८ | १२४ | | २१४ | ९४ | धूम्याट | ९९ | १६ |
| धातकी | २८३ | ७ | धिषण | २१ | २४ | धूम्र | ३३ | १६ |
| धातु | ६७ | ८ | धिषणा | २९ | १ | धूर्जटि | १० | ३३ |
| | २३८ | ६५ | धिष्य | २५५ | १५५ | | ८१ | ७७ |
| धातुपुष्पिका | ८८ | १२४ | धी | २९ | १ | धूर्त | १९५ | ४३ |
| धातृ | ८ | १७ | धीन्द्रिय | ३१ | ८ | | २०६ | ४७ |
| धात्री | १५९ | १७६ | धीमत् | १३३ | ६ | धूर्वह | १७८ | ६५ |
| धाना | १७४ | ४७ | धीमती | १०७ | १२ | धूलि | १६१ | ९८ |
| धानुष्क | १५६ | ६९ | धीर | १२९ | १२४ | धूसर | ३२ | १३ |
| धान्य | १६९ | २१ | | १३३ | ५ | धृति | २४० | ७४ |
| धान्यत्वच् | १६९ | २२ | धीवर | ५२ | १५ | धृष्ट | २०१ | २५ |
| धान्याक | १७३ | ३८ | धीशक्ति | २२४ | २५ | धृष्णज् | २०१ | २५ |
| धान्यांश | २३५ | ४६ | धीसचिव | १४३ | ४ | धेनु | १७२ | ७१ |
| धान्याम्ल | १७३ | ३९ | धुत | २१२ | ८७ | धेनुका | १४९ | ३६ |
| धामन् | २४९ | १२४ | धुनी | ५५ | ३० | | २३० | १५ |
| धामार्गव | ८२ | ८८ | धुर | १५३ | ५५ | धेनुप्या | १७९ | ७२ |
| | ८७ | ११७ | धुरन्धर | १७८ | ६५ | धेनुक | १७७ | ६० |
| धारया | १३६ | २२ | धुरीण | १७८ | ६५ | धैवत | ३९ | १ |
| धारणा | १४७ | २६ | धुर्य | १७८ | ६५ | धोरण | १५४ | ५८ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|-------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| धौतकौशेय | १२७ | ११३ | नक्षत्र | २१ | २१ | नद | २३७ | ५७ |
| धौरितक | १५२ | ४८ | नक्षत्रमाला | १२५ | १०६ | नदी | ५५ | २२ |
| धौरेय | १७८ | ६५ | नक्षत्रेश | २० | १५ | नदीमातृक | ६० | १९ |
| ध्याम | ९६ | १६६ | नख | ८९ | १३० | नदीसर्ज | ७५ | ४९ |
| ध्रुव | २१ | २० | नखर | १२१ | ८३ | नध्री | १९२ | ३१ |
| | ६८ | ८ | | १२१ | ८३ | ननान्द | ११० | २९ |
| | २१० | ७२ | नग | २३१ | १९ | ननु | २७३ | २४८ |
| | २६६ | २११ | नगरी | ६१ | १ | | २७८ | १४ |
| ध्रुवा | ८७ | ११५ | नगौकम् | १०२ | ३३ | नन्दक | १० | २८ |
| | १३६ | २५ | नग्न | २०४ | ३९ | नन्दन | १२ | ४५ |
| ध्वज | १६२ | ९९ | नग्नह | १९४ | ४२ | नन्दिवृक्ष | ८९ | १२८ |
| ध्वजिनी | १५७ | ७८ | नग्निका | १०६ | ८ | नन्द्यावर्त | ६३ | १० |
| ध्वनि | ३८ | २२ | | १०८ | १७ | नपुंसक | ११२ | ३९ |
| ध्वनित | २७४ | ९४ | नट | ७७ | ५६ | नप्री | ११० | २९ |
| ध्वस्त | २१६ | १०४ | | १८९ | १२ | नभस् | १७ | १ |
| ध्वांक्ष | १०० | २० | नटन | ४० | १० | | २७ | १६ |
| | २६७ | २१९ | नटी | ८९ | १२९ | | २७० | २३२ |
| ध्वान | ३८ | २२ | नड | ९५ | १६२ | नभसंगम | १०२ | ३४ |
| ध्वान्त | ४६ | ३ | | ९६ | १६५ | नभस्य | २७ | १७ |
| | न | | | २९५ | ३३ | नभस्वत् | १५ | ६३ |
| न | २७७ | ११ | नडप्राय | ५९ | ९ | नभस् | २७९ | १८ |
| नकुलेष्टा | ८७ | ११५ | नडसंहति | ९६ | १६८ | नभसित् | २१६ | १०१ |
| नक्तक | १२७ | ११५ | नडुत् | ५९ | ९ | नभस्कारी | ९१ | १४१ |
| नक्तम् | २७६ | ६ | नडुल | ५९ | ९ | नभस्या | १३८ | ३४ |
| नक्तमाल | ७६ | ४७ | नत | २१० | ७१ | नभस्थित | २१६ | १०१ |
| नक्र | ५३ | २१ | नतनासिक | ११३ | ४५ | नमुचिसुदन | १२ | ४३ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------|--------|--------|--------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| नय | २३० | ९ | नष्ट | १६४ | ११२ | नागसम्भव | १८५ | १०५ |
| नयन | १२३ | ९३ | नष्टचेष्टता | ४५ | ३३ | नागान्तक | १० | २९ |
| नर | १०४ | १ | नष्टाग्नि | १४२ | ५३ | नाट्य | ४० | १० |
| नरक | ४८ | १ | नष्टेन्दुकला | २५ | ९ | नाडिका | १७२ | ३४ |
| नरवाहन | १६ | ६९ | नस्तित | १७७ | ६३ | नाडिन्धम | १८८ | ८ |
| नर्तक | ४१ | ११ | नस्योत | १७७ | ६३ | नाडी | ११८ | ६५ |
| नर्तकी | ४० | ८ | नहि | २७७ | ११ | नाडी | १६९ | २२ |
| नर्तन | ४० | १० | ना | २७७ | ११ | नाडी | २३५ | ४३ |
| नर्मदा | ५५ | ३२ | | ६ | ६ | नाडीव्रण | ११५ | ५४ |
| नर्मन् | ४५ | ३२ | नाक | १७ | २ | नाथवत् | १९९ | १६ |
| नलकूवर | १६ | ७० | | २२८ | २ | नाद | ३८ | ३३ |
| नलद | ९५ | १६४ | नाकु | ५० | १४ | | ७३ | ३० |
| नलमीन | ५२ | १८ | नाकुली | ८७ | ११४ | नादियी | ७४ | ३८ |
| नलिन | ५७ | ३९ | | ४७ | ४ | नादियी | ७९ | ६५ |
| नलिनी | ५६ | ३९ | | १४९ | ३४ | नादियी | ८७ | ११८ |
| नली | ८९ | १२९ | नाग | १८५ | १०५ | नाना | २७३ | २४७ |
| नल्व | ६१ | १८ | | २०८ | ५९ | नाना | २७५ | ३ |
| नव | ३११ | ७७ | | २३१ | २१ | नानारूप | २१४ | ९३ |
| नवदल | ५७ | ४३ | नागकेसर | ७८ | ६५ | नान्दीकर | २०३ | ३८ |
| नवनीत | १७५ | ५२ | नागजिहिका | १८६ | १०८ | नान्दीवादिन | २०३ | ३८ |
| नवमालिका | ८० | ७२ | नागबला | ८७ | ११७ | नापित | १८८ | १० |
| नवसुतिका | १७९ | ७१ | नागर | १७३ | ३८ | | १६३ | ५६ |
| नवाम्बर | १२७ | ११२ | नागर | २६१ | १८८ | नाभि | २५१ | १३७ |
| नवीन | २११ | ७७ | नागरंग | ७४ | ३८ | नाभि | २८४ | ९ |
| नवोद्धृत | १७५ | ५२ | नागलोक | ४६ | १ | नाम | २७४ | २५१ |
| नव्य | २११ | ७७ | नागवल्ली | ८८ | १२० | नामधेय | ३६ | ८ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|-----------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| नामन् | ३५ | ८ | निःश्रेणि | ६५ | १८ | निकेतन | ६२ | ४ |
| नाय | २२० | ९ | निःश्रेयस | ३१ | ६ | निकोचक | ७२ | २९ |
| नायक | १९८ | ११ | निःषमम् | २७८ | १४ | निकण | ३८ | २४ |
| नारक | { ४८ | १ | निःसरण | ६५ | १९ | निकाण | ३८ | २४ |
| | { ४८ | २ | निःस्व | २०६ | ४९ | निखिल | २०९ | ५६ |
| नारद | १३ | ४८ | निकृष्ट | २०९ | ६६ | निगड | १५१ | ४१ |
| नाराच | १५९ | ८७ | निकर | २०३ | ३९ | निगद | २२१ | १२ |
| नाराची | १९३ | ३२ | निकर्षण | ६५ | १९ | | { ६१ | १ |
| नारायण | ८ | १८ | निकष | १९३ | ३२ | निगम | { १८० | ७८ |
| नारायणी | ८४ | १०१ | निकषा | { २७६ | ७ | | { २५२ | १४० |
| नारी | १०४ | २ | | { २७९ | १९ | निगाद | २२१ | १२ |
| नाल | { ५७ | ४२ | निकषात्मज | १५ | ६० | निगार | २२६ | ३७ |
| | { १६९ | २२ | निकाम | १७६ | ५७ | निगाल | १५२ | ४८ |
| नाला | ५७ | ४२ | निकाय | १०४ | ४२ | निग्रह | २२१ | १३ |
| नालिकेर | ९६ | १६८ | निकाय्य | ६२ | ५ | निघ | २२६ | ३६ |
| नाविक | ५१ | १२ | निकार | { २२२ | १५ | निघस | १७६ | ५६ |
| नाव्य | ५० | १० | | { २२६ | ३६ | निघ्न | ११९ | १६ |
| नाश | १६४ | ११६ | निकारण | १६४ | ११२ | निचुल | ७८ | ६१ |
| नासत्य | १३ | ५१ | निकुंचक | १८२ | ८८ | निचोल | १२७ | ११६ |
| नासा | { ६४ | १३ | निकुंज | ६७ | ८ | निज | २३३ | ३७ |
| | { १२२ | ८९ | निकुम्भ | ९२ | १४४ | नितम्ब | { ६६ | ५ |
| नासिका | १२२ | ८९ | निकुरम्ब | १०३ | ४० | | { ११९ | ७४ |
| नास्तिकता | ३० | ४ | निकृत | { २०४ | ४१ | नितम्बिनी | १०५ | ३ |
| निःशलाक | १४७ | २२ | | { २०५ | ४६ | नितान्त | १६ | ६७ |
| निःशेष | २०९ | ६५ | निकृति | ४४ | ३० | नित्य | { १६ | ६६ |
| निःशोध्य | २०७ | ५६ | निकृष्ट | २०७ | ५४ | | { २१० | ७२ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------------|------------|----------|--------------------|---------------|----------------------|--------------------|----------------|
| निदाघ | { २७ ४५ | १९ ३३ | निबन्धन | ४० | ७ | निरस्त | { ३७ १६० २०४ | २० ८८ ४० |
| निदान | २९ | २८ | निभ | १९४ | ३७ | निशकरिष्णु | २०२ | ३० |
| निदिग्ध | २१३ | ८९ | निभृत | २०० | २५ | निराकृत | २०४ | ४० |
| निदिग्धिका | ८३ | ९३ | निमय | १८१ | ८० | निराकृति | { १४२ २२५ | ५३ ३१ |
| निदेश | { १४७ २६० | २५ १७९ | निमित्त | २४१ | ७६ | निरामय | ११६ | ५७ |
| निद्रा | ४६ | ३३ | निमेष | २५ | ११ | निरीश | १६८ | १३ |
| निद्राण | २०२ | ३३ | निम्न | ५५ | १५ | निर्ऋति | ४८ | २ |
| निद्रालु | २०२ | ३३ | निम्नगा | ५५ | ३० | निर्गुण्डि | { ७९ ७९ | ८६ ७० |
| निधन | { १६४ २४९ | ११६ १२३ | निम्ब | ७८ | ६२ | निर्ग्रन्थन | १६४ | ११३ |
| निधि | १७ | ७१ | निम्बतरु | ७२ | २६ | निर्घोष | ३८ | २३ |
| निधुवन | १४२ | ५७ | नियति | २९ | २८ | निर्जर | ७ | ७ |
| निध्यान | २२५ | ३१ | नियन्तृ | १५४ | ५९ | निर्जितेन्द्रियग्राम | १४० | ४३ |
| निनद | ३८ | २२ | नियम | { ३० १३९ १४१ | ५ ३७ ४९ | निर्झर | ६६ | ५ |
| निनाद | ३८ | २२ | नियामक | ५१ | १२ | निर्णय | ३० | ३ |
| निन्दा | ३६ | १३ | नियुत | २९१ | २४ | निाणक्त | २०७ | ५६ |
| निप | १७२ | ३२ | नियुद्ध | १६३ | १०६ | निर्णेजक | १८९ | १० |
| निपठ | २२५ | २९ | नियोज्य | १९० | १७ | निर्देश | १४७ | २५ |
| निपाठ | २२५ | २९ | निर | २७४ | २५३ | निर्भर | { १६ २७५ | ६६ २ |
| निपातन | २२४ | २७ | निरंतर | २०९ | ६६ | निर्मद | १४९ | ३६ |
| निपान | ५४ | २६ | निरय | ३८ | १ | निर्मुक्त | ४७ | ६ |
| निपुण | १९६ | ४ | निरर्गल | २१२ | ८३ | निर्मोक | ४८ | ९ |
| निबन्ध | ११५ | ५५ | निरर्थक | २११ | ८१ | | | |
| | | | निरवग्रह | १९९ | १५ | | | |
| | | | निरसन | २२५ | ३१ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|-----------|--------|-----------|-----------|--------|---------------|-----------|--------|
| निर्याण | १५० | ३८ | निवीत | { १२७ ११३ | | निष्कुटि | ८८ | १२५ |
| निर्यातन | २४८ | १२० | | { १४१ ५० | | निष्कुह | ६९ | १३ |
| निर्यास | २८६ | १३ | निवृत्त | २१३ | ८८ | निष्क्रम | २२४ | २५ |
| निर्वपण | १३७ | ३० | निवेश | १४९ | ३३ | निष्ठा | { ४१ १५ | |
| निर्वणन | २२५ | ३१ | निशा | २४ | ४ | | { २३४ ४१ | |
| निर्वहण | ४१ | १५ | निशाख्या | १७३ | ४१ | निष्ठान | { १७४ ४४ | |
| निर्वाण | { ३१ ६ | | निशान्त | ६२ | ५ | | { २४८ ११६ | |
| | { २१५ ९६ | | निशापति | १९ | १४ | निष्ठीवन | २२६ | ३८ |
| निर्वान | २१५ | ९६ | निशित | २१४ | ९१ | निष्ठुर | { ३७ १९ | |
| निर्वाद | { ३६ १३ | | निशीथ | २५ | ६ | | { २१० ७६ | |
| | { २४३ ९० | | निशीथिनी | २४ | ४ | निष्ठ्यूत | २१३ | ८७ |
| निर्वापण | १६४ | ११४ | निश्चय | ३० | ३ | निष्ठ्यूति | २२६ | ३८ |
| निर्वाय | १९८ | १३ | निश्चेणि | ६५ | १८ | निष्ठेय | २२६ | ३७ |
| निर्वासन | १६४ | ११३ | निषङ्ग | १६० | ८८ | निष्ठेवन | २२६ | ३८ |
| निर्वृत्त | २१६ | १०० | निषगिन् | १५६ | ६९ | निष्णात | १९६ | ४ |
| | { १९४ ३८ | | निषद्या | ६२ | २ | निष्पक्व | २१४ | ९५ |
| निर्वेश | { २२३ २० | | निषद्वर | ५० | ९ | निष्पत्तिमुता | १०६ | ११ |
| | { २६७ २१५ | | निषध | ६६ | ३ | निष्पन्न | २१६ | १०० |
| निर्व्यथन | ४६ | २ | निषाद | { ३८ १ | | निष्पाव | २२४ | २४ |
| निर्व्यूह | २७१ | २३६ | | { १९० २० | | निष्प्रभ | २१६ | १०० |
| निर्हार | २२२ | १७ | निषादिन् | १५४ | ५९ | निष्प्रवाणिन् | १२७ | ११२ |
| निर्हारिन् | ३२ | ११ | निषृदन | १६४ | ११३ | निर्ग | ४६ | ३८ |
| निर्होद | ३८ | २३ | निष्क | २३० | १४ | निस्तृष्ट | २१३ | ८८ |
| निलय | ६२ | ५ | निष्कला | १०९ | २१ | निस्तल | २०९ | ६९ |
| निवह | १०३ | ३९ | निष्कासित | २०४ | ३९ | निस्तर्हण | १६४ | ११४ |
| निवात | २४२ | ८४ | निष्कुट | ६७ | १ | निस्त्रिंश | १६० | ८९ |
| निवाप | १३७ | ३१ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------------|-----------|--------|-------------|-----------|--------|------------|-----------|--------|
| निस्त्राव | १७५ | ४९ | नीलिका | ७९ | ७० | नेतृ | १९८ | ११ |
| निस्त्रवन | ३८ | २३ | नीलिनी | ८३ | ९५ | नेत्र | { १२३ ९३ | |
| निस्त्रान | ३८ | २३ | नीली | ८३ | ९४ | | { २०७ १८० | |
| निहन्न | १६४ | ११४ | नीवाक | २२४ | २३ | नेत्राम्बु | १२३ | ९३ |
| निहाका | ५३ | २२ | नीवार | १७० | २५ | नेदिष्ठ | २०९ | ६८ |
| निहिंसन | १६४ | ११३ | नीवी | { १८१ ८० | | नेपथ्य | १२४ | ९९ |
| निहीन | १९० | १६ | | { २६६ २१२ | | नेमि | { ९४ ३७ | |
| | | | नीवृत् | ५९ | ८ | | { १५३ ५६ | |
| निहव | { ३६ १७ | | नीशार | १२८ | ११८ | नेमी | ७२ | २६ |
| | { २६५ २०८ | | नीहार | २० | १८ | नैकभेद | २१२ | ८३ |
| नीकाश | १९४ | ३७ | नु | २७३ | २४८ | नैगम | { १८० ७८ | |
| नीच | { १९० १६ | | नुत | २१३ | ८७ | | { २५२ १४० | |
| | { २०९ ७० | | नुति | ३५ | ११ | नैचिकी | १७८ | ६७ |
| नीचैस् | २७८ | १७ | नुन्न | २१३ | ८७ | नैपाली | १८६ | १०८ |
| नीड | १०३ | ३७ | नूतन | २११ | ७७ | नैमेय | १८१ | ८० |
| नीडोद्भव | १०२ | ३४ | नून | २११ | ७८ | नैयग्रोध | ७० | १८ |
| नीध्र | ६४ | १४ | नूनम् | { २७४ २५० | | नैर्ऋत | { १५ ६० | |
| नीप | ७५ | ४२ | | { २७८ १६ | | | { १७ २ | |
| नीर | ४९ | ४ | नृपुर | १२६ | १०९ | नैष्किक | १४४ | ७ |
| नील | ३२ | १४ | नृ | १०४ | १ | नैखिशिक | १५६ | ७० |
| | | | नृत्य | ४० | १० | नो | २७७ | ११ |
| नीलकण्ठ | { १०२ ३० | | नृप | १४३ | १ | नौ | ५१ | १० |
| | { २३४ ४० | | नृपलक्ष्मन् | १४९ | ३२ | नौकादंड | ५१ | १३ |
| नीलंगु | ९९ | १३ | नृपसम | २९३ | २७ | नौतार्य | ५० | १० |
| नीललोहित | १० | ३३ | नृपासन | १४८ | ३१ | न्यक्ष | २६९ | २२५ |
| नीला | १०१ | २६ | नृशंस | २०६ | ४७ | न्यग्रोध | { ७३ ३२ | |
| नीलाम्बर | ९ | २४ | नृपेन | २९७ | ४० | | { २४४ ९६ | |
| नीलाम्बुजन्मन् | ५६ | ३७ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|-----------|--------|------------|-----------|--------|------------|-----------|--------|
| न्यग्रोधी | ८२ | ८७ | पक्षमूल | १०३ | ३६ | पटच्चर | १२७ | ११५ |
| न्यङ् | २०९ | ७० | पक्षान्त | २५ | ७ | पटल | { ६४ १४ | |
| न्यङ्कु | ९८ | १० | पक्षिन् | १०२ | ३२ | | { २६४ २०१ | |
| न्यस्त | २१३ | ८८ | पक्षिणी | २४ | ५ | पटलप्रान्त | ६४ | १४ |
| न्याद | १७६ | ५६ | पक्षमन् | २४८ | १२१ | पटवासक | १३२ | १३९ |
| न्याय | १४७ | २४ | पङ्क | { २८ २३ | | पटह | { ४० ६ | |
| न्याय्य | { १४७ २५ | १६१ | पङ्किल | { ५० ९ | | | { १६३ १०८ | |
| न्यास | १८१ | ८१ | पङ्कुरुह | ५७ | ४० | पट्ट | { ९४ १५६ | |
| न्युञ्ज | ११७ | ६१ | पङ्क्ति | { १८२ ८४ | | | { १९० १९ | |
| न्यूख | २८८ | १७ | | { २४० ७२ | | | { २०३ ३५ | |
| न्यून | २५० | १२८ | पङ्गु | ११४ | ४८ | पट्टपर्णी | ९१ | १३८ |
| प | | | पञ्चपचा | ८४ | १०२ | पटोल | ९४ | १५५ |
| पक्कण | ६५ | २० | पचा | २२० | ८ | पटोलिका | ८७ | ११८ |
| पक | { २१४ ९१ | | पञ्चजन | १०४ | १ | पट्ट | २८८ | १७ |
| | { २१५ ९६ | | पञ्चता | १६४ | ११६ | पट्टिका | ७४ | ५१ |
| | { २६ १२ | | पञ्चदशी | २५ | ७ | पट्टिन् | ७४ | ४१ |
| पक्ष | { १०३ ३६ | | पञ्चम | ३९ | १ | पट्टिश | २९० | २१ |
| | { १२४ ९८ | | पञ्चलक्षण | ३४ | ५ | | { १८२ ८८ | |
| | { १५९ ८७ | | पञ्चशर | ९ | २५ | | { १९४ ३८ | |
| | { २६७ २२० | | पञ्चशाख | १२१ | ८१ | पण | { १९५ ४५ | |
| पक्षक | ६४ | १४ | पञ्चाङ्गुल | ७६ | ५१ | | { २३५ ४६ | |
| | { २४ २ | | पञ्चात्य | ९७ | १ | | { १९५ ४४ | |
| पक्षति | { १०३ ३६ | | पञ्जिका | २८३ | ७ | पणव | ४० | ८ |
| | { २४० ७२ | | पट | { ७३ ३५ | | पणायित | २१७ | १०९ |
| पक्षद्वार | ६४ | १४ | | { १२७ ११६ | | पणित | २१७ | ४०९ |
| पक्षभाग | १५० | ४० | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|-----------|--------|-------------|-----------|--------|------------|----------|--------|
| पणितव्य | १८१ | ८२ | पत्ति | { १५५ ६६ | ६६ | पद | २४४ | ९३ |
| पण्ड | ११२ | ३९ | | { १५८ ८० | ८० | पदग | १५५ | ६६ |
| पंडित | १३३ | ५ | | { २४० ७२ | ७२ | पदवी | ७१ | १५ |
| पण्य | १८१ | ८२ | पत्तिसंहति | १५५ | ६७ | पदाजि | १५५ | ६६ |
| पण्यवीथिका | ६२ | २ | पत्री | १०५ | ५ | पदाति | १५५ | ६६ |
| पण्या | ९३ | १५० | | { ६९ १४ | १४ | पदिक | १५५ | ६१ |
| पण्याजीव | १८० | ७८ | पत्र | { १०३ ३६ | ३६ | पद्म | १५५ | ६७ |
| पतंग | १०२ | ३३ | | { १५४ ९८ | ९८ | पद्मति | ६१ | १५ |
| पतंग | { १०२ २८ | २८ | | { २६० १७९ | १७९ | पद्म | { १७ ७१ | ७१ |
| | { १३१ २० | २० | पत्रपरशु | १९३ | ३२ | | { ५७ ३९ | ३९ |
| पतंगिका | १०१ | २७ | पत्रपाश्या | १२५ | १०३ | पद्मक | १५० | ३९ |
| पतत् | १०२ | ३३ | पत्ररथ | १०२ | ३३ | पद्मचारिणी | ९२ | १४६ |
| पतत्र | १०३ | ३६ | पत्रलेखा | १२८ | १२२ | पद्मनाभ | ८ | २० |
| पतत्रि | १०२ | ३३ | | { १३७ १३२ | १३२ | पद्मिनी | ५६ | ३९ |
| पतत्रिन् | १०२ | ३३ | पत्राङ्ग | { १८६ १११ | १११ | पद्मपत्र | ९२ | १४५ |
| पतद्ग्रह | { १३२ १३९ | १३९ | पत्राङ्गुलि | १२८ | १२१ | पद्मराग | १८३ | ९२ |
| | { २९० २१ | २१ | | { ९९ १५ | १५ | | { ९ २७ | २७ |
| पतयालु | २०१ | २७ | पत्रिन् | { १०२ ३३ | ३३ | पद्मा | { ८३ ८९ | ८९ |
| पताक | १६२ | ९९ | | { १५९ ८७ | ८७ | | { ९२ १४६ | १४६ |
| पताकिन् | १५६ | ७१ | | { २४६ १०६ | १०६ | पद्माकर | ५४ | २८ |
| पति | { १११ ३५ | ३५ | पत्रोर्ण | { ७७ ५६ | ५६ | पद्माट | ९२ | १४७ |
| | { १९८ १० | १० | | { १२७ ११३ | ११३ | पद्मालया | ९ | २७ |
| पतिंवरा | १०६ | ७ | पथिक | १४६ | १७ | पद्मिन् | १४९ | ३५ |
| पतिवल्नी | १०७ | १२ | पथिन् | ६१ | १५ | पद्य | २४९ | ३१ |
| पतिव्रता | १०५ | ६ | पथ्या | ७७ | ५९ | पद्या | ६१ | १५ |
| पत्तन | ६१ | १ | पद | ११९ | ७१ | पनस | ७८ | ६१ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|-----------|--------|--------------|-----------|--------|-------------|----------|--------|
| पनायित् | २१७ | १०९ | पराक्रम | { १६२ १०२ | | परिध | { १६० ९१ | |
| पनित | २१७ | १०९ | | { २५२ १३८ | | | { २३२ २७ | |
| पन्न | २१६ | १०४ | पराग | { ७० १७ | | परिधातिन् | १६० | ९१ |
| पन्नग | ४७ | ८ | | { २३१ २१ | | परिचय | २२३ | २३ |
| पन्नगाश | १० | २९ | पराङ्मुख | २०२ | ३३ | परिचर | १५४ | ६२ |
| | ४९ | १ | पराचित | १९० | १८ | परिचर्या | १३८ | ३५ |
| पयस् | { १७५ ५१ | | पराचीन | २०२ | ३३ | परिचाग्य | १३५ | २० |
| | { २७० २३३ | | पराजय | १६४ | १११ | परिचारक | १९० | १७ |
| पयस्य | १७५ | ५१ | पराजित | १६४ | ११२ | परिणत | २१५ | ९६ |
| पयोधर | २५७ | १६३ | पराधीन | १९९ | १६ | परिणय | १४२ | ९६ |
| | { १४५ ११ | | परान्न | २०० | २० | परिणाम | २२२ | १५ |
| पर | { २६२ १९१ | | पराभूत | १६४ | ११२ | परिणाय | १९५ | ४५ |
| परजात | १९० | १८ | परायण | २१८ | २ | परिणाह | १९५ | ११४ |
| परतन्त्र | १९९ | १६ | परारि | २७९ | २० | परितस् | २७७ | १३ |
| परपिण्डाद | २०० | २० | पराव्य | २०७ | ५८ | परित्राण | २१९ | ५ |
| परभृत् | १०० | २० | परासन | १६४ | ११३ | परिदान | १८१ | ८० |
| परभृत | १०० | १९ | परासु | १६४ | ११७ | परिदेवन | ३६ | १६ |
| परमस् | २७७ | १२ | परास्कन्दिन् | १८१ | २५ | परिधान | १२७ | १९७ |
| परमान्न | १३६ | २४ | परिकर | २५७ | १६५ | परिधि | { २३ ३२ | |
| परमेष्ठिन् | ८ | १६ | परिकर्मन् | १२८ | १२१ | | { २४४ ९७ | |
| परम्पराक | १३६ | २६ | परिक्रम | २२२ | १६ | परिधिस्थ | १५४ | ६२ |
| परवत् | १९९ | २६ | परिक्रिया | २२३ | २० | परिपण | १८१ | ८० |
| परशु | १६० | ९२ | परिक्षिप्त | २१३ | ८८ | परिप्रेथिन् | १४५ | ११ |
| परश्वध | १६० | ९२ | परिखा | ५५ | २९ | परिपाटी | १३८ | ३६ |
| परश्वस् | २८० | २२ | परिग्रह | २७१ | २३७ | परिपूर्णता | १३१ | १३७ |
| | | | | | | परिपेलव | ९० | १३१ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|
| परिप्लव | २१० | ७५ | परिसार | २२३ | २१ | पर्जनी | ८४ | १०२ |
| परिबर्ह | २७२ | २३९ | परिष्कन्द | १९० | १८ | पर्जन्य | २५३ | १४६ |
| परिभव | ४३ | २२ | परिस्तोम | १५१ | ४२ | पर्ण { | ६९ | १४ |
| परिभाषण | ३६ | १४ | परिस्मन्द | १३१ | १३७ | | ७२ | २९ |
| परिभूत | २१७ | १०६ | परिस्मृत | १९४ | ३९ | | २९० | २२ |
| परिमल { | ३१ | १० | परिस्मृता | १९४ | ३९ | पर्णशाला | ६२ | ६ |
| | २२१ | १३ | परीक्षक | १९७ | ७ | पर्णासि | ८१ | ७९ |
| परिरम्भ | २२५ | ३० | परीभाष | ४३ | २२ | पर्यङ्क | १३१ | १३८ |
| परिवर्जन | १६४ | ११४ | परीवर्त | १८१ | ८० | पर्यटन | १३८ | ३५ |
| परिवाद | ३६ | १३ | परीवाद | ३६ | १३ | पर्यन्तभू | ६० | १४ |
| परिवादिनी | ३९ | ३ | परीवाप | २५० | १२९ | पर्यय { | १३९ | ३७ |
| परिवापित | २१२ | ८५ | परीवार | २५८ | १६९ | | २२६ | ३३ |
| परिवित्ति | १४२ | ५६ | परीवाह | ५० | १० | पर्यवस्था | २२३ | २१ |
| परिवृद्ध | १९८ | ११ | परीष्टि | १३७ | ३२ | पर्याप्त | १७६ | ५७ |
| परिवेत्तृ | १४२ | ५५ | परीसार | २२३ | २१ | पर्याप्ति | २१९ | ५ |
| परिवेष | २३ | ३२ | परीहास | ४५ | ३२ | पर्याय { | १३८ | ३७ |
| परिव्याध { | ७३ | ३० | परुत् | २७९ | २० | | २५४ | २४६ |
| | ७८ | ६० | परुष | ३७ | १९ | पर्यायस्यन | २२५ | ३२ |
| परिव्रज | १३९ | ४१ | परुस् | ९५ | १६२ | पर्युदञ्चन | १६६ | ३ |
| परिषाद् | १३४ | १५ | परेत | १६४ | ११७ | पर्येषणा | १३७ | ३२ |
| परिष्कार | १२४ | १०१ | परेतराज | १४ | ५८ | पर्वत | ६५ | १ |
| परिष्कृत | १२४ | १०० | परेद्यवि | २७९ | २१ | पर्वन् { | ९५ | १६२ |
| परिष्वङ्ग | २२५ | ३० | परेष्टुका | १७९ | ७० | | २४९ | २२१ |
| परिसर | ६० | १४ | परैधित | १९० | १८ | पर्वसंधि | २५ | ७ |
| परिसर्प | २२३ | २० | परोष्णी | १०१ | २६ | पर्शुका | ११८ | ६९ |
| परिसर्या | २२३ | २१ | पर्कशी | ७३ | ३२ | पल { | १८२ | ८६ |
| | | | | | | | २६४ | २०२ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|-------------|-----------|---------------|------------|--------|
| पलगण्ड | १८८ | ६ | पश्चात् | २७२ २४३ | पाठ | { १३४ १४ | |
| पलङ्कषा | ८४ | ९८ | पश्चात्ताप | ४३ २५ | | { २२५ २९ | |
| पलल | ११७ | ६३ | पश्चिम | २११ ८१ | पाठा | ८२ ८४ | |
| पलाण्डु | ९२ | १४७ | पश्चिमा | १७ १ | पाठिन् | ८१ ८० | |
| पलाल | १७९ | २२ | पश्चिमोत्तर | ५९ ७ | पाठीन | ५२ १८ | |
| पलाश | { ६९ | १४ | पस्त्य | ६२ ५ | पाणि | १२१ ८१ | |
| | { ७२ | २९ | पांशुला | १०६ ११ | पाणिगृहीती | १०५ ६ | |
| | { ९३ | १५४ | पांशु | १६१ ९८ | पाणिष | १८९ १३ | |
| पलाशिन् | ६८ | ५ | पाक | { १०३ ३८ | पाणिपीडन | १४२ ५६ | |
| पलिकनी | १०७ | १२ | | { २२० ८ | पाणिवाद | १८९ १३ | |
| पलित | ११२ | ४१ | पाकल | ८९ १२६ | पांडर | ३२ १२ | |
| पल्यङ्क | १३१ | १३८ | पाकशासन | १२ ४१ | पांडु | ३२ १३ | |
| पल्लव | ७० | १४ | पाकशासनि | १३ ४६ | पांडुकम्बलिन् | १५३ ५४ | |
| पल्वल | ५४ | २८ | पाकस्थान | १७१ २७ | पांडुर | ३२ १३ | |
| पव | २२४ | २४ | पाक्य | { १७३ ४२ | पातक | २९५ ३३ | |
| पवनाशन | ४७ | ८ | | { १८६ १०९ | पाताल | { ४६ १ | |
| पवन | { १५ | ६३ | पाखण्ड | १४० ४५ | | { १२६४ २०२ | |
| | { २२४ | २४ | पांचजन्य | १० २८ | पातुक | २०१ २७ | |
| पवमान | १५ | ६३ | पांचालिका | १९२ २९ | पात्र | { ५० ८ | |
| पवि | १३ | ४७ | पाट | २७६ ७ | | { १३३ २४ | |
| पवित्र | { ९६ | १६६ | पाटच्चर | १९१ २५ | | { १७२ ३३ | |
| | { १४० | ४६ | पाटल | { ३२ १५ | | { २६० १७९ | |
| | { २०७ | ५० | | { १६८ १५ | पात्री | २९८ ४२ | |
| पवित्रक | ६२ | १६ | पाटला | { ७१ २० | पात्रीव | २९६ ३५ | |
| पशुपति | १० | ३० | | { ७७ ५४ | पाथस् | ४९ ४ | |
| पशुप्रेरण | २२७ | ३९ | पाटलि | ७७ ५४ | | | |
| पशुरज्जु | १७९ | ७३ | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|-----------|--------|----------|---------------|-----------|------------|---------------|------------|
| पाश | १२४ | ९८ | पिच्छिल | १७४ | ४६ | पितृप्रसू | २४ | ३ |
| पाशक | १२५ | ४५ | पिच्छिला | { ७५ ७८ | ४६ ६२ | पितृवन | १६५ | ११८ |
| पाशिन् | १५ | ६१ | पिञ्ज | १६४ | ११५ | पितृव्य | ११० | ३१ |
| पाशुपत | ८१ | ८१ | पिञ्ज | { १८५ २९४ | १०३ ३१ | पितृसन्निभ | १९८ | १३ |
| पाशुपात्य | १६५ | २ | पिञ्जल | १६२ | ९९ | पित्त | ११७ | ६२ |
| पाश्चात्य | २११ | ८१ | पिट | १७० | २६ | पिच्य | १४१ | ५१ |
| पाश्या | २२७ | ५२ | पिटक | { ११५ १९२ | ५३ २९ | पित्तत् | १०२ | ३४ |
| पाषाण | ६६ | ४ | पिठर | { १७१ २६१ | ३१ १८८ | पिधान | १९ | १३ |
| पाषाणदारण | १९३ | ३४ | पिण्ड | { १८४ १८५ २८९ | ९८ १०४ १८ | पिनद्ध | १५१ | ५२ |
| पिक | १०० | १० | पिण्डक | १२९ | १२८ | पिनाक | { ११ २३० | ३५ १४ |
| पिङ्ग | ३३ | १६ | पिण्डिका | १५३ | ५६ | पिनाकिन् | १० | ३१ |
| पिङ्गल | { २३ ३३ | ३० १६ | पिण्डीतक | ७६ | ५२ | पिपासा | १७६ | ५५ |
| पिङ्गला | २८ | १६ | पिण्याक | { २२९ २९५ | ९ ३२ | पिपीलिका | २८४ | ८ |
| पिचंड | { १२० २८९ | ७७ १० | पितरौ | ११२ | ३७ | पिप्पल | ७१ | २० |
| पिचंडिल | ११३ | ४४ | पितामह | { ८ १११ | १६ ३३ | पिप्पली | ८४ | ९७ |
| पिचु | १८५ | १०६ | पितृ | ११० | २८ | पिप्पलीमूल | १८६ | ११० |
| पिचुमन्द | ७८ | ६२ | पितृदान | १३७ | ३१ | पिप्पु | ११४ | ४९ |
| पिचुल | ७४ | ४० | पितृपति | { १४ १७ | ५८ २ | पिल | ११६ | ६० |
| पिच्छट | १८५ | १०५ | पितृपितृ | १११ | ३३ | पिशंग | १३३ | १६ |
| पिच्छ | { १०२ २९४ | ३१ ३० | | | | पिशाच | ७ | ११ |
| पिच्छा | { ७५ २८४ | ४७ ९ | | | | पिशित | ११७ | ६३ |
| | | | | | | पिशुन | { १२९ २०५ २५९ | १२४ ४७ १२७ |
| | | | | | | पिशुना | ९० | १३३ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक |
|-----------|--------|-------|--------------|--------|--------|-----------|--------|-------|
| पिष्टक | १७४ | ४८ | पीवन | २०८ | ६१ | पुत्रिका | १९२ | २९ |
| पिष्टपचन | १७२ | ३२ | पीवरस्तनी | १७९ | ७१ | पुत्री | ११२ | ३७ |
| पिष्टात | १३२ | १३९ | पुंश्चली | ११० | १० | पुद्गल | २४५ | २० |
| पीठ | १३१ | १३८ | पुक्कस | १९० | २० | पुनःपुनर् | २७५ | २ |
| पीडन | १६३ | १०९ | पुंख | २८८ | १७ | पुनर् | २७४ | २५३ |
| पीडा | ४९ | ३ | पुंगव | २०८ | ५९ | पुनर् | २७८ | १५ |
| पीत | ३२ | १४ | पुच्छ | १५२ | ५० | पुनर्नवा | ९२ | १४९ |
| पीतदारु | ७७ | ५३ | पुंज | १०४ | ४२ | पुनर्भव | १२१ | ८३ |
| पीतदु | ७८ | ६० | पुटभेद | ५० | ७ | पुनर्भू | १०९ | २३ |
| | ८४ | १०१ | पुटभेदन | ६१ | १ | पुन्नाग | ७२ | २५ |
| पीतन | ७२ | २७ | पुटी | २९८ | ४२ | पुमस् | १०४ | १ |
| | १२९ | १२४ | पुंडरीक | १८ | ३ | पुर | ६१ | १ |
| | १८५ | १०३ | | ५७ | ४१ | पुर | ७३ | ३४ |
| पीतसारक | ७५ | ४३ | पुंडरीकाक्ष | ८ | १९ | पुर | २६१ | १८३ |
| पीता | १७३ | ४१ | पुंड | ९५ | १६३ | पुरस् | २७६ | ७ |
| पीताम्बर | ८ | १९ | पुंडक | ८० | ७२ | पुरःसर | १५६ | ७२ |
| पीन | २०८ | ६१ | पुण्य | २८ | २४ | पुरतस् | २७६ | ७ |
| पीनस | ११५ | ५१ | | २५६ | १६० | पुरद्वार | ६४ | १६ |
| पीनोन्नी | १७९ | ७१ | पुण्यक | १३९ | ३७ | पुरन्दर | १२ | ४१ |
| पीयूष | १३ | ४८ | पुण्यजन | १५ | ६० | पुरन्धी | १०५ | ६ |
| | १७६ | ५४ | पुण्यजनेश्वर | १६ | ६९ | पुरस्कृत | २४२ | ८४ |
| पीळ | ७२ | २८ | पुण्यभूमि | ५९ | ८ | पुरस्तात् | २७३ | २४६ |
| | २६३ | १९३ | पुण्यवत् | १९६ | ३ | पुरा | २७४ | २५३ |
| पीळुपर्णी | ८२ | ८४ | पुत्तिका | १०१ | २७ | पुराण | ३४ | ५ |
| | ९१ | १३९ | पुत्र | ११० | २७ | | २११ | ७७ |
| पीवर | २०८ | ६१ | | | | पुरातन | २११ | ७७ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|-------------|--------|--------|------------|--------|--------|
| पुरावृत्त | ३४ | ४ | | १७ | १ | पुस्त | १९२ | २८ |
| पुरी | ६१ | १ | पुष्कर | ४९ | ४ | पूग | ९६ | १६९ |
| पुरीतव | ११८ | ६६ | | ५७ | ४१ | | २३१ | २० |
| पुरीष | ११८ | ६८ | | ९२ | १४५ | पूजा | १३८ | ३४ |
| पुरु | २०८ | ६३ | | २६१ | १८६ | पूजित | २१५ | ९८ |
| | २९ | २९ | पुष्कराह | २०० | २२ | पूज्य | १९६ | ५ |
| पुरुष | ७२ | २५ | पुष्करिणी | ५४ | २७ | | २५४ | १५० |
| | १०४ | १ | पुष्कल | २०७ | ५८ | पूत | १४० | ४५ |
| | २६७ | २१८ | पुष्ट | २१६ | ९७ | | १७० | २३ |
| पुरुषोत्तम | ८ | २१ | | ७० | १७ | | २०७ | ५५ |
| पुरुह | २०८ | ६३ | पुष्प | १०८ | २१ | पूतना | ७७ | ५९ |
| पुरुहूत | १२ | ४१ | | २९१ | २३ | पूतिक | ७६ | ४८ |
| पुरोग | १५६ | ७२ | पुष्पक | १६ | ७० | पूतिकरज | ७६ | ४८ |
| पुरोगम | १५६ | ७२ | | १८५ | १०३ | पूतिकाष्ठ | ७७ | ५४ |
| पुरोगामिन् | १५६ | ७१ | पुष्पकेतु | १८५ | १०३ | | ७८ | ६० |
| पुरोडाश | २९० | २१ | पुष्पदन्त | १८ | ४ | पूतिगन्धि | ३३ | १२ |
| पुरोधस् | १४४ | ५ | पुष्पधन्वन् | ९ | २६ | पूतिफली | ८३ | ९६ |
| पुरोभागिन् | १०५ | ४६ | पुष्पप्रियक | ७५ | ४४ | पूप | १७४ | ४८ |
| पुरोहित | १४४ | ५ | पुष्पफल | ७१ | २१ | पूर | २८९ | २० |
| पुलाक | २२८ | ५ | पुष्परथ | १५३ | ५१ | पूरणी | ७५ | ४६ |
| पुलिन | ५० | ९ | पुष्परस | ७० | १७ | पूरित | २१५ | ९८ |
| पुलिन्द | १९० | २० | पुष्पलिह | १०२ | २९ | पूरुष | १०४ | १ |
| पुलोमजा | १२ | ४५ | पुष्पवती | १०८ | २० | पूण | २०९ | ६५ |
| पुषित | २१६ | ९७ | पुष्पवन्तौ | २५ | १० | | २१५ | ९८ |
| | | | पुष्पसमय | २७ | १८ | पूर्णकुम्भ | १४९ | ३२ |
| | | | पुष्य | २१ | २२ | पूर्णिमा | २५ | ७ |
| | | | | २५४ | १४६ | पूत | १३७ | २८ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|-------------|--------|--------|----------------|--------|--------|
| पूर्व { | २११ | ८० | पृथुल | ६० | २०८ | पेशी | १०३ | ३७ |
| | २५१ | १३४ | | ५८ | ३४ | पैटर | १७४ | ४५ |
| पूर्वज | ११३ | ४३ | पृथ्वी { | १७२ | ३६० | पैतृप्वसेय | १०९ | २५ |
| पूर्वदेव | ७ | १२ | | १७३ | ४० | पैतृप्वस्त्रीय | १०९ | २५ |
| पूर्वपर्वत | ६६ | २ | पृथ्वीका | ८८ | १२५ | पोटगल { | ९५ | १६२ |
| पूर्व | १७ | १ | पृदाकु | ४७ | ६ | | ९५ | १६३ |
| पुन्युस् | २७९ | २१ | पृश्नि | ११४ | ४८ | पोटा | १०७ | १६ |
| पूषन् | २२ | २९ | पृश्निपर्णी | ८३ | ९२ | पोत { | १०३ | ३८ |
| पृक्ति | २२० | ९ | पृषत् | ५० | ६ | | २३८ | ६० |
| पृच्छा | ३५ | १० | पृषत { | ५० | ६ | पोतवणिज् | ५१ | १२ |
| | | | | ९८ | १० | पोतवाह | ५१ | १२ |
| पृत्तना { | १५७ | ७८ | पृषत्क | १५९ | ८६ | पोताधान | ५२ | १९ |
| | १५८ | ८१ | पृषदश्च | १५ | ६२ | पोत्र | २६० | १८० |
| पृथक् | २७५ | ३ | पृषदाज्य | १३६ | २४ | पोत्रिन् | ९७ | २ |
| पृथक्पर्णी | ८३ | ९२ | पृष्ठ | १२० | ७८ | पौडर्य | ८९ | १२७ |
| पृथगात्मता { | २९ | ३१ | पृष्ठवंशधर | १२० | ७६ | पौत्री | ११० | २९ |
| | १३९ | ३८ | पृष्ठास्थि | ११८ | ६९ | पौर | ९६ | १६६ |
| पृथग्जन { | १९० | १६ | पृष्ठय { | १५१ | ४६ | पौरस्त्य | २११ | ८० |
| | २४६ | १०५ | | २२७ | ४१ | पौरुष { | १२२ | ८७ |
| पृथग्विध | २१४ | ९३ | पेचक { | ९९ | १५ | | २६८ | २३३ |
| पृथिवी | ५८ | ३ | | २२८ | ६ | पौरोगव | १७१ | २७ |
| पृथु { | १७२ | ३७ | पेटक | १९२ | २९ | पौर्णिमास | १४१ | ४८ |
| | १७३ | ४० | पेटा | १९२ | २९ | पौर्णिमासी | २५ | ७ |
| | २०८ | ६० | पेटी | २९८ | ४२ | पौलस्त्य | १६ | ६९ |
| पृथुक { | १०३ | ३८ | पेलव | २०९ | ६६ | पौलि | १७४ | ४७ |
| | १७४ | ४७ | पेशल { | १९० | १९ | पौष | २६ | १५ |
| | २२८ | ३ | | १६५ | २०५ | | | |
| युरोमन् | ५२ | १७ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|------------------------------------|--------|--------------|----------------------|--------|--------------|---------------------|--------|
| घौष्पक | १८५ | १०३ | प्रग्रह | { १६५ ११९ २७१ २३७ | | प्रणय | { २२४ २५ २५४ १५१ | |
| घ्याट् | २७६ | ७ | प्रग्राह | २७१ | ३७ | प्रणव | ३४ | ४ |
| प्रकांड { | २८ २७ ६९ १० | | प्रग्रीव | २९६ | ३५ | प्रणाद | ३५ | ११ |
| प्रकाम | १७६ | ५७ | प्रवण | ६४ | १२ | प्रणाली | ५६ | ३५ |
| प्रकार | २५७ | १६२ | प्रघाण | ६४ | १२ | प्रणिधि { | १४५ १३ २४५ १०० | |
| प्रकाश { | २३ ३४ २६७ २१८ | | प्रचक्र | १६१ | ९६ | प्रणिहित | २१२ | ८६ |
| प्रकीर्णक | १४८ | ३१ | प्रचलायित | २०२ | ३२ | प्रणीत { | १३५ २० १७४ १०० | |
| प्रकीर्य | ७६ | ४८ | प्रचुर | २०८ | ६३ | प्रणुत | २१७ | १०९ |
| प्रकृति { | २९ २९ ४६ ३७ १४६ १८ २४० ७३ | | प्रचेतस् | १५ | ६ | प्रणय | २०० | २५ |
| | | | प्रचोदनी | ८३ | ९४ | प्रतन | २११ | ७७ |
| | | | प्रच्छदपट | १२७ | ११६ | प्रतल { | १२१ ८४ १२१ ८५ | |
| | | | प्रच्छन्न | ६४ | १४ | प्रताप | १४६ | २० |
| प्रकोष्ठ | १२० | ८० | प्रच्छर्दिका | ११६ | ५५ | प्रतापस | ८१ | ८१ |
| प्रक्रम | २३४ | २६ | प्रजन | २२४ | २५ | प्रति | २७३ | २४५ |
| प्रक्रिया | १४८ | ३१ | प्रजविन | १५६ | ७३ | प्रतिकर्मन् | १२४ | ९९ |
| प्रकण | ३८ | २४ | प्रजा | २३३ | ३२ | प्रतिकूल | २११ | ८४ |
| प्रकाण | ३८ | २४ | प्रजाता | १०८ | १६ | प्रतिकृति | १९३ | ३६ |
| प्रक्षेडन | १५९ | ८७ | प्रजापति | ८ | १४ | प्रतिकृष्ट | २०७ | ४४ |
| प्रगंड | १२० | ८० | प्रजावती | ११० | ३० | प्रतिक्षिप्त | २०४ | ४२ |
| प्रगतजानुक | ११४ | ४७ | प्रज्ञा { | २९ १ १०७ १२ | | प्रतिख्याति | २२५ | २८ |
| प्रगल्भ | २०१ | २५ | | | | प्रतिग्रह | १५८ | ७९ |
| प्रगाढ | २३५ | ४४ | प्रज्ञान | २४९ | १२२ | प्रतिग्रह | १३२ | १३९ |
| प्रगुण | २१० | ७२ | प्रज्ञ | ११४ | ४७ | | | |
| प्रगै | २७९ | १९ | प्रडीन | १०३ | ३७ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|-----------|---------|---------------|-----------|--------|----------------|----------|--------|
| प्रतिधा | ४३ | २६ | प्रतिवाक्य | ३५ | १० | प्रतौली | ६२ | ३ |
| प्रतिधातन | १६४ | ११४ | प्रतिविषा | ८४ | ९९ | प्रल | २१ | ७७ |
| प्रतिच्छाया | १९३ | ३५ | प्रतिशासन | २२६ | ३४ | प्रत्यक् | २८० | २३ |
| प्रतिजागर | २२५ | २८ | प्रतिश्याय | ११५ | ५१ | प्रत्यक्पर्णा | ८२ | ८९ |
| प्रतिज्ञात | २१७ | १०८ | प्रतिश्रय | २५५ | १५२ | प्रत्यक्श्रेणि | { ८२ ८८ | |
| प्रतिज्ञान | ३० | ५ | प्रतिश्रव | ३० | ५ | | { ९२ १४४ | |
| प्रतिदान | १८१ | ८१ | प्रतिश्रुत | ३८ | २६ | प्रत्यक्ष | २११ | ७९ |
| प्रतिध्वान | २८ | २६ | प्रतिष्टम्भ | २२४ | २७ | प्रत्यग्र | २११ | ७७ |
| प्रतिनिधि | १९३ | ३३ | प्रतिसर | २५९ | १७४ | प्रत्यन्त | ५९ | ७ |
| प्रतिपत् | { २४ २९ | { १ १ | प्रतिसीमा | १२८ | १२० | प्रत्यन्तपर्वत | ६६ | ७ |
| प्रतिपन्न | २१७ | १०८ | प्रतिह | २९४ | ४१ | प्रत्यय | २५४ | १४७ |
| प्रतिपादन | १३७ | २९ | प्रतिहानक | १८९ | ११ | प्रत्ययित | १४५ | १३ |
| प्रतिबद्ध | २०४ | ४० | प्रति | ८१ | ७६ | प्रत्यर्थिन् | १४५ | ११ |
| प्रतिबन्ध | २२४ | २७ | प्रतीक | { ११८ २२९ | { ७० ७ | प्रत्यवसित | २१८ | ११० |
| प्रतिबिम्ब | १९३ | ३५ | प्रतीकार | १६३ | ११० | प्रत्याख्यात | २०४ | ४० |
| प्रतिभय | ४२ | २० | प्रतीकाश | १९४ | ३७ | प्रत्याख्यान | २२५ | ३१ |
| प्रतिभान्वित | ५०१ | २५ | प्रतीक्ष्य | १९६ | ५ | प्रत्यादिष्ट | २०४ | ४० |
| प्रतिभू | १९५ | ४४ | प्रतीची | १७ | १ | प्रत्यादेश | २२५ | ३१ |
| प्रतमा | १९३ | ३५ | प्रती | { १९७ २४२ | { ९ ८२ | प्रत्यालीढ | १५९ | ८५ |
| प्रतिमान | { १५० १९३ | { ३९ ३५ | प्रतीपदर्शिनी | १०४ | २ | प्रत्यासार | १५८ | ७९ |
| प्रतिमुक्त | १५५ | ६५ | प्रतीर | ५० | ७ | प्रत्याहार | २२२ | १६ |
| प्रतिरोधिन् | १९१ | २५ | प्रतीह | { ६४ १४४ | { १६ ६ | प्रत्युत्क्रम | २२४ | २६ |
| प्रतियत्न | २४६ | १०७ | | { १५८ | { १७० | प्रत्युषस् | २४ | २ |
| प्रतियातना | १९३ | ३६ | | | | प्रत्युष | २४ | २ |
| | | | | | | प्रत्यूह | २२३ | ९१ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|--------------|--------|--------|------------|--------|--------|
| प्रथम | { २११ | ८० | प्रवन्धकरपना | ३५ | ६ | प्रमीत | { १३६ | २६ |
| | { २५३ | १४४ | प्रबोधन | १२८ | १२२ | | { १६४ | ११७ |
| प्रथा | २२० | ९ | प्रभंजन | १५ | ६३ | प्रमीला | { ४६ | ३७ |
| प्रथित | १९७ | ९ | प्रभव | २६६ | २१० | | { २५९ | १७६ |
| प्रदर | २५७ | १६४ | प्रभा | २३ | ३४ | प्रमुख | २०७ | ५७ |
| प्रदीप | १३१ | १३८ | प्रभाकर | २२ | २८ | प्रसुदित | २१६ | १०३ |
| प्रदीपन | ४८ | १० | प्रभात | २४ | ३ | प्रमोद | २८ | २४ |
| प्रदेशन | १४८ | २७ | प्रभाव | { १४६ | १९ | प्रयत | १२० | ४५ |
| प्रदेशिनी | १२१ | ८१ | | { १४६ | २० | प्रयस्त | १७४ | ४५ |
| प्रदोष | २४ | ५६ | प्रभिन्न | १४९ | ३६ | प्रयाम | २२४ | २३ |
| प्रद्युम्न | ९ | २५ | प्रभु | १९८ | ११ | प्रयोगार्थ | २२४ | २६ |
| प्रद्राव | १६४ | १११ | प्रभूत | २०८ | ६३ | प्रलम्बन्न | ३ | २९ |
| प्रधन | १६२ | १०३ | प्रभृष्टक | १३१ | १३५ | प्रलय | { २८ | २२ |
| | { २९ | २९ | प्रमथ | ११ | ३५ | | { ४५ | ३३ |
| प्रधान | { १४४ | ५ | प्रमथन | १६४ | ११५ | प्रलाप | ३६ | १५ |
| | { २०७ | ५७ | प्रमथाधिप | १० | ३२ | प्रवण | २३७ | ५६ |
| | { २४९ | १२२ | प्रमद | २८ | १४ | प्रवयस् | १२३ | ४२ |
| प्रधि | १५३ | ५६ | प्रमदवन | ६७ | ३ | प्रवर्ह | २०७ | ५७ |
| प्रपंच | २३२ | २८ | प्रमदा | १०५ | ३ | प्रवह | २२२ | १८ |
| प्रपद | ११९ | ७१ | प्रमनस् | १९७ | ७ | प्रवहण | १५३ | ५२ |
| प्रपा | ६३ | ७ | प्रमा | २२० | १० | प्रवहिका | ३४ | ६ |
| प्रताप | ६६ | ४ | प्रमाण | २३७ | ५३ | प्रवारण | २१९ | ३ |
| प्रपितामह | १११ | ३२ | प्रमाद | ४४ | ३० | प्रवाल | { ४० | ७ |
| प्रपुत्राड | ९२ | १४७ | प्रमापण | १६४ | १२१ | | { १८३ | ९३ |
| प्रपौडरीक | ९१ | १२७ | प्रमिति | २२० | १० | | { २६५ | २०४ |
| प्रफुल्ल | ६८ | ७ | | | | प्रवाह | २२२ | १८ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|---------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| प्रवासन | १६४ | ११३ | प्रसरण | १६१ | ९६ | प्रसृता | ११९ | ७२ |
| प्रवाहिका | ११६ | ५५ | प्रसव | २२१ | १० | प्रसृति | १२१ | ८५ |
| प्रविदारण | १६२ | १०३ | | २६५ | २०८ | प्रसेव | १७० | २६ |
| प्रविश्लेष | २२३ | २० | प्रसवबन्धन | ७० | १५ | प्रसेक | ४० | ७ |
| प्रवीण | १९६ | ४ | प्रसव्य | २१२ | ८४ | प्रस्तर | ६६ | ४ |
| प्रवृत्ति | ३४ | ७ | प्रसह्य | २७७ | १० | | ५६७ | १६१ |
| | २२२ | १८ | प्रसाद | २० | १६ | प्रस्ताव | २२४ | २४ |
| | २११ | ७६ | | २४३ | ९१ | | ६६ | ५ |
| प्रवृद्ध | २१३ | ८८ | प्रसाधन | १२४ | ८९ | प्रस्थ | १८२ | ८९ |
| | २४२ | ८५ | प्रसाधनी | १३२ | १३९ | | २४३ | ८८ |
| प्रवेक | २०७ | ५७ | प्रसाधित | १२४ | १०० | प्रस्थपुष्प | ८१ | ७९ |
| प्रवेणी | १२४ | ९८ | प्रसारिणी | ९३ | १५२ | प्रस्थमान | १८२ | ८५ |
| | १५१ | ४२ | प्रसारिन् | २०२ | ३१ | प्रस्थान | १६१ | ९५ |
| प्रवेष्ट | १२० | ८० | प्रसित | १९७ | ९ | प्रस्फोटन | १७० | २६ |
| प्रव्यक्त | २११ | ८१ | प्रसिति | २२२ | १४ | प्रसवण | ६६ | ६ |
| प्रश्न | ३५ | १० | प्रसिद्ध | २४६ | १०४ | प्रस्राव | ११८ | ६६ |
| प्रश्रय | २२४ | २५ | प्रसू | ११० | २१ | प्रहर | २५ | ६ |
| प्रश्रित | २०० | २५ | | २६९ | २२९ | प्रहरण | १५८ | ८२ |
| प्रष्ठ | १५६ | ७२ | प्रसूता | १०८ | १६ | प्रहस्त | १२१ | ८४ |
| प्रष्ठवाह | १७७ | ६३ | प्रसूति | २२१ | १० | प्रहि | ५४ | २३ |
| प्रक्षौही | १७९ | ७० | प्रसूतिका | १०८ | १६ | प्रहेलिका | ३४ | ६ |
| प्रसन्न | ५२ | १४ | प्रसूतिज | ५१ | ३ | प्रह्न | २१६ | १०३ |
| प्रसन्नता | २० | १६ | प्रसून | ७१ | १७ | प्रांशु | २०९ | ७० |
| प्रसन्ना | १९४ | ३९ | | २४९ | १२३ | प्राक् | २७८ | १६ |
| प्रसभ | १६३ | १०८ | प्रसूननयितारौ | ११२ | ३७ | | २८० | २३ |
| प्रसर | २२४ | २३ | प्रसृत | २१३ | ८८ | प्राकाम्य | ११ | ३६ |
| | | | | | | प्राकार | ६२ | ३ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|-----------|--------|----------------|-----------|--------|-------------|-----------|--------|
| प्राकृत | १८९ | १६ | प्राणिन् | २९ | ३० | प्रावृत | १२७ | ११३ |
| प्रादक्षिण | ४९ | ७ | प्राणिद्युत | १५५ | ४६ | प्रावृप् | २७ | १९ |
| प्राग्वंश | १३४ | १६ | प्रातर् | २७९ | १९ | प्रावृषायणी | ८२ | ८३ |
| प्राग्रहर | २०७ | ५८ | प्राथमकल्पिक | २२४ | ११ | प्रास | १६० | ९६ |
| प्राग्र्य | २०७ | ५८ | प्रादुस | { २७४ २५६ | | प्रासंग | १५४ | ५७ |
| प्राधार | २२१ | १० | | { २७७ १२ | | प्रासंग्य | १७७ | ६४ |
| प्राधुणक | १३८ | ३४ | प्रादेश | १२१ | ८३ | प्रासाद | ६३ | ९ |
| प्राधूर्णिक | १३८ | ८ | प्रादेशन | १३७ | ३० | प्रासिक | १५६ | ७० |
| प्राचिका | २८४ | ८ | प्राध्यम् | २७५ | ४ | प्राह | २४ | ४ |
| प्राची | १७ | १ | प्रान्तर | ६१ | १७ | प्रिय | { १११ ३५ | |
| प्राचीन | ६२ | ३ | प्राप्त | { २१२ ८६ | | | { २०७ ५३ | |
| प्राचीना | ८२ | ८५ | | { २१६ १०४ | | | { ७५ ४२ | |
| प्राचीनावीत | १४१ | ५० | प्राप्तपञ्चत्व | १६४ | ११७ | प्रियक | { ७७ ४४ | |
| प्राच्य | ५९ | ७ | प्राप्तरूप | २५१ | १३१ | | { ९७ ५६ | |
| प्राजन | १६७ | १२ | प्राप्ति | { ११ ३६ | | प्रियंगु | { ७७ ५५ | |
| प्राजितृ | १५४ | ५९ | | { २३९ ६९ | | | { १६९ २० | |
| प्राज्ञ | १३३ | ५ | प्राप्य | २१४ | ९२ | प्रियता | ४४ | २७ |
| प्राज्ञा | १०७ | १२ | प्राभृत | १४८ | २७ | प्रियंवद | २०३ | ३६ |
| प्राज्ञी | १०७ | १२ | प्राय | { १४३ ५२ | | प्रियाल | ७३ | ३५ |
| प्राज्य | २०८ | ६३ | | { २५५ १५३ | | प्रीणन | २१९ | ४ |
| प्राङ्निवाक | १४४ | ५ | प्रायस् | २७८ | १७ | प्रीत | २१६ | १०३ |
| | १५ | ६३ | प्रार्थित | २१५ | ९७ | प्रीति | २८ | २४ |
| प्राग | { १६२ १०२ | | प्रालम्ब | १३१ | १३६ | प्रुष्ट | २१५ | ९९ |
| | { १६५ ११९ | | प्रालम्बिका | १२५ | १०४ | प्रेक्षा | { २९ १ | |
| | { १८५ १०४ | | प्रालय | २० | १८ | | { २६८ २२४ | |
| | | | प्रावरण | १२८ | ११८ | प्रेखा | { १५३ ५३ | |
| | | | प्रावार | १२८ | ११७ | | | |

१- (प्राधूर्णिकः प्राधुणक-
श्चाभ्युत्थानं तु गौरवम्)

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| प्रेषित | २१२ | ८७ | प्लवंग | ९६ | ३ | फलिन | ६८ | ७ |
| प्रेत | { ३९ | २ | प्लवंगम | २५२ | १३८ | फलिनी | { ७७ | ५५ |
| | { १६४ | ११७ | प्लक्ष | ७० | १८ | फली | { ९० | १३६ |
| | { २३८ | ६० | प्लीहन् | ११८ | ६६ | | { ७७ | ५५ |
| प्रेत्य | २७६ | ८ | प्लीहशत्रु | ४६ | ४९ | फलेग्रहि | ६८ | ६ |
| मन् | { ४४ | २७ | प्लुत | १५२ | ४८ | फलेरुहा | ७७ | ५४ |
| | { ४४ | २७ | प्लुष्ट | २१५ | ९९ | फल्गु | { ७८ | ६१ |
| प्रेष्ठ | २१८ | १११ | प्लोष | २२० | ९ | फाणित | { २०७ | ५६ |
| प्रष | २६७ | २१९ | प्लात. | २१८ | ११० | | { १७३ | ४३ |
| पैष्य | १९० | १७ | फ | | | फांट | २१४ | ९४ |
| प्रोक्षण | १३६ | २६ | फगा | ४८ | ९ | फाल | { १२६ | १११ |
| प्रोक्षित | १३६ | २६ | फणिज्जक | ८१ | ७९ | फाल्गुन | { १६८ | १३ |
| प्रोथ | १५२ | ४९ | फणिन् | ४७ | ७ | | { २६ | १५ |
| प्रोष्ठपदा | २१ | २२ | फल | { १६० | ९० | फाल्गुनिक | २६ | १५ |
| प्रोष्ठी | २५ | १८ | | { १६८ | १३ | फाल्गुनि | २८३ | ६ |
| प्रोष्ठपद | २७ | १७ | | { १८१ | ८० | कुल | ६८ | ८ |
| प्रोट | २११ | ७६ | | { २६४ | २०१ | फेन | { १८५ | १०५ |
| प्लक्ष | { ७३ | ३२ | फलक | { १८१ | २३ | फेनिल | { २८९ | १९ |
| | { ७५ | ४३ | | { १६० | ९० | | { ७३ | ३६ |
| प्लव | { ९१ | ११ | फलकपाणि | १५६ | ७१ | फेरव | { ७४ | ३१ |
| | { ५४ | २४ | फलत्रिक | १८७ | १११ | | { ९७ | ५ |
| | { ९० | १३२ | फलपाकान्ता | ६८ | ६ | फेरु | ९७ | ५ |
| | { १०२ | ३४ | फलपूर | ८१ | ७८ | फेला | १७६ | ५६ |
| | { १९० | १९ | फलवत् | ६८ | ७ | व | | |
| प्लवग | { ९६ | ३ | फलाध्यक्ष | ७५ | ४५ | वक | १०० | २२ |
| | { २३१ | २४ | फलिन | ६८ | ७ | वकुल | ७८ | ६४ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| वडिश | ५२ | १६ | वर्हपुष्प | ९० | १३२ | वलिचंसिन् | ९ | ३१ |
| वत | २७२ | २४ | वर्हि | १४ | ५४ | वलिन | ११३ | ४५ |
| वदर | ७४ | ३७ | वर्हिण | १०२ | ३० | वलिपुष्ट | १०० | २० |
| वदरा | { ८७ | ११६ | वर्हिन् | १०२ | ३० | वलिभ | ११३ | ४५ |
| | { ९३ | १५१ | वर्हिपुष्प | ९० | १३२ | वलिभुज | १०० | २० |
| वदरी | ५४ | ३६ | वर्हिमुख | ८ | ९ | वलिर | ११४ | ४९ |
| वद्ध | { २०४ | ४२ | वर्हिष्ठ | ८८ | १२२ | वलिसङ्गन् | ४६ | १ |
| | { २१४ | ९५ | | | | वलीवर्द | १७७ | ५९ |
| वधिर | ११४ | ४८ | | ९ | २४ | बलव | { १७१ | २७ |
| वन्दिन् | १६१ | ९७ | | १५७ | ७८ | | { १७६ | ५७ |
| वन्दी | १६५ | ११९ | बल | १६२ | १०२ | बल्वज | ९५ | १६३ |
| बन्धकी | १०६ | १० | | २६३ | १९५ | बष्कयिणी | १७९ | ७१ |
| | | | | २९० | २२ | बस्त | १८० | ७६ |
| बन्धन | { १४८ | २६ | बलदेव | ९ | २३ | वस्ति | ११९ | ७३ |
| | { २२२ | १४ | बलभद्र | ९ | २३ | वहिर्दार | ६४ | १६ |
| बन्धु | १११ | ३४ | बलभद्रिका | ९३ | १५० | वहिष्ठ | २१८ | १११ |
| बन्धुजीवक | ८० | ७३ | बलवत् | { ११३ | ४४ | वहिस्र | २७८ | १७ |
| बन्धुता | १११ | ३५ | | { २७५ | २ | वह् | २०८ | ६३ |
| बन्धुर | २०९ | ६९ | बलविन्यास | १५७ | ७९ | वह्कर | १९९ | १७ |
| बन्धुल | १०९ | २६ | बला | ८५ | १७७ | बहुगर्हवाकृ | २०३ | ३६ |
| बन्धुक | ८० | ७३ | बलाका | १०१ | २५ | बहुपाद | ७३ | ३२ |
| बन्धूक | ८० | ७३ | बलात्कार | १६३ | १०८ | बहुप्रद | १९७ | ६ |
| बन्धूक | ७५ | ४४ | बलाराति | १०२ | ४३ | बहुमूढ्य | १२७ | ११३ |
| बन्धु | २५८ | १७० | बलाहक | १८ | १६ | बहुरूप | १२९ | १२८ |
| वर्वर | ८३ | ९० | | | | | | |
| वर्वरा | ९१ | १३९ | वलि | { १३४ | १४ | बहु | { २०८ | ६३ |
| | | | | { १४८ | २७ | | { २१८ | ११२ |
| वर्ह | { १०२ | ३१ | | { २६३ | १९५ | | { २६३ | १९९ |
| | { २७१ | २३६ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|-----------|--------|------------|-----------|--------|-----------|-----------|--------|
| बहुला | ८८ | १२५ | बालिश | { २०६ ४८ | | विम्बिका | ९१ | ३९ |
| बहुलीकृत | १७० | २३ | | { २६७ २१८ | | विल | ४६ | १ |
| बहुवारक | ७३ | ३४ | बालेय | १८० | ७७ | विलेशय | ४७ | ८ |
| बहुविधि | २१४ | ९३ | बालेयशाक | ८३ | ९० | विल्व | ७३ | ३२ |
| बहुवेतस | ४९ | ९ | बाल्य | ११२ | ४० | विस | ५७ | ४३ |
| बहुसुता | ८४ | १०० | बाष्प | २५० | १३० | विसकंठिका | १०१ | २५ |
| बहुसूति | १७९ | ७० | बाष्पिका | १७३ | ४० | विसप्रसून | ५७ | ४१ |
| बाकुची | ८३ | ९६ | बाहु | १२० | ८० | विसीनी | ५६ | ३९ |
| | { १६ ६७ | | बाहुज | १४३ | १ | विस्त | १८३ | ४६ |
| बाढ | { २३५ ४४ | | बाहुदा | ५५ | ३३ | बीज | { २९ २८ | |
| | | | | | | | { ११७ ६२ | |
| बाण | { १५९ ८६ | | बाहुमूल | १२० | ७९ | बीजकोश | ५७ | ४३ |
| | { २३५ ४५ | | बाहुयुद्ध | १६३ | १०६ | बीजपूर | ८१ | ७८ |
| बाणा | ८० | ७४ | बाहुल | १२७ | १८ | बीजांकृत | १६७ | ८ |
| बादर | १२६ | १११ | बाहुलेय | १२ | ४० | बीज्य | १३३ | २ |
| बाधा | ४९ | ३ | बाहिक | { १५१ ४५ | | | { ४२ १७ | |
| बांधकिनेय | १०९ | २६ | | { २९५ ३२ | | बीभत्स | { ४२ १९ | |
| बांधव | १११ | ३४ | | { १२९ १२४ | | | { २७० २३४ | |
| बर्हात | ७० | १९ | बाह्नीक | { १७३ ४० | | बुक | ८१ | ८ |
| | | | | { २२९ ९ | | बुका | ११७ | ६४ |
| | { ८८ १२२ | | बाह्य | २७८ | १७ | | { ८ १३ | |
| बाल | { ११३ ४२ | | बिड | १७३ | ४२ | बुद्ध | { २१७ १०८ | |
| | { २६५ २०५ | | बिडाल | ९७ | ६ | बुद्धि | १९ | १ |
| बालतनय | ७६ | ४९ | बिडौजस् | १२ | ४१ | बुद्बुद | २८९ | १९ |
| बालतृण | ९६ | १६७ | बिन्दु | ५० | ६ | | { २२ २६ | |
| बालमूषिका | ९८ | १२ | बिन्दुजालक | १५० | ३९ | बुध | { १३३ ५ | |
| बाला | ४१ | १४ | बिम्ब | २० | १६ | | { ३४५ १०० | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|-----------------|--------|--------|------------|--------|--------|
| बुधित | २१७ | २०८ | ब्रह्मपुत्र | ४८ | १० | भग | १२० | ७६ |
| बुध | ६९ | ५४ | ब्रह्मवन्धु | २४६ | १०४ | { | २३२ | २६ |
| बुभुक्षा | १७६ | ५४ | ब्रह्मविन्दु | १३९ | ३९ | भगंदर | ११६ | ५६ |
| बुभुक्षित | २०० | २० | ब्रह्मभूय | १४१ | ५१ | भगवत् | ८ | १३ |
| बुस | १६९ | २२ | ब्रह्मयज्ञ | १३४ | १४ | भगिनी | ११० | २९ |
| बुस्त | २९९ | ३४ | ब्रह्मवर्चस् | १३९ | ३९ | भङ्ग | ५० | ५ |
| बृहित | १६३ | १०७ | ब्रह्मसायुज्य | १४१ | ५१ | भङ्गा | १६९ | २० |
| बृषी | १४० | ४६ | ब्रह्मस् | ९ | २७ | भगि | २८४ | ८ |
| बृहत | २०८ | ६० | ब्रह्मसूत्र | १४१ | ४९ | भंग्य | १६६ | ७ |
| बृहत्तिका | १२८ | १९७ | ब्रह्मांजलि | १३९ | ३९ | भजमान | १४७ | २४ |
| बृहती | { ८३ | ९३ | ब्रह्मासन | १३९ | ३९ | भट | १५४ | ६१ |
| | { २४० | ७५ | | | | भटित्र | १७४ | ४६ |
| बृहत्कुक्षि | ११३ | ४४ | ब्राह्म | { २८ | २१ | भट्टारक | ४१ | १३ |
| बृहद्धानु | १४ | ५४ | | { १४१ | ५१ | भट्टिनी | ४१ | १३ |
| बृहत्स्पति | २१ | २४ | ब्राह्मण | १३२ | ४ | भटाकी | ८६ | ११४ |
| बोधकर | १६१ | ९७ | ब्राह्मणयष्टिका | ८३ | ८९ | भंडिल | ७९ | ६३ |
| बोधिद्रुम | ७१ | २० | ब्राह्मणी | ८३ | ८९ | भंडी | ८३ | ९१ |
| बोल | १८५ | १०४ | ब्राह्मण्य | २२७ | ४१ | भद्र | { २८ | २५ |
| ब्रध्न | २२ | २८ | | ११ | ३५ | { | १७७ | ५९ |
| ब्रह्मचारिन | { १३२ | ३ | ब्राह्मी | { ३३ | १ | भद्रकुम्भ | १४९ | ३२ |
| | { १४० | ४२ | | ९१ | ११७ | भद्रदारु | ७७ | ५३ |
| ब्रह्मण्य | ७५ | ६१ | भ | | | भद्रपर्णी | ७४ | ३६ |
| ब्रह्मस्व | १४१ | ५१ | भ | २१ | २१ | भद्रवला | ९३ | १५३ |
| ब्रह्मदर्भा | ९२ | १४५ | भक्त | १७९ | ४८ | भद्रमुस्तक | ९५ | १६० |
| ब्रह्मदारु | ७५ | ४१ | भक्षक | २०० | २० | भद्रयव | ७९ | ६७ |
| ब्रह्मन् | { ८ | १६ | भक्षित | २१८ | ११० | भद्रश्री | १३० | १३१ |
| | { २७ | ११४ | भक्ष्यकार | १७१ | २८ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| भद्रासन | १४८ | ३१ | भवन | ६२ | ५ | मानु | २२ | ३१ |
| भय | ४२ | २१ | भवानी | ११ | ३७ | मानु | २३ | ३३ |
| भयंकर | ४२ | २० | भविक | २८ | २६ | मानु | २४६ | १०५ |
| भयद्रुत | २०४ | ४२ | भवितृ | २०१ | २९ | भामिनी | १०५ | ४ |
| भयानक | { ४२ | १७ | भविष्णु | २०१ | २९ | भार | १८२ | ८७ |
| | { ४२ | २० | भव्य | २५५ | १५४ | भारत | ५९ | ६ |
| भर | १६ | ६६ | भषक | १९१ | २२ | भारती | ३३ | १ |
| भरण | १९४ | ३८ | भस्त्रा | १९३ | ३३ | भारद्वाजी | ८७ | ११६ |
| भरण्य | १९४ | ३८ | भस्मगंधिनी | ८८ | १२० | भारयष्टि | १९२ | ३० |
| भरण्यभुज् | १९९ | १९ | भस्मगर्भा | ७८ | ६३ | भारवाह | १९० | १५ |
| भरत | १८९ | १२ | भा | २३ | ३४ | भारिक | १९० | १५ |
| भरद्वाज | ९९ | १५ | भाग | १८३ | ८९ | भार्गव | २२ | २५ |
| भर्ग | १० | ३३ | भागधेय | { २९ | २८ | भार्गवी | ९४ | १५८ |
| भर्तृ | { १११ | ३५ | | { १४८ | २७ | भार्गी | ८३ | ८९ |
| | { २३८ | ५९ | भागिनेय | १११ | ३२ | भार्या | १०९ | ६ |
| भर्तृदारक | ४१ | १२ | भागीरथी | ५५ | ३१ | भार्यापती | ११२ | ३८ |
| भर्तृदारिका | ४१ | १३ | भाग्य | { २९ | २८ | भाव | { ४१ | १२ |
| भर्त्सन | ३६ | १४ | | { २५५ | १५५ | | { ४३ | २१ |
| भर्मन् | { १८३ | ९४ | भागीन | १६६ | ७ | | { २६५ | २०७ |
| | { १९४ | ३८ | भाजन | १७२ | ३३ | भाविक | { १३० | १०४ |
| भल्ल | २९० | २१ | भांड | { १७२ | ३३ | | { १७४ | ४६ |
| भल्लातकी | ७५ | ४२ | | { २३५ | ४४ | | { २१६ | १०४ |
| भल्लुक | ९७ | ३ | भाद्र | २७ | १७ | भावुक | २८ | २६ |
| भल्लुक | ९७ | ४ | भाद्रपद | २७ | १७ | भाषा | ३३ | १ |
| भव | { १० | ३४ | भाद्रपदा | २१ | २२ | भाषित | { ३३ | १ |
| | { २६५ | २०६ | | | | | { २१७ | १०७ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| भाष्य | २९४ | ३१ | भीष्म | ४२ | २० | भूति | ११ | ३६ |
| भास | २३ | ३४ | भीष्मत् | ६५ | ३१ | { २३९ | ६९ | |
| भास्कर | २२ | २८ | मुक्त | २१८ | १११ | भूतिक | २२९ | ८ |
| भास्वत् | २२ | २९ | मुग्ध | २१० | ७१ | भूतेश | १० | ३१ |
| भिक्षा | { २१९ | ६ | { २१४ | ९२ | | भूदार | ९७ | २ |
| { २६८ | २२४ | | भुज | १२० | ८० | भूदेव | १३२ | ४ |
| भिक्षु | १३९ | ४१ | भुजग | ४७ | ६ | भूनिम्ब | ९२ | १४३ |
| भित्त | २० | १६ | भुजंग | ४७ | ६ | भूप | १४३ | १ |
| भित्ति | ६२ | ४ | भुजंगभुज | १०२ | ३० | भूपदी | ७९ | ७० |
| भिदा | २१९ | ५ | भुजंगम | ४७ | ६ | भूभृत् | २३८ | ६१ |
| भिदुर | १३ | ४७ | भुजंगाक्षी | ८७ | ११५ | भूमन् | २७८ | १७ |
| भिन्दिपाल | १६० | ९१ | भुजशिरस् | १२० | ७८ | भूमि | ५८ | २ |
| भिन्न | { २१२ | ८२ | भुजांतर | १२० | ७७ | भूमिजम्बुका | { ७४ | ३८ |
| { २१६ | १०० | | भुजिप्य | १९० | १७ | { ८७ | ११८ | |
| भिषज् | ११६ | ५७ | | | | भूमिस्पृक् | १६५ | १ |
| भिस्तटा | १७५ | ४९ | भुवन | { ४६ | १ | भूयस् | २०८ | ६३ |
| भिस्ता | १७५ | ४८ | { ४९ | ३ | | भूयिष्ठ | २०८ | ६३ |
| भी | ४२ | २१ | { ५९ | ६ | | भूरि | { २०८ | ६३ |
| भीति | ४२ | २१ | भू | ५८ | २ | { २६० | १८२ | |
| भीम | { १० | ३४ | भूत | { ७ | ११ | भूरिफेना | ९२ | १४३ |
| { ४२ | २० | | { २१६ | १०४ | | भूरिभाव | ९७ | ५ |
| | | | { २४१ | ७८ | | भूरुंडी | ७९ | ६९ |
| भीरु | { १०५ | ३ | भूतकेश | १८६ | १११ | भूर्ज | ७५ | ४६ |
| { २०१ | २६ | | भूतवंशी | ७९ | ७१ | भूषण | १२४ | १०१ |
| भीरुक | २०१ | २६ | भूतात्मन् | २४६ | १०५ | भूषित | १२४ | १०० |
| भीलुक | २०१ | २६ | भूतावास | ७७ | ५८ | भूष्णु | २०१ | २९ |
| भीषण | ४२ | २० | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------|--------|--------|-------------|--------|--------|----------|--------|--------|
| भूस्तृण | ९६ | १६७ | भोगिन् | ४७ | ८ | भकुंस | ४१ | ११ |
| भृगु | ६६ | ४ | भोगिनी | १०५ | ५ | भुकुटि | ४६ | ३७ |
| भृङ्ग | { ९० | १३४ | भोजन | १७६ | ५५ | भु | १२३ | ९२ |
| | { ९९ | १६ | भोस् | २७६ | ७ | भूकुंस | ४१ | ११ |
| | { १०२ | २९ | भौम | २२ | २५ | भूकुटि | ४६ | ३७ |
| भृंगराज | ९३ | १५१ | भौरीक | १४४ | ७ | भूण | { २३६ | ४५ |
| भृंगार | १४९ | ३२ | भंश | १४७ | २३ | | { ११२ | ३९ |
| भृंगारी | १०२ | २८ | भंकुस | ४० | ११ | | { २५१ | १३५ |
| भृतक | १८९ | १५ | भकुटि | ४६ | ३७ | भेष | १४७ | २३ |
| भृति | १९४ | ३८ | | ३० | ४ | म | | |
| भृतिभुज् | १८९ | १५ | भम | { ५९ | ७ | मकर | ५३ | २० |
| भृत्या | १९४ | ३८ | | { २२० | ९ | मकरध्वज | ९ | २६ |
| भृत्य | १९० | १७ | भमर | १०२ | २९ | मकरन्द | ७० | १७ |
| भृशम् | १६ | ६६ | भमरक | १२३ | ९६ | मकुष्टक | १६८ | १७ |
| भेक | ५४ | २४ | भमि | २० | ९ | मकूलक | ९२ | १४४ |
| भेकी | ५४ | २४ | भष्ट | २१६ | १०४ | मक्षिका | १०१ | २६ |
| भेद | { १४६ | २० | भष्टयव | १७४ | ४७ | मख | १३४ | १३ |
| | { १४७ | २१ | भाजिष्णु | २२४ | १०१ | मगध | १६१ | ९७ |
| भेदित | २१६ | १०० | भातरौ | १११ | ३६ | मघवन् | १२ | ४१ |
| भेरी | ४० | ६ | भातृज | १११ | ३६ | मंक्षु | २७५ | २ |
| भेषज | ११५ | ५० | भातृजाया | ११० | ३० | मंगल | २८ | २५ |
| भैक्ष | १४० | ४६ | भातृभगिन्यौ | १११ | ३६ | मंगल्यक | १६८ | १७ |
| भैरव | ४२ | १९ | भातृव्य | २५३ | १४६ | मंगल्या | १२९ | १२७ |
| भैषज्य | ११५ | ५० | भात्रीय | १११ | ३६ | मचर्चिका | २८ | २७ |
| भोग | २३ | १२३ | भान्ति | ३० | ७ | मज्जन् | ६९ | १२ |
| भोगवती | २३९ | ७० | भाष्ट | १७१ | ३० | मञ्च | १३१ | १३८ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|-----------|--------|--------------|----------|--------|------------|-----------|--------|
| मञ्जरि | ६९ | १३ | मण्डूक | ५४ | २४ | मदन | ९ | २५ |
| मञ्जिष्ठा | ८३ | ९० | मण्डूकपर्ण | ७७ | ५६ | | ७६ | ५३ |
| मञ्जीर | १२६ | १०९ | मण्डूकपर्णी | ८३ | ९१ | | ८१ | ७८ |
| मंजु | २०६ | ५२ | मण्डूर | १८४ | ९८ | मदस्थान | १९४ | ४० |
| मंजुल | २०६ | ५२ | मतंगज | १४९ | ३४ | मदिरा | १९४ | ४० |
| मंजूषा | १९२ | २९ | मतल्लिका | २८ | २७ | मदिरागृह | ६३ | ८ |
| मठ | ६३ | ८ | मति | २९ | १ | मदोत्कट | १४९ | ३५ |
| मड्डु | ४० | ८ | | | | मदगु | १०२ | ३४ |
| मणि | { १० २८ | ९३ | मत्त | { १४९ ३६ | २३ | मद्गुर | ५३ | १९ |
| | { १८३ ९३ | | | { २०० २३ | | मद्य | १९४ | ४० |
| मणिक | १७१ | ३१ | मत्तकाशिनी | १०५ | ४ | | २६ | १५ |
| मणिवन्ध | १२१ | ८१ | मत्सर | २५९ | १७२ | मधु | { १८६ १०७ | |
| मण्ड | { २६ ५१ | ४९ | मत्स्य | ५२ | १७ | | { १९४ ४१ | |
| | { १७४ ४९ | | मत्स्यडो | १७३ | ४३ | | { ५४५ १०३ | |
| मण्डन | { १२५ १०२ | २९ | मत्स्यपित्ता | ८२ | ८६ | मधुक | ८६ | १०९ |
| | { २०१ २९ | | मत्स्यवेधन | ५२ | १६ | मधुकर | १०२ | ५९ |
| मण्डप | ६३ | ९ | मत्स्याक्षी | ९१ | १३७ | मधुकम | १९४ | ४० |
| | { १९ ६ | | मत्स्यात्खग | २६७ | २१९ | मधुदुम | ७२ | २७ |
| मण्डल | { २० १६ | ३२ | मत्स्याधानी | ५२ | १६ | मधुप | १०२ | २९ |
| | { २३ ३२ | | मयित | १७५ | ५३ | मधुपर्णिका | { ७४ ३५ | |
| मण्डलक | ११६ | ५४ | मथिन् | १८० | ७४ | | { ८३ ९४ | |
| मण्डलाग्र | १६० | ८९ | | { १५० ३७ | | मधुपर्णी | ८२ | ८३ |
| मण्डलेश्वर | १४३ | २ | मद | { २२१ १२ | | मधुमक्षिका | १०१ | २६ |
| मण्डहारक | १८९ | १० | | { २४३ ९१ | | मधुयष्टिका | ८६ | १०९ |
| मण्डित | १२४ | १०० | मदकल | १४९ | ३५ | मधुर | { ३१ ९ | |
| मण्डीरी | ८३ | ९१ | | | | | { २६२ १९१ | |
| | | | | | | मधुकर | ९१ | १४३ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|--------------|--------|--------|------------|--------|--------|
| मधुरसा { | ८२ | ८३ | मनःशिला | १८६ | १०८ | मन्थनी | १८० | ७४ |
| | ८५ | १०७ | मनस् | २९ | ३१ | मन्थर | १५६ | ७२ |
| मधुरा | ९३ | १५२ | मनसिज | ९ | २६ | मन्थान | १८० | ७४ |
| मधुरिका | ८५ | १०५ | मनस्कार | ३० | २ | मन्द { | १९० | ३८ |
| मधुरिपु | ८ | २० | मनाक् | २७६ | ८ | | २४४ | ९५ |
| मधुलिह | १०२ | २९ | मनित | २१७ | १०८ | मन्दगामिनृ | ५६ | ७२ |
| मधुवार | १९४ | ४० | मनीषा | २९ | १ | मन्दाकिनी | १३ | ४९ |
| मधुव्रत | १०२ | २९ | मनोषिन् | १३३ | ५ | मन्दाक्ष | ४३ | २३ |
| मधुशिमु | ७३ | ३१ | मनु | २५१ | ३८ | | १३ | ५० |
| मधुश्रेणी | ८२ | ८४ | मनुज | १०४ | १ | मन्दार { | ७२ | २६ |
| मधुष्ठीळ | ७२ | २८ | मनुष्य | १०४ | १ | | ८१ | ८१ |
| मधुस्रवा | ९१ | १४२ | मनुष्यधर्मन् | १६ | ६८ | मन्दिर { | ६२ | ५ |
| मधूक | ७२ | २७ | मनोगुप्ता | १८६ | १०८ | | २६१ | १८४ |
| मधूच्छिष्ट | १८६ | १०७ | मनोजवस् | १९८ | १३ | मन्दुरा | ६२ | ७ |
| मधूलक | ७२ | २८ | मनोज्ञ | २०६ | ५२ | मन्दोष्ण | २३ | ३६ |
| मधूलिका | ८२ | ८४ | मनोरथ | ४४ | २७ | मन्द्र | ३९ | २ |
| मध्य { | १२० | ७९ | मनोरम | २०६ | ५२ | मन्मथ { | ९ | २५ |
| | २५६ | १६१ | मनोहत | २०४ | ४१ | | ७१ | २१ |
| मध्यदेश | ५९ | ७ | मनोहा | १८६ | १०८ | मन्था | ११८ | ६५ |
| मध्यम { | ३८ | १ | मन्तु | १४८ | २६ | मन्यु { | ४३ | २५ |
| | ५९ | ७ | मंत्र | २५८ | १६७ | | २५५ | १५३ |
| | १२० | ७९ | मंत्रिन् { | १४३ | ४ | मन्वन्तर | २८ | २२ |
| मध्यमा { | १०६ | ८ | | १६५ | २०६ | मय | १८० | ७५ |
| | १२१ | ८२ | मन्थ | १८० | ७४ | मयु | १७ | ७१ |
| मध्याह्न | २४ | ३ | मन्यदंडक | १८० | ७४ | मयुष्टक | १६८ | १७ |
| मध्वासव | १९४ | ४१ | मन्थन् | १८० | ७४ | मयूख { | २३ | ३३ |
| | | | | | | | २२० | १८ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| मयूर { | ८६ | १११ | मर्मर | ३८ | २३ | मह | ४६ | ३८ |
| | १०२ | ३० | मर्मस्पृश | २१२ | ८३ | महत् { | २०८ | ६० |
| मयूरक { | ८२ | ८८ | मर्यादा | १४७ | २६ | | २४१ | ७९ |
| | १८५ | १०१ | | ११८ | ६५ | महती | २३९ | ६९ |
| मरकत | १८३ | ९२ | मल { | २६३ | १९७ | महस् | २७० | २३१ |
| भरण | १६४ | ११६ | मलदूषित | २०७ | ५५ | महाकन्द | ९२ | १४८ |
| मरीच | १७२ | ३६ | मलयज | १३० | १३१ | महाकुल | १३२ | ३ |
| मरीचि { | २२ | २७ | मलयु | ७८ | ६१ | महांगु | १८० | ७५ |
| | २३ | ३३ | मलिन | २०७ | ५५ | महाजाली | ८७ | ११७ |
| मरीचिका | २३ | ३५ | मलिनी | १०८ | २० | महादेव | १० | ३२ |
| मरु { | ५८ | ५ | मलिम्लुच | १९१ | २५ | महाधन | १२७ | ११३ |
| | २५७ | १६३ | मलीमस | २०७ | ५५ | महानस | १७१ | २७ |
| मरुत् { | १५ | ६२ | मल | २९० | २१ | महामात्र | १४४ | ५ |
| | १७ | २ | मलक | २९६ | ३७ | महारजत | १८३ | १५ |
| मरुत | २३७ | ५९ | मल्लिका | ७२ | ६९ | महारजन | १०६ | १०३ |
| मरुत्वत् | १२ | ४१ | मल्लिकाक्ष | १०१ | २४ | महारण्य | ६७ | १ |
| मरुन्माला | ९० | १३३ | मल्लिगन्धि | १२९ | १२७ | महाराजिक | ७ | १० |
| मरुबक { | ७६ | ५२ | मसी | २८४ | १० | महारौरव | ४८ | १ |
| | ८१ | ८९ | मसूर | १६८ | १७ | महाशय | १९६ | ३ |
| मर्कट | ९७ | ३ | मसूरविदला | ८६ | १०९ | महाशूरी | १०७ | १३ |
| मर्कटक | ९९ | १३ | मसृण | १७४ | ४६ | महाश्वेता | ८६ | ११० |
| मर्कटी { | ७६ | ४८ | मस्कर | ९५ | १६१ | महासहा { | ८० | ७३ |
| | ८२ | ८७ | मस्करिन् | १३९ | ४१ | | ९१ | १३८ |
| मर्त्य | १०४ | १ | मस्तक | १२३ | ९५ | महासेन | १२ | ३९ |
| मर्दन | २२३ | २२ | मस्तिष्क | ११८ | ६५ | महिमन् | ११ | ३६ |
| मर्दल | ४० | ८ | मस्तु | १७५ | ५४ | महिला | १०५ | २ |
| मर्मन् | २९४ | ३० | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|-------------|--------|--------|----------------|--------|--------|
| महिलाह्वया | ७७ | ५५ | मागध | { १६१ | ९७ | मातुली | ११० | ३० |
| महिष | ९७ | ४ | | { १८७ | २ | मातुलंगिक | ८१ | ७८ |
| महिषी | १०५ | ५ | मागधी | { ८० | ७१ | | { ११ | ३५ |
| मही | ५८ | ३ | | { ८४ | ९६ | मातृ | { ४१ | १४ |
| महीक्षित् | १४३ | १ | माघ | २६ | १५ | | { ११० | २९ |
| महीध | ६५ | १ | माघ्य | ८० | ७३ | | { १७८ | ६६ |
| महीरुह | ६८ | ५ | माठर | २३ | ३१ | मातृष्वसेय | १०९ | २५ |
| महीलता | ५३ | २१ | माढि | २८४ | ८ | मातृष्वस्त्रीय | १०९ | २५ |
| महीसुत | २२ | २५ | माणवक | { ११३ | ४२ | मात्र | २६० | १७८ |
| महेच्छ | १९६ | ३ | | { १२५ | १०६ | मात्रा | { २०८ | ६२ |
| महेरुणा | ८८ | १२४ | माणव्य | २२७ | ४० | | { २६० | १७७ |
| महेश्वर | १० | ३० | माणिक्य | २९४ | ३१ | माद | २२१ | १२ |
| महोक्ष | १७७ | ६१ | माणिमन्थ | १७३ | ४२ | माधव | { ७८ | १८ |
| महोत्पल | ५७ | ३९ | मातंग | { १९० | १९ | | { २६ | १६ |
| महोत्साह | १९६ | ३ | | { २३१ | २१ | माधवक | १९४ | ४१ |
| महोद्यम | १९६ | ३ | मातरपितरौ | ११२ | ३७ | माधवी | ८० | ७२ |
| | { ८४ | १०० | मातरिश्चन् | १५ | ६१ | माध्वीक | १९४ | ४१ |
| महौषध | { ९२ | १४८ | मातलि | १२ | ४५ | मान | ४३ | २२ |
| | { १७३ | ३८ | मातापितरौ | ११२ | ३७ | मानव | १०४ | १ |
| मा | २७७ | ११ | मातामह | १११ | ३३ | मानस | २९ | ३१ |
| मांस | { ११७ | ६३ | | { ८१ | ७८ | मानसौकस् | ९७ | २३ |
| | { २९० | २२ | मातुल | { ११० | ३१ | मानिनी | १०५ | ३ |
| मांसल | ११३ | ४४ | मातुलपुत्रक | ८१ | ७८ | मानुष | १०४ | १ |
| मांसात्पशु | २३५ | ४२ | | { ११० | ३० | मानुष्यक | २२७ | ४२ |
| मांसिक | १८९ | १४ | मातुलानी | { ११० | ३० | माया | १८९ | ११ |
| माक्षिक | १८६ | १०७ | | { १४२ | २० | मायाकार | १८९ | ११ |
| | | | मातुलाहि | ४७ | ६ | मायादेवीसुत | ८ | १५ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|---------------|------------|--------------|---------------|------------|--------------|----------|---------|
| मायु | ११७ | ६२ | मालावृणक | ९६ | १६७ | मिथ्यामिशंसन | ३९ | १० |
| मायूर | १०४ | ४३ | मालिक | १८ | ५ | मिथ्यामति | ३० | ४ |
| मार | ९ | २५ | मालुधान | ४७ | ६ | मिशी | ९० | १३४ |
| मारजित् | ८ | १३ | मालर | ७३ | ३२ | मिश्रेया | ८५ | १०५ |
| मारण | १६४ | ११४ | माल्य | १३१ | १३५ | मिसि | ८५ | १०५ |
| मारिष | ४१ | १४ | माल्यवत् | ६६ | ३ | मिसि | ९३ | १५२ |
| मारुत | १५ | ६२ | माषपर्णी | ९१ | १३८ | मिहिका | २० | १८ |
| मार्कव | ९३ | १५१ | माषीण | १६६ | ७ | मिहिर | २२ | २९ |
| मार्ग | { २६ ६१ | { १४ १५ | माप्य | १६६ | ७ | मीढ | २१५ | ९६ |
| मार्गण | { १५९ २०६ २२५ | { ८७ ४९ ३० | मास | २६ | १२ | मीन | ५२ | १७ |
| मार्गशीर्ष | २६ | १४ | मासर | १७५ | ४९ | मीनकेतन | ९ | २५ |
| मार्गित | २१७ | १०५ | मासिक | १३७ | ३१ | मुकुट | १२५ | १०२ |
| मार्जन | ७३ | ३३ | मास्म | २७७ | ११ | मुकुन्द | ८८ | १२१ |
| मार्जना | १२८ | १२१ | माहिष्य | १८७ | ३ | मुकुर | १३२ | १४० |
| मार्जार | ९७ | ६ | माहेयी | १७८ | ६६ | मुकुल | ७० | १६ |
| मार्जिता | १७४ | ४४ | माहेश्वरी | ११ | ३५ | मुक्तकंचुक | ४७ | ६ |
| मार्तण्ड | २२ | २९ | मितंपच | २०६ | ४८ | मुक्ता | १८३ | ९३ |
| मार्दगिक | १८९ | १३ | | २२ | ३० | मुक्तावली | १२५ | १०५ |
| मार्ष्टि | १२८ | १२१ | मित्र | { १४४ १४५ १५८ | { ९ १२ १६७ | मुक्तास्फोट | ५३ | २३ |
| मालक | ७८ | ६२ | मिथस् | २७४ | २५६ | मुक्ति | ३१ | ६ |
| मालती | ८० | ७२ | मिथुन | १०३ | ३८ | मुख | { ६५ १२२ | { १९ ८९ |
| माला | १३१ | १३५ | मिथ्या | २७८ | १५ | मुखर | २०३ | ३६ |
| मालाकार | १८८ | ५ | मिथ्यादृष्टि | ३० | ४ | मुखवासन | ३२ | ११ |
| | | | मिथ्याभियोग | ३५ | १० | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|---------------------|------------------|--------------|--------------|-------------|-----------------|--------------------|-----------------|
| मुख्य | { १३९ २०७ २९० | { ४० ५७ २२ | मुसली | { ८७ ९८ | { ११९ १२ | मूर्द्धामिषिक्त | { १४३ २३८ | { १ ६१ |
| मुण्ड | { ११४ २९४ | { ४८ ३४ | मुसल्य | २०५ | ४५ | मूर्धा | ८२ | ८३ |
| मुंडित | { ११४ २१२ | { ४८ ८५ | मुस्तक | ९५ | १५९ | मूल | { ६९ २६४ | { १२ २०० |
| मुण्डिन् | १८८ | १० | मुस्ता | ९५ | १५९ | मूलक | ९४ | १५७ |
| मुद् | २८ | २४ | मुहुष | २७५ | १ | मूलकर्मन् | २१९ | ४ |
| मुदित | २१४ | ९५ | मुहुर्मात्रा | ३६ | १० | मूलधन | १८१ | ८० |
| मुदिर | १८ | ७ | मुहूर्त | २६ | ११ | मूल्य | { १८१ १९४ | { ७९ ३८ |
| मुद्रपर्णी | ८६ | ११३ | मूक | १९८ | १३ | मूषक | ९८ | १२ |
| मुद्गर | १६० | ९१ | मूढ | २०६ | ४८ | मूषा | { १९३ २९७ | { ३३ ३८ |
| मुधा | २७५ | ४ | मूत | २१४ | ९५ | मूषिकपर्णी | ८२ | ८८ |
| मुनि | { ८ १४० | { १४ ४२ | मूत्र | ११८ | ६७ | मूषित | २१३ | ८८ |
| मुनीन्द्र | ८ | १४ | मूत्रकृच्छ्र | ११६ | ५६ | मृग | { ९८ २२५ २३१ | { ८ ३० २० |
| मुरज | ३९ | ५ | मूत्रिण | २१५ | ९६ | मृगणा | २२५ | ३० |
| मुरा | ८८ | १२३ | मूर्ख | २०६ | ४८ | मृगतृष्णा | २३ | ३५ |
| मुषित | २१३ | ८८ | मूर्च्छा | १६३ | १०९ | मृगदंशक | १९१ | २१ |
| मुष्क | १२० | ७६ | मूर्च्छाल | ११७ | ६१ | मृगधूर्तक | ९७ | ५ |
| मुष्कक | ७४ | ३९ | मूर्च्छित | { ११७ २४२ | { ६१ ८२ | मृगनाभि | १३० | १२९ |
| मुष्टिवन्ध | २२३ | १४ | मूर्ति | { ११७ २२० | { ६१ ७६ | मृगवधाजीव | १९० | २१ |
| मुसल | १७० | २५ | मूर्ति | { ११९ २३९ | { ७१ ६६ | मृगबन्धनी | १९१ | २६ |
| मुसलिन् | ९ | २४ | मूर्तिमन् | २१० | ७६ | मृगमद | १३० | १२९ |
| | | | मूर्द्धन् | १२३ | ९५ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|-----------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| मृगया | १९१ | २३ | मृदंग | ३९ | ५ | मेदस् | ११७ | ६४ |
| मृगयु | १९० | २१ | मृदु | { २११ | ७८ | मेदिनी | ५८ | ३ |
| मृगरोमज | १२७ | १११ | | { २४४ | ९४ | मेदुर | २०२ | ३० |
| मृगव्य | १९१ | २३ | मृदुत्वच | ७५ | ४६ | मेधा | ३० | २ |
| मृगशिरस् | २१ | २३ | मृदुल | २११ | ७८ | मेधि | १६८ | १५ |
| मृगशीर्ष | २१ | २३ | मृद्रीका | ८५ | १०७ | मेध्य | २०७ | ५५ |
| मृगांक | १९ | १४ | मृध | १६१ | १०४ | मेनकात्मजा | ११ | ३७ |
| मृगादन | ९७ | १ | मृषा | २७८ | १५ | मेरु | १३ | ४२ |
| मृगित | २१७ | १०५ | मृषार्थक | ३७ | २१ | मेलक | २२५ | २९ |
| मृगेन्द्र | ९७ | १ | मृष्ट | २०७ | ५६ | मेष | { २२ | २७ |
| मृजा | १२८ | १२१ | मेकलकन्यका | ५५ | ३२ | | { १८० | ७६ |
| मृड | १० | ३१ | मेखला | { १२६ | १०८ | मेषकम्बल | १८६ | १०७ |
| मृडानी | ११ | ३७ | | { १६० | ९० | मेह | ११६ | ५६ |
| मृणाल | ५७ | ४२ | मेघ | १८ | ६ | मेहन | १२० | ७६ |
| मृणाली | २८३ | ७ | मेघज्योतिस् | १९ | १० | मैत्रावरुणि | २१ | २० |
| मृत् | ५८ | ४ | मेघनादानुलासिन् | १०२ | ३० | मैत्री | २९७ | ३९ |
| मृत् | { १६४ | ११७ | मेघनामन् | ९५ | १५९ | मैत्र्य | २९७ | ३९ |
| | { १६६ | ३१ | मेघनिर्घोष | १९ | ८ | मैथुन | { १४२ | ५७ |
| मृत्स्नात | १९९ | १९ | मेघपुष्प | ४९ | ५ | | { २४९ | १२२ |
| मृत्तालक | ९० | १३१ | मेघमाला | १८ | ८ | मैरेय | १९४ | ४१ |
| मृत्तिका | ५८ | ४ | मेघवाहन | १२ | ४४ | मोक्ष | { ३१ | ७ |
| मृत्यु | १६४ | ११६ | मेचक | { ३२ | १४ | | { ७४ | ३९ |
| मृत्युञ्जय | १० | ३१ | | { १०२ | ३१ | मोघ | २११ | ८१ |
| मृत्सा | ५८ | ४ | मेह | { १२० | ७६ | मोघा | ७७ | ५४ |
| मृत्सना | { ५८ | ४ | | { १८० | ८६ | मोचक | ७३ | ३१ |
| | { ९० | १३१ | मेदक | १९४ | ४१ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| मोचा | { ७५ | ४६ | यक्ष्मन् | ११५ | ५१ | यमराज् | १४ | ५८ |
| | { ८६ | ११३ | यजमान | १३३ | ८ | यमुना | ५५ | ३२ |
| मोदक | २९५ | ३३ | यजुस् | १४ | ३ | यमुनाभ्रातृ | १४ | ५८ |
| मोरट | १८६ | ११० | यज्ञ | १३४ | १३ | ययु | १५१ | ४५ |
| मोरटा | ८२ | ८३ | यज्ञांग | ७१ | २२ | यव | १६८ | १५ |
| मोषक | १९१ | २४ | यज्ञिय | १३७ | २७ | यवक्य | १६६ | ७ |
| मोह | १६३ | १०९ | यज्वन् | १३३ | ८ | यवक्षार | १८६ | १०८ |
| मौक्तिक | १८३ | ९२ | यत् | २७५ | ३ | यवफल | ९५ | १६१ |
| मौद्गीन | १६७ | ८ | यतस् | २७५ | ३ | यवस | ९६ | १६७ |
| मौन | १३८ | ३२ | यति | १४० | ४३ | यवागू | १७५ | ५० |
| मौरजिक | १८९ | १३ | यतिन् | १४० | ४३ | यवाग्रज | १८६ | १०८ |
| मौर्वी | १५९ | ८५ | यथा | २७६ | ९ | यवानिका | ९२ | १४५ |
| मौलि | २६२ | १९३ | यथाजात | २०६ | ४८ | यवास | ८३ | ९१ |
| मौष्टा | २८३ | ५ | यथातथम् | २७८ | १५ | यवीयस् | ११३ | ४३ |
| मौहूर्त | १४५ | १४ | यथायथम् | २७८ | १४ | यव्य | १६६ | ७ |
| मौहूर्तिक | १४५ | १४ | यथार्थम् | २७८ | १५ | यश पटह | ३९ | ६ |
| म्लिष्ट | ३७ | २१ | यथाहर्वर्ण | १४५ | १३ | यशस् | ३५ | ११ |
| म्लेच्छदेश | ५९ | ७ | यथास्वम् | २७८ | १४ | यष्टि | २९७ | ३८ |
| म्लेच्छमुख | १८४ | ९७ | यथेप्सित | १७६ | ६७ | यष्टिमधुक | ८६ | १०९ |
| य | | | यदि | २७७ | १२ | यष्टृ | १३३ | ८ |
| यकृत | ११८ | ६६ | यदृच्छा | २१८ | २ | याग | १३४ | १३ |
| यक्ष | { ७ | ११ | यन्तृ | { १५४ | ५९ | याचक | २०६ | ४९ |
| | { १६ | ६९ | | { २६७ | ५९ | याचनक | २०६ | ४९ |
| यक्षकर्म | १३० | १३३ | | { १४ | ५८ | याचना | १३८ | ३२ |
| यक्षधूप | १२९ | १२७ | यम | { १४१ | ४८ | याचित | १६६ | ३ |
| यक्षराज् | १६ | ६८ | | { २२३ | १८ | याचितक | १६६ | ४ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|-------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| याच्ञा | { १३८ | ३२ | याष्टीक | १५६ | ७० | यूथिका | ८० | ७१ |
| | { ३१९ | ६ | यास | ८३ | ९१ | यूप | { ७५ | ४१ |
| याजक | १३५ | १७ | युक्त | १४७ | २४ | | { २९६ | ३५ |
| यातना | ४९ | ३ | युक्तरसा | ९१ | १४० | यूपक | २८९ | १९ |
| यातयाम | २५३ | १४५ | युग | { १०३ | ३८ | यूपकटक | १३५ | १८ |
| यातु | १६ | ६० | | { २३१ | २४ | यूपखण्ड | २५८ | १६७ |
| यातुधान | { १५ | ६० | युगकीलक | १६८ | १४ | यूपाग्र | २३५ | १९ |
| | { ११० | ३० | युगन्धर | { १५४ | ५७ | यूष | २९६ | ३५ |
| यात्रा | { १६१ | ९५ | | { २९६ | ३५ | योक्त्र | १६८ | १३ |
| | { २५९ | १७५ | युगपत् | २८० | २२ | योग | २३१ | २२ |
| यादःपति | ४९ | २ | युगपत्रक | ७१ | २२ | योगेष्ट | १८५ | १०५ |
| यादस् | ५३ | २० | युगपार्श्वग | १७७ | ६३ | योग्य | ८६ | ११२ |
| यादसाम्पति | १५ | ६१ | युगुल | १०३ | ३८ | योजन | २९४ | ३० |
| याग | { १४६ | १८ | युगाद्युग | १५४ | ५७ | योजनवल्ली | ८३ | ९१ |
| | { १५४ | ५८ | युग्म | १०३ | ३८ | योत्र | १६८ | १३ |
| यानमुख | १५३ | ५५ | युग्य | { १५४ | ५८ | योद्धृ | १५४ | ६१ |
| याप्य | २०७ | ५४ | | { १७७ | ६४ | योध | १५४ | ६१ |
| याप्ययान | १५३ | ५३ | युद्ध | १६२ | १०३ | योधसंराव | १६३ | १०७ |
| याम | { २५ | ६ | युध | १६२ | १०६ | योनि | १२० | ७६ |
| | { २२२ | १८ | युवति | १०६ | ८ | योष | १०४ | २ |
| यामिनी | २४ | ४ | युक्त् | ११३ | ४२ | योषित | १०४ | २ |
| यामुन | १८४ | १०० | युवराज | ४१ | १२ | यौतक | १४८ | २८ |
| यायजूक | १३३ | ८ | यूथ | १०४ | ४१ | यौतव | १८२ | ८५ |
| याव | १२९ | १२५ | यूथनाथ | १४९ | ३५ | यौवत | २०९ | २२ |
| यावक | १६९ | १८ | यूथप | १४९ | ३५ | यौवन | ११२ | ४० |
| यावत् | २७३ | २४६ | | | | | | |
| यावन | १२९ | १२८ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|-----------|--------|-----------|-----------|--------|----------------|-----------|--------|
| र | | | रजत | { १८४ १६ | | रथकार | { १८७ ४ | |
| रंहस् | १५ | ६४ | | { २४१ ७९ | | | { १८८ ९ | |
| रक्त | { ३२ १५४ | | रजनी | { २४ ४ | | रथगुप्ति | १५३ | ५७ |
| | { ११७ ६४ | | | { ९३ १५३ | | रथद्रु | ७२ | २६ |
| | { १२९ १२४ | | रजनीमुख | २४ ६ | | रथांग | { १५३ ५५ | |
| | { २४१ ८० | | | { २९ २९ | | | { १५३ ५६ | |
| रक्तक | ८० ७३ | | रजस् | { १०८ २१ | | रथांगाह्वयनामक | १०० २२ | |
| रक्तचन्दन | { १३० १३२ | | | { १६१ ९८ | | रथिक | १५७ ७६ | |
| | { १८६ १११ | | | { २७० २३१ | | | | |
| रक्तपा | ५३ २२ | | रजस्त्रला | १०८ २० | | रथिन् | { १५४ ६० | |
| | | | | | | | { १५७ ७६ | |
| रक्तफला | ९१ १३९ | | रज्जु | १९१ २७ | | रथिन | १५७ ७० | |
| रक्तसंध्यक | ५६ ३६ | | रंजन | १३१ १३२ | | रथ्य | १५२ ४६ | |
| रक्तसरोरुह | ५७ ४१ | | रंजनी | ८३ ९५ | | रथ्या | { ६२ ३ | |
| | | | | { १६२ १०४ | | | { १५३ ५५ | |
| रक्तांग | ९२ १४६ | | रण | { २२० ८ | | रद | १२२ ९१ | |
| रक्तोत्पल | ५७ ४२ | | | { २३६ ४९ | | रदन | १२२ ९१ | |
| रक्षसभ | २९३ २७ | | रण्डा | ८२ ८८ | | रदनच्छद | १२२ ९० | |
| रक्षस् | { ७ ११ | | रत | १४२ ५७ | | रन्ध्र | ४६ २ | |
| | { १५ ६० | | रतिपति | ९ २६ | | रभस | २९० २१ | |
| रक्षित | २१७ १०६ | | रत्न | { १८३ ९३ | | रमणी | १०५ ४ | |
| रक्षिवर्ग | १४४ ६ | | | { २४९ १२६ | | रम्भ | ८६ ११३ | |
| रक्षण | २२० ८ | | रत्नसानु | १३ ४९ | | रय | १५ ६४ | |
| रंकु | ९८ १० | | रत्नाकर | ४९ २ | | रल्लक | { १२७ ११६ | |
| रंग | १८५ १०६ | | रत्नि | १२२ ८६ | | | { २८८ १७ | |
| रंगाजीव | १८८ ७ | | रथ | { ७२ ३० | | रव | ३८ २२ | |
| रचना | १३१ १३७ | | | { १५२ ५१ | | रवण | २०३ ३८ | |
| रजक | १८९ १० | | रथकट्या | १५३ ५५ | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|------------|-----------|-----------|
| रवि | २२ | ३१ | राका | २५ | ८ | राजार्ह | १२९ | १२६ |
| रशना | १२६ | १०८ | राक्षस | १५ | ५९ | राजि | ६७ | ४ |
| रश्मि | { २३ ३३ | { ३३ ३३ | राक्षसी | ८९ | १२८ | राजिका | १६९ | १९ |
| | { २५२ १३८ | { १३८ १३८ | राक्षा | १२९ | १२५ | राजिल | ४७ | ५ |
| | { ३१ ७ | { ७ ७ | रांकव | १२७ | १११ | राजीव | { ५३ ५७ | { १९ ४१ |
| | { ३१ ९ | { ९ ९ | राजू | १४३ | १ | | | |
| रस | { ४२ १७ | { १७ १७ | राजक | १४३ | ३ | राज्यांग | १४६ | १८ |
| | { १८४ ९९ | { ९९ ९९ | राजकशेरु | २६१ | १८८ | रात्रि | २४ | ४ |
| | { २६९ २२७ | { २२७ २२७ | | { ४१ १३ | { १३ १३ | रात्रिचर | १५ | ६० |
| रसगर्भ | १८५ | १०२ | राजन | { १४३ १ | { १ १ | रात्रिचर | १५ | ६० |
| रसज्ञा | १२३ | ९१ | | { २४७ १११ | { १११ १११ | राद्धान्त | ३० | ४ |
| रसना | १२३ | ९१ | राजन्य | १४३ | १ | राघ | २६ | १६ |
| रसवती | १७१ | २७ | राजन्यक | १४३ | ४ | राधा | २१ | २२ |
| | { ५८ २ | { २ २ | राजन्वत् | ६० | १३ | | { ९ २३ | { २३ ११ |
| रसा | { ८२ ८४ | { ८४ ८४ | राजवला | ९३ | १५३ | राम | { २५२ १४० | { १४० १४० |
| | { ८८ १२३ | { १२३ १२३ | राजवीजिन् | १३२ | २ | | | |
| रसांजन | १८५ | १०१ | राजरा | १६ | ६८ | रामठ | १७३ | ४० |
| रसातल | ४६ | १ | राजर्लिग | २४३ | ९२ | रामा | १०५ | ४ |
| | { ७३ ३३ | { ३३ ३३ | राजवंश्य | १३२ | २ | राम्भ | १४१ | ४५ |
| रसाल | { ९५ १६३ | { १६३ १६३ | राजवत् | ६० | १३ | राल | १२९ | १२७ |
| | { १७४ ४४ | { ४४ ४४ | राजवृक्ष | ७१ | २३ | | { १०४ ४२ | { ४२ ४२ |
| रसित | १९ | ८ | राजसदन | ६३ | १० | राशि | { २६६ २१४ | { २१४ २१४ |
| रसोनक | ९२ | १४८ | राजसभा | २८४ | ९ | | | |
| रह | १४७ | २३ | राजसूय | २९४ | ३१ | राष्ट्र | २६१ | १८४ |
| रहस | १४७ | २२ | राजहंस | १०१ | २४ | राष्ट्रिका | ८३ | ९४ |
| रहस्य | १४७ | २३ | राजादन | { ७३ ७५ | { ३५ ४५ | राष्ट्रिय | ४१ | १४ |
| | | | | { ७५ ४५ | { ४५ ४५ | रासभ | १८० | ७७ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------------|-----------|--------|--------------|-----------|--------|-----------|-----------|--------|
| रासना | { ८७ ११४ | ११४ | रुचिर | २०६ | ५२ | रेतस् | ११७ | ६२ |
| | { ९१ १४० | १४० | रुच्य | २०६ | ५२ | रेफ | { २०७ ५४ | ५४ |
| राहु | २२ | २६ | रुज् | ११५ | ५१ | रेवतीरमण | { २५१ १३२ | १३२ |
| रिक्तक | २०७ | ५६ | रुजा | ११५ | ५१ | रेवा | ५५ | ३२ |
| रिक्थ | १८३ | ९० | रुत | ३८ | २५ | रै (रा) | { १८३ ९० | ९० |
| रिंगण | ४५ | ६६ | रुदित | ४५ | ३५ | | { २५७ १६५ | १६५ |
| रिपु | १४५ | १० | रुद्ध | २१३ | ९० | रोक | ४६ | २ |
| रिष्ट | २३३ | ३६ | रुद्र | { ७ १० | १० | रोग | ११६ | ५१ |
| रिष्टि | १६० | ७९ | | { १० ३४ | ३४ | रोगहारिन् | ११६ | ५७ |
| रीढा | ४३ | २३ | रुद्राणी | ११ | ३७ | रोचन | ७६ | ४७ |
| रीण | २१४ | ९२ | रुधिर | { ११७ ६४ | ६४ | रोचनी | { ८५ १०८ | १०८ |
| रीति | { १८४ ९७ | ९७ | | { २९० २२ | २२ | | { ९२ १४६ | १४६ |
| | { २३९ ६८ | ६८ | रुरु | ९८ | १० | रोचिष्णु | १२४ | १०१ |
| रीतिपुष्प | १८५ | १०३ | रुशती | ३७ | १८ | रोचिस् | २३ | ३४ |
| रुक्प्रति क्रिया | ११४ | ५० | रुष | ४३ | २६ | रोदन | १२३ | ९३ |
| रुक्म | १८३ | ९५ | रुहा | ९४ | १५७ | रोदनी | ८८ | ९२ |
| रुक्मकारक | १०८ | ८ | रूप | ३१ | ७ | रोदसी | २६९ | २२८ |
| रुक्ष | २३९ | २२५ | रूपाजीवा | १०८ | १९ | रोदस्य | २६९ | २२८ |
| रुग्ण | २१४ | ९१ | | { १८३ ९१ | ९१ | रोधस् | ५० | ७ |
| रुच | २३ | ३४ | रूप्य | { १८४ ९६ | ९६ | रौप | १५९ | ८७ |
| | ७६ | ५१ | | { २५६ १६० | १६० | रोमन | १२४ | ९९ |
| रुचक | { ८१ ७८ | ७८ | रूप्याध्यक्ष | १४४ | ७ | रोमन्थ | २८९ | १९ |
| | { १७३ ४३ | ४३ | रूषित | २१३ | ८९ | रोमहर्षण | ४५ | ३५ |
| | { १८६ १०९ | १०९ | रेचित | १५२ | ४८ | रोमांच | ४५ | ३५ |
| रुचि | { २३ ३४ | ३४ | रेणु | १६१ | ९८ | रोष | ४३ | २६ |
| | { २३२ २९ | २९ | रेणुका | ८८ | १२० | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|------------------|-------------------|------------|------------------|-----------------|------------|--------------|-------------|
| रोहिणी | १७८ | ६७ | लक्ष्मीवत् | १९८ | १४ | लब्ध | २१६ | १०४ |
| रोहित | { ३२ ५३ ९८ | { १५ १९ १० | लक्ष्य | { ४९ १५९ | { ३३ ८६ | लब्धधर्ण | १३३ | ६ |
| रोहितक | ७६ | ४९ | लगुड | २८९ | १८ | लब्धानुज्ञ | १३४ | १० |
| रोहिताश्व | १४ | ५५ | लग्न | २२ | २७ | लभ्य | १४७ | २४ |
| रोहिन् | ७६ | ४९ | लग्नक | १९५ | ४४ | लम्बन | १२५ | १०४ |
| रौद्र | { ४२ २२ | { १७ २० | लघिमन् | ११ | ३६ | लम्बोदर | ११ | ३८ |
| रौमक | १७२ | ४२ | लघु | { १५ ९० | { ६४ १३३ | लय | ४० | ९ |
| रौरव | ४८ | १ | लघुलय | ९५ | १५६ | ललना | १०५ | ३ |
| रौहिण्य | { ९ २२ | { २४ २६ | लंका | २७३ | ७ | ललंतिका | १२५ | १०४ |
| रौहिष | { ९६ ९८ | { १६६ १० | लंकोपिका | ९० | १३३ | ललाप | १२३ | ९२ |
| ल | | | लजा | ४३ | २३ | ललाटिका | १२५ | १०३ |
| लकुच | ७८ | ६० | लजाशील | २०१ | २८ | ललाट | २५३ | १४३ |
| लक्ष | १५९ | ८६ | लज्जित | २१४ | ९१ | ललामक | १३१ | १३५ |
| लक्षण | २० | १७ | लट्टा | २८४ | १० | ललित | ४५ | ३१ |
| लक्ष्मण | १९८ | १४ | | { ६८ ६९ ७७ | { ९ ११ ५५ | लव | { २०८ २२४ | { ६२ २४ |
| लक्ष्मणा | १०१ | २५ | लता | { ८० ९० | { ७२ १३३ | लवंग | १२९ | १२५ |
| लक्ष्मन् | { २० २४९ | { १७ १२४ | लतार्क | ९२ | १५० | लवण | { ३१ २९१ | { ९ २३ |
| लक्ष्मी | { ९ ८६ १५८ | { २७ ११२ ८२ | लपन | १२२ | ८९ | लवणोद | ४९ | २ |
| | | | लपित | { ३३ २१७ | { १ १०७ | लवन | २२४ | २४ |
| | | | | | | लवित्र | १६८ | १३ |
| | | | | | | लशुन | ९२ | १४८ |
| | | | | | | लस्तक | १५९ | ८५ |
| | | | | | | लाक्षा | { १२९ २८४ | { १२५ १० |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------------|--------|--------|-------------|--------|--------|----------------|--------|--------|
| लाक्षाप्रसादन ७४ | ४१ | | लित | २१३ | ९० | लोकालोक | ६५ | २ |
| लांगल १६८ | १३ | | लितक | १६० | ८८ | लोकेश | ८ | १६ |
| लांगलदण्ड १६८ | १४ | | लिप्ता | ४४ | २७ | लोचन | १२३ | ९३ |
| लांगलपद्धति १६८ | १४ | | लिवि | १४६ | १६ | लोचमस्तक | ८६ | १११ |
| लांगलिकी ८७ | ११८ | | लीढ | २१८ | ११० | लोघ्र | ७३ | ३३ |
| लांगली { ९६ १६८ | | | लीला { २६४ | | ११९ | लोपामुद्रा | ३१ | २० |
| लांगली { ८६ १११ | | | लीला { २६४ | | ११९ | लोप्त्र | १९१ | २५ |
| लांगूल १५२ | ५० | | लुठित | १५२ | ५० | लोमन् | १२४ | ९९ |
| लाज १७४ | ४७ | | लुब्ध | २०० | २२ | लोमशा | ९० | १३४ |
| लाञ्छन २० | १७ | | लुब्धक | १९० | २१ | लोल { २२० ७४ | | |
| लाभ १८१ | ८० | | लुब्धक | १९० | २१ | लोल { २६५ २०५ | | |
| लामज्जक ९५ | १६५ | | लुलाय | ९७ | ४ | लोलुप | २०० | २२ |
| लालसा { ४४ २८ | | | लूता | ९९ | १३ | लोलुभ | २०० | २२ |
| लालसा { २६९ २२९ | | | लून | २१६ | १०३ | लोष्ट | १६७ | १२ |
| लाला ११८ | ६७ | | लूम | १५२ | ५० | लोष्टभेदन | १६७ | १२ |
| लालाटिक २३० | १७ | | लेख | ७ | ८ | | १२९ | १२६ |
| लाव १०३ | ३५ | | लेखक | १४५ | १५ | लोह { १८४ ९८ | | |
| लासिका ४० | ८ | | लेखर्षभ | १२ | ४२ | लोह { १८४ ९९ | | |
| लास्य ४० | १० | | लेखा | ६७ | ४ | लोह { २९१ २३ | | |
| लिकुच ७८ | ६० | | लेपक | १८८ | ६ | लोहकारक | १८८ | ७ |
| लिक्षा २८४ | १० | | लेश | २०८ | ६२ | लोहपृष्ठ | ९९ | १६ |
| लिवि १४६ | १६ | | लेष्टु | १६७ | १२ | लोहल | २०३ | ३७ |
| लिंग २३२ | २५ | | लेह | १७३ | ५६ | लोहाभिसार | १६१ | ९४ |
| लिंगवृत्ति १४२ | ५४ | | लोक { ५९ ६ | | | लोहित { ३२ १५ | | |
| लिपि १४६ | १६ | | लोक { २२८ २ | | | लोहित { ११७ ६४ | | |
| लिपिकर १४५ | १५ | | लोकजित् | ८ | १३ | लोहितक | १८३ | ९२ |
| | | | लोकायत | २९५ | ३२ | लोहितचन्दन | १२९ | १२४ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|----------|--------|--------|------------|--------|--------|
| लोहिताङ्ग | २२ | २५ | वंचक | { ९७ | ५ | वद | २०३ | ३५ |
| व | | | | { २०६ | ४७ | वदन | १२२ | ८९ |
| व | २७६ | ९ | वंचित | २०४ | ४१ | वदान्य | { १९७ | ६ |
| वंश | { ९५ | १६० | वंजुल | { ७२ | २७ | | { २५६ | १६० |
| | { १३२ | १ | | { ७२ | ३० | वदावद | २०३ | ३५ |
| | { १६६ | २१० | वट | ७३ | ३२ | वध | १६४ | ११५ |
| वंशरोचना | १८६ | १०९ | वटक | ३८८ | १७ | वध्य | २०५ | ४७ |
| वंशक | १२९ | १२६ | वटी | १९१ | २७ | वन्ध्य | ६८ | ७ |
| वक्तव्य | २५६ | १५९ | वडवा | १५२ | ४६ | वन्ध्यो | १७८ | ६९ |
| वक्त्र | २०३ | ३५ | वडवानल | १४ | ५६ | वघ्नी | १९२ | ३१ |
| वक्त्र | १२२ | ८९ | वडू | २०८ | ६१ | वधू | { ९० | १३३ |
| वक्र | २१० | ७१ | वणिज् | १८० | ६१ | | { १०४ | २ |
| वक्षस् | १२० | ७८ | वणिक्पथ | २३६ | ५२ | | { १०६ | ९ |
| वक्ष्ण | ११९ | ७३ | वणिज्या | १८१ | ७९ | | { २४५ | १२६ |
| वंग | १८५ | १०६ | वंटक | १८३ | ८९ | वन | { ४९ | ३ |
| वचन | ३३ | १ | | { १२० | ७८ | | { ६७ | १ |
| वचनेस्थित | २०० | २४ | वत्स | { १७७ | ६२ | | { २५० | १०२ |
| वचस् | ३३ | १ | | { २६९ | २२६ | वनतित्तिका | ८५ | ८५ |
| वचा | ८४ | १०२ | वत्सक | ९ | ६६ | वनप्रिय | १०० | १९ |
| वज्र | { १३ | ४७ | वत्सतर | १७७ | ६२ | वनमक्षिका | १०१ | २७ |
| | { ८५ | १०५ | वत्सनाभ | ४८ | ११ | वनमालिन् | ८ | २१ |
| | { २६१ | १८४ | वत्सर | { २६ | १३ | वनमुद्र | १६८ | १७ |
| वज्रनिर्वोष | १९ | १० | | { २७ | २० | वनशृङ्गाट | ८४ | ९९ |
| वज्रपुष्प | ८० | ७६ | वत्सल | १९८ | १४ | वनसमूह | ६७ | ४ |
| वज्रिन् | १२ | ४२ | वत्सादनी | ८२ | ८२ | वनस्पति | ६८ | ६ |
| | | | | | | वनायुज | १५१ | ४५ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------|---------------------|------------------|------------|--------------------|----------------|-----------|---------------------|---------------|
| वनिता | { १०४ २४० | २ ७४ | वरटा | { १०१ १०१ | २५ २७ | वरुण | { १५ १७ | ६१ २ |
| वनीयक | २०६ | ४९ | वरण | { ६२ ७२ | ३ ३५ | वरुणात्मज | १९४ | ३९ |
| वनौकस् | ९७ | ३ | वरण्ड | २८९ | १८ | वरूथ | १५३ | ५७ |
| वन्दा | ८२ | ८२ | वरत्रा | { १५१ १९२ | ४२ ३१ | वरूथिनी | १६७ | ७८ |
| वन्दारु | २०१ | २८ | वरद | १९७ | ७ | वरेण्य | २०७ | ५७ |
| वन्था | ६७ | ४ | वरवर्णिनी | { १०५ १७३ | ४ ४१ | वर्कर | १९१ | २३ |
| वपा | { ४६ ११७ | २ ६४ | वरांग | २३२ | २६ | वर्ग | १०४ | ४१ |
| वपुस् | ११९ | ७० | वरांगक | ९० | १३४ | वर्चस् | २७० | १३१ |
| वप्र | { ६२ १६७ १८९ | ३ ११ १०५ | वराटक | { ५७ १९१ २९७ | ४३ २७ ३८ | वर्चस्क | ११८ | ६८ |
| वमथु | { ११६ १५० | ५५ ३७ | वरारोहा | १०५ | ४ | वर्ण | { १३२ १५१ २३६ | १ ४२ ४८ |
| वमि | ११६ | ५५ | वराशि | १२७ | ११६ | वर्णक | { १३० २९७ | १३३ ३८ |
| वयस् | २७० | २३० | वराह | ९७ | २ | वर्णित | २१७ | ११० |
| वयस्था | { ७७ ९१ ९२ | ५८ १३७ १४४ | वारिवसित | २१६ | १०२ | वर्णिन् | १४० | ४२ |
| वयस्य | { ११३ १४५ | ४२ १२ | वारिवस्या | १३८ | ३५ | वर्तक | { १०३ २२९ | ३५ ११ |
| वयस्या | १०७ | १२ | वारिवस्थित | २१६ | १०२ | वर्त्तन | { १६५ २०२ | १ २९ |
| वर | { १२९ २२० २५९ | १२४ ८ १७३ | वरिष्ठ | १८४ | ९७ | वर्त्तनी | { ६१ १९३ | १५ ३३ |
| | | | वरी | ८४ | १०० | वर्त्ति | १३० | १३३ |
| | | | वरीयस् | २७१ | २३५ | वर्त्तिका | १०३ | ३५ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|----------|--------|--------|---------------|--------|--------|
| वर्तिष्णु | २०२ | २९ | वलक्ष | ३२ | १३ | वशिर { | ८४ | ९७ |
| वर्तुल | २०९ | ६९ | वलज | २३३ | ३१ | वशिर { | १७३ | ४१ |
| वर्त्मन् { | ६१ | १५ | वलजा | २३३ | ३१ | वश्य | २०० | २५ |
| वर्त्मन् { | २४९ | १२१ | वलभी | ६४ | १५ | वषट् | २७६ | ८ |
| वर्धक | ८३ | ९० | वलय | १२६ | १०७ | वषट्कृत | १३७ | २७ |
| वर्धकि | १८८ | ९ | वलयित | २१३ | ९० | वसति | २३९ | ६७ |
| वर्धन { | २०१ | २८ | वलीक | ६४ | १४ | वसन | १२७ | ११५ |
| वर्धन { | २१९ | ७ | वलीमुख | ९७ | ३ | वसन्त | २७ | १८ |
| वर्धमान | ७६ | ५१ | वलक | ६९ | १२ | वसा | ११७ | ६४ |
| वर्धमानक | १७२ | ३२ | वलकल | ६९ | ११ | | ७ | १० |
| वर्धिष्णु | २०१ | २८ | वल्लिगत | १५२ | ४८ | वसु { | ८१ | ८१ |
| वर्मन् | १५५ | ६४ | वल्गु | २५३ | १४४ | वसु { | १८३ | ९० |
| वर्मित | १६५ | ६५ | वरमीक | ६० | १४ | वसु { | २६९ | २२८ |
| वर्य | २०७ | ५७ | वलकी | ३९ | ३ | वसुक { | ८१ | ८० |
| वर्या | १०६ | ७ | वल्लभी | २०७ | ५३ | वसुक { | १७३ | ४२ |
| वर्वणा | १०१ | २६ | वल्लभ { | २५२ | १३७ | वसुदेव | ९ | २२ |
| | १९ | ११ | वल्लरि | ६९ | १३ | वसुधा | ५८ | ३ |
| वर्ष { | ५९ | ६ | वल्ली | ६८ | ९ | वसुन्धरा | ५८ | ३ |
| वर्ष { | २६८ | २२४ | वल्लर | ११७ | ६३ | वसुमती | ५८ | ३ |
| वर्षवर | १४४ | ९ | वश | २२० | ८ | वस्तु | २८६ | १३ |
| वर्षा | २७ | १९ | वशक्रिया | २१९ | ४ | वास्त | १२७ | ११४ |
| वर्षाभू | ५४ | २४ | | १४९ | ३६ | वस्त्र | १२७ | ११५ |
| वर्षाभ्वी | ५४ | २४ | वशा { | १७८ | ६९ | वस्योनि | १२६ | ११० |
| वर्षायस् | ११३ | ४३ | वशा { | २६७ | २१७ | वस्त्रवेश्मन् | १२८ | १२० |
| वर्षोपल | १९ | १२ | वशिक | २०७ | ५६ | वस्त्र | १८१ | ७९ |
| वर्ष्मन् { | ११९ | ७० | वशित्व | ११ | ३६ | वस्त्रसा | ११८ | ६६ |
| वर्ष्मन् { | २४९ | १२३ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|--------|--------|-----------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| वह | १७७ | ६३ | | | | वातायु | ९८ | ८ |
| वह्नि | { १४ | ५३ | वाजिन् | { १०२ | ३३ | वातूल | २६३ | १९६ |
| | { १७ | २ | | { १५१ | ४४ | वात्या | २६३ | १९६ |
| वह्निसंज्ञक | ८१ | ८० | वाजिशाला | ६२ | ७ | वात्सक | १७७ | ६० |
| वह्निशिख | १८६ | १०६ | वांछा | ४४ | २७ | वादित्र | ३९ | ५ |
| | { २७३ | २४९ | वाटी | २९८ | ४२ | वाद्य | ३९ | ५ |
| वा | { २७६ | ७ | वाट्यालका | ८५ | १०७ | वान | ७० | १५ |
| | { २७८ | १५ | | { १४ | ५६ | वानप्रस्थ | { ७२ | २८ |
| वाक्पति | २०३ | ३५ | वाडव | { १३२ | ४ | | { १३२ | ३ |
| वाक्य | ३२ | २ | | { १५२ | ४६ | वानर | ९७ | ३ |
| वागीश | २०३ | ३५ | वाडवानल | १४ | ५६ | वानस्पत्य | ६८ | ६ |
| वागुरा | १९१ | २६ | वाडव्य | २२७ | ४१ | वानीर | ७२ | ३० |
| वागुरिक | १८९ | १४ | वाणि | १९२ | २८ | वानेय | ९० | १३१ |
| वाग्मिन् | २०३ | ३५ | वाणिज | १८० | ७८ | वापी | ५५ | २८ |
| वाङ्मुख | ३५ | ९ | वाणिज्य | { १६५ | २ | वाम | २५३ | १४४ |
| वाच् | ३३ | १ | | { १८१ | ७९ | वामदेव | १० | ३२ |
| वाचंयम | १४० | ४२ | वाणिनी | २४७ | ११२ | | १८ | ३ |
| वाचक | १३ | २ | वाणी | ३३ | १ | वामन | { ११३ | ४६ |
| वाचस्पति | २१ | २४ | वात | १५ | ६३ | | २०९ | ७० |
| वाचाट | २०३ | ३६ | वातक | ९३ | १४९ | वामलूर | ६० | १४ |
| वाचाल | २०३ | ३६ | वातकिन् | ११६ | ५९ | वामलोचना | १०५ | ३ |
| वाचिक | ३६ | १७ | वातपोथ | ७२ | २९ | वामा | १०४ | २ |
| वाचोयुक्तपट्ट | २०३ | ३५ | वातप्रमी | ९८ | ७ | वामी | १५२ | ४६ |
| वाज | १५९ | ८७ | वातमृग | ९८ | ७ | वायदण्ड | १९२ | २८ |
| वाजपेय | २९४ | ३१ | वातरोगिन् | ११६ | ५९ | वायस | १०० | २० |
| वाजिदन्तक | ८५ | १०३ | वातायन | ६३ | ९ | वायसाराति | ९९ | १५ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|-----------|--------|-----------|--------|--------|-------------|-----------|--------|
| वायसी | ९३ | १५१ | वार्ताकी | ८६ | ११४ | वासित | { १३० १३४ | |
| वायसोली | ९२ | १४४ | वार्तावह | १९० | १५ | | { १७४ ४६ | |
| वायु | १५ | ६१ | वार्धक | ११२ | ४० | वासिता | २४० | ७५ |
| वायुसख | १४ | ५५ | वार्धुषि | १६६ | ५ | वासुकि | ४७ | ४ |
| वार् | ४९ | ३ | वार्धुषिक | १६६ | ५ | वासुदेव | ८ | २० |
| वार | { १०३ ३९ | ३९ | वार्मण | २२७ | ४३ | वास | ४१ | १४ |
| | { २५६ १६१ | १६१ | वार्षिक | १५० | ९३ | वास्तु | ६५ | १९ |
| वारण | १४९ | ३४ | वाल | १२३ | ९५ | वास्तूक | ९४ | १५८ |
| वारणवुसा | ८६ | ११३ | वालधि | १५२ | ५० | वास्तोष्पति | १२ | ३ |
| वारवाण | १५५ | ६३ | वालपाश्या | १२५ | १०३ | वास्त्र | १५३ | ५४ |
| वारमुख्या | १०८ | १९ | वालहस्त | १५२ | ५० | वाह | { १५१ ४४ | |
| वारस्त्री | १०८ | १९ | वालुक | ८८ | १२१ | | { १८२ ८८ | |
| वाराही | { ११ ३५ | ३५ | वालुका | २४० | ७३ | वाहद्विषत् | ९७ | ४ |
| | { ९३ १५१ | १५१ | वालुक | १२६ | १११ | वाहन | १५४ | ५८ |
| वारि | ४९ | ३ | वावदूक | २०३ | ३५ | वाहस् | ४७ | ५ |
| वारिद | १८ | ७ | वाशिका | ८५ | १०३ | वाहित्थ | १५० | ३९ |
| वारिपर्णि | ५६ | ३८ | वाशित | ३८ | २५ | | { १५७ ७८ | |
| वारिप्रवाह | ६६ | ५ | वास | ६२ | ६ | वाहिनी | { १५८ २८ | |
| वारिवाह | १८ | ६ | वासक | ८५ | १०३ | | { २४७ १११ | |
| वारी | १५१ | ४३ | वासगृह | ६३ | ८ | वाहिनीपति | १५५ | ६२ |
| वारुणी | २३६ | ५२ | वासन्ती | ८० | ७२ | वि | १०२ | ३३ |
| वार्ते | { ११६ ५७ | ५७ | वासयोग | १३० | १३४ | विंशति | १८१ | ८३ |
| | { २४० ७६ | ७६ | वासर | २४ | २ | विकंकत | ७४ | ३७ |
| वार्ता | { ३४ ७ | ७ | वासव | १२ | ४२ | विकच | ६८ | ७ |
| | { १६५ १ | १ | वासस् | १२७ | ११५ | विकर्तन | २२ | २९ |
| | { २४० ७५ | ७५ | | | | विकलांग | १३३ | ४६ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| विकथर | २०२ | ३० | विग्रह | ११९ | ७० | विटप | ७० | १४ |
| विकार | ८ | ९० | | १४६ | १८ | | २५० | १३१ |
| विकसित | ६८ | ८ | | १६२ | १०४ | विटपिन् | ६८ | ५ |
| विकस्वर | २०२ | ३० | | २२३ | २२ | विट्खदिर | ७६ | ५० |
| विकार | २२२ | १५ | विधत् | १३७ | २८ | विट्चर | १९१ | २३ |
| विकासिन् | २०२ | ३० | विघ्न | २२३ | १९ | विड | १७३ | ४२ |
| विकी | २०२ | ३३ | विघ्नराज | ११ | ३८ | विडंग | ८५ | १०६ |
| विकीरण | ८१ | ८० | विचक्षण | १३३ | ६ | वितंडा | २८४ | ९ |
| विकुवाण | १९७ | ७ | विचयन | ११५ | ५३ | वितथ | ३७ | २१ |
| विकृत | ४२ | १९ | विचर्चिका | ११५ | ५३ | वितरण | १३७ | २९ |
| | ११६ | ५८ | विचारणा | ३० | २ | वितर्दि | ६४ | १६ |
| विकृति | २२२ | १५ | विचारित | २१३ | ९९ | वितस्ति | १२१ | ८४ |
| विक्रम | १६२ | १०२ | विचिकित्सा | ३० | ३ | वितान | १२८ | १२० |
| | २५२ | १४१ | विच्छन्दक | ६३ | ११ | | २४७ | ११३ |
| विक्रय | १८१ | ८३ | विच्छाव | २९२ | २६ | वितुन्न | ९३ | १४९ |
| विक्रयिक | १८० | ७९ | विजन | १४७ | २२ | वितुन्नक | ८९ | १२६ |
| विक्रान्त | १५७ | ७७ | | २४२ | ८२ | | १७३ | ३७ |
| विक्रिया | २२२ | १५ | विजय | १६३ | ११० | | १८५ | १०१ |
| विकृत | २८० | ७९ | विजिल | १७४ | ४६ | वित्त | १८३ | ९० |
| विक्रय | १८१ | ८२ | विज्ञ | १९६ | ४ | | १९७ | ९ |
| विक्रव | २०५ | ४४ | विज्ञात | १९७ | ९ | | २१६ | ९९ |
| विक्षाव | २२६ | ३७ | विज्ञान | ३० | ६ | विदर | २१९ | ५ |
| विगत | २१६ | १०० | विट् | ११८ | ६८ | विदल | २९५ | ३२ |
| विगतार्त्तवा | १०९ | २१ | | १६५ | १ | विदारक | ५० | १० |
| विघ्न | ११४ | ४६ | विट | १८८ | १७ | विदारी | ७१ | २० |
| | | | विटंक | ६४ | १५ | | ८६ | ११० |
| | | | | | | विदारिगन्धा | ८७ | ११६ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|-------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| विदित | { २१७ | १०८ | विधिदर्शिन | १३५ | १६ | विपणि | { ६२ | २ |
| | { २१७ | १०९ | | { ८ | २२ | | { २३६ | ५२ |
| विदिश | १८ | ५ | विधु | { १९ | १४ | विपत्ति | १५८ | ८२ |
| विदु | १५० | ३७ | | { २४५ | ९९ | विपथ | ६१ | १६ |
| विदुर | { ७३ | ३० | विधुत | २१७ | १०७ | विपद् | १५८ | ८२ |
| | { २०२ | ३० | विधुंतुद | २२ | २६ | विपर्यय | २२६ | ३३ |
| विदुल | ७३ | ३० | विधुर | २२३ | २० | विपर्यास | २२६ | ३३ |
| विद्ध | २१६ | ९० | विधुवन | २१९ | ४ | विपश्चित् | १३३ | ५ |
| विद्धकर्णी | ८२ | ८४ | विधूनन | २१९ | ४ | विपाद् | ५५ | ३३ |
| विद्याधर | ७ | ११ | विधेय | २०० | २४ | विपादिका | ११५ | ५२ |
| विद्युत् | १९ | ९ | विनयग्राहिन | २०० | २४ | विपाशा | ५५ | ३३ |
| विद्रधि | ११६ | ५६ | विना | २७५ | ३ | विपिन | ६७ | १ |
| विद्रव | १६४ | १११ | | { ८ | १४ | विपुल | २०८ | ६१ |
| विद्रुत | २१६ | १०० | विनायक | { ११ | ३८ | विप्र | { १३२ | २ |
| विद्रुम | १८३ | ९३ | | { २२८ | ६ | | { १३२ | ४ |
| विद्रुमलता | ८९ | १२९ | विनाश | २ | २२ | विप्रकार | २२२ | १५ |
| | { १३३ | ५ | विनाशोन्मुख | १४ | ९१ | विप्रकृत | २०४ | ४१ |
| विद्रस् | { २७० | २३४ | विनीत | { १५१ | ४४ | विप्रकृष्टक | २०९ | ६८ |
| विद्वेष | ४३ | २५ | | { २०० | २५ | विप्रतीसार | ४३ | २५ |
| विधवा | १०६ | ११ | विन्दु | २०२ | ३० | विप्रयोग | २२५ | २८ |
| विधा | { १९४ | ३८ | विन्ध्य | ६६ | ३ | विप्रलब्ध | २०४ | ४१ |
| | { २४५ | १०१ | विन्न | { २१६ | ९९ | विप्रलम्भ | { ४५ | ३६ |
| विधाता | ८ | १७ | | { २१६ | १०४ | | { २२५ | २८ |
| | { ८ | १७ | विपक्ष | १४५ | ११ | विप्रलाप | ३६ | १६ |
| विधि | { २९ | २८ | विपंची | ३९ | ३ | विप्रशिनका | १०८ | २० |
| | { १३९ | ३९ | विपण | १८१ | ८३ | विप्रुष् | ५० | ६ |
| | { २४५ | १०० | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|------------|--------|--------|------------|-----------|--------|
| विह्व | २२२ | १४ | विरति | २२६ | ३७ | विवाद | ३५ | ९ |
| विवंध | ११५ | ५५ | विरत | २०९ | ६६ | विवाह | १४२ | ५६ |
| विबुध | ७ | ७ | विराज | १४३ | १ | विविक्त | { १४७ २२ | |
| विभव | १८३ | ९० | विराव | ३८ | २३ | | { २४२ ८२ | |
| विभाकर | २२ | २८ | विरिचि | ८ | १७ | विविध | २१४ | ९३ |
| विभावरी | २४ | ४ | विरूपाक्ष | १० | ३२ | विवेक | १३९ | ३८ |
| विभावसु | { १४ | ५६ | विरोचन | { २२ | ३० | विब्वोक | ४५ | ३१ |
| | { २२ | ३० | | { २४ | १०८ | विश | १६५ | १ |
| | { २६९ | २२६ | विरोध | -४३ | २५ | विशङ्कट | २०८ | ६० |
| विभीतक | ७७ | ५८ | विरोधन | २२३ | २१ | विशद | ३२ | १२ |
| विभूति | ११ | ३६ | विरोधोक्ति | ३६ | १६ | विशर | १६४ | ११५ |
| विभूषण | १२४ | १०१ | विलक्ष | २०१ | २६ | विशल्या | { ८२ ८३ | |
| विभ्रम | ४५ | ३१ | विलक्षण | २१८ | २ | | { ९० १३६ | |
| विभ्राज | १२४ | १०१ | विलंबित | ४० | ९ | | { २५५ १५५ | |
| विभनस् | १९७ | ८ | विलम्भ | २२५ | २८ | विशसन | १६४ | ११४ |
| विमर्दन | २२१ | १३ | विलाप | ३६ | १६ | विशाख | १२ | ४० |
| विमला | ९२ | १४३ | विलास | ४५ | ३१ | विशाखा | २१ | २२ |
| विमलार्थक | २०७ | ५५ | विलीन | २१६ | १०० | विशाय | २२५ | ३२ |
| विमातृज | १०९ | २५ | विलपन | { १३० | १३३ | विशारण | १६४ | ११२ |
| विमान | १३ | ४८ | | { २२५ | २७ | विशारद | २४४ | ९५ |
| वियत | १७ | २ | विलेपी | १७५ | ५० | विशाल | २०८ | ६० |
| वियदंगा | १३ | ४९ | विवध | २४४ | ९६ | विशालता | १२७ | ११४ |
| वियम | २२२ | १८ | विवर | ४६ | १ | विशालत्वच् | ७१ | २३ |
| विवात | २०१ | २५ | विवर्ण | १९० | १६ | विशाला | ९४ | १५६ |
| वियाम | २२२ | १८ | विवश | २०५ | ४४ | विशिख | १५९ | ८६ |
| विरजस्तमस् | १४० | ४४ | विवस्वत् | { २२ | २९ | विशिखा | ६२ | ३ |
| | | | | { २३७ | ५७ | विशेषक | १२९ | १२३ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|--------|--------|------------------|--------|--------|--------------|--------|--------|
| विश्राणन | १३७ | २९ | विषैवद्य | ४८ | ११ | विसर | १०३ | ३९ |
| विश्राव | २२५ | २८ | विषा | ८४ | ९९ | विसर्जन | १३७ | २९ |
| विश्रुत | १९७ | ९ | विषाक्त | १६० | ८८ | विसर्पण | २२४ | २३ |
| विश्व { | ७ | १० | विषाण | २३७ | ५६ | विसार | ५२ | १७ |
| | १७३ | ३८ | विषाणी | ८८ | ११९ | विसारिन् | २०२ | ३१ |
| | २०९ | ६५ | विषुय | २६ | १४ | विसृत | २१२ | ८६ |
| विश्वकटु | १९१ | २२ | विषुवत् | २६ | १४ | विसृत्वर | २०२ | ३१ |
| विश्वकर्मन् | २४६ | १०९ | विष्किर | १०२ | ३३ | विसृमर | २०२ | ३१ |
| विश्वद्रव्यच् | २०३ | ३४ | विष्कम्भ | ६६ | १७ | विस्तर | २२३ | २२ |
| विश्वभेषज | १७३ | ३८ | विष्टप | ५९ | ६ | विस्तार { | ७० | १४ |
| विश्वम्भर | ८ | २२ | विष्टर | २५८ | १६९ | | २२३ | २२ |
| विश्वम्भरा | ५८ | २ | विष्टरश्रवस् | ८ | १८ | विस्तृत | २१२ | ८६ |
| विश्वसृज | ८ | १७ | विष्टि | ४८ | ३ | विस्फार | १६३ | १०८ |
| विश्वस्ता | १०६ | ११ | विष्टा | ११८ | ६८ | विस्फल | ११५ | ५३ |
| विश्वा | ८४ | ९९ | विष्णु | ८ | १८ | विस्मय | ४२ | १९ |
| विश्वास | १४७ | २३ | विष्णुकान्ता | ८५ | १०४ | विस्मयान्वित | २०१ | २६ |
| विष् | ११८ | ६८ | विष्णुपद | १७ | २ | विस्मृत् | २१२ | ८६ |
| विष { | ४८ | ९ | विष्णुपदी | ५५ | ३१ | विस् | ३२ | १२ |
| | २६६ | २१४ | विष्णुरथ | १० | २९ | विस्त्रम्भ { | १४७ | २३ |
| | २६८ | २२३ | विष्य | २०५ | ४६ | | १५१ | १२५ |
| विषधर | ४७ | ७ | विष्वक् | २७७ | १३ | विस्त्रसा | ११२ | ४१ |
| विषमच्छद | ७१ | २३ | विष्वद्रव्यच् | २०३ | ३४ | विहग | १०३ | ३२ |
| विषय { | ३१ | ७ | विष्वक्सेन | ८ | १९ | विहग | १०३ | ३२ |
| | ५९ | ८ | विष्वक्सेना | ७७ | ५६ | विहंगम | १०३ | ३२ |
| | २२१ | ११ | विष्वक्सेनप्रिया | ९३ | ५१ | विहंगिका | १९२ | २९ |
| | २५४ | १५२ | विसंवाद | ४५ | ३६ | विहसित | ४५ | ३५ |
| विषयिन् | ३१ | ८ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|-------------|----------|-------------|-----------|---------|-------------|------------|--------|
| विहस्त | २०५ | ४३ | वीरपान | १६२ | १०३ | वृत | २१४ | ९२ |
| विहापित | १३७ | २९ | वीरभार्या | १०७ | १६ | वृत्ति | { ६२ ३ | |
| विहायस् | { १७ १०३ | २ ३२ | वीरमातृ | १०८ | १६ | | { २२० ८ | |
| विहायस | १७ | २ | वीरवृक्ष | ७५ | ४२ | वृत्त | { २०९ ६९ | |
| विहार | २२२ | १६ | वीराशंसन | १६२ | १०० | | | |
| विह्वल | २०५ | ४४ | वीरसु | १०८ | १६ | वृत्तान्त | { ३४ ७ | |
| वीकाश | २६७ | २१५ | वीरहन् | १४२ | ५२ | | { २३८ ६६ | |
| वीचि | ५० | ५ | वीरधू | ६९ | ९ | वृत्ति | { १६५ १ | |
| वीणा | ३९ | ३ | वीर्य | { ४४ ११७ | २९ ६२ | | { १६५ २ | |
| वीणावाद | १८९ | १३ | | { २५५ १५४ | | | { २४० ७३ | |
| वीत | १५१ | ४३ | वीवध | ३४४ | ९६ | वृत्र | २५७ | १६४ |
| वीतंत | १९१ | २६ | वृक | ९८ | ७ | वृत्रहन् | १२ | ४२ |
| वीति | १४९ | ४३ | वृकधूप | { १२९ १२९ | १२८ १२९ | वृथा | { २७३ २४७ | |
| वीतिहोत्र | १४ | ५३ | वृक्कण | २१६ | १०३ | | { २७५ ४ | |
| वीथी | { ६७ २४३ | ४ ८७ | वृक्ष | ६८ | ५ | वृद्ध | { ८८ १२२ | |
| वीथ्र | २०७ | ५५ | वृक्षभेदिन् | १९३ | ३४ | | { ११३ ४२ | |
| वीनाह | ५४ | २७ | वृक्षरुहा | ८२ | ८२ | वृद्धत्व | ११२ | ४० |
| वीर | { ४२ ४२ १५७ | १७ १८ ७७ | वृक्षवाटिका | ६७ | २ | वृद्धदारुक | ९१ | १३७ |
| वीरण | ९५ | १६४ | वृक्षादनी | { ८२ १९३ | ८२ ३४ | वृद्धनाभि | ११७ | ६१ |
| वीरतर | ९५ | १६४ | वृक्षाम्ल | १७२ | ३५ | वृद्धश्रवस् | १२ | ४१ |
| वीरतरु | ७५ | ४५ | वृजिन | { २८ २१० | २३ ७१ | वृद्धसंध | ११२ | ४० |
| वीरपत्नी | १०७ | १६ | | { २४६ १०९ | | वृद्धा | १०७ | १२ |
| | | | | | | वृद्धि | { १४६ १२२० | ९ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|-----------|--------|--------|-----------------|--------|--------|
| वृद्धिजीविका | १६७ | ४ | वृषाकपायी | २५५ | १५६ | वेपथु | ४६ | ३८ |
| वृद्धिमत् | २४२ | ८५ | वृषाकपि | २५० | १३० | वेमन् | १९२ | २८ |
| वृद्धयाजीव | १६६ | ५ | वृष्टि | १९ | ११ | वेला | २६३ | १९८ |
| वृद्धोक्ष | १७७ | ६१ | वृष्टिण | १९० | ७६ | वेल्ल | ८५ | १०६ |
| वृन्त | ७० | १५ | वेग | २३१ | २० | वेल्लज | १७२ | ३५ |
| वृन्द | १०३ | ४० | वेगिन् | १५६ | ७३ | वेल्लित | २१० | ७१ |
| वृन्दभेद | १०४ | ४१ | वेणि | १२४ | ९८ | | २१२ | ८७ |
| वृन्दारक | { ७ | ९ | वेणी | ७९ | ६९ | वेश | ६१ | २ |
| | { २३० | १६ | वेणु | ९५ | १६१ | वेशन्त | ५४ | २८ |
| वृन्दिष्ठ | २१८ | ११२ | वेणुक | १५० | ४१ | वेश्मन् | ६२ | ४ |
| वृश्चिक | { ९९ | १४ | वेणुध्व | १८९ | १३ | वेश्या | १०८ | १९ |
| | { ९९ | १६ | वेतन | १९४ | २८ | वेश्याजनसमाश्रय | ६१ | २ |
| | { २२९ | ७ | वेतस | ७२ | २९ | वेष | १२४ | ९९ |
| | { २२ | २७ | वेतस्वत् | ५९ | ९ | वेषवार | १७२ | ३५ |
| | { २८ | २४ | वेताल | २९० | २१ | वेष्टित | २१३ | ९० |
| वृष | { ८५ | १०३ | वेत्रवती | ५६ | ३४ | वेहत | १७९ | ६९ |
| | { ८७ | ११६ | वेद | ३३ | ३ | वै | २७६ | ५ |
| | { १७७ | ५९ | वेदना | २१९ | ६ | | २७८ | १५ |
| | { २६८ | २२० | वेदि | १३५ | १८ | वैकाक्षिक | १३१ | १३६ |
| वृषण | १२० | ७६ | वेदिका | ६४ | १६ | वैकुण्ठ | ८ | १८ |
| वृषदंशक | ९७ | ६ | वेध | २२० | ८ | वैजनन | ११२ | ३९ |
| वृषध्वज | १० | ३४ | वेधनिका | १९३ | ३३ | वैजयन्त | १३ | ४६ |
| वृषभ | १७७ | ५९ | वेधमुख्यक | ९० | १४५ | वैजयन्तिक | १५६ | ७१ |
| वृषल | १८७ | १ | वेधस् | { ८ | १७ | वैजयन्तिका | ७९ | ६५ |
| वृषस्यन्ती | १०६ | ९ | | { २६९ | १२८ | वैजयन्ती | १६२ | ९९ |
| वृषा | { १२ | ४२ | वेधित | २१६ | ९९ | वैज्ञानिक | १९६ | ४ |
| | { ८२ | ८७ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|----------|--------|----------|-----------|--------|--------------|-----------|--------|
| वैणव | ७० | १८ | वैश्य | १६५ | १ | व्यवाय | १४२ | ५७ |
| वैणविक | १८९ | १३ | वैश्रवण | १६ | ६९ | व्यसन | २४८ | १२० |
| वेणिक | १८९ | १३ | वैश्वानर | १४ | ५३ | व्यसनार्त | २०५ | ४३ |
| वैणक | १५० | ४१ | वैष्णवी | ११ | ३५ | व्यस्त | २१० | ७२ |
| वैतसिक | १८९ | १४ | वैसारिण | ५२ | १७ | व्याकुल | २०५ | ४३ |
| वैतनिक | १८९ | १५ | वौषट् | २७६ | ८ | व्याकोश | ६८ | ७ |
| वैतरणी | ४८ | २ | व्यक्त | २३८ | ६२ | व्याघ्र | { ९७ १ | |
| वैतालिक | १६१ | ९७ | व्यक्ति | २९ | ३१ | व्याघ्रनख | { २०८ ५९१ | |
| वैदेहक | { १८७ ३ | | व्यग्र | २६२ | १९० | व्याघ्रपाद् | ७४ | ३७ |
| | { १८० ७८ | | व्यंगा | २५९ | १७७ | व्याघ्रपुच्छ | ७६ | ५० |
| वैदेही | ८४ | ९६ | व्यञ्जन | १३२ | १४० | व्याघ्राट | ९९ | १५ |
| वैद्य | ११६ | ५७ | व्यञ्जक | ४२ | १६ | व्याघ्री | ८३ | ९३ |
| वैद्यमातृ | ८५ | १०३ | व्यजन | { २४८ ११६ | | व्याज | { ४४ ३० | |
| वैधात्र | १३ | ५१ | व्यज्जन | { २९१ २३ | | | { ४५ ३३ | |
| वैधेय | २०६ | ४८ | व्यडम्बक | ७६ | ५१ | व्याड | २३५ | ४३ |
| वैनतेय | १० | २९ | व्यत्यय | २२६ | ३३ | व्याडासुध | ८९ | १२९ |
| वैनतिक | १५४ | ५८ | व्यत्याय | २२६ | ३३ | व्याध | १९० | २१ |
| वैमात्रेय | १०९ | १५ | व्यथा | ४९ | ३ | व्याधि | { ८९ १२६ | |
| वैयाघ्र | १५३ | ५३ | व्यध | २२० | ८ | | { ११५ ५१ | |
| वैर | ४३ | २५ | व्यध्व | ६४ | १६ | व्याधिघात | ७१ | २४ |
| वैरनिर्यातन | १६३ | ११० | व्यय | २२० | १७ | व्याधित | ११६ | ५८ |
| वैरशुद्धि | १६३ | ११० | व्यलीक | २२९ | १२ | व्यान | १५ | ६३ |
| वैरिन् | १४५ | १० | व्यवधा | १९ | १२ | व्यापाद | ३० | ४ |
| वैवधिक | १९० | १५ | व्यवसाय | २६६ | २१३ | व्याप्य | ८९ | १२६ |
| वैवस्वत | १४ | ५९ | व्यवहार | ३४ | ९ | व्याम | १२२ | ८७ |
| वैशाख | { २६ १६ | | | | | व्याल | { ४७ ७ | |
| | { १८० ७४ | | | | | | { २६३ १९६ | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|--------|--------|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|
| व्यालग्राहिन् | ४८ | ११ | व्रतीत | ६८ | ९ | शकृत्करि | १७७ | ६२ |
| व्यावृत्त | २१४ | ९२ | व्रतित् | २३९ | ६७ | | १४६ | १९ |
| व्यास | २२३ | २२ | व्रतिन् | १३३ | ७ | शक्ति | १६२ | १०२ |
| व्याहार | ३३ | १ | व्रश्चन | १९३ | ३२ | | २३९ | ६६ |
| व्युत्थान | २४८ | ११८ | व्रात | १०३ | ३९ | शक्तिधर | १२ | ४० |
| व्युष्टि | २६४ | ३८ | व्रात्य | १४२ | ५३ | शक्तिहेतिक | १५६ | ६९ |
| व्यूढ | २३५ | ६५ | व्रीडा | ४३ | २३ | शक | १२ | ४२ |
| व्यूढकटक | १५५ | ६५ | व्रीहि | १६८ | १५ | | ७९ | ६६ |
| व्यूति | १९२ | २८ | व्रीहि | १६९ | २१ | शकधनुस् | १९ | १० |
| | १०३ | ३९ | व्रीहेय | १६६ | ६ | शकपादप | ७७ | ५३ |
| व्यूह | १५७ | ७० | | श | | शकपुष्पिका | ९० | १३६ |
| | २७१ | २३८ | शव | १६५ | ११८ | शक | २०३ | ३६ |
| व्यूहपार्ष्णि | १५८ | ७ | शकट | १५३ | ५२ | शंकर | १० | ३० |
| व्योकार | १८८ | ७ | शकल | २० | १६ | | ५३ | २० |
| व्योमकेश | १० | ३४ | शकुलिन् | ६२ | १७ | शंकु | ६८ | ८ |
| व्योमन् | १७ | ९ | शकुन | १०२ | ३२ | | १६० | ९३ |
| व्योमयान | १३ | ४८ | शकुनि | १०२ | ३२ | | १७ | ७१ |
| व्योप | १८६ | १११ | शकुन्त | १०२ | ३२ | शख | ५३ | २३ |
| | १०३ | ३९ | | २३७ | ५८ | | ८९ | १३० |
| व्रज | २३३ | ३० | शकुन्ति | १०२ | ३२ | | २३० | १८ |
| | १३८ | ३५ | शकुल | ५३ | १९ | शंखनख | ५३ | २३ |
| व्रज्या | १६१ | ९५ | शकुलाक्षक | ९४ | १५९ | शंखिनी | ८९ | १२६ |
| | ११५ | ५४ | शकुलादनी | ८२ | ८६ | शची | ११ | ४५ |
| व्रण | २६२ | १८९ | | ८६ | १११ | शचीपति | १२ | ४३ |
| व्रणकार्य | १३९ | ३७ | शकुलार्भक | ५२ | १७ | शठी | ९३ | १५४ |
| व्रत | | | शकृत् | ११८ | ६७ | शठ | २०५ | ४६ |
| | | | | | | शणपर्णी | ९३ | १४९ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|----------|--------|----------|--------|--------|----------|--------|--------|
| शणपुष्पिका | ८५ | १०७ | शपथ | ३६ | ९ | शम्ब | १३ | ४७ |
| शणसूत्र | ५२ | १६ | शपन | ३५ | ९ | शम्बर | { ४९ | ४ |
| शत | १८२ | ८४ | शफ | १५२ | ४९ | | { ९८ | १० |
| शतकोटि | ११३ | ४७ | शफरी | ५२ | १८ | शम्बरारि | ९ | २६ |
| शतहु | ५५ | ३३ | शवर | १९० | २० | शम्बरी | ८२ | ८७ |
| शतपत्र | ५७ | ४० | शवरालय | ६५ | २० | शम्बल | २९५ | ३४ |
| शतपत्रक | ९९ | १६ | शबल | ३३ | १७ | शम्बाकृत | १६७ | ९ |
| शतपदी | ९९ | १३ | शबली | १७८ | ६७ | शम्बुक | ५३ | २२ |
| शतपर्वन् | ९५ | १६१ | | { ३१ | ७ | शम्भली | १०८ | १९ |
| शतपर्विका | { ८४ १०२ | | शब्द | { ३३ | २ | शम्भू | { १० | ३० |
| | { ९४ १५८ | | | { ३८ | २२ | | { २५१ | १३५ |
| शतपुष्पा | ९३ | १५२ | शब्दग्रह | १२३ | ९४ | शम्या | १६८ | १४ |
| शतप्राप्त | ८१ | ७६ | शब्दन | २०३ | ३८ | शय | १२१ | ८१ |
| शतमन्यु | १२ | ४२ | शम् | २१९ | ३ | शयन | { ४६ | ३६ |
| शतमान | २९५ | ३४ | शमथ | २१९ | ३ | | { १३१ | १३८ |
| शतमूली | ८४ | १०० | | | | शयनीय | १३१ | १३७ |
| शतयष्टिका | १२५ | १०५ | शमन | { १४ | ५८ | शयालु | २०२ | ३३ |
| शतवीर्या | ९४ | १५९ | | { १३६ | २६ | शयित | २०२ | ३६ |
| शतवेधिन् | ९१ | १४१ | शमनश्वस् | ५५ | ३२ | शयु | ४७ | ५ |
| शतहृदा | १९ | ९ | शमल | ११८ | ६७ | शय्या | १३१ | १३७ |
| शतांग | १५२ | ५१ | शमित | २१५ | ९७ | | { ९५ | १६२ |
| शतावरी | ८४ | १०१ | शमी | { ७६ | ५२ | | { १५९ | ८७ |
| | १४४ | ९ | | { १७० | २३ | शरजन्मन् | १२ | ३९ |
| शत्रु | { १४४ | ९ | शमीधान्य | १७० | २४ | शरण | २२६ | ५३ |
| | { १४५ | ११ | शमीर | ७६ | ५२ | | { २७ | १९ |
| शनैश्चर | २२ | २६ | शम्पा | १९ | ९ | शरद् | { २७ | २० |
| शनैस् | २७८ | १७ | शम्पाक | ७१ | २३ | | { २४४ | ९२ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|--------|--------|-------------|--------|--------|----------|--------|--------|
| शरभ | ९८ | ११ | शव | १६५ | ११८ | शाखानगर | ६१ | २ |
| शरव्य | १५९ | ८६ | शश | ९८ | ११ | शाखामृग | ९७ | ३ |
| शराभ्यास | १५९ | ८६ | शशधर | २० | १५ | शाखाशिफा | ६९ | ११ |
| शरारि | १०१ | २५ | शशलोमन् | १८६ | १०७ | शाखिन् | ६८ | ५ |
| शरारु | २०१ | २८ | शशादान | ९९ | १४ | शांखिक | १८८ | ८ |
| शराव | १७२ | ३२ | शशोर्ण | १८६ | १०७ | शाटक | २९५ | ३३ |
| शरावती | ५६ | ३४ | शश्वत् | २७२ | २४३ | शाटी | २९७ | ३८ |
| शरासन | १५९ | ८३ | | २७५ | १ | शाट्य | ४४ | ३० |
| शरीर | ११९ | ७० | | २७७ | ११ | शाण | १९३ | ३२ |
| शरीरिन् | १९ | ३० | शष्प | ९६ | १६७ | शाणी | २८४ | ९ |
| शर्करा | ६० | ११ | शस्त्र | २८ | २६ | शांडिल्य | ७३ | ३२ |
| | १६४ | ४३ | | २१७ | १०९ | शात | २८ | २५ |
| | २५९ | १७५ | | १५८ | ८२ | | २१४ | ९१ |
| शर्करावत् | ६० | ११ | शस्त्र | २६० | १७९ | शातकुम्भ | १८३ | ९४ |
| शर्करिल | ६० | ११ | शस्त्रक | १८४ | ९८ | शात्रव | १४५ | ११ |
| शर्मन् | २८ | २५ | शस्त्रमार्ज | १८८ | ७ | शाद | ५० | ९ |
| शर्व | १० | ३० | शस्त्राजीव | १५५ | ६७ | | २४३ | ९० |
| शर्वरी | १४ | ३ | शस्त्री | १६० | ९२ | शादहरित | ६० | १० |
| शर्वाणी | ११ | ३७ | शाक | ६९० | १३ | शाद्वल | ६० | १० |
| शल | ९८ | ७ | | १७२ | ३४ | शान्त | २१५ | ९७ |
| शलभ | १०२ | २८ | शाकट | १७७ | ६४ | शान्ति | २१९ | ३ |
| शलल | ९८ | ७ | शाकुनिक | १८९ | १४ | शावर | ७३ | ३३ |
| शलली | ९८ | ७ | शाक्तीक | १५६ | ६९ | शावरी | १८९ | ११ |
| शलाटु | ७० | १५ | शाक्यमुनि | ८ | १४ | शार | २५८ | १६६ |
| शलक | २३० | १३ | शाक्यसिंह | ८ | १५ | शारद | ७१ | २३ |
| शल्य | ७६ | ५३ | शाखा | ६९ | ११ | | २४४ | ९५ |
| | ९७ | ७ | | | | | | |
| | १६० | ९३ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|-------------|---------|--------|-----------|----------|--------|
| शारदी | ८६ | १११ | शाकुलिक | २४७ | ४० | शिशु | { ७३ ३४ | |
| शारिफल | १९५ | ४६ | शासन | १४७ | २५ | शिशुज | { १७२ ३४ | |
| शारिवा | ८६ | ११२ | शास्त्र | ८ | १४ | शिशुज | १८६ | ११० |
| शार्कर | ६० | ११ | शास्त्र | २६० | १७९ | शिशित | ३८ | २४ |
| शार्ङ्गिन् | ८ | १९ | शास्त्रविद् | १९७ | ६ | शिशिनी | १५९ | ८५ |
| शार्दूल { | ९७ १ | | शिक्ष्य | १९२ | ३० | शितशक | १६८ | १९ |
| | २०८ ५९ | | शिक्षित | २१३ | ८९ | शिति | २४२ | ८३ |
| शार्वर | २६२ | १८८ | शिक्षा | ३४ | ४ | शितिकण्ठ | १० | ३२ |
| शाल { | ५३ १९ | | शिक्षित | १९६ | ४ | शितिसारक | ७४ | ३८ |
| | ६८ ५ | | शिखण्ड | १०२ | ३१ | शिपिविष्ट | २३३ | ३४ |
| | ६९ ११ | | शिखण्डक | १२३ | ९६ | शिफा | ६९ | ११ |
| शालपर्णी | ८७ | ११५ | शिखर { | ६६ ४ | | शिफाकन्द | ५७ | ४३ |
| शाला { | ६२ ६ | | | ६९ १२ | | शिविका | १५३ | ५३ |
| | ६९ ११ | | शिखरिन् { | ६५ १ | | शिविर | १४९ | ३३ |
| शालावृक | २३९ | १२ | | २४६ १०६ | | शिव्वा | १७० | २३ |
| शालि | १७० | २४ | | १४ ५७ | | शिरस् | १२३ | ९५ |
| शालीन | २०१ | २६ | शिखा { | १०२ ३१ | | शिरस्त्र | १५५ | ६४ |
| शालक | ५६ | ३८ | | १२४ ९७ | | शिरस्य | १२४ | ९८ |
| शालूर | ५४ | २४ | | २३१ १९ | | शिरा | ११८ | ६५ |
| शालेय { | ८५ १०५ | | शिखावत् | १४ | ५५ | शिरीष | ७८ | ६३ |
| | १६६ ६ | | शिखावल | १०२ | ३० | शिरोह | ६९ | १२ |
| शाल्मलि | ७५ | ४६ | शिखिग्रीव | १८५ | १०१ | शिरोधि | १२२ | ८८ |
| शाल्मलीवेष्ट | ७५ | ४७ | शिखिन् { | १०२ ३० | | शिरोरत्न | १२५ | १०२ |
| शावक | १०३ | ३८ | | २४६ १०६ | | शिरोरु | १२३ | ९५ |
| शावर | ७३ | ३३ | शिखिवाहन | १२ | ४० | शिल | १६६ | २ |
| शाश्वत | २१० | ७२ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|--------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| शिला | { ६४ | १३ | शिष्टी | १४७ | २६ | शुक्त | २४२ | ८३ |
| | { ६६ | ४ | शिष्य | १३४ | ११ | शुक्ति { | ५३ | २३ |
| शिलाजतु | १८६ | १०४ | शीकर | १९ | ११ | | ८९ | १३० |
| शिली | ५४ | २४ | शीघ्र | १५ | ६४ | | १४ | ५६ |
| शिलीमुख | २३० | १८ | | { २० | १९ | शुक | { २२ | २५ |
| शिलोच्चय | ६५ | १ | | { २० | १९ | | { २६ | १६ |
| शिल्प | १९३ | ३५ | शीत | { ७२ | ३० | | { ११७ | ६२ |
| शिल्पिन् | १८७ | ६ | | { ७३ | ३४ | शुकल | २६८ | २२० |
| शिल्पिशाला | ६३ | ७ | | { २९१ | २२ | शुकशिष्य | ७ | १२ |
| शिव | { १० | ३० | शीतक | १९० | १८ | शुक | { २६ | १२ |
| | { २८ | २५ | शीतभीरु | ७९ | ७० | | { ३२ | १२ |
| शिवक | १७९ | ७३ | शीतल | { २० | १९ | शुच | ४३ | २५ |
| शिवमल्ली | ८१ | ८१ | | { ९३ | १४९ | | { १४ | ५६ |
| | { ११ | ३७ | शीतशिव | { ८५ | १०५ | शुचि | { २६ | १६ |
| | { ७६ | ५२ | | { ८८ | ११२ | | { ३२ | १२ |
| | { ७७ | ५९ | | { १७३ | ४२ | | { ४२ | १७ |
| शिवा | { ८९ | १२७ | शीघ्र | २९५ | ३४ | शुंठी | १७३ | ३८ |
| | { ९७ | ५ | शीर्ष | १२३ | ९५ | शुंडापान | १९४ | ४० |
| | { २६६ | २१२ | शीर्षक | १५५ | ६३ | शुतुद्रि | ५५ | ३३ |
| शिशिर | २० | १९ | शीर्षच्छेद्य | २०५ | ४५ | शुद्धान्त | { ६३ | १२ |
| | २७ | १८ | शीर्षण्य | { १२४ | ९८ | | { २३९ | ६६ |
| शिशु | १०३ | ३८ | | { १५५ | ६४ | शुनक | १९१ | २२ |
| शिशुक | ५२ | १८ | शी | { ४४ | २६ | शुनासीर | १२ | ४१ |
| शिशुत्व | ११२ | ४० | | { २६४ | २०१ | शुनी | १९१ | २२ |
| शिशुमार | ५३ | २० | शुक | { ९० | १३२ | | { २८ | २५ |
| शिश्र | १२० | ७६ | | { १०० | २१ | शुभ | { १८० | ७३ |
| शिश्विदान | २०५ | ४६ | शुकनास | ७७ | ५७ | | { २४६ | २३ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|----------|--------|------------------|----------|--------|-----------|----------|--------|
| शुभंयु | २०६ | ५० | शूलाकृत | १७४ | ४५ | शेवाल | ५६ | ३८ |
| शुभान्वित | २०६ | ५० | शूलिन् | १० | ३० | शेष | ४७ | ४ |
| शुभ | { ३२ १२ | { १९२ | शूल्य | १७४ | ४५ | शैक्ष | १३४ | ११ |
| | { २६२ | | शृगाल | ९७ | ५ | शैखारिक | ८२ | ८८ |
| शुभदन्ती | १८ | ५ | शृङ्खल { १२६ १०९ | | | शैल | ६५ | १ |
| शुभांशु | १९ | १४ | | { १५१ ४१ | | शैलालिन् | १८९ | १२ |
| शुल्क | १४८ | २७ | शृङ्खलक | १८० | ७५ | शैलष | { ७३ ३२ | |
| | { १८४ ९७ | | | { ६६ ४ | | | { १८९ १२ | |
| शुल्म | { १९१ २७ | | शृङ्ग | { ९१ १४२ | | शैलेय | ८९ | १२३ |
| | { २९१ २३ | | | { २३२ २६ | | शैवल | ५६ | ३८ |
| शुश्रूषा | १३८ | ३५ | शृङ्गवेर | १७३ | ३७ | शैवलिनी | ५५ | ३० |
| शुषि | ४६ | २ | शृङ्गाटक | ६१ | १७ | शशव | ११२ | ४० |
| शुष्कमांस | ११७ | ६३ | शृङ्गार | ४२ | १७ | शोक | ४३ | २५ |
| शुष्म | १६२ | १०२ | शृङ्गिणी | १७८ | ६६ | शोचिष्केश | १४ | ५४ |
| शुष्मन् | १४ | ५४ | | { ५४ २५ | | शोचिस | २३ | ३४ |
| शूक | १७० | २३ | शृङ्गी | { ८४ १०० | | शोण | { ३२ १५ | |
| शूककीट | ९९ | १४ | | { ८७ १३६ | | | { ५५ ३४ | |
| शूकधान्य | १७० | २४ | शृङ्गीकनक | १८४ | ९६ | शोणक | ७७ | ५७ |
| शूकर | ९७ | २ | शृत | २१४ | ९५ | शोणरत्न | १८३ | ९२ |
| शूकशिम्बि | ८२ | ८७ | शेखर | १३१ | १३६ | शोणित | ११७ | ६४ |
| शूद्रा | १०७ | १३ | शेफस् | १२० | ७६ | शोथ | ११५ | ५२ |
| शूद्री | १०७ | १३ | शेफालिका | { ७९ ७० | | शोथघ्नी | ९२ | १४९ |
| शून्य | २०७ | ५६ | | { २८३ ७ | | शोधनी | ६५ | १८ |
| शूर | १५७ | ७७ | शमुषी | २९ | १ | शोधित | { १७४ ४६ | |
| शूर्प | १७० | २६ | शैल | ७२ | ३४ | | { २०७ ५६ | |
| शूल | २६३ | १९७ | शेवधि | १७ | ७१ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|-----------|--------|------------|----------|--------|----------------|----------|--------|
| शोक | ११५ | ५२ | श्याल | ११२ | ३२ | श्रीपार्णिका | ७४ | ४० |
| शोभन | २०६ | ५२ | श्याव | ३३ | १६ | श्रीपर्णा | ७४ | ३६ |
| शोभा | २० | १७ | श्येत | ३२ | १२ | श्रीफल | ७३ | ३२ |
| शोभाञ्जन | ७३ | ३१ | श्येन | ९९ | १५ | श्रीफली | ८३ | ९५ |
| शोष | ११५ | ९१ | श्येनपाता | २८३ | ६ | श्रीमत् | ११९ | १४ |
| शौक | १०४ | ४३ | श्रद्धा | २४५ | १०२ | श्रीमत् | ७४ | ४० |
| शौक्लिकेय | ४८ | १० | श्रद्धालु | { १०९ २१ | | श्रील | १९८ | १४ |
| शौक्ल्य | ११२ | ४१ | | { २०१ २७ | | श्रीवत्सलाञ्छन | ८ | २२ |
| शौड | २०० | २३ | श्रयण | २२१ | १२ | श्रीवात | १२९ | १२९ |
| शौडिक | १८९ | १० | श्रवण | १२३ | ९४ | श्रीवेष्ट | १२९ | १२९ |
| शौडी | ८४ | ९७ | श्रवस् | १२३ | ९४ | श्रीसंज्ञ | १२९ | १२५ |
| शौद्धोदनि | ८ | १५ | श्रविष्ठा | २१ | २२ | श्रीहस्तिनी | ७९ | ६९ |
| शौरि | ८ | २१ | श्राणा | १७५ | ५० | श्रुत | २४१ | ७७ |
| शौर्य | १६२ | १०२ | श्राद्ध | १३७ | ३१ | | { ३३ ३ | |
| शौल्विक | १८८ | ८ | श्राद्धदेव | १४ | ५९ | श्रुति | { १२३ ९४ | |
| शौण्डुल | १९९ | १९ | श्राय | २२१ | १२ | | { २४० ७३ | |
| श्योत | २२१ | १० | श्रावण | २७ | १६ | श्रेणि | ६७ | ४ |
| श्मशान | १६५ | ११८ | श्रावणिक | २७ | १६ | श्रेणी | { ६७ ४ | |
| श्मश्रु | १२४ | ९९ | श्री | { ९ २७ | | | { १८८ ५ | |
| | | | | { १५८ ८२ | | | | |
| श्याम | { ३२ १४ | | श्रीकण्ठ | १० | ३२ | श्रेयस् | { २८ २४ | |
| | { २५३ १४३ | | श्रीधन | ८ | १४ | | { ३१ ६ | |
| श्यामल | ३२ | १४ | श्रीद | १६ | ६९ | | { २०७ ५८ | |
| | { ७७ ५५ | | श्रीपति | ८ | २१ | श्रेयसी | { ७७ ५९ | |
| शामा | { ८६ १०८ | | श्रीपर्ण | { ७९ ६६ | | | { ८२ ८४ | |
| | { ८६ ११२ | | | { २३६ ५३ | | श्रेष्ठ | { ८४ ९७ | |
| | { २५३ १४३ | | | | | | { २०७ ५८ | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|------------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| श्रोण | ११४ | ४८ | श्वश्रू | ११० | ३१ | षष्टिक | १७० | २४ |
| श्रोणि | ११९ | ७४ | श्वश्रूश्वश्रुरौ | ११२ | ३७ | षष्टिक्य | १६६ | ७ |
| श्रोणिफलक | ११९ | ७४ | श्वसू | २८० | २२ | षाण्मातुर | १२ | ४० |
| श्रोत्र | १२३ | ९४ | श्वसन | { १५ | ६१ | स | | |
| श्रोत्रिय | १३३ | ६ | | { ७६ | ५२ | संयत् | १६२ | १०६ |
| श्रीषट् | २७६ | ८ | श्वाविध् | ९७ | ७ | संयत् | २०४ | ४२ |
| श्लक्ष्ण | २०८ | ६१ | श्वित्र | ११५ | ५४ | संयम | २२२ | १८ |
| श्लेष | २२१ | ११ | श्वेत | { ३२ | १२ | संयाम | २२२ | १८ |
| श्लेष्मण | ११७ | ६० | | { १८४ | ९६ | संयुग | १६२ | १०५ |
| श्लेष्मन् | ११७ | ६२ | | { २४१ | ७९ | संयोजित | २१४ | ९२ |
| श्लेष्मल | ११७ | ६० | श्वेतगरुत् | १०१ | २३ | सराव | ३८ | २३ |
| श्लेष्मातक | ७३ | ३४ | श्वेतमरिच | १८५ | ११० | संलाप | ३६ | १६ |
| श्लोक | २२८ | २ | श्वेतरक्त | ३२ | १५ | संवत् | २७८ | १६ |
| श्वःश्रेयस | २८ | २५ | श्वेतसुरसा | ७९ | ७१ | संवत्सर | २७ | २० |
| श्वदंष्ट्रा | ८४ | ९८ | | ४ | | संवन्नन | २१९ | ४ |
| श्वन् | १९१ | २२ | षट्कर्मन् | १३२ | ४ | संवर्त | २८ | २२ |
| श्वनिश | २९७ | ४० | षट्पद | १०२ | २९ | संवर्त्तिका | ५७ | ४३ |
| श्वपच | १९० | २० | षडभिज्ञ | ८ | १४ | संवसथ | ६५ | १९ |
| | { ४६ | २ | षडानन | १२ | ३९ | संवाहन | २२३ | २२ |
| श्वभ्र | { २९० | २२ | षडग्रन्थ | ७६ | ४८ | | २९ | १ |
| | { २९० | २२ | षडग्रन्था | ८४ | १०२ | संविद | { ३० | ५ |
| श्वयथु | ११५ | ५२ | षडग्रन्थिका | ९३ | १५४ | | { २४३ | ९२ |
| श्ववृत्ति | १६५ | २ | षड्ज | ३८ | १ | संवीक्षण | २२५ | ३० |
| श्वशुर | ११० | ३१ | षण्ड | १७७ | ६२ | संवीत | २१३ | ९० |
| श्वश्रुरौ | ११२ | ३७ | | | | संवेग | ४५ | ३४ |
| श्वश्रुर्य | २५३ | १४६ | षण्ड | { ११२ | ३९ | संवेद | २१९ | ६ |
| | | | | { १४४ | ९ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|-------------------|--------|-----------|-----------------------------|--------|-----------|--------------------|--------|
| संवेश | ४६ | ३६ | संहति | १०३ | ४० | संकोच | १२९ | १२४ |
| संव्यान | १२८ | ११८ | संहनन | ११९ | ७० | संक्रन्दन | १२ | ४४ |
| संशसक | १६१ | ९८ | संहार | ४८ | २ | संक्रम | २२४ | २५ |
| संशय | ३० | ३ | संहति | ३५ | ८ | संक्षेपण | २२३ | २१ |
| संशयापन्नमानस | १९७, ५ | | सकल | २०९ | ६५ | संख्य | १६२ | १०४ |
| संश्रव | ३० | ५ | सकृत् | २७२ | २४२ | संख्या | ३० | २ |
| संश्रुत | २१७ | १०९ | सकृत्प्रज | १०० | २० | संख्यात | २०८ | ६४ |
| संश्लेष | २२५ | ३० | सक्तुफला | ७६ | ५२ | संख्यावत् | १२३ | ५ |
| संसक्त | २०९ | ६८ | सक्थि | ११९ | ७३ | संग | २२५ | २९ |
| संसद् | १३४ | १५ | सखि | १४५ | १२ | संगत | ३७ | १८ |
| संस्मरण | { ६१ १८ २३७ ५५ | | सखी | १०७ | १२ | संगम | { २२५ २९ २९५ ३४ | |
| संसिद्धि | ४६ | ३७ | सख्य | १४५ | १२ | संगर | २५८ | १६६ |
| संस्कृत | २४१ | ८१ | सगर्भ्य | १११ | ३४ | संगर्णि | २१७ | १०९ |
| संस्तर | २५७ | १६१ | सगोत्र | १११ | ३४ | संगूढ | { २१४ ९३ | |
| संस्तव | २२३ | २३ | सग्धि | १७६ | ५५ | संग्रह | ३४ | ६ |
| संस्ताव | २२६ | ३४ | संकट | २१२ | ८५ | संग्राम | १६२ | १०५ |
| संस्त्याय | २६४ | १५१ | संकर | ६५ | १८ | संग्राह | { १६० ९० २२२ १४ | |
| संस्था | १४७ | २६ | संकर्षण | ९ | २४ | संघ | १०४ | ४१ |
| संस्थान | २४९ | १२४ | संकलित | २२४ | ९३ | संघात | १०३ | ३९ |
| संस्थित | १६४ | ११७ | संकरूप | ३० | २ | सचिव | २६५ | २०६ |
| संस्पर्शा | ९३ | १५४ | संक्षुक् | २०५ | ४३ | सज्ज | १५६ | ६५ |
| संस्फोट | १६२ | १०५ | संकाश | १९४ | ३७ | सज्जन | { १३२ ३ १४९ ३३ | |
| संहत | २१० | ७५ | संकीर्ण | { १९६ १ २१२ ८५ २३७ ५७ | | सज्जना | १५१ | ४२ |
| संहतजानुक | ११४ | ४७ | संकुल | { ३७ १९ २१२ ८५ | | संचय | १०३ | ३९ |
| संहतल | १२१ | ८५ | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-----------|-----------|--------|-----------|--------|--------|------------|----------|--------|
| संचारिका | १०८ | १७ | सत्रिन् | १४५ | १५ | सन्तति | १३२ | १ |
| संजवन | ६२ | ६ | सत्वर | १५ | ६५ | सन्तप्त | २१६ | १०२ |
| संज्वर | १४ | ५७ | सदन | ६२ | ५ | सन्त | { १३ ५० | |
| संज्ञपन | १६४ | ११३ | सदस् | १३४ | १६ | { १३२ १ | | |
| संज्ञा | २३३ | ३३ | सदस्य | १३५ | १६ | सन्ताप | १४ | ५७ |
| संज्ञु | ११४ | ४७ | सदा | २८० | २२ | सन्तापित | २१६ | १०२ |
| सटा | १२४ | ९७ | सदागति | १५ | ६१ | सन्दान | १७९ | ७३ |
| सडीन | १०३ | ३७ | सदातन | २१० | ७२ | सन्दानित | २१४ | ९५ |
| सत् | { १३३ ५ | | सदानीरा | ५५ | ३३ | सन्दाव | १६४ | १११ |
| | { २४२ ८३ | | सदृक् | १३६ | ३६ | सन्दिता | { २१२ ८६ | |
| रत | १६ | ६५ | सदृश | १९३ | ३६ | { २१४ ९५ | | |
| सती | १०५ | ६ | सदृक्ष | १९३ | ३६ | सन्देशवाक् | ३६ | १७ |
| सतीनक | १६८ | १६ | सदेश | २०९ | ६७ | सन्देशहर | १४६ | १६ |
| सतीर्थ्य | १३४ | १२ | सद्वन् | ६२ | ४ | सन्देह | ३० | ३ |
| सत्तव | २०७ | ५८ | सद्यस् | २७७ | ९ | सन्दोह | १०३ | ३९ |
| सत्त्व | { २९ २९ | | सधर्मिणी | २१ | २० | सन्द्राव | १६४ | १११ |
| | { २६६ २१३ | | सध्यञ्ज | २०३ | ३४ | सन्धा | २४५ | १०२ |
| सत्पथ | ६१ | १६ | सनत्कुमार | १३ | ५१ | सन्धान | १९४ | ४२ |
| सत्य | { ३७ २२ | | सना | २७८ | १७ | सन्धि | { १७६ १८ | |
| | { २५५ १५४ | | सनातन | २१० | ७२ | { २०१ ११ | | |
| सत्यकार | १८१ | ८२ | सनामि | १११ | ३३ | सन्धिनी | १७९ | ६९ |
| सत्यवचस् | १४० | ४३ | सनि | १३८ | ३२ | सन्ध्या | २४ | ३ |
| सत्याकृति | १८१ | ८२ | सनिष्ठीव | ३७ | २० | सन्नकटु | ७३ | ३५ |
| सत्यावृत | १६६ | ३ | सनीड | २०९ | ६६ | सन्नद्ध | १५५ | ३५ |
| सत्यापन | १८१ | ८२ | सन्तत | १६ | ६५ | सन्नेय | २५४ | १५१ |
| सत्र | २६० | १८१ | सन्तमस | ४७ | ४ | सन्निधि | २२४ | २३ |
| सत्रा | २७५ | ४ | | | | सन्निकर्षण | २२४ | २३ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|--------|--------|------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| सन्निकृष्ट | २०९ | ६६ | सम | { १९३ | ३६ | समस्त | २०९ | ६५ |
| सन्निवेश | ६५ | १९ | | { २०९ | ६४ | समस्या | ३४ | ७ |
| सपल | २४५ | १० | समग्र | २०९ | १५ | समाः | २७ | २० |
| सपदि | { २७५ | २ | समंगा | { ८३ | ९० | समांसमीना | १७९ | ७२ |
| | { २७७ | ९ | | { ९१ | १४१ | समाकार्षिन् | ३२ | ११ |
| सपर्या | १३८ | ३४ | समज | १०४ | ४२ | समाघात | १६२ | १०५ |
| सपिण्ड | १११ | ३२ | समज्ञा | ३५ | ११ | समाज | १०४ | ४२ |
| सपीति | १७६ | ५५ | समज्या | १३४ | १५ | समाधि | { ३० | ५ |
| सप्तकी | १२६ | १०८ | समंजस | १४७ | २४ | | { २४४ | ९८ |
| सप्ततन्तु | १३४ | १३ | समधिक | २१० | ७५ | | { १५ | ६३ |
| सप्तपर्ण | ७१ | २३ | समंततस् | २७७ | १३ | समान | { १९७ | ३७ |
| सप्तार्ध | २२ | २७ | समंतदुग्धा | ८५ | १०६ | | { २५० | १२७ |
| सप्तला | { ८० | ७२ | समतभद्र | ८ | १३ | समानोदर्थ | १११ | ३४ |
| | { ९२ | १४३ | समम् | २७५ | ४ | समालम्भ | २२५ | २७ |
| सप्तार्चिस् | १४ | ५६ | | २४ | १ | समावृत्त | १३४ | १० |
| सप्ताश्व | २२ | २९ | समय | { २५४ | १४८ | समासाय | २१४ | ९२ |
| सप्ति | १५१ | ४४ | | { २७४ | २५२ | समासार्था | ३४ | ७ |
| सब्रह्मचारिन् | १३४ | ११ | समया | { २७६ | ७ | समाहार | २२२ | १६ |
| समर्तृका | १०७ | १२ | | १६२ | १०४ | समाहित | २१७ | १०९ |
| | { ६२ | ६ | समर | २४२ | ८७ | समाहति | ३४ | ७ |
| सभा | { १३४ | १५ | समथ | १४७ | २५ | समाह्वय | १९५ | ४६ |
| | { २५२ | १३७ | समर्थन | १९७ | ७ | | { १३४ | १५ |
| सभाजन | २१९ | ७ | समर्थक | २०९ | ६७ | समिति | { १६२ | १०६ |
| सभासद् | १३५ | १६ | समर्थ्याद | १४ | ५८ | | { २३९ | ७० |
| सभास्तार | १३५ | १६ | समवर्तिन् | १०३ | ४० | समित् | १६२ | १०६ |
| सभिक | १९६ | ४४ | समवाय | ९४ | १५७ | समिध | ६९ | १३ |
| | { १३२ | ३ | समष्टिला | २२३ | २१ | समीक | १६२ | १०४ |
| सभ्य | { १३५ | १६ | समसन | | | | | |

| शब्दः | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्दः | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्दः | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|-------------|--------|--------|--------------|--------|--------|
| समीप | २०९ | ६६ | समृद्ध | ११८ | ११ | सरणा | ९३ | १५२ |
| समीर | १५ | ६२ | समृद्धि | २२० | १० | सरणि | ६१ | १५ |
| समीरण | १५ | ६२ | समष्ट | १७४ | ४६ | सरत्ति | १२२ | ८६ |
| | ८१ | ७९ | सम्पत्ति | १५८ | ८२ | सरमा | १९१ | २२ |
| समुच्चय | २२२ | १६ | सम्पद् | १५८ | ८१ | सरल | ७८ | ६० |
| समुच्छ्रय | २५४ | १५२ | सम्पराय | २५४ | १५० | | १९७ | ८ |
| समुञ्जित | २१७ | १०७ | सम्पिधान | २४९ | १२५ | सरलद्रव | १२९ | १२९ |
| समुत्पिञ्ज | १६२ | ९९ | सम्पुटक | १३१ | १३९ | सरला | ८६ | १०८ |
| समुदक्त | २१३ | ९० | सम्प्रति | २८८ | २३ | सरस् | ५४ | २८ |
| समुदय | १०३ | ४० | सम्प्रदाय | २२० | ७ | सरसी | ५४ | ५८ |
| समुदाय | १०३ | ४० | सम्प्रधारण | २२५ | १५६ | सरसीरुह | ५७ | ४० |
| | १६२ | १०६ | सम्प्रधारणा | १४७ | २५ | सरस्वत् | ४९ | १ |
| समुद्र | २८८ | १७ | सम्प्रहार | १६२ | १०५ | | २३७ | ५७ |
| समुद्रक | १३१ | १३९ | सम्फुल्ल | ६८ | ७ | सरस्वती | ३३ | १ |
| समुद्गिरण | २१७ | ५५ | सम्बाध | २१२ | ८५ | | ५६ | ३४ |
| समुद्धत | २०० | २३ | सम्बोधन | २७६ | ६ | सरित् | ५५ | २९ |
| समुद्र | ४९ | १ | सम्भेद | ५६ | ३५ | सरित्पति | ४९ | १ |
| समुद्रान्ता | ८३ | ९२ | सम्भ्रम | ४५ | ३४ | सरीसृप | ४७ | ७ |
| | ८७ | ११६ | | २२४ | २६ | सर्ग | २११ | २२ |
| | ९० | १३३ | सम्भद | २८ | २४ | सर्ज | ७५ | ४४ |
| समुन्दन | २२५ | २९ | सम्मार्जनी | ६५ | १८ | सर्जक | ७५ | ४४ |
| समुन्न | २१७ | १०५ | सम्मूर्च्छन | २१९ | ६ | सर्जरस | १२९ | १२७ |
| समुन्नद्ध | २४६ | १०३ | सम्यक् | ३७ | २२ | सार्जिकाक्षर | १८६ | १०९ |
| समुपजोषम् | २७० | १० | सम्राज् | १४३ | ३ | सर्प | ४७ | ६ |
| समूरु | ९८ | ९ | सरक | १९५ | ४३ | सर्पराज | ४७ | ४ |
| समूह | १०३ | ३९ | सरघा | १०१ | २६ | सर्पिस् | १७५ | ५२ |
| समूह | १३५ | २० | सरट | ९८ | १२ | सर्व | २०९ | ६४ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------------|--------|--------|--------------|--------|----------|--------------|--------|--------|
| सर्वसहा | ५८ | ३ | सव | १३४ | १३ | सहस्रवीर्या | ९४ | १५८ |
| सर्वज्ञ { | ८ | १३ | सवन | १४१ | ४७ | सहस्रवेधिन { | ९१ | १४१ |
| { १० | ३३ | सवयस् | १४५ | १२ | { १७३ | ४० | | |
| सर्वतस् | २७७ | १३ | सवितृ | २२ | ३१ | सहस्रांशु | २२ | ३१ |
| सर्वतोभद्र { | ६३ | १० | सविघ्न | २०९ | ६७ | सहस्राक्ष | १२ | ४४ |
| { ७८ | ६२ | सवेश | २०९ | ६७ | सहस्रिन् | १५४ | ६२ | |
| सर्वतोभद्रा | ७४ | ३५ | सन्य | २१२ | ८४ | सहा { | ८० | ७३ |
| सर्वतोमुख | ४९ | ४ | सग्येष्ट | १५४ | ६० | { ८६ | ११३ | |
| सर्वदा | २८२ | २२ | सस्य | ७० | १५ | सहाय | १५६ | ७१ |
| सर्वधुरावह | १७८ | ६६ | सस्यमंजरी | १६९ | २१ | सद्वायता | २२७ | ४० |
| सर्वधुरीण | १७८ | ६६ | सस्यशूक | १६९ | २१ | सहिष्णु | २०२ | ३१ |
| सर्वमंगला | ११ | ३७ | सस्यसम्बर | ७५ | ४४ | सांयात्रिक | ५१ | १२ |
| सर्वरस | १२९ | १२७ | सह | २७५ | ४ | सांयुगीन | १५७ | ७७ |
| सर्वला | १६० | ९३ | सहकार | ७३ | ३३ | सांवत्सर | १४५ | १४ |
| सर्वालिंगिन् | १४० | ४५ | सहचरी | ८० | ७५ | सांशयिक | १९७ | ५ |
| सर्ववेदस् | १३३ | ९ | सहज | १११ | ३४ | साकम् | २५७ | ४ |
| सर्वसन्नहन | १६१ | ९४ | सहधर्मिणी | १०५ | ५ | साकल्य | २१८ | २ |
| सर्वानुभूति | ८५ | १०८ | सहन | १०२ | ३१ | साक्षात् | २७३ | २४३ |
| सर्वान्नभोजिन् | २०० | २२ | सहभोजन | १७६ | ५५ | सागर | ४९ | १ |
| सर्वानीन | २०० | २२ | सहस { | २६ | १४ | साचि | २७६ | ६ |
| सर्वाभिसार | १६१ | ९४ | { १६२ | १०२ | | सातला | ९२ | १४३ |
| सर्वार्थसिद्ध | ८ | १५ | { २७० | २३२ | | साति { | २२६ | ३८ |
| सर्वौष | १६१ | ९४ | सहसा | २७६ | ७ | { २३९ | ६७ | |
| सर्वप | १६९ | १७ | सहस्य | २६ | १५ | { २८४ | ९ | |
| सलिल | ४९ | ३ | सहस्र | १८२ | ८४ | सातिसार | ११६ | ५९ |
| सलकी | ८८ | १२४ | सहस्रदंष्ट्र | ५२ | १४ | सात्त्विक | ४२ | १६ |
| | | | सहस्रपत्र | ५७ | ४० | सादिन् { | १५४ | ६० |
| | | | | | | { २४६ | १०७ | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|----------------|-----------|--------|------------|-----------|--------|------------|----------|--------|
| साधन | २४८ | ११९ | सामि | २७३ | २४९ | साल | { ६२ ३ | |
| साधारण | { १९३ ३७ | | सामिधेनी | १३६ | २२ | { ७५ ४४ | | |
| | { २११ ८२ | | सामुद्र | १७३ | ४१ | सालपर्णी | ८७ | ११५ |
| सधित | २०४ | ४० | साम्परायिक | १६२ | १०४ | साल्ना | १७७ | ६३ |
| साधिष्ठ | २१८ | ११२ | सांप्रतम् | { २७७ ११ | | साहस | १४६ | २१ |
| साधोयस् | २७१ | २३५ | { २८० २३ | | | { १५४ ६२ | | |
| साधु | { १३२ २ | | सायक | २२८ | २ | साहस | { २२७ ४३ | |
| | { २०६ ५२ | | सायम् | { २४ ३ | | { ९७ १ | | |
| | { २४५ १०९ | | { २७९ १९ | | | { २०८ ५९ | | |
| साधुवाहिन | १५१ | ४४ | सार | { ६९ १२ | | सिंहनाद | १६३ | १०७ |
| साध्य | ७ | १० | { २५८ १७१ | | | सिंहपुच्छी | ८३ | ९३ |
| साध्वस | ४२ | २१ | सारंग | { ९९ १७ | | सिंहसंहनन | १९८ | १२ |
| साध्वी | १०५ | ६ | { २३१ २३ | | | सिंहाण | १८४ | ९८ |
| सानु | ६६ | ६ | सारथि | १५४ | ५९ | सिंहासन | १४९ | ३१ |
| सान्तपन | १४२ | ५२ | सारमेय | १९१ | २१ | सिंहास्य | ८५ | ११३ |
| सान्त्व | { ३७ १८ | | सारव | ५६ | ३६ | सिंही | { ८५ १०३ | |
| | { १४६ २१ | | सारस | { ५७ ४० | | { ८६ ११४ | | |
| सान्दष्टिक | १४८ | २९ | सारसन | { १२६ १०९ | | सिकता | २४० | ७३ |
| सान्द्र | २०९ | ६६ | { १५५ ६३ | | | सिकतामय | ५० | ९ |
| सान्द्रस्निग्ध | २०२ | ३० | सारिका | २८४ | ८ | सिकतावत् | ६० | ११ |
| सान्नाय्य | १३६ | २७ | सार्थ | १०४ | ४१ | सिक्थक | १८६ | १०७ |
| साप्तपदीन | १४५ | १२ | सार्थवाह | १८० | ७८ | सित | { ३२ १३ | |
| सामन् | १४६ | २० | सार्द्र | २१७ | १०५ | { २१४ ९५ | | |
| सामन् | { ३४ ३ | | सार्धम् | २७५ | ४ | { २१५ ९८ | | |
| | { १४६ २१ | | सार्वभौम | { १८ ४ | | { २४१ ८० | | |
| सामाजिक | १३५ | १६ | | { १४३ २ | | सितच्छत्रा | ९३ | १५ |
| सामान्य | { २९ ३१ | | | | | | | |
| | { २११ ८२ | | | | | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|--------|--------|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|
| सिता { | ७९ | ७१ | सीत्य | १६८ | ८ | सुचरित्रा | १०५ | ६ |
| | १७४ | ४३ | सीधु | १९४ | ४१ | सुचेलक | १२७ | ११६ |
| सिताभ्र | १३० | १३० | सोमन् | ६५ | २० | सुत { | ११० | २७ |
| सितांभोज | ५७ | ४१ | सीमन्त | २८९ | १९ | | २३८ | ६० |
| सिद्ध { | ७ | ११ | सीमन्तिनी | १०४ | २ | सुतश्रेणि | ८२ | ८८ |
| | २१६ | १०० | सीमा | ६५ | २० | सुतात्मजा | ११० | २०. |
| सिद्धान्त | ३० | ४ | सीर | १६८ | १४ | सुत्या | १४१ | ४७ |
| सिद्धार्थ | १६९ | १८ | सीरपाणि | ९ | २४ | सुत्रामन् | १२ | ४२ |
| सिद्धि | ८६ | ११२ | सीवन | २१९ | ५ | सुत्वन | १३४ | १० |
| सिध्म | ११५ | ५३ | सीसक | १८५ | १०५ | सुदर्शन | १० | २८ |
| सिध्मल | ११७ | ६१ | सीङ्गण्ड | ८५ | १०५ | सुदाय | १४८ | २८ |
| सिध्मला | २८४ | १० | सु | { २७५ | २ | सुदूर | २०९ | ६९ |
| सिध्य | २१ | २२ | | { २७६ | ५ | सुधर्मा | १३ | ४८ |
| सिध्रका | २८४ | ८ | सुकंदक | ९२ | १४७ | सुधा { | १३ | ४८ |
| सिनीघाली | २५ | ९ | सुकरा | १७९ | ७० | | २४५ | १०२ |
| सिन्दुक | ७९ | ६८ | सुकल | १९७ | ८ | सुधांशु | १९ | १४ |
| सिन्दुवार | ७९ | ६८ | सुकुमार | २११ | ७८ | सुधी | १३३ | ५ |
| सिन्दूर { | १८५ | १०५ | सुकृत | २८ | २४ | सुनासीर | १२ | ४१ |
| | २९४ | ३१ | सुकृतिन् | १९६ | ३ | सुनिषण्णक | ९३ | १४९ |
| सिन्धु { | ४८ | १ | सुख | { २८ | २५ | सुन्दर | २०६ | ५२ |
| | ४९ | २ | | { २९१ | २३ | सुन्दरी | १०५ | ४ |
| | २४५ | १०१ | सुखवर्चक | १८६ | १०९ | सुपथिन् | ६१ | १६ |
| सिन्धुज | १७३ | ४२ | सुखसंदाह | १७९ | ७१ | सुपर्ण | १० | २९ |
| सिन्धुसंगम | ५६ | ३५ | सुगत | ८ | १३ | सुपर्वन | ७ | ७ |
| सिंह | १२९ | १२८ | सुगन्धा | ८७ | ११४ | सुपार्श्वक | ७५ | ४३ |
| सीता | १६८ | १४ | सुगन्धि { | ३२ | ११ | सुप्रतीक | १८ | ४ |
| | | | | { ८८ | १२१ | | | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|---------------|--------|--------|------------|--------|--------|-------------|--------|--------|
| सुप्रयोगविशिख | १५५ | ६८ | सुराचार्य | २१ | २४ | सुषेणिका | ८६ | १०८ |
| सुप्रलाप | ३६ | १७ | सुरामण्ड | १९४ | ४२ | सुष्ठु | { २७५ | २ |
| सुभगासुत | १०९ | २४ | सुरालय | १३ | ४९ | सुष्ठु | { २७९ | १९ |
| सुभिक्षा | ८८ | १२४ | सुराष्ट्रज | ९० | १३१ | सुसंस्कृत | १७४ | ४५ |
| सुम | ७० | १७ | सुवचन | ३६ | १७ | सुहृद् | १४५ | १२ |
| सुमन | १६९ | १८ | सुवर्ण | { १८२ | ८६ | सुहृदय | १९६ | ३ |
| सुमनसु | ७ | ७ | सुवर्ण | { १८३ | ९४ | सूकर | ९७ | २ |
| सुमनसु | ७० | १७ | सुवर्णक | ७१ | २४ | सूक्ष्म | { २०८ | ६१ |
| सुमना | ८० | ७२ | सुवलि | ८३ | ९५ | सूक्ष्म | { २५३ | १४४ |
| सुमनोरजस | ७० | १७ | | ७९ | ७० | सूचक | २०५ | ४७ |
| सुमेरु | १३ | ४९ | | ८७ | ११५ | सूचि | २८४ | ८ |
| सुत | ७ | ७ | सुवहा | { ८७ | ११९ | | { १५४ | ५९ |
| सुरंगा | २८४ | ८ | | ८८ | १२३ | | { १८४ | ९९ |
| सुरज्येष्ठ | ८ | १६ | | ९१ | १४० | सूत | { १८७ | ३ |
| सुरदीर्घिका | १३ | ४९ | सुनासिनी | १०६ | ९ | | { २३८ | ६२ |
| सुरद्विष | ७ | १२ | सुव्रता | १७९ | १७ | सूतिकागृह | ६३ | ८ |
| सुरनिम्नगा | ५५ | ३१ | सुषम | २०६ | ५२ | सूतिमास | ११२ | ३९ |
| सुरपति | १२ | ४३ | सुषमा | २० | १७ | सूत्यान | १९० | १९ |
| सुरभि | { २७ | १८ | सुषवी | { ९३ | १५५ | सूत्र | १९२ | २८ |
| | { ३२ | ११ | | { १७२ | ३७ | सूत्रवेष्टन | २२४ | २४ |
| | { २५२ | १३७ | सुषि | ४६ | २ | सूद | { १७१ | २८ |
| सुरभी | ८८ | १२३ | | { ३९ | ४ | | { २४३ | ९१ |
| सुरभि | १३ | ४८ | सुषिर | { ४६ | १ | सूना | २४७ | ११३ |
| सुरलोक | ६ | ६ | | { ४६ | २ | सूनु | ११० | २७ |
| सुवर्त्मन् | १७ | १ | सुषिरा | ८९ | १२९ | सूनृत | ३७ | १९ |
| सुरसा | ८७ | ११४ | सुषीम | २० | १९ | सूपकार | १७१ | २७ |
| सुरा | १९४ | ३९ | सुषेण | ७९ | ६७ | सूर | २२ | २८ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|---------------|----------|--------|----------|--------|--------|
| सौहित्य | १७६ | ५६ | स्तुत | २१७ | ११० | स्थाणु | { | १० ३४ |
| स्कन्द | १२ | ३९ | स्तुति | ३५ | ११ | | | ६८ ८ |
| स्कन्ध | ६९ | १० | स्तुतिपाठक | १६१ | ९७ | | | २३६ ४९ |
| | १२० | ७८ | | स्थांडिल | १४० | ४४ | | |
| | २४५ | १०० | | स्तूप | २८९ | १९ | स्थान | { |
| स्कन्धशाखा | ६९ | ११ | स्तेन | १९१ | २४ | २४८ ११७ | | |
| स्कन्ध | २१६ | १०४ | स्तेम | २२५ | २९ | स्थानीय | ६१ | १ |
| स्खलन | ४५ | ३६ | स्तैय | १९१ | २५ | स्थाने | २७७ | ११ |
| स्खलित | १६३ | १०८ | स्तैन्य | १९१ | २५ | स्थापत्य | १४४ | ८ |
| स्तन | १२० | ७७ | स्तोक | २०८ | ६१ | स्थापनी | ८२ | ८४ |
| स्तनंधयी | ११२ | ४१ | स्तोत्र | ३५ | ११ | स्थामन् | १६२ | १०२ |
| स्तनपा | ११२ | ४१ | स्तोम | { | १०३ ३९ | स्थायुक | १४४ | ७ |
| स्तनयित्नु | १८ | ६ | | २५२ | १४१ | स्थाल | २९५ | ३२ |
| स्तनित | १९ | ८ | स्त्री | १०४ | २ | स्थाली | १७१ | ३१ |
| स्तत्रक | ७० | १६ | स्त्रीधर्मिणी | १०८ | २० | स्थावर | २१० | ७३ |
| स्तब्धरोमन् | ९७ | २ | स्त्रीपुंस | १०३ | ३८ | स्थाविर | ११२ | ४० |
| स्तम्ब | ६८ | ९ | स्त्र्यगार | ६३ | ११ | स्थासक | १२८ | १२२ |
| | १६९ | २१ | स्थंडिल | १३६ | १८ | स्थास्तु | २१० | ७३ |
| स्तम्बकरि | १६९ | २१ | स्थंडिलशायिन् | १४० | ४४ | स्थिति | { | १४७ २६ |
| स्तम्बघन | २२६ | ३५ | स्थपति | { | १३३ ९ | स्थिरतर | { | २२३ २१ |
| स्तम्बघ्न | २२६ | ३५ | | २३८ | ६१ | | | २१० ७३ |
| स्तम्बेरम | १४९ | ३५ | स्थल | ५८ | ५ | स्थिरा | { | ५९ २ |
| स्तम्भ | २५१ | १३५ | स्थली | ५८ | ५ | | ८७ | ११५ |
| स्तव | ३५ | ११ | स्थविर | ११३ | ४२ | स्थिरायु | ७९ | ४६ |
| स्तिमित | २१७ | १०५ | स्थविष्ठ | २१८ | १११ | स्थूणा | { | १९३ ३५ |
| | | | | | | | | २३६ ५१ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|------------------------------|--------|-----------|---------------------|--------|-------------|--------------------|--------|
| स्थूल | { २०८ ६१ २६५ २०४ | | स्पर्शन | { १५ ६१ १३७ २९ | | स्मर | ९ | २५ |
| स्थूललक्ष्य | १९७ ६ | | स्पश | { १४५ १३ २६६ २१४ | | स्मरहर | १० | ३३ |
| स्थूलशाटक | १२७ ११६ | | स्पष्ट | २११ ८१ | | स्मित | ४५ | ३४ |
| स्थूलोच्चय | २५४ १४८ | | स्पृका | ९० १३३ | | स्मृति | { ३४ ६ ४४ २९ | |
| स्थेयम् | २१० ७३ | | स्पृशी | ८३ ९३ | | स्यद | १५ | ६४ |
| स्थौण्य | ९० १३२ | | स्पृष्टि | २२० ९ | | स्यन्दन | { ७२ २६ १५२ ५१ | |
| स्थौरिन् | १५१ ४६ | | स्पृहा | ४४ २७ | | स्यन्दनारोह | १५४ ६० | |
| स्थौल्य | २६३ १९५ | | स्पष्ट | २२२ १४ | | स्यन्दिनी | ११८ ६७ | |
| खव | २२० ९ | | स्फटा | ४८ ९ | | स्यन्न | २१४ ९२ | |
| खातक | १४० ४३ | | स्फाति | २२० ९ | | स्यूत | { १७० २६ २१६ १० | |
| खान | १२८ १२२ | | स्फार | २०८ ६३ | | स्यूति | २१९ ५ | |
| स्नायु | ११८ ६६ | | स्फिच् | ११९ ७५ | | स्योनाक | ७७ ५७ | |
| स्निग्ध | { १४५ १२ १७४ ४६ १९८ १४ | | स्फुट | { ६८ ७ २११ ८१ | | संसिन् | ७२ २८ | |
| स्तु | ६६ ५ | | स्फुटन | २१९ ५ | | सज् | १३१ १३५ | |
| स्तुक | ८५ १८५ | | स्फुरण | २२० १० | | सव | २२० ९ | |
| स्तुत | २१४ ९२ | | स्फुरणा | २२० १० | | सवद्गर्भा | १७८ ६९ | |
| स्तुषा | १०६ ९ | | स्फुलिङ्ग | १४ ५७ | | सवन्ती | ५५ ३० | |
| स्तुही | ८५ १०५ | | स्फूर्जक | ७४ ३८ | | सवा | ८२ ८३ | |
| स्नेह | ४४ २७ | | स्फूर्जथु | १९ १० | | सष्ट | ८ १७ | |
| स्पर्श | { ३१ ७ २२२ १४ | | स्फेष्ट | २१८ ११२ | | सस्त | २१६ १०४ | |
| | | | स्म | { २७६ ५ २७८ १७ | | साक् | २७५ २ | |
| | | | | | | सुत | २१४ ९२ | |
| | | | | | | सुव | १३६ २५ | |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|------------|-----------|--------|--------------|-----------|--------|--------------|-----------|--------|
| सुवावृक्ष | ७४ | ३७ | स्वर | { ३४ ४ | | स्वाध्याय | १४१ | ४७ |
| स्रोतस | { ५१ ११ | | | { ३९ १ | | स्वान | ३८ | २३ |
| | { २७० २३३ | | स्वह | { १३ ४७ | | स्वान्त | २९ | ३१ |
| स्रोतस्वती | ५५ | ३० | | { २५८ १६७ | | स्वाप | ४६ | ३६ |
| स्रोतोंऽजन | १८४ | १०० | स्वरूप | { ४६ ३८ | | स्वापतेय | १८३ | ९० |
| | | | | { २५१ १३१ | | स्वामिन् | १९८ | १० |
| स्व | { १११ ३४ | | स्वर्ग | ६ | ६ | स्वाराज्(ट्) | १२ | ४३ |
| | { २६६ २११ | | स्वर्ण | १८३ | ९४ | स्वाहा | { १३६ २१ | |
| स्वच्छन्द | १९९ | १५ | स्वर्णकार | १८८ | ८ | | { २७६ ८ | |
| स्वजन | १११ | ३४ | स्वर्णक्षीरी | ९१ | १३८ | स्वित् | २७२ | २४२ |
| स्वतंत्र | १९९ | १५ | स्वर्णक्षीरी | ९१ | १३८ | स्वेद | ४५ | ३३ |
| स्वधा | २७६ | ८ | स्वर्णदी | १३ | ४९ | स्वेदज | २०६ | ५१ |
| स्वधिति | १६० | ९२ | स्वर्मानु | २२ | २६ | स्वेदनी | १७१ | ३० |
| स्वन | ३८ | २२ | स्वर्वेश्या | १३ | ६२ | स्वैर | २६२ | १९२ |
| स्वनित | २१४ | ९४ | स्वर्वैद्य | १३ | ५१ | स्वैरिणी | १०६ | ११ |
| स्वप्न | ४६ | ३६ | स्वस्त | ११० | २९ | स्वेरिता | २१८ | २ |
| स्वप्नज | २०२ | ३३ | स्वस्ति | २७२ | २४१ | स्वैरिन् | १९९ | १५ |
| स्वभाव | ४६ | ३८ | स्वस्तिक | ६३ | १० | ह | | |
| स्वभू | ८ | १८ | स्वस्तीय | १११ | ३२ | ह | २७६ | ५ |
| स्वयंवरा | १०६ | ९ | स्वाति | २९७ | ३८ | | | |
| स्वयम् | २७८ | १६ | स्वादु | २४४ | ९४ | | | |
| स्वयंम् | ८ | १६ | स्वादुकंटक | { ७४ ३७ | | | | |
| | | | | { ८४ ९८ | | | | |
| स्वर | { ६ ६ | | स्वादुरसा | ९२ | १४४ | हंस | { २२ ३१ | |
| | { २७४ २५४ | | स्वाद्दी | ८५ | १०७ | | { १०१ २३ | |
| | | | | | | | { २६९ २३६ | |
| | | | | | | हंसक | १२६ | ११० |
| | | | | | | हंजिका | ८६ | ८९ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|--------------|--------|--------|-----------|--------|--------|------------|--------|--------|
| हंजे | ४१ | १५ | हरित { | ३२ | १४ | हलाहल | ४८ | १० |
| हङ् | २८९ | ९८ | हरित { | २८९ | १९ | हलिन् | ९ | २४ |
| हङ्गविलासिनी | ८९ | १३० | हरितक | १७२ | ३४ | हलिप्रिया | १९४ | ३९ |
| हठ | १६३ | १०८ | हरितालक | १८५ | १०३ | हल्य | १६७ | ८ |
| हंढे | ४१ | १५ | हरिताल | २९५ | ३२ | हल्या | २२७ | ४१ |
| हत | २०५ | ४१ | हरिदश्च | २२ | २९ | हलक | ५६ | ३६ |
| हनु { | ८९ | १३० | हरिद्रा | १७३ | ४१ | हव { | २३० | ८ |
| { | १२२ | ९० | हरिद्राभ | ३२ | १४ | { | २६५ | २०७ |
| हन्त | २७३ | २४४ | हरिद्रु | ८४ | १०१ | हविस { | १३६ | २७ |
| हन्न | २१५ | ९६ | हरिन्माण | १८३ | ९२ | { | १७५ | ५२ |
| हय | १५१ | ४४ | हरिप्रिय | ७५ | ४२ | हव्य | १३६ | २४ |
| हयपुच्छी | ९१ | १३८ | हरिप्रिया | ९ | २७ | हव्यपाक | १३६ | २२ |
| हयमारक | ८१ | ७६ | हरिमन्यक | १६९ | १८ | हव्यवाहन | १४ | ५५ |
| हर | १० | ३३ | हरिवालुक | ८८ | १२१ | हंस | ४२ | १८ |
| हरण | १४८ | २८ | हरिहय | १२ | ४३ | हसनी | १७१ | ३० |
| हरि { | ९७ | १ | हरीतकी | ७७ | ५९ | हसंती | १७१ | २९ |
| { | २५९ | १७५ | हरेणु { | ८८ | १२० | { | १२२ | ८६ |
| हरिचन्दन { | १३ | ५० | { | १६८ | १६ | { | १२४ | ९८ |
| { | १३० | १३१ | हर्म्य | ३६ | ९ | { | २३७ | ५९ |
| हरिण { | ३२ | १३ | हर्म्यक्ष | ९७ | १ | हस्तधारण | २१९ | ५ |
| { | ९८ | ८ | हर्ष | २८ | २४ | हस्तिन् | १४९ | ३४ |
| { | २३६ | ५१ | हर्षमाण | १९७ | ७ | हस्तिनख | ६४ | १७ |
| हरिणी | २२६ | ५० | हल | १६८ | १३ | हस्तिपक | १५४ | ५९ |
| हरित { | १७ | १ | हला | ४१ | १५ | हस्त्यारोह | १५४ | ५९ |
| { | ३२ | १४ | हलायुध | ९ | २३ | हास्तिक | २७५ | २५६ |
| | | | | | | हाटक | १८३ | ९३ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|--------------|--------|--------|-----------|--------|--------|
| हायन { | २७ | २० | हिम { | २० | १८ | हति { | ३५ | ८ |
| | २४६ | १०८ | | २० | १९ | | २२० | ८ |
| हार | १२५ | १०५ | | २९० | २२ | हह | १४ | ५२ |
| हारीत | १०२ | ३४ | हिमवत् | ६६ | ३ | हृणीया | २२५ | ३२ |
| हार्द | ४४ | २७ | हिमवालुका | १३० | १३० | हृद् { | २९ | ३१ |
| हाला | १९४ | ३९ | हिमसंहति | २० | १८ | | ११७ | ६४ |
| हालिक | १७८ | ६४ | हिमांशु | १९ | १३ | हृदय { | २९ | ३१ |
| हाव | ४५ | ३२ | हिमानी | २० | १८ | | ११७ | ६४ |
| हास | ४२ | १९ | हिमावती | ९१ | १३८ | हृदयंगम | ३७ | १८ |
| हास्तिक | १४९ | ३६ | | १८३ | ९० | हृदयालु | १९६ | ३ |
| हास्य { | ४२ | १७ | हिरण्य { | १८३ | ९१ | हृद्य | २०७ | ५३ |
| | ४२ | १९ | | १८३ | ९४ | हृषीक | ३१ | ८ |
| हाहा | १४ | ५२ | हिरण्यगर्भ | ८ | १६ | हृषीकेश | ८ | १८ |
| हि { | २७५ | २५७ | हिरण्यवाह | ५५ | ३४ | हृष्ट | २१६ | १०३ |
| | २७६ | ५ | हिरण्यरेतस् | १४ | ५५ | हृष्टमानस | १९७ | ७ |
| हिंसा | २६९ | २२९ | हिरूक् | २७५ | ३ | हे | २७६ | ७ |
| हिंसाकर्मन् | २२३ | १९ | | २७६ | ७ | हेति { | १४ | ५७ |
| हिंस | २०१ | २८ | हिलमोचिका | ९४ | १५७ | | २४० | ७१ |
| हिका | २८४ | ८ | ही | २७७ | ९ | हेतु | २९ | २८ |
| हिगु | १७३ | ४० | हीन { | २१७ | १०७ | हेमकूट | ६६ | ३ |
| हिगुली | ८६ | ११४ | | २५० | १२८ | हेमदुग्ध | ७१ | २२ |
| हिगुनिर्यास | ७८ | ६२ | इतभुक्प्रिया | १३६ | २१ | हेमन् { | १८३ | ९४ |
| हिज्जल | ७८ | ६१ | इतभुज् | १३ | ५५ | | २९१ | २३ |
| हिन्ताल | ९६ | १६९ | हुम् { | २७४ | २५२ | हेमन्त | २७ | १८ |
| | | | | २७९ | १८ | हेमपुष्पक | ७८ | ६३ |

| शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. | शब्द. | पृष्ठ. | श्लोक. |
|-------------|--------|--------|-------------|--------|--------|---------|--------|--------|
| हंमपुष्पिका | ८० | ७१ | हैयंगवीन | १७५ | ५२ | हस्वांग | ९१ | १४२ |
| हेमाद्रि | १३ | ४९ | होतृ | १३५ | १७ | | १३ | ४७ |
| हेरम्ब | ११ | ३८ | होम | १३४ | १४ | हादिनी | १९ | ९ |
| हेला | ४५ | ३२ | होरा | २८४ | १० | | ५५ | ३० |
| हेषा | १५२ | ४७ | ह्यस् | २७९ | २२ | ही | ४३ | २३ |
| है | २७६ | ७ | हृद | ५४ | २५ | हीण | २१४ | ९१ |
| हैम | १४९ | २२ | हसिष्ठ | २१८ | ११२ | हीत | २१४ | ९१ |
| | ११ | ३६ | हस्त्र | ११३ | ४६ | हीवेर | ८८ | १२१ |
| हैमवती | ७७ | ५९ | | २०९ | ७० | हृषा | १५२ | ४७ |
| | ८५ | १०३ | हस्वगवेधुका | ८७ | ११७ | हादिनी | ८८ | १२४ |
| | ९१ | १३८ | | | | | | |

इत्यनुक्रमणिका ।



श्रीः ।

अथामरकोशः

भाषाटीकासमेतः ।

प्रथम काण्ड १.

अथ स्वर्गवर्गः १.

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्या-
नवा गुणाः । सेव्यतामक्षयो धीराः
स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥

यस्य भासा जगद्भाति सदैव सच-
राचरम् । तं नौमि परमात्मानं भक्ता-
नामभयङ्करम् ॥ १ ॥ जटाटवीगलद्वंगं
चन्द्रचूडामणिं शिवम् । स्मृत्वामरकृतेः
कुर्वे भाषां व्याख्यासुधानुगाम् ॥ २ ॥

अन्वयः—हे अनघाः ! भवद्विः, सः,
अक्षयः, धीराः, श्रिये, च, अमृताय, च,
सेव्यताम् । ज्ञानदयासिन्धोः, अगाधस्य,
अस्य, ई, अस्ति, गुणाः, च, सन्ति ॥ १ ॥

अर्थ—हे सज्जनो ! तुम उस अविनाशी
ज्ञानदाता गुरुकी भोग और मोक्षकी

१ धियं राति ददाति । 'रा दाने'
अस्मात् किप् । धीरा ज्ञानप्रदो गुरुरित्यर्थः
भाषा—ज्ञानके देनेवाले गुरुको धीरा
कहते हैं ।

प्राप्ति होनेके अर्थ सेवा करो कि शास्त्र-
करिके संपन्न और दयाकरिके पूर्ण तथा
विषयोंसे विरक्त ऐसे इन गुरुके पास
अखण्ड लक्ष्मी और सत्य, शौच, दया
क्षमा आदिक गुण हैं ॥ १ ॥

ग्रंथमें वक्तव्य विषय दिखलाते हैं—
समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः
प्रतिसंस्कृतैः । सम्पूर्णमुच्यते वर्गे-
र्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥

अन्वयः—मया, अन्यतन्त्राणि, समाह-
ृत्य, संक्षिप्तैः, प्रतिसंस्कृतैः, वर्गैः, युक्तम्,
नामलिङ्गानुशासनं, सम्पूर्णम्, उच्यते ॥ २ ॥

अर्थ—मैं व्याडि आदिकोंके नामलि-
ङ्गानुशासन अथवा सिद्धातोंका संग्रह
करके शब्दोंके क्रमानुसार कथन कर-
नेसे सुशोभित ऐसे थोड़े २ शब्दोंके
वर्गोंसे अर्थात् पृथक् २ प्रकरणोंसे युक्त
ऐसा शब्द और उनके लिंगोंका स्पष्ट
रीतिसे बोध करनेवाला कोश, परिपूर्ण
रीतिसे कहता हूँ ॥ २ ॥

इस ग्रंथमें लिंगादिव्यवस्था किस प्रकारसे की है वह कहते हैं:—

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् । स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥

अन्वयः—अत्र, प्रायशः, रूपभेदेन, स्त्रीपुंनपुंसकं, ज्ञेयम्; च, कुत्रचित्, साहचर्यात्, स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयम्; क्वचित्, तद्विशेषविधेः, स्त्रीपुंनपुंसकं, ज्ञेयम् ॥ ३ ॥

अर्थ—इस ग्रंथमें बहुत करके ईप्, आप्, विसर्ग और अनुस्वार इनसे स्त्री, लिंग, पुंलिंग और नपुंसकलिंग जानना, जैसे—‘पद्मालया’ और ‘पद्मा’ यहां ‘आप्’ होनेसे ‘पद्मालया’ और ‘पद्मा’ यह स्त्रीलिङ्ग हैं ‘पिनाकोऽजगवं धनुः’ यहां ‘पिनाकः’ यहांपर विसर्ग है इससे ‘पिनाक’ शब्द पुंलिंग है ‘अजगवम्’ यहांपर अनुस्वार होनेसे ‘अजगव’ शब्द नपुंसक है, कहींपर विशेषणमें स्थित अथवा सर्वनामवाचक शब्दमें स्थित रूपके भेदसे लिंगोंमें भेद होता है जैसा—‘तत्परो हनुः’ यहांपर ‘तत्परः’ इस विशेषणका पुंलिंगरूप होनेसे उसका विशेष्यजो ‘हनु’ शब्द है उसका भी पुंलिंगहीमें रूप चलता है तथा ‘कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं सैवारुपा कुतुपः पुमान्’ यहां ‘सा’ यह

जो सर्वनामसंज्ञक शब्द है वह ‘कुतू’ शब्दका विशेषण है इससे ‘सा’ इसका स्त्रीलिंग होनेसे उसका विशेष्य जो ‘कुतू’ शब्द है उसका भी स्त्रीलिंग है और निश्चित है लिंग जिसका ऐसा शब्द समीप उच्चारण करनेसे उसका जोलि है वही लिंग उस समीप पढ़ेहुए अनिश्चितलिंगवाले शब्दका जानना, जैसे ‘अश्वयुगश्विनी’ ‘मानुःकरः’ ‘वियद्विष्णुपदम्’ यहांपर ‘अश्वयुजू’ ‘मानु’ और ‘वियद्’ इन अनिश्चितलिंगवाले शब्दोंके समीप निश्चित लिंगवाले ‘अश्विनी’, ‘कर’ और ‘विष्णुपद’ ये शब्द होनेसे उनके जो लिंग हैं येही लिंग उन अनिश्चित लिंगवाले शब्दोंके जानने अर्थात् ‘अश्वयुजू’ शब्दका स्त्रीलिंग ‘मानु’ शब्दका पुंलिंग और वियद् शब्दका नपुंसक लिंग है इस प्रकारसे जानने और कहीं कहींपर उन स्त्री, पुं, नपुंसक इनके विशेषरीतिसे कथन करनेसे स्त्रीलिंग, पुंलिंग और नपुंसकलिंग जानना, जैसे ‘भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान्’ रोचिः शोचिरुभे क्लीबे’ यहां पर भेरी शब्दके समीप ‘स्त्री’ ऐसा विशेषरीतिसे कथन किया है इसवास्ते ‘भेरी’ यह शब्द स्त्रीलिंग है, और ‘दुन्दुभि’ शब्दके समीप ‘पुमान्’ यह

कथन करनेसे 'दुन्दुभि' शब्द पुंलिङ्ग है और 'रोचिस्', 'शोचिस्' शब्दों के समीप 'उभे क्लीबे' अर्थात् दोनों भी नपुंसक यह विशेष कथन करनेसे 'रोचिस्' और 'शोचिस्' ये शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं इस प्रकारसे सर्वत्र जानना ॥ ३ ॥

भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न संकरः । कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमादृते ॥ ४ ॥

अन्वयः—अत्र, अनुक्तानां, भिन्नलिङ्गानां, भेदाख्यानाय, द्वन्द्वः, न, कृतः, एकशेषः, न, कृतः, क्रमात्, ऋते, संकरः, न, कृतः ॥ ४ ॥

अर्थ—इस कोशमें अपने अपने पर्यायोंमें नहीं पड़े हुए भिन्न २ लिङ्गवाले शब्दों का लिङ्गभेद कहनेके अर्थ द्वन्द्व और एकशेष नहीं किया है जैसे—'देवता' शब्द स्त्रीलिङ्ग है 'दैवत' शब्द नपुंसकलिङ्ग है और 'अमर' शब्द पुंलिङ्ग है इन भिन्नभिन्न लिङ्गवाले 'देवता', 'दैवत' और 'अमर' शब्दों का लिङ्गभेद कहनेके अर्थ 'देवतादैवतामराः' ऐसा द्वन्द्वसमास नहीं किया है। द्वन्द्वसमास किया जाय तो 'अमर' शब्द का पुंलिङ्ग ही 'देवता' और 'दैवत' इनका हो जायगा। कारण द्वन्द्व समासमें और तत्पुरुष-

में परपद का ही लिङ्ग होता है। वह यहां पर परपदलिङ्ग जो 'अमर' शब्द का पुंलिङ्ग है सो 'देवता' और 'दैवत' शब्द का नहीं होनेके वास्ते द्वन्द्व समास नहीं किया ऐसा सर्वत्र जानना। वैसे ही 'नभःखंश्रावणो नभाः' यहां पर 'अश्रावणौ तु नभसी' ऐसा 'नभसी' इस प्रकार का एकशेष भी नहीं किया, यदि 'नभाश्च नभश्च नभसी' ऐसा एकशेष करनेसे 'नभसी' यह नपुंसकलिङ्ग शेष रहेगा फिर आकाशवाचक 'नभस्' शब्द नपुंसकलिङ्ग होगा परन्तु श्रावणवाचक 'नभस्' शब्द पुंलिङ्ग है ऐसा नहीं जाना जायगा, इस वास्ते 'खं नभः' और 'श्रावणो नभाः' ऐसा पृथक् २ 'नभस्' शब्द कहा है, लिङ्गभेद समझनेके लिये एकशेष 'नभसी' ऐसा नहीं किया, परन्तु समान लिङ्गों का तो द्वन्द्वसमास किया ही है। जैसे—'स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशलयाः' 'पादा रश्म्यघ्नितुर्याशाः' यहां पर एक लिङ्ग के ही सब शब्द हैं इस वास्ते उनका द्वन्द्वसमास किया है और जिन शब्दों के पर्यायशब्द और लिङ्ग स्वतंत्रतासे अन्य स्थलोंमें कहे हैं, उससे अन्यत्र जो उस भिन्नलिङ्ग शब्दों का किसी अर्थान्तरके अर्थ कथन करनेके लिये द्वन्द्वसमास

किया है जस—‘विद्याधराप्सरोयक्ष-
क्षोगन्धर्वकिन्नराः’ ‘मातापितरौ पितरौ’
यहांपर ‘अप्सरस्’ शब्द अपने पर्या-
योंमें ‘स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या
उर्वशीमुखाः’ यहांही स्त्रीलिंग है ऐसा
कहा है, उसी ‘अप्सरस्’ शब्दको देव-
योनिमें परिगणनरूप अर्थके लिये वि-
द्याधर आदिक गणोंमें पठित किया है
और ‘विद्याधर’ ‘अप्सरस्’ ‘यक्ष’ ‘रक्षस्’
‘गन्धर्व’ ‘किन्नर’ इन सबशब्दोंका द्वन्द्व-
समास किया है, अब यहांपर यद्यपि स-
र्वशब्दोंका द्वन्द्वसमास होनेसे ‘विद्याधरा-
प्सरोयक्षक्षोगन्धर्वकिन्नराः’ ऐसा पुलि-
गरूप बना है तौ भी ‘अप्सरस्’ शब्दका
अन्यत्र ‘स्त्रियां बहुष्वप्सरसः’ यहांपर
कथन करनेके अनुसार स्त्रीलिंग ही है
ऐसा समझना और ‘मातापितरौ पित-
रौ’ यहांपर ‘पितरौ’ इसमें ‘मातृ’ और
‘पितृ’ ऐसे दोनों शब्दोंका एकवद्भाव
किया गया है इसमें ‘मातृ’ और ‘पितृ’
इनमेंसे ‘पितृ’ इसका शेष रहा है,
इनसे ‘पितृ’ इस शब्दको ‘मातृ’ ‘पितृ’
इन दोनोंका वाचकत्व होनेसेभी उसके
अन्तर्गत यद्यपि ‘मातृ’ यह शब्द है
तथापि वह ‘मातृ’ शब्द ‘जनयित्री
प्रसूमाता’ इस स्थलमें पर्यायशब्दोंके

साथ स्त्रीलिंग पठित है इसवास्ते उस
‘पितरौ’ इसके अन्तर्गत ‘मातृ’ शब्दका
स्त्रीलिंग ही है ऐसा जानना । और इस
कोशमें उन भिन्न भिन्न लिंगवाले
शब्दोंका क्रम छोड़के भिन्न लिंगवाले
शब्दोंमें संकर कहिये मिश्रण नहीं किया
है, जैसे—‘स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः’
यहांपर ‘स्तव’ ऐसा पुलिग कहा फिर
‘स्तोत्रं’ यह नपुंसकालिग कहा फिर
‘स्तुतिः’ ‘नुतिः’ वे स्त्रीलिंग शब्द
कहे हैं, ‘स्तुतिः स्तोत्रः स्तवो नुतिः’ ऐसा
लिंगोंका मिश्रणरूप संकर नहीं किया
है, ऐसाही ‘जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्प-
त्तिरुद्भवः’ यहांपर ‘जनुर्जननजन्मानि’
ये नपुंसक शब्द कहे फिर ‘जनिः’
‘उत्पत्ति’ ये स्त्रीलिंग शब्द कहे, फिर
‘उद्भवः’ यह पुलिग शब्द कहा इस
प्रकारसे सर्वत्र लिंगविषयमें जानना ॥४॥

त्रिलिङ्ग्यां त्रिविविधं पदं मिथुने
तु द्वयोरिति । निषिद्धलिङ्गं शेषा-
र्थं त्वन्तायादि न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

अन्वयः—त्रिलिङ्ग्याम्, त्रिषु, इति,
पदम्, ज्ञेयम्; मिथुने, तु, द्वयोः, इति,
पदम्, ज्ञेयम्; निषिद्धलिङ्गम्, शेषार्थम्,

ज्ञेयम्, त्वन्ताथादि, पूर्वभाक्, न, इति
ज्ञेयम् ॥ ५ ॥

अर्थ—इस ग्रंथमें जहांपर कोई शब्द तीनों लिंगोंमें चलता हो वह 'त्रिषु' ऐसा पद कथन किया है सो जानना जैसे—'त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः' यहांपर 'स्फुलिङ्ग' शब्द तीनों लिङ्गोंमें चलता है इसवास्ते उस 'स्फुलिङ्ग' शब्दके समीप 'त्रिषु' यह पद कथन किया है. और जहांपर स्त्रीलिङ्ग और पुलिङ्ग इन दोनों लिंगोंमें कोई शब्द चलता हो तो वहां 'द्वयोः' ऐसा पद कथन किया है सो जानना. जैसे—'द्वयोर्ज्वालकीलौ' यहांपर 'ज्वाल' और 'कील' ये दोनों शब्द पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग हैं इसवास्ते 'द्वयोः' ऐसा कथन किया है 'द्वयोः' यह केवल द्विशब्दका उपलक्षण है, अर्थात् किसी भी तरहसे द्वि-शब्दका जहांपर प्रयोग होगा वहां स्त्रीलिङ्ग और पुलिङ्ग जानना. जैसे—'द्विहीने प्रसवे सर्वम्' और 'द्विहीने कुकुन्दरे' इत्यादिक स्थलमें द्वि शब्दसे स्त्रीलिङ्ग और पुलिङ्ग ऐसा अर्थ करनेसे प्रसव-वाचक जितने शब्द हैं वे सर्व स्त्रीलिङ्ग और पुलिङ्गसे रहित हैं अर्थात् नपुंसकलिङ्ग हैं और कुकुन्दर-शब्द द्वय-कहिये स्त्रीलिङ्ग और

पुलिङ्ग इनसे रहित है अर्थात् नपुंसक लिङ्ग है ऐसा जानना. तथा जिस शब्दका जो लिङ्ग निषिद्ध किया हो उसके अतिरिक्त बाकी रहा लिङ्ग उस शब्दका जानना. जैसे 'वज्रमस्त्री' यहांपर 'वज्र' यह शब्द 'अस्त्री' कहिये स्त्रीलिङ्ग नहीं है ऐसा इस 'वज्र' शब्दको स्त्रीलिङ्गत्वका निषेध होनेपर बाकी रहे पुलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग इस 'वज्र' शब्दके हैं ऐसा जानना और जहां जिस शब्दके पीछे 'तु' यह शब्द होवे तहां उस तुशब्दके प्रथम जो शब्द होवे उसका पर्यायवाचक शब्द केवल उस तुशब्दके पीछे पढ़ा हुआ ही शब्द होता है उसे पहला शब्द उस 'तु' के पहले पठित किये शब्दका पर्यायवाचक शब्द नहीं होता है. जैसे—'नगरी त्वमरावती' यहांपर 'तु' यह जो शब्द पठन किया है इसके पूर्व पठित जो 'नगरी' शब्द है उसका पर्यायार्थवाचक शब्द 'अमरावती' यह है इस तु-शब्दके कथन करनेसे 'नगरी' इसका संबंध 'अमरावती' इसमें होता है उस 'नगरी' शब्दके प्रथम पठित 'इन्द्राणी' शब्दमें नहीं होता है यह 'तु' अन्त में जिसके है ऐसे नामपदकी व्यवस्था कही अब इसी ही प्रकारसे 'तु' जिसके अन्तमें

है ऐसा लिंगवाचक पद सर्वनामसंज्ञक पद और अव्ययसंज्ञक पद इन पदों का भी संबंध उस तु-शब्दके पीछे पड़े हुए शब्दमें ही होता है जैसे पुंसि-‘त्वन्तर्धिः’ यहां ‘पुंसि’ इस लिंगवाचक पदका ‘अन्तर्धिः’ इस पदमें संबंध हुआ और ‘तस्य तु प्रिया’ यहां ‘तस्य’ इस सर्वनामसंज्ञक पदका तु-शब्दके पीछे पठित प्रिया-शब्दमें संबंध हुआ और ‘वा तु पुंसि’ यहांपर ‘वा’ इस अव्ययसंज्ञक पदका तु-शब्दके पीछे पठित ‘पुंसि’ इसमें संबंध हुआ. इस प्रकारसे सर्वत्र तु-शब्दके विषयमें जानना, और इस कोशमें जहांपर जिन शब्दोंके प्रथम ‘अथ’ यह शब्द होवे वहां उस अथ शब्दके पीछे पठित नामपद, लिंगपद, सर्वनामपद, और अव्ययपद इनका संबंध उस अथके प्रथम पठित शब्दोंमें नहीं होता है तो उन अथ-शब्दके पीछे पठित शब्दोंका सम्बन्ध अथ-शब्दके पीछे पठित शब्दोंमें ही होता है जैसे—‘जवोऽथ शीघ्रं त्वरितम्’ यहांपर अथ-शब्दके पीछे पठित ‘शीघ्र’ इस नामपदका सम्बन्ध उस अथ-के प्रथम पठित जव-शब्दमें नहीं होता है किंतु अथ-शब्दके पीछे पठित ‘शीघ्र’ इस

नामपदका संबंध उस अथ-शब्दके पीछे पठित ‘त्वरितम्’ ‘लघु’ ‘क्षिप्रम्’ ‘अरम्’ ‘द्रुतम्’ इन शब्दोंमें होता है ऐसेही-‘शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये’ यहांपर अथ-शब्दके पीछे पठित ‘त्रिषु’ इस लिंगवाचक पदका द्रव्यवाचक पाप, पुण्य, सुख आदिक पदोंमें संबंध होता है. उस अथ-क प्रथम पठित ‘शस्तं’ इसमें संबंध नहीं होता है. अब जहां अथ-शब्दके बदलेमें कहीं कहीं अथो-शब्द कहा होय वहां भी इसी ही प्रकारकी व्यवस्था जाननी जैसे—‘अनुक्रोशोऽयथो हसः’ यहांपर अथो-इस शब्दके पीछे पठित ‘हस’ इस नामपदका संबंध उनके पीछे पठित ‘हास’ ‘हास्य’ इन शब्दोंमें होता है. उस अथो-शब्दके प्रथम पठित अनुक्रोश-शब्दमें नहीं होता है इस प्रकारसे व्यवस्था इस कोशमें करी है सो निज्ञासु जनोने जाननी ॥ ५ ॥

इति परिभाषा ।

स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिद-
शालयाः । सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रि-
यां कृवि त्रिविष्टिपम् ॥ ६ ॥

स्वर्गके नाम ९-स्वर १ स्वर्ग २
नाक ३ त्रिदिव ४ त्रिदशालय ५
सुरलोक ६ द्यौ ७ दिक् ८ त्रिविष्टप
९ ॥ ६ ॥

अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबु-
धाः सुराः । सुपर्वाणः सुमनसस्त्रि-
दिवेशा दिवौकसः ॥ ७ ॥ आदि-
तेया दिविषदो लेखा अदितिनन्द-
नाः । आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना
अमर्त्या अमृतान्वसः ॥ ८ ॥
बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दान-
वारयः । वृन्दारका दैवतानि पुंसि
वा देवताः स्त्रियाम् ॥ ९ ॥

देवताओंके नाम २६-अमर
१ निर्जर २ देव ३ त्रिदश ४ विबुध
५ सुर ६ सुपर्वन ७ सुमनसू ८ त्रिदि-
वेश ९ दिवौकस १० ॥ ७ ॥ आदि-
तेय ११ दिविषद् १२ लेख १३
अदितिनन्दन १४ आदित्य १५ ऋभु
१६ अस्वप्न १७ अमर्त्य १८ अमृता-
न्वसू १९ ॥ ८ ॥ बर्हिर्मुख २० क्रतु-
भुज २१ गीर्वाण २२ दानवारि
२३ वृदारक २४ दैवत २५
देवता २६ ॥ ९ ॥

आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्व-
रानिलाः । महाराजिकसाध्याश्च
रुद्राश्च गणदेवताः ॥ १० ॥

गणदेवताओंके नाम ९-आदित्य
(वारह) १ विश्व (तेरह) २ वसु
(आठ) ३ तुषित (छत्तिस) ४ आभा-
स्वर (चौंसठ) ५ अनिल (उनच्चास)
६ महाराजिक (दोसौ बीस) ७ साध्य
(वारह) ८ रुद्र (ग्यारह) ९ ॥ १० ॥

विद्याधराप्सरस्यक्षरक्षोगन्धर्वकि-
न्नराः । पिशाचो गुह्यकः सिद्धो
भूतोऽमी देवयोनयः ॥ ११ ॥

देवताओंकी जातिके भेद १०-
विद्याधर १ अप्सरसू २ यक्ष ३ रक्षस
४ गन्धर्व ५ किन्नर ६ पिशाच ७
गुह्यक ८ सिद्ध ९ भूत १० ॥ ११ ॥

असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदा-
नवाः । शुक्रशिष्या दितिसुताः पू-
र्वदेवाः सुरद्विषः ॥ १२ ॥

दैत्योंके नाम १०-असुर १
दैत्य २ दैतेय ३ दनुज ४ इन्द्रारि ५
दानव ६ शुक्रशिष्य ७ दितिसुत ८
पूर्वदेव ९ सुरद्विष १० ॥ १२ ॥

सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराज-
स्तथागतः । समन्तभद्रो भगवा-
न्मारजिष्ठो कजिजिनः ॥ १३ ॥
षडभिज्ञो दशबलोऽद्रयवादी विना-
यकः । मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता
मुनिः—

बुद्धके नाम १८—सर्वज्ञ १ सुगत
२ बुद्ध ३ धर्मराज ४ तथागत ५
समन्तभद्र ६ भगवत् ७ मारजित् ८
लोकजित् ९ जिन १० ॥ १३ ॥
षडभिज्ञ ११ दशबल १२ अद्रयवा-
दिन १३ विनायक १४ मुनीन्द्र १५
श्रीघन १६ शास्त्र १७ मुनि १८ ॥
—शाक्यमुनिस्तु यः ॥ १४ ॥
स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धो-
दनिश्च सः । गौतमश्चार्कवन्धुश्च
मायादेवीसुतश्च सः ॥ १५ ॥

शाक्यसिंहके नाम ७—शाक्य-
मुनि १ ॥ १४ ॥ शाक्यसिंह २ सर्वार्थ-
सिद्ध ३ शौद्धोदनि ४ गौतम ५ अर्क-
वन्धु ६ मायादेवीसुत ७ ॥ १५ ॥

ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी
पितामहः । हिरण्यगर्भो लोकेशः
स्वयम्भूश्चतुराननः ॥ १६ ॥ धाता-
ब्जयोनिर्दुहिणो विरिञ्चिः कमलास-
नः । स्वष्टा प्रजापतिर्विधा विधाता
विश्वसृष्टिधिः ॥ १७ ॥

ब्रह्माजीके नाम २०—ब्रह्मन् १
आत्मभू २ सुरज्येष्ठ ३ परमेष्ठिन् ४
पितामह ५ हिरण्यगर्भ ६ लोकेश ७
स्वयम्भू ८ चतुरानन ९ ॥ १६ ॥
धातृ १० अब्जयोनि ११ दुहिण १२
विरिञ्चि १३ कमलासन १४ सृष्टृ १५
प्रजापति १६ वेधस् १७ विधातृ १८
विश्वसृज् १९ विधि २० ॥ १७ ॥

विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो
विष्टरश्चराः । दामोदरो हृषीकेशः
केशवो माधवः स्वभूः ॥ १८ ॥
दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो
गरुडध्वजः । पीताम्बरोऽच्युतः
शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १९ ॥
उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ।
पद्मनाभो मधुरिपुर्वसुदेवस्त्रिविक्रमः
॥ २० ॥ देवकीनन्दनः शौरिः
श्रीपतिः पुरुषोत्तमः । वनमाली
बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥
२१ ॥ विश्वम्भरः कैटभजिद्विधुः
श्रीवत्सलाञ्छनः ।

विष्णुभगवान्के नाम ३९—विष्णु १
नारायण २ कृष्ण ३ वैकुण्ठ ४ विष्टरश्च-
वस् ५ दामोदर ६ हृषीकेश ७ केशव
८ माधव ९ स्वभू १० ॥ १८ ॥
दैत्यारि ११

पुण्डरीकाक्ष १२ गोविन्द १३ गरुडध्वज
१४ पीतांबर १५ अच्युत १६ शार्ङ्गिन्
१७ विष्वक्सेन १८ जनार्दन १९ ॥ १९ ॥
उपेन्द्र २० इन्द्रावरज २१ चक्रपाणि २२
वतुर्भुज २३ पद्मनाभ २४ मधुरिपु २५
वासुदेव २६ त्रिविक्रम २७ ॥ २० ॥
देवकीनन्दन २८ शौरि २९ श्रीपति ३०
पुरुषोत्तम ३१ वनमालिन् ३२ बलिध्वं-
सिन् ३३ कंसाराति ३४ अधोक्षज ३५
॥ २१ ॥ विश्वंभर ३६ कैटभजित् ३७
विद्यु ३८ श्रीवत्सलाञ्छन ३९ ॥

वासुदेवोऽस्य जनकः स एवान-
कदुन्दुभिः ॥ २२ ॥

वासुदेवजीके नाम २—वासुदेव १
आनकदुन्दुभि २ ॥ २२ ॥

बलभद्रः प्रलम्बव्रत्रो बलदेवोऽच्यु-
ताग्रजः । रेवतीरमणो रामः काम-
पालो हलायुधः ॥ २३ ॥ नीलां-
वरो रौहिणेयस्तालांको मुसली
हली । संकर्षणः सीरपाणिः कालि-
न्दीभेदनो बलः ॥ २४ ॥

बलदेवजीके नाम १७—बलभद्र १
प्रलम्बव्रत्र २ बलदेव ३ अच्युताग्रज ४
रेवतीरमण ५ राम ६ कामपाल ७
हलायुध ८ ॥ २३ ॥ नीलांबर ९

रौहिणेय १० तालांक ११ मुसलिन् १२
हलिन् १३ संकर्षण १४ सीरपाणि १५
कालिन्दीभेदन १६ बल १७ ॥ २४ ॥
मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो
मीनकेतनः । कन्दर्पो दर्पकोऽनंगः
कामः पञ्चशरः स्मरः ॥ २५ ॥
शम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेपुरनन्यजः ।
पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज
आत्मभूः ॥ २६ ॥ ब्रह्मसूक्त्युक्तेतुः-

कामदेवक नाम २१—मदन १
मन्मथ २ मार ३ प्रद्युम्न ४ मीनकेतन
५ कन्दर्प ६ दर्पक ७ अनंग ८ काम
९ पञ्चशर १० स्मर ११ ॥ २५ ॥
शम्बरारि १२ मनसिज १३ कुसुमेपु
१४ अनन्यज १५ पुष्पधन्वन् १६
रतिपति १७ मकरध्वज १८ आत्मभू
१९ ॥ २६ ॥ ब्रह्मसू २० ऋष्य-
केतु २१

—स्यादनिरुद्ध उषापतिः ।

अनिरुद्धके नाम २—अनिरुद्ध १
उषापति २ ॥

लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला
श्रीहरिप्रिया ॥ २७ ॥

लक्ष्मीजीके नाम ६—लक्ष्मी १
पद्मालया २ पद्मा ३ कमला ४ श्री ५
हरिप्रिया ६ ॥ २७ ॥

शंखो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्य—

विष्णुभगवान्के शंखका नाम १—
पाञ्चजन्य १ ॥

—श्वक्रं सुदर्शनम् ।

विष्णुभगवान्के चक्रका नाम १—
सुदर्शन १ ॥

कौमोदकी गदा—

विष्णुभगवान्की गदाका नाम
१—कौमोदकी १ ॥

—खड्गो नन्दकः—

विष्णुके खड्गका नाम १—नन्दक १ ॥

—कौस्तुभो मणिः ॥ २८ ॥

विष्णुकी मणिका नाम १—कौस्तुभ
१ ॥ २८ ॥

गरुडान्गरुडस्ताक्षर्यो वैनतेयः
खगेश्वरः । नागान्तको विष्णु-
रथः सुपर्णः पन्नगाशनः ॥ २९ ॥

गरुडजीके नाम ९—गरुडम् १
गरुड २ ताक्षर्य ३ वैनतेय ४ खगेश्वर ५
नागान्तक ६ विष्णुरथ ७ सुपर्ण ८
पन्नगाशन ९ ॥ २९ ॥

शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली
महेश्वरः । ईश्वरः शर्व ईशानः
शङ्करश्चन्द्रशेखरः ॥ ३० ॥ भूतेशः
खण्डपरशुगिरिशो गिरिशो मृडः ।

मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी
प्रमथाधिपः ॥ ३१ ॥ उग्रः कपर्दी
श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ।
वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलो-
चनः ॥ ३२ ॥ कृशानुरेताः सर्वज्ञो
धूर्जटिर्नीललोहितः । हरः स्मरहरो
भर्गरुह्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥ ३३ ॥
गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी
वृषध्वजः ॥ व्योमकेशो भवो भीमः
स्थाणू रुद्र उमापातिः ॥ ३४ ॥

शिवजीके नाम ४८ —शम्भु १

ईश २ पशुपति ३ शिव ४ शूलिन् ५
महेश्वर ६ ईश्वर ७ शर्व ८ ईशान ९
शंकर १० चन्द्रशेखर ११ ॥ ३० ॥

भूतेश १२ खण्डपरशु १३ गिरिश
१४ गिरिश १५ मृड १६ मृत्युञ्जय
१७ कृत्तिवासस् १८ पिनाकिन् १९

प्रमथाधिप २० ॥ ३१ ॥ उग्र २१
कपर्दिन् २२ श्रीकण्ठ २३ शितिकण्ठ
२४ कपालभृत् २५ वामदेव २६

महादेव २७ विरूपाक्ष-२८ त्रिलोचन
२९ ॥ ३२ ॥ कृशानुरेतस् ३० सर्वज्ञ
३१ धूर्जटि ३२ नीललोहित ३३ हर
३४ स्मरहर ३५ भर्ग ३६ त्र्यम्बक ३७

त्रिपुरान्तक ३८ ॥ ३३ ॥ गङ्गाधर ३९

अन्धकरिपु ४० क्रतुध्वंसिन् ४१ वृष-
ध्वज ४२ व्योमकेश ४३ भव ४४
भीम ४५ स्थाणु ४६ रुद्र ४७ उमा-
पति ४८ ॥ ३४ ॥

कपर्दोऽस्य जटाजूटः—

शिवजीके जटाजूटका नाम १—
कपर्द १ ॥

—पिनाकोऽजगवं धनुः ।

शिवजीके धनुषके नाम २—पिनाक
१ अजगव २ ॥

प्रमथाः स्युः पारिषदा—

शिवजीके-पार्षदोंके नाम ३—प्रमथ
१ पारिषद २ ॥

ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः ॥ ३५ ॥
“ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्ण-
वी तथा । वाराही च तथेन्द्राणी
चामुण्डा सप्त मातरः ॥”

ब्राह्मी आदि शक्तियोंके नाम—
ब्राह्मी १ माहेश्वरी २ कौमारी ३ वैष्णवी
४ वाराही ५ इन्द्राणी ६ चामुण्डा
७ ॥ ३५ ॥

विभूतिर्भूतिरैश्वर्य—

ऐश्वर्यके नाम ३—विभूति १ भूति
२ ऐश्वर्य ३ ॥

—मणिमादिकमष्टधा ।

“अणिमा महिमा चैव गरिमा

लविमा तथा । प्राप्तिः प्राकाम्यभी-
शित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः ॥”

ऐश्वर्यके भेद ८—अणिमन् १ महि-
मन् २ गरिमन् ३ लविमन् ४ प्राप्ति
५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशित्व ८ ॥

उमा कात्यायनी गौरी काली है-
मवतीश्वरी ॥ ३६ ॥ शिवा भवानी
रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला । अप-
र्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिका-
म्बिका ॥ ३७ ॥

“आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा
मेनकात्मजा ॥”

पार्वतीके नाम २१—उमा १
कात्यायनी २ गौरी ३ काली ४ हैम-
वती ५ ईश्वरी ६ ॥ ३६ ॥ शिवा ७
भवानी ८ रुद्राणी ९ शर्वाणी १०
सर्वमङ्गला ११ अपर्णा १२ पार्वती १३
दुर्गा १४ मृडानी १५ चण्डिका १६
अम्बिका १७ ॥ ३७ ॥ आर्या १८
दाक्षायणी १९ गिरिजा २० मेनका-
त्मजा २१ ॥

विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणा-
धिपाः । अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोदर-
गजाननाः ॥ ३८ ॥

गणेशके नाम ८—विनायक १ विघ्न-
राज २ द्वैमातुर ३ गणाधिप ४ एकदन्त
५ हेरम्ब ६ लम्बोदर ७ गजानन ८ ॥ ३८ ॥

कार्तिकेयो महासेनः शरजन्मा
षडाननः । पार्वतीनन्दनः स्कन्दः
सेनानीरग्निभूर्गुहः ॥ ३९ ॥
बाहुलेयस्तारकजिद्विशाखः शिखिवा-
हनः । पाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः
कौञ्चदारणः ॥ ४० ॥

स्वामिकार्तिकेयक नाम १७—
कार्तिकेय १ महासेन २ शरजन्मन् ३
षडानन ४ पार्वतीनन्दन ५ स्कन्द ६
सेनानी ७ अग्निभू ८ गुह ९ ॥ ३९ ॥
बाहुलेय १० तारकजित् ११ विशाख
१२ शिखिवाहन १३ पाण्मातुर १४
शक्तिधर १५ कुमार १६ कौञ्चदारण
१७ ॥ ४० ॥

इन्द्रो मरुत्वान् मधवा विडौजाः
पाकशासनः । वृद्धश्रवाः शुनासीरः
पुरुहूतः पुरंदरः ॥ ४१ ॥ जिष्णुर्लेखर्षभः
शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः । सुत्रामा
गोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा
॥ ४२ ॥ वास्तोष्पतिः सुरपतिर्व-
लारातिः शचीपतिः । जम्भभेदी हरि-
हयः स्वाराणनमुचिसूदनः ॥ ४३ ॥ संक्र-
न्दनो दुश्चयवनस्तुराषाणमेघवाहनः ।
आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षा-

इन्द्रक नाम ३५—इन्द्र १ मरुत्व
२ मधवन् ३ विडौजस् ४ पाकशा-

सन ५ वृद्धश्रवस् ६ शुनासीर ७ पुरु-
हूत ८ पुरन्दर ९ ॥ ४१ ॥ जिष्णु १०
लेखर्षभ ११ शक्र १२ शतमन्यु १३
दिवस्पति १४ सुत्रामन् १५ गोत्रभिद्
१६ वज्रिन् १७ वासव १८ वृत्रहन् १९
वृषन् २० ॥ ४२ ॥ वास्तोष्पति
२१ सुरपति २२ बलाराति २३ शची-
पति २४ जम्भभेदिन् २५ हरिहय २६
स्वाराज् २७ नमुचिसूदन २८ ॥ ४३ ॥
संक्रन्दन २९ दुश्चयवन ३० तुरासाह
३१ मेघवाहन ३२ आखण्डल ३३
सहस्राक्ष ३४ ऋभुक्षिन् ३५ ॥

--स्तस्य तु प्रिया ॥ ४४ ॥

पुलोमजा शचीन्द्राणी-

इन्द्राणीके नाम ३६—॥ ४४ ॥ पुलो-
मजा १ शची २ इन्द्राणी ३ ॥

—नगरी त्वमरावती ।

इन्द्रपुरीका नाम १—अमरावती १ ॥

हय उच्चैःश्रवाः—

इन्द्रके घोडेका नाम १—उच्चैःश्रवस् १ ॥

—सूतो मातलि-

इन्द्रके सारथिका नाम १—मातलि १ ॥

—नन्दनं वनम् ॥ ४५ ॥

इन्द्रके बगीचेका नाम १—नन्दन

१ ॥ ४५ ॥

स्यात्प्रासादो वैजयन्तो—

इन्द्रके धवरहरेका नाम १—वैजयन्त १ ॥

—जयन्तः पाकशासनिः ।

इन्द्रके पुत्रके नाम २—जयन्त १
पाकशासनि २ ॥

ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुव-
ल्लभाः ॥ ४६ ॥

इन्द्रके हाथोके नाम ४—ऐरा-
वत १ अभ्रमातङ्ग १ ऐरावण ३ अभ्र-
मुवल्लभ ४ ॥ ४६ ॥

हादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं
भिदुरं पविः । शतकोटिः स्वरुः शम्बो
दम्भोलिरशनिर्द्वयोः ॥ ४७ ॥

वज्रके नाम १०—हादिनी १ वज्र
२ कुलिश ३ भिदुर ४ पवि ५ शत-
कोटि ६ स्वरु ७ शम्ब ८ दम्भोलि ९
अशनि १० ॥ ४७ ॥

व्योमयानं विमानोऽस्त्री—

विमानके नाम २—व्योमयान १
विमान २ ॥

—नारदाद्याः सुरर्षयः ।

सुरर्षियोंके नाम—नारद आदि ॥

स्यात्सुधर्मा देवसभा—

देवसभाके नाम २—सुधर्मा १
देवसभा २ ॥

—पीयूषममृतं सुधा ॥ ४८ ॥

अमृतके नाम ३—पीयूष १
अमृत २ सुधा ३ ॥ ४८ ॥

मन्दाकिनी विषदङ्गा स्वर्णदी

सुरदीर्घिका ।

स्वर्गगंगाके नाम ४—मन्दाकिनी १
विषदङ्गा २ स्वर्णदी ३ सुरदीर्घिका ४ ॥

मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः
सुरालयः ॥ ४९ ॥

सुमेरुपर्वतके नाम ५—मेरु १ सुमेरु २
हेमाद्री ३ रत्नसानु ४ सुरालय ५ ॥ ४९ ॥

पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारि-
जातकः । संतानः कल्पवृक्षश्च पुंसि
वा हरिचन्दनम् ॥ ५० ॥

देववृक्षोंके नाम ५—मन्दार १
पारिजातक २ संतान ३ कल्पवृक्ष ४
हरिचन्दन ५ ॥ ५० ॥

सनत्कुमारो वैवात्रः—

सनत्कुमारके नाम २—सनत्कुमार
१ वैवात्र २ ॥

—स्वर्वैद्यावश्विनीसुतौ । नास-
त्यावश्विनी दस्तावश्विनेयौ च
तावुभौ ॥ ५१ ॥

अश्विनीकुमारके नाम ६—स्वर्वैद्य
१ अश्विनीसुत २ नासत्य ३ अश्विन्
४ दस्त ५ आश्विनेय ६ ॥ ५१ ॥

स्त्रियां बहुष्वप्तरसः स्वर्वैद्या
उर्वशीसुखाः ।

अप्सराओंके नाम २—अप्सरसः १
स्वर्वेश्या २ ॥ वे उर्वशी आदिक अप्स-
रायें हैं ॥

हाहाहूहृश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रि-
दिवौकसाम् ॥ ५२ ॥

गन्धर्वाँके नाम २—हाहा १ हूह
२ आदि देवोंके गवैया हैं ॥ ५२ ॥

अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो
धनञ्जयः । कृपीटयोनिर्ज्वलनो
जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५३ ॥ बर्हिः-
शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश
उर्वधुः । आश्रयाशो बृहद्भानुः
कृशानुः पावकोऽनलः ॥ ५४ ॥
लोहिताश्वो वायुसखः शिखावा-
नाशुशुक्षणिः । हिरण्यरेता हुतभु-
ग्दहनो हव्यवाहनः ॥ ५५ ॥ सप्ता-
र्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।
शुचिरपिप्त-

अग्निके नाम ३४—अग्नि १ वैश्वानर
२ वह्नि ३ वीतिहोत्र ४ धनञ्जय ५
कृपीटयोनि ६ ज्वलन ७ जातवेदस्
८ तनूनपात् ९ ॥ ५३ ॥ बर्हिः—
शुष्मन् ११ कृष्णवर्त्मन् १२ शोचि-
ष्केश १३ उर्वधु १४ आश्रयाश १५
बृहद्भानु १६ कृशानु १७ पावक १८
अनल १९ ॥ ५४ ॥ रो (लो)

हिताश्व २० वायुसख २१ शिखावत्
२२ आशुशुक्षणि २३ हिरण्यरेतस्
२४ हुतभुज् २५ दहन २६ हव्यवा-
हन २७ ॥ ५५ ॥ सप्तार्चिस् २८
दमुनस् २९ शुक्र ३० चित्रभानु ३१
विभावसु ३२ शुचि ३३ अपिप्त ३४
—मौर्वस्तु वाडवो वडवानलः ५६

वडवानलके नाम ३—और्व १
वाडव २ वडवानल ३ ॥ ५६ ॥
वर्द्धेद्योर्ज्वालकीलावार्चिर्हेतिः शि-
खा स्त्रियाम् ।

अग्निकी ज्वालाके नाम ५—ज्वाल
१ कील २ अर्चिस् ३ हेति ४
शिखा ५ ॥

त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः—
चिनगारीके नाम २—स्फुलिङ्ग १
अग्निकण २ ॥

—सन्तापः संज्वरः समौ ॥ ५७ ॥
सन्तापके नाम २—सन्ताप १
संज्वर २ ॥ ५७ ॥

धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती
पारताम् । कृतान्तो यमुनाभ्राता
शमनो यमराड्यमः ॥ ५८ ॥
काशो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैव-
स्वतोऽन्तकः ।

यमराजके नाम १४—धर्मराज १
पितृपति २ समवर्तिन् ३ परेतराजू ४
कृतान्त ५ यमुनाभातृ ६ शमन ७ यम-
राजू ८ यम ९ ॥ ५८ ॥ काल १० दण्ड-
धर ११ श्राद्धदेव १२ वैवस्वत १३
अन्तक १४ ॥

राक्षसः कौणपः क्रव्यात् क्र-
व्यादोऽस्रप आशरः ॥ ५९ ॥
रात्रिचरो रात्रिचरः कर्बुरो निकषा-
त्मजः । यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋ-
तो यातुरक्षसी ॥ ६० ॥

राक्षसोंके नाम १५—राक्षस १ कौणप
२ क्रव्याद् ३ क्रव्याद ४ अस्रप ५ आशर
६ ॥ ५९ ॥ रात्रिश्चर ७ रात्रिचर ८ कर्बुर
९ निकषात्मज १० यातुधान ११ पुण्य-
जन १२ नैर्ऋत १३ यातु १४ रक्षस्
१५ ॥ ६० ॥

प्रचेता वरुणः पाशी यादसां-
पतिरप्पतिः ।

वरुणके नाम ५—प्रचेतसू १ वरुण २
पाशिन् ३ यादसाप्पति ४ अप्पति ५ ॥

श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा
सदागतिः ॥ ६१ ॥ पृषदश्वो
गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः ।
समीरमारुतमरुजगत्प्राणसमीरणाः

॥ ६२ ॥ नभस्वद्वातपवनपवमा-
नप्रभञ्जनाः ॥

वायुके नाम २०—श्वसन १ स्पर्शन २
वायु ३ मातरिश्वन् ४ सदागति ५ ॥ ६१ ॥
पृषदश्व ६ गन्धवह ७ गन्धवाह ८ अनिल
९ आशुग १० समीर ११ मारुत १२
मरुत् १३ जगत्प्राण १४ समीरण १५
॥ ६२ ॥ नभस्वत् १६ वात १७ पवन
१८ पवमान १९ प्रभञ्जन २० ॥

प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्या-
नौ च वायवः ॥ ६३ ॥

शरीरस्था इमे—

हृदयके वायुका नाम १—प्राण १ ॥
गुदाके वायुका नाम १—अपान १ ॥
नाभिके वायुका नाम १—समान १ ॥
कण्ठके वायुका नाम १—उदान १ ॥
सब शरीरमें फिरनेवाले वायुका नाम
१—व्यान १ ॥ ६३ ॥

—रंहस्तरसी तु रयः स्यदः ।

जवो—

वेगके नाम ५—रंहसू १ तरसू २
रय ३ स्यद ४ जव ५ ॥

—ऽय शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्र-
मरं द्रुतम् ॥ ६४ ॥ सत्वरं चपलं
तूर्णमविलम्बितमाशु च ।

शीघ्रताके नाम ११—शीघ्र १
त्वरित २ लघु ३ क्षिप्र ४ अर ५
द्रुत ६ ॥ ६४ ॥ सत्वर ७ चपल ८
तूर्ण ९ अविलंबित १० आद्यु ११ ।

सततानारताश्रान्तसंतताविरतानि-
शम् ॥ ६५ ॥ नित्यानवरताजस्र-
मप्य—

निरन्तरके नाम ९—सतत १ अना-
रत २ अश्रान्त ३ सन्तत ४ अविरत ५
अनिश ६ ॥ ६५ ॥ नित्य ७ अनवरत ८
अजस्र ११ ॥

—थातिशयो भरः ।

अतिवेलभृशाल्यर्थातिमात्रोद्गाढ-
निर्भरम् ॥ ६६ ॥ तीव्रैकान्तानि-
तान्तानि गाढवाढदृढानि च ।

वारम्बारके नाम १४—अतिशय १
भर २ अतिवेल ३ भृश ४ अत्यर्थ ५
अतिमात्र ६ उद्गाढ ७ निर्भर ८ ॥ ६६ ॥
तीव्र ९ एकान्त १० नितान्त ११
गाढ १२ बाढ १३ दृढ १४ ॥

कुवि शीघ्राद्यसत्त्वे स्यान्निष्वे-
षां सत्त्वगामि यत् ॥ ६७ ॥

अद्रव्यवाची शीघ्र आदि शब्द
नपुंसक लिंगमें होते हैं और द्रव्यवाची
तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ६७ ॥

कुबेरस्यम्बकसखो यक्षराज्ञ गु-
ह्यकेश्वरः । मनुष्यधर्मा धनदो
राजराजो धनाधिपः ॥ ६८ ॥
किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नर-
वाहनः । यक्षैकपिङ्गैलविलश्रीदपु-
ण्यजनेश्वराः ॥ ६९ ॥

कुबेरके नाम १७—कुबेर १ म्ब-
कसख २ यक्षराज ३ गुह्यकेश्वर ४ मनुष्य-
धर्मन् ५ धनद ६ राजराज ७ धनाधिप
८ ॥ ६८ ॥ किन्नरेश ९ वैश्रवण १०
पौलस्त्य ११ नरवाहन १२ यक्ष १३
एकपिंग १४ ऐलविल १५ श्रीद १६
पुण्यजनेश्वर १७ ॥ ६९ ॥

अस्योद्यानं चैत्ररथम्—

कुबेरके बगीचेका नाम १—चैत्ररथ ॥

—पुत्रस्तु नलकूबरः ।

कुबेरके पुत्रका नाम १—नलकूबर १ ।

कैलासस्थान—

कुबेरके स्थानका नाम १—कैलास १ ।

—मलका पू—

कुबेरकी पुरीका नाम १—अलका १ ।

—विमानं तु पुष्पकम् ॥ ७० ॥

कुबेरके विमानका नाम १—पुष्पक
१ ॥ ७० ॥

स्यात्किन्नरः किम्पुरुषस्तुरङ्ग-
वदनो मयुः ।

किन्नरोंके नाम ४-किन्नर १

किम्पुरुष २ तुरंगवदन ३ मयु ४ ॥

निधिर्ना शेवधि-

खजानेके नाम २-निधि १
शेवधि २ ॥

-भेदाः पद्मशङ्खादयो निधेः ॥ ७१ ॥

खजानेके भेद-पद्म, शङ्ख
इत्यादि ॥ ७१ ॥

इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

अथ व्योमवर्गः २.

द्यौदिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम

पुष्करमम्बरम् । नभोऽन्तरिक्षं

गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥

वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाश-

विहायसी । विहायसोऽपि नाको-

ऽपि द्युगपि स्थात्तदव्ययम् ॥ २ ॥

आकाशके नाम १९-द्यौ १ दिव्

२ अन्न ३ व्योमन् ४ पुष्कर ५ अम्बर

६ नभस् ७ अन्तरिक्ष ८ गगन ९

१ पद्मोऽस्त्रियां महापद्मः शङ्खो मकर-

कच्छो । मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च नि-

धयो नव ॥ इति शब्दार्णवः ॥ भाषा-

पद्म १ महापद्म २ शङ्ख ३ मकर ४

कच्छप ५ मुकुन्द ६ कुन्द ७ नील ८

खर्व ९ यह नौ खजानेके भेद हैं ।

अनंत १० सुरवर्त्मन् ११ ख १२ ॥

१ ॥ वियत् १३ विष्णुपद १४ आकाश

१५ विहायस् १६ विहायस १७ नाक

१८ द्युस् १९ ॥ २ ॥

इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

अथ दिग्वर्गः ३.

दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च

हरितश्च ताः ।

दिशाओंके नाम ५-दिश १

ककुभ् २ काष्ठा ३ आशा ४ हरित् ५

प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्व-

दक्षिणपश्चिमाः ॥ १ ॥ उत्तरा

दिगुदीची स्याद्-

पूर्व दिशाका नाम १-प्राची १ ।

दक्षिण दिशाका नाम १-अवाची १ ।

पश्चिमदिशाका नाम १-प्रतीची १ । १ ।

उत्तरदिशाका नाम १-उदीची १ ।

-दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ।

दिशोत्पन्नवस्तुका नाम १-दिश्य १ ।

इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो

वरुणो मरुत् ॥ २ ॥ कुवेर ईशः

पतयः पूर्वदीनां दिशां क्रमात् ॥

पूर्व दिशाके स्वामीका नाम-इन्द्र

१ । अग्निर्कोणके स्वामीका नाम-वह्नि

१ । दक्षिणदिशाके स्वामीका नाम-

यमराज १ । नैर्ऋत्य कोणके स्वामीका

नाम—नैर्ऋत १ । पश्चिमदिशाके
स्वामीका नाम—वरुण १ । वायु-
कोणके स्वामीका नाम—पवन १ ॥ २ ॥
उत्तर दिशाके स्वामीका नाम—कुबेर
१ । ईशान कोणके स्वामीका नाम—
ईश १ ॥

ऐरावतः पुण्डरीको वामनः
कुमुदोऽञ्जनः ॥ ३ ॥ पुष्पदन्तः
सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ।

पूर्व दिशाके हस्तीका नाम—ऐरा-
वत १ । अग्निकोणके हस्तीका नाम—
पुण्डरीक २ । दक्षिण दिशाके हस्तीका
नाम—वामन ३ । नैर्ऋत कोणके
हस्तीका नाम—कुमुद ४ । पश्चिम
दिशाके हस्तीका नाम—अञ्जन ५ ।
३ ॥ वायुकोणके हस्तीका नाम—
पुष्पदन्त ६ । उत्तरदिशाके हस्तीका
नाम—सार्वभौम ७ । ईशानकोणके
हस्तीका नाम—सुप्रतीक ८ ।

करिण्योऽश्वमुकपिलापिङ्गलानु-
पमाः क्रमात् ॥ ४ ॥ ताम्रकर्णी
शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनावती ।

उपर लिखे हुए ऐरावत आदि आठ
हस्तिपौकी हथिनियोंके क्रमसे नाम—
अश्व १ कपिला २ पिङ्गला ३ अनु-
पमा ४ ॥ ४ ॥ ताम्रकर्णी ५ शुभ्र-
दन्ती ६ अङ्गना ७ अञ्जनावती ८ ।

कलीबाव्ययं त्वपदिशं दिशो-
र्मध्ये विदिकु स्त्रियाम् ॥ ५ ॥

अग्नि आदि कोणके नाम २—
अपदिश १ विदिश २ ॥ ५ ॥

अभ्यन्तरं त्वन्तरालं—

बीचभागके नाम २—अभ्यन्तर १
अन्तराल २ ।

—चक्रवालं तु मण्डलम् ।

गोलाकार समूहके नाम २—चक्र-
वाल १ मण्डल २ ।

अश्वं मेघो वारिवाहः स्तनायित्नु-
र्वलाहकः ॥ ६ ॥ धाराधरो जलध-
रस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत् । घन-
जीमूतमुदिरजलमुग्धमयोनयः ॥ ७ ॥

बादलके नाम १५—अश्व १ मेघ
२ वारिवाह ३ स्तनायित्नु ४ बलाहक
५ ॥ ६ ॥ धाराधार ६ जलधर ७ तडि-
त्वत् ८ वारिद ९ अम्बुभृत् १० घन
११ जीमूत १२ मुदिर १३ जलमुचू
१४ धूमयोनि १५ ॥ ७ ॥

कादम्बिनी मेघमाला—

मेघपंक्तिके नाम २ कादम्बिनी १
मेघमाला २ ॥

—त्रिषु मेघभवेऽश्रियम् ।

मेघोत्पन्न वस्तुका नाम १—अश्रिय १ ।

स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषो
रसितादि च ॥ ८ ॥

गर्जनेके नाम ४—स्तनित १ गर्जित
२ मेघनिर्घोष ३ रसित ४ ॥ ८ ॥

शम्पाशतद्गदाह्लादिन्यैरावत्यः क्ष-
णप्रभा । तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्च-
ला चपला अपि ॥ ९ ॥

विजलीके नाम १०—शम्पा १
शतहृदा २ ह्लादिनी ३ ऐरावती ४
क्षणप्रभा ५ तडित् ६ सौदामनी ७
विद्युत् ८ चञ्चला ९ चपला १० ॥ ९ ॥

स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषो—

वज्रके शब्दोंके नाम २—स्फूर्जथु
१ वज्रनिर्घोष २ ।

—मेघज्योतिरिमदः ।

वज्रके अग्निके नाम २—मेघज्योति-
१ इरम्मद २ ।

इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजु
रोहितम् ॥ १० ॥

इन्द्रधनुषके नाम ३—इन्द्रायुध १
शक्रधनुस् २ रोहित ३ । सरल इन्द्रध-
नुषका नाम रोहित है ॥ १० ॥

वृष्टिर्वर्ष—

वर्षाके नाम २—वृष्टि १ वर्ष २ ।
—ताद्विधातेऽवग्राहवग्रहौ समौ ।

झूराके नाम २—अवग्राह १ अवग्रह २ ॥

धारासंपात आसारः—

निरन्तर मेघधाराके नाम २—धारा-
सम्पात १ आसार ॥ २ ॥

—शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ॥ ११ ॥

वायुसे उड़ाये हुए जलकर्णों-
(फुहारों)का नाम १ शीकर १ ॥ ११ ॥

वर्षोपलस्तु करका—

आकाशसे गिरे हुए पत्थरोंके नाम
२—वर्षोपल १ करका २ ॥

—मेघच्छन्नेऽग्निं दुर्दिनम् ।

मेघसे आच्छादित हुआ दिनरा-
त्रिका नाम १—दुर्दिन ॥ १ ॥

अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्त-
र्धिरपवारणम् ॥ १२ ॥ अपिधान-
तिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।

झपनाके नाम ८—अन्तर्धा १
व्यवधा २ अन्तर्धि ३ अपवारण ४ ॥
१२ ॥ अपिधान ५ तिरोधान ६
पिधान ७ आच्छादन ८ ॥

हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कु-
मुदबान्धवः ॥ १३ ॥ विधुः सुधां-
शुः शुभांशुरोषधीशो निशापतिः ।
अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगांकः
कलानिधिः ॥ १४ ॥

द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः
क्षपाकरः ।

चन्द्रमाके नाम २०—हिमांशु
१ चन्द्रमस् २ चन्द्र ३ इन्दु ४ कुमु-
दबान्धव ५ ॥ १३ ॥ विधु ६ सुधांशु
७ शुभांशु ८ ओषधीश ९ निशापति
१० अब्ज ११ जैवातृक १२ सोम
१३ ग्लौ १४ मृगाङ्क १५ कलानिधि
१६ ॥ १४ ॥ द्विजराज १७ शशधर
१८ नक्षत्रेश १९ क्षपाकर २० ॥

कला तु षोडशो भागो—

चन्द्रमाके १६ वे भागका नाम १—
कला १ ॥

—विम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ॥ १५ ॥
चन्द्रमण्डलके नाम २—विम्ब १
मण्डल २ ॥ १५ ॥

भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्थो—

खण्डके नाम ४—भित्त १ शकल
२ खण्ड ३ अर्द्ध ४ (पुंलिंग) ॥
—ऽर्थे समेऽशके ।

समभागका नाम १—अर्द्ध १
(नपुंसकलिंग) ॥

चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना—

चांदनीके नाम ३ चन्द्रिका १
कौमुदी २ ज्योत्स्ना ३ ॥

—प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥ १६ ॥

निर्मलताके नाम २—प्रसाद १
प्रसन्नता २ ॥ १६ ॥

कलंकांकौ लाञ्छनं च चिह्नं
लक्ष्म च लक्षणम् ।

चिह्नके नाम ६—कलंक १ अंक २
लाञ्छन ३ चिह्न ४ लक्ष्मन् ५ लक्षण ६ ॥

सुषमा परमा शोभा—

अतिशोभाका नाम १—सुषमा १
—शोभा कान्तिर्द्युतिश्छविः ॥ १७ ॥

शोभाके नाम ४—शोभा १—
कान्ति २ द्युति ३ छवि ४ ॥ १७ ॥

• अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तु-
हिनं हिमम् । प्रालेयं मिहिका चा-
पालेके नाम ७—अवश्याय १
नीहार २ तुषार ३ तुहिन ४ हिम ५
प्रालेय ६ मिहिका ७ ॥

—थ हिमानी हिमसंहतिः ॥ १८ ॥

पालेके समूहके नाम २—हिमानी
१ हिमसंहति २ ॥ १८ ॥

शीतं गुणे—

शीतलताका नाम १—शीत १ ॥

—तद्वदर्थः सुषीमः शिशिरो जडः ।
तुषारः शीतलः शीतो हिमः सप्ता-
न्यालिंगकाः ॥ १९ ॥

शीतलवस्तुके नाम ७—सुषीम १
शिशिर २ जड ३ तुषार ४ शीतल ५
शीत ६ हिम ७ ॥ १९ ॥

ध्रुव औत्तानपादिः स्या—

ध्रुवजीके नाम २—ध्रुव १ औत्तान-
पादि २ ॥

—दगस्त्यः कुम्भसम्भवः ।

मैत्रावरुणि—

अगस्त्यके नाम ३—अगस्त्य १
कुम्भसम्भव २ मैत्रावरुणि ३ ॥

रस्यैव लोपासुद्रा सधर्मिणी २०

अगस्त्यकी स्त्रीका नाम १—लोपा-
सुद्रा १ ॥ २० ॥

नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्यु-
डु वा स्त्रियाम् ।

नक्षत्रोंके नाम ६—नक्षत्र १ ऋक्ष
२ भ ३ तार ४ तारका ५ उडु ६ ॥

दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा-

अश्विनी आदि २८ नक्षत्रोंका
नाम १—दाक्षायणी १ ।

—अश्वयुगश्विनी ॥ २१ ॥

अश्विनी नक्षत्रके नाम २—अश्व-
युज् १ अश्विनी २ । २१ ॥

राधा विशाखा—

विशाखानक्षत्रके नाम २—राधा
१ विशाखा २ ॥

—पुष्ये तु सिध्यतिष्यौ—

पुष्यनक्षत्रके नाम ३—पुष्य १ सि-
ध्य २ तिष्य ३ ॥

—श्रविष्ठया ।

समा धनिष्ठा—

धनिष्ठानक्षत्रके नाम २—श्रविष्ठा १
धनिष्ठा २ ॥

—स्युः प्रोष्ठपदा

भाद्रपदाः स्त्रियः ॥ २२ ॥

पूर्वभाद्रपदा और उत्तरभाद्रपदा
नक्षत्रोंके नाम २—प्रोष्ठपदा १ भाद्र-
पदा २ ॥ २२ ॥

मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवा-
ग्रहायणी ।

मृगशिरनक्षत्रके नाम ३—मृगशीर्ष १
मृगशिर २ आग्रहायणी ३ ॥

इल्वलास्तच्छिरोदेशे तारका
निवसन्ति याः ।

मृगशिरके मस्तकपर रहनेवाले नक्ष-
त्रोंका नाम १—इल्वल १ ॥ २३ ॥

बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पतिर्धि-
षणो गुरुः । जीव आङ्गिरसो
वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः ॥ २४ ॥

बृहस्पतिके नाम ९-बृहस्पति १
सुराचार्य २ गीष्पति ३ धिषण ४
गुरु ५ जीवद आंगिरस ७ वाचस्पति
८ चित्रशिखण्डिज ९ ॥ २४ ॥

शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना
भार्गवः कविः ।

शुक्रके नाम ६-शुक्र १ दैत्यगुरु २
काव्य ३ उशनस् ४ भार्गव ५ कवि ६ ॥

अंगारकः कुजो भौमो लोहि-
तांगो महीसुतः ॥ २५ ॥

मंगलके नाम ५-अङ्गारक
कुज २ भौम ३ लोहितांग ४ मही-
सुत ५ ॥ २५ ॥

रौहिणेयो बुधः सौम्यः-

बुधके नाम ३-रौहिण्य १
बुध २ सौम्य ३ ॥

-समौ सौरिशनैश्चरौ ।

शनिके नाम २-सौरि १ शनैश्चर २ ॥

तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैहिके-
यो विधुन्तुदः ॥ २६ ॥

राहुके नाम ५-तमस् १ राहु २
स्वर्भानु ३ सैहिके ४ विधुन्तुद ५ ॥ २६ ॥

सप्तर्षयो मरीच्यत्रिसुखाश्चित्र-
शिखण्डिनः ।

मरीचि अत्रि आदि सप्तर्षियोंके
नाम-चित्रशिखण्डिन् ॥ १ ॥

राशीनामुदयो लग्नं-

राशियोंके उदयका नाम १-लग्न १

-ते तु मेषवृषादयः ॥ २७ ॥

राशियोंके नाम-मेष १ वृष
२ आदि ॥ २७ ॥

सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्म-
दिवाकराः । भास्कराहस्करब्रह्मभा-
करविभाकराः ॥ २८ ॥ भास्व-
द्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः ।
विकर्तनार्कमार्त्तण्डमिहिरारुणपूषणः
॥ २९ ॥ शुभमणिस्तरणिर्मित्र-
त्रभानुर्विरोचनः । विभावसुर्ग्रहपति-
स्त्विषांपतिरहर्षतिः ॥ ३० ॥ भानुर्हंसः
सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ।

सूर्यक नाम ३७-सूर १ सूर्य
२ अर्यमन् ३ आदित्य ४ द्वादशा-
त्मन् ५ दिवाकर ६ भास्कर ७ अह-
स्कर ८ ब्रह्म ९ प्रभाकर १० विभाकर

१ मरीचिचिंगिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः
क्रतुः । वसिष्ठश्चेति सप्तैते ज्ञेयाश्चित्रशिखण्डिनः
॥ १ ॥ भाषा-मरीचि १ अंगिरस २
अत्रि ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ वसिष्ठ
७ यह सप्तर्षि चित्रशिखण्डि कहलाते हैं ।

११ ॥ २८ ॥ भास्वत् १२ विवस्वत्
१३ सप्ताश्व १४ हरिदश्व १५ उष्ण-
रश्मि १६ विकर्त्तन १७ अर्क १८
मार्तण्ड १९ मिहिर २० अरुण २१
पूषन् २२ ॥ २९ ॥ द्युमणि २३
तरणि २४ मित्र २५ चित्रभानु २६
विरोचन २७ विभावसु २८ ग्रहपति
२९ त्विषाम्पति ३० अहर्षति ३१ ॥
॥ ३० ॥ भानु ३२ हंस ३३ सहस्रांशु
३४ तपन ३५ सवितृ ३६ रवि ३७

माठरः पिंगलो दण्डश्चडांशः
पारिणार्थिकाः ॥ ३१ ॥

सूर्यणार्धवर्ती तीनोंके एक एक
नाम—माठर १ पिंगल २ दण्ड ३
॥ ३१ ॥

सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपि-
गरुडाग्रजः ।

सूर्यके सारथिके नाम ५—सूरसूत
१ अरुण २ अनूरु ३ काश्यपि ४
गरुडाग्रज ५ ॥

परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकम-
ण्डले ॥ ३२ ॥

सूर्यके मण्डलके अर्थात् जो कभीर
उनके चारों ओर घेरासा बन जाता
है उसके नाम ४—परिवेष १ परिधि
२ उपसूर्यक ३ मण्डल ४ ॥ ३२ ॥

किरणोऽस्त्रमयूखांशुगभस्तिवृणि-
रश्मयः । भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुं-
सयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

सूर्यकिरणके नाम ११—किरण १
उत्त २ मयूख ३ अंशु ४ गभस्ति ५
वृणि ६ रश्मि ७ भानु ८ कर ९
मरीचि १० दीधिति ११ ॥ ३३ ॥
स्युः प्रभारुग्रुचिस्तिवडूभाभाश्छ-
विद्युतिदीप्तयः । रोचिः शोचिरुभे
क्लीबे—

दीप्तिके नाम ११—प्रभा १ रुच्
२ रुचि ३ त्विष् ४ भा ५ भास् ६
छवि ७ द्युति ८ दीप्ति ९ रोचिष् १०
शोचिष् ११ ॥

--प्रकाशो द्योत आतपः ॥ ३४ ॥
धूपके नाम ३—प्रकाश १ द्योत
२ आतप ३ ॥ ३४ ॥

कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं
कदुष्णं त्रिषु तद्वति ।

थोडे गरमके नाम ४—कोष्ण १
कवोष्ण २ मन्दोष्ण ३ कदुष्ण ४ ॥

तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्व-
बहुत गरमके नाम ३—तिग्म १
तीक्ष्ण २ खर ३ ॥

--मृगतृष्णा मरीचिका ॥ ३५ ॥
मृगतृष्णाके नाम २—मृगतृष्णा
१ मरीचिका २ ॥ ३५ ॥

इति दिग्वर्गः ॥ ३ ॥

अथ कालवर्गः ४.

कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयो-

समयके नाम ४-काल १ दिष्ट २

अनेहस् ३ समय ४ ॥

-प्यथ पक्षतिः ।

प्रतिपद्व द्वे इमे स्त्रीत्वे-

प्रतिपदाके नाम २-पक्षति १

प्रतिपत् २ ॥

-तदाद्यास्तिययो द्वयोः ॥ १ ॥

प्रतिपदादिका नाम १-तिथि १ ॥ १ ॥

घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे
दिवसवासरौ ।

दिनके नाम ५-घस्र १ दिन २

अहन् ३ दिवस ४ वासर ५ ॥

प्रत्यूषोऽहर्मुखं कल्यमुषःप्रत्यु-
षसी अपि ॥ २ ॥

प्रभातं च-

प्रातःकालके नाम ६-प्रत्यूष १

अहर्मुख २ कल्य ३ उषस् ४ प्रत्युषस्

५ ॥ २ ॥ प्रभात ॥ ६ ॥

-दिनान्ते तु सायंसंध्या

पितृप्रसूः ।

सायंकालके नाम ४-दिनान्त १

सायम् २ सन्ध्या ३ पितृप्रसू ॥ ४ ॥

प्राह्णापराह्णमध्याह्नास्त्रिसंध्य-

प्रातःकालका नाम १-प्राह्ण १ ॥

मध्याह्नकालका नाम १-मध्याह्न १ ॥

मध्याह्नोत्तर कालका नाम १-अप-
राह्ण १-इन तीनों कालोंका इकट्ठा
नाम-त्रिसंध्य १ ॥

-मय शर्वरी ॥ ३ ॥

निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रि-यामा
क्षणदाक्षपा । विभावरीतमस्विन्यौ
रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥

रात्रिके नाम १२-शवरी १-
॥ ३ ॥ निशा २ निशीथिनी ३ रात्रि ४
त्रियामा ५ क्षणदा ६ क्षपा ७ विभा-
वरी ८ तमस्विनी ९ रजनी १०
यामिनी ११ तमी १२ ॥ ४ ॥

तमिस्त्रा तामसी रात्रि-

अन्वियारी रात्रिका नाम १-
तमिस्त्रा १ ॥

-ज्यौत्स्नी चन्द्रिकयान्विता ।

उजयाली रात्रिका नाम १-ज्यौत्स्नी १ ॥

आगामिवर्तमानाहर्गुक्तायां नि-
शि पक्षिणी ॥ ५ ॥

वर्तमान और आगन्तुक दिनोंके
मध्यकी रात्रिका नाम १-पक्षिणी १ ५

गणरात्रं निशा बह्वचः-

बहुत रात्रियोंका नाम १-गणरात्रि १ ॥

-प्रदोषो रजनीमुखम् ।

रात्रिके प्रथमभागके नाम २-
प्रदोष १ रजनीमुख २ ॥

अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ-

आधीरात्रिके नाम २-अर्धरात्र १
निशीथ २ ॥

-द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥

प्रहरके नाम २ याम १ प्रहर २ ॥ ६ ॥

स पर्वसन्धिः प्रतिपत्पञ्चदशयोर्ध-
दन्तरम् ॥

प्रतिपदा १ और पंचदशी १५ ३०

के मध्यके कालका नाम १-पर्वसन्धि १ ॥

पक्षान्तौ पञ्चदशौ द्वे-

अमावास्या और पूर्णिमाका नाम
१-पक्षान्त १ ॥

-पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥

पूर्णिमाके नाम २-पौर्णमासी १

पूर्णिमा २ ॥ ७ ॥

कलाहीने सानुमतिः-

जिस पूर्णमासीमें प्रतिपदाके योगसे
चन्द्रमाकी कला हीन हो उसका नाम
१-अनुमति १ ॥

-पूर्णे राका निशाकरे ।

जिसमें पूर्ण चन्द्रमा हो उस पूर्णि-
माका नाम १-राका १ ॥

अमावास्या त्वमावस्या दर्शः

सूर्येन्दुसङ्गमः ॥ ८ ॥

अमावास्याके नाम ४-अमावास्या
१ अमावस्या २ दर्श ३ सूर्येन्दु-
संगम ४ ॥ ८ ॥

सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली-

जिसमें चतुर्दशीके योगसे चन्द्र-
माका दर्शन होय उस अमावास्याका
नाम १-सिनीवाली १ ॥

-सा नष्टेन्दुकला कुहूः ।

जिसमें बिलकुल चन्द्रदर्शन न होय
उस अमावस्याका नाम १-कुहू १ ॥

उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ
च पूष्णि च ॥ ९ ॥

सोपप्लवोपरक्तौ द्वा-

चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहणके नाम
४-उपराग १ ग्रह २ ॥ ९ ॥
सोपप्लव ३ उपरक्त ४ ।

-वग्न्युत्पात उपाहितः ।

धूम्रकेतुके नाम २-वग्न्युत्पात
१ उपाहित २ ॥

एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवा-
करनिशाकरौ ॥ १० ॥

सूर्य और चन्द्र दोनोंका इकट्ठा
नाम १-पुष्पवन्त १ ॥ १० ॥

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा-

पलक मारनेका नाम-निमेष १ ॥
अठारह निमेषोंका नाम १-काष्ठा १ ॥

-त्रिंशत् ताः कला ।

तीस काष्ठाओंका नाम १-
कला १ ॥

तास्तु त्रिंशत्क्षण—

तीस कलाओंका नाम १—क्षण १॥

—स्ते तु मुहूर्ता द्वादशास्त्रियाम् ॥११

बारह क्षणोंका नाम १—मुहूर्त्त १॥११॥

ते तु त्रिंशदहोरात्रः—

तीस मुहूर्त्तोंका नाम १—अहोरात्र १॥

—पक्षस्ते दशपञ्च च ।

पंद्रह दिनरातका नाम १—पक्ष १ ॥

पक्षौ पृथ्वापरौ शुक्लकृष्णौ—

पक्ष दो हैं २—शुक्ल १ कृष्ण २ ॥

—मासस्तु तावुभौ ॥ १२ ॥

दो पक्षोंका नाम १—मास १॥१२॥

द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्यादृतु-

मार्गशीर्षादि दो दो मासोंका

नाम १—ऋतु १ ॥

—स्तैरयनं त्रिभिः ।

तीन ऋतुओंका नाम १—अयन १॥

अयन द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य—

दो अयनोंके २ भेद—उत्तरायण १।

दक्षिणायन २ ॥

—वत्सरः ॥ १३ ॥

दो अयनोंकानाम १—वत्सर १॥१३॥

समरात्रिन्दिवे काले विषुवादि-
पुवं च तत् ।

जिसमें दिनरात समान होते हैं

उस संक्रांति (तुला और मेष) के

नाम २—विषुवत् १ विषु २ ॥

मार्गशीर्षं सहा मार्ग आग्रहा-

यणिकश्च सः ॥ १४ ॥

अग्रहन महीनेके नाम ४—मार्ग-

शीर्ष १ सहस २ मार्ग ३ आग्रहा-

यणिक ४ ॥ १४ ॥

पौषे तैषसहस्रौ द्वौ—

पूसमासके नाम ३॥पौष १ तैष २ सहस्य ३

—तपा माघेऽ-

माघमासके नाम २—तपस् १ माघ २ ॥

—थ फाल्गुने ।

स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः—

फाल्गुनमासके नाम ३—फाल्गुन १

तपस्य २ फाल्गुनिक ३ ॥

—स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः॥१५॥

चैत्रमासके नाम ३—चैत्र १

चैत्रिक २ मधु ३ ॥ १५ ॥

वैशाखे माधवो राधो—

वैशाखमासके नाम ३—वैशाख

१ माधव २ राध ३ ॥

—ज्येष्ठ शुक्र—

ज्येष्ठके नाम २—ज्येष्ठ १ शुक्र २॥

—शुचिस्त्वयम् ।

आषाढे-

आषाढमासके नाम २—शुचि १

आषाढ २ ॥

—श्रावणे तु स्यान्नभाः

श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥

श्रावणमासके नाम ३—श्रावण १

नभस् २ श्रावणिक ३ ॥ १६ ॥

स्युर्नभस्यः प्रौष्ठपदभाद्रभाद्र-
पदाः समाः ।

भाद्रों मासके नाम ४—नभस्य १

प्रौष्ठपद २ भाद्र ३ भाद्रपद ४ ॥

स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि

कारमासके नाम ३—आश्विन १

इष २ आश्वयुज ३ ॥

—स्यात्तु कार्तिके ॥ १७ ॥

बाहुल्यौ कार्तिकिको—

कार्तिकमासके नाम ४—कार्तिक

१ ॥ १७ ॥ बाहुल्य २ ऊर्ज ३

कार्तिकिक ४ ॥

हेमन्तः—

अगहनपूस माससे सिद्ध हुई ऋ-

तुका नाम १—हेमन्त १ ॥

—शिशिरोऽस्त्रियाम् ।

माघ फाल्गुनसे सिद्ध हुई ऋतुका

नाम १—शिशिर १ ॥

वसन्ते पुष्पसमयः सुरभि—

चैत्र वैशाखसे सिद्ध ऋतुके

नाम ३—वसन्त १ पुष्पसमय २ सु-

रभि ३ ॥

—ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥

निदाघ उष्णोपगम उष्ण

ऊष्मागमस्तपः ।

ज्येष्ठआषाढके समयक नाम ७—

ग्रीष्म १ ऊष्मक २ ॥ १८ ॥ निदाघ ३

उष्णोपगम ४ उष्ण ५ ऊष्मागम ६ तप ७ ॥

स्त्रियां प्रावृट्स्त्रियां भूम्नि वर्षा—

सावन भाद्रोंके ऋतुके नाम २—

प्रावृट् १ वर्षा २ ॥

—अथ शरत् स्त्रियाम् ॥ १९ ॥

कार कार्तिकके समयका नाम १—

शरद् १ ॥ १९ ॥

षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां

युगैः क्रमात् ।

मार्गशीर्ष आदि दो २ महीनोंके

ये छः ऋतु होते हैं ॥

संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनो-

ऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥

वर्षके नाम ६—संवत्सर १ वत्सर

२ अब्द ३ हायन ४ शरद् ५ समा

६ ॥ २० ॥

मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रो—

मनुष्याक एक महीनेका पितरों-

का दिनरात्रि होता है ॥

—वर्षेण दैवतः ।

और एक वर्षका देवताओंका दिन-

रात्रि होता है ॥

देवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः—

देवोंके दो हजार युगका ब्रह्माका दिनरात्रि होता है ॥

—कल्पो तु तौ नृणाम् ॥ २१ ॥

उन दो युगसहस्रोंको मनुष्योंका कल्प कहते हैं, ब्रह्माका दिन मनुष्योंका स्थितिकाल और ब्रह्माकी रात्रि मनुष्योंका प्रलयकाल होता है ॥ २१ ॥

मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः ।

इकहत्तर दिव्यवर्षका नाम १—मन्वन्तर १ ॥

सर्वतः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥

प्रलयके नाम ५—सर्वत १ प्रलय २ कल्प ३ क्षय ४ कल्पान्त ५ ॥ २२ ॥

अस्त्री पंकं पुमान्पाप्मा पापं किल्विषकल्मषम् । कलुषं वृजिनैनोऽधमं हो दुरितदुष्कृतम् ॥ २३ ॥

पापके नाम १२—पंक १ पाप्मन् २ पाप ३ किल्विष ४ कल्मष ५ कलुष ६ वृजि ७ एनस् ८ अप ९ अहस् १० दुरित ११ दुष्कृत १२ ॥ २३ ॥

स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः ।

धर्मके नाम ५—धर्म १ पुण्य २

श्रेयस् ३ सुकृत ४ वृष ५ ॥

मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षप्रमोदामोदसंमदाः ॥ २४ ॥ स्यादानन्दश्रुतानन्दः शर्मशातसुखानिच ।

हर्षके नाम १२—मुद् १ प्रीति २ प्रमद ३ हर्ष ४ प्रमोद ५ आमोद ६ सम्मद ७ ॥ २४ ॥ आनन्दश्रु ८ आनन्द ९ शर्मन् १० शात ११ सुख १२ ॥

श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मंगलं शुभम् ॥ २५ ॥ भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम् । शस्तं चा—

कल्याणके नाम १२—श्वःश्रेयस् १ शिव २ भद्र ३ कल्याण ४ मंगल ५ शुभ ६ ॥ २५ ॥ भावुक ७ भविक ८ भव्य ९ कुशल १० क्षेम ११ शस्त १२ ॥

—अथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥

पाप और पुण्यशब्द तथा सुखशब्दसे लेकर शस्तशब्द पर्यंत जो शब्द हैं वो यदि द्रव्यवाचक हों तो तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ २६ ॥

मतलिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतलजौ । प्रशस्तवाचकान्यम्—

अच्छेके नाम ५-मतलिका १
मचर्चिका २ प्रकाण्ड ३ उद्ध ४
तलज ॥५॥

-न्ययः शुभावहो विधिः ॥२७॥
शुभकारक विधिका नाम १-
अय १ ॥ २७ ॥

दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री
नियतिर्विधिः ।

भाग्यके नाम ६-दैव १ दिष्ट २ भाग-
धेय ३ भाग्य ४ नियति ५ विधि ६ ॥

हेतुर्ना कारणं बीज-
कारणके नाम ३-हेतु १ कारण
२ बीज ३ ॥

-निदानं त्वादिकारणम् ॥२८॥
आदिकारणका नाम १-निदान १ ॥२८॥

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः-
चैतन्यके नाम ३-क्षेत्रज्ञ १
आत्मन् २ पुरुष ३ ॥

-प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ।
प्रकृतिके नाम २-प्रधान १
प्रकृति २ ॥

विशेषः कालिकोऽवस्था-
उमरका नाम १-अवस्था १ ॥
-गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥२९॥
गुणोंके नाम ३-सत्त्व १ रजस्
२ तमस् ३ ॥ २९ ॥

जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पात्ति-
रुद्धवः ।

जन्मके नाम ६-जनुस् १ जनन
२ जन्मन् ३ जनि ४ उत्पत्ति ५ उद्धव ६ ॥
प्राणी तु चेतना जन्मी जन्तु-
जन्युशरीरिणः ॥ ३० ॥

प्राणीके नाम ६-प्राणिन् १
चेतन २ जन्मिन् ३ जन्तु ४ जन्यु
५ शरीरिन् ६ ॥ ३० ॥

जातिजातं च सामान्यं-
जातिमात्रके नाम ३-जाति १
जात २ सामान्य ३ ॥

-व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।
व्यक्तिवाचकके नाम २-व्यक्ति
१ पृथगात्मता २ ॥

चित्तं तु चेतो हृदयं स्वांतं
हन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥

मनके नाम ७-चित्त १ चेतस्
२ हृदय ३ स्वान्त ४ हृद् ५ मानस
६ मनस् ७ ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

अथ धीवर्गः ५.
बुद्धिर्मनीषा धीषणा धीः प्रज्ञा
शेमुषी मतिः । प्रेक्षोपलब्ध्याश्चे-
त्संवित्प्रीतपज्जप्तिचेतनाः ॥ १ ॥
बुद्धिके नाम १४-बुद्धि १
मनीषा २ धिषणा ३ धी ४ प्रज्ञा ५

शेमुषी ६ मति ७ प्रेक्षा ८ उपलब्धि
९ चित्र १० संविद् ११ प्रतिपद्
१२ जति १३ चेतना १४ ॥ १ ॥

धीर्वारणावती मेधा-

कही हुई वार्ताको धारण रखनेवाली
बुद्धिका नाम १-मेधा १ ॥

-संकल्पः कर्म मानसम् ।

मनकी कामनाका नाम १-संकल्प १ ॥

चित्ताभोगो मनस्कार-

किसी वस्तुमें चित्तके तत्पर होजाने-
के नाम २-चित्ताभोग १ मनस्कार २ ॥

श्रर्चा संख्या विचारणा ॥ २ ॥

विचारके नाम ३-चर्चा १
संख्या २ विचारणा ३ ॥ २ ॥

अध्याहारस्त्वर्क ऊहो-

अपूर्व विचारके नाम ३-अध्या-
हार १ तर्क २ ऊह ३ ॥

-विचिकित्सा तु संशयः ।

संदेहद्वारों का-

सन्देहके नाम ४-विचिकित्सा
१ संशय २ संदेह ३ द्वार ४ ॥

-य समौ निर्णयनिश्चयौ ॥ ३ ॥

निश्चयके नाम २-निर्णय १
निश्चय २ ॥ ३ ॥

मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता-

परलोकको मिथ्या जाननेके नाम २-

मिथ्यादृष्टि १ नास्तिकता २ ॥

-व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।

परद्रोहके नाम २-व्यापाद १
द्रोहचिन्तनम् २ ॥

समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ-

निश्चय करी हुई बातके नाम २-
सिद्धान्त १ राद्धान्त २ ॥

-भ्रान्तिर्मिथ्यामतिर्भ्रमः ॥ ४ ॥

भ्रमके नाम ३-भ्रान्ति १
मिथ्यामति २ भ्रम ३ ॥ ४ ॥

संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमा-

श्रयसंश्रवाः ॥ अङ्गीकाराभ्युपगम-
प्रतिश्रवसमाधयः ॥ ५ ॥

प्रतिज्ञाके नाम १०-संविद् १

आगू २ प्रतिज्ञान ३ नियम ४ आश्रव
५ संश्रव ६ अङ्गीकार ७ अभ्युपगम

८ प्रतिश्रव ९ समाधि १० ॥ ५ ॥

मोक्षे धीर्ज्ञान-

मोक्षमें बुद्धि लगानेका नाम १-
ज्ञान ॥ १ ॥

मन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ।

मोक्षसे अन्यत्र शिल्पविद्या और
शास्त्रमें बुद्धि लगानेका नाम १-
विज्ञान १ ॥

मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिः-
श्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥

मोक्षोऽपवर्गो-

मोक्षके नाम ८ -मुक्ति १ कैवल्य
२ निर्वाण ३ श्रेयसू ४ निःश्रेयसू ५
अमृत ६ ॥ ६ ॥ मोक्ष ७ अपवर्ग ८ ॥

—याज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम् ।

अज्ञानके नाम ३ -अज्ञान १
अविद्या २ अहम्मति ३ ॥

रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शश्च
विषया अमी ॥ ७ ॥

गोचरा इन्द्रियार्थाश्च-

पञ्चविषयोंके नाम ५ -रूप १
शब्द २ गन्ध ३ रस ४ स्पर्श ५ ॥ ७ ॥

इकडे रूपरसादिके नाम ३ -
विषय १ गोचर २ इन्द्रियार्थ ३ ॥

हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।

इन्द्रियके नाम ३ -हृषीक १
विषयि २ इन्द्रिय ३ ॥

कर्मेन्द्रियं तु पादवादि-

कर्मेन्द्रियोंके नाम-गुदा औदि ॥

—मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥

१ पायूपस्थे पाणिपादौ वाक्चेतीन्द्रिय-
संप्रहः । भाषा-पायु १ उपस्थ २
पाणि ३ पाद ४ और वाक् ५ यह पांच
कर्मेन्द्रिय हैं ॥

ज्ञानेन्द्रियोंके नाम-५ मनसू १ नेत्र
२ आदि ॥ ८ ॥

तुवरस्तु कषायोऽस्त्री मधुरो
लवणः कटुः । तिक्तोऽम्लश्च रसाः
पुंसि-

छः रसोंके नाम-तुवर—
कषाय १ मधुर २ लवण ३ कटु ४
तिक्त ५ अम्ल ६ ॥

—तद्रस्तु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥
कषाय आदि रसवाचक शब्द यदि
द्रव्यवाचक होयें तो तीनों लिंगोंमें
होते हैं ॥ ९ ॥

विमर्दोऽथे परिमलो गन्धे जन-
मनेहरे ।

मनुष्योंके मनको हरनेवाले घिसनेसे
उत्पन्नहुए सुगन्धका नाम १ -परिमल १
आमोदः सोऽतिनिर्हारी-
अत्यन्त मनको हरनेवाले सु-
गंधिका नाम १ -आमोद १ ॥

—वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् ॥ १० ॥

यहांसे लेकर "गुणे शुक्लादयः पुंसि"
इससे पहले जो शब्द हैं वह, वाच्यलिंग
अर्थात् विशेष्यलिंग होते हैं ॥ १० ॥

१ मनः कर्णस्तथा नेत्रं रसना च
त्वचा सह । नासिका चेति षड तानि धीन्द्रि-
याणि प्रवक्षते ॥ भाषा-मन १ कर्ण २
नेत्र ३ जिह्वा ४ त्वचा ५ और नासिका
यह ६ ज्ञानेन्द्रिय (धीन्द्रिय) हैं ॥

समाकर्षी तु निर्हारी-

दूरसे ही जिसकी गन्ध आवे उसके
नाम २-समाकर्षिन् १ निर्हारिन् २॥

-सुरभिघ्राणतर्पणः

इष्टगन्धः सुगन्धिः स्या-

अत्युत्तमगन्धके नाम ४-सुरभि १
घ्राणतर्पण २ इष्टगन्ध ३ सुगंधि ४ ॥

दामोदी मुखवासनः॥ ११ ॥

मुखको सुगन्धित करनेवाले ताम्बू-
ल आदिकी गन्धके नाम २-आमो-
दिन् १ मुखवासन २ ॥ ११ ॥

पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो-

दुर्गन्धके नाम २-पूतिगन्धि १
दुर्गन्ध २ ॥

-विस्त्रं स्यादामगन्धि यत् ।

कच्चे मांसादिके गन्धका नाम १-
विस्त्र १ ॥

शुक्लशुभ्रशुचिश्वेतविशदश्येत-

पाण्डुराः ॥ १२ ॥ अवदातः
सितो गारो वलक्षो धवलोऽर्जुनः ।

उज्ज्वलके नाम १३-शुक्ल १ शु-
भ्र २ शुचि ३ श्वेत ४ विशद ५ श्येत
६ पांडुर ७ ॥ १२ ॥ अवदात ८ सित
९ गौर १० वलक्ष ११ धवल
१२ अर्जुन १३ ॥

हरिणः पाण्डुरः पाण्डु-

कुल पीलापन मिले हुए सफेदवर्णके

नाम ३-हरिण १ पांडुर २ पांडु ३ ॥

रीषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥ १३ ॥

किञ्चित् उज्ज्वलका नाम १-
धूसर १ ॥ १३ ॥

कृष्णे नीलासितश्यामकाल-
श्यामलेमचकाः ।

काले वर्णके नाम ७-कृष्ण १
नील २ असित ३ श्याम ४ काल ५
श्यामल ६ मेचक ७ ॥

पीतो गौरो हरिद्राभः-

पीले वर्णके नाम ३-पीत १ गौर २
हरिद्राभ ३ ॥

पालाशो हरितो हरित् ॥ १४ ॥

हरेवर्णके नाम ३-पालाश १ हरित
२ हरित् ३ ॥ १४ ॥

रोहितो लोहितो रक्तः-

लालवर्णके नाम ३-रोहित १
लोहित २ रक्त ३ ॥

शोणः कोकनदच्छविः ।

लाल कमलके समान वर्णके नाम
२-शोण १ कोकनदच्छवि २ ॥

अव्यक्तरागस्त्वरुणः-

थोड़े लालका नाम १-अरुण १ ॥
-श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥

मिले हुए सफेद और लालवर्णका
नाम १—पाटल १ ॥ १५ ॥

श्यावः स्यात्कपिशो—

मिले हुए काले और पीले रंगके
नाम २—श्याव १ कपिश २ ॥

—धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ।

मिले हुए काले और लालवर्णके नाम
३—धूम्र १ धूमल २ कृष्णलोहित ३ ॥

कडारः कपिलः पिङ्गपिशंगौ
कटुपिङ्गलौ ॥ १६ ॥

वानरकेसे रंगके नाम ६—कडार १
कपिल २ पिङ्ग ३ पिशङ्ग ४ कटु ५
पिङ्गल ६ ॥ १६ ॥

चित्रं किमीरकल्माषशबलैताश्च
कर्बुरे ।

चित्रवर्णके नाम ६—चित्र १ किमीर
२ कल्माष ३ शबल ४ एत ५ कर्बुर ६ ॥

गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणि-
लिङ्गास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

गुणवाचक श्रुक् आदि शब्द पुल्लिङ्ग
होते हैं और द्रव्यवाचकशब्द द्रव्यके
अनुसार लिङ्गमें होते हैं ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥

३

अथ शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वा-
ग्वाणी सरस्वती ।

सरस्वतीके नाम ७ ब्राह्मी १
भारती २ भाषा ३ गिर, गिरा ४ वाचू
५ वाणी ६ सरस्वती ७ ॥

व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं
वचनं वचः ॥ १ ॥

बोलनेके नाम ६—व्याहार १
उक्ति २ लपित ३ भाषित ४ वचन ५
वचस् ॥ ६ ॥ १ ॥

अपभ्रंशोऽपशब्दः स्या—

अपभ्रष्ट अर्थात् व्याकरणकी रीतिसे
अशुद्धशब्दका नाम १—अपभ्रंश १ ॥

—च्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ।

व्याकरणशास्त्रानुसार शुद्धशब्दका
नाम १—शब्द १ ॥

तिङ्सुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा
कारकान्विता ॥ २ ॥

तिङन्तसुबन्तके समूह और कारक
युक्त क्रियाका नाम १—वाक्य १ ॥ २ ॥

श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी-
वेदके नाम ४—श्रुति १ वेद २
आम्नाय ३ त्रयी ४ ॥

—धर्मस्तु तद्विधिः ।

वेदमें कही हुई संध्या तर्पण आदि
विधिका नाम १ धर्म १—॥

स्त्रियामृक्सामयजुषी—
वदोंके नाम ३—ऋचू १ यजुष २
सामन् ३ ॥

—इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥
इन्हीं तीनों वेदोंका इकट्ठा नाम १
त्रयी १ ॥ ३ ॥

शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्ग—
वेदके छः अंगोंके नाम ६—शिक्षा
१ कल्प २ व्याकरण ३ निरुक्त ४
ज्योतिष ५ छन्दस् ६ ॥

—मौकारप्रणवौ समौ ।
ओंकारके नाम २—ओंकार १ प्रणव २ ॥

इतिहासः पुरावृत्त—
इतिहासके नाम २—इतिहास १
पुरावृत्त २ ॥

मुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥ ४ ॥
उदात्त अनुदात्त स्वरितका नाम
१—स्वर १ ॥ ४ ॥

आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्क-
विद्यार्थशास्त्रयोः ।
तर्कविद्याका नाम १—आन्वीक्षिकी १
अर्थशास्त्रका नाम १—दण्डनीति १ ॥

आख्यायिकोपलब्धार्था—
जिसका अर्थ जान लिया हो उस
कथाके नाम २—आख्यायिका १
उपलब्धार्था २ ॥

—पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥
पुराणोंके नाम २—पुराण १
पञ्चलक्षण २ ॥ ५ ॥

प्रबन्धकल्पना कथा—
कल्पना करि हुई कदाम्बरी आदि
कथाके नाम २—प्रबन्धकल्पना १
कथा २ ॥

—प्रवहिका प्रहेलिका ।
जिसके सुननेसे मतलब जाना
जाय और विचार करनेसे दूसरा मत-
लब निकले उस (कहानी) के नाम
२—प्रवहिका १ प्रहेलिका २ ॥

—स्मृतिस्तु धर्मसंहिता—
धर्म जनानेको रचना कियेहुये
श्रुतियोंके समूहके नाम २—स्मृति १
धर्मसंहिता २ ॥

—समाहृतिस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥
संग्रहके नाम २—समाहृति १ सं-
ग्रह २ ॥ ६ ॥

समस्या तु समासार्था—
जिसमें कुछ अर्थ पूरा किया जाय
उसके नाम २—समस्या १ समासार्था २ ॥

—किंवदन्ती जनश्रुतिः ।
लोकप्रवाद अर्थात् दुर्ग्रहके नाम २—
किंवदन्ती १ जनश्रुति २ ॥

वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः
स्था—

वार्ताके नाम ४-वार्ता १ प्रवृत्ति
२ वृत्तान्त ३ उदन्त ४ ॥

-दथाह्वयः ॥ ७ ॥

आख्याह्वे अभिधानं च नाम-
धेयं च नाम च ।

नामके नाम ६-आह्वय १ ॥ ७ ॥
आख्या २ आह्वा ३ अभिधान ४
नामधेय ५ नामन् ॥ ६ ॥

ह्यतिराकारणाह्वानं-

पुकारनेके नाम ३-ह्यति १ आका-
रणा २ आह्वान ३ ॥

संहृतिर्वहुभिः कृता ॥ ८ ॥

बहुत जनोकरके पुकारनेका नाम
१-संहृति १ ॥ ८ ॥

विवादो व्यवहारः स्या-

विवादके नाम २-विवाद १ व्यव-
हार २ ॥

-दुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।

वार्ताका प्रारम्भ करनेके नाम १-
उपन्यास १ वाङ्मुख २ ॥

उपोद्धात उदाहारः-

जो बात आगे कही जाय उसके
उपयोगी बातके नाम २-उपोद्धात १
उदाहार २ ॥

-शपनं शपयः पुमान् ॥ ९ ॥

सौगन्ध खानेके नाम २-शपन १
शपय २ ॥ ९ ॥

प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च-

प्रश्नके नाम ३-प्रश्न १ अनुयोग
२ पृच्छा ३ ॥

-प्रतिवाक्योत्तरे समे ।

उत्तरके नाम २-प्रतिवाक्य १
उत्तर २ ॥

मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यान-

झूठे दोष लगानेके नाम २-मिथ्या-
भियोग १ अभ्याख्यान ॥ २ ॥

-मथ मिथ्याभिशंसनम् ॥ १० ॥

अभिशापः-

मदिरादिपान आदिका झूठा दोष
लगानेके नाम २-मिथ्याभिशंसन १
॥ १० ॥ अभिशाप २ ॥

प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ।

अनुरागज शब्दका नाम १-प्रणाद १ ॥

यशः कीर्तिः समज्ञा च-

कीर्तिके नाम ३-यशसू १
कीर्ति २ समज्ञा ३ ॥

स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ११ ॥

स्तुतिके नाम ४-स्तव १ स्तोत्र २
स्तुति ३ नुति ४ ॥ ११ ॥

आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्त-

दोतीनवार कहनेका नाम १-आम्रेडित
-मुच्चैर्घुष्टं तु घोषण १

जोरसे बोलनेके नाम २—उच्चैर्घुष्ट
१ घोषणा २ ॥

काकुः स्त्रियां विकारो यः शो-
कभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥

शोकभयक्रामादियुक्त वचनका नाम
१—काकु १ ॥ १२ ॥

अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवा-
दवत् । उपक्रोशो जुगुप्सा च
कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥

निन्दाके नाम १०—अवर्ण १
आक्षेप २ निर्वाद ३ परीवाद—परिवाद
४ अपवाद ५ उपक्रोश ६ जुगुप्सा ७
कुत्सा ८ निन्दा ९ गर्हण १० ॥ १३ ॥

पारुष्यमतिवादः स्या—

कठोर भाषणके नाम २—पारुष्य १
अतिवाद २ ॥

—हर्त्सनं त्वपकारणीः ।

ललकारनेका नाम १—भर्त्सन १ ॥

यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र
स्यात्परिभाषणम् ॥ १४ ॥

खिजानेका नाम १—परिभाषण १
॥ १४ ॥

तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादा-
क्रोशो मैथुनं प्राति ।

परस्त्री या पुरुषसे मैथुनार्थं वार्त्ता कर-
नेका नाम १—आक्षारणा-आक्षारण १ ॥

स्यादाभाषणमालापः—

सम्बोधनपूर्वक वार्त्ता करनेके नाम

२—आभाषण १ आलाप २ ॥

प्रलापोऽनर्थकं वचः ॥ १५ ॥

अनर्थवचनका नाम १—प्रलाप १ ॥ १५ ॥

अनुलापो मुहुर्भाषा—

बारंवार भाषणके नाम २—अनुलाप
१ मुहुर्भाषा ॥ २ ॥

—विलापः परिदेवनम् ।

रोनेके नाम २—विलाप १ परिदेवन २ ॥

विप्रलापो विरोधोक्तिः—

परस्पर विरुद्ध भाषणके नाम २—
विप्रलाप १ विरोधोक्ति २ ॥

—संलापो भाषणं मिथः ॥ १६ ॥

परस्परयोग्यभाषणका नाम १—
संलाप १ ॥ १६ ॥

सुप्रलापः सुवचन—

सुन्दर वचनके नाम २—सुप्रलाप
१ सुवचन २ ॥

—मपलापस्तु निहवः ।

मुकरजानेके नाम २—अपलाप १
निहव २ ॥

संदेशवाग्वाचिकं स्या—

संदेशके नाम २—सन्देशवाच १
वाचिक २ ॥

—द्वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे ॥ १७ ॥
 रुशती शब्दसे लेकर सम्यक्शब्द-
 पर्यंत जो शब्द हैं वे तीनों लिगोंमें
 होते हैं ॥ १७ ॥
 रुशती वागकल्याणी—
 अमंगलवाक्यका नाम १—रुशती १ ॥
 —स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।
 शुभवाणीका नाम १—कल्या १ ॥
 अत्यर्थमधुरं सान्त्वं—
 क्षतिमिष्ट वचनका नाम १—सान्त्व १ ॥
 —संगतं हृदयंगमम् ॥ १८ ॥
 सम्बद्ध अर्थात् योग्य वचनके नाम
 २—संगत १ हृदयंगम २ ॥ १८ ॥
 निष्ठुरं परुषं—
 कठोरवचनके नाम २—निष्ठुर १ परुष २ ॥
 —ग्राम्यमश्लीलं—
 भाँडआदिके वचनोंके नाम २—
 ग्राम्य १ अश्लील २ ॥
 —सूनुतं प्रिये ।
 सत्ये—
 प्रिय और सत्यवचनका नाम १—
 सूनुत १ ॥
 —ऽथ संकुलक्लिष्टे परस्परपराहते १९
 पूर्वापर विरुद्ध वचनके नाम ३—संकु-
 ल १ क्लिष्ट २ परस्परपराहते ३ ॥ १९ ॥
 लुप्तवर्णपदं अस्तं—
 अवकहे वचनके नाम २—लुप्तव-
 र्णपद १ अस्त २ ॥

—निरस्तं त्वरितोदितम् ।
 जलदी कहे हुए शब्दके नाम २—
 निरस्त १ त्वरितोदित २ ॥
 अम्बूकृतं सनिष्ठीव—
 थूकसहित बोलनेके नाम २—अम्बू-
 कृत १ सनिष्ठीव २ ॥
 —मवद्धं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥
 अर्थन्यूनवचनके नाम २—अवद्ध
 १ अनर्थक २ ॥ २० ॥
 अनक्षरमवाच्यं स्या—
 अकथनयोग्य निन्दायुक्त वचनके
 नाम २—अनक्षर १ अवाच्य २ ॥
 —दाहतं तु मृषार्थकम् ।
 झुठाईका नाम १—आहत १ ॥
 “साल्लुण्ठन तु सात्त्वास—
 हास्यसहितवचनके नाम २ ॥
 सोल्लुण्ठन १ सोत्त्वास २ ॥
 —भणितं रतिकूजितम्” ।
 मैथुनके शब्दके नाम २—भणित
 १ रतिकूजित २ ॥
 अथ म्लिष्टमविस्पष्टं—
 अप्रतीकके नाम २—म्लिष्ट १ अवि-
 स्पष्ट २ ॥
 —वितथं त्वनृतं वचः ॥ २१ ॥
 झूठके नाम २—वितथ १ अनृत २ ॥ २१ ॥
 सत्यं तथ्यमृतं सम्य—

सत्यके नाम ४—सत्य १ तथ्य २
कृत ३ सम्यच् ४ ॥

—गमूनि त्रिषु तद्वति ।

सत्य आदि शब्द द्रव्यवाचक हों
तो तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वान-
रवस्वनाः ॥ २२ ॥ स्वाननिर्घोष-
निर्हादनादनिस्वाननिस्वनाः ।

आरवारावसंरावविरावा—

शब्दके नाम १७—शब्द १ निनाद
२ निनद ३ ध्वनि ४ ध्वान ५ रव ६
स्वन ७ ॥ २२ ॥ स्वान ८ निर्घोष ९
निर्हाद १० नाद ११ निःस्वान १२
निःस्वन १३ आरव १४ आराव १५
संराव १६ विराव १७ ॥

—अथ मर्मरः ॥ २३ ॥

स्वनिते वल्लपणानां—

वल्ल और पत्तोंके शब्दका नाम १—
मर्मर १ ॥ २३ ॥

—भूषणानां च शिञ्जितम् ।

गहनेके खनखनाहटका नाम १—
शिञ्जित १ ॥

निकाणो निकणः काणः कणः
कणनमित्यापि ॥ २४ ॥

वीणादि शब्दोंके नाम ५—निकवाण
१ निकण २ काण ३ कण ४ कणन
५ ॥ २४ ॥

वीणायाः कणिते प्रादेः प्रका-
णप्रकणादयः ।

केवल वीणाके बाजोंके नाम ३—
प्रकाण १ प्रकण २ उपकणन आदि ३ ॥

कोलाहलः कलकल—

कोलाहलके नाम २—कोलाहल १
कलकल २ ॥

—स्तिरश्चां वाशितं रुतम् २५
पक्षियोंके शब्दके नाम २—वाशित
१ रुत २ ॥ २५ ॥

स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने—

आवाजकी आवाज अर्थात् गूँजनेके
नाम २—प्रतिश्रुत् १ प्रतिध्वान २ ॥

—गीतं गानमिमे समे ।

गानेके नाम २—गीत १ गान २ ॥
इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

अथ नाट्यवर्गः ७.

निषादर्वभगान्धारषड्जमध्य-

१ षड्जं रौति मयूरस्तु गावो नर्दान्त
चर्षभम् । अजाविकौ च गांधारं क्रौंचो नद-
ति मध्यमम् ॥ १ ॥ पुष्पसाधारणे काले
कोकिलो रौति पञ्चमम् । अश्वस्तु धैवतं
रौति निषादं रौति कुज्वरः ॥ २ ॥ भाषा-
मोर षड्ज शब्दको बोलता है । बैल कृषभ
शब्दको बोलता है । भेड़ बकरी गान्धार
स्वरको बोलते हैं । कौश पक्षी मध्यम स्वरको
बोलता है । घोड़ा धैवत स्वरको बोलता
है । कोकिल वसन्त कालमें पञ्चम स्वरको
बोलता है । हस्ती निषाद स्वरको बोलता है ।

मधैवताः ॥ पञ्चमश्चेत्यमी सप्त त-
न्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥ १ ॥

वीणासे वा कंठसे उत्पन्न होनेवाले
स्वरोके नाम ७—निषाद १ ऋषभ २
गान्धार ३ षड्ज ४ मध्यम ५ धैवत ६
पञ्चम ७ ॥ १ ॥

काकली तु कले सूक्ष्मे-
सूक्ष्मशब्दका नाम १—काकली १
—ध्वनौ तु मधुरास्फुटे—

कलो—

मीठी और अस्फुट आवाजका नाम
१—कल १ ॥

—मन्द्रस्तु गम्भीरे—
गम्भीर शब्दका नाम १—मन्द्र १ ॥

—तारोऽत्युच्चै-

अत्युच्च शब्दका नाम १—तार १ ॥

—स्त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥

कल आदि तीन शब्द तीनों लिंगों-
में होते हैं ॥ २ ॥

समान्वितलयस्त्वेकतालो—

वाद्यगानादिके एकसंग तालस्वरका
नाम १—एकताल १ ॥

—वीणा तु वल्लकी ।

विपञ्ची—

वीणाके नाम ३—वीणा १ वल्लकी
२ विपञ्ची ३ ॥

—सा तु तन्त्रीभिः सप्ताभिः परि-
वादिनी ॥ ३ ॥

सात तारोंसे बोलनेवाली वीणाका
नाम १—परिवादिनी १ ॥ ३ ॥

ततं वीणादिकं वाद्य—

वीणादिक बाजेका नाम १—तत १ ॥

—मानद्वं मुरजादिकम् ।

मृदंगआदि बाजेका नाम १—आनद्व १ ॥

वंशादिकं तु सुषिरं—

वंशी आदि बाजेका नाम १—सुषिर १ ॥

—कांस्यतालादिकं घनम् ॥ ४ ॥

झांझ मंजीरा आदि बाजेका नाम
१—घन १ ॥ ४ ॥

चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्य-
नामकम् ।

तत आदि चारों बाजोंका इकट्ठा
नाम ३—वाद्य १ वादित्र २ आतोद्य ३ ॥

मृदङ्गा मुरजा—

मृदंगके नाम २—मृदंग १ मुरज २

—भेदास्त्वङ्गचालिङ्गयोर्ध्वका-

स्त्रयः ॥ ५

मृदंगके भेद ३—अङ्गय १ आ-
लिङ्गय २ ऊर्ध्वक ३ ॥ ५ ॥

स्याद्यशः पटहो ढक्का—

नगाडिके नाम २—यशःपटह १
डक्का २ ॥

भेर्यामानकदुन्दुभी ।

धौसा नफीरि आदिके नाम ३—
भेरी १ आनक २ दुन्दुभि ३ ॥

॥ आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्—
ढोलके नाम २—आनक १ पटहर २ ॥

—कोणो वीणादिवादनम् ॥ ६ ॥
जिससे वीणादि बजाते हैं उस नक्खी
आदिका नाम १—कोण १ ॥ ६ ॥

वीणादण्डः प्रवालः स्या—
वीणाकी डंडीका नाम १—प्रवाल १
—त्कुम्भस्तु प्रसेवकः ।

वीणाके नीचे जो गोल गोल
चर्मसे मढा हुआ होता है उसके नाम
२—कुम्भ १ प्रसेवक २ ॥

कोलम्बकस्तु कायोऽस्या—
वीणाके सर्वांगका नाम १—कोलम्बक १
—उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥

वीणामें जहां तार बांधे जाते हैं उस-
के नाम २—उपनाह १ निबन्धन २ ॥ ७ ॥

वाद्यप्रभेदा उमरुमड्डुडिण्डिम-
झञ्जराः । मर्दलः पणवोऽन्ये च-

उमरुका नाम १—उमरु १ ॥ बडे
उमरुका नाम १—मड्डु १ ॥ डिण्डि-

मका नाम १—डिण्डिम १ ॥ झांझका
नाम १—झञ्जर १ ॥ तथा मर्दल

पणव आदि और भी बाजे हैं १ ॥

—नर्तकीलासिके समे ॥ ८ ॥

नाचनेवालीके नाम २—नर्तकी १
लासिका २ ॥ ८ ॥

विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो
घनं क्रमात् ।

धीरे धीरे नाचका नाम १—तत्त्व
१ ॥ शीघ्र नाचका नाम १—ओघ
१ ॥ मध्यम नाचका नाम १—घन ॥

तालः कालक्रियामानं—
समय और क्रियाके प्रमाणका
नाम १—ताल १ ॥

—लयः साम्य—
बाजा और नाचका एक संग ताल
छूटनेका नाम १—लय १ ॥

—मथास्त्रियाम् ॥ ९ ॥

भाषा—इससे आगे कहे ये शब्द
स्त्रीलिंगवाची नहीं अर्थात् पुल्लिंग
नपुंसकलिंगवाची होते हैं ॥ ९ ॥
ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं
च नर्तने ।

नाचक नाम ६—तांडव १ नटन
२ नाट्य ३ लास्य ४ नृत्य ५ नर्तन ६ ॥
तौर्थत्रिकं नृत्यगीतवाद्यं नाट्य-
मिदं त्रयम् ॥ १० ॥

नाच गीत बाजा इन तीनके इकट्ठे
नाम २—तौर्यत्रिक १ नाट्य २ ॥ १० ॥

भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्चेति
नर्तके । स्त्रीविषधारी पुरुषो—

स्त्रीविषधारी नाचनेवाले पुरुषके नाम—
३—अकुंस १ भ्रुकुंस २ भ्रुकुंस ३ ॥

नाट्योक्तौ गणिकाज्जुका ॥ ११ ॥

केवल नाटकमें नाचने गानेवाली
वैश्याका नाम १—अज्जुका १ ॥ ११ ॥

भगिनीपतिरावुत्तो—

बहनोईका नाम १—आवुत्त १ ॥

—भावो विद्वा—

विद्वानका नाम १—भाव १ ॥

—नथावुकः ।

जनको—

पिताका नाम १—आवुक १ ॥

—युवराजस्तु कुमारो

भर्तृदारकः ॥ १२ ॥

युवराजके नाम २—कुमार १ भर्तृ-

दारक २ ॥ १२ ॥

राजा भट्टारको देव—

राजाके नाम २—भट्टारक १ देव २ ॥

—स्वर्नुता भर्तृदारिका ॥

राजकन्याका नाम १—भर्तृदारिका १ ॥

देवी कृताभिषेकाया—

अभिषेक की हुई रानीका नाम १—

देवी १ ॥

—मितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥

अन्य राजस्त्रियोंका नाम १—

भट्टिनी १ ॥ १३ ॥

अब्रह्मण्यमवद्योक्तौ—

अवध्य वचनका नाम १—अब्र-

ह्मण्य १ ॥

—राजश्यालस्तु राष्ट्रियः ।

राजाके शालेका नाम १—राष्ट्रिय १ ॥

अम्बा माता—

माताके नाम २—अम्बा १ मातृ २ ॥

—ऽथ बाला स्याद्दासू—

कुमारीके नाम २—बाला १ दासू २ ॥

—रार्यस्तु मारिषः ॥ १४ ॥

श्रेष्ठके नाम २—रार्य १ मारिष २ ॥ १४ ॥

अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा—

जेठी बहनका नाम १—अत्तिका १ ॥

—निष्ठानिर्वहणे समे ।

नाटककी संधियोंके नाम २—निष्ठा

१ निर्वहण २ ॥

हण्डे हज्जे हलाहाने नीचां चे-

टीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥

नीचस्त्रीके पुकारनेमें—हण्डे १ ॥

चेटीके पुकारनेमें—हज्जे १ ॥ सखीक

पुकारनेमें—हला १ ॥ १५ ॥

अंगहारों अंगविक्षेपो—

लचकनेके नाम १—अंगहार १

अंगविक्षेप २ ॥

—व्यञ्जकाभिनयौ समौ ।

भाव वतानेके नाम २—व्यञ्जक १
अभिनय २ ॥

निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रि-
ष्वाङ्गिकसात्त्विके ॥ १६ ॥

भौह मटकानेका नाम १—आंगिक
१॥ अन्तःकरणके भावका नाम १—
सात्त्विक १ ॥ १६ ॥

शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभया-
नकाः॥वीभत्सरौद्रौ च रसाः—

दश रसोंके नाम १०—शृङ्गार १
वीर २ करुण ३ अद्भुत ४ हास्य ५
भयानक ६ वीभत्स ७ रौद्र ८
(शांति ९ वात्सल्य १०)

—शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः ॥ १७ ॥

शृङ्गारके नाम ३—शृङ्गार १
शुचि २ उज्ज्वल ३ ॥ १७ ॥

उत्साहवर्धनो वीरः—

वीररसके नाम २—उत्साहवर्धन १
वीर २ ॥

—कारुण्यं करुणा घृणा ।

कृपा दयानुकम्पा स्यादनुकोशो-

करुणा रसके नाम ७—कारुण्य १
करुणा २ घृणा ३ कृपा ४ दया ५
अनुकम्पा ६ अनुकोश ७ ॥

—ऽप्यथो हसः ॥ १८ ॥

हासो हास्यं च—

हास्यरसके नाम ३—हस १ ॥ १८ ॥
हास २ हास्य ३ ॥

—वीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम् ।
वीभत्सरसके नाम २—वीभत्स १
विकृत २ ॥

विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्र-
अद्भुतरसके नाम ४—अद्भुत १
आश्चर्य २ विस्मय ३ चित्र ४ ॥

—मप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥

दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं
भयानकम् । भयंकरं प्रतिभयं—
भयानक रसके नाम ९—भैरव १
॥ १९ ॥ दारुण २ भीषण ३ भीष्म ४
घोर ५ भीम ६ भयानक ७ भयंकर ८
प्रतिभय ९ ॥

—रौद्रं तूय—

रौद्ररसके नाम २—रौद्र १ उग्र २ ॥

—ममी त्रिषु ॥ २० ॥

चतुर्दश—

अद्भुतादि चौदह शब्द द्रव्यवाचक
हों तो विशेष्यनिर्गलिंग जानना ॥ २० ॥

—दस्त्रासो भीतिर्भीः साध्वसं
भयम् ।

भयके नाम ६—दर १ त्रास २
भीति ३ भी ४ साध्वस ५ भय ६ ॥

विकारो मानसो भावो—

मनके विकारका नाम १—भाव १ ॥

—ऽनुभावो भावबोधकः ॥ २१ ॥

भावप्रकाशकका नाम १—अनु-
भाव १ ॥ २१ ॥

गर्वोऽभिमानोऽहंकारो—

अहंकारके नाम ३—गर्व १ अभि-
मान २ अहंकार ३ ॥

—मानश्चित्तसमुन्नतिः ।

बडप्पनका नाम १—मान १ ॥

अनादरः परिभवः परीभावस्तिर-
स्क्रिया ॥ २२ ॥ रीढावमानना-
वज्ञावेहेलनमसूक्ष्णम् ।

निरादरके नाम ९—अनादर १ परि-
भव २ परीभाव ३ तिरस्क्रिया ४
॥ २२ ॥ रीढा ५ अवमानना ६ अव-
ज्ञा ७ अवहेलन ८ असूक्ष्ण ९ ॥

मन्दाक्षं द्वीक्ष्वा व्रीडा लज्जा—
लज्जाके नाम ५—मन्दाक्ष १ द्वी २
त्रपा ३ व्रीडा ४ लज्जा ५ ॥

—सापत्रपान्यतः ॥ २३ ॥

दूसरेसे लजानेके नाम १—अप-
त्रपा १ ॥ २३ ॥

क्षान्तिस्तितिक्षा—

क्षमाके नाम २—क्षान्ति १ तिति-
क्षा २ ॥

—ऽभिध्यातु परस्य विषये स्पृहा ।

परधन लेनेकी इच्छाका नाम १—
अभिध्या १ ॥

अक्षान्तिरिष्या—

ईर्ष्याके नाम २—अक्षान्ति १ ईर्ष्या २ ॥

—ऽसूया तु दोषारोपो गुणे-
ष्वपि ॥ २४ ॥

पराये गुणोंका दोष प्रसिद्ध करनेका
नाम १—असूया १ ॥ २४ ॥

वैरं विरोधो विद्वेषो—

वैरके नाम ३—वैर १ विरोध २
विद्वेष ३ ॥

मन्युशोकौ तु शुक् स्त्रियाम् ।

शोकके नाम ३—मन्यु १ शोक २
शुक् ३ ॥

पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार
इत्यापि ॥ २५ ॥

पछितानेके नाम ३—पश्चात्ताप १
अनुताप २ विप्रतीसार ३ ॥ २५ ॥

कोपक्रोधाभर्षरोषप्रतिघा रुद्रक्रु-
धौ स्त्रियौ ।

क्रोधके नाम ७—कोप १ क्रोध २
अमर्ष ३ रोष ४ प्रतिघा ५ रुद्र ६ क्रुध ७ ॥

शुचौ तु चरिते शील—

शुद्ध आचरणका नाम १—शील १॥

—मुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ २६॥

सिरडीपनके नाम २—उन्माद १

चित्तविभ्रम २ ॥ २६ ॥

प्रेमा ना प्रियता हार्द प्रेम स्नेहो-

प्रेमके नाम ५—प्रेमन् १ प्रियता

२ हार्द ३ प्रेमन् ४ स्नेह ५ ॥

—उथ दोहदम् ।

इच्छा कांक्षा स्पृहा वृद्धाञ्छा

लिप्सा मनोरथः ॥ २७ ॥

कामोऽभिलाषस्तर्षश्च—

इच्छाके नाम १२—दोहद १ इच्छा

१ कांक्षा ३ स्पृहा ४ ईहा ५ वृष् ६

वाञ्छा ७ लिप्सा ८ मनोरथ ९ ॥ २७ ॥

काम १० अभिलाष ११ तर्ष १२ ॥

—सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः ।

बडी इच्छाका नाम १—लालसा १॥

उपाधिर्ना धर्मचिन्ता—

धर्मचिन्ताके नाम २—उपाधि १

धर्मचिन्ता २ ॥

—पुंस्याधिर्मानसी व्यथा ॥ २८ ॥

मनकी पीडाके नाम २—आधि १

मानसी व्यथा २ ॥ २८ ॥

स्याच्चिन्तास्मृतिराध्यान—

स्मरणके नाम ३—चिन्ता १ स्मृति २

आध्यान ३ ॥

—मुत्कण्ठोत्कलिके समे ।

कामादिसे उत्पन्न स्मृतिके नाम २—

उत्कण्ठा १ उत्कलिका २ ॥

उत्साहोऽध्यवसायः स्यात्—

उत्साहके नाम २—उत्साह १

अध्यवसाय २ ॥

—स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९ ॥

असाध्य साधनमें उत्साहका नाम—

१ वीर्य १ ॥ २९ ॥

कपटोऽस्त्री व्याजदंभोपधयश्छ-

न्नकैतवे ।

कुसृतिर्निकृतिः-

शाठ्यं—

कपटके नाम ९—कपट १ व्याज

२ दम्भ ३ उपधि ४ छद्मन् ५ कैतव

६ कुसृति ७ निकृति ८ शाठ्य ९ ॥

—प्रमादोऽनवधानता ॥ ३० ॥

असावधानताके नाम २—प्रमाद १

अनवधानता २ ॥ ३० ॥

कौतूहलं कौतुकं च कुतुक च

कुतूहलम् ।

तमासके नाम ४—कौतूहल १

कौतुक २ कुतुक ३ कुतूहल ४ ॥

स्त्रीणां विलासविब्वोकविभ्र-
मा ललितं तथा ॥ ३१ ॥ हेलालीले-
त्यमी हावाः क्रियाः शृंगारभा-
वजाः ।

शृङ्गार और भावसे उत्पन्न होनेवाले
स्त्रियोंके विलासके नाम ६—विलास १
विब्वोक २ विभ्रम ३ ललित ४ ॥ ३१ ॥
हेला ५ लीला ६ ॥

द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा
खेला च नर्म च ॥ ३२ ॥

हँसीकरनेके नाम ६—द्रव १
केलि २ परीहास ३ क्रीडा ४ खेला ५
नर्मन् ६ ॥ ३२ ॥

व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च—

बहाना करनेके नाम ३—व्याज १
अपदेश २ लक्ष्य ३ ॥

—क्रीडा खेला च कूर्दनम् ।
बालकोंके खेलके नाम ३—क्रीडा १
खेला २ कूर्दन ३ ॥

धर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्—
गर्मीके नाम ३—धर्म १ निदाघ २
स्वेद ३ ॥

—प्रलया नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥
बेहोशीके नाम २—प्रलय १ नष्ट-
चेष्टता २ ॥ ३३ ॥

अवाहित्याऽऽकारमुत्तिः—

शोकमें सूरत छिपानेके नाम २—
अवाहित्या १ आकारमुत्ति २ ॥

—समौ संवेगसंभ्रमौ ।

हर्ष आदिके कारण शीघ्र कार्य
करनेके नाम २—संवेग १ संभ्रम २ ॥

स्यादाच्छुरितकंहासःसोत्प्रासः—
किसीको खिजानेके लिये हँसी
करनेका नाम १—आच्छुरितक १ ॥

—स मनाक् स्मितम् ॥ ३४ ॥
मुस्करानेका नाम १—स्मित १ ॥ ३४ ॥

मध्यमः स्याद्विहासतं—

मध्यम हास्यका नाम—१ विहासित १ ।
रोमाञ्चो रोमहर्षणम् ।

रोमोंके खडेहोनेके नाम २—रोमाञ्च १
रोमहर्षण २ ॥

क्रन्दितं रुदितं कुष्टं—

रोनेके नाम ३—क्रन्दित १ रुदित
२ कुष्ट ३ ॥

—जृम्भस्तु त्रिषु जृम्भणम् ॥ ३५ ॥

जम्भाई लेनेके नाम २—जृम्भ १
जृम्भण २ ॥ ३५ ॥

—विप्रलम्भो विसंवादो—

स्वीकार करके कार्यको न करनेके
नाम २—विप्रलम्भ १ विसंवाद २ ॥

—रिङ्गणं स्वलनं समौ ।

धर्मसे चलायमान होनेके अथवा
 बालकोंके घुटुओंसे चलनेके नाम २—
 रिङ्गण १ स्खलन २ ॥
 स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः
 संवेश इत्यपि ॥ ३६ ॥
 शयन करनेके नाम ५—निद्रा १
 शयन २ स्वाप ३ स्वप्न ४ संवेश ५ ॥ ३६ ॥
 तन्द्री प्रमीला—
 ओषनेके नाम २—तन्द्री १ प्रमीला २
 —भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिःस्त्रियाम् ।
 क्रोधसहित मौह चढानेके नाम ३—
 भ्रुकुटि १ भ्रुकुटि २ भ्रुकुटि ३ ॥
 अदृष्टिः स्यादसौम्येक्षिण -
 —क्रूरदृष्टिका नाम १—अदृष्टि १ ॥
 —संसिद्धिप्रकृती त्विमे ॥ ३७ ॥
 स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चा—
 स्वभावके नाम ५—संसिद्धि १ प्रकृति
 २ ॥ ३७ ॥ स्वरूप ३ स्वभाव ४ निसर्ग ५
 —ऽथ वेपथुः ।
 कम्पो—
 कांपने वा म २—वेपथु १ कम्प २ ॥
 —ऽथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव
 उत्सवः ॥ ३८ ॥
 उत्सवके नाम ५—क्षण १ उद्धर्ष २
 मह ३ उद्धव ४ उत्सव ५ ॥ ३८ ॥
 इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

अथ पातालभोगिवर्गः ८
 अधोभुवनपातालं बलिसन्न रसा—
 तलम् । नागलोको—
 पातालके नाम ५—अधोभुवन १ पाता-
 ल २ बलिसन्न ३ रसातल ४ नागलोको ५ ॥
 —ऽथ कुहंरसुषिरं विवरं बिल—
 म् ॥ १ ॥ छिद्रं निर्व्यथनं राक
 रन्ध्रं श्वभ्रं वषा शुषिः ।
 छदक नाम १ १—कुहर १ सुषिर २
 विवर ३ बिल ४ ॥ १ ॥ छिद्र ५ निर्व्यथन ६
 शोक ७ रन्ध्र ८ श्वभ्र ९ वषा १० शुषि ११ ।
 गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे—
 पृथ्वीके गडहेके नाम २—गर्त १
 अवट २ ॥
 —सरन्ध्रे सुषिरं त्रिषु ॥ २ ॥
 छेदयुक्त वस्तुका नाम १—सुषिर
 १ ॥ २ ॥
 अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं
 तिमिरं तमः ।
 अन्धकारक नाम ५—अधकार १
 ध्वान्त २ तमिस्र ३ तिमिर ४ तमसः ५ ॥
 ध्वान्ते गाढेऽन्धतमस—
 अत्यन्त अधकारका नाम १—अन्ध-
 तमस २ ॥
 —क्षीणेऽन्धतमस-

थोड़ी अन्धियारीका नाम १—
अवतमस १ ॥

—तमः ॥ ३ ॥

विष्वक्संतमसं—

सब ओर फैले हुए अन्धकारका
नाम १—सन्तमस १ ॥ ३ ॥

—नागाः काद्रवेया—

फन और पूंछवाले मनुष्याकार
सर्पोंके नाम २—नाग १ काद्रवेय २ ॥

—स्तदीश्वरः । शेषोऽनन्तो—
शेषनागके नाम २—शेष १ अनन्त २ ॥

—वासुकिस्तु सर्पराजो—

सर्पराजके नाम २—वासुकि १
सर्पराज २ ॥

—ऽथ गोमसे ॥ ४ ॥

तिलित्सः स्या—

गोकै समान नासिकावाले सर्पके
नाम २ ॥ गोमस १ ॥ ४ ॥
तिलित्स २ ॥

—दजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ।

अजगरके नाम ३—अजगर १
शयु २ वाहस ३ ॥

अलगर्दो जलव्यालः—

पानीके सर्पके नाम २—अलगर्द
१ जलव्याल २ ॥

समौ राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥

द्विमुही सर्पके नाम २—राजिल १ ॥
डुण्डुभ २ ॥ ५ ॥

मालुधानो मातुलाहि—

चीतेसर्पके नाम २—मालुधान
१ मातुलाहि २ ॥

—निर्मुक्तो मुक्तकंचुकः ।

कचुलीके छोड़ेहुए सब सर्पोंके
नाम २—निर्मुक्त १ मुक्तकंचुक २ ॥

सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोऽहि-
र्भुजंगमः ॥ ६ ॥ आशीविषो विष-
धरश्चक्री व्यालः सरीसृपः ।
कुण्डली गूढपाच्चक्षुःश्रवाः काको-
दरः फणी ॥ ७ ॥ दर्वीकरो
दीर्घपृष्ठो दन्दशूको विलेशयः ॥
उरगः पन्नगो भोगी जिह्वगः
पवनाशनः ॥ ८ ॥

सर्पके नाम २५—सर्प १ पृदाकु २
भुजग ३ भुजंग ४ अहि ५ भुजंगम ६
॥ ६ ॥ आशीविष ७ विषधर ८ चक्रिन्
९ व्याल १० सरीसृप ११ कुण्डलिन् १२
गूढपाद १३ चक्षुःश्रवस् १४ काकोदर
१५ फणिन् १६ ॥ ७ ॥ दर्वीकर १७
दीर्घपृष्ठ १८ दन्दशूक १९ विलेशय
२० उरग २१ पन्नग २२ भोगिन्
२३ जिह्वग २४ पवनाशन २५ ॥ ८ ॥

त्रिष्वोदथं विषास्थ्याद—

सर्पके विष और हड्डी आदिका
नाम १—आहेय १ ॥

—स्फटायां तु फणा द्वयोः ।

सर्पके फनके नाम २—स्फटा १
फणा २ ॥

समौ कंचुकनिर्मोकौ—

कचुलीके नाम २—कंचुक १
निर्मोक २ ॥

—क्ष्वेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥

विषके नाम ३—क्ष्वेड १ गरल
२ विष ३ ॥ ९ ॥

पुसि ह्रीं च काकोलकालकूटह-
लाहलाः । सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो
ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥ १० ॥
दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा
अभी नव ।

विषभेद ९—काकोल १ काल-
कूट २ हलाहल ३ सौराष्ट्रिक ४ शौक्लि-
केय ५ ब्रह्मपुत्र ६ प्रदीपन ७ ॥ १० ॥
दारद ८ वत्सनाभ ११ ॥ ९ ॥

विषवैद्यो जाङ्गुलिको—

सर्पके विषको दूर करनेकी विद्या
जाननेवालेके नाम २—विषवैद्य १
जाङ्गुलिक ११ ॥ २ ॥

—व्यालग्राह्यहितुण्डिकः ॥ ११ ॥

सर्प पकडनेवालेके नाम २—व्याल
ग्राह्य १ अहितुण्डिक २ ॥ ११ ॥
इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥

अथ नरकवर्गः ९.

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो
दुर्गतिः स्त्रियाम् ।

नरकके नाम ४—नारक १
नरक २ निरय ३ दुर्गति ४ ॥

तद्भेदास्तपनावीचिमहारौरवरौ-
रवाः ॥ १ ॥ संहारः कालसूत्रं
चेत्याद्याः—

नरकोंकी जातिके भेद — तपन १
अवीचि २ महारौरव ३ रौरव ४
॥ १ ॥ संहार ५ कालसूत्र ६ आदि ॥

—सत्त्वास्तु नारकाः ।

प्रेता—

नरकनिवासियाके नाम २—
नारक १ प्रेत २ ॥

—वैतरणीसिंधुः—

प्रेतोंकी नदीका नाम १—वैतरणी १ ॥

—स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः ॥ २ ॥

नारककी अशोभाका नाम २—
अलक्ष्मी १ निर्ऋति २ ॥ २ ॥

विष्टिराजूः—

नरकमें जबरदस्ती ढकेलनेके नाम
२-विष्टि १ आजू २ ॥

—कारणा तु यातना तीव्रवेदना
नरककी पीडाके नाम ३-कारणा
१ यातना २ तीव्रवेदना ३ ॥

पीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्यं
प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥ स्यात्कष्टं
कृच्छ्रमाभीलं—

पीडाके नाम ९-पीडा १ बाधा
२ व्यथा ३ दुःख ४ आमनस्य ५
प्रसूतिज ६ ॥ ३ ॥ कष्ट ७ कृच्छ्र ८
आभील ९ ॥

—त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत् ॥४॥

इन शब्दोंमें जो द्रव्यवाचक हों
वह तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ४ ॥

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

अथ वारिवर्गः १०.

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः
सारित्पतिः । उदन्वानुदधिः
सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः ॥ १ ॥
रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपां-
पतिः ।

समुद्रके नाम १५-समुद्र १ अब्धि
२ अकूपार ३ पारावार ४ सारित्पति
५ उदन्वत् ६ उदधि ७ सिन्धु ८
सरस्वत् ९ सागर १० अर्णव—

११॥१॥रत्नाकर १२ जलनिधि १३

यादःपति १४ अपाम्पति १५ ॥

तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणो-
दस्तथापरे ॥ २ ॥

समुद्रके भेद ७-क्षीरोद १
लवणोद २ (इक्षुरसोद ३ सुरोद ४ दधि-
मण्डोद ५ स्वादूद ६ वृतोद ७) ॥२॥

आपः स्त्री भूमि वारवारि सलिलं
कमलं जलम् । पयः कीलालम-
मृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥
कवन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्व-
तोमुखम् । अम्भोऽर्णस्तोयपानी-
यनीरक्षीराम्बु शम्बरम् ॥ ४ ॥

मेघपुष्पं घनरस—

जलके नाम १७-अप् १ वार
२ वारि ३ सलिल ४ कमल ५ जल
६ पयस् ७ कीलाल ८ अमृत ९
जीवन १० भुवन ११ वन १२
॥ ३ ॥ कवन्ध १३ उदक १४ पाथस्
१५ पुष्कर १६ सर्वतोमुख १७ अम्भस्
१८ अर्णस् १९ तोय २० पानीय
२१ नीर २२ क्षीर २३ अम्बु २४
शम्बर २५ ॥ ४ ॥ मेघपुष्प २६
घनरस २७ ॥

—स्त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ।

जलविकारके नाम २-आप्य १
अम्मय २ ॥

भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रियां
वीचि—

जलकी तरंग^{के} नाम ४—भंग १
तरंग २ ऊर्मि ३ वीचि ४ ॥

—रथोर्मिषु ॥ ५ ॥

महत्सूलोलकलोलै—

बडीतरंगके नाम २—॥ ५ ॥
उल्लोल १ कल्लोल २ ॥

—स्यादावर्त्तोऽम्भसां भ्रमः ।

जलके भ्रनका नाम १—आवर्त्त १ ॥

पृषन्ति विन्दुपृषताः पुमांसो
विपुषः स्त्रियाम् ॥ ६ ॥

विन्दुआक नाम ४—पृषत् १
विन्दु २ पृषत ३ विपुष् ४ ॥ ६ ॥

चक्राणि पुटभेदाः स्यु—

भमर पडकर जलके नीचेको जानेके
नाम २—चक्र १ पुटभेद २ ॥

—भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ।

जलके निकलनेके जालके नाम
२—भ्रम १ जलनिर्गम २ ॥

कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च
तटं त्रिषु ॥ ७ ॥

नदीके किनारेके नाम ५—कूल
१ रोधस् २ तीर ३ प्रतीर ४
तट ५ ॥ ७ ॥

पारावारे परार्वाची तीरे—

उस पारका नाम १—पार १ ॥

इस पारका नाम १—अवार १ ॥

—पात्रं तदन्तरम् ।

नदीके पाटका नाम १—पात्र १ ॥

द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्त—
वारीणस्तटम् ॥ ८ ॥

बेटके नाम २—द्वीप १ अन्त-
रीप २ ॥ ८ ॥

—तोयोत्थितं तत्पुलिनं—

छडावेका नाम १ ॥ पुलिन १ ॥

—सैकतं सिकतामयम् ।

वाल्काधिकस्थानके नाम २—
सैकत १ सिकतामय २ ॥

निषद्वरस्तु जम्बालः पङ्कोऽस्त्री
शादकदर्मौ ॥ ९ ॥

बोदा (कींच) के नाम ५—
निषद्वर १ जम्बाल २ पङ्क ३ शाद
४ कर्दम ५ ॥ ९ ॥

जलोच्छ्वासाः परीवाहाः—

उफलानेके नाम २—जलोच्छ्वास
१ परीवाह २ ॥

—कूपकास्तु विदारकाः ।

चूहा (सुखी नदीके गडहे) के
नाम २—कूपक १ विदारक २ ॥

नाव्यं त्रिलिङ्गं नौतार्यं—

नौकामें उतरनेके योग्य जलका
नाम १—नाव्य १ ॥

स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥ १० ॥

नावके नाम ३-नौ १ तरणि २
तरि ३ ॥ १० ॥

उडुपं तु प्लवः कोलः-

घनईके नाम ३-उडुप १ प्लव २
कोल ३ ॥

-स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः ।

स्रोतका नाम १-स्रोतसू १॥

आतरस्तरपण्यं स्या-

उतराईके नाम २-आतर १
तरपण्य २ ॥

-द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥

पत्थर वा काष्ठनिर्मित नौकाके
खडीके नाम २-द्रोणी १ काष्ठाम्बु-
वाहिनी २ ॥ ११ ॥

सांयात्रिकः पोतवणिक्-

नाव लादनेवाले उद्यमीके नाम २-
सांयात्रिक १ पोतवणिज् २ ॥

-कर्णधारस्तु नाविकः ।

खेवा लगानेवालेके नाम २-कर्ण-
धार १ नाविक २ ॥

नियामकाः पोतवाहाः-

जो नौकाके पीछे खडा हुआ लकडी
धुमाया करता है उसके नाम २-निया-
मक १ पोतवाह २ ॥

-कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥

जिस खूँटेमें नौका बांधी जाती है

उसके नाम २-कूपक १ गुणवृ-
क्षक २ ॥ १२ ॥

नौकादण्डः क्षेपणी स्या-

पाता (नौकाके दोनों पसवाडोंमें
बँधे हुए चलानेके काष्ठ) के नाम-
नौकादण्ड १ क्षेपणी २॥

-दरित्रं केनिपातकः ।

करिया (नौकाकी पीठमें लगे हुए
चलानेके काठ) के नाम २- अरित्र
१ केनिपातक २ ॥

अग्निः स्त्री काष्ठकुदालः-

नौका साफ करनेके कुदालके नाम
२- अग्नि १ काष्ठकुदाल २ ॥

सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥

जिससे नावका जल उलीचा जाता
है उसके नाम २-सेकपात्र १ सेचन
२ ॥ १३ ॥

क्रीवेऽर्धनावं नावोऽर्धे-

आधी नावका नाम- अर्धनाव १॥

-ऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ।

जो नावलायक जल न हो उसका
नाम १- अतिनु १ ॥

त्रिष्वगाधात्-

अगाध शब्दपर्यंत जितने शब्द हैं
तीनों लिंगोंमें चलते हैं ॥

—प्रसन्नोऽच्छः—

निर्मल जलके नाम २— प्रसन्न १
अच्छ २ ॥

—कलुषोऽनच्छ आविलः ॥१४॥

मैले जलके नाम ३ — कलुष १
अनच्छ २ अविल ३ ॥ १४ ॥

निम्न गभीरं गम्भीर—

गहरे जलके नाम ३—निम्न १
गभीर २ गंभीर ३ ॥

—मुत्तानं तद्विपर्यये ।

थाह जलका नाम १—उत्तान १ ॥

अगाधमतलस्पर्श—

अथाह जलके नाम २—अगाध १
अतलस्पर्श २ ॥

—कैवर्ते दाशधिवरौ ॥ १५ ॥

मछाहके नाम ३—कैवर्त १ दाश
२ धीवर ३ ॥ १५ ॥

आनायः पुंसि जालं स्या—

जालके नाम २—आनाय १ जाल २ ॥

—च्छणसूत्रं पवित्रकम् ।

शणसूत्र जालके नाम २—शण-
सूत्र १ पवित्रक २ ॥

मत्स्याधानी कुवेणी स्या—

जिसमें मछली धरीं जायँ उसके
नाम २—मत्स्याधानी १ कुवेणी २ ॥

—द्वडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥

मछली पकडनेके कांटेके नाम २—

द्वडिश १ मत्स्यवेधन २ ॥ १६ ॥

पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसा-

रिणोऽण्डजः । विसारः शकुली चा-

मछलीके नाम ८—पृथुरोमन् १

झष २ मत्स्य ३ मीन ४ वैसारिण ५

अण्डज ६ विसार ७ शकुलिन् ८ ॥

—ऽथ गडकः शकुलार्भकः ॥ १७ ॥

मछलीके बच्चोंके नाम २—गडक १

शकुलार्भक २ ॥ १७ ॥

सहस्रदंष्ट्रः पाठीनः—

पन्हा मछलीके नाम २—सहस्रदंष्ट्र

१ पाठीन २ ॥

—उलुपी शिशुकः समौ ।

सूस मछलीके नाम २—उलुपिन् १

शिशुक २ ॥

नलमीनश्चिलिचिमः—

चेल्हवा मछलीके नाम २—नल-

मीन १ चिलिचिम २ ॥

—प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः ॥ १८ ॥

सहरी मछलीके नाम २—प्रोष्ठी १

शफरी २ ॥ १८ ॥

क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोता—

धान—

अंडोंसे निकली हुई छोटी

मछलीसमूहका नाम १ पोताधान १ ॥

—मथो ज्ञषाः ।

रोहितो मदगुरः शालो राजीवः २ कच्छप ३ ॥

शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥ तिमि-

गिलादयश्चा-

रोह मछलीका नाम १—रोहित-

मगरी मछलीका नाम १—मदुर

१ ॥ सौरी मछलीका नाम १—शाल

१ ॥ राया मछलीका नाम १—राजीव

१ ॥ सौरा मछलीका नाम १—

शकुल १ ॥ बडी भारी मछलीका नाम

१—तिमि १ ॥ १९ ॥ तिमिके

निगलनेवाली मछलीका नाम १ ॥

तिमिगिल १ ॥ आदि

—ऽथ यादांसि जलजन्तवः ।

सर्वजलजन्तुओंके नाम २—यादस

१ जलजन्तु २ ॥

तद्रेदाः शिशुमारोदशंकवो म-

करादयः ॥ २० ॥

शिरसका नाम १—शिशुमार १ ॥

ओदका नाम १—उद्र १ ॥ शक्रका

नाम १—शंकु १ ॥ मकरका नाम

१—मकर १ आदि ॥ २० ॥

स्यात्कुलीरः कर्कटकः-

कैकडाके नाम २—कुलीर १

कर्कटक २ ॥

—कूर्मे कमठकच्छपौ ।

कछुहेके नाम ३—कूर्म १ कमठ

२ कच्छप ३ ॥

ग्राहोऽवहारो-

धडियालके नाम २—ग्राह १

अवहार २ ॥

—नक्रस्तु कुम्भीरो-

नाकेके नाम २—नक्र १ कुम्भीर २ ॥

—ऽथ महीलता ॥ २१ ॥

गण्डूपदः किंचुलको-

कैचुवाके नाम ३—महीलता १

॥ २१ ॥ गण्डूपद २ किंचुलक ३ ॥

निहाका गोधिका समे ।

गोहेके नाम २—निहाका १

गोधिका २ ॥

रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां

भूम्नि जलौकसः ॥ २२ ॥

जोकके नाम ३—रक्तपा १ जलौका

२ जलौकस ३ ॥ २२ ॥

मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः-

समुद्रकी सीपीके नाम २—मुक्ता-

स्फोट १ शुक्ति २ ॥

—शंखः स्यात्कम्बुरस्त्रियौ ।

शंखके नाम २—शंख १ कम्बुर २ ॥

क्षुद्रशंखाः शंखनखाः-

छोटे शंखके नाम २—क्षुद्रशंख १

शंखनख २ ॥

—शम्बूका जलशुक्तयः ॥ २३ ॥

सब सीपीके नाम २—शम्बूक १
जलशुक्ति २ ॥ २३ ॥

भेके मंडूकवर्षाभूशालूरप्लवद-
दुराः ।

मंडूकके नाम ६—भेक १ मण्डूक
२ वर्षाभू ३ शालूर ४ प्लव ५ ददुर ६ ॥

शिली गण्डूपदी—

कालुईके नाम २—शिली १
गण्डूपदी २ ॥

—भेकी वर्षाभू—

मेडुकीके नाम २—भेकी १
वर्षाभू २ ॥

—कमठी डुलिः ॥ २४ ॥

कलुहीके नाम २—कमठी १
डुली २ ॥ २४ ॥

मद्गुरस्य प्रिया शृङ्गी—

शींगीका नाम १—शृङ्गी १ ॥

—दुर्नामा दीर्घकोशिका ।

शिकवाके नाम २—दुर्नामा १
दीर्घकोशिका २ ॥

जलाशयो जलाधारा—

तडाग झीलादि सब जलाशयोंके
नाम २—जलाशय १ ॥ जलाधार २ ॥

—स्तत्रागाधजलो हृदः ॥ २५ ॥

कुण्डका नाम १—हृद १ ॥ २५ ॥

आहावस्तु निपानं स्यादुपकू-
पजलाशये ।

कूपके निकटकी चरही (जलके
लिये बनाई हुई) केः नाम २—आहाव

१ निपान २ ॥

पुंस्येवान्धुः प्राहिः कूप उदपानं
तु पुंसि वा ॥ २६ ॥

कुएके नाम ४—अन्धु २ प्राहिः
कूप ३ उदपान ४ ॥ २६ ॥

नेमिस्रिकाऽस्य—

कुएकी पाठिकाका नाम १—
त्रिका १ ॥

—वीनाहो मुखबन्धनमस्य यत् ।
पक्की जगतका नाम १—वीनाह १ ॥

पुष्करिण्यां तु खातं स्या—

चौकोने तालाबके नाम २—
पुष्करिणी १ खात २ ॥

—दखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥

नहीं खोदे हुए तालाबके नाम २—
अखात १ देवखातक २ ॥ २७ ॥

पद्माकरस्तडागोऽस्त्री—

जिस तालाबमें कमल हों उसके
नाम २—पद्माकर १ तडाग २ ॥

—कासारः सरसी सरः ।

सामान्य तालाबके नाम ३—
कासार १ सरसी २ सरस् ३ ॥

वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरो—

छोटी तलैयाके नाम ३—वेशन्त
१ पल्वल २ अल्पसरस् ३ ॥

—वापी तु दीर्घिका ॥ २८ ॥
बावडीके नाम २—वापी १ दी-
र्घिका ॥ २ ॥ ॥ २८ ॥

खेयं तु परिखा—
खाँचा (खाही) के नाम २—खेय
१ परिखा २ ॥

—ऽऽधारस्त्वम्भसां यत्र धारणम् ।
बांधक नाम १—आधार १ ॥
स्यादालवालमावालमावापो—
थारहाके नाम ३—आलवाल १
आवाल २ आवाप ३ ॥

—ऽथ नदी सरित् ॥ २९ ॥
तरंगिणी शैवलिनी तटिनी
द्वादिनी धुनी । स्रोतस्वती द्वीप-
वती स्रवन्ती निम्नगापगा ॥ ३० ॥
नदीके नाम १२—नदी १ सरित् २
॥ २९ ॥ तरंगिणी ३ शवलिनी ४ तटि-
नी ५ द्वादिनी ६ धुनी ७ स्रोतस्वती ८
द्वीपवती ९ स्रवन्ती १० निम्नगा ११
आपगा १२ ॥ ३० ॥

गंगा विष्णुपदी जहुतनया
सुरनिम्नगा भागीरथी त्रिपथगा त्रि-
स्रोता भीष्मसूरपि ॥ ३१ ॥

गंगाजीके नाम ८—गंगा १
विष्णुपदी २ जहुतनया ३ सुरनिम्नगा ४
भागीरथी ५ त्रिपथगा ६ त्रिश्रोतस् ७
भीष्मसू ८ ॥ ३१ ॥

कालिन्दी सूर्यतनया यमुना
शमनस्वसा ।

यमुनाके नाम ४—कालिन्दी १
सूर्यतनया २ यमुना ३ शमनस्वसृ ४ ॥
रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मे-
कलकन्यका ॥ ३२ ॥

नर्मदाके नाम ४—रेवा १ नर्मदा
२ सोमोद्भवा ३ मेकलकन्यका ४ ॥ ३२ ॥
कर्तोया सदानीरा—
गौरीविवाहमें जो कन्यादानजलसे
उत्पन्न हुई उस नदीके नाम १—कर्तो-
या १ सदानीरा २ ॥

—बाहुदा सैतवाहिनी ।
सहस्रबाहुकी नदीके नाम २—
बाहुदा १ सैतवाहिनी २ ॥

शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्या-
शतलजके नाम २—शतद्रु १ शुतुद्रि २ ॥
—द्विपाशा तु विपाद् स्त्रियाम् ३ ३
व्यासनदीके नाम २ ॥ विपाशा १
विपाशू २ ॥ ३३ ॥

शोणो हिरण्यवाहः स्या-
शोणभद्रके नाम २—शोण १
हिरण्यवाह २ ॥

—कुल्यालपा कृत्रिमा सरित् ।
नहरका नाम १—कुल्या १ ॥

शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा
सरस्वती ॥ ३४ ॥ कावेरी—

शरावतीका नाम १—शरावती १ ॥
वेत्रवतीका नाम १—वेत्रवती १ ॥ चि-
नाबका नाम १—चन्द्रभागा १ ॥
सरस्वतीका नाम १—सरस्वती १ ॥
॥ ३४ ॥ कावेरीका नाम १ कावेरी १ ॥

—सरितोऽन्याश्च—

और भी कौशिकी आदि नदियाँ हैं ॥

—संभेदः सिन्धुसंगमः ।

जहाँ एक नदी दूसरीसे मिलती है
उस संगमके नाम २—संभेद १
सिन्धुसंगमः २ ॥

द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्यां—

पनारका नाम १—प्रणाली १ ॥

—त्रिषु तूत्तरौ ॥ ३५ ॥

आगे होनेवाले दोनों शब्द तीनों
लिङ्गोंमें वर्तते हैं ॥ ३५ ॥

देविकायां सरयवां च भवेदा-
विकसारवौ ।

देविका नदीमें जो २ उत्पन्न हों
उनका नाम १—दाविक १ ॥ सरयूमें
जो २ उत्पन्न हो उनका नाम १—सीरव १ ॥

सौगन्धिकं तु कहारं—

कुई (संध्यामें खिलनेवाले श्वेतकमल)
के नाम २—सौगधिक १ कहार २ ॥

—हलकं रक्तसन्ध्यकम् ॥ ३६ ॥

लाल कुईके नाम २—हलक १
रक्तसन्ध्यक २ ॥ ३६ ॥

स्यादुत्पलं कुवलयः—

कुमुदकमल साधारणके नाम २—
उत्पल १ कुवलय २ ॥

—मथ नीलाम्बुजन्म च ।

इन्दीवरं च नीले स्मिन्—

काले कमलके नाम २—नीलाम्बु-
जन्मन् १ ॥ इन्दीवर २ ॥

—सिते कु ॥ ३७ ॥

उज्ज्वल कमलके नाम २—कुमुद १
कैरव २ ॥ ३७ ॥

शालूकमेषां कन्दः स्या—

कमलोंके कन्दका नाम १—शालूक १ ॥

द्वारिपर्णी तु कुम्भिका ।

जलकुम्भीके नाम २—वारिपर्णी १
कुम्भिका २ ॥

जलनीली तु शेवालं शैवलं—

शवालके नाम ३—जलनीली १
शेवाल २ शैवल ३ ॥

—ऽथ कुमुद्वती ॥ ३८ ॥

कुमुदिन्यां—

कुमुदिनी वा कुमुदयुक्त देशके नाम
२—कुमुद्वती १ ॥ ३८ ॥ कुमुदिनी २ ॥

—नलिन्यां तु विसिनीपद्मिनी-

मुखाः ।

कमलिनीके नाम ३-नलिनी १
विसिनी २ पद्मिनी ३ आदि ॥

वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं
महोत्पलम् ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्रं
कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ।
पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसी-
रुहम् ॥ ४० ॥ विसप्रसूनराजी-
वपुष्कराम्भोरुहाणि च ।

कमलमात्रके नाम १६- पद्म १
नलिन २ अरविन्द ३ महोत्पल ४ ॥ ३९ ॥
सहस्रपत्र ५ कमलदशतपत्र ७ कुशे-
शय ८ पङ्केरुह ९ तामरस १० सारस ११
सरसीरुह १२ ॥ ४० ॥ विसप्रसून १३
राजीव १४ पुष्कर १५ अम्भोरुह १६ ॥

पुण्डरीकं सिताम्भोज-

उज्ज्वल कमलके नाम २-पुण्ड-
रीक १ सिताम्भोज २ ॥

-मथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥

रक्तोत्पलं कोकनदं-

लाल कमलके नाम ३-रक्तसरो-
रुह १ ॥ ४१ ॥ रक्तोत्पल २ कोकनद ३ ॥

-नालो नाल-

कमलकी डांडीके नाम २-नाल
(पुँलिंग) १ नाल (नपुंसकलिंग) २ ॥

-मथास्त्रियाम् ।

मृणालं विस-

भसीडके नाम २-मृणाल १ विस २ ॥

-मञ्जादिकदम्बे खण्डमस्त्रि-
याम् ॥ ४२ ॥

कमलादिके समूहका नाम १-
खण्ड १ ॥ केवल भी नाम १-
खण्ड १ ॥ ४२ ॥

करहाटः शिफाकन्दः-

कमलकी जडके नाम २-करहाट
१ शिफाकन्द २ ॥

किंजल्कः केसरोऽस्त्रियाम् ।

कमलपुष्पके मध्यमें जो झालर होती
है उसके नाम २-किंजल्क १ केसर २ ॥

संवर्तिका नवदलं-

कमलक नवे पत्तोंके नाम २-
संवर्तिका १ नवदल २ ॥

बीजकोशो वराटकः ॥ ४३ ॥

कमलाक्षके नाम २-बीजकोश
१ वराटक २ ॥ ४३ ॥

उक्तं स्ववर्ण्योमदिक्कालधीशब्दादि

सनाटयकम् । पातालभोगिनरकं
वारि चैषां च सङ्गतम् ॥ ४४ ॥

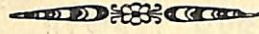
इत्यमरासिंहकृतौ नामलिङ्गा-
लुशासने । स्वरादिकाण्डः प्रथमः
सांग एव समर्थितः ॥ १ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचितामरकोशस्य
भाषाटीकायां वारिवर्गः ॥ १० ॥

इति प्रथमः कांडः समाप्तः ।

श्रीः ।

अथ द्वितीयः काण्डः ।



अथ भूमिवर्गः १.

वर्गाः पृथ्वीपुरक्षमाभृद्धनौषधि-
मृगादिभिः । नृब्रह्मक्षत्राविद्यू-
द्रैः सांगोपांगैरिहोदिताः ॥ १ ॥

इस द्वितीय काण्डमें भूमिवर्ग १,
पुरवर्ग २, शैलवर्ग ३, वनौषधिवर्ग ४,
सिंहादिवर्ग ५, मनुष्यवर्ग ६, ब्रह्मवर्ग ७,
क्षत्रियवर्ग ८, वैश्यवर्ग ९, शूद्रवर्ग १०
सांगोपांग कहेंगे ॥ १ ॥

भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वं-
भरा स्थिरा । धरा धरित्री धरणिः
क्षोणिज्या काश्यपी क्षितिः ।
॥ २ ॥ सर्वसहा वसुमती वसु-
धोर्वी वसुंधरा । गोत्रा कुः
पृथिवी पृथ्वी क्षमावनिमेदिनी
मही ॥ ३ ॥

पृथ्वीके नाम २७—भू १ भूमि २
अचला ३ अनन्ता ४ रसा ५ विश्व-
म्भरा ६ स्थिरा ७ धरा ८ धरित्री ९
धरणि १० क्षोणि ११ ज्या १२
काश्यपी १३ क्षिति १४ ॥ २ ॥ सर्वसहा
१५ वसुमती १६ वसुधा १७ उर्वी

१८ वसुन्धरा १९ गोत्रा २० कु २१
पृथिवी २२ पृथ्वी २३ क्षमा २४ अवनि
२५ मेदिनी २६ मही २७ ॥ ३ ॥

मृन्मृत्तिका—

मिट्टीके नाम २—मृत् १ मृत्तिका २ ॥

—प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्सा च
मृत्तिका ।

अच्छी मिट्टीके नाम २—मृत्सा १
मृत्सा २ ॥

उर्वरा सर्वसस्याढ्या—

जिस मिट्टीस सब अन्न उपजै उसका
नाम १—उर्वरा १ ॥

—स्यादूषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥

खारी मिट्टी अर्थात् नौनीके नाम २—
ऊष १—क्षारमृत्तिका २ ॥ ४ ॥

ऊषवानूषरो द्वावप्यन्यालिङ्गौ—
कलरभूमिके नाम २—ऊषवत् १
ऊषर २ ॥

स्थलं स्थली ।

स्थलके नाम २—स्थल १ स्थली २ ॥

समानौ मरुधन्वानौ—

निर्जल अर्थात् मरुदेशके नाम २—
मरु १ धन्वन् २ ॥

--द्वे खिलाप्रहते समे ॥ ५ ॥
त्रि—

बिनजोते खेतके नाम २—खिल
१ अप्रहत ३ ॥ ५ ॥

--ष्वथो जगती लोको विष्टपं
भुवनं जगत् ।

जगत्के नाम ५—जगती १ लोक
२ विष्टप ३ भुवन ४ जगत् ५ ॥

लोकोऽयं भारतं वर्षे—

हिमालयसे दक्षिण समुद्रसे उत्तरके
देशतक अर्थात् हिन्दुस्थानका नाम
१—भारतवर्ष १ ॥

—शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥

देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य-
शरावती नदीके ॥ ६ ॥ पूर्वदक्षिण
देशका नाम १—प्राच्य १ ॥

--उदीच्यः पश्चिमोत्तरः

शरावती नदीके पश्चिमोत्तरदेशका
नाम १—उदीच्य १ ॥

प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्या—

फारस रूस रूम आदि देशोंके
नाम २—प्रत्यन्त १ म्लेच्छदेश २ ॥

--न्मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥ ७ ॥

विंध्याचलसे उत्तर हिमालयसे
दक्षिण कुरुक्षेत्रसे पूर्व प्रयागसे पश्चिम

दशक नाम २—मध्यदेश १ मध्यम
२ ॥ ७ ॥

आयावत्तः पुण्यभूमिर्मध्यं दि-
न्ध्यहिमालयोः ।

बंगालेके समुद्रसे पश्चिम अरबसमुद्र-
से पूर्व हिमाचलसे दक्षिण विन्ध्याच-
लसे उत्तर देशक नाम २—आर्यावर्त
१ पुण्यभूमि २ ॥

नीवृज्जनपदो—

राजाओंके वसाये हुए मगध आदि
देशोंके नाम २—नीवृत् १ जनपद २ ॥

--देशविषयौ तूषवर्तनम् ॥ ८ ॥

देशमात्रके नाम ३—देश १
विषय २ उपवर्तन ३ ॥ ८ ॥

त्रिष्वागोष्ठा—

गोष्ठपर्यंत जो शब्द हैं वे तीनों
लिंगोंमें होते हैं ॥

नडप्राये नडान्नडल इत्यपि ।

नडाधिकदेशक नाम २—नडत् १
नडल २ ॥

कुमुद्रान्कुमुदप्राये—

जहां बहुत कुमुद हों उन देशका
नाम १—कुमुद्रत् १ ॥

—वेतस्वान्वद्भुवेतसे ॥ ९ ॥

जहां बहुत वेत हों उस देशका
नाम १ वेतस्वत् ॥ १ ॥ ९ ॥

शाद्वलः शादहरिते-

जहां हरी घास हो उसका नाम १-
शाद्वल १ ॥

-सजम्बाले तु पंकिलः ।

जहां बहुत कीच हो उस देशका
नाम १-पंकिल १ ॥

जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छ-
स्तथाविधः ॥ १० ॥

जहां बहुत पानी हो उस देशके
नाम ३- जलप्राय १ अनूप २
कच्छ ३ ॥ १० ॥

स्त्री शर्करा शर्करिलः शर्करः
शर्करावति ।

जहां रेत हो उस देशक नाम ४-
शर्करा १ शर्करिल २ शर्कर ३ शर्क
रावत् ४ ॥

देश एवादिमा-

ऊपर कहे हुए शर्करा आदि शब्दोंमें
पहले शर्करा १ और शर्करिल यह
दोनों देशके ही नाम हैं ॥

वेवमुन्नेयाः सिकतावति ॥ ११ ॥

इसी प्रकार सिकता १ और सिक-
तिल यह शब्द भी रेतयुक्त देशके ही
नाम हैं ॥

देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसंपन्नव्री-
हिपालितः । स्यान्नदीमातृको
देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥

जहां केवल नदीजलसे खेत सींचे
जाय वर्षा न होती हो उस देशका
नाम १-नदीमातृक १ ॥ जहां
वर्षाके ही जलसे सींचे जाय उसका
नाम १-देवमातृक १ ॥ १२ ॥

सुराजि देशे राजन्वान्स्या-

धर्मात्मा राजाके देशका नाम १-
राजन्वत् १ ॥

-उत्ततोऽन्यत्र राजवान् ।

सामान्य राजाके देशका नाम १-
राजवत् १ ॥

गोष्ठं गोस्थानकं-

गोष्ठके नाम २-गोष्ठ १ गोस्थान २ ॥

-तत्तु गौष्ठीने भतपूर्वकम् ॥ १३ ॥

जहां पूर्वकालमें गायेँ रही हों उसका
नाम १-गौष्ठीन १- १३ ॥

पर्यन्तभूः परिसरः-

नदी पर्वतादिके समीपकी भूमिके
नाम २-पर्यन्तभू १ परिसर २ ॥

-सेतुरालौ स्त्रियां-

पुलके नाम २-सेतु १ आलि २ ॥

-पुमान् ।

वामलूरश्च नाकुश्च वल्मीकं

पुनंपुसकम् ॥ १४ ॥

बमईले नाम ३-वामलूर १ नाकु
२ वल्मीक ३ ॥ १४ ॥

अयनं वर्त्ममार्गाध्वपन्थानः पद-
वी सृतिः । सरणिः पद्धतिः पद्या
वर्त्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥

मार्गके नाम १२-अयन १ वर्त्मन
२ मार्ग ३ अध्वन् ४ पथिन् ५ पदवी
६ सृति ७ सरणि ८ पद्धति ९ पद्या १०
वर्त्तनी ११ एकपदी १२ ॥ १५ ॥

अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथ-
श्चार्चितेऽध्वनि ।

अच्छे मार्गके नाम ३-अतिपथिन् १
सुपथिन् २ सत्पथ ३ ॥

व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा
कापथः समाः ॥ १६ ॥

खराब मार्गके नाम ५-व्यध्व १
दुरध्व २ विपथ ३ कदध्वन् ४ कापथ
५ ॥ १६ ॥

अपन्थास्त्वपथं तुल्ये-

जहां मार्ग न हो उसके नाम २-

अपथिन् १ चतुष्पथ २ ॥

-शृंगाटकचतुष्पथे ।

चौहट्टा वा चौके के नाम २-

शृंगाटक १ चतुष्पथ २ ॥

प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा-

जहां बड़ी दूरतक छाया वा मनु-

व्यादि न हों उस मार्गका नाम १-

प्रान्तर १ ॥

-कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् १७ ॥

चौरकण्टकादियुक्त मार्गका नाम १-

कान्तार १ ॥ १७ ॥

-गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं-

दो कोशका नाम १-गव्यूति १ ।

-नल्वः किष्कुचतुःशतम् ।

४०० हाथका नाम १-नल्व १ ॥

घण्टापथः संसरणं-

राजमार्ग अर्थात् सड़कके नाम २-

घण्टापथ १ संसरण २ ॥

-तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥

ग्रामके निकासका नाम १-उप-

निष्कर १ ॥ १८ ॥

इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

अथ पुरवर्गः २.

पूः स्त्री पुरीनगर्यौ वा पत्तनं पुट-

भेदनम् । स्थानीयं निगमे-

शहरके नाम ७-पुर १ पुरी २ नगरी

३ पत्तन ४ पुटभेदन ५ स्थानीय ६

निगम ७ ॥

-ऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम् ॥ ११ ॥

तच्छाखानगरं-

शहरसम्बन्धी छोटे नगरोंका नाम १-

॥ १ ॥ शाखानगर १ ॥

-वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ।

वेश्याके स्थानके नाम २-वेश १
वेश्याजसनमाश्रय २॥

आपणस्तु निषद्यायां-

बजारके नाम २-आपण १ निषद्या २॥

-विपणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥

जहाँ बाजार न हो परन्तु वस्तु वि-
कती हों उसके नाम २-विपणी १
पण्यवीथिका २ ॥ २ ॥

स्थया प्रतोली विशिखा-

बीचगाउँकी गलीके नाम ३-स्थया
१ प्रतोली २ विशिखा ३ ॥

-स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम् ।

किलेके इधर उधरकी मिट्टीके नाम
२-चय १ वप्र २ ॥

प्राकारो वरणः सालः-

किलेके नाम ३ -प्राकार १ वरण
२ साल ३ ॥

-प्राचीनं प्रान्ततो वृत्तिः ३ ॥

चारों ओर कांटोंकी बाडका नाम १-
प्राचीन १ ॥ ३ ॥

भित्तिः स्त्री कुड्य-

दीवारके नाम २-भित्ति १ कुड्य २ ॥

-मेडूकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम् ॥

जिस दीवारमें मजबूतीके वास्ते हड्डी
आदि लगाई गई हों उसका नाम १ ॥

मेडूक १ ॥

गृहं गेहोदवसितं वेश्म सन्न निके-
तनम् ॥ ४ ॥ निशान्तपस्त्यस-
दनं भवनागारमन्दिरम् । गृहाः
पुंसि च भूमन्येव निकाय्यनिलया-
ल्याः ॥ ५ ॥ वासः कुटी द्वयोः
शाला सभा-

गृहके नाम २०-गृह १ गेह २
उदवसित ३ वेश्मन् ४ सन्न ५ निकेतन
६ ॥ ४ ॥ निशान्त ७ पस्त्य ८ सदन ९
भवन १० अगार ११ मन्दिर १२ गृह
(पुं० बहुवचन) १३ निकाय्य १४
निलय १५ आलय १६ ॥ ५ ॥ वास
१७ कुटी १८ शाला १९ सभा २० ॥

-संजवनं त्विदम् ।

चतुःशाल-

जिस गृहमें आमने सामने एकसे चार
भकान हों उसके नाम २-संजमन १
चतुश्शाल २ ॥

-मुनीनां तु पर्णशालोदजो-
ऽस्त्रियाम् ॥ ६ ॥

मुनियोंकी कुटीके नाम २-पर्ण-
शाला १ उदज २ ॥ ६ ॥

चैत्यमायतनं तुल्ये-

यज्ञशालाके नाम २-चैत्य १
आयतन २ ॥

-वाजिशाला तु मन्दुरा ।

घुडसालके नाम २-वाजिशाला
१ मन्दुरा २ ॥

आवेशनं शिल्पिशाला-

कारीगरोंके स्थानके नाम २-आवेशन १ शिल्पिशाला २ ॥

प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥

पौशाला अर्थात् पानी पिलानेके स्थानके नाम २-प्रपा १ पानीयशालिका २ ॥ ७ ॥

मठश्छात्रादिनिलयः-

विद्यार्थी और संन्यासी आदिके रहनेके स्थानका नाम १-मठ १ ॥

-गञ्जा तु मदिरागृहम् ।

जहां मद्य बनाया जाय अथवा जहां मद्य रक्खा जाय उस स्थानके नाम २-गञ्जा १ मदिरागृह २ ॥

गर्भागारं वासगृह-

गृहके मध्यभागके नाम २-गर्भागार १ वासगृह २ ॥

-मरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥

सोवरके (प्रसूतीके) गृहके नाम २-अरिष्ट १ सूतिकागृह २ ॥ ८ ॥

वातायनं गवाक्षो-

झरोखोंके नाम २-वातायन १ गवाक्ष २ ॥

-ऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।

मण्डपके नाम २-मण्डप १ जनाश्रय २ ॥

हर्म्यादि धनिनां वासः-

धनवानोंके गृहका नाम १-हर्म्य १ आदि ॥

-प्रासादो देवभूभुजाम् ॥ ९ ॥

देवता और राजाओंके गृहका नाम १-प्रासाद १ ॥ ९ ॥

सौधोऽस्त्री राजसदन-

राजाओंके गृहके नाम २-सौध १ राजसदन २ ॥

-मुपकार्योपकारिका ।

राजाओंके साधारण गृहोंके नाम २-उपकार्या १ उपकारिका २ ॥

स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्त्तादयोऽपि च ॥ १० ॥ विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्मनाम् ।

राजगृहोंके भेद जिनमें ४ दरवाजे आदि भेद हैं ॥ स्वस्तिक १ सर्वतोभद्र २ नन्द्यावर्त्त ३ १० ॥ विच्छन्दक ४ इत्यादि ।

रुयगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥

शुद्धान्तश्चावरोधश्च-

राजस्त्रियोंके रहनेके स्थानके नाम ४-अन्तःपुर १ अवरोधन २ ॥ ११ ॥

शुद्धान्त ३ अवरोध ४ ॥

-स्यादट्टः क्षौममास्त्रियाम् ।
 गृहके ऊपरके घरके नाम २-
 अट्ट १ क्षौम २ ॥
 प्रघाणप्रघणालिन्दा वहिर्द्वार-
 प्रकोष्ठके ॥ १२ ॥
 दहलीजके नाम ३-प्रघाण १
 प्रघण २ अलिन्द ४ ॥ १२ ॥
 गृहावग्रहणी देह-
 देहलीके नाम २-गृहावग्रहणी १
 देहली २ ॥
 -ल्यऽङ्गणं चत्वरजिरे ।
 आंगनके नाम ३-अंगण १
 चत्वर २ अजिर ३ ॥
 अधस्ताद्धारुणि शिला-
 दरवाजेके नीचेके काठका नाम १-
 शिला १ ॥
 -नासादारूपरि स्थितम् ॥ १३ ॥
 दरवाजेके ऊपरके काठका नाम
 १-नासा १ ॥ १३ ॥
 प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्या-
 खिडकीके नाम २-प्रच्छन्न १
 अन्तर्द्वार २ ॥
 -त्यक्षद्वारं तु पक्षकम् ।
 बगलके द्वारके नाम २-पक्षद्वार
 १ पक्षक २ ॥
 वलीकनीधे पटलप्रान्ते-

वरौनीके नाम ३-वलीक १
 नीधर २ पटलप्रान्त ३ ॥
 -ऽथ पटलं छादिः ॥ १४ ॥
 छानिक नाम २-पटल १ छदि
 २ ॥ १४ ॥
 गोपानसी तु वलभी छादने
 वक्रदारुणि ।
 छज्जेके नाम २-गोपानसी १ वलभी १
 कपोतपालिकायां तु विटंकं
 पुंनपुंसकम् ॥ १५ ॥
 कबूतरखानेके नाम २-कपोत-
 पालिका १ विटंक २ ॥ १५ ॥
 स्त्री द्वार्द्वारं प्रतीहारः-
 द्वारके नाम ३-द्वार १ द्वार २
 प्रतीहार ३ ॥
 -स्याद्वितार्दस्तु वेदिका ।
 वेदीके नाम २-वितार्दि १ वेदिका २ ॥
 तोरणोऽस्त्री वहिर्द्वारं-
 घरके बाहरके फाटकके नाम २-
 तोरण १ वहिर्द्वार २ ॥
 -पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥ १६ ॥
 नगरके बाहरके फाटकके नाम २-
 पुरद्वार १ गोपुर २ ॥ १६ ॥
 कूटं पूर्वार्दि यद्धस्तिनखस्त-
 स्मि-
 नगरके द्वारसे उतरनेके लिये उतार
 चढ़ावकी भूमिका नाम १-हस्तिनख १ ॥

—न्नथ त्रिषु ।

कपाटमरं तुल्ये—

किवारोंके नाम २—कपाट १ अरर २॥

तद्विष्कम्भोऽर्गलं न ना ॥ १७ ॥

किवाडोंके उण्डेलेका नाम १—

अर्गल ॥ १ ॥ १७ ॥

आरोहणं स्यात्सोपानं—

मिट्टी पत्थर आदिकी सीढीके नाम

२—आरोहण १ सोपान २ ॥

—निश्रेणिस्वधिरोहणी ।

काठकी सीढीके नाम २—निश्रेणि

१ अधिरोहणी २ ॥

संमार्जनी शोधनी स्यात्—

बुहारी अर्थात् झाडूके नाम २—

संमार्जनी १ शोधनी २ ॥

—संकरोऽवकरस्तथा ॥ १८ ॥

क्षिते—

करकट वा कूडेके नाम २—संकर

१ अवकर २ ॥ १८ ॥

—मुखं निःसरणं—

निकासके नाम २—मुख १

निःसरण २ ॥

—संनिवेशो निकर्षणम् ।

नगर इत्यादिमें स्थानके निमित्त

नापी हुई भूमिके नाम २—संनिवेश

१ निकर्षण २ ॥

समौ संवसथग्रामौ—

ग्रामके नाम २—संवसथ १ ग्राम २॥

वेश्मभूर्वास्तुरस्त्रियाम् ॥ १९ ॥

घरकी भूमिका नाम १—वास्तु

१ ॥ १९ ॥

ग्रामान्त उपशल्यं स्यात्—

ग्रामके समीपका नाम १—उपशल्य १॥

—सीमसीमे स्त्रियामुभे ।

सीमाके नाम २—सीमन् १ सीमा २

घोष आभीरपल्ली स्यात्—

अहीरोंके ग्रामके नाम २—

घोष १ आभीरपल्ली २ ॥

—पक्कणः शवरालयः ॥ २० ॥

जंगलियोंके ग्रामके नाम २—पक्कण

१ शवरालय २ ॥ २० ॥

इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

अथ शैलवर्गः ३.

महीध्रे शिखरिक्ष्माभृदहार्यध-

रपर्वताः । अद्रिगोत्रागिरिग्रा-

वाचलशैलशिलोच्चयाः ॥ १ ॥

पर्वतके नाम १३—महीध्र १

शिखरिन् २ क्ष्माभृत् ३ अहार्य ४

धर ५ पर्वत ६ अद्रि ७ गोत्र ८

गिरि ९ ग्रावन् १० अचल ११ शैल

१२ शिलोच्चय १३ ॥ १ ॥

लोकालोकश्चक्रवाल—

जो पर्वत पृथ्वीको घरे हैं उनके नाम

२—लोकालोक १ चक्रवाल २ ॥

—खिकूटाखिककुत्समौ ।

त्रिकूट कि जिसपर लंका बसी
उसके नाम २—त्रिकूट १ त्रिकुटद्वार ॥

अस्तस्तु चरमक्षमाभृत्—

अस्ताचलके नाम २—अस्त १
चरमक्षमाभृत् २ ॥

—दुदयः पूर्वपर्वतः ॥ २ ॥

उदयाचलके नाम २—उदय १
पूर्वपर्वत २ ॥ २ ॥

हिमवान्निषधो विन्ध्यो माल्य-
वान्पारियात्रकः । गन्धमादनमन्ये
च हेमकूटादयो नगाः ॥ ३ ॥

पर्वतोंके भेद ६—हिमवत् १ निषध
२ विन्ध्य ३ माल्यवत् ४ पारियात्रक
५ गन्धमादन ६ तथा हेमकूट आदि
अन्य भी पर्वत हैं ॥ ३ ॥

पाषाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शि-
ला दृषत् ।

पत्थरके नाम ७—पाषाण १
प्रस्तर २ ग्रावन् ३ उपल ४ अश्मन्
५ शिला ६ दृषत् ७ ॥

कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं—

पहाडकी चोटी वा कंगूरके नाम
३—कूट १ शिखर २ शृङ्ग ३ ॥

—प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ ४ ॥

बीहडके नाम ३—प्रपात १ अतट
२ भृगु ३ ॥ ४ ॥

कटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः—

बीच पर्वतका नाम १—कटक १ ॥

स्तुः प्रस्थः सानुरास्त्रियाम् ।

पर्वतके किनारेके नाम ३—स्तु १

प्रस्थ २ सानु ३ ॥

उत्सः प्रस्रवणं—

जहां पर्वतसे चूकर पानी बहता

है अथात् कुण्डके नाम २—उत्स १
प्रस्रवण २ ॥

—वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ॥ ५ ॥

झरनोंके नाम ३—वारिप्रवाह १
निर्झर २ झर ३ ॥ ५ ॥

दरी तु कन्दरो वा स्त्री—

बनाई हुई गुफाके नाम २—दरी
१ कन्दर-कन्दरा २ ॥

—देवखातविले गुहा

गह्वरं—

अपने आप बनी हुई गुफाके नाम ४—
देवखात १ विल २ गुहा ३ गह्वर ४ ॥

—गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलो-
पला गिरः ॥ ६ ॥

जो कि पर्वतसे भारी भारी पत्थर गिरते
हैं उनका नाम १—गण्डशैल १ ॥ ६ ॥

खनिः स्त्रियामाकरः स्यात्—

खानिके नाम २—खनि १ आकर २ ॥

—पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ।

पर्वतके धोरेके छोटे पर्वतके नाम
२-पाद १ प्रत्यन्तपर्वत २ ॥

उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्ध्वम-
वित्यका ॥ ७ ॥

पहाडके नीचेकी भूमिका नाम १-
उपत्यका १ ॥ पहाडकी ऊपरकी भूमिका
नाम १-अवित्यका १ ॥ ७ ॥

धातुर्मनःशिलाद्यद्रैर्गैरिकं तु वि-
शेषतः ।

पर्वतसे उत्पन्न हुए जो मनःशिल
आदि तिनका नाम १-धातु १ ॥ गैरिक
(गेरू)तो धातु शब्दसे ही विख्यात है ॥

निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीबेलतादिपि-
हितोदरे ॥ ८ ॥

जहां कि बहुत लता वृगादिसे घिरा
हो उसके नाम २-निकुञ्ज १ कुञ्ज २ ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

अथ वनौषधिवर्गः ४.

अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं
वनम् ।

वनके नाम ६-अटवी १ अरण्य २
विपिन ३ गहन ४ कानन ५ वन ६ ॥

महारण्यमरण्यानी-

बड़े वनके नाम २-महारण्य
१ अरण्यानी २ ॥

-गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १॥

गृहके समीप बनाये हुए बगीचेके

नाम २-गृहाराम १ निष्कुट २ ॥ १॥

आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वन-
मेव यत् ।

गृहसमीपके वनके नाम २-
आराम १ उपवन २ ॥

अमात्यगाणिकगोपवने वृक्षवा-
टिका ॥ २ ॥

जहां राजाके नौकर चाकर और
उनकी वेश्या रहें उस बगीचेका नाम

१-वृक्षवाटिका १ ॥ २ ॥

पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधा-
रणं वनम् ।

राजाक उस बगीचेका नाम जिसका
सब पुरुष भोग कर सकें १-आक्रीड १ ॥

स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुरो-
चितम् ॥ ३ ॥

जहां राजा स्त्रियोंसहित क्रीडा करें
उस बगीचेका नाम १-प्रमदवन १ ॥ ३ ॥

वीथ्यालिवालिः पंक्तिः श्रेणी-
पंक्तिके नाम ५-वीथी १ आलि २

आवलि ३ पंक्ति ४ श्रेणी ५ ॥

-लेखास्तु राजयः ।

लकीरके नाम २-लेखा १ राजि २ ॥

वन्या वनसमूहे स्या-

वनके झुंडके नाम २—वन्या १
वनसमूह २ ॥

—दंकुरोऽभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥

अंकुरके नाम २—अंकुर १ अभि-
नवोद्भिद् २ ॥ ४ ॥

वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी
पादपस्तरुः । अनोकहः कुटः
शालः पलाशी द्रुमुमागमाः ॥ ५ ॥

वृक्षके नाम १३—वृक्ष १ महीरुह २
शाखिन् ३ विटपिन् ४ पादपस्तरु ५
अनोकह ७ कुट ८ शाल ९ पलाशिन् १०
द्रु ११ द्रुम १२ अगम १३ ॥ ५ ॥

वानस्पत्यः फलैः पुष्पात्—

जो वृक्ष फूलकर फलै उसका नाम
१—वानस्पत्य १ ॥

—तैरपुष्पाद्वनस्पतिः ।

जो कि फूलने विना फले जैसे गूलर
कटहर आदि उनका नाम १—वनस्पति
१ ॥ (वृक्षमात्रको भी वनस्पति कहते हैं)

ओषध्यः फलपाकान्ताः स्यु-

फलकर पकनेपर नष्ट होनेवाले

अर्थात् अन्न आदिका नाम १—ओषधी १

—रवन्ध्यः फलेग्रहिः ॥ ६ ॥

फलनेवाले वृक्षके नाम २—अवन्ध्य

१ फलेग्रहि २ ॥ ६ ॥

वन्ध्योऽफलोऽवकेशी च—

जो नहीं फले उस वृक्षके नाम ३—
वन्ध्य १ अफल २ अवकेशिन् ३ ॥

—फलवान् फलिनः फली ।

फलयुक्त वृक्षके नाम ३—फलवत्
१ फलिन् २ फलिन् ३ ॥

प्रफुल्लोत्फुल्लसंपुल्लव्याकोशविकच-
स्फुटाः ॥ ७ ॥

फुल्लश्चैते विकसिते—

फूलयुक्त (विकसित) वृक्षके नाम
८—प्रफुल्ल १ उत्फुल्ल २ संपुल्ल ३
व्याकोश ४ विकच ५ स्फुट ६ ॥ ७ ॥
फुल्ल ७ विकसित ८ ।

—स्युरवन्ध्यादयस्त्रिषु ।

अवन्ध्य आदि शब्द तीनों लिंगोंमें
होते हैं ॥

स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शंकु—

टूठ वृक्षके नाम ३—स्थाणु १
ध्रुव २ शंकु ३ ॥

—द्वस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ८ ॥

जिस वृक्षमें छोटी २ डालें और जड़े
हों उसका नाम १—क्षुप १ ॥ ८ ॥

अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मौ—

जिसमें डालियां न हों उस वृक्षके
नाम २—स्तम्ब १ गुल्म २ ॥

—वल्ली तु व्रततिर्लता ।

बेलके नाम ३—वल्ली १ व्रतति
२ लता ३ ॥

लता प्रतानिनी वीरुदूगुलिमन्यु-
लप इत्यपि ॥ ९ ॥

वडी लंबी बेलके नाम ३-वीरुत
१ गुलिमनी २ उलप ३ ॥ ९ ॥

नगाचारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चो-
च्छ्रायश्च सः ।

वृक्षादिकी ऊंचाईके नाम ३-
उच्छ्राय १ उत्सेध २ उच्छ्राय ३ ॥

अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्यान्मू-
लाच्छाखावधिस्तरोः ॥ १० ॥

जडसे शाखातक पेडके नाम २-
प्रकाण्ड १ स्कन्ध २ ॥ १० ॥

समे शाखालते-
डालके नाम २-शाखा १

लता २ ॥
-स्कन्धशाखाशाले-

प्रधानशाखा (मोटे डगों) के नाम
२-स्कन्धशाखा १ शाला २ ॥

-शिफाजटे ।
जडके नाम २- शिफा १ जटार ॥

शाखाशिफावरोहः स्या-
वरोहका नाम १ - अवरोह १ ॥

-न्मूलाच्चाग्रं गता लता ॥ ११ ॥
मूलसे लेकर अग्रभागपर्यंत गई हुई-

गिलोय, आदिके बेलका नाम भी अव-
रोह है ॥ ११ ॥

शिरोऽग्रं शिखरं वा ना-

टैनीके नाम २-शिरोग्र १ शिखर २ ॥

मूलं बुध्नोऽडिग्रनामकः ।

मिट्टीके भीतरकी जडके नाम ३-
मूल १ बुध्न २ अंघ्रिनामक सब शब्द ३ ॥

सारो मज्जा नरि-
गूदेके नाम २- सार १ मज्जा २ ॥

-त्वक् स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रि-
याम् ॥ १२ ॥

वृक्षकी छालके नाम ३-त्वक् १
वल्क २ वल्कल ३ ॥ १२ ॥

काष्ठं दा-
काठके नाम २-काष्ठ १ दाठ २ ॥

-र्विन्धनं त्वेध इधममेधः समि-
स्त्रियाम् ।

ईधनके नाम ३-ईन्धन १ एध २
-इधम ३ यज्ञादिके ईधनके नाम २ ।

एधस् १ समिध् २ ॥
निष्कुहः कोटरं वा ना-

खोकलके नाम २-निष्कुह १ कोटर २ ।
-वल्लिर्मिञ्जरीः स्त्रियौ ॥ १३ ॥

मंजरीके नाम २-वल्लि १ मंजरी
२ ॥ १३ ॥

पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः
पुमान् ।

पत्तोंके नाम ६- पत्र १ पलाश
२ छदन ३ दल ४ पर्ण ५ छद ६ ॥

पल्लवोऽस्त्री किसलयं—
 कौपलके नाम २—पल्लव १ किसलय—१
 विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥ २४ ॥
 डालोंके फैलनेके नाम २—विस्तार
 १ विटप २ ॥ १४ ॥
 वृक्षादीनां फलं सस्यं—
 वृक्षादिकोंके फलका नाम १—
 सस्य १ ॥
 —वृन्तं प्रसवबन्धनम् ।
 नाकूके नाम २—वृन्त १ प्रसव-
 बन्धन २ ॥
 आमे फले शलाटुः स्या—
 कच्चे फलका नाम १—शलाटु १ ॥
 च्छुष्के वान—
 सूखे फलका नाम १—वान १ ॥
 —मुभे त्रिषु ॥ १५ ॥
 शलाटु और वान शब्द तीनों लि-
 गोंमें होते हैं ॥ १५ ॥
 क्षारको जालकं क्लीबे—
 नई कली व कलीकी डडीके नाम
 २—क्षारक १ जालक २ ॥
 कलिका कोरकः पुमान् ।
 बिना फूली कलीके नाम २—
 कलिका १ कोरक २ ॥
 स्याद्गुच्छकस्तु स्तवकः—
 गुच्छेका नाम १—स्तवक १ ॥

—कुड्मलो मुकुलोऽस्त्रियाम् १६
 बधफूली कलीके नाम २—कुड्-
 मल १ मुकुल २ ॥ १६ ॥
 स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कु-
 सुमं सुमम् ।
 फूलके नाम ५—सुमनसू १ पुष्प
 २ प्रसून ३ कुसुम ४ सुम ५ ॥
 मकरन्दः पुष्परसः—
 फूलके रसके नाम २—मकरन्द
 १ पुष्परस २ ॥
 परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥
 फूलकी धूलिके नाम २—पराग १
 सुमनोरजसू २ ॥ १७ ॥
 द्विहीनं प्रसवे सर्वे—
 आगे अश्वत्थः आदिकोंके जो कल
 पुष्पादिकोंके नाम कहेंगे वह शब्द
 केवल नपुंसकलिगमें ही होंगे ॥
 हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ।
 हरीतकी आदिकोंकी फलोंक वाच-
 क(हरीतकी)आदि शब्द स्त्रीलिगमें हों-
 गे ॥
 आश्वत्थवैणवप्लाक्षनैयग्रोधैर्गुदं फले
 ॥ १८ ॥ वार्हतं च—
 (पीपलके फलका नाम) अश्वत्थ
 १ ॥ (ब्रांसका फल) वैणव १ ॥
 (पाकडके फलका नाम) प्लाक्ष १ ॥
 (बटके फलका नाम) नैयग्रोध १ ॥

(इंगुदीके फलका नाम) ऐंगुद १॥१८

(भटकटैयाके फलका नाम) बार्हत १॥

—फले जम्बूवा जम्बू स्त्री जम्बु

जाम्बवम् ।

जामुनके फलके नाम ३—जम्बू १

जम्बु २ जाम्बव ३ ॥

पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिङ्गा-

जुहीके फलका नाम १—जाती १॥

—ब्रीहयः फले ॥ २९ ॥

यव आदि धान्योंके फल भी यव

आदि नामसे ही कहे जाते हैं जैसे

यवका फल यव, माषका फल माष,

मुद्गका फल मुद्ग ॥ १९ ॥

विद्यार्थाद्यास्तु मूलेऽपि-

विदारी आदिकोंके जड़ पुष्प और

फल भी विदारी आदि नामवाले ही

होते हैं अर्थात् जाती आदि शब्दोंके

पुष्पादिक भी स्वलिङ्ग ही होते हैं ॥

—पुष्पे क्लीवेऽपि पाटला ।

पाटलाके पुष्पका नाम १—पाटला १॥

यह शब्द पुष्पका नाम होकर भी

स्वलिङ्ग अर्थात् पाटलाका लिंग जो

स्त्रीलिंग उसमें होता है ॥

बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः क्लञ्ज-

राशनः ॥ २० ॥

अश्वत्थ-

पीपलके नाम ५—बोधिद्रुम १ चल-

दल २ पिप्पल ३ कुंजराशन ४

॥ २० ॥ अश्वत्थ ५ ॥

—ऽथ कपित्थे स्युर्दधित्थग्राहिम-

न्मथाः । तस्मिन्दधिफलः पुष्प-

फलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥

कथके नाम ७—कपित्थ १ दधित्थ

२ ग्राहिन् ३ मन्मथ ४ दधिफल ५

पुष्पफल ६ दन्तशठ ७ ॥ २१ ॥

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो

हेमदुग्धकः ।

गूलरके नाम ४—उदुम्बर १ जन्तु-

फल २ यज्ञाङ्ग ३ हेमदुग्धक ४ ॥

कोविदारे चमरिकः कुद्दालो

युगपत्रकः ॥ २२ ॥

कचनारके नाम ४—कोविदार १

चमरिक २ कुद्दाल ३ युगपत्रक ३ ॥ २२ ॥

सप्तपर्णो विशालत्वक्छारदो विष

मच्छदः ।

छतिवतीके नाम ४—सप्तपर्ण

विशालत्वक् १ शारद ३ विषमच्छद ४ ।

आरग्वधे राजवृक्षशम्याक-

चतुरङ्गुलाः ॥ २३ ॥ आरेवतव्या-

धिघातकृतमालसुवर्णकाः ।

अमलतासके नाम ८—आरग्वध १

राजवृक्ष २ शम्याक ३ चतुरङ्गुल ४ ॥ २३ ॥

आरेवत ५ व्याधिघात ६ कृतमाल ७
सुवर्णक ८ ॥

स्युर्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीरे-
जम्भलाः ॥ २४ ॥

जम्बीरी नीबूके नाम ५—जम्बीर १
दन्तशठ २ जम्भ ३ जम्भीर ४ जम्भल
५ ॥ २४ ॥

वरणो वरुणः सेतुस्तित्तशाखः
कुमारकः ।

वरुण (वरुणा) के नाम ५—वरण
१ वरुण २ सेतु ३ तित्तशाख ४
कुमारक ५ ॥

पुत्रागे पुरुषस्तुङ्गः केसरो देव-
वल्लभः ॥ २५ ॥

नागकेशरके नाम ५—पुत्राग १
पुरुष २ तुङ्ग ३ केशर ४ देववल्लभ ५ ॥ २५ ॥
पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारि-
जातकः ।

वकायनके नाम ४—पारिभद्र १
निम्बतरु २ मन्दार ३ पारिजातक ४ ॥

तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्रु-
तिमुक्तकः ॥ २६ ॥

वञ्जुलश्चित्रकृष्ण-

वञ्जुल वृक्षके नाम ७—तिनीश १
स्यन्दन २ नेमी ३ रथद्रु ४ अतिमुक्तक ५ ॥
॥ २६ ॥ वञ्जुल ६ चित्रकृत् ७ ॥

—थ द्वौ पीतनकपीतनौ ।

आम्रातके—

आम्वाडेके नाम ३—पीतन १ कपी-
तन २ आम्रातक ३ ॥

मधूके तु गुडपुष्पमधुद्रुमाः ॥ २७ ॥
वानप्रस्थमधुष्ठीलौ—

मधुयेके नाम ५—मधूक १ गुडपुष्प २
मधुद्रुम ३ ॥ २७ ॥ वानप्रस्थ ४ मधु-
ष्ठील ५ ॥

—जलजेऽत्र मधूलकः ।

जलके मधुयेका नाम १—मधूलक १ ॥
पीलौ गुडफलः संसी—

देशी अखरोटके नाम ३—पीलु १
—तस्मिंस्तु गिरिसंभवे ॥ २८ ॥

अक्षोटकन्दरालौ द्वा—

पहाडी अखरोटके नाम २—२८ ॥
अक्षोट १ कन्दराल २ ॥

—वङ्काट तु निकोचकः ।

अंकोलके नाम २—अंकोट १
निकोचक २ ॥

पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथो—
पलाशके नाम ४—पलाश १ किंशुक

२ पर्ण ३ वातपोथ ४ ॥

—ऽथ वेतसे ॥ २९ ॥

रथाभ्रपुष्पविटुरशीतवानारिव-
ञ्जुलाः ।

वेतके नाम ७—वेतस १ ॥ २९ ॥ रथ २

अभपुष्प ३ विदुर ४ शीत१वानीर६
वंजुल ७ ॥

द्वौ परिव्याधविदुलौ नादेयी
चाम्बुवेतसे ॥ ३० ॥

पानीके वेतके नाम ४--परिव्याध १
विदुल २ नादेयी ३ अम्बुवेतस ४ ॥ ३० ॥

सोभाञ्जने शिशुतीक्ष्णगन्धका-
क्षीवमोचकाः ।

सँहिजनेके नाम ५--सोभाञ्जन १
शिशु २ तीक्ष्णगन्धक ३ अक्षीव ४
मोचक ५ ॥

रक्तोऽसौ मधुशिशुः स्या-

लाल फूलवाले सँहिजनका नाम १-
मधुशिशु १ ॥

-दरिष्टः फेनिलस्समौ ॥ ३१ ॥

रीठेके नाम २-अरिष्ट १ फेनिल
२ ॥ ३१ ॥

विल्वे शाण्डिल्यशैलुषौ मालूर-
श्रीफलावपि ।

वेलके नाम ५--विल्व १ शाण्डिल्य २
शैलुष ३ मालूर ४ श्रीफल ५ ॥

प्लक्षो जटी पर्कटी स्या-

पाकरके नाम ३-प्लक्ष १ जटिन्
२ पर्कटिन् ३ ॥

-न्यग्रोधो बहुपादः ॥ ३२ ॥

वटके नाम ३-न्यग्रोध १ बहुपाद
२ वट ३ ॥ ३२ ॥

गालवः शावरो लोध्रस्तिरीट-
स्तिवमार्जनौ ।

लोध्रके नाम ६-गालव १ शावर २
लोध्र ३ तिरीट ४ तिव ५ मार्जन ६ ॥

आम्रश्चूतो रसालो-

आम्रके नाम ३-आम्र १ चूत २
रसाल ३ ॥

-ऽसा सहकारोऽतिसौरभः ॥ ३३ ॥

सुगंधित आम्रका नाम १-सह-
कार १ ॥ ३३ ॥

कुम्भोलूखलकं क्लीवे कौशिको
गुग्गुलुः पुरः ।

गूगलके नाम ५-कुम्भ १ उल्ल-
खलक २ कौशिक ३ गुग्गुलु ४
पुर ५ ॥

शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो
बहुवारकः ॥ ३४ ॥

लसोढेके नाम ५-शेलु १ श्लेष्मा-
तक २ शीत ३ उद्दाल ४--बहुवा-
रक ५ ॥ ३४ ॥

राजादनं प्रियालः स्यात्सन्नक-
द्रुर्धनुष्पटः ।

चिरोंजीके नाम ४-राजादन १
प्रियाल २ सन्नकद्रु ३ धनुष्पट ४ ॥

गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी
मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥ श्रीपर्णी
भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चा—

खंभारीके नाम ७—गम्भारी १
सर्वतोभद्रा २ काश्मरी ३ मधुपर्णिका ४
॥ ३५ ॥ श्रीपर्णी ५ भद्रपर्णी ६
काश्मर्य ॥ ७ ॥

प्यथ द्वयोः ।

कर्कन्धर्वदरी कोली—

वेरके नाम ३ कर्कन्धू १—वदरी २
कोली ३ ॥

—कोलं कुवलेफनिले ॥ ३६ ॥

सौवीरं वदरं घण्टा—

वेरके फलके नाम ६—कोल १
कुवले २ फनिल ३ ॥ ३६ ॥ सौवीर ४
वदर ५ घण्टा ६ ॥

—प्यथ स्यात्स्वादुकण्टकः ।

विकङ्कतः सुवावृक्षो ग्रन्थिलो
व्याघ्रपादपि ॥ ३७ ॥

टैटीके नाम ५—स्वादुकण्टक १
विकङ्कत २ सुवावृक्ष ३ ग्रन्थिल ४
व्याघ्रपाद ५ ॥ ३७ ॥

ऐरावतो नागरंगो नादेयी भू-
मिजम्बुका ।

नारंगीके नाम ४—ऐरावत १ नाग-
रङ्ग २ नादेयी ३ भूमिजम्बुका ४ ॥

तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्क
न्धश्च शितिसारके ॥ ३८ ॥

तैदूके नाम ४—तिन्दुक १ स्फूर्जक २
कालस्कन्ध ३ शितिसारक ४ ॥ ३८ ॥

काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः
काकपीलुके ।

कुचलेके नाम ४—काकेन्दु १
कुलक २ काकतिन्दुक ३ काकपीलुक ४ ॥

गोलीढो झाटलो घण्टापाट-
लिर्मोक्षमुष्ककौ ॥ ३९ ॥

लोषके भेद मोखाके नाम ५—
गोलीढ १ झाटल २ घण्टापाटलि ३ मोक्ष
४ मुष्कक ५ ॥ ३९ ॥

तिलकः क्षुरकः श्रीमान्—
तिलकके नाम ३—तिलक १ क्षुरक
२ श्रीमत् ३ ॥

—समौ पिचुलझावुकौ ।
झाऊक नाम २—पिचुल १
झावुक २ ॥

श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी
कैडर्यकट्फलौ ॥ ४० ॥

कायफलके नाम ५—श्रीपर्णिका १
कुमुदिका २ कुम्भी ३ कैडर्य ४ कट्-
फल ५ ॥ ४० ॥

क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी
लाक्षाप्रसादनः ।

पठानी लोधके नाम ४-क्रमुक १
षट्टिकारु २ पट्टी ३ लाक्षाप्रसादन ४-

तूदस्तु यूषः क्रमुको ब्रह्मण्यो
ब्रह्मदारु च ॥ ४१ ॥ तूलं च-

पार्श्वपिप्पल वा तूतके नाम ६-तूद
१ यूष २ क्रमुक ३ ब्रह्मण्या ४ ब्रह्मदारु ५
॥ ४१ ॥ तूल ६ ॥

-नीपप्रियककदम्बास्तु हरिप्रियः

कदम्बके नाम ४-नीप १ प्रियक
२ कदम्ब ३ हरिप्रिय ४ ॥

वीरवृक्षोऽरुष्करोऽग्निमुखी भल्ला-
तकी त्रिषु ॥ ४२ ॥

मिलावेके नाम ४-वीरवृक्ष १ अरु-
ष्कर २ अग्निमुखी ३ भल्लातकी ४ ॥ ४२ ॥

गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपा-
श्वकाः । प्लक्षश्च-

गेठी (पिलखन) के नाम ५-
गर्दभाण्ड १ कन्दराल २ कपीतन ३

सुपार्श्वक ४ प्लक्ष ५ ॥

तिन्तिडी चित्राम्लिका-

इमलीके नाम ३-तिन्तिडी १
चित्रा २ अम्लिका ३ ॥

-ऽथ पीतसारके ॥ ४३ ॥

सर्जकासनवन्धूकपुष्पप्रियक-
जीवकाः ।

विजयसारके नाम ६-पीतसारक १

॥ ४३ ॥ सर्जक २ असन ३ वन्धूक ४
पुष्पप्रियक ५ जीवक ६ ॥

साले तु सर्जकार्प्याश्वकर्णकाः
सस्यसम्बरः ॥ ४४ ॥

शालके नाम ६-साल- १ सर्ज २
कार्प्य ३ अश्वकर्णक ४ सस्यसम्बर ५ ॥ ४४ ॥

नदीसर्जो वीरतरुर्निद्रद्रुः ककु-
भोऽर्जुनः ।

अर्जुनवृक्षके नाम ५-नदीसर्ज १
वीरतरु २ इन्द्रद्रु ३ ककुभ ४ अर्जुन ५ ॥

राजादनः फलाव्यक्षः क्षीरि-
काया-

खिल्लीके नाम ३-राजादन १
फलाव्यक्ष २ क्षीरिका ३ ॥

-मथ द्वयोः ॥ ४५ ॥

इंगुदी तापसतरु-
पांखीके नाम २-इंगुदी १ तापस-

तरु २ ॥ ४५ ॥

--भूर्जे चर्भिमृदुत्वचौ ॥

भोजपत्रके वृक्षके नाम ३-भूर्ज १
चर्मिन् २ मृदुत्वच ३ ॥

पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः
शालमलिर्द्वयोः ॥ ४६ ॥

समलके नाम ५-पिच्छिला १ पूरणी
२ मोचा ३ स्थिरायु ४ शालमलि ५ ॥ ४६ ॥

पिच्छा तु शालमलीवेष्टे-

सेमलके गोंदके नाम २—पिच्छा १
शालमलीवैष्ट २ ॥

—रोचनः कूटशालमलिः ।

काले सेमलके नाम २—रोचन १
कूटशालमलि २ ॥

चिरबिल्वो नक्तमालः करजश्च
करञ्जके ॥ ४७ ॥

करञ्जके नाम ४—चिरबिल्व १ नक्त-
माल २ करज ३ करंजक ४ ॥ ४७ ॥

प्रकीर्यः पृतिकरजः पृतिकः
कलिमारकः ।

कटीले करंजके नाम ४—प्रकीर्य १
पृतिकरज २ पृतिक ३ कलिमारक ४ ॥

करञ्जभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कटय-
ङ्गारखलरा ॥ ४८ ॥

करंजके भेद ३—षड्ग्रन्थ १ मर्कटी
२ अङ्गारखली ३ ॥ ४८ ॥

रोही रोहितकः स्त्रीहशत्रुर्दाडिम
पुष्पकः ।

रोहीडाके नाम ४ ॥ रोहिन् १ रोहि-
तक २ स्त्रीहशत्रु ३ दाडिमपुष्पक ४ ॥

गायत्री वालतनयः खदिरो
दन्तधावनः ॥ ४९ ॥

खैरके अर्थात् कृत्येके नाम ४—गा-
यत्री १ वालतनय २ खदिर ३ दन्त-
धावन ४ ४९ ॥

अरिभेदो विटखादिरे—

दुर्गन्धयुक्त खैरके नाम २—अरिभेद १

विटखदिर २ ॥

—कदरः खदिरे सिते ।

सोमवलकोऽ—

सफेद खैरके नाम २—कदर १ सो-

मवलक २ ॥

—पथ व्यावघ्रपुच्छगन्धहस्तको

॥ ५० ॥ एरण्ड उरुवूकश्च रुच-

कश्चित्रकश्च सः । चञ्चुः पञ्चां-

गुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः ५१

रेड अर्थात् एरण्डके नाम १—व्याघ्र-

पुच्छ १ गन्धर्वहस्त २ ॥ ५० ॥ एरण्ड

३ उरुवूक ४ रुचक ५ चित्रक ६ चञ्चू

७ पञ्चांगुल ८ मंड ९ वर्धमान १०

व्यडम्बक ११ ॥ ५१ ॥

अल्पा शमी शमीरः स्या-

छोटीशमी(जाँटी)का नाम १—शमीर १

—च्छमी सक्तुफला शिवा ।

शमी (जाँटी) के नाम ३—

शमी १ सक्तुफला २ शिवा ३ ॥

पिण्डीतको मरुवकः श्वसनः कर-

हाटकः ॥ ५२ ॥ शल्यश्च मदन-

मयनफलके नाम ६—पिण्डीतक १

मरुवक २ श्वसन ३ करहाटक ४ ॥ ५२ ॥

शल्य ५ मदन ६ ॥

शक्रपादपः पारिभद्रकः । भद्र-
दारु द्रुकिलिमं पीतदारु च दारु
च ॥ ५३ ॥ पूतिकाष्ठं च सप्त
स्युर्देवदारु-

देवदारुके नाम ८-शक्रपादप १
पारिभद्रक २ भद्रदारु ३ द्रुकिलिम ४
पीतदारु ५ दारु ६ ॥ ५३ ॥ पूति-
काष्ठ ७ देवदारु ॥ ८ ॥

-ण्यथ द्वयोः ।

पाटलिः पाटला मोघाकाचस्था-
ली फलेरुहा ॥ ५४ ॥

कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी-

पाडरीके नाम ७-पाटलि १ पाट-
ला २ मोघा ३ काचस्थाली ४ फलेरुहा
५ ॥ ५४ ॥ कृष्णवृन्ता ६ कुबेराक्षी ७ ॥

-श्यामा तु महिलाह्वया । लता
गोविन्दिनी गुन्द्रा प्रियंगुः
फलिनी फली ॥ ५५ ॥ विष्व-
क्सेना गन्धफली कारम्भा प्रिय-
कश्च सा ।

काकुनीके नाम १२-श्यामा १
महिलाह्वया २ लता ३ गोविन्दिनी ४
गुन्द्रा ५ प्रियंगु ६ फलिनी ७ फली ८
॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना ९ गन्धफली
१० कारम्भा ११ प्रियक १२ ॥

मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकट्वंगटुण्डु-
काः ॥ ५६ ॥ स्योनाकशुकनास-
र्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः ।

शोणकश्चारलौ-

सखिन (सोनापाठा) के नाम १२-
मण्डूकपर्ण पत्रोर्ण २ नट ३ कट्वंग ४
टुण्डुक ॥ ५६ ॥ स्योनाक ६ शुक-
नास ७ ऋक्ष ८ दीर्घवृन्त ९ कुटन्नट
१० शोणक ११ अरलु १२ ॥

-तिष्यफलात्वामलकी त्रिषु ॥ ५७ ॥

अमृता च वयःस्था च-

आमलोंके नाम ४-तिष्यफला १
आमलकी २ ॥ ५७ ॥ अमृता ३ वयःस्था ४

-त्रिलिङ्गस्तु विभीतकः । ना-
क्षस्तुषः कर्षफलो भूतावासः
कलिद्रुमः ॥ ५८ ॥

बहेडेके नाम ६-विभीतक १ अक्ष
२ तुष ३ कर्षफल ४ भूतावास ५
कलिद्रुम ६ ॥ ५८ ॥

अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था
पूतनामृता । हरीतकी हैमवती
चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९ ॥

हरडके नाम ११-अभया १ अव्यथा
२ पथ्या ३ कायस्था ४ पूतना ५
अमृता ६ हरीतकी ७ हैमवती ८ चेतकी
९ श्रेयसी १० शिवा ११ ॥ ५९ ॥

पीतदुः सरलः पूतिकाष्ठं चा-
सरलाके नाम ३—पीतदु १ सरल
२ पूतिकाष्ठ ३ ॥

—ऽथ द्रुमात्पलः ।

कर्णिकारः परिव्याधो—

करनेके नाम ३—द्रुमात्पल १ कर्णि-
कार २ परिव्याध ३ ॥

—लकुचो लिङ्गुचो डहुः ६० ॥

बडहरके नाम ३— लकुच १

लिङ्गुच २ डहु ३ ॥ ६० ॥

पनसः कण्टकिफलो—

कटहरके नाम २— पनस १ कण्ट-
किफल २ ॥

—निचुलो हिजलोऽम्बुजः ।

समुद्रफलके नाम ३—निचुल १

हिजल २ अंबुज ३ ॥

काकोदुम्बरिका फल्गूर्मलयूर्ज-
घनेफला ॥ ६१ ॥

कट्टमरके नाम ४—काकोदुम्बरिका
१ फल्गु २ र्मलयूर्ज ३ घनेफला ४ ॥ ६१ ॥

अरिष्टः सर्वतोभद्रहिङ्गुनिर्यासमा-
लकाः । पिचुमन्दश्च निंबे—

नींबके नाम ६—अरिष्ट १ सर्व-
तोभद्र २ हिङ्गुनिर्यास ३ मालक ४

पिचुमन्द ५ निंब ६ ॥

—ऽथ पिच्छिलाऽगुरुशिशपाः ॥ ६२ ॥

सीसमके नाम ३—पिच्छिला १
गुरु २ शिशपा ३ ॥ ६२ ॥

कपिला भस्मगर्भा सा—

कृष्णवर्ण सीसमका नाम १—
भस्मगर्भा ॥

—शिरीषस्तु कपीतनः ।

भण्डिलो—

शिरिसके नाम ३—शिरीष १ कपी-
तन २ भण्डिल ३ ॥

—ऽप्यथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपु-
ष्पकः ॥ ६३ ॥

चम्पेके नाम ३ ॥ चाम्पेय १
चम्पक २ हेमपुष्पक ३ ॥ ६३ ॥

एतस्य कलिका गन्धफली स्या-
चम्पेकी कलीका नाम १—गन्ध-
फली १ ॥

—दय केसरे । बकुलो—

मौलसिरीके नाम २—केसर १
बकुल २ ॥

वज्जुलोऽशोके—

अशोकके नाम २—वज्जुल १
अशोक २ ॥

—समौ करकदाडिमौ ॥ ६४ ॥

अनारके नाम २ करक १ दा-
डिम २ ॥ ६४ ॥

चाम्पेयः केसरो नागकेसरः
काञ्चनाह्वयः ।

चंपापुष्पके नाम ४—चंपिय १
कसर २ नागकेसर ३ काञ्चनाह्वय ४॥

जया जयन्ती तर्कारी नादेयी
वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥

जाहीके नाम ५—जया १ जयं-
ती २ तर्कारी ३ नादेयी ४ वैजयन्तिका
५ ॥ ६५ ॥

श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कणिका
गणिकारिका । जयो—

अरणीके नाम ५—श्रीपण १ अग्नि-
मन्थ २ कणिका ३ गणिकारिका ४ जय ५ ॥

—ऽथ कुटजः शक्रो वत्सको
गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥

कुरयाके नाम ४—कुटज १ शक्र
२ वत्सक ३ गिरिमल्लिका ४ ॥ ६६ ॥

एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं
फले ।

इन्द्रजव अर्थात् कुरैयाके फलके नाम
३—कलिङ्ग १ इन्द्रयव २ भद्रयव ३ ॥

कृष्णपाकफलाविग्रसुषेणाः क-
रमर्दके ॥ ६७ ॥

करोँदाके नाम ४—कृष्णपाकफल १
अविग्र २ सुषेण ३ करमर्दक ४ ॥ ६७ ॥

कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापि-
च्छो—

तमालके नाम ३—कालस्कन्ध १
तमाल २ तापिच्छ ३ ॥

—एतथ सिन्दुके ।

सिंदुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणि-
केत्यापि ॥ ६८ ॥

म्योंडी (सिंभाख) के नाम ५—सिन्दुक
१ सिन्दुवार २ इन्द्रसुरस ३ निर्गुण्डी
४ इन्द्राणिका ५ ॥ ६८ ॥

वेणी खरा गरी देवताडो जीमूत
इत्यापि ।

वृन्दाल वृक्ष जो गुजरातमें गोडी
प्रसिद्ध है उसके नाम ५—वेणी १
खरा २ गरी ३ देवताड ४ जीमूत ५ ॥

श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी—
घुइयां (अरवी) के नाम ४—श्रीह-
स्तिनी १ भूरुण्डी २ ॥

—तृणशून्यं तु मल्लिका ॥ ६९ ॥
भूपदी शीतभरिश्च—

बेला (मल्लिका) क नाम २—तृण-
शून्य १ मल्लिका २ ॥ ६९ ॥ भूपदी ३
शीतभीरु ४ ॥

—सैवारुफोटा वनोद्भवा ।
वनवेलाका नाम १—आरुफोटा १ ॥

शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी
नीलिका च सा ॥ ७० ॥

न्यवारी (काले पुष्पवाली निर्गुण्डी)
के नाम ४—शेफालिका १ सुवहा २
निर्गुण्डी ३ नीलिका ४ ॥ ७० ॥

सितासौ श्वेतसुरसा भूतवेश्य—

उजडी नेवाडीके नाम २—श्वेत—
सुरसा १ भूतवेशी २ ॥

—थ मागधी ।

गणिका यूथिकाम्बुछा—

जुहीके नाम ४—मागधी १ गणि-
का २ यूथिका ३ अंबुछा ४ ॥

—सा पीता हेमपुष्पिका ॥ ७१ ॥

पीले फूलकी जुहीका नाम १—हेमपु-
ष्पिका १ ॥ ७१ ॥

अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती
माधवी लता ।

वसन्तीके नाम ५—अतिमुक्त १ पु-
ण्ड्रक २ वासन्ती ३ माधवी ४ लता ५ ॥

सुमना मालती जातिः—

चमेलीके नाम ३—सुमनस १
मालती २ जाति ३ ॥

—सप्तला नवमालिका ॥ ७२ ॥

वर्षाकी बेलीके नाम २—सप्तला १
नवमालिका २ ॥ ७२ ॥

माध्यंकुन्द—

कुन्दके नाम २—माध्य १ कुन्द २ ॥

—रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीविकः ।

दुपहरी फूलके नाम ३—रक्तक १
बन्धूक २ बन्धुजीविक ३ ॥

सहा कुमारी तरणि—

धीग्वारके नाम ३—सहा १ कुमारी
२ तरणि ३ ॥

—रम्लानस्तु महासहा ॥ ७३ ॥

कटैयाके नाम २—अम्ला न १ महा-
सहा २ ॥ ७३ ॥

तत्र शोणे कुरवक—

लाल कटैयाका नाम १—कुरवक १ ॥

—स्तत्र पीते कुरण्टकः ।

पीली कटैयाका नाम १—कुरण्टक
१ ॥ नीलि झिण्टी द्वयोर्बाणा दासी
चार्तगलश्च सा ॥ ७४ ॥

नीली झिंडीके नाम ३—बाणा १
दासी २ आर्तगल ३ ॥ ७४ ॥

सैरेयकस्तु झिण्टी स्या—

झिंडीमात्रके नाम २—सैरेयक १
झिण्टी २ ॥

—तस्मिन्कुरवकोऽरुणे ।

लाल झिण्टीका नाम १—कुरवक १ ॥
पीता कुरण्टको झिण्टी तस्मि-
न्सहचरी द्वयोः ॥ ७५ ॥

पीली झिंडीके नाम २—कुरण्टक १
सहचरी २ ॥ ७५ ॥

ओण्डूपुष्पं जपापुष्पं—

गुडहरके नाम २—ओण्डूपुष्प १
जपापुष्प २ ॥

—वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ।

तिलीके फूलका नाम १-वज्रपुष्प १॥

प्रतिहासशतप्रासचण्डातहय-

मारकाः ॥ ७६ ॥ करवीरे-

कंदइल (कनेर) के नाम ५-

प्रतिहास १ शतप्रास २ चण्डात ३

हयमारक ४ ॥ ७६ ॥ करवीर ५॥

-कारर तु क्रकयन्थिलावुभौ ।

करीरके नाम ३-रीर १ क्रकर

२ ग्रन्थिल ३ ॥

उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तरः

कनकाह्वयः ॥ ७७ ॥

मातुलो मदनश्चा-

धतूरेके नाम ७-उन्मत्त १ कितव

२ धूर्त ३ धत्तर ४ कनकाह्वय ५॥ ७७॥

मातुल ६ मदन ७ ॥

-ऽस्य फले मातुलपुत्रकः ।

धतूरेके फलका नाम १-मातुल-

पुत्रक १ ॥

फलपूरो बीजपूरो-

विजौरा निंबूके नाम २-फलपूर १

बीजपूर २ ॥ ७८ ॥

रुचको मातुलङ्गके ॥ ७८ ॥

विजौरा निंबूके भेद मातुलङ्ग १

रुचक २ ॥

समीरणो मरुवकः प्रस्थपुष्पः

फणिज्जकः । जम्बीरो-

मरुआके नाम ५-समीरण १

मरुवक २ प्रस्थपुष्प ३ फणिज्जक ४

जम्बीर ५ ॥

-ऽप्यथ पर्णासे कठिञ्जरकुठे-

रकौ ॥ ७९ ॥

पनसके नाम ३-पर्णास १ कठि

ञ्जर २ कुठेरक ३ ॥ ७९ ॥

सितेऽर्जकोऽत्र-

श्वेत पनसका नाम १-अजक १॥

-पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः ।

चीतके नाम ३-पाटी १ चित्रक २

वह्निसंज्ञक ३ जितने अग्निके नाम उतने

भी चीतेके नाम हैं ॥

अर्काह्वयसुकाऽऽस्फोटगणरूप-

विकीरणाः ॥ ८० ॥ मन्दारश्चा-

र्कपर्णा-

आकके नाम ७-अर्काह्व १ वसुक

२ आस्फोट ३ गणरूप ४ विकीरण

५ ॥ ८० ॥ मन्दार ६ अर्कपर्ण ७

सूर्यके सब नाम आकके नाम हैं ॥

-ऽत्र शुक्लेलर्कप्रतापसौ ।

श्वेत आकके नाम २ अलर्क १

प्रतापस २ ॥

शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो

बुको वसुः ॥ ८१ ॥

गूमेके नाम ५-शिवमल्ली १ पा-

शुपत २ एकाष्ठील ३ बुक ४ वसु

५ ॥ ८१ ॥

वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीव-
न्तिकेत्यपि ।

आकाश्वेलके नाम ४—वन्दा १
वृक्षादनी २ वृक्षरुहा ३ जीवन्तिका ४ ।

वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची
तन्त्रिकाऽमृता ॥ ८२ ॥ जीव-
न्तिका सोमवल्ली विशल्या
मधुपर्ण्यपि ।

गिलोयके नाम ९—वत्सादनी १
छिन्नरुहा २ गुडूची ३ तन्त्रिका ४ अ-
मृता ५ ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका ६ सोम-
वल्ली ७ विशल्या ८ मधुपर्णी ९ ॥

मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा ते-
जनी स्रवा ॥ ८३ ॥ मधूलिका
मधुश्रेणी गोकर्णी पिलुपर्ण्यपि ।

चिनारके नाम १०—मूर्वा १ देवी
२ मधुरसा ३ मोरटा ४ तेजनी ५
स्रवा ६ ॥ ८३ ॥ मधूलिका ७ मधु-
श्रेणी ८ गोकर्णी ९ पिलुपर्णी १० ॥

पाठाम्बुष्ठा विद्वकर्णी स्थापनी
श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥ एकाष्टी-
ला पापवेली प्राचीना वनति-
क्तिका ।

पेठेके नाम १०—पाठा १ अम्बुष्ठा
२ विद्वकर्णी ३ स्थापनी ४ श्रेयसी ५
रसा ६ ॥ ८४ ॥ एकाष्टीला ७ पाप-
वेली ८ प्राचीना ९ वनतिक्तिका १० ॥

कटुः कटुम्भराऽशोकरोहिणी
कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥ मत्स्यपित्ता

कृष्णभेदी चक्रांगी शकुलादनी ॥

कुटकीके नाम ८—कटु १ क-

टुम्भरा २ अशोकरोहिणी ३ कटुरो-

हिणी ४ ॥ ८५ ॥ मत्स्यपित्ता ५

कृष्णभेदी ६ चक्रांगी ७ शकुलादनी ८ ॥

आत्मगुप्ताजहाऽव्यण्डा कण्डूरा

प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रो-

क्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च

मर्कटी ।

कचके नाम ९—आत्मगुप्ता १

अजहा २ अव्यण्डा ३ कण्डूरा ४ प्रावृ-

षायणी ५ ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता ६

शूकशिम्बि ७ कपिकच्छु ८ मर्कटी ९ ॥

त्रिप्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती

शम्बरी वृषा ॥ ८७ ॥ प्रत्यक्छ्रे-

णी सुतश्रेणी रण्डा मूषिकप-

र्ण्यपि ।

मूलीके नाम १०—चित्रा १ उप-

चित्रा २ न्यग्रोधी ३ द्रवन्ती ४ शम्बरी

वृषा ५ ॥ ८७ ॥ प्रत्यक्छ्रेणी ७ सुत-

श्रेणी ८ रण्डा ९ मूषिकपर्णी १० ॥

अपामार्गः शैखरिकोऽधामार्ग-

वमयूरकौ ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्णी

केशपर्णी किण्णिही खरमञ्जरी ।

अपामार्गके नाम ८—अपामार्ग १

शैखरिक २ अधामार्गव ३ मयूरक ४
॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्णी ५ केशपर्णी ६
किणिही ७ खरमञ्जरी ८ ॥

हञ्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी
ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥ अंगार-
वल्ली बालेयशाकवर्वरवर्धकाः ।

भारंगीके नाम ९.— हञ्जिका १
ब्राह्मणी २ पद्मा ३ भार्गी ४ ब्राह्म-
णयष्टिका ५ ॥ ८९ ॥ अंगारवल्ली
६ बालेयशाक ७ वर्वर ८ वर्धक ९ ॥

मञ्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समंगा
कालमेषिका ॥ ९० ॥ मण्डूकपर्णी
मण्डीरी भण्डी योजनवल्लीयपि ।

मंजीठके नाम ९.— मंजिष्ठा १
विकसा २ जिङ्गी ३ समंगा ४ काल-
मेषिका ५ ॥ ९० ॥ मण्डूकपर्णी ६
मण्डीरी ७ भण्डी ८ योजनवल्ली ९ ॥

यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्व-
यासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥ रोदनी क-
च्छुरानन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ।

जवासेके नाम १०.— यास १
यवास २ दुःस्पर्श ३ धन्वयास ४
कुनाशक ५ ॥ ९१ ॥ रोदनी ६
कच्छुरा ७ अनन्ता ८ समुद्रान्ता ९
दुरालभा १० ॥

पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्य-
त्रिपर्णिका ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना

सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा ।

पिठिवनके नाम ९.— पृश्निपर्णी १
पृथक्पर्णी २ चित्रपर्णी ३ अंघ्रिपर्णिका
४ ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी
६ कलशी ७ धावनी ८ गुहा ९ ॥

निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री
वृहती कण्टकारिका ॥ ९३ ॥
प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा
राष्ट्रिकेत्यपि ।

भटकटैया (कटेहली) के नाम
१०.— निदिग्धिका १ स्पृशी २ व्याघ्री ३
वृहती ४ कण्टकारिका ५ ॥ ९३ ॥
प्रचोदनी ६ कुली ७ क्षुद्रा ८ दुःस्पर्शा
९ राष्ट्रिका १० ॥

नीली काला क्लीतकिका ग्रामी-
णा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥ रञ्जनी
श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला च
नीलिनी ।

नीलके नाम ११.— नीली १ काला
२ क्लीतकिका ३ ग्रामीणा ४ मधु-
पर्णिका ५ ॥ ९४ ॥ रञ्जनी ६ श्रीफली
७ तुत्था ८ द्रोणी ९ दोला १०
नीलिनी ११ ॥

अवलगुजः सोमराजी सुवलिः
सोमवलिका ॥ ९५ ॥ कालमेषी
कृष्णफला बाकुची पूतिफल्यपि ।

बकुचीके नाम ८—अवलगुज १
सोमराजी २ सुवल्लि ३ सोमवल्लिका ४
॥ ९५ ॥ कालमेषी ५ कृष्णफला ६
बाकुची ७ पूतिफली ८ ॥

कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी
चपला कणा ॥ ९६ ॥ उषणा
पिप्पली शौण्डी कोला—

पीपलके नाम १०—कृष्णा १
उपकुल्या २ वैदेही ३ मागधी ४
चपला ५ कणा ६ ॥ ९६ ॥ उषणा
७ पिप्पली ८ शौण्डी ९ कोला १० ॥

—ऽथ करिपिप्पली ।

कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी
वशिरः पुमान् ॥ ९७ ॥

गजपीपलके नाम ९—करिपिप्पली
१ कपिवल्ली २ कोलवल्ली ३ श्रेयसी ४
वशिरः ५ ॥ ९७ ॥

चव्यं तु चविका—

चाबके नाम २—चव्य १ चविका २ ॥

काकचिश्चागुञ्जे तु कृष्णला ।

धुंधुची (चिरमठी) के नाम ३—
काकचिचा १ गुंजा २ कृष्णला ३ ॥

पलंकषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा
स्वादुकण्टकः ॥ ९८ ॥ गोक-
ण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ।

गोखरूके नाम ७—पलंकषा १
इक्षुगन्धा २ श्वदंष्ट्रा ३ स्वादुकण्टक

४ ॥ ९८ ॥ गोकण्टक ५ गोक्षुरक
६ वनशृङ्गाट ७ ॥

विश्वा विषा प्रतिविषाऽतिवि-
षोपविषारुणा ॥ ९९ ॥ शृंगी
महौषधं चा—

अतीसके नाम ८—विश्वा १ विषा २
प्रतिविषा ३ अतिविषा ४ उपविषा ५
अरुणा ६ ॥ ९९ ॥ शृंगी ७ महौषध ८ ॥

—ऽथ क्षीरावी दुग्धिका समे ।
दूधीके नाम २—क्षीरावी १ दुग्धिका २ ॥

शतमूली बहुसुताऽभीरुर्इन्दी-
वरी वरी ॥ १०० ॥ ऋष्यप्रोक्ता-
ऽभीरुपत्री नारायण्यः शतावरी ।
अहेरु—

शतावसके नाम १०—शतमूली
१ बहुसुता २ अभीरु ३ इन्दीवरी ४
वरी ५ ॥ १०० ॥ ऋष्यप्रोक्ता ६
अभीरुपत्री ७ नारायणी ८ शतावरी
९ अहेरु १० ॥

—ऽथ पीतद्रुकालेयकहरिद्रवः
॥ १०१ ॥ दार्वी पचम्पचा दारु-
हरिद्रा पर्जनित्यापि ।

दारुहल्लीके नाम ७—पीतद्रु १
कालेयक २ हरिद्रु ३ ॥ १०१ ॥ दार्वी
पचम्पचा ५ दारुहरिद्रा ६ पर्जनी ७ ॥

वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी
शतपर्णिका ॥ १०२ ॥

वचके नाम ५-वचा १ उग्रगन्धा
२ षड्ग्रन्था ३ गोलोमी ४ शत-
पर्विका ५ ॥ १०२ ॥

शुक्ला हैमवती-

जिसका श्वेत जड हो उस वचका
नाम १-हैमवती १ ॥

-वैद्यमातृसिंहौ तु वाशिका ।
वृषोऽटरूषः सिंहास्यो वासिको
वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥

अड्डसेके नाम ८-वैद्यमातृ १सिंही
२ वाशिका ३ वृष ४ अटरूष ५ सिंहास्य
६ वासिक ७ वाजिदन्तक ८ ॥ १०३ ॥

आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णु-
क्रान्तापराजिता ।

विष्णुक्रान्ताके नाम ४-आस्फोटा
१ गिरिकर्णी २ विष्णुक्रान्ता ३ अपरा-
जिता ४ ॥

इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षुकोकिलाक्षे-
क्षुरक्षुराः ॥ १०४ ॥

तालमखानेके नाम ५-इक्षुगन्धा
१ काण्डेक्षु २ कोकिलाक्ष ३ इक्षुर ४
क्षुर ५ ॥ १०४ ॥

शालेयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा
मधुरिका मिसिः ।

मिश्रेया-

सोंफके नाम ६-शालेय १ चीत-
शिव २ छत्रा ३ मधुरिका ४ मिसि ५
मिश्रेया ६ ॥

-प्यथ सीहुण्डो वज्रः स्नुक्स्त्रीस्नुही
गुडा ॥ १०५ ॥ समन्तदुग्धा-

सेहुड (थोहर) के नाम ६-सीहुंड
१ वज्र २ स्नुह ३ स्नुही ४ गुडा ५ ॥
॥ १०५ ॥ समन्तदुग्धा ३ ॥

-ऽथो वेल्लममोधा चित्रतण्डुला ।
तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुंन-
पुंसकम् ॥ १०६ ॥

वायविडंगके नाम ६-वेल्ल १
अमोधा २ चित्रतण्डुला ३ तण्डुल ४
कृमिघ्न ५ विडङ्ग ६ ॥ १०६ ॥

बला वाट्यालको-
वरियरा (खरहँटी) के नाम २-
बला १ वाट्यालक २ ॥

-घण्टारवा तु शणपुष्पिका ।
सनाटाके नाम २-घण्टारवा १
शणपुष्पिका २ ॥

मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी
मधुरसेति च ॥ १०७ ॥

दाखक नाम ५-मृद्वीका १
गोस्तनी २ द्राक्षा ३ स्वाद्वी ४ मधु-
रसा ५ ॥ १०७ ॥

सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता
त्रिवृत् । त्रिभण्डी रोचनी-

श्वेत त्रिधारा (निसोत) के नाम ७ ॥
सर्वानुभूति १ सरला २ त्रिपुटा ३ त्रिवृता
४ त्रिवृत् ५ त्रिभण्डी ६ रोचनी ७-

—श्यामापालिन्धौ तु सुषेणिका
॥ १०८ ॥ काला मसूरविदलाऽ-
र्धचन्द्रा कालमेषिका ।

काले त्रिवारे (निसोत)के नाम ७—
श्यामा १ पालिन्दी २ सुषेणिका ३
॥ १०८ ॥ काला ४ मसूरविदला ५
अर्द्धचन्द्रा ६ कालमेषिका ७ ॥

मधुकं क्लीतकं यष्टीमधुकं मधुय-
ष्टिका ॥ १०९ ॥

जेठीमधुके नाम ४—मधुक १
क्लीतक २ यष्टीमधुक ३ मधुयष्टिका ४
॥ १०९ ॥

विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा
क्रोष्टी तु या सिता ।

कृष्णभूकृष्माण्डके नाम ४—विदारी
१ क्षीरशुक्ला २ इक्षुगन्धा ३ क्रोष्टी ४ ॥

अन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेत-
र्क्षगन्धिका ॥ ११० ॥

शुक्लभूकृष्माण्डके नाम ३—क्षीरवि-
दारी १ महाश्वेता २ ऋक्षगन्धिका ३ ॥
॥ ११० ॥

लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली
शकुलादनी ।

जलपीपलके नाम ४—लाङ्गली १
शारदी २ तोयपिप्पली ३ शकुलादनी ४ ॥

खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो
लोचमस्तकः ॥ १११ ॥

मयूरशिखा वा अजुमोदके नाम ५—
खराश्वा १ कारवी २ दीप्य ३ मयूर ४
लोचमस्तक ५ ॥ १११ ॥

गोपी श्यामा शारिवा स्या-
दनन्तोत्पलशारिवा ।

कालीशाम्ब (अनंतमूल)के नाम ५—
गोपी १ श्यामा २ शारिवा ३ अनन्ता ४
उत्पलशारिवा ५ ॥

योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ—
ऋद्धि, औषधिके नाम ४—योग्य १
ऋद्धि २ सिद्धि ३ लक्ष्मी ४ ॥

—वृद्धेरप्याह्वया इमे ॥ ११२ ॥
ये ही नाम वृद्धिनामक औषधिकेभी
होते हैं ॥ ११२ ॥

कदली वारणबुसा रम्भा मोचां-
शुमत्फला । काष्ठीला—

केलेके नाम ६—कदली १ वारण-
बुसा २ रम्भा ३ मोचा ४ अंशुमत्फला
५ काष्ठीला ६ ॥

—मुद्रपर्णी तु काकमुद्रा सहे-
त्यापि ॥ ११३ ॥

वनमृगके नाम ३—मुद्रपर्णी १
काकमुद्रा २ सहा ३ ॥ ११३ ॥

वार्ताकी हिंशुली सिंही भण्टाकी
दुष्प्रधार्षिणी ।

वनभंटे (रानकटेहली)के नाम ५—

वार्ताकी १ हिंगुली २ सिंही ३ भण्टाकी
४ दुष्प्रवर्षिणी ५ ॥

नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा
गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥ नकुलेश
भुजंगाक्षी छत्राकी सुवहा
च सा ।

रासन (तुलसी) के नाम ९—
नाकुली १ सुरसा २ रास्ना ३ सुगन्धा ४
गन्धनाकुली ५ ॥ ११४ ॥ नकुलेश ६
भुजंगाक्षी ७ छत्राकी ९ सुवहा ९ ॥

विदारिगन्धांशुमती सालपर्णी
स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥

शालपर्णी वा सरिवनके नाम ५—
विदारिगन्धा १ अंशुमती २ सालपर्णी
३ स्थिरा ४ ध्रुवा ५ ॥ ११५ ॥

तुंडिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी
बदरोते च ।

कपासके नाम ४—तुंडिकेरी १
समुद्रान्ता २ कार्पासी ३ बदरा ४ ॥

भारद्वाजी तु सा वन्या—
वनकी कपास अर्थात् नरमाका नाम
१—भारद्वाजी १ ॥

शृंगी तु ऋषभो वृषः ॥ ११६ ॥

काकडासींगीके नाम ३—शृंगी १
ऋषभ २ वृष ३ ॥ ११६ ॥

गांगेरुकी नागबला शषा हस्व-
गवेधुका ॥

ककही (गंगेरु) के नाम ४—

गांगेरुकी १ नागबला २ शषा ३
हस्वगवेधुका ४ ॥

धामार्गवो घोषकः स्या—
श्वेत तुरईके नाम २—धामार्गव
१ घोषक २ ॥

—न्महाजाली स पीतकः ॥ ११७ ॥

पीलेलकी तुरईका नाम १—
महाजाली १ ॥ ११७ ॥

ज्योत्स्नी पटोलिका जाली—
चवैदेके नाम ३—ज्योत्स्नी १
पटोलिका २ जाली ३ ॥

—नादेयी भूमिजम्बुका ।
भूमिजामुनके नाम २—नादेयी १
भूमिजम्बुका २ ॥

स्याल्लांगलिक्यग्निशिखा—
करियारी (कलहारी) के नाम २—
लांगलिकी १ अग्निशिखा २ ॥

—काकांगी काकनासिका ॥ ११८ ॥
काकजंघा अर्थात् कौवाठोढी
(मकोह) के नाम २—काकांगी १
काकनासिका २ ॥ ११८ ॥

गोधापदी तु सुवहा—
हंसपदी (लजावती) के नाम २—

गोधापदी १ सुवहा—
—मुसली तालमूलिका ।

मुसलीके नाम २—मुसली १ ताल-
मूलिका २ ॥

—अजशृंगी विषाणी स्या—
मेढासींगीके नाम २—अजशृंगी १
विषाणी २ ॥

—द्रोजिह्वादार्विके समे ॥ ११९ ॥
गोमीके नाम २—गोजिह्वा १
दार्विका २ ॥ ११९ ॥

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्य-
नागवेल अर्थात् पानके नाम ३—
ताम्बूलवल्ली १ ताम्बूली २ नागवल्ली ३ ॥

—प्यथ द्विजा ।
हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्म-
गन्धिनी ॥ १२० ॥

गगनधूरिके (नाम ६—द्विजा १
हरेणु २ रेणुका ३ कौन्ती ४ कपिला
५ भस्मगन्धिनी ६ ॥ १२० ॥

एलावालुकमैलेयं सुगन्धिहरि-
वालुकम् । वालुकं च—

एलुआ नामक गन्धद्रव्य विशेषके
नाम ५—एलावालुक १ ऐलेय २
सुगन्धि ३ हरिवालुक ४ वालुक ५ ॥

—य पालङ्कायां मुकुन्दः कु-
न्दकुन्दरू ॥ १२१ ॥

पालवाके नाम ४—पालकी १
मुकुन्द २ कुन्द ३ कुन्दुरु ४ ॥ १२१ ॥

वालं हीबेरवर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बु
नाम च ॥

नेत्रवालाके नाम ४—वाला १
हीबेर २ वर्हिष्ठ ३ उदीच्य ४ ॥
केशके और उदकके सब नाम ॥

कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशि-
वानि तु ॥ १२२ ॥ शैलेयं—

शिलाजीतके नाम ५—कालानु-
सार्य १ वृद्ध २ अश्मपुष्प ३ शीत-
शिव ४ ॥ १२२ ॥ शैलेय ५ ॥

—तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी
मुरा । गन्धिनी—

मुरैठी वा तालिसपत्रके नाम ५—
तालपर्णी १ दैत्या २ गन्धकुटी ३
मुरा ४ गन्धिनी ५ ॥

—गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा
॥ १२३ ॥ महेरुणा कुन्दुरुकी
सल्लकी हादिनीति च ।

कांसके नाम ८—गजभक्ष्या १
सुवहा २ सुरभि ३ रसा ४ ॥ १२३ ॥
महेरुणा ५ कुन्दुरुकी ६ सल्लकी ७
हादिनी ८ ॥

—अग्निज्वालासुभिक्षे तु धातकी
धातुपुष्पिका ॥ १२४ ॥

धव (धायफल) के नाम ४—
अग्निज्वाला १ सुभिक्षा २ धातकी ३
धातुपुष्पिका ४ ॥ १२४ ॥

पृथ्वीका चन्द्रवालैश निष्कु-
टिर्बहुला—

बडी इलायचीके नाम ५-पृथ्वीका १
चन्द्रवाला २ एला ३ निष्कुटी ४
बहुला ५ ॥

—इय सा ।

सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुल्या कोरङ्गी
त्रिपुटा त्रुटिः ॥ १२५ ॥

गुजराती (छोटी) इलायचीके
नाम ५-उपकुञ्चिका १ : तुल्या २
कोरङ्गी ३ त्रिपुटा ४ त्रुटि ५ ॥ १२५ ॥

व्याधिः कुष्ठ पारिभाष्यं व्याप्यं
पाकलमुत्पलम् ।

कूठके नाम ६-व्याधि १ कुष्ठ २
पारिभाष्य ३ व्याप्य ४ पाकल ५ उत्पल ६ ॥
शंखिनी चोरपुष्पी स्यात्केशि-

शंखाहुलीके नाम ३-शंखिनी १
चोरपुष्पी २ केशिनी ३ ॥

—न्यथ वितुन्नकः ॥ १२६ ॥

झटामलाज्झटा ताली शिवाताम-
लकीति च ।

भूम्यामलकी अर्थात् अंबरीक नाम
७-वितुन्नक १ ॥ १२६ ॥ झटा २
अमला ३ अज्झटा ४ ताली ५ शिवा
६ तामलकी ७ ॥

प्रपौण्डरीकं पौण्डर्य-

गुलाबके नाम २-प्रपौण्डरीक १
पौण्डर्य २ ॥

—मथ तुन्नः कुबेरकः ॥ १२७ ॥
कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दि-
वृक्षो-

तुन्नके नाम ६-तुन्न १ कुवे-
रक ॥ १२७ ॥ कुणि ३ कच्छ ३ कान्तलक
५ नन्दिवृक्ष ६ ॥

—इय राक्षसी ।

चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पत्रगणहा-
सकाः ॥ १२८ ॥

धनहरीके नाम ६-राक्षसी १
चण्डा २ धनहरी २ क्षेम ४ दुष्पत्र ५
गणहासक ६ ॥ १२८ ॥

व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं
चक्रकारकम् ।

नखा, गन्धद्रव्यके नाम ४-व्याडा-
युध १ व्याघ्रनख २ करज ३ चक्रकारक ४ ॥

सुषिरा विद्रुमलता कपोतांग्रिर्नटी
नली ॥ १२९ ॥

मालकांगनीके नाम ५-सुषिरा १
विद्रुमलता २ कपोतांग्रि ३ नटी ४
नली ५ ॥ १२९ ॥

धमन्यञ्जनकेशी च हनुर्हृदविला-
सिनी ।

ककूदनिके नाम ४-धमनि १ अञ्जन-
केशी २ हनु ३ हृदविलासिनी ४ ॥
शुक्तिः शंखः खुरः कोलदलं नख-

नखी नाम गन्धद्रव्यविशेषके नाम
५-शुक्ति १ शंख २ खुर ३ कोल-
दल ४ नख ५ ॥

—मथाढकी ॥ १३० ॥

काक्षी भृत्स्ना तुवरिका मृत्तालक-
सुराष्ट्रजे ।

अरहरके नाम ६-भाढकी १
॥ १३० ॥ काक्षी १ भृत्स्ना ३ तुवरिका
४ मृत्तालक ५ सुराष्ट्रज ६ ॥

कुटन्नटं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम्
॥ १३१ ॥ प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्ती-
मुस्तकानि च ।

मोथाके नाम ९-कुटन्नट १ दाशपुर
२ वानेय ३ परिपेलव ४ ॥ १३१ ॥
प्लव ५ गोपुर ६ गोनर्दकैवर्ती ८
मुस्तक ९ ॥

ग्रन्थिपर्णं शुक्रं बर्हपुष्पं स्थौणे-
यकुक्कुरे ॥ १३२ ॥

ककरोंके नाम ५-ग्रन्थिपर्ण १ शुक्र २
बर्हपुष्प ३ स्थौणिय ४ कुक्कुर ५ ॥ १३२ ॥

मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी
लता लघुः । समुद्रान्ता वधूः को-
टिवर्षा लंकोपिकेत्यापि ॥ १३३ ॥

अस्परकके नाम १०-मरुन्माला
१ पिशुना २ स्पृक्का ३ देवी ४ लता ५
लघु ६ समुद्रान्ता ७ वधू ८ कोटिवर्षा
९ लंकोपिका ॥ १० ॥ १३३ ॥

तपस्विनी जटा मांसी जटिला
लोमशा मिशी ।

जटामांसीके नाम ६-तपस्विनी १
जटा २ मांसी ३ जटिला ४ लोमशा
५ मिशी ६ ॥

त्वक्पत्रमुत्कटं भृंगं त्वचं चोचं
वराङ्गकम् ॥ १३४ ॥

तजके नाम ६-त्वक्पत्र १ उत्कट २
भृंग ३ त्वच ४ चोच ५ वराङ्गक ६ ॥ १३४ ॥
कर्चूरको द्राविडकः काल्पको
वेधमुख्यकः ।

कर्चूरके नाम ४-कर्चूरक १ द्रावि-
डक ५ काल्पक ३ वेधमुख्य ४ ॥

ओषधो जातिमात्रे स्यु-

सब अन्नोका नाम १-ओषधि १ ॥

—रजातौ सर्वमौषधम् ॥ १३५ ॥

अन्नमात्रका नाम १-ओषध १
॥ १३५ ॥

शाकाख्यं पत्रपुष्पादि-

तर्कारीमात्रका नाम १-शाक १ ॥

—तण्डुलीयोऽल्पमारिषः ।

चौराईके नाम २-तण्डुलीय १ अ-
ल्पमारिष २ ॥

विशल्याग्निशिखाऽनन्ता फलिनी
शक्रपुष्पिका ॥ १३६ ॥

कलियारी इन्द्रपुष्पीके नाम ५-

विशल्या १ अग्निशिखा २ अनन्ता ३

फलिनी ४ शक्रपुष्पिका ५ ॥ १३६ ॥

स्यादक्षगन्धा लुगलान्त्र्यावेगी
वृद्धदारकः । जुङ्गो-

विधारके नाम ५-ऋक्षगन्धा १ लुग-
लान्त्री २ आवेगी ६ वृद्धदारक ४ जुङ्ग ५ ॥

-ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था
सोमवल्लरी ॥ १३७ ॥

ब्राह्मीके नाम ४-ब्राह्मी १ मत्स्याक्षी
२ वयस्था ३ सोमवल्लरी ४ ॥ १३७ ॥

पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी
हिमावती ।

मकोईके नाम ४-पटुपर्णी १
हैमवती २ स्वर्णक्षीरी ३ हिमावती ४ ॥

हयपुच्छी तु काम्बोजी माष-
पर्णी महासहा ॥ १३८ ॥

मूंगके नाम ४-हयपुच्छी १ काम्बोजी
२ माषपर्णी ३ महासहा ४ ॥ १३८ ॥

तुण्डिकेरी रक्तफला विम्बिका
पीलुपर्ण्यापि ।

कुंडुरीके नाम ४-तुण्डिकेरी १
रक्तफला २ विम्बिका ३ पीलुपर्णी ४ ॥

बर्वरा कवरी तुंगी खरपुष्पा-
जगन्धिका ॥ १३९ ॥

बर्वराके नाम ५-बर्वरा १ कवरी २
तुंगी ३ खरपुष्पा ४ अजगन्धिका

५ ॥ १३९ ॥

एलापर्णी तु सुवहा रास्ना
युक्तरसा च सा ।

एलापर्णीके नाम ४-एलापर्णी १
सुवहा २ रास्ना ३ युक्तरसा ४ ॥

चांगेरी चुक्रिका दन्तशठाम्ब-
ष्ठाम्ललोणिका ॥ १४० ॥

अम्लोना वा चूकाके नाम ५-
चांगेरी १ चुक्रिका २ दन्तशठा ३

अम्बष्ठा ४ अम्ललोणिका ५ ॥ १४० ॥

सहस्रवेधी चुकोऽम्लवेतसः
शतवेधयपि ।

अमलवेतके नाम ४-सहस्रवेधी १
चुक्र २ अम्लवेतस ३ शतवेधी ४ ॥

नमस्कारी गण्डकारी समंगा
खदिरेत्यापि ॥ १४१ ॥

किसी २ के मतसे चांगेरी आदि ९
भी अमलवेतके नाम हैं ॥ लजालके

नाम ४-नमस्कारी १ गण्डकारी २
समंगा ३ खदिरा ४ ॥ १४१ ॥

जीवन्ती जीवनी जीवा जीव-
नीया मधुः स्रवा ।

जिसे गुर्जरदेशमें दोड़ी कहते हैं उस
औषधिके नाम ६-जीवन्ती १ जीवनी

२ जीवा ३ जीवनीया ४ मधु ५ स्रवा
६ ॥ कोईक 'मधुस्रवा' एकनाम कहते हैं ॥

कूर्चशीर्षो मधुरकः शृंगह्रस्वा-
ङ्गजीवकाः ॥ १४२ ॥

जीवकके नाम ५-कूर्चशीर्ष १
मधुरक २ शृंग ३ ह्रस्वांग ४ जीवक

५ ॥ १४२ ॥

किराततिक्तो भूनिम्बोऽनार्य-
तिक्तो-

चिरायतेके नाम ३-किराततिक्त-
१ भूनिम्ब २ अनार्यतिक्त ३ ॥

-ऽथ सप्तला ।

विमला सातला भूरिफेना
चर्मकषेत्यपि ॥ १४३ ॥

सोढुण्डमेदके नाम ५-सप्तला १
विमला २ सातला ३ भूरिफेना ४ चर्म-
कषा ५ ॥ १४३ ॥

वायसोली स्वादुरसा वयस्था-
काकोलीके नाम ३-वायसोली १
स्वादुरसा २ वयस्था ॥ ३ ॥

-थ मकूलकः ।

निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्छे-
ण्युदुम्बरपर्ण्यपि ॥ १४४ ॥

वज्रदन्ती अर्थात् दंतियाके नाम
जिसके बीजको जयपाल कहते हैं ५-
मकूलक १ निकुम्भ २ दंतिका ३ प्रत्यक्-
श्रेणी ४ उदुम्बरपर्णी ५ ॥ १४४ ॥

अजमोदा त्र्यगन्धा ब्रह्मदर्भा
यवानिका ।

अजमोद या अजवायनके नाम ६-
अजमोदा १ त्र्यगन्धा २ ब्रह्मदर्भा ३
यवानिका ४ ॥

मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि
पौष्करे ॥ १४५ ॥

पोहकरमूलके नाम ३-पुष्कर १
काश्मीर २ पद्मपत्र ३ ॥ १४५ ॥

अव्यथातिचरा पद्मा चारटी
पद्मचारिणी ।

पद्माखके नाम ५-अव्यथा १
अतिचरा २ पद्मा ३ चारटी ४ पद्म-
चारिणी ५ ॥

काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्तां-
गो रोचनीत्यपि ॥ १४६ ॥

कबीलेके नाम ५-काम्पिल्य १ कर्कश
२ चन्द्र ३ रक्तांग ४ रोचनी ५ ॥ १४६ ॥

प्रपुत्राडस्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्र-
मर्दकः । पद्माट उरणाख्यश्च-

चक्रवड वा पवाडके नाम ६-प्रपु-
त्राड १ एडगज २ दद्रुघ्न ३ चक्रमर्दक
४ पद्माट ५ उरणाख्य ६ ॥

-पलांडुस्तु सुकन्दकः ॥ १४७ ॥

प्याजके नाम २-पलांडु १
सुकन्दक २ ॥ १४७ ॥

लतार्कदुद्रुमौ तत्र हरिते-
हरे प्याजके नाम २-लतार्क १ दुद्रुम २ ॥

-ऽथ महौषधम् ।

लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दर-
सोनकाः ॥ १४८ ॥

लहसुनके नाम ६-महौषध १ लशुन
२ गृञ्जन ३ अरिष्ट ४ महाकन्द ५

रसोनक ६ ॥ १४८ ॥

पुनर्नवा तु शोथघ्नी-

गदहपुरैना (साठी) के नाम २—
पुनर्नवा १ शोथघ्नी २ ॥

—वितुन्नं सुनिषण्णकम् ।

विषखण्डाके नाम २—वितुन्न १
सुनिषण्णक २ ॥

स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता
श्णपण्यपि ॥ १४९ ॥

पटशनके नाम ४—वातक १ शीतल
२ अपराजिता ३ शणपणी ४ ॥ १४९ ॥

पारावताङ्घ्रिः कटभी पण्या
ज्योतिष्मती लता ।

मालकाङ्गनीके नाम ५—पारावताङ्घ्रि
१ कटभी २ पण्या ३ ज्योतिष्मती ४
लता ५ ॥

वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती
बलभद्रिका ॥ १५० ॥

त्रायमाणके नाम ४—वार्षिक १
त्रायमाणा २ त्रायन्ती ३ बलभद्रिका
४ ॥ १५० ॥

विष्वक्सेनाप्रिया गृष्टिर्वाराही
बदरेत्यपि ।

वाराहीकन्दके नाम ४—विष्वक्से-
नाप्रिया १ गृष्टि २ वाराही ३ बदरा ४ ॥

मार्कवो भृङ्गराजः स्यात्—

भृङ्गराज (भंगारा) के नाम २—
मार्कव १ भृङ्गराज २ ॥

—काकमाची तु वायसी ॥ १५१ ॥

कांवैया वा कौवाहांडी गोडी के नाम
२—काकमाची १ वायसी २ ॥ १५१ ॥

शतपुष्पासितच्छत्राऽतिच्छत्रा
मधुरा मिसिः । अवाक्पुष्पी
कारवी च—

सोंफके नाम ७—शतपुष्पा १
सितच्छत्रा २ अतिच्छत्रा ३ मधुरा ४
मिसि ५ अवाक्पुष्पी ६ कारवी ७ ॥

—सरणा तु प्रसारिणी ॥ १५२ ॥
तस्यां कटम्भरा राजबला भद्र-
बलेत्यपि ।

कुञ्जप्रसारिणी वा चांदवेठ वा
प्रसारिणी (खीप) के नाम ५—सरणा
१ प्रसारिणी २ ॥ १५२ ॥ कटम्भरा ३
राजबला ४ भद्रबला ५ ॥

जनी जतूका रजनी जतुकृच्चक्र-
वर्तिनी ॥ १५३ ॥ संस्पर्शा—

चक्रवतके नाम ६—जनी १ जतूका
२ रजनी २ जतुकृत् ४ चक्रवर्तिनी
५ ॥ १५३ ॥ संस्पर्शा ६ ॥

—ऽथ शठी गन्धमूली षड्ग्रन्थि-
केत्यपि । कर्चुरोऽपि पलाशो—

कर्चूरके नाम ५—शठी १ गन्ध-
मूली २ षड्ग्रन्थिका ३ कर्चूर ४
पलाश ५ ॥

—ऽथ कारवेष्ठः काठिल्लकः ॥ १५४ ॥
सुषवी चा—

करेछोंके नाम ३—कारखेल १
कठिलक २ ॥ १५४ ॥ सुषवी ३ ॥
—ऽथ कुलकं पटोलस्तित्तकः
पटुः ।

परवरके नाम ४—कुलक १ पटोल
२ तित्तक ३ पटु ४ ॥

कूष्माण्डकस्तु कर्कारु—

कुम्हडा (कोहला) क नाम २—
कूष्माण्डक १ कर्कारु २ ॥

—रीर्वारुः कर्कटीके स्त्रियौ ॥ १५५
ककडीके नाम २—ईर्वारु १ कर्कटी
२ ॥ १५५ ॥

इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्या—
रामतुरई अर्थात् लौकोके नाम २—
इक्ष्वाकु १ कटुतुम्बी २ ॥

—तुम्ब्यलाबूरुभे समे ।

तुम्बीके नाम २—तुम्बी १ अलाबूर २ ॥

चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा—

जठऊ ककरी (गडुम्बा) के नाम ३—
चित्रा १ गवाक्षी २ गोडुम्बा ३ ॥

—विशाला त्विन्द्रवारुणी ॥ १५६ ॥

इन्द्रवारुणीके नाम २—विशाला १
इन्द्रवारुणी २ ॥ १५६ ॥

—अशोन्नः सुरणः कन्दः—

सुरण अर्थात् जमीकन्दके नाम ३ ॥
अशोन्न १ सुरण २ कन्द ३ ॥

गण्डीरस्तु समाष्टिला ।

गंडरीके नाम २—गंडीर १
समाष्टिला २ ॥

कलम्ब्यु—

करंबुआका नाम १—कलम्बीः १ ॥

—पोदिका—

पोईका नाम १—उपोदिका १ ॥

—स्त्री तु मूलकं—

मूलीका नाम १—मूलक १ ॥

—हिलमोचिका ॥ १५७ ॥

हिलसाका नाम १—हिलमोचिका १
॥ १५७ ॥

वास्तूकं—

बथुण्का नाम १—वास्तूक १ ॥

—शाकभेदाः स्यु—

यह सब शाकके भेद कहे ॥

—दूर्वा तु शतपर्षिका ।

सहस्रवीर्याभार्गव्यौ रुहाऽनन्ता—

दूबके नाम ६—दूर्वा १ शत-
पर्षिका २ सहस्रवीर्या ३ भार्गवी ४
रुहा ५ अनन्ता ६ ॥

—ऽथ सा सिता ॥ १५८ ॥

गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली

शकुलाक्षकः ।

उजली दूबके नाम ४—१५८ ॥

गोलोमी १ शतवीर्या २ गण्डाली ३
शकुलाक्षक ४ ॥

कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता
मुस्तकमास्त्रियाम् ॥ १५९ ॥

मोथाके नाम ४-कुरुविन्द १
मेघनामन् २ मुस्ता ३ मुस्तक ४ ॥
॥ १५९ ॥

स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा-
नागरमोथाके नाम २--भद्रमुस्त-
क १ गुन्द्रा २ ॥

-चूडाला चक्रलोच्चटा ।
मोथाविशेषके नाम ३-- चूडाला
१ चक्रला २ उच्चटा ३ ॥

वंशे त्वक्सारकर्मारत्वाचिसार-
तृणध्वजाः ॥ १६० ॥ शतपर्वा
यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ।

वांशके नाम १०-वंश १ त्व-
क्सार२कर्मार ३ त्वचिसार४तृणध्वज
५ ॥ १६० ॥ शतपर्वन ६ यवफल ७
वेणु ८ मस्कर ९ तेजन १० ॥

वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वन-
न्त्यनिलोद्धताः ॥ १६१ ॥

जो छेदमें वायु जानेसे शब्द करने
लगे उन वांशोंका नाम १-कीचक
१ ॥ १६१ ॥

ग्रान्थिर्ना पर्वपरुषी-
गांठके नाम ३-ग्रन्थि १ पर्वन्
२ परुष ३ ॥

-गुन्द्रस्तेजनकः शरः ।

शरके नाम ३-गुन्द्र १ तेज-
नक २ शर ३ ॥

नडस्तु धमनः पोटगलो-
नलके नाम ३-नड १ धमन २
पोटगल ३ ॥

-ऽथो काशमस्त्रियाम् ॥ १६२ ॥
इक्षुगन्धा पोटगलः-

काशके नाम ३-काश १ ॥ १६२ ॥
इक्षुगन्धा २ पोटगल ३ ॥

-पुंसि भूम्नि तु बल्वजाः ।
बगईका नाम १-बल्वज १ ॥

रसाल इक्षु-
ऊख अर्थात् गन्नाके नाम २-
रसाल १ इक्षु २ ॥

-स्तद्देदाः पुण्ड्रकान्तारका-
दयः ॥ १६३ ॥

पोंडा ऊखके नाम २-पुण्ड्र १
कान्तारक २ आदि ॥ १६३ ॥

-स्थाद्वीरणं वीरतरं-
गांडरके नाम २-वीरण १

वीरतर २ ॥
-मूलोऽस्थोशीरमस्त्रियाम् ।

अभयं नलदं सेव्यममृणालंजला-
शयम् ॥ १६४ ॥ लामज्जकं
लघुलयमवदाहेष्टकापथे ।

गांडरकी जड़ अर्थात् खशके नाम
१०-उशीर १ अभय २ नलद ३ सेव्य

४ अमृणाल ५ जलाशय ६ ॥ १६४ ॥

लामज्जक ७ लघुलय ८ अवदाह ९

इष्टकापथ १० ॥

नडादयस्तृणं गर्मुच्छ्यामाक-
प्रमुखा अपि ॥ १६५ ॥

नलादि गर्मुत् श्यामाक आदिका
नाम १-तृण १ ॥ १६५ ॥

अस्त्री कुशं कुयो दर्भः पवित्र-
कुशके नाम ४-कुश १ कुय २
दर्भ ३ पवित्र ४ ॥

-मय कतृणम् ।

पौरसौगन्धिकध्यामदेवजग्धकरौ-
हिषम् ॥ १६६ ॥

रोहिसके नाम ६-कतृण १ पौर २
सौगन्धिक ३ ध्याम ४ देवजग्धक ५
रौहिष ६ ॥ १६६ ॥

छत्रातिच्छत्रपालघ्नौ-

पानीके तृणके नाम ३-छत्रा १
अतिच्छत्र २ पालघ्न ३ ॥

-मालातृणकभूस्तृणे ।

तृणविशेषके नाम २-मालातृ-
णक १ भूस्तृण २ ॥

शष्पं बालतृणं-

नये तृणके नाम २-शष्प १
बालतृण २ ॥

-घासो यवसं-

घासके नाम २-घास १ यवस २ ॥

-तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥

तृणमात्रके नाम २-तृण १ अर्जुन
२ ॥ १६७ ॥

तृणानां संहतिस्तृण्या-

तृणसमूहका नाम १-तृण्या १ ॥

नड्या तु नडसंहातिः ।

नलोंके समूहका नाम १-नड्या १ ॥

तृणराजाद्वयस्तालो-

ताडके नाम २-तृणराज १ ताल २ ॥

-नालिकेरस्तु लाङ्गली १६८ ॥

नारियलके नाम २-नालिकेर १

लांगली २ ॥ १६८ ॥

घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः
खपुरो-

सुपारीके नाम ५-घोण्टा १ पूग
२ क्रमुक ३ गुवाक ४ खपुर ५ ॥

-ऽस्य तु । फलमुद्गे-

सुपारीके फलका नाम १-
उद्गे १ ॥

-मेते च हिन्तालसाहितास्त्रयः
॥ १६९ ॥ खर्जूरः केतकी ताली

खर्जूरी च तृणद्रुमाः ।

खजूरीके नाम ४- खर्जूर १ केतकी
२ ताली ३ खर्जूरी ४ पेडका तृणद्रुम
नाम है ॥ १६९ ॥

इति वनौषधिवर्गः ४

अथ सिंहादिवर्गः ५.

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः
केसरी हरिः ।

सिंहके नाम ६—सिंह १ मृगेन्द्र २
पञ्चास्य ३ हर्यक्ष ४ केसरिन् ५ हरि ६ ॥

शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे—

बाघके नाम ३—शार्दूल १ द्विपिन् २
व्याघ्र ३ ॥

—तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १ ॥

चीतके नाम २—तरक्षु १ मृगादन
२ ॥ १ ॥

वराहः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री
किरिः किटिः । दंष्ट्री घोणी स्तब्ध-
रोमा क्रोडो भूदार इत्यापि ॥ २ ॥

सूअरके नाम १२—वराह १ सूकर
२ घृष्टि ३ कोल ४ पोत्रिन् ५ किरि ६
किटि ७ दंष्ट्रिन् ८ घोणिन् ९ स्तब्ध-
रोमन् १० क्रोड ११ भूदार १२ ॥ २ ॥

कपिप्लवङ्गप्लवगशाखामृगवली-
मुखाः । मर्कटो वानरः कीशो
वनौका—

वानरके नाम ९—कपि १ प्लवङ्ग २
प्लवग ३ शाखामृग ४ वलीमुख ५ मर्कट
६ वानर ७ कीश ८ वनौकस् ९ ॥

—अथ भल्लुक ॥ ३ ॥

ऋक्षाऽच्छभल्लभल्लूका—

रीछके नाम ४—भल्लुक ४ ॥ ३ ॥

ऋक्ष २ अच्छभल्ल ३ भल्लुक ४ ॥

—गण्डके खड्गखड्गिनौ ।

गैंडेके नाम ३—गण्डक १ खड्ग २
खड्गिन् ३ ॥

लुलायो महिषो वाहद्विषत्कासर-
सैरिभाः ॥ ४ ॥

भैंसेके नाम ५—लुलाय १ महिष २
वाहद्विषत् ३ कासर ४ सैरिभ ५ ॥ ४ ॥

स्त्रियां शिवाभूरिमायगोमायुमृ-
गधूर्तकाः । शृगालवन्चकक्रोष्टु-
फेरुफेरवजम्बुकाः ॥ ५ ॥

सियार—गीदडके नाम १०—शिवा
१ भूरिमाय २ गोमायु ३ मृगधूर्तक ४
शृगाल ५ वंचक ६ क्रोष्टु ७ फेरु ८
फेरव ९ जम्बुक १० ॥ ५ ॥

ओतुविंडालो मार्जारी वृषदंशक
आखुभुक ।

विलावके नाम ५—ओतु १ विंडाल
२ मार्जारी ३ वृषदंशक ४ आखुभुक ५ ॥

त्रयो गौधेरगौधारगौधेया गो-
धिकात्मजे ॥ ६ ॥

चन्दनगोह (गुहेरा) अर्थात् यह
जन्तु काले सर्पस गोहमः उत्पन्न होता
है उसके नाम ३—गौधेर १ गौधार
२ गौधेय ३ ॥ ६ ॥

श्रावित्तु शल्य—

साहीके नाम २—श्वाविद् १ शल्य २ ॥
—स्तलोन्नि शलली शललं शलम् ॥

साहीके परोंके नाम—३शलली
१ शलल २ शल ३ ॥

वातप्रमीर्वातमृगः—

शीघ्रगामी मृगविशेषके नाम २—
वातप्रमी १ वातमृग २ ॥

—कोकस्त्वीहामृगो वृकः ॥ ७ ॥

भेडियेके नाम ३—कोक १ ईहा-
मृग २ वृक ३ ॥ ७ ॥

मृगे कुरंगवातायुहरिणाजिनयो-
नयः ।

मृगके नाम ५—मृग १ कुरङ्ग २
वातायु ३ हरिण ४ अजिनयोनि ५ ॥

ऐणेयमेण्याश्चर्मद्य-

हरिणके चर्म मांसादिका नाम १—
ऐणेय १ ॥

—मेणस्यैण-

हरिणके चर्म मांसादिका नाम १—ऐण १ ॥

—मुभे त्रिषु ॥ ८ ॥

ऐणेय और ऐण ये शब्द तीनों
लिंगोंमें होते हैं ॥ ८ ॥

कदली कन्दली चीनश्चमूरुप्रि-
यकावीप । समूरुश्चेति हरिणा
अमी अजिनयोनयः ॥ ९ ॥

मृगोंके भेद ७—कदलिन् १ कन्द-

लिन् २ चीन ३ चमूरु ४ प्रियक ५
समूरु ६ हरिण ७ ॥ ९ ॥

कृष्णसारुरुन्यंकुरकुशम्बररौहि-
षाः । गोकर्णपृषतैणर्ष्यरोहिताश्च-
मरो मृगाः १० ॥

तथा मृगोंके भेद १२—कृष्णसार
१ रुह २ न्यंकु ३ रंकु ४ शम्बर ५
रौहिष ६ गोकर्ण ७ पृषत ८ एण ९
ऋश्य १० रोहित ११ चमर १२ ॥ १० ॥

गन्धर्वः शरभो रामः सुमरो
गवयः शशः । इत्यादयो मृगे-
न्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयः ॥ ११ ॥

तथा मृगोंके भेद ६—गन्धर्व १
शरभ २ राम ३ सुमर ४ गवय ५ शश
६ इस प्रकार मृग आदि और सिंह
आदि तथा गौआदि पशुजाति कह-
लाते हैं ॥ ११ ॥

उन्दुरुमूर्षकोऽप्याखु-

चूहेके नाम ३—उन्दुरु १ मूर्षक २
आखु ३ ॥

—गिरिका बालमूषिका ।

छोटी चुहियाके नाम २—गिरिका
बालमूषिका २ ॥

सरटः कृकलासः स्या-

गिरगटक नाम २—सरट १ कृक-
लास २ ॥

—नुसली गृहगोघिका ॥ १२ ॥

छपकलीके नाम २—मुसली १
गृहगोधिका २ ॥—१२ ॥

लूता स्त्री तन्तुवायोर्णनाभमर्क- १
टकाः समाः ।

मकडीके नाम ४—लूता १ तन्तुवाय
२ ऊर्णनाभ ३ मर्कटक ४ ॥

नीलंगुस्तु कृमिः—
कीटविशेषके नाम २—नीलंगु १ कृमि २ ।

—कर्णजलौकाः शतपद्युभे ॥ १३ ॥
कानखजुरेके नाम २—कर्णजलौकस्
१ शतपदी २ ॥ १३ ॥

वृश्चिकः शूककीटः स्या—
ऊनी वस्त्रके खानेवाले कीडेके नाम
२—वृश्चिक १ शूककीट २ ॥

—दलिद्रोणौ तु वृश्चिके ।
बीछूके नाम ३—अलि १ द्रोण २
वृश्चिक ३ ॥

पारावतः कलरवः कपोतो—
कवूतरके नाम ३—पारावत १
कलरव २ कपोत ३ ॥

—ऽथ शशादनः ॥ १४ ॥

पत्री श्येन—
बाजके नाम ३—शशादन १ ॥
॥ १४ ॥ पत्रिन् २ श्येन ३ ॥

—उलूकस्तु वायसारातिपेचकौ ।
उलूके नाम ३—उलूक १ वायसा-
राति २ पेचक ३ ॥

व्याघ्राटः स्याद्भरद्वाजः—

भरद्वाज पक्षीके नाम २—व्याघ्राट

१ भरद्वाज २ ॥

खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ १५ ॥

खञ्जनके नाम २—खञ्जरीट १ ॥

खञ्जन २ ॥ १५ ॥

—लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्या—

कंक पक्षीके नाम २—लोहपृष्ठ १ कंक २ ॥

—दथ चाषः किकीदिविः ।

नीलकण्ठके नाम २—चाष १
किकीदिवि २ ॥

कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा—

भस्तकचूडपक्षीके नाम ३—
कलिङ्ग २ भृङ्ग २ धूम्याट ३ ॥

—अथ स्याच्छतपत्रकः ॥ १६ ॥

दार्वाघाटो—

खुटबढई पक्षीके नाम २—शतप-
त्रक १ ॥ १६ ॥ दार्वाघाट २ ॥

—ऽथ सारङ्गस्तोककश्चातकः
समाः ।

पपीहा अर्थात् चातकके नाम ३—
सारङ्ग १ तोकक २ चातक ३ ॥

कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चर-
णायुधः ॥ १७ ॥

मुरगेके नाम ४—कृकवाकु १ ताम्र-
चूड २ कुक्कुट ३ चरणायुध ४ ॥ १७ ॥

चटकः कलविद्धुः स्यात्-
चिरोंटे (चिडे) के नाम २-
चटक १ कलविक २ ॥

-तस्य स्त्री चटका-
चिडियाका नाम १-चटका १ ॥
-तयोः । पुमपत्ये चाटकैरः-
इनके बच्चेका नाम १-चाटकैर १ ॥

-रूपपत्ये चटकैव सा ॥ १८ ॥
इनके बच्चीका नाम १-चटका १ ॥ १८ ॥
कर्करेटुः करेटुः स्यात्-
एक प्रकारके अशुभ शब्द करनेवाले
पक्षीके नाम २-कर्करेटु १ करेटु २ ॥

-कृकणककरौ समौ ।
चिडियाविशेषके नाम २-कृकण १
ककर २ ॥

वनप्रियः परभृतः कोकिलः
पिक इत्यपि ॥ १९ ॥

कोयलके नाम ४-वनप्रिय १
परभृत २ कोकिल ३ पिक ४ ॥ १९ ॥

काके तुः करटारिष्टबलिपुष्टसकृ-
त्पजाः । ध्वाङ्क्ष्वात्मघोषपरभृ-
द्वलिभुग्वायसा अपि ॥ २० ॥

कौवेके नाम १०-काक १ करट
२ अरिष्ट ३ बलिपुष्ट ४ सकृत्पज ५
ध्वाङ्क्ष ६ आत्मघोष ७ परभृत ८
बलिभुज ९ वायस १० ॥ २० ॥

द्रोणकाकस्तु काकोलो-
डोम कौवेके नाम २-द्रोणकाक १
काकोल २ ॥

-दात्यूहः कालकण्ठकः ।
काले कौवेके नाम २-दात्यूह
कालकण्ठक २ ॥

आतापिचिलौ-
चीलके नाम २-आतापि १ चिल २
-दाक्षाय्यगृध्रौ-
गीवके नाम २-दाक्षाय्य १ गृध्र २ ॥
-कीरशुकौ-
तोतेके नाम २-कीर १ शुक २ ॥
-समौ ॥ २१ ॥
आतापि, और चिल, दाक्षाय्य और
गृध्र, तथा कीर और शुक शब्द समा-
नलिग हैं ॥ २१ ॥

कुङ्क्रौञ्चौ-
कौञ्चपक्षीके नाम २-कुञ्च १ कौञ्च २ ॥
-ऽथ वकः कहः-
वगुलेके नाम २-वक १ कह २ ॥
पुष्कराहस्तु सारसः ।

सारसके नाम २-पुष्कराह १ सारस २
कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाहय-
नामकः- ॥ २२ ॥

चक्रई चक्रवाके नाम ४-कोक १
चक्र २ चक्रवाक ३ रथाङ्ग ४ ॥ २२ ॥

कादम्बः कलहंसः स्या—
 वर्तक पक्षीके नाम २—कादम्ब १
 कलहंस २ ॥
 —दुत्क्रोशकुररौ समौ ।
 कुररी पक्षीके नाम २—उत्क्रोश १
 कुरर २ ॥

हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्रांगा मा-
 नसौकसः ॥ २३ ॥
 हंसके नाम ४—हंस १ श्वेतगरुत
 २ चक्रांग ३ मानसौकस्य ४ ॥ २३ ॥
 राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणै-
 र्लोहितैः सिताः ।

जिन हंसोंकी चोंच और पैर लाल
 हों और देह उज्ज्वल हो उन हंसोंका
 नाम १—राजहंस १ ॥

मलिनैर्मल्लिकाक्षस्ते—
 जिन हंसोंके चरणादि मैले हों
 उनका नाम १—मल्लिकाक्ष १ ॥

—धार्तिराष्ट्राः सितेतैः ॥ २४ ॥
 जिनके चोंच और चरण काले हों उन
 हंसोंका नाम १—धार्तिराष्ट्र १ ॥ २४ ॥

शरारिराटिराडिश्च—
 आडी पक्षीके नाम ३—शरारि १
 आटि २ आडि ३ ॥

—बलाका विसकण्ठिका ।
 बगुलेके दूसरी जातिके नाम २—
 बलाका १ विसकण्ठिका २ ॥

हंसस्य योषिद्वरटा—
 हंसनीका नाम १—वरटा १ ॥
 —सारसस्य तु लक्ष्मणा २५ ॥
 सारसकी स्त्रीका नाम १—लक्ष्मणा
 १ ॥ २५ ॥

जतुकाऽजिनपत्रा स्यात्—
 चिमगादरके नाम २—जतुका १
 अजिनपत्रा २ ॥

—परोष्णी तैलपायिका ।
 चपरा पक्षीके नाम २—परोष्णी
 १ तैलपायिका २ ॥

वर्वणा मक्षिका नीला—
 मक्खीके नाम ३—वर्वणा १
 मक्षिका २ नीला ३ ॥

—सरघा मधुमक्षिका ॥ २६ ॥
 शहदकी मक्खीके नाम २—सरघा
 १ मधुमक्षिका २ ॥ २६ ॥

पतङ्गिका पुत्तिका स्या—
 छोटी मधुमक्खीके नाम २ ॥
 पतङ्गिका १ पुत्तिका २ ॥

—दंशस्तु वनमक्षिका ।
 डांसके नाम २—दंश १ वनमक्षिका २ ॥

दंशी तज्जातिरल्पा स्या—
 छोटे डांसका नाम १—दंशी १ ॥
 —गन्धोली वरटा द्वयोः ॥ २७ ॥

गन्धोली मक्खीके नाम २—गंधोली
 १ वरटा २ ॥ २७ ॥

भृंगारी झरुका चीरी झिल्लि-
का च समा इमाः ।

झींगरके नाम ४-भृंगारी १
झीरुका २ चीरी ३ झिल्लिका ४ ॥

समौ पतंगशलभौ-

पतंगके नाम २-पतंग १शलभ २ ॥

-खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ २८ ॥

जुगुनू कीडेके नाम २-खद्योत
१ ज्योतिरिङ्गण २ ॥ २८ ॥

मधुव्रतो मधुकरो मधुलिण्म-
धुपालिनः । द्विरेफपुष्पलिङ्गभृ-
गषट्पदभ्रमरालयः ॥ २९ ॥

भँवरेके नाम ११-मधुव्रत १ मधु-
कर २ मधुलिह ३ मधुप ४ अलि ५
द्विरेफ ६ पुष्पलिह ७ शृङ्ग ८ षट्पद
९ भ्रमर १० अलि ११ ॥ २९ ॥

मयूरो बर्हिणो बर्ही नीलकण्ठो
भुजंगभुक् । शिखावलः शिखी
केकी मेवनादानुलास्यपि ॥ ३० ॥

मोरके नाम ९-मयूर १ बर्हिण २
बर्हिन् ३ नीलकण्ठ ४ भुजंगभुज् ५ शिखा-
वल ६ शिखिन् ७ केकिन् ८ मेव-
नादानुलासिन् ९ ॥ ३० ॥

केका वाणी मयूरस्य-

मोरके शब्दका नाम १-केका १ ॥

समौ चन्द्रकमेचकौ ।

मोरके परोंपर चन्द्राकार चिहोंके
नाम २-चन्द्रक १ मेचक २ ॥

शिखा चूडा-

मोरकी चोटीके नाम २-शिखा १
चूडा २ ॥

-शिखण्डस्तु पिच्छवर्हं नष्टु-
सके ॥ ३१ ॥

मोरके परोंके नाम ३-शिखण्ड १
पिच्छ २ वर्ह ३ ॥ ३१ ॥

खगे विहंगविहगविहंगमविहा-
यसः । शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्त-
शकुनद्विजाः ॥ ३२ ॥ पतत्रिपत्रि-
पतगपतत्पत्ररथाण्डजाः । नगौ-
कोवाजिविकिरविविष्किरपतत्रयः ॥
॥ ३३ ॥ नीडोद्भवा गरुत्मन्तः
पित्सन्तो नभसंगमाः ।

पक्षीमात्रके नाम २७-खग १ वि-
हंग २ विहग ३ विहंगम ४ विहायस ५
शकुन्ति ६ पक्षिन् ७ शकुनि ८ शकुन्त
९ शकुन १० द्विज ११ ॥ ३२ ॥
पतत्रिन् १२ पत्रिन् १३ पतग १४
पतत् १५ पत्ररथ १६ अण्डज १७
नगौकस १८ वाजिन् १९ विकिर २०
वि २१ विष्किर २२ पतत्रि २३
॥ ३३ ॥ नीडोद्भव २४ गरुत्मत् २५
पित्सत् २६ नभसंगम २७ ॥

तेषां विशेषा हारीतो महुः
कारण्डवः प्लवः ॥ ३४ ॥ तित्तिरिः

कुक्कुभो लावो जीवज्विश्च-
कोरकः । कोयष्टिकष्टिष्टिभको

वर्तको वर्तिकादयः ॥ ३५ ॥

पक्षियोंके भेद १३-हारीत १

मद्गु २ कारण्डव ३ प्लव ४ ॥ ३४ ॥

तित्तिरि ५ कुक्कुभ ६ लाव ७ जीव-

जीव ८ चकोरकः ९ कोयष्टिक १०

टिट्टिभक ११ वर्तक १२ वर्तिका १३

इत्यादि ॥ ३५ ॥

गरुरपक्षच्छदाः पत्रं पतत्रं च

तनूरुहन् ।

पक्षियोंके परोंके नाम ६-गरुड १

पक्ष २ छद ३ पत्र ४ पतत्र ५ तनूरुह ६ ॥

स्त्री पक्षतिः पक्षमूलं-

पक्षियोंक बाजके नाम २-

पक्षति १ पक्षमूल २ ॥

-चञ्चुस्त्रोटिरुभे स्त्रियौ ॥ ३६ ॥

चोंचके नाम २-चञ्चु १

त्रोटि २ ॥ ३६ ॥

प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः खग-

गतिक्रियाः ।

पक्षियोंकी चालके भेद ३ -

प्रडीन १ उड्डीन २ संडीन ३ ॥

पेशी कोशो द्विहीनेऽण्डं-

अण्डेके नाम ३-पेशी १ कोश २

अण्ड ३ ॥

-कुलायो नीडमस्त्रियाम् ॥ ३७ ॥

पक्षियोंके घरके नाम २-कुलाय

१ नीड २ ॥ ३७ ॥

पोतः पाकोऽर्भको डिम्बः पृथुकः

शावकः शिशुः ।

पक्षियोंके वा साधारण बच्चोंके

नाम ७-पोत १ पाक २ अर्भक ३

डिम्ब ४ पृथुक ५ शाकक शिशु ७ ॥

स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्द्वं-

स्त्रीपुरुषके जोड़ेके नाम ३-

स्त्रीपुंस १ मिथुन २ द्वन्द्व ३ ॥

-युग्मं तु युगलं युगम् ॥ ३ ॥

जोड़ेके नाम ३ युग्म १ युगल २

युग ३ ॥ ३८ ॥

समूहो निवहव्यूहसंदोहविसर-

व्रजाः । स्तोमौघनिकरव्रात-

वारसंघातसंचयाः ॥ ३९ ॥ समु-

दायः समुदयः समवायश्चयो

गणः । स्त्रियां तु संहतिर्वृन्दं

निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४० ॥

समूहके नाम २२-समूह १

निवह २ व्यूह ३ सन्दोह ४ विसर ५

व्रज ६ स्तोम ७ ओघ ८ निकर ९

व्रात १० वार ११ संघात १२

संचय १३ ॥ ३९ ॥ समुदाय १४

समुदय १५ समवाय १६ चय १७

गण १८ संहति १९ वृन्द २० नि-

कुरम्ब २१ कदम्बक २२ ॥ ४० ॥

वृन्दभेदाः—

अथ समूहोंके भेद कहते हैं ॥

—समैवर्गः—

जीव अजीव एकही जातिके
समूहका नाम १—वर्ग १ ॥

—संघसार्थौ तु जन्तुभिः ।

केवल प्राणियोंके समूहके नाम २—
संघ १ सार्थ २ ॥

सजातीयैः कुलं—

एक जातिके ही प्राणियोंके समूहका नाम १—कुल १ ॥

—यूथस्तिरश्वां पुनपुंसकम् ४१॥

पक्षियोंके समूहका नाम १—
यूथ १ ॥ ४१ ॥

पशूनां समजो—

पशुओंके समूहका नाम १—समज १

—ऽन्येषां समाजो—

पक्षी और पशुओंसे दूसरोंके समूहका नाम १ समाज २ ॥

—ऽथ सधर्मिणाम् ।

स्थानिकायः—

एक धर्मावलंबियोंके समूहका नाम—१ निकाय १ ॥

—पुञ्जराशी तृत्करः कूटम-
स्त्रियाम् ॥ ४२ ॥

अन्नादिक ऊंचे ढेरके नाम ४—
पुञ्ज १ राशि २ उत्कर ३ कूट ४ ॥ ४२ ॥

कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि

तद्गणे ।

(कबूतरोंके समूहका नाम) कापोत ॥

(तोतोंके समूहका नाम) शौक ॥

(मयूरोंके समूहका नाम) मायूर ॥ (तीतरोंके समूहका नाम) तैत्तिर इत्यादि ॥

गृहासत्ताः पक्षिभृगाश्छेकास्ते
गृह्यकाश्च ते ॥ ४३ ॥

घरके पाले हुए भृगपक्षी आदिके नाम २—छेक १ गृह्यक २ ॥ ४३ ॥

इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

अथ मनुष्यवर्गः ६.

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा
मानवा नराः ।

मनुष्यमात्रके नाम ६—मनुष्य १
मानुष २ मर्त्य ३ मनुज ४ मानव ५ नर ६ ॥

स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः
पुरुषा नराः ॥ १ ॥

मनुष्यजातिपुरुषके नाम ५—पुंस
१ पञ्चजन २ पुरुष ३ पूरुष ४
नृ ५ ॥ १ ॥

स्त्री योषिदबला योषा नारी
सीमंतिनी वधूः । प्रतीपदर्शिनी
वामा वनिता महिला तथा ॥ २ ॥

स्त्रीके नाम ११—स्त्री १ योषित् २
अबला ३ योषा ४ नारी ५ सीमंतिनी ६ ॥

चतु ७ प्रतिपदशिनी ८ वामा ९ वनिता
१० महिला ११ ॥ २ ॥

विशेषा—

स्त्रियोंके विशेषभेद कहते हैं ॥

—स्वङ्गना भीरुः कामिनी
वामलोचना । प्रमदा मानिनी
कान्ता ललना च नितम्बिनी
॥ ३ ॥ सुन्दरी रमणी रामा—

अच्छे अंगोंवाली स्त्रीका नाम १—
अंगना १ ॥ डरभूत स्त्रीका नाम १—
भीरु १ ॥ कामयुतस्त्रीका नाम १—
कामिनी १ ॥ सुन्दरनेत्रोंवाली स्त्रीका
नाम १—वामलोचना १ ॥ बहुत कामवती
स्त्रीका नाम १—प्रमदा १ ॥ प्रणयको-
पवाली स्त्रीका नाम १—मानिनी १ ॥
मन हरनेवाली स्त्रीका नाम १—कान्ता
१ ॥ दुलारी स्त्रीके नाम २—ललना १
नितम्बिनी २ ॥ ३ ॥ सुन्दर अंगोंवाली
स्त्रीका नाम १—सुन्दरी १ ॥ जिसमें
अतिचित्ररमित हो उस स्त्रीका नाम
१—रमणी १ ॥ विहारके योग्य
स्त्रीका नामा १—रामा १ ॥

—कोपना सैव भामिनी ।

कोपवाली स्त्रीके नाम २—कोपना १
भामिनी २ ॥

वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा
वरवर्णिनी ॥ ४ ॥

बहुत ही उत्तम स्त्रीके नाम ४—
वरारोहा १ मत्तकाशिनी २ उत्तमा ३
वरवर्णिनी ४ ॥ ४ ॥

कृतभिषेका महिषी—

जिस रानीका अभिषेक हुआ हो
उसका नाम १—महिषी १ ॥

—भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।

महिषीको छोड़ राजाकी अन्य स्त्रि-
योंका नाम १—भोगिनी १ ॥

पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया
सहधर्मिणी ॥ ५ ॥ भार्या जा-

याथ पुंभूम्नि दाराः—

व्याही हुई स्त्रीके नाम ७—पत्नी १
पाणिगृहीती २ द्वितीया ३ सहधर्मिणी
४ ॥ ५ ॥ भार्या ५ जाया ६ दार पुं० ब० ७
स्यात्तु कुटुम्बिनी ।

पुरन्ध्री—

जिस स्त्रीके पतिपुत्र दोनों विद्य-
मान हों उसके नाम २—कुटुम्बिनी १
पुरन्ध्री २ ॥

—सुचरित्रा तु सती साध्वी
पतिव्रता ॥ ६ ॥

पतिव्रता स्त्रीके नाम ४—सुचरित्रा १
सती २ साध्वी ३ पतिव्रता ४ ॥ ६ ॥

कृतसापत्निकाभ्यूढाधिपित्रा—

जिसके बहुतसी स्त्रियां हों उनमें
जो प्रथम व्याही गई हो उसके नाम ३—

कृतसापत्निका १ अर्ध्यूढा २ अधि-
वित्रा ३ ॥

—ऽथ स्वयंवरा ।

पतिंवरा च वर्या—

जो अपने आप स्वयंवरादिमें पति-
की इच्छा करे उस स्त्रीके नाम ३—
स्वयंवरा १ पतिंवरा २ वर्या ३ ॥

—ऽथ कुलस्त्री कुलपालिका ॥७॥

कुलवती स्त्रीके नाम २—कुल-
स्त्री १ कुलपालिका २ ॥ ७ ॥

कन्या कुमारी—

पांच वर्षकी कन्याके नाम २—
कन्या १ कुमारी २ ॥

—गौरी तु नम्रिकाऽनागतार्तवा ।

दशवर्षकी कन्याके नाम ३—गौरी
१ नम्रिका २ अनागतार्तवा ३ ॥

स्यान्मध्यमा दृष्टरजा—

जिसको रजोवर्ध हो जाय उस
स्त्रीका नाम १—मध्यमा १ ॥

—स्तरुणी युवातिः समे ॥ ८ ॥

युवा स्त्रीके नाम २—तरुणी १
युवती २ ॥ ८ ॥

समाः स्नुषाजनीवध्व—

बहू (पुत्रवधू) के नाम ३—
स्नुषा १ जनी २ वधू ३ ॥

—श्चिरण्टी तु सुवासिनी ।

जो कि किंचित् युवावस्थाको प्राप्त
व्याही हुई निज पिताके घरमें रहती हो

उस स्त्रीके नाम २—चिरण्टी १ ॥

सुवासिनी २ ॥

इच्छावती कामुका स्या—

जोधनादिकी इच्छा करती हो उस
स्त्रीके नाम २—इच्छावती १ कामुका २ ॥
—दृषस्यन्ती तु काककी ॥ ९ ॥

भैथुनकी इच्छा करनेवाली स्त्रीके
नाम २—दृषस्यन्ती १ कामुकी २ ॥ ९ ॥

कान्तार्थिनी तु या याति संके-
तं साऽभिसारिका ।

जो पतिकी इच्छा कर कामार्त्त हो
संकेत स्थानको जावे उस स्त्रीका नाम
१—अभिसारिका १ ॥

पुंश्चली धर्षिणी बन्धक्यसती
कुलदेवरी ॥ १० ॥ स्वैरिणी पां-
शुला च स्या—

व्यभिचारिणी स्त्रीके नाम ८—
पुंश्चली १ धर्षिणी २ बन्धकी ३ असती
४ कुलटा ५ इत्वरी ६ ॥ १० ॥ स्वैरिणी
७ पांशुला ८ ॥

—दक्षिणी शिशुना विना ।

विनापुत्रवाली स्त्रीका नाम १—अशि-
थी १ ॥

अवीरा निष्पतिसुता—

जिसके पति पुत्र न हों उस स्त्रीका
नाम १—अवीरा १ ॥

—विश्वस्ताविधवे समे ॥ ११ ॥

विधवा स्त्रीके नाम २—विश्वस्ता १
विधवा २ ॥ ११ ॥

आलिः सखी वयस्याय-

सखी वा साथके खेलनेवाली स्त्रीके
नाम ३-आलि १ सखी २ वयस्या ३ ॥

-पतिवत्नी सभर्तृका ।

जिस स्त्रीका पति जीता हो उसके
नाम २-पतिवत्नी १ सभर्तृका २ ॥

वृद्धा पलिक्री-

बूढ़ी स्त्रीके नाम २-वृद्धा १ पलिक्री २

-प्राज्ञी तु प्रज्ञा-

कुछ कुछ समझदार स्त्रीके नाम २-
प्राज्ञी १ प्रज्ञा २ ॥

-प्राज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥

अतिबुद्धिमती स्त्रीके नाम २-प्राज्ञा
१ धीमती २ ॥ १२ ॥

शूद्रा शूद्रस्य भार्या स्या-

चाहे अन्य जातिभी हो पर शूद्रकी
स्त्री हो उस स्त्रीका नाम १-शूद्रा १ ॥

-चूद्रा तज्जातिरेव च ।

शूद्रजातिका नाम १-शूद्रा १ ॥

आभीरी तु महाशूद्रा जातिपुं-
योगयोः समा ॥ १३ ॥

अहिरिनिके नाम २-आभीरी १
महाशूद्रा २ ॥ १३ ॥

अर्याणी स्वयमर्या स्यात्-

वनैनीके नाम २-अर्याणी १
अर्या २ ॥

-क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ॥

क्षत्रियानीके नाम २-क्षत्रिया १

क्षत्रियाणी २ ॥

उपाध्यायाऽन्युपाध्यायी-

पंडितानीके नाम २-उपाध्याया १
उपाध्यायी २ ॥

-स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥ १४ ॥

जो अपने आप मंत्रोंके अर्थ कहस-
के उसका नाम १-आचार्या १ ॥ १४ ॥

आचार्यानी तु पुंयोगे-

चाहे मंत्रादिकी व्याख्या न करसके
पर आचार्यकी स्त्री हो उसका नाम १-

आचार्यानी १ ॥

-स्यादर्या-

तैसही अर्थ (वैश्य) की स्त्रीका
नाम १-अर्या १ ॥

-क्षत्रिया तथा ।

क्षत्रियकी स्त्रीका नाम १-क्षत्रिया १
उपाध्यायान्युपाध्यायायी-

पढानेवालेकी स्त्रीके इसी प्रकारके
नाम २-उपाध्यायानी १ उपा-

ध्यायी २ ॥

-पोटा स्त्री पुंसलक्षणा ॥ १५ ॥

डाढीमूँछ आदियुक्त स्त्रीका नाम १-
पोटा १ ॥ १५ ॥

वीरपत्नी वीरभार्या-

वीरकी स्त्रीके नाम २-वीरपत्नी १
वीरभार्या २ ॥

—वीरमाता तु वीरसूः ।

वीरकी माताके नाम २—वीरमातृ

१ वीरसू २ ॥

जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च
प्रसूतिका ॥ १६ ॥

जिसके बालक पैदा हुआ हो उस
स्त्रीके नाम ४—जातापत्या १ प्रजाता
२ प्रसूता ३ प्रसूतिका ४ ॥ १६ ॥

स्त्री नग्निका कोटवी स्याद्—
नंगी स्त्रीके नाम २—नग्निका १ कोटवी २ ॥

—दूती संचारिके समे ।

दूतीके नाम २—दूती १ संचारिका २ ॥

कात्यायन्यर्धवृद्धा या काषायव-
सनाऽधवा ॥ १७ ॥

गेरु आदिसे रंगेहुए वस्त्र पहरनेवाली
कुछ वृद्ध विधवा स्त्रीका नाम १—
कात्यायनी १ ॥ १७ ॥

सैरन्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा
शिल्पकारिका ॥

अपनी इच्छाके अनुसार पराये गृह-
में रहकर शिल्पकार्य करनेवाली स्त्रीका
नाम १—सैरन्ध्री १ ॥

असिक्री स्याद्वृद्धा या प्रेष्याऽ-
न्तः पुरचारिणी ॥ १८ ॥

घरके भीतर सेवा आदि कार्य कर-
नेवाली जवानस्त्रीका नाम १—असिक्री
१ ॥ १८ ॥

वारस्त्री गणिका वेश्या रूपा-

जीवा—

वेश्याके नाम ४—वारस्त्री १
गणिका २ वेश्या ३ रूपाजीवा ४ ॥

—ऽय सा जनैः ।

सत्कृता वारमुख्या स्यात्—

जिसका पुरुष अधिक सत्कार करै
अर्थात् सर्वमें श्रेष्ठ वेश्याका नाम १—
वारमुख्या १ ॥

—कुट्टनी शम्भली समे ॥ १९ ॥

कुट्टनीके नाम २—कुट्टनी १ ॥
शम्भली २ ॥ १९ ॥

विप्रश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञा—

सामुद्रिक आदि शास्त्रानुसार लक्षण
जानकर शुभाशुभ फल कहनेवाली स्त्री-
के नाम ३—विप्रश्निका १ ईक्षणिका २
दैवज्ञा ३ ॥

—ऽय रजस्वला ।

स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी
पुष्पवत्यापि ॥ २० ॥ ऋतुमत्य-
प्युदक्यापि—

रजस्वला स्त्रीके नाम ८—रजस्वला १
स्त्रीधर्मिणी २ अवि ३ आत्रेयी ४ मलिनी ५
पुष्पवती ६ ॥ २० ॥ ऋतुमती ७
उदक्या ८ ॥

—स्याद्रजःपुष्पमार्तवम् ॥

स्त्रीके मासिक रजोधर्मके नाम ३—
रजसू १ पुष्प २ आर्तव ३ ॥

श्रद्धालुर्दोहदवती-

गर्भके समय अनेक प्रकारकी
-श्रद्धा-

लु १ दोहदवती २ ॥

-निष्कला विगतात्तवा ॥ २१ ॥

रजोहीन स्त्रीके नाम २-निष्कला

१ विगतात्तवा २ ॥ २१ ॥

आपन्नासत्त्वा स्याद्गुर्विण्यन्त-
वर्त्नी च गर्भिणी ।

गर्भवती स्त्रीके नाम ४-आप-
न्नसत्त्वा १ गुर्विणी २ अन्तर्वर्त्नी ३
गर्भिणी ४ ॥

गाणिकादेस्तु गाणिक्यं गा-
भिणं यौवतं गणे ॥ २२ ॥

वेश्याओंके समूहका नाम १-गाणि-
क्यं १ ॥ गर्भिणियोंके समूहका नाम
१-गाभिणं १ ॥ युवतियोंके समूहका
नाम १-यौवतं १ ॥ २२ ॥

पुनर्भूदिधिषू रूढा द्वि-

जिस स्त्रीका विवाहसंस्कार
द्वितीयवार हो उस स्त्रीके नाम २-
पुनर्भू १ दिधिषू २ ॥

-स्तस्या दिः : पतिः ।

उसके पतिका नाम १-दिधिषू १ ॥

स तु द्विजोऽग्रेदिधिषूः सैव
यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥

जिसका द्वितीयवार विवाहसंस्कार

हो वह स्त्री और उसका पति उन
दोनोंसे उत्पन्न बालकका नाम
अग्रेदिधिषू १ ॥ २३ ॥

कानीनः कन्यकाजातः सुतो-

कन्यासे उत्पन्न हुए पुत्रके नाम २-
कानीन १ कन्यकाजात २ ॥

-ऽथ सुभगासुतः ।

सौभागिनेयः-

सौभाग्यवती स्त्रीके पुत्रके नाम २-
सुभगासुत १ सौभागिनेय २ ॥

-स्यात्पारस्त्रैण्यस्तु परस्त्रियाः २४ ॥

परस्त्रीके पुत्रका नाम १-पार-
स्त्रैण्य १ ॥ २४ ॥

पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्त्रीयश्च

पितृष्वसुः । सुतो-

पिताकी बहन अर्थात् भूवाके
पुत्रके नाम २-पैतृष्वसेय १ पैतृष्व-
स्त्रीय २ ॥

-मातृष्वसुश्चैवं-

माँकी पुत्रके नाम २-मातृ-
ष्वसेय १ मातृष्वस्त्रीय २ ॥

-वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥

सौतेले भाईके नाम २-वैमात्रेय
१ विमातृज २ ॥ २५ ॥

अथ बान्धाकिनेयः स्याद्बन्धु-
लश्चासतीसुतः । कौलटेरः कौ-
लटेयो-

कुलटाके पुत्रके नाम ५-
वान्धकिनेय १ वन्धुल २ असतीसुत
३ कौलटेर ४ कौलटेय ५ ॥

-भिक्षुकी तु सती यदि ॥२६॥
तदा कौलटिनेयोऽस्याः काल-
ट्योऽपि चात्मजः ।

जो सती भिक्षाके निमित्त घरोंमें
फिरै ॥ २६ ॥ उसके पुत्रके नाम २-
कौलटिनेय १ कौलटेय २ ॥

आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः-
पुत्रके नाम ५-आत्मज १ तनय
१ सूनु ३ सुत ४ पुत्र ५ ॥

-स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥
आहुर्दुहितरं सर्वे-
जो पुत्रके नाम स्त्रीलिङ्गमें हों तो
पुत्रीके नाम हो जाते हैं ॥ २७ ॥

-ऽपत्यं तोकं तयोः समे ।
पुत्र पुत्री साधारणके नाम २-
अपत्य १ तोक २ ॥

-स्वजाते त्वौरसोरस्यौ-
सगेपुत्रके नाम २-औरस १
उरस्य २ ॥

-तातस्तु जनकः पिता ॥२८॥
पिताके नाम ३-तात १ जनक २
पितृ ३ ॥ २८ ॥

जनयित्री प्रसूमाता जननी-
माताके नाम ४ -जनयित्री १
प्रसू २ मातृ ३ जननी ४ ॥

-भगिनी स्वसा ।

बहिनेके नाम २-भगिनी १
स्वसृ २ ॥

ननान्दा तु स्वसा पत्यु-
ननन्दका नाम १-ननान्द १ ॥
-नैत्री पौत्री सुतात्मजा ॥२९॥
नातिनिके नाम ३-नैत्री १
पौत्री २ सुतात्मजा ३ ॥ २९ ॥

भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरः
स्युः परस्परम् ।
आपसमें भ्रातृवर्गकी स्त्रियोंका नाम
१-यातृ १ ॥

प्रजावती भ्रातृजाया-
भौजाईके नाम २-प्रजावती १
भ्रातृजाया २ ॥

-मातुलानी तु मातुली ॥३०॥
मामीके नाम २-मातुलानी
१ मातुली २ ॥ ३० ॥

पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः-
पति और स्त्रीकी माताका नाम
१-श्वश्रू १ ॥

-श्वशुरस्तु पिता तयोः ।
पति और स्त्रीके पिताका नाम १-
श्वशुर १ ॥

पितृभ्राता पितृव्यः स्या-
चाचा या ताऊका नाम १-पितृव्य १ ॥
-न्मातृभ्राता तु मातुलः ॥ ३१ ॥

मामाके नाम २-मातुर्भ्रातृ १-
मातुल २ ॥ ३१ ॥

श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः-
शालेका नाम १-श्याल १॥
-स्वामिनो देवदेवरौ ।

देवरके नाम २-देवृ १ देवर २॥

स्वस्त्रीयो भागिनेयः स्या-

भानजेके नाम २-स्वस्त्रीय १
भागिनेय २ ॥

-जामाता दुहितुः पतिः॥३२॥

जमाईके नाम २-जामातृ १
दुहितुःपति २ ॥ ३२ ॥

पितामहः पितृपिता-

दादाके नाम २-पितामह १

पितृपितृ २ ॥

-तत्पिता प्रपितामहः ।

परदादाका नाम १-प्रपितामह ॥

मातुर्मातामहाद्येवं-

इस प्रकार (नानाका नाम) माता-
मह (परनानाका) प्रमातामह ॥

सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥

सपिण्डके नाम २-सपिण्ड १
सनाभि २ ॥ ३३ ॥

समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः

समाः ।

सगे भाईके नाम ४-समानोदर्य १

सोदर्य २ सगर्भ्य ३ सहज ४ ॥

सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्व-

जनाः समाः ॥ ३४ ॥

एक गोत्रवालोंके अर्थात् समगोत्रि-

योंके नाम ६-सगोत्र १ बान्धव २
ज्ञाति ३ बन्धु ४ स्वप्स्वजन ६॥३४॥

ज्ञातेयं बन्धुता तेषां क्रमाद्भा-
वसमूहयोः ।

बिरादरीके भावका नाम १-ज्ञातेय
१ ॥ परिवारके समूहका नाम १-

बन्धुता १ ॥

धवः प्रियः पतिभर्ता-

पतिके नाम ४-धव १ प्रिय २
पति ३ भर्तृ ४ ॥

-जारस्तृपपतिः समौ ॥ ३५ ॥

जिसके साथ व्याही हो उससे अ-
न्यसे मैथुन करती हो तो उस पतिके
नाम २-जार १ उपपति २॥३५॥

अमृते जारजः कुण्डो-

आपने पतिके जीते ही अन्य पतिसे
जो पुत्र हो उसका नाम १-कुण्ड १ ॥

-मृते भर्तारि गोलकः ।

जो पतिके मरनेपर अन्य पतिसे उत्प-
न्न हो उसका नाम १-गोलक १ ॥

भात्रीयो भ्रातृजो-

भतीजेके नाम २-भात्रीय १

भ्रातृज २ ॥

-भ्रातृभागिन्यौ भ्रातराबुभौ॥३६॥

बहिनभाईके नाम २—आतृभगिनी
(न्यौ) १ आतृ (तरौ) २ ॥ ३६ ॥

मातापितरौ पितरौ मातर-
पितरौ प्रसूजनयितारौ ।

जहां मातापिताको साथही कहना
हो उसके नाम ४—मातापितृ (तरौ)
१ पितृ (तरौ) २ मातरपितृ (तरौ)
३ प्रसूजनयितृ (तरौ) ४ ॥

श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ—

ऐसे ही सासु ससुरके नाम २—
श्वश्रूश्वशुर (रौ) १ श्वशुर (रौ) २ ॥

—पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥ ३७ ॥

इसी प्रकार कन्यापुत्रका नाम १॥
पुत्र (त्रौ) १ ॥ ३७ ॥

दंपती जंपती जायापती भर्यापती
च तौ ।

स्त्रीपुरुषके इकडे नाम ४—दम्पति
(ती) १ जम्पति (ती) २ जायापति
(ती) २ भार्यापति (ती) ४ ॥

गर्भाशयो जरायुः स्या—

गर्भस्थानके नाम २—गर्भाशय १
जरायु २ ॥

—दुल्वं च कललोऽस्त्रियाम् ॥ ३८ ॥

गर्भवन्धनके नाम २—उल्व १
कलल २ ॥ ३८ ॥

सूतिमासो वैजननो—

गर्भ रहनेसे नवमें वा दशमें मासके

नाम जिसमें बालक पैदा होता हैं २—
सूतिमास १ वैजनन २ ॥

—गर्भो भ्रूण इमौ समौ ।

गर्भके नाम २—गर्भ १ भ्रूण २ ॥

तृतीयाप्रकृतिः षण्डः क्लीवः
षण्डो नपुंसके ॥ ३९ ॥

हीजडेके नाम ५—तृतीयाप्रकृति
१ षण्ड २ क्लीव ३ षण्ड ४ नपुंसक
५ ॥ ३९ ॥

शिशुत्वं शैशवं बाल्यं—

लडकपनके नाम १—शिशुत्व
शैशव २ बाल्य ३ ॥

—तारुण्यं यौवनं समे ।

जवानीके नाम २—तारुण्य १
यौवन २ ॥

स्यात्स्थाविरं तु वृद्धत्वं—

बुढापेके नाम २—स्थाविर १
वृद्धत्व २ ॥

—वृद्धसंघेऽपि वार्धकम् ॥ ४० ॥

बूढोंके समूहका नाम १—वार्धक
१ ॥ ४० ॥

पालितं जरसा शौकल्यं केशादैः—

अतिबुढापेमें केश आदिकमें जरा
करिकें जो सफेदी आती है उसका
नाम १—पालित १ ॥

—विस्त्रसा जरा ।

बुढाईके नाम २—विस्त्रसा १ जरा २ ॥

स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तन-

पा च स्तनन्धयी ॥ ४१ ॥

दूधपिई छोटी लडकीके नाम ४-
उत्तानशया १ डिम्भा २ स्तनपा ३
स्तनन्धयी ४ ॥ ४१ ॥

बालस्तु स्यान्माणवको-
सोलह वर्षपर्यन्त लडकेके नाम २-
बाल १ माणवक २ ॥

-वयःस्थस्तरुणो युवा ।
जवानपुरुषके नाम ३-वयःस्थ १
तरुण २ युवन् ३ ॥

प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो
जीर्णो जरन्नपि ॥ ४२ ॥

बूढेके नाम ६-प्रवयस् १
स्थविर २ वृद्ध ३ जीन ४ जीर्ण ५
जरत् ६ ॥ ४२ ॥

वर्षीयान्दशमी ज्यायान्-
अतिबूढेके नाम ३-वर्षीयस् १
दशमिन् २ ज्यायस् ३ ॥

-पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः ।
ज्येष्ठ भाईके नाम ३-पूर्वज १
अग्रिय २ अग्रज ३ ॥

जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोऽव-
रजानुजाः ॥ ४३ ॥

छोटे भाईके नाम ५-जघन्यज १
कनिष्ठ २ यवीयस् ३ अवरज ४
अनुज ५ ॥ ४३ ॥

अमांसो दुर्बलश्छातो-
दुबलेके नाम ३- अमांस १
दुर्बल २ छात ३ ॥

बलवान्मांसलोऽसलः ।

बलवान्के नाम ३- बलवत् १
मांसल २ असल ३ ॥

तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः
पिचण्डिलः ॥ ४४ ॥

बड़े पेटवालेके नाम ५- तुन्दिल
तुन्दिभ २ तुन्दिन् ३ बृहत्कुक्षि ४
पिचण्डिल ॥ ४४ ॥

अवटीटोऽवनाटश्चावभटो नत-
नासिके ।

चपटी नाकवालेके नाम ३-अव-
टीट १ अवनाट २ अवभट ३

केशवः केशिकः केशी-
अच्छे बालवालेके नाम ३-केशव १

केशिक २ केशिन् ३ ॥
वालिनो वालिभः भौ ॥ ४५ ॥

जिसकी बुढ़ापेके मारे खाल सिकुर-
गयी हो उसके नाम २- वालिन १

वालिभ २ ॥ ४५ ॥
विकलांगस्त्वपोगण्डः-

जिसका अपनेहीसे कोई अंग अधिक
वा कम हो उसके नाम २- विक-

लांग १ अपोगण्ड २ ॥
खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ।

बौनेके नाम ३-खर्व १ ह्रस्व २
वामन ३ ॥

खरणाः स्यात्खरणसो-

जिसकी तीखी नाक हो उसके
नाम २—खरणस १ खरणस २ ॥

विग्रस्तु गतनासिकः ॥ ४६ ॥

नकटेके नाम २—विग्र १ गतना-
सिक २ ॥ ४६ ॥

खुरणाः स्यात्खुरणसः—

जिसकी पशुके खुरकी सदृश
नासिका हो उसके नाम २—खुरणस
१ खुरणस २ ॥

प्रजुः प्रगतजानुकः ।

वातआदि रोगसे जिसके घुटने
बहुत दूर २ होगये हों उसके नाम २—
प्रजु १ प्रगतजानुक २ ॥

ऊर्ध्वजुर्ध्वजानुः स्यात्—

जिसके घुटने ऊँचे हों उसके नाम २—
ऊर्ध्वजु १ ऊर्ध्वजानु २ ॥

—संजुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥

जिसके घुटने मिले हुए हों उसके
नाम २—संजु १ संहतजानुक २ ॥ ४७ ॥

स्यादेडे बधिरः—

बहिरैके नाम २—एड १ बधिर २ ॥

—कुब्जे गडुलः—

कुबडेके नाम २—कुब्ज १ गडुल २ ॥

—कुकरे कुणिः ।

जिसके हातमें रोगादिसे कुछ बि-
कार हो उसके नाम २—कुकर १ कुणि २ ॥

पृश्निरल्पतनौ—

जिसका बहुत ही छोटा शरीर हो
उसके नाम २—पृश्नि १ अल्पतनु २ ॥

—श्रोणः पंगौ—

ललेके नाम २—श्रोण १ पंगु २ ॥

—मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥

जिसका शिर मुँडाहुआ हो उसके

नाम २—मुण्ड १ मुण्डित २ ॥ ४८ ॥

—बलिरः केकरे—

भेडे (जिसके नेत्रकी पुतली फिरती
हो) उसके नाम २—बलिर १ केकर २ ॥

—खोडे खञ्ज—

लंगडेके नाम २—खोड १ खञ्ज २ ॥

—स्त्रिषु जरावराः ।

जडुलः कालकः पिण्डु—

जिसके अंगमें लशुनाकारका चिह्न
हो उसके नाम ३—जडुल १ कालक २
पिण्डु ३

—स्तिलकं स्तिलकालकः ॥ ४९ ॥

देहके तिलके नाम २—तिलक १

तिलकालक २ ॥ ४९ ॥

अनामयं स्यादारोग्यं—

बिना रोगके नाम २—अनामय १
आरोग्य २ ॥

—चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया ।

इलाज करनेके नाम २—चिकित्सा १
रुक्प्रतिक्रिया २ ॥

भेषजौषधभेषज्यान्यगदो जायु-
रित्यपि ॥ ५० ॥

औषधके नाम ५-भेषज १ औषध
२ भेषज्य ३ अगद ४ जायु ॥ ५० ॥

-स्त्री रुजुजाचोपतापरोगव्याधि-
गदामयाः ।

रोगके नाम ७-रुज १ रुजा २
उपताप ३ रोग ४ व्याधि ५ गद ६
आमय ७ ॥

क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च-

क्षय रोगके नाम ३-क्षय १ शोष
२ यक्ष्मन् ३ ॥

-प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ ५१ ॥

पीनसरोगके नाम २-प्रतिश्याय
१ पीनस २ ॥ ५१ ॥

-स्त्री क्षुत्क्षुतं क्षवः पुंसि-

छीकके नाम ३-क्षुत् १ क्षुत २ क्षव ३ ॥

-कासस्तु क्षवथुः पुमान् ।

खांसीके नाम २-कास १ क्षवथु २ ॥

शोफस्तु श्वयथुः शोथः-

सूजनके नाम ३-शोफ १ श्वयथु
२ शोथ ३ ॥

-पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥

विवायी रोगके नाम २-पाद-
स्फोट १ विपादिका २ ॥ ५२ ॥

किलाससिध्मे-

सेहुवाँ (सीप) के नाम २-
किलास १ सिध्म २ ॥

कच्छां तु पामशामे विचर्चिका ।
खाजुरोगके नाम ४-कच्छू १

पामन् २ पामा ३ विचर्चिका ४ ॥

कण्डूः खर्जुश्च कण्डूया-

खुजलीके नाम ३-कण्डू १ खर्जू २
कण्डूया ३ ॥

-विस्फोटः पिटकोऽस्त्रियाम्
॥ ५३ ॥

फोडेके नाम २-विस्फोट १ पिटक
२ ॥ ५३ ॥

व्रणोऽस्त्रियामीर्मरुः क्लीबे-

घावके नाम ३-व्रण १ ईर्मरु २ अरुमू ३ ॥

-नाडीव्रणः पुमान् ।

नासूरका नाम १-नाडीव्रण १ ॥

कोठो मण्डलकं-

जो गोल उज्ज्वल चन्दे पड जाते

हैं उस कोठके नाम २-कोठ १

मण्डलक २ ॥

-कुष्ठश्चित्रे-

छाजनके नाम २-कुष्ठ १ चित्र २ ॥

-दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥

ववासीरके नाम २-दुर्नामक १

अशसू २ ॥ ५४ ॥

आनाहस्तु विबन्धः स्याद्-

कजई जिसमें मल मूत्र रुक जाय उस

रोगके नाम २-आनाह १ विबन्ध २ ॥

—ग्रहणी रुक्प्रवाहिका ।
संग्रहणी रोगके नाम २—ग्रहणी
१ प्रवाहिका २ ॥

प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु
वमथुः समाः ॥ ५५ ॥

उलटी अर्थात् वमनके नाम ३—
प्रच्छर्दिका १ वमि २ वमथु ३ ॥ ५५ ॥

व्याधिभेदा विद्रधिः स्त्री ज्वरमे-
हभगन्दराः ।

व्यरथिया(एक प्रकारका फोडा) का
नाम १—विद्रधि १ ॥ ज्वरका नाम १—
ज्वर १ ॥ प्रमेहका नाम १—मेह १ ॥
भगन्दर अर्थात् गुदसमीपके फोडेका
नाम १—भगन्दर १ ॥

अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात्—
कर्करोग अर्थात् पथरीरोगके नाम
२—अश्मरी १ मूत्रकृच्छ्र २ ॥

—पूर्वं शुक्रावधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥

यहांसे लेकर शुक्रशब्दके पहले २ के
शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ ५६ ॥

रोगहार्यगदंकारो भिषग्वैद्यौ
चिकित्सके ॥

वैद्यके नाम ५—रोगहारिन् १ अगदं-
कार २ भिषजू ३ वैद्य ४ चिकित्सक ५ ॥

वात्तो निरामयः कल्य उल्लाघो
निर्गतो गदात् ॥ ५७ ॥

रोगरहितके नाम ४—वार्त १ निरा-
मय २ कल्य ३ उल्लाघ ४ ॥ ५७ ॥

ग्लानग्लास्तू—
रोगवशसे क्षीण होजानेवालेके
नाम २—ग्लान १ ग्लास्तु २ ॥

—आमयावी विकृतो व्याधितो-
स्पटुः ।

आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः—
रोगीके नाम ७—आमयाविन् १
विकृत २ व्याधित ३ अपटु ४ आतुर
५ अभ्यमित ६ अभ्यान्त ७ ॥

—समौ पामनकच्छुरौ ॥ ५८ ॥
खुजलीवालेके नाम २—पामन १
कच्छुर २ ॥ ५८ ॥

ददुणो ददुरोगी स्या—
ददुरोगीके नाम २—ददुण १
ददुरोगिन् २ ॥

—दर्शोरोगयुतोऽर्शसः ।
बवासीररोगीका नाम १—अर्शस १ ॥
वातकी वातरोगी स्यात्—
वातरोगीके नाम २—वातकिन्
१ वातरोगिन् २ ॥

सातिसारोऽतिसारकी ॥ ५९ ॥
जिसको बहुत दस्त हों उसके नाम २—
सातिसार १ अतिसारकिन् २ ॥ ५९ ॥

स्युः क्लिन्नाक्षे चुल्लचिल्लपिप्पलाः
क्लिन्नेऽक्षिण चाप्यमी ।

चुन्धेके नाम ४-ह्लिनाक्ष १
चुल २ चिल ३ पिल ४ ॥

उन्मत्त उन्मादवति-

उन्मत्त अर्थात् बावलेके नाम २
उन्मत्त १ उन्मादवत् २ ॥

-श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥ ६० ॥

कफरोगवालेके नाम ३-श्लेष्मल
१ श्लेष्मण २ कफिन् ३ ॥ ६० ॥

न्युब्जो भुग्ने रुजा-

कुबडेका नाम १-न्युब्ज १ ॥

-वृद्धनाभौ तुन्दिलतुन्दिभौ ।

जिसकी वातरोगसे नाभि बढजाय
उसके नाम ३-वृद्धनाभि १ तुन्दिल
२ तुन्दिभ ३ ॥

किलासी सिध्मलो-

किलास (सीध्) रोगीके नाम २-
किलासिन् १ सिध्मल २ ॥

-ऽन्धोऽदृक्-

अन्धेके नाम २-अन्ध १
अदृक् २ ॥

मूर्च्छाले मूर्त्तमूर्च्छितौ ॥ ६१ ॥

बेहोशीके नाम ३-मूर्च्छाल १
मूर्त्त २ मूर्च्छित ३ ॥ ६१ ॥

शुकं तेजोरेतसी च बीजबी-
योन्द्रियाणि च ।

धातुक नाम ६-शुक १ तेजसू २
रेतसू २ बीज ४ बीर्य ५ इन्द्रिय ६ ॥

मायुः पित्तं-

पित्तके नाम २-मायु १ पित्तर ॥

-कफः श्लेष्मा-

कफके नाम २-कफ १ श्लेष्मन् २ ॥

-स्त्रियां तु त्वगसुग्धरा ॥ ६२ ॥

खालके नाम २-त्वच् १ अमृ-
ग्धरा २ ॥ ६२ ॥

पिशितं तरसं मांसं पल्लं
क्रव्यमामिषम् ।

मांसके नाम ६-पिशित १ तरस
२ मांस ३ पल्ल ३ क्रव्य २ अमिष ६ ॥

उत्तप्तं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लूरं
त्रिलङ्गकम् ॥ ६३ ॥

सूखे मांसके नाम ३-उत्तप्त १
शुष्कमांस २ वल्लूर ३ ॥ ६३ ॥

रुधिरेऽसृग्लोहितास्ररक्तक्षत-
जशोणितम् ।

रुधिरके नाम ७-रुधिर १ असृज
२ लोहित ३ अस्त्र ४ रक्त ५ क्षतन
६ शोणित ७ ॥

बुक्काग्रमांसं-

कलेजेके नाम २-बुक्का १
अग्रमांस २ ॥

-हृदयं ह-

हृदयके नाम २-हृदय १ हृद् २ ॥

-न्मेदस्तु वषा वसा ॥ ६४ ॥

चरवीके नाम ३—मेदसू १ वपा
२ वसा ३ ॥ ६४ ॥

पश्चाद्ग्रिवाशिरा मन्या—

गलेके पीछेकी नसका नाम १—
मन्या १ ॥

नाडी तु धमनिः शिरा ।

नाडीके नाम ३—नाडी १ धमनि
२ शिरा ३ ॥

तिलकं क्लोम—

शरीरके तिलके नाम २—तिलक
१ क्लोम २ ॥

—मस्तिष्कं गोर्दं—

गुर्दके नाम २—मस्तिष्क १ गोर्द २ ॥

—किट्टं मलोऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥

मैलेके नाम २—किट्ट १ मल २ ॥ ६५ ॥

अन्त्रं पुरीतद्—

आंतोके नाम २—अन्त्र १ पुरीतद् ॥

—गुल्मस्तु ग्रीहा पुं—

पलैया (तिली) रोगके नाम २—
गुल्म १ ग्रीहन् २ ॥

—स्यथ वस्रसा । स्नायुः स्त्रियां—

नसके नाम २—वस्रसा १ स्नायु २ ॥

—कालखण्डयकृती तु समे
इमे ॥ ६६ ॥

पेटमें जो दहिनी ओर बविया हो
उसके नाम २—कालखण्ड १ यकृत्
२ ॥ ६६ ॥

सृणिका स्यन्दिनी लाला—

लारके नाम ३—सृणिका १
स्यन्दिनी २ लाला ३ ॥

—दूषिका नेत्रयोर्मलम् ।

कीचड़ (गीड़) का नाम १—दूषिका १ ॥

मूत्रं प्रस्राव—

मूतके नाम २—मूत्र १ प्रस्राव २ ॥

—उच्चारवस्करौ शमलं शकृत्

॥ ६७ ॥ पुरीषं गूथवर्चस्कमस्त्री
विष्टाविशौ स्त्रियौ ।

विष्टाके नाम २—उच्चार १

अवस्कर २ शमल ३ शकृत् ४ ॥

॥ ६७ ॥ पुरीष ५ गूथ ६ वर्चस्क ७

विष्टा ८ विश ९ ॥

स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री—

कपालके नाम २—कर्पर १ कपाल २ ॥

कीकसं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥

हड्डीके नाम ३—कीकस १ कुल्य

२ अस्थि ३ ॥ ६८ ॥

स्याच्छरीरास्थि कंकालः—

खांकरका नाम १—कंकाल १ ॥

—पृष्ठास्थि तु कशेरुका ।

पीठकी हड्डीका नाम १—कशेरुका १ ॥

शिरोस्थानि करोटिः स्त्री—

खोपडीका नाम १—करोटि १ ॥

—पार्श्वस्थानि तु पर्शुका ॥ ६९ ॥

पशलीका नाम १—पर्शुका १ ॥ ६९ ॥

अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनो—

अङ्गके नाम ४-अंग १ प्रतीकर
अवयव ३ अपघन ४ ॥

—5थ कलेवरम् ।

गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म
विग्रहः ॥ ७० ॥ कायो देहः क्ली-
वपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः ।

देहके नाम १२-कलेवर १ गात्र
२ वपुष् ३ संहनन ४ शरीर ५ वर्ष्मन्
६ विग्रह ७ ॥ ७० ॥ काय ८ देह ९
मूर्ति १० तनु ११ तनू १२ ॥

पादाग्रं प्रपदं-

पांवके आगेके नाम २-पादाग्र १
प्रपद २ ॥

—पादः पदंघ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ७१ ॥

पांवके नाम ४-पाद १ पद् २
अंघ्रि ३ चरण ४ ॥ ७१ ॥

तद्गन्धी घुटिके गुल्फौ-

टांकनोंके नाम २-घुटिका १
गुल्फ २ ॥

—पुमान्पार्ष्णिस्तयोरधः ।

एडीका नाम १-पार्ष्णि १ ॥ ७४ ॥

जंघा तु प्रसृता-

जंघा (पींड़ी) के नाम २-जंघा
१ प्रसृता २ ॥

—जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् ७२

जानुके नाम ३-जानु १ ऊरु,
पर्वन् २ अष्ठीवत् ३ ॥ ७२ ॥

सक्थि क्लीवे पुमानूरु-

निरोहके नाम २-सक्थि १ ऊरु २ ॥

—स्तत्सन्धिः पुंसि वक्ष्णः ।

टिड्डनीका नाम १-वक्ष्ण १ ॥

गुदं त्वपानं पायुर्ना-

गुदाके नाम ३-गुद १ अपान २
पायु ३ ॥

वस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥

जहां मूत्र रहता है अर्थात् पेड्डका
नाम १-वस्ति २ ॥ ७३ ॥

कटो ना श्रोणिफलकं-

कमरके दोनों बगलके नाम ३-
कट १ श्रोणि २ फलक ३ ॥

—कटिः श्रोणिः ककुब्जती ।

कमरके नाम ३-कटि १ श्रोणि २
ककुब्जती ३ ॥

पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः-

स्त्रीके चूतरका नाम १-नितम्ब १ ॥

—क्लीवे तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥

स्त्रीके जांघका नाम १-जघन १ ॥

॥ ७४ ॥

कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने

कुकुन्दरे ।

नितम्बमें जो दो गड्ढे होते हैं

उनका नाम १-कुकुन्दर १ ॥

स्त्रियां स्फिचौ कटिप्रोथा-

कूलेके नाम २-स्फिच १ कटिप्रोथ २ ॥

—वुपस्थो वक्ष्यमाणयोः॥७५॥
लिंगयोनिका नाम १—उपस्थ १॥७५॥

भगं योनिर्द्वयोः—

योनिके नाम २—भग १ योनि २॥

—शिश्रो मेढं मेहनशेफसी ।

लिंगके नाम ४—शिश्र १ मेढ २
मेहन ३ शेफस ४ ॥

मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः—

अण्डकोशके नाम ३—मुष्क १

अण्डकोश २ वृषण ३ ॥

पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥

पीठके बांसके नीचे जहां तीन
हाड मिले हैं उस जोडका नाम १—
त्रिक १ ॥ ७६ ॥

पिचण्डकुक्षी जठरोदरं तुन्दं—

पेटके नाम ५—पिचण्ड १ कुक्षि

२ जठर ३ उदर ४ तुन्द ५ ॥

—स्तनौ कुचौ ।

कुचके नाम २—स्तन १ कुच २॥

चूचुकं तु कुचाग्रं स्या—

कुचके अग्रभागके नाम २—

चूचुक १ कुचाग्र २ ॥

—न्न ना क्रोडं भुजान्तरम् ७७ ॥

गोदके नाम २—क्रोड १ भुजा-
न्तर २ ॥ ७७ ॥

उरो वत्सं च वक्षश्च—

हृदयके नाम ३—उरसू १ वत्स १
वक्षसू ३ ॥

—पृष्ठं तु चरमं तनोः ।

पीठका नाम १—पृष्ठ १॥

स्कन्धो भुजशिरोऽसोऽस्त्री—

कंधेके नाम ३—स्कन्ध १ भुज-
शिरसू २ अंस ३ ॥

—सन्धी तस्यैव जत्रुणी ॥७८॥

हंसलीका नाम १—जत्रु १ ॥७८॥

बाहुमूले उभे कक्षौ—

बगलोंका नाम १—कक्ष १ ॥

पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।

बगलके नीचेका नाम १—पार्श्व १॥

मध्यमं चावलग्रं च मध्योऽस्त्री—

पेटके नीचेका और करके ऊपर--
रके भागके नाम ३—मध्यम १
अवलग्र २ मध्य ३ ॥

—द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥

भुजबाहू प्रवेष्टो दोः स्यात्—

बांहके नाम ४—॥७९॥ भुज १

बाहु २ प्रवेष्ट ३ दोसू ४ ॥

—कफोणिस्तु कूर्परः ।

कोनीके नाम २—कफोणि १
कूर्पर २ ॥

अस्योपरि प्रगण्डः स्यात्—

कोनीके ऊपरका नाम १—प्रगण्ड १॥

—प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥८०॥

कोनीके नीचेका नाम १—प्रकोष्ठ १
॥ ८० ॥

मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य
करभो वहिः ।

मणिबन्धसे कनिष्ठांगुलीपर्यन्तका
नाम १—करभ १ ॥

पञ्चशाखः शयः पाणि—
हाथके नाम ३—पञ्चशाख १
शय २ पाणि ३ ॥

—स्तर्जनीः स्यात्प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥
हाथके अँगूठेके पासकी अंगुलीके नाम
२—तर्जनी १ प्रदेशिनी २ ॥ ८१ ॥

अंगुल्यः करशाखाः स्युः—
अंगुलियोंके नाम २—अंगुली १
करशाखा २ ॥

—पुंस्यंगुष्ठः—
अंगूठाका नाम १—अंगुष्ठ १ ॥
—प्रदेशिनी—
अंगूठाके पासवाली अंगुलीका
नाम १—प्रदेशिनी १ ॥

मध्यमाऽनामिका चापिकनिष्ठा
चेति ताः क्रमात् ॥ ८२ ॥

बीचवाली अंगुलीका नाम १—
मध्यमा १ ॥

बीचवाली और कनअंगुलीके बीच-
वालीका नाम १—अनामिका १ ॥

कन अंगुलीका नाम १—कनिष्ठा
१ ॥ ८२ ॥

पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री
नखरोऽस्त्रियाम् ।

नाखूनोंके नाम ४—पुनर्भव १
कररुह २ नख ३ नखर ४ ॥

प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्यादि-
युते तते ॥ ८३ ॥
अंगुष्ठ तर्जनीतककी लम्बाईका
नाम १—प्रादेश १ ॥

अंगुष्ठ बीचवालीके फैलानेकी लंबा-
ईका नाम १—ताल १ ॥

अंगुष्ठ अनामिकाके फैलानेकी
लम्बाईका नाम १—गोकर्ण १ ॥ ८३ ॥

अंगुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्ति-
द्वादशांगुलः ।

नापनेमें बिलस्तके नाम २—
वितस्ति १ द्वादशांगुल २ ॥

पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृ-
तांगुलौ ॥ ८४ ॥

थप्पडके नाम ३—चपेट १ प्रतल
२ प्रहस्त ३ ॥ ८४ ॥

द्वौ संहतौ संहतलप्रतलौ वाम-
दक्षिणौ ।

दुहस्थडेके नाम २—संहतल प्रतल २ ॥
पाणिर्विकुब्जः प्रसृति—

चुल्लुका नाम १—प्रसृति १ ॥
—स्तौ युतावअलिः पुमान् ॥ ८५ ॥

| | |
|---------------------------------|--------------------------------|
| अंजलिका नाम १-अञ्जलि १ ॥ ८५ ॥ | -ऽवटुर्घाटा कृकाटिका ॥ ८८ ॥ |
| अक्रोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो- | घाटीके नाम ३-अवटु १ घाटा |
| हाथका नाम १-हस्त १ ॥ | २ कृकाटिका ३ ॥ ८८ ॥ |
| -मुष्ट्या तु वद्धया । | वक्रास्ये वदनं तुण्डमाननं |
| सरत्निः स्या- | लपनं मुखम् । |
| मुट्टी बांधे हाथका नाम १- | मुँहके नाम ७-वक्र १ आस्य |
| (सरत्नि) रत्नि १ ॥ | २ वदन ३ तुण्ड ४ आनन ५ लपन |
| -दरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन | ६ मुख ७ ॥ |
| मुष्टिना ॥ ८६ ॥ | कृबि घ्राणं गन्धवाहा घोणा |
| कनिअंगुलियाको छोडके मुट्टीबांधे | नासा च नासिका ॥ ८९ ॥ |
| हाथका नाम १-अरत्नि १ ॥ ८६ ॥ | नाकके नाम ५-घ्राण १ गन्धवाहा २ |
| व्यामो बाहोः सकरयोस्ततयोः | घोणा ३ नासा ४ नासिका ५ ॥ ८९ ॥ |
| स्तिर्यगन्तरम् । | ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ |
| हाथ फैलानेका नाम १-व्याम १ ॥ | दशनवाससी । |
| ऊर्ध्वविस्तृतदोः पाणिर्नृमाने | होठके नाम ४-ओष्ठ १ अधर २ |
| पौरुषं त्रिषु ॥ ८७ ॥ | रदनच्छद ३ दशनवासस् ४ ॥ |
| ऊपरको हाथ उठाके नापनेका | अधस्ताच्चिबुकं- |
| नाम १-पौरुष १ ॥ ८७ ॥ | ठोडीका नाम १-चिबुक १ ॥ |
| कण्ठो गलो- | -गण्डौ कपोलौ- |
| गलेके नाम २-कण्ठ १ गल २ ॥ | गालके नाम २-गण्ड १ कपोल २ ॥ |
| -ऽथ ग्रीवायां शिरोधिः | -तत्परा हनुः ॥ ९० ॥ |
| कन्धरेरपि । | कनपटीका नाम १-हनु १ ॥ ९० ॥ |
| गर्दनके नाम ३-ग्रीवा १ शिरोधि २ | रदना दशना दन्ता रदा- |
| कन्धरा ३ ॥ | दांतके नाम ४-रदन १ दशन २ |
| कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा- | दन्त ३ रद ४ ॥ |
| तीन रेखासे युक्त गर्दनका नाम १- | -स्तालु तु काकुदम् । |
| कम्बुग्रीवा १ ॥ | तालुएके नाम २-तालु १ काकुद २ ॥ |

रसज्ञा रसना जिह्वा—
 जीभके नाम ३—रसज्ञा १ रसना
 २ जिह्वा ३॥
 प्रान्तावोष्ठस्य मृक्किणी ॥९१॥
 होठोंके किनारोंका नाम १—
 मृक्किणी १ ॥ ९१ ॥
 ललाटमालिकं गोधि—
 लिलारके नाम ३—ललाट १—
 अलिक २ गोधि ३ ॥
 —रूध्वं दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ ॥
 भौहका नाम १—भू १ ॥
 कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं—
 भौहके बीचका नाम १—कूर्च १॥
 तारकाक्षः कनीनिका ॥ ९२॥
 आंखके तिलका नाम १—तारका १॥९२
 लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं
 चक्षुरक्षिणी । दृग्दृष्टी चा—
 आंखके नाम ८—लोचन १ नयन २
 नेत्र ३ ईक्षण ४ चक्षुष् ५ अक्षि ६
 दृश् ७ दृष्टि ८ ॥
 —असु नेत्राम्बु रोदनं चास्त्र-
 मश्रुच ॥ ९३ ॥
 आंखके नाम ५—असु १ नेत्राम्बु २
 रोदन ३ अस्त्र ४ अश्रु ५ ॥ ९३ ॥
 अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ—
 आंखके किनारोंका नाम १—
 अपाङ्ग १ ॥

—कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ।
 अपाङ्गसे देखनेका नाम १—कटाक्ष १
 कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः
 स्त्री श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ॥
 कानके नाम ६—कर्ण १ शब्दग्रह २
 श्रोत्र ३ श्रुति ४ श्रवण ५ श्रवस ६ ॥ ९४ ॥
 उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्ध्ना
 मस्तकोऽस्त्रियाम् ।
 शिरके नाम ५—उत्तमाङ्ग १ शिरस
 २ शीर्ष ३ मूधन् ४ मस्तक ५ ॥
 चिकुरः कुन्तलो वालः कचः
 केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥
 बालके नाम ६—चिकुर १ कुन्तल २
 बाल ३ कच ४ केश ५ शिरोरुह ६ ॥ ९५ ॥
 तद्वृन्दे कैशिकं कैश्य—
 बालोंके समूहके नाम २—कैशिक १
 कैश्य २ ॥
 —मलकाश्चूर्णकुन्तलाः ।
 टेढे बालोंके नाम २—अलक १
 चूर्णकुन्तल २ ॥
 ते ललाटे अमरकाः—
 ललाटपर लटकते हुए बालोंका
 नाम १—अमरक १ ॥
 —काकपक्षः शिखण्डकः ॥ ९६ ॥
 जुझोंके नाम २—काकपक्ष १
 शिखण्डक २ ॥ ९६ ॥

कवरी केशवेशो—

सांगके नाम २—कवरी १ केश-
वेश २ ॥

—ऽय धम्मिल्लः संयताः कचाः ।

बँधे हुए बालोंका नाम १ धम्मिल्ल १ ॥

शिखा चूडा केशपाशी—

घोटीके नाम ३—शिखा १ चूडा
२ केशपाशी ३ ॥

—व्रतिनस्तु सटा जटा ॥ ९७ ॥

जटाके नाम २—सटा १ जटा २ ॥ ९७

वेणिः प्रवेणी—

तैलादिन लगानेके हेतु लटरे बाल
हो जानेके नाम २—वेणि १ प्रवेणी २ ॥

—शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे ॥

साफ बालोंके नाम २—शीर्षण्य
१ शिरस्य २ ॥

पाशः पक्षश्च हस्तश्च कला-

पार्थाः कचात्परे ॥ ९८ ॥

केशसमूहके नाम ३—केशपाश १-
केशपक्ष २ कुन्तलहस्त इत्यादि ॥ ९८ ॥

तनूरुहं रोम लोम—

रोवेंके नाम ३—तनूरुह १ रोमन्
२ लोमन् ३ ॥

—तद्वृद्धौ श्मश्रु पुंमुखे ।

डाढी मूलाका नाम १—श्मश्रु १ ॥

आकल्पवैषौ नेपथ्यं प्रातिकर्म
प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥

अलंकारकी शोभाके नाम ५—

आकल्प १ वैष २ नेपथ्य ३ प्रातिक-
र्मन् ४ प्रसाधन ५ ॥ ९९ ॥

दशैते त्रि—

यह आगे कहे दश शब्द तीनों
लिङ्गोंमें होते हैं ॥

—ऽवलंकर्त्ताऽलंकरिष्णुश्च—

अलंकार करनेवालेके नाम २—
अलंकर्त्तृ १ अलंकरिष्णु २ ॥

—मण्डितः ॥

प्रसाधितोऽलङ्कृतश्च भूषितश्च
परिष्कृतः ॥ १०० ॥

अलंकार युक्तके नाम ५—मण्डित
१ प्रसाधित २ अलंकृत ३ भूषित ४
परिष्कृत ५ ॥ १०० ॥

विभ्राड् भ्राजिष्णुराचिष्णू—

अलंकारादिसे अतिशोभित हुएके
नाम ३—विभ्राज १ भ्राजिष्णु २—
रोचिष्णु ३ ॥

भूषणं स्यादलंक्रिया ।

सँवारने वा सिंगारनेके नाम २
भूषण १ अलंक्रिया २ ॥

अलङ्कारस्त्वाभरणम् परिष्कारो

विभूषणं ॥ १०१ ॥ मण्डनं चा-

गहने आदिके नाम ५— अलंकार
१ आभरण २ परिष्कार ३ विभूषण
४ ॥ १०१ ॥ मण्डन ५ ॥

—ऽथ मुकुटं किरीटं पुनपुंसकम् ।
मुकुटके नाम मुकुट १—किरीट २
दोनोंही पुं० न० ॥

चूडामणिः शिरोरत्नं—
चोटीकी मणिके नाम २—चूडा—
मणि १ शिरोरत्न २ ॥

—तरलो हारमध्यगः ॥ १०२ ॥
जो हारके बीचमें सबसे बड़ा मणि
होता है उसका नाम १—तरल ॥ १०२ ॥

वालपाश्या पारितथ्या—
चोटीके गहनेके नाम २—वालपा-
श्या १ पारितथ्या २ ॥

—पत्रपाश्या ललाटिका ।
बेदी वा टीकेके नाम २—पत्र-
पाश्या १ ललाटिका २ ॥

कर्णिका तालपत्रं स्यात्—
बाली वा तरकीके नाम २—क-
र्णिका १ तालपत्र २ ॥

—कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥
सुवर्णादिरचित बालीके नाम २—
कुण्डल १ कर्णवेष्टन २ ॥ १०३ ॥

अवैधकं कण्ठभूषा— ॥
कण्ठी वा कण्ठके नाम २—अवै-
धक १ कण्ठभूषा २ ॥

—लम्बनं स्याललन्तिका ।

जो सूंड़ीतक लम्बी कण्ठी हो उस
कण्ठीके नाम २—लंबन १ ललन्तिका २ ॥

स्वर्णः प्रालम्बिका—
ऐसी ही यदि सोनेकी कण्ठी हो
तो उसकण्ठीका नाम १—प्रालम्बिका १ ॥

—ऽथोरःसूत्रिका मौक्तिकैःकृता
॥ १०४ ॥

और वैसेही मोतीसे गुथी हो तो
उसकानाम १—उरसूत्रिका १ ॥ १०४ ॥

हारो मुक्तावली—
मोतीके हारके नाम २—हार १
मुक्तावली २ ॥

—देवच्छन्दोऽसौ शतयाष्टिका ।
जो सौ लडका हार हो उसका
नाम १ देवच्छन्द १ ॥

हारभेदा याष्टिभेदा गुच्छगुच्छा-
र्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥ अर्धहारो
माणवक एकावल्येकयाष्टिका ।
सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविं-
शतिमौक्तिकैः ॥ १०६ ॥

बत्तीस लडका हार हो उसका नाम
१—गुच्छ १ ॥ जो २४ लडका हार
हो उसका नाम १—गुच्छार्ध १ ॥ चार
लडका हार हो उसका नाम १—गोस्तन
१ ॥ १०५ ॥ बारह लडका हार हो उस-
का नाम १—अर्द्धहार ३ ॥ बीस
लडका हार हो उसका नाम १—माण-
वक १ ॥ एक लडका हार हो उस-
का नाम १—एकावली १ ॥ वही

एक लठ अगर सत्ताईस मोतियोंकी
हो तो उसका नाम १-नक्षत्रमाला
१ ॥ १०६ ॥

आवापकः पारिहार्यः कटको
वलयोऽस्त्रियाम् ।

पहुँचीके नाम ४-आवापक १
पारिहार्य २ कटक ३ वलय ४ ॥

केयूरमङ्गदं तुल्ये-
बाजुबन्द आदि भुजाके गहनोंके
नाम २-केयूर १ अङ्गद २ ॥

-अंगुलीयकमूर्धिका ॥ १०७ ॥

छले अंगूठीके नाम २-अंगुलीयक
-१ ऊर्मिका २ ॥ १०७ ॥

साक्षरांगुलिमुद्रा सा-
मोहरसहित अंगूठीका नाम १-
अंगुलिमुद्रा १ ॥

-कंकणं करभूषणम् ।
कंकनके नाम २-कंकण १ क-
भूषण २ ॥

स्त्रीकट्यां मेखला काञ्ची सप्तकी
रशना तथा ॥ १०८ ॥

कृत्रिमे सारसनं चा-

स्त्रीके कमरकी जंजीर अर्थात् मे-
खलाके नाम ५-मेखला १ काञ्ची २
सप्तकी ३ रशना ४ ॥ १०८ ॥ सारसन ५

-ऽथ पुंस्कट्यां शृङ्खलं त्रिषु ॥
पुरुषके जंजीरका नाम १-शृङ्खल १ ।

पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जरी नूपु-
रोऽस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥

पैजण आदि स्त्रीके पांवके गहनेके
नाम ४-पादाङ्गद १ तुलाकोटि २-
मञ्जीर ३-नूपुर ४ ॥ १०९ ॥

हंसकः पादकटकः-
कडेके नाम २-हंसक १ पादकटक २ ॥

-किंकिणी क्षुद्रघण्टिका ।
घुंघुरूके नाम २-किंकिणी १ क्षुद्र-
घण्टिका २ ॥

त्वक्फलकिमिरोमाणि वस्त्र-
योनि-

वृक्षोंकी छाल फल और कीड़ोंके
रोम वस्त्रके उत्पन्न होनेके स्थान हैं ॥

-दर्श त्रिषु ॥ ११० ॥
यह दशों शब्द तीनों लिंगोंमें
होते हैं ॥

वालकं क्षौमादि-

वृक्ष आदिकी छालसे बने हुए
वस्त्रोंके नाम २-वालक १ क्षौम २ इत्यादि ॥

-फालं तु कार्पासं बादरं च
तत् ।

कपासके बने हुए वस्त्रोंके नाम ३-
फाल १ कार्पास २ बादर ३ ॥

कौशेयं कृमिकोशोत्थं-
रेशमीवस्त्रोंका नाम १-कौशेय १ ॥

—राङ्कवं मृगरोमजम् ॥ १११ ॥
ऊनी वस्त्रोका नाम १—राङ्कव १
॥ १११ ॥

अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं
च नवाम्बरम् ।

कोरे वस्त्रके नाम ४—अनाहत १ नि-
ष्प्रवाणिन् १ तन्त्रक ३ नवाम्बर ४ ॥

तत्स्पादुद्रमनीयं यद्वैतयोर्वस्त्रयो-
र्युगम् ॥ ११२ ॥

धुले हुए दो वस्त्रोंके जोड़ेका नाम
१—उद्रमनीय १ ॥ ११२ ॥

पत्रोर्ण धौतकौशेयं—

धुले हुए रेशमी वस्त्रका नाम १—
पत्रोर्ण १ ॥

—बहुमूल्यं महाधनम् ।

बड़े मोलके वस्त्रादिका नाम १—
महाधन १ ॥

क्षौमं दुकूलं स्याद्—

डुपटेके नाम २—क्षौम १ दुकूल २ ॥

—द्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु १ १ ३
कपड़ेके छोरेके नाम २—निवीत
१ प्रावृत २ ॥ ११३ ॥

स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः
स्युर्वस्तयो द्वयोः ।

छीराका नाम १—दशा १ ॥

दैर्घ्यमायाम आरोहः—

कपड़े आदिकी लम्बाईके नाम ३—
दैर्घ्य १ आयाम २ आरोह ३ ॥

—परिणहो विशालता ॥ ११४ ॥

कपड़े आदिकी चौड़ाईके नाम २—

परिणह १ विशालता २ ॥ ११४ ॥

पटच्चरं जीर्णवस्त्रं—

पुराने कपड़ेके नाम २—पटच्चर १
जीर्णवस्त्र २ ॥

—समौ नक्तककर्पटौ ।

फटे चीथरेके नाम १—नक्तक १
कर्पट २ ॥

वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वस-
नमंशुकम् ॥ ११५ ॥

कपड़ेमात्रके नाम ६—वस्त्र १ आ-
च्छादन २ वासस् ३ चैल ४ वसन ५
अंशुक ६ ॥ ११५ ॥

सुचेलकः पटोऽस्त्री—

अच्छे वस्त्रके नाम २—सुचेलक १ पट २ ॥

—स्याद्वराशिः स्थूलशाटकः ।

मोटे वस्त्रके नाम २—वराशि १
स्थूलशाटक २ ॥

निचोलः प्रच्छदपटः—

पालकी आदिके ढकनेके वस्त्रक
नाम २—निचोल १ प्रच्छदपट २ ॥

—समौ रल्लककम्बलौ ॥ ११६ ॥

कम्बलके नाम २—रल्लक १ कम्बल
२ ॥ ११६ ॥

अन्तरीयोपसंव्यानपरिधाना-

न्यधोशुकैः ।

घोतीके नाम ४-अन्तरीय १ उप-
संव्यान २ परिधान ३ अधोशुक ४ ॥

द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ
बृहतिका तथा ॥ ११७ ॥
संव्यानमुत्तरीयं च-

अंगोछा(रुमाल आदि)के नाम-२
प्रावार १ उत्तरासंग २ बृहतिका ३
॥ ११७ ॥ संव्यान ४ उत्तरीय ५ ॥

चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् ।
चोलीके नाम २-चोल १ कूर्पासक २ ॥
नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमा-
निलनिवारणे ॥ ११८ ॥

रजार्द्रका नाम १-नीशार १ ॥ ११८ ॥
अधोरुकं वरस्त्रीणां स्याच्च-
ण्डातकमस्त्रियाम् ।

लहंगेका नाम १-चण्डातक १ ॥
स्यात्त्रिष्वप्रपदीनं तत्प्राप्तोत्था-
प्रपदं हि यत् ॥ ११९ ॥

लंबे लहंगेका नाम १-आप्रपदीन
१ ॥ ११९ ॥

अस्त्री वितानमुल्लोचो-
चदोणके नाम २-वितान १
उल्लोच २ ॥

-दृष्याद्यं वस्त्रवेष्टमनि ।
तम्बू वा डेराका नाम १-दृष्य १ ॥
प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिर-
स्कारिणी च सा ॥ १२० ॥

कनातके नाम ३-प्रतिसीरा १ जव-
निका २ तिरस्कारिणी ३ ॥ १२० ॥

परिकर्मांगसंस्कारः-
स्नानादि अंगसंस्कारके नाम २-
परिकर्मन् १ अंगसंस्कार २ ॥

-स्यान्मार्ष्टिर्माजना मृजा ।
पौछनेके नाम ३-मार्ष्टि १ मा-
जना २ मृजा ३ ॥

उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे-
उवटनके नाम २-उद्वर्तन १
उत्सादन २ ॥

-आप्लाव आप्लवः ॥ १२२ ॥
स्नानं-

न्हानेके नाम ३-आप्लाव १ आप्लव
२ ॥ १२१ ॥ स्नान ३ ॥

-चर्चा तु चार्चिक्यं स्यासको-
चन्दनादिसे देहके लेपके नाम ३-
चर्चा १ चार्चिक्य २ स्यासक ३ ॥

-ऽथ प्रबोधनम् ।
अनुबोधः-

गन्धोमटनिके नाम २-प्रबोधन
१ अनुबोध २ ॥

-पत्रलेखापत्रांगुलिभिर्म समे ॥ १२२ ॥

स्त्रियोंके गाल स्तनादिपर कस्तूरी
चन्दनसे की हुई चित्रकारीके नाम ६-
पत्रलेखा १ पत्रांगुलि २ ॥ १२२ ॥

तमालपत्रतिलकचित्रकाणि
विशेषकम् । द्वितीयं च तुरीयं
च न स्त्रिया-

मस्तकमें चन्दन कस्तूरी आदिसे
टीका लगानेके नाम ४-तमालपत्र
१ तिलक २ चित्रक ३ विशेषक ४॥

-मथ कुंकुमम् ॥ १२३ ॥

काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं वा-
ह्नीकपीतने । रक्तसंकोचपिशुनं
धीरं लोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥

केशरके नाम ११-कुंकुम १ ॥
१२३ ॥ काश्मीरजन्मन् २ अग्निशिख
३ वर ४ बाह्नीक ५ पीतन ६ रक्त-
संकोच ७ पिशुन ८ धीर ९ लोहित
१० चन्दन ११ ॥ १२४ ॥

लाक्षा राक्षा जतु क्लीवे यावो-
ऽलक्तो दुमामयः ।

महावरके नाम ६-लाक्षा १ राक्षा २
जतु ३ याव ४ अलक्त ५ दुमामय ६॥

लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञ-

लौंगके नाम ३-लवंग १ देव-
कुसुम २ श्रीसंज्ञ ३ ॥

-मथ जायकम् ॥ १२५ ॥

कालीयकं च कालानुसार्य चा-

पीले चन्दनके नाम ३-जायक १॥
॥ १२६ ॥ कालीयक २ कालानुसार्य ३॥

-ऽथ समार्थकम् । वंशकागुरु-
राजार्लोहं कृमिजजोङ्गकम् १२६

अगरके नाम ६-वंशक १
अगुरु २ राजार्ह ३ लोह ४ कृमिज-
जोङ्गक ६ ॥ १२६ ॥

कालागुर्वगुरुः-

काले अगरके नाम २-काला-
गुरु १ अगुरु २ ॥

-स्यात्तन्मंगल्या मल्लिगन्धि
यत् ।

अगरका भेद १-मंगल्या १ ॥
यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्व-
सावपि ॥ १२७ ॥ बहुरूपो-
रालके नाम ५-यक्षधूप १ ॥
सर्जरसराल ३ सर्वरस ४ ॥ १२७ ॥
बहुरूप ५ ॥

-ऽप्यथ वृकधूपकृत्रिमधूपकौ ॥
कृत्रिम धूपके नाम २-वृकधूप १
कृत्रिमधूप २ ॥

तुरुष्कः पिण्डकः सिंहो याव-
नो-

लोबानके नाम ४-तुरुष्क १
पिण्डक २ सिंह ३ यावन ४॥

-ऽप्यथ पायसः ॥ १२८ ॥

श्रीवासो वृकधूपोऽपि श्रीविष्टसर-
लद्रवौ ।

देवदारु धूपके नाम ५-पायस १
॥ १२८ ॥ श्रीवास २ वृकधूप ३
श्रीवेष्ट ४ सरलद्रव ५ ॥

मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी चा-
कस्तूरीके नाम ३-मृगनाभि १
मृगमद २ कस्तूरी ३ ॥

-ऽथ कोलकम् ॥ १२९ ॥

कंकोलकं कोशफल-

कंकोलके नाम ३-कोलक १ ॥

॥ १२९ ॥ कंकोलक २ कोशफल ३ ॥

-मथ कर्पूरमस्त्रियाम् । घन-
सारश्चन्द्रसंज्ञः सिताश्रो हिमवा-
लुका ॥ १३० ॥

कर्पूरक नाम ५- कर्पूर १ घन-
सार २ चन्द्रसंज्ञ ३ सिताश्र ४ हिमवा-
लुका ५ ॥ १३० ॥

गन्धसारो मलयजो भद्रश्री-
श्चन्दनोऽस्त्रियाम् ।

मलयागिरि चन्दनके नाम ४-गन्ध-
सार १ मलयज २ भद्रश्री ३ चन्दन ४ ॥

तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दन-
मस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥

सफेद चन्दनका नाम १-तैलपर्णिक
१ ॥ जिसमें कमलके समान गन्ध हो
उस चन्दनका नाम १ गोशीर्ष १ ॥

कपिलवर्ण चन्दनका नाम १-
हरिचन्दन १ ॥ १३१ ॥

तिलपर्णी तु पत्रांगं रञ्जनं रक्त-
चन्दनम् । कुचन्दनं चा-

लालचन्दनके नाम ५-तिलपर्णी १
पत्रांग २ रञ्जन ३ रक्तचन्दन ४
कुचन्दन ५ ॥

-ऽथ जातीकोशजातिफले
समे ॥ १३२ ॥

जायफलके नाम २-जातीकोश १
जातीफल २ ॥ १३२ ॥

कर्पूरागरुकस्तूरीकंकोलैर्यक्षक-
र्दमः ।

कपूर अगर कस्तूरी और कंकोल
इनको बराबर मिलानेसे जो लेपन
बनता है उसका नाम १-यक्षकर्दम १ ॥

गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकं स्या-
द्विलेपनम् ॥ १३३ ॥

पिसी हुई लेपन वस्तुके नाम २-
गात्रानुलेपनी १ वर्ति २ ॥

घिसी(रगडी)हुई लेपन वस्तुके नाम
२-वर्णक १ विलेपन २ ॥ १३३ ॥

चूर्णानि वासयोगाः स्यु-

कपडलान करके जो गन्धवस्तु घोली
जाय उसके नाम २-चूर्ण १ वासयोग २ ॥

-भाषितं वासितं त्रिषु ।

पुष्प इत्यादिसे बसायी हुई वस्तुके
नाम २-भाषित १ वासित २ ॥

संस्कारो गन्धमालयाद्यैः स्या-
त्तदधिवासनम् ॥ १३४ ॥

सुगंध पुष्पादिसे संस्कार करनेका
नाम १-अधिवासन १ ॥ १३४ ॥

माल्यं मालास्त्रजौ मूर्धनि-
सिरपै धारण करने योग्य मालाके
नाम ३-माल्य १ माला २ स्त्रज ३ ॥

-केशमध्ये तु गर्भकः ।
बालोंके बीचमें धारण की हुई
मालाका नाम १-गर्भक १ ॥

प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि-
जो चोटीमें गुँधी हुई माला हो
उसका नाम १-प्रभ्रष्टक १ ॥

-पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १३५ ॥

जो शिखामें लिलारतक लपेटी माला
हो उसका नाम १-ललामक १ ॥ १३५ ॥

प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात्कण्ठा-
कंठमें पहरी हुई मालाका नाम १-
प्रालम्ब १ ॥

-द्वैकक्षिकं तु तत् । यत्तिर्यक्-
क्षितमुरसि-

जो यज्ञोपवीतके तुल्य पहनी जाय
उस मालाका नाम १-द्वैकक्षिक १ ॥

-शिखास्त्रापीडशेखरौ ॥ १३६ ॥

जो शिखामें पहरी जाय उस मालाके
नाम २-आपीड १ शेखर २ ॥ १३६ ॥

रचना स्यात्परिस्पन्द-

माला आदिके बनानेके नाम २-

रचना १ परिस्पन्द २ ॥

-आभोगः परिपूर्णता ।

सर्व सामग्रीके पूरे होनेके नाम ३-

आभोग १ परिपूर्णता २ ॥

उपधानं तूपवर्हः-

तकियेके नाम २-उपधान १ उपवर्ह २ ॥

-शय्यायां शयनीयवत् ॥ १३७ ॥

शयनं-

बिछौनेके नाम ३-शय्या १ शय-

नीय २ ॥ १३७ ॥ शयन ३ ॥

-मञ्चपर्यंकपल्यंकाः खट्वा

समाः ।

पलंग वा खाटक नाम ४-मंच १

पर्यङ्क २ पल्यङ्क ३ खट्वा ४ ॥

गेन्दुकः कन्दुको-

गेंदके नाम २-गेन्दुक १ कन्दुक २ ॥

-दीपः प्रदीपः-

दियाके नाम १-दीप १ प्रदीप २ ॥

-पीठमासनम् ॥ १३८ ॥

पीठाके नाम २-पीठ १ आसन

२ ॥ १३८ ॥

समुद्रकः संपुटकः-

डिब्बाके नाम २-समुद्रक १ संपु-

टक २ ॥

—प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ।

मीकदानके नाम २—प्रतिग्राह १
पतद्ग्रह २ ॥

प्रसाधनी कंकतिका—

कंधीके नाम २—प्रसाधनी १
कङ्कतिका २ ॥

—पिष्टातः पटवासकः ॥ १३९ ॥

बुक्काके नाम २—पिष्टात १ पटवा-
सक २ ॥ १३९ ॥

दर्पणे मुकुरादर्शौ—

दर्पण (सीसे) के नाम ३—दर्पण
१ मुकुर २ आदर्श ३ ॥

—व्यजनं तालवृन्तकम् ।

पखेके नाम २—व्यजन १ तालवृन्तक
२ ॥

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

अथ ब्रह्मवर्गः ७.

संततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजना-
न्वयौ । वंशोऽन्ववायः सन्तानो-

वंशके नाम ९—सन्तति १ गोत्र
जनन ३ कुल ४ अभिजन ५ अन्वय २
६ वंश ७ अन्ववाय ८ सन्तान ९ ॥

—वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥

ब्राह्मण आदिका नाम १—वर्ण १ ॥ १ ॥

विप्रक्षत्रियविद्वद्ब्राह्मातुर्वर्ण्य-
मिति स्मृतम् ।

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इन चारों-

का इकट्ठा नाम १—चातुर्वर्ण्य १ ॥

राजबीजी राजवंश्यो—

राजाके वंशवालोंके नाम २—
राजबीजिन् १ राजवंश्य २ ॥

—वीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥

कुलीनके नाम २—वीज्य १ कुल-
संभव २ ॥ २ ॥

महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जन-
साधवः ।

सज्जनक नाम ६—महाकुल १ कुली-
न २ आर्य ३ सभ्य ४ सज्जन ५ साधु
६ ॥

ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भि-
क्षुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥ आश्रमोऽस्त्री—

ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थ यति इन
चारोंका इकट्ठा नाम १—॥ ३ ॥ आश्रम १ ॥

—द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ।

विप्रश्च ब्राह्मणो—

ब्राह्मणके नाम ६—द्विजाति १
अग्रजन्मन् २ भूदेव ३ वाडव ४ विप्र ५
ब्राह्मण ६ ॥

—ऽसौ षट्कर्मा यागादिभि-
वृत्तः ॥ ४ ॥

इज्या, अध्ययन, दान, याजन, अध्याप-
न, प्रतिग्रह इन षट् कर्मोंकरके युक्त
विप्रका नाम १—षट्कर्मन् १ ॥ ४ ॥

विद्वान्विषयश्रद्धोषज्ञः सन्सुधीः
कोविदो बुधः । धीरो मनीषी
ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान्पण्डितः
कविः ॥ ९ ॥ धीमान्सूरिः कृती
कृष्टिलब्धवर्णो विचक्षणः । दूरदर्शी
दीर्घदर्शी—

पण्डितके नाम २२—विद्वस् १
विपश्चित् २ दोषज्ञ ३ सत् ४ सुधी ५
कोविद ६ बुध ७ धीर ८ मनीषिन् ९
ज्ञ १० प्राज्ञ ११ संख्यावत् १२ पण्डित १३
कवि १४ ॥ ५ ॥ धीमत् १५ सूरि १६
कृतिन् १७ कृष्टि १८ लब्धवर्ण १९ विच-
क्षण २० दूरदर्शिन २१ दीर्घदर्शिन २२ ॥
—श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ ॥ ६ ॥

वेदपाठीके नाम २—श्रोत्रिय १
छान्दस २ ॥ ६ ॥

उपाध्यायोऽध्यापको—
जो पढता हो उस पंडितके नाम
२—उपाध्याय १ अध्यापक २ ॥
—ऽथ स्यान्निषेकादिकृद् गुरुः ।
गर्भाधानादि कर्म करानेवालेका
नाम १—गुरु १ ॥

मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य—
मन्त्रकी व्याख्या करनेवालेका नाम
१—आचार्य १ ॥
—आदेष्टा त्वध्वरे—

यज्ञमें सब ऋत्विजोंमें सिखानेवाले
का नाम १ आदेष्ट १ ॥

—व्रत ॥ ७ ॥
यष्टाच यजमानश्च—
यजमानके नाम ३—व्रतिन् १
॥ ७ ॥ यष्ट २ यजमान ३ ॥
—स सोमवति दीक्षितः ।
सोमयज्ञके यजमानका नाम १ ।
दीक्षित १ ॥

इज्याशीलो यायजूको—
वारंवार यज्ञ करनेवालेके नाम २—
इज्याशील १ यायजूक २ ॥
—यज्वा तु विधिनेष्टवान् ॥ ८ ॥
जो विधिसे यज्ञ करे उसका नाम
१—यज्वन् १ ॥ ८ ॥

स गीष्पतीष्ट्या स्थपतिः—
बृहस्पति यज्ञ करनेवालेका नाम १
स्थपति १ ॥

सोमपीथी तु सोमपाः ।
सोमबल्लीका रस पीनेवालेके नाम
२—सोमपीथिन् १ सोमपा २ ॥
सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः
सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥

जो यज्ञमें अपना सब धन देडाले
उसका नाम १—सर्ववेदस् १ ॥ ९ ॥
अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीति—

संगोपांग वेदः पढनेवालेका नाम

१—अनूचान १ ॥

—गुरोस्तु यः । लब्धानुज्ञः
समावृत्तः—

वही अनूचान गुरुकी गृहस्थाश्रमा-
दिर्म प्राप्त होनेकी आज्ञा पावे तो
उसका नाम १—समावृत्त १ ॥

—सुत्वा त्वभिषवे कृते ॥ १० ॥

अभिषव स्नान करै उसका नाम १—
सुत्वन् १ ॥ १० ॥

छात्रान्तेवासिनौ शिष्य—
विद्यार्थीके नाम ३—छात्र १ अन्ते-
वासिन् २ शिष्य ३ ॥

—शैक्षाः प्राथमकलिपकाः ।

छोटे (नये) विद्यार्थीके नाम २
शैक्ष १ प्राथमकलिपक २ ॥

एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सभ्र-
ह्मचारिणः ॥ ११ ॥

सहपाठी अर्थात् एक साथ एक ही
वस्तु पढनेवालेका नाम १—सब्रह्मचा-
रिन् १ ॥ ११ ॥

सतीर्थ्यास्त्वेकगुरव—

जितने एक गुरुसे पढते हों उनका
नाम १—सतीर्थ्य १ ॥

—श्चित्वाग्निमग्निचित् ।

जो अग्निको बटोरता है उसका
नाम १ अग्निचित् १ ॥

पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमि-
तिहाव्ययम् ॥ १२ ॥

परम्परा उपदेशके नाम २—ऐतिह्य
१ इतिहा २ ॥ १२ ॥

उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्या—

प्रथम ज्ञानका नाम १—उपज्ञा १ ॥

—उज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ।

समझके ग्रन्थके प्रारम्भ करनेका
नाम १ उपक्रम १ ॥

यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्तत-
न्तुर्मेखः क्रतुः ॥ १३ ॥

यज्ञके नाम ७— यज्ञ १ सव २
अध्वर ३ याग ४ सप्ततन्तु ५ मेख ६
क्रतु ७ ॥ १३ ॥

पाठे होमश्चातिथीनां सपर्या
तर्पण बालिः । एते पञ्च महायज्ञा
ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ १४ ॥

महायज्ञके नाम ५— पाठ १ होम २
अतिथिपूजा ३ तर्पण ४ बालि ५ ॥ १४ ॥

समज्या परिषदोष्ठी सभास-
मितिसंसदः । आस्थानी क्लीब-
मास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः सदः ॥ १५ ॥

सभाके नाम ९—समज्या १ परि-
षद् २ गोष्ठी ३ सभा ४ समिति ५
संसद् ६ आस्थानी ७ आस्थान ८
सदसू ९ ॥ १५ ॥

प्राग्वंशः प्राग्वविर्गेहात्-

सदस्योके गृहकानाम् १-प्राग्वंश १ ॥

-सदस्या विधिदर्शिनः ।

सभामें विचार करनेवालोंका नाम

१-सदस्य १ ॥

सभासदः सभास्ताराः सभ्याः

सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥

सभामें बैठनेवालोंके नाम ४-

सभासद १ सभास्तार २ सभ्य ३

सामाजिक ४ ॥ १६ ॥

अध्वर्यूद्रावृहोतारो यजुःसाम-
ग्विदः क्रमात् ।

यजुर्वेद जाननेवालेका नाम १-

अध्वर्यु १ ॥ सामवेदीका नाम १-उद्रावृ

१ ॥ ऋग्वेदीका नाम १-होवृ १ ॥

आग्निघ्राद्या धनैर्वाया ऋत्विजो
याजकाश्च ते ॥ १७ ॥

जिनको धन आदि देकर यज्ञमें वरण
किया जाय उस आग्निघ्न आदि सोल-
हके नाम २-ऋत्विजू याजक २ ॥ १७ ॥

वेदिः परिष्कृता भूमिः-

वेदीका नाम १-वेदि १ ॥

-समे स्थण्डिलचवरे ।

यज्ञार्थ चवूतराके नाम २-

स्थण्डिल १ चत्वर २ ॥

चषालो यूपकटकः-

खम्भाके ऊपर जो कंकणाकार

काष्ठकारहता है उसके नाम २-

चषाल १ यूपकटक २ ॥

-कुम्बा सुगहना वृतिः ॥ १८ ॥

यज्ञोंको अन्यजाति न देखेनेके

निमित्त जो ठट्टी आदि लगायी जाती

है उसका नाम १-कुम्बा १ ॥ १८ ॥

यूपाग्रं तर्म-

यज्ञस्तम्भके आगेके नाम २-यूपाग्र

१ तर्मन् २ ॥

-निर्मन्थ्यदारुणि त्वराणिर्द्वयोः ॥

जिस लकड़ीको मथके अग्नि निका-

लते हैं उसका नाम १-अरणि १ ॥

दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ

त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥

यज्ञकी अग्निके नाम ३-दक्षिणाग्नि

१ गार्हपत्य २ आहवनीय ३ ॥ १९ ॥

आग्नित्रयमिदं त्रेता-

इह तीनों अग्नियोंका नाम १-त्रेता १ ॥

-प्रणीतः संस्कृतोऽनलः ।

संस्कारित अग्निका नाम १-

प्रणीत १ ॥

समूहः परिचाय्योपचाय्यावग्नौ

प्रयोगिणः ॥ २० ॥

यज्ञाग्निके नाम ३-समूह १ परि-

चाय्य २ उपचाय्य ३ ॥ २० ॥

यो गार्हपत्यादानीय दक्षि-

णाग्निः प्रणीयते ।

तस्मिन्नानाद्यो-

गार्हपत्याग्निसे लेकर जो दक्षिणां-
ग्नि प्रवेश कराया जावे उसका नाम १-
आनाद्य १ ॥

-अग्रायी स्वाहा च हुतभु-
विप्रया ॥ २१ ॥

स्वाहा अर्थात् अग्निकी स्त्रीके नाम
३-अग्रायी १ स्वाहा २ हुतभुविप्रया
३ ॥ २१ ॥

ऋक्सामिधेनी धाय्या च या
स्यादग्निसामिन्धने ।

अग्नि बालनेके अर्थ जो ऋचा पढ़ी
जाय उसके नाम २-सामिधेनी १
धाय्या २ ॥

गायत्रीप्रमुखं छन्दो-

गायत्री, उष्णिह, अनुष्टुभ् इत्यादि-
का नाम १-छन्दसू १ ॥

-हव्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥
अग्निमें छोड़नेयोग्यसाकल्यका नाम
१-चरु १ ॥ २२ ॥

आमिक्षा सा श्रुतोष्णे या क्षीरे
स्यादधियोगतः ।

गरम पके दूधमें दही डालनेसे जो
बनता है उसका नाम १-आमिक्षा १ ॥

धवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं
मृगचर्मणा ॥ २३ ॥

मृगचर्मसे बने हुए वीजनाका नाम
१-धवित्र १ ॥ २३ ॥

पृषदाज्यं सदध्याज्ये-

दही घी मिलेहुएका नाम १-पृष-
दाज्य १ ॥

-परमान्नं तु पायसम् ।

खीरके नाम २-परमान्न १ पायस २ ।
हव्यकव्ये दैवपित्र्ये अन्ने-
देवताके अर्थकी खीरका नाम १-
हव्य १ ॥ पितरोंकी खीरका नाम १-
कव्य १ ॥

पात्रं सुवादिकम् ॥ २४ ॥

सुवा आदिका नाम १-पात्र १ ॥ २४ ॥

ध्रुवोभृज्जुहूर्ना तु सुवो भेदाः
सुचः स्त्रियः ।

सुवाके भेद ५-ध्रुवा १ उपभृत् २
जुहू ३ सुव ४ सुच ५ ॥

उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य
ऋतौ हतः ॥ २५ ॥

यज्ञके पशुका नाम १-उपाकृत ॥

परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च
वधार्थकम् ।

यज्ञके अर्थ पशु मारनेके नाम ३-
परम्पराक १ शमन २ प्रोक्षण ३ ॥

वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसंपन्नप्रो-
क्षिता हते ॥ २६ ॥

यज्ञमें मारे हुए पशुके नाम ३-
प्रमीत १ उपसम्पन्न २ प्रोक्षित ३ ॥ २६ ॥

सान्नाय्यं हवि-

साकश्यके नाम २-सान्नाय्य १
हविष २ ॥

-रग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ।

अग्निमें जो हुना जावे उसका नाम

१-वषट्कृत १ ॥

दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञ-

यज्ञान्तस्नानका नाम १-अवभृथ १ ॥

-स्तत्कर्माहं तु यज्ञियम् ।

॥ २७ ॥ त्रि-

यज्ञयोग्यवस्तुका नाम १-यज्ञिय

१ ॥ २७ ॥

-ष्वथ क्रतुकमष्ट-

यज्ञमें कर्मका नाम १-इष्ट १ ॥

-पूर्तं खातादि कर्म यत् ।

बावडी तालाव आदि खुदानेका
नाम १-पूर्त १ ॥

अमृतं विघसो यज्ञशेषभोजन-
शेषयोः ॥ २८ ॥

यज्ञसे बची हुई जाउरि आदिका
नाम १-अमृत १ । और भोजनसे बची
हुई वस्तुका नाम १-विघस १ ॥ २८ ॥

त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जन-
विसर्जने । विश्राणनं वितरणं
स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥
प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः ।

दानके नाम १३-त्याग १ विहा-

पितर दान ३ उत्सर्जन ४ विसर्जन ५

विश्राणन ६ वितरण ७ स्पर्शन ८ प्रति-

पादन ९ ॥ २९ ॥ प्रादेशन १० निर्व-

पण ११ अपवर्जन १२ अंहति १३ ॥

मृतार्थं तदहे दानं त्रिषु स्या-

दौर्ध्वदेहिकम् ॥ ३० ॥

मृतकके अर्थ जो दश दिनके बीचमें

पिंडादि दिये जाते हैं उनका नाम १-

और्ध्वदेहिक १ ॥ ३० ॥

पितृदानं निवापः स्या-

पितरोंके देनेके निमित्त जो दान

दिया जावे उसके नाम २-पितृदान १

निवाप २ ॥

-च्छाद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ।

पितराक देनेके निमित्तके कर्मका

नाम १-श्राद्ध १ ॥

अन्वाहार्यं मासिकं-

अमावास्याके श्राद्धके नाम २-अ-

न्वाहार्य १ मासिक २ ॥

-ऽशोऽष्टमोऽहः कुतपोऽस्त्रि-

याम् ॥ ३१ ॥

दिनके आठवें हिस्सेका नाम १-

कुतप १ ॥ ३१ ॥

पर्वपणा परीष्टिश्राद्धपेषणा च

गवेषणा ।

श्राद्धमें ब्राह्मणकी भक्ति और सेवा

करनेके नाम २-पर्येषणा १ परीष्टि
२ ॥ धर्म आदिके खोजनेके नाम २-
अन्वेषणा १ गवेषणा २ ॥ अथवा ४
नाम धर्म आदिके खोजने के ही
जानने ॥

सनिस्त्वध्येषणा-

विनतीके नाम २-सनि १ अध्येषणा २

-याच्चाऽभिशस्तिर्याचना-

र्यना ॥ ३२ ॥

मांगनेके नाम ४-याच्चा १ अभि-
शस्ति २ याचना ३ अर्थना ४ ॥ ३२ ॥

-षट् तु त्रि-

यह छः शब्द तीनों लिंगोंमें
होते हैं ॥

-ध्वर्धमर्धार्थे पाद्यं पादाय
वारिणि ।

पूजार्थ पानी छोड़नेका नाम १-
अर्ध्य १ ॥ पांव धोनेको छोड़ने योग्य
पानीका नाम १-पाद्य १ ॥

क्रमादातिथ्यातिथ्ये अतिथ्य-
र्थेऽत्र साधुनि ॥ ३३ ॥

अतिथिके अर्थ जो कर्म उसका ना-
म १-आतिथ्य १ ॥ अतिथिके निमित्त
जो सिद्ध हो वह १-आतिथ्येय १ ॥ ३३ ॥
स्युरावेशिक आगन्तुरतिथिर्ना
गृहागते ।

महिमानक नाम ४-आवेशिक १
आगन्तु २ अतिथि ३ गृहागत ४ ॥

पूजा नमस्याऽपचातः सपर्या-
र्चाहिणाः समाः ॥ ३४ ॥

पूजाके नाम ६-पूजा १ नमस्या २
अपचिति ३ सपर्या ४ अर्चा ५ अर्हणा
६ ॥ ३४ ॥

वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्या-
प्युपासना ।

उपासनाके नाम ४-वरिवस्या १
शुश्रूषा २ परिचर्या ३ उपासना ४ ॥

ब्रज्याऽटाट्या पर्यटनं-

विदेशमें भ्रमण करनेके नाम ३-
ब्रज्या १ अटाट्या २ पर्यटन ३ ॥

-चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः ॥ ३५ ॥

योगमागमें स्थितिका नाम १-
चर्या १ ॥ ३५ ॥

उपस्पर्शस्त्वाचमन-

आचमनके नाम २-उपस्पर्श १
आचमन २ ॥

-मथ मौनमभाषणम् ।

चुप रहनेके नाम २-मौन १ अभा-
षण २ ॥

आनुपूर्वी स्त्रियां वाऽऽवृत्परि-
पाटी अनुक्रमः ॥ ३६ ॥ पर्यायश्चा-

अनुक्रमके नाम ५-आनुपूर्वी १
आवृत् २ परिपाटी ३ अनुक्रम ४
॥ ३६ ॥ पर्याय ५ ॥

—ऽतिपातस्तु स्यात्पर्यय उपा-
त्ययः ।

अतिक्रमके नाम ३—अतिपात २
पर्यय २ उपात्यय ३ ॥

नियमो व्रतमस्त्री—
व्रतके नाम २—नियम २ व्रत २ ॥

—तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥ ३७ ॥
चान्द्रायणादि व्रतका नाम १—पु-
ण्यक १ ॥ ३७ ॥

—औपवस्तं तूपवासो—
उपवासके नाम २—औपवस्त १
उपवास २ ॥

—विवेकः पृथगात्मता ।
प्रकृतिपुरुषके भेद जाननेके विचारके
नाम २—विवेक १ पृथगात्मता २ ॥

स्याद्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनार्द्धि—
सदाचारपालन और वेदाभ्यास कर-
नेसे जो तेज होता है उसका नाम १—
ब्रह्मवर्चस १ ॥

—रथाञ्जलिः ॥ ३८ ॥ पाठे
ब्रह्माञ्जलिः—

वेदपढ़नेके समयकी अंजलिका नाम
१—ब्रह्माञ्जलि १ ॥ ३८ ॥

—पाठे विप्रुषो ब्रह्मबिन्दवः ॥
वेद पढ़नेके समय जो मुखसे जल
चूता है उसका नाम १—ब्रह्मबिन्दु १ ॥

ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं—
ध्यान और योगके आसनका नाम

१—ब्रह्मासन १ ॥

—कल्पे विधिक्रमौ ॥ ३९ ॥
नियोगशास्त्रके नाम ३—कल्प १
विधि २ क्रम ३ ॥ ३९ ॥

मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पो—
प्रथम विधिका नाम १—मुख्य १ ॥
—ऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः ।

द्वितीय विधिका नाम १—अनु-
कल्प १ ॥

संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाक-
रणं श्रुतेः ॥ ४० ॥

संस्कारपूर्वक वेदके सुननेका नाम
१—उपाकरण १ ॥ ४० ॥

समे तु पादग्रहणमभिवादन-
मित्युभे ।

नामगोत्रादि पूर्वक प्रणाम करनेके
नाम ३—पादग्रहण १ अभिवादन २ ॥

भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पारा-
शर्यापि मस्करी ॥ ४१ ॥

संन्यासीके नाम ५—भिक्षु १ परि-
व्राज २ कर्मन्दिन् ३ पाराशरिन् ४
मस्करिन् ५ ॥ ४१ ॥

तपस्वी पापसः पारिकांक्षी-
तपस्वीके नाम ३—तपस्विन् १ ता-
पस २ पारिकांक्षिन् ३ ॥

—वाचंयमो मुनिः ।
 मुनिके नाम २—वाचंयम १ मुनि २ ॥
 तपःक्लेशसहो दान्तो—
 तपस्याके क्लेशके सहनेवालेका नाम
 १—दान्त १ ॥
 वार्णिनो ब्रह्मचारिणः ॥ ४२ ॥
 ब्रह्मचारीक नाम २—वर्णिन् १
 ब्रह्मचारिन् २ ॥ ४२ ॥
 ऋषयः सत्यवचसः—
 ऋषिके नाम २—ऋषि १ सत्य-
 वचसू २ ॥
 स्नातकस्त्वाप्लुतो व्रती ।
 जो वेदव्रत धारण किये हुए गुरुकी
 आज्ञासे स्नान करै उसका नाम १—
 स्नातक १ ॥
 ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो
 यतयश्च ते ॥ ४३ ॥
 जितेन्द्रियके नाम २—यतिन् १ ॥
 यति २ ॥ ४३ ॥
 यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थ-
 ण्डिलशाय्यसौ । स्थण्डिलश्चा-
 जो व्रतवश हो पृथ्वीपर चवूतरा
 बना उसपर सोवे उसके नाम २—स्थ-
 ण्डिलशायिन् १ स्थण्डिल २ ॥
 —ऽथ विरजस्तमसः स्युर्द्रया-
 तिगाः ॥ ४४ ॥

रजोगुण तमोगुण रहित व्यासादि
 मुनिके नाम २—विरजस्तमसू १ द्रया-
 तिग २ ॥ ४४ ॥
 पवित्रः प्रयतःपूतः—
 पवित्रके नाम ३—पवित्र १ प्रयत
 २ पूत ३ ॥
 —पाखण्डाः सर्वलिङ्गिनः ।
 बौद्धक्षपणकादि दुष्ट शास्त्रवर्तियों-
 के नाम २—पाखण्ड १ सर्वलिङ्गिन् २ ॥
 पालाशो दण्ड आषाढो व्रते—
 ब्रह्मचर्यमें पालाशके दण्डका नाम
 १—आषाढ १ ॥
 —राम्भस्तु वैणवः ॥ ४५ ॥
 यदि वह दण्ड वांसका हो तो उस-
 का नाम १—राम्भ १ वैणव ॥ ४५ ॥
 अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी—
 व्रतियोंक लोटेके नाम २—कमण्ड-
 लु १ कुण्डी २ ॥
 —व्रतिनामासनं वृसी ।
 और उनके आसनका नाम १—
 वृसी १ ॥
 अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री—
 मृगादिके चर्मके नाम ३—अजिन
 १ चर्मन् २ कृत्ति ३ ॥
 —भैक्ष भिक्षाकदम्बकम् ॥ ४६ ॥
 भिक्षाके ढेरका नाम १—भैक्ष १ ॥ ४६ ॥

स्वाध्यायः स्याज्जपः—

वेदके अभ्यासके नाम २—स्वाध्याय
१ जप २ ॥

—सुत्याऽभिषवः सवनं च सा ।

यज्ञौषधिके कूटनेके नाम ३—सुत्या
१ अभिषव २ सवन ३ ॥

सर्वेनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वध-
मर्षणम् ॥ ४७ ॥

सब पापके नाश करनेवाले मंत्रका
नाम १—अधमर्षण १ ॥ ४७ ॥

दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षा-
न्तयोः पृथक् ।

अमावासके दिनके यज्ञका नाम १—
दर्श १ ॥ पौर्णमासीके दिनके यज्ञका नाम
१—पौर्णमास १ ॥

शरीरसाधनोपेक्षं नित्यं यत्कर्म
तद्यमः ॥ ४८ ॥

अहिंसा सत्य चोरी न करना ब्रह्म-
चर्य्य अपरिग्रह (दान न लेना) इन
नित्यकर्मका नाम १—यम १ ॥ ४८ ॥

नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमा ।
गन्तुसाधनम् ।

शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर-
प्रणिधान इन आगन्तु कर्म साधनका
नाम १—नियम १ ॥

उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे
करे ॥ ४९ ॥

वांये कांधके जनेऊके नाम २—उप-
वीत १ ब्रह्मसूत्र २ ॥ ४९ ॥

प्राचीनावीतमन्यास्मन्—

दहने कांधेपर रहेनेवाले जनेऊका
नाम १—प्राचीनावीत १ ॥

—निर्वीतं कण्ठलग्नितम् ।

मालाकार यज्ञोपवीत पहिरनेका
नाम १—निर्वीत १ ॥

अंगुल्यग्रे तीर्थं दैवं—

अंगुलियाका अग्रभाग देवता-
ओंका तीर्थ कहात है ॥

स्वल्पांगुल्यार्मूले कायम् ॥ ५० ॥

कन अंगुलियोंके मूलका नाम
प्रजापति तीर्थ है ॥ ५० ॥

मध्येऽङ्गुष्ठांगुल्योः पित्र्यं—

अंगुष्ठ और तर्जनी अंगुलीके
मध्यमें पितृतीर्थ कहाता है ॥

—मूले त्वंगुष्ठस्य ब्राह्मम् ।

अंगुष्ठके मूलमें ब्राह्मतीर्थ
कहाता है ॥

स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायु-
ज्यामित्यपि ॥ ५१ ॥

ब्रह्ममें मिल जानेके नाम ३—ब्रह्म-
भूय १ ब्रह्मत्व २ ब्रह्मसायुज्य ३ ॥ ५१ ॥

देवभूयादिकं तद्वत्—

देवमें मिल जानेके नाम ३—देव-
भूय १ देवत्व २ देवसायुज्य ३ ॥

—कृच्छं सान्तपनादिकम् ।

गोमूत्र गोबर दूध दही घी कुशो-
दक इनका भक्षण करने और एकरा-
त्रिके उपवासका नाम १—कृच्छ १ ॥

संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायो-
संन्यासपूर्वक भोजनत्यागका नाम
१—प्राय १ ॥

—उथ वीरहा ॥ ५२ ॥ नष्टाग्निः—
जिस तपस्वीकी अग्नि बुझ गई हो
उस तपस्विके नाम २—वीरहन् १
॥ ५२ ॥ नष्टाग्नि २ ॥

—कुहना लोभान्मिथ्येर्यापथक-
ल्पना ।

दम्भसे ध्यानादि करनेका नाम १—
कुहना १ ॥

व्रात्यः संस्कारहीनः स्या—
जिस ब्राह्मणका गौणकालमें सी
यज्ञोपवीत न हुआ हो उसका नाम
१—व्रात्य १ ॥

—दस्वाध्यायो निराकृतिः ॥ ५३ ॥
वेदाभ्यासरहितका नाम १—निरा-
कृति १ ॥ ५३ ॥

धर्मध्वजी लिङ्गवृत्ति—

बहुरुपिया ब्राह्मणके नाम २—
धर्मध्वजिन् १ लिङ्गवृत्ति २ ॥

—रवकीर्णी क्षतव्रतः ॥

जिसका ब्रह्मचर्य नष्ट हो गया हो
उसके नाम २—रवकीर्णिन् १ क्षतव्रत २ ॥

सुप्ते यस्मिन्नस्तमति सुप्त य-
स्मिन्नुदात्त च ॥ ५४ ॥ अंशुमान-

भिर्निर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम् ।
सायंसंध्यामें सोनेवालेका नाम १—

अभिर्निर्मुक्त १ ॥ प्रातःकालकी संध्यामें
सोनेवालेका नाम १—अभ्युदित १ ॥ ५४

परिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठे दार-
परिग्रहात् ॥ ५५ ॥

जिसका बड़ा भाई न व्याहा गया
हो प्रथम छोटा व्याहा जाय तो उस
छोटेका नाम १—परिवेत् १ ॥ ५५ ॥

परिवित्तिस्तु तज्ज्यायान्—
उसक बड़े भाइका नाम १—परि-
वित्ति १ ॥

—विवाहोपयमौ समौ । तथा
परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपी-
डनम् ॥ ५६ ॥

विवाहके नाम ६—विवाह १ उप-
यम २ परिणय ३ उद्वाह ४ उपयाम ५
पाणिपीडन ६ ॥ ५६ ॥

व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधु-
वनं रतम् ।

मैथुनके नाम ५—व्यवाय १ ग्राम्य-
धर्म २ मैथुन ३ निधुवन ४ रत ५ ॥

त्रिवर्गो धर्मकामार्थे-

वेदविहितयज्ञादि विधि, स्त्रीसेवन,
न्यायसे धनोपार्जन, इनका नाम १-
त्रिवर्ग १ ॥

-श्रतुर्वर्गः समोक्षकैः ॥ ५७ ॥

और मोक्षकरक युक्त धर्म अर्थ काम
हों तो उसका नाम १-चतुर्वर्ग १ ॥ ५७ ॥

सर्वलैस्तैश्चतुर्भद्रं-

और वेद धर्मादि सबल हों तो इनका
नाम १-चतुर्भद्र १ ॥

-जन्यास्निग्धा वरस्य ये ॥ ५८ ॥

वराती अर्थात् वरके पक्षवालोंका
नाम-१ ॥ जन्य १ ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवगः ॥ ७ ॥

अथ क्षत्रियवगः ८.

मूर्धाभिषिक्ता राजन्यो बाहुजः
क्षत्रियो विराट् ।

क्षत्रियके नाम ५-मूर्धाभिषिक्त १
राजन्य २ बाहुज ३ क्षत्रिय ४ विराट् ५ ॥

राजा राट् पार्थिवक्षमाभृन्नृप-
पमहीक्षितः ॥ १ ॥

राजाके नाम ७-राजन् १ राज्
२ पार्थिव ३ क्षमाभृत् ४ नृप ५ भूप ६
महीक्षित् ७ ॥ १ ॥

राजा तु प्रणताश्वसामन्तः
स्याद्धीश्वरः ।

जो बहुत राजाओंका मालिक हो
उसका नाम १-अधीश्वर १ ॥

चक्रवर्ती सार्वभौमो-

समुद्रपर्यन्तपृथ्वीका जिसका राज्य
हो उसके नाम २-चक्रवर्तिन् १
सार्वभौम २ ॥

-नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

चारहजार ४००० कोशके भूमंडलके
राजाका नाम १-मण्डलेश्वर १ ॥ २ ॥

येनेष्ट राजसूयेन मण्डलस्ये-
श्वरश्च यः । शास्ति यश्चाज्ञया
राज्ञः स सम्रा-

वही मण्डलेश्वर राजसूययज्ञ किये हो
और सब राजाओंका शिक्षक हो तो
उसका नाम १-सम्राज् १ ॥

-उथ राजकम् ॥ ३ ॥ राज
न्यकं च नृपतिक्षत्रियाणां गणे
क्रमात् ।

राजाओंक गणका नाम १-
राजक १ ॥ ३ ॥ और क्षत्रियोंके गणका
नाम १-राजन्यक १ ॥

मन्त्री धीसचिवोऽमात्यो-

मंत्रीके नाम ३-मन्त्रिन् १ धीस-
चिव २ अमात्य ३ ॥

-ऽन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥

मंत्रीसे छोटे अन्य मुसाहिओंका
नाम १-कर्मसचिव १ ॥ ४ ॥

महामात्राः प्रधानानि-

मुख्यमंत्रिके नाम २- महामात्र १
प्रधान २ ॥

-पुरोवास्तु पुरोहितः ।

पुरोहितके नाम २- पुरोधस् १
पुरोहित २ ॥

द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राडिवाकाक्ष-
दर्शकौ ॥ ५ ॥

पंच अर्थात् न्यायाधीशके नाम २-
प्राडिवाक १ अक्षदर्शक २ ॥ ५ ॥

प्रतिहारो द्वारपालद्वाःस्थद्वाः-
स्थितदर्शकाः ।

द्वारपालके नाम ५-प्रतीहार १
द्वारपाल २ द्वाःस्थ ३ द्वाःस्थित ४ दर्शक ५ ॥

राक्षिर्वर्गस्त्वनीकस्थो-

रखवालेके नाम २-राक्षिर्वर्ग १
अनीकस्थ २ ॥

-ऽथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥ ६ ॥

अधिकारीके नाम २-अध्यक्ष १
अधिकृत २ ॥ ६ ॥

स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे-

एक ग्रामके ठेकेदारका नाम १-
स्थायुक १ ॥

गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।

बहुत ग्रामोंके ठेकेदारका नाम १-
गोप १ ॥

भौरिकः कनकाध्यक्षो-

सोनेके अधिकारीके नाम २-

भौरिक १ कनकाध्यक्ष २ ॥

-रूपाध्यक्षस्तु नैष्किकः ॥ ७ ॥

खजानजीके नाम २-रूपाध्यक्ष
१ नैष्किक २ ॥ ७ ॥

अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्त-
र्वेशिको जनः ।

जो ननानेकी वस्तुओंका अधिकारी
हो उसका नाम १-अन्तर्वेशिक १ ॥

सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः
सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥

राजा वा राजस्त्रियोंके निकट जो
बैठ लिये हुए खड़े रहते हैं उनके नाम
४-सौविदल १ कञ्चुकिन २ स्थापत्य
३ सौविद ४ ॥ ८ ॥

षण्डो वर्षवरस्तुल्यौ-

खोजोंके नाम २-षण्ड १ वर्षवर २ ॥

-सेवकार्थ्यनुजीविनः ।

सेवक वा नौकरके नाम ३-सेवक
१ आर्थ्य २ अनुजीविन ३ ॥

विषयानन्तरो राजा शत्रु-

राजके देशके पासके राजाका नाम
१-शत्रु १ ॥

-मित्रमतः परम् ॥ ९ ॥

उसके अन्य राजाका नाम १-
मित्र १ ॥ ९ ॥

उदासीनः परतरः—

इन शत्रु मित्रोंसे पर अन्य राजा-
ओंका नाम १—उदासीन १॥

—पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।

अपने राज्यके पीछे राजा हो
उसका नाम १—पार्ष्णिग्राह १ ॥

रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्वेषणदु-
र्हृदः ॥ १० ॥ द्विद्विषक्षाहितामित्र-
दस्युशात्रवशत्रवः॥ अभिघातिपरा-
रातिप्रत्यर्थिपरिपंथिनः ॥ ११ ॥

दुश्मनके नाम १९—रिपु १ वैरि-
न २ सपत्न ३ अरि ४ द्विषत् ५ द्वेषण
६ दुर्हृद ७ ॥ १० ॥ द्विषत् विपक्ष ९
अहित १० अमित्र ११ दस्यु १२
शात्रव १३ शत्रु १४ अभिघातिन् १५
पर १६ अराति १७ प्रत्यर्थिन् १८
परिपंथिन् १९ ॥ २१ ॥

वयस्यः स्निग्धः सवया—

हमजोलीके नाम ३—वयस्य १
स्निग्ध २ सवयस् ३ ॥

—अथ मित्रं सखा सुहृत् ।

मित्रके नाम ३—मित्र १ सखि २ सुहृद् ३ ॥

सख्यं साप्तपदीनं स्या—

मित्रताके नाम २—सख्य १ सा-
प्तपदीन २ ॥

—दनु र्धोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥

१०

भला मनाने(मुलाहिजे, के नाम २—

अनुरोध १ अनुवर्तन २ ॥ १२ ॥

यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चर-

स्पशः । चारश्च गूढपुरुष—

जासूस वा हालकारेके नाम ७—

यथार्हवर्ण १ प्रणिधि २ अपसर्प ३ चर

४ स्पश ५ चार ६ गूढपुरुष ७ ॥

—श्चाप्तप्रत्यायितौ समौ ॥ १३ ॥

विश्वासीके नाम २—आप्त १ प्रत्या-

यित २ ॥ १३ ॥

सांघत्सरो ज्योतिषिको दैव-

ज्ञगणकावपि । स्युर्मौहूर्तिकमौ-

हूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥ १४ ॥

ज्योतिषी पण्डितके नाम ८—सांघ-

त्सर १ ज्योतिषिक २ दैवज्ञ ३ गणक

४ मौहूर्तिक ५ मौहूर्त ६ ज्ञानिन् ७

कार्तान्तिक ८ ॥ १४ ॥

—त न्नित्रको ज्ञातसिद्धान्तः—

शास्त्रिके नाम २—तान्त्रिक १ ज्ञात-

सिद्धान्त २ ॥

सत्री गृहपतिः समौ-

मोदीके नाम—सत्रिन् १ गृहपति २ ॥

लिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चुश्च

लेखके ॥ १५ ॥

लेखकेके नाम ४—लिपिकर १ अक्षर-

चण २ अक्षरचुञ्चु ३ लेखक ४ ॥ १५ ॥

लिखिताक्षरविन्यासे लिपिलिं
विरुभे स्त्रियौ ।

लिखे हुए लेखके नाम ४-लिखित १
अक्षरविन्यास २ लिपि ३ लिपि ४ ॥

स्पात्संदेशहरो दूतो-

दूतके नाम २-संदेशहर १ दूत २

-दूत्यं तद्भावकर्मणी ॥ १६ ॥

दूतपनका नाम १-दूत्य १ ॥ १६ ॥

अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः
पथिक इत्यपि ।

रस्तेगीरके नाम ५-अध्वनीन १
अध्वग २ अध्वन्य ३ पान्थ ४ पथिक ५ ॥

स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्ग-
बलानि च ॥ १७ ॥ राज्याङ्गानि
प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ।

स्वामी(राजा)अमात्य(मन्त्री)सुहृद्
(मित्र) कोश (खजाना) राष्ट्र (देशकी
भूमि) दुर्ग (दुर्गमस्थान) बल(फौज)
॥ १७ ॥ पुरवासी और शिल्पी इन
सबके नाम २-राज्याङ्ग १ प्रकृति २ ॥

संधिर्ना विग्रहो यानमासन द्वय-
माश्रयः ॥ १८ ॥ षड्गुणाः-

सुवर्णादि देके शत्रुकेमिलानेका नाम
१-सन्धि १ ॥ शत्रुके साथ बिगडनेका
नाम १-विग्रह १ ॥ शत्रुपर चढाई कर-
नेका नाम १-यान १ ॥ अपने स्थानपर

तैयार हो रहनेका नाम १-आसन १ ॥

शत्रुके अधिकारियोंमें फूट करानेका
नाम १-द्वैध १ ॥ दूसरेका आसरा
लेनेका नाम १-आश्रय १ ॥ १८ ॥ ये छः
गुण कहलाते हैं ॥

-शक्तयस्तिष्ठः प्रभावोत्साह-
मन्त्रजाः ।

राजाकी शक्तियोंके नाम ३-प्रभा-
व १ उत्साह २ मन्त्रज ३ ॥

क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो
नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥

नीतिशास्त्रोक्त क्षय स्थान वृद्धिका
नाम १-त्रिवर्ग १ ॥ १९ ॥

स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः
केशदण्डजम् ।

खजाना और दंडके प्रभावके नाम
२-प्रताप १ प्रभाव २ ॥

सामदाने भेददण्डावित्युपायच-
तुष्टयम् ॥ २० ॥

राजाके चारों उपायोंके नाम ४-
सामन् १ दान २ भेद ३ दण्ड ४ ॥ २० ॥

साहसं तु दमो दण्डः-

दण्ड देनेके नाम ३-साहस १ दम
२-दण्ड ३ ॥

-साम सान्त्व-
सल्लक करनेके नाम २-सामन्
१ सान्त्व २ ॥

—मथो समौ ॥ भेदोपजापा-
फरक डालनेके नाम २—भेद १
उपजाप २ ॥

—बुधौ धर्मार्थित्परीक्षणम् २१
धर्म अर्थ काम और भयस मंत्री
इत्यादिकोंकी परीक्षा करनेका नाम १—
उपधा १ ॥ २१ ॥

पञ्च त्रि—

—अषडक्षीण आदि निःशलाक
पर्यन्त पांच शब्द तीनों लिंगोंमें
होते हैं॥

—ष्वषडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगो-
चरः ।

दो जनोंकी ही सलाहका नाम १—
अषडक्षीण १ ॥

विविक्ताविजनच्छन्ननिःशलाका
स्तथा रहः ॥ २२ ॥ रहश्चोपांशु
चालिङ्गे—

एकान्तके नाम ७—विविक्त १—
विजन २ छन्न ३ निःशलाक ४ रहस्य ५
॥ २२ ॥ रह ६ उपांशु ७ ॥

—रहस्यं तद्भवे त्रिषु ।

एकान्तकी बात वा कामका नाम
१—रहस्य १ ॥

समौ विश्वम्भविश्वासौ—

विश्वासके नाम २—विस्वम्भ १
विश्वास २ ॥

—अप्रेषो भ्रंशो यथोचितात् ॥ २३ ॥

अन्यायका नाम १—अप्रेष १ ॥ २३ ॥

अप्रेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं

समञ्जसम् ।

न्यायके नाम ५—अप्रेष १ न्याय
२ कल्प ३ देशरूप ४ समञ्जस ५ ॥

युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमा-
नाभिनीतवत् ॥ २४ ॥ न्याय्यं च

त्रिषु षट्—

न्यायसे जो वस्तु ली जावे उसके नाम
६—युक्त २ औपयिक २ लभ्य ३ भज-

मान ४—अभिनीत ५ ॥ २४ ॥ न्याय
६—ये छः शब्द त्रिलिंग हैं ॥

—सम्प्रधारणा तु समर्थनम् ।
यही उचित है ऐसे निश्चय करनेके

नाम २—सम्प्रधारणा १ समर्थन २ ॥

अववादस्तु निर्देशो निदेशः
शासनं च सः ॥ २५ ॥ शिष्टि—

आज्ञा च—

आज्ञाके नाम ६—अववाद १ निर्देश
२ निदेश ३ शासन ४ ॥ २५ ॥ शिष्टि

५ आज्ञा ६ ॥

—संस्था तु मर्यादा धारणा-
स्थितिः ।

मर्यादाके नाम ४—संस्था—१
मर्यादा २ धारणा ३ स्थिति ४ ॥

आगोऽपराधो मन्तुश्च-
अपराधके नाम ३-आगम् १ अप-
राध २ मन्तु ३ ॥

-समे तूद्धानबन्धने ॥ २६ ॥
बन्धनके नाम २-उद्धान १ बन्धन
२ ॥ २६ ॥

द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो-
दूने दण्डका नाम १-द्विपाद्य १ ॥
-भागधेयः करो बालिः ।
करके नाम ३-भागधेय १ कर २
बलि ३ ॥

घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री-
घाटी वगैरहमें देने योग्य महसूलके
नाम १-शुल्क १ ॥

-प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥
मित्रादिकोंको भेंट वा नजर देनेके
नाम ॥-२-प्राभृत १ प्रदेशन २ ॥ २७ ॥

-उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथो-
पदा ।

राजाको भेंट वा नजर देनेके नाम ४-
उपायन १ उपग्राह्य २ उपदार ३ उपदा ४ ॥

यौतकादि तु यदेयं सुदायो
हरणं च तत् ॥ २८ ॥

दहेज वा भाईबन्धुओंके देनेकी व-
स्तुके नाम २-सुदाय १ हरण २ ॥ २८ ॥

तत्कालस्तु तदात्वं रथा-

वर्तमानसमयके नाम २-तत्काल
तदात्वं २ ॥

-दुत्तरः काल आयातिः ।
आनेवाले समयका नाम १-आयति १ ॥

सांष्टष्टिकं फलं सद्य-
तुरन्तक फलका नाम १-सांष्टष्टिक १
-उदर्कः फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥
आगेके होनेवालेका नाम १-उदर्क
१ ॥ २९ ॥

अदृष्टं वदितोयादि-
बाग लगने और अतिवृष्टि होने
आदि उत्पातका नाम १-अदृष्ट १ ॥

-दृष्टं स्वपरचक्रजम् ।
अपने या पराये राज्यसे चौरादिके
भयका नाम १-दृष्ट १ ॥

महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं
भयम् ॥ ३० ॥

अपने सहायकसे भयका नाम १-
अहिभय १ ॥ ३० ॥

प्रक्रिया त्वधिकारः स्या-
कानून चलानेके नाम २-प्रक्रिया १
अधिकार २ ॥

-चामरं तु प्रकीर्णकम् ।
चँबरके नाम २-चामर १ प्रकीर्णक २

नृपासनं यत्तद्भद्रासनं-
मणि आदिसे बनी हुई राज गद्दीके
नाम २-नृपासन १ भद्रासन २ ॥

—सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥
हैमं -

कदाचित् वही राजाके बैठनेका
स्थान सोनेसे बना हो तो उसका नाम
१—सिंहासन १ ॥ ३१ ॥

—छत्रं त्वातपत्रं—

छतुरीके नाम २—छत्र १ आतपत्र २ ॥

—राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत् ।

राजाके छत्रका नाम १—नृपलक्ष्मन् १ ॥

भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो—

भरे घडेके नाम २—भद्रकुम्भ १
पूर्णकुम्भ २ ॥

भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२ ॥

झारी या गडुवेके नाम २—भृङ्गार
१ कनकालुका २ ॥ ३२ ॥

निवेशः शिविरं षण्डे—

ढेराके नाम २—निवेश १ शिविर २ ॥

—सज्जनं तृपरक्षणम् ।

बहरेके नाम २—सज्जन १ उपरक्षण २ ॥
हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्या-

ञ्चतुष्टयम् ॥ ३३ ॥

हाथी घोडा रथ सिपाही इन सब-
का नाम १—सेनाङ्ग १ ॥ ३३ ॥

दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदो-
ऽनेकपो द्विपः । मतङ्गजो गजो

नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४ ॥

इभः स्तम्बेरमः पद्मी—

हाथीके नाम १—दन्तिन् १ दन्ता-
वल २ हस्तिन् ३ द्विरद ४ अनेकप ५
द्विप ६ मतङ्गज ७ गज ८ नाग ९ कुञ्जर १०
वारण ११ करिन् १२ ॥ ३४ ॥ इभ १३
स्तम्बेरम १४ ॥ पद्मिन् १५ ॥

—यूथनाथस्तु यूथपः ।

हाथियोंके सिरदार हाथीके नाम
२—यूथनाथ १ यूथप २ ॥

मदोत्कटो मदकलः—

मदान्ध हाथीके नाम २—मदोत्कट
१ मदकल २ ॥

—कलभः करिशावकः ॥ ३५ ॥

हाथीके बच्चोंके नाम २—कलभ १
करिशावक ३ ॥ ३५ ॥

प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः—

जिसके मद बहता हो उसके नाम
३—प्रभिन्न १ गर्जित २ मत्त ३ ॥

—समाबुद्धान्तनिर्मदौ ।

बेमदवालेके नाम २—उद्धान्त १
निर्मद २ ॥

हास्तिकं गजता वृन्दे—

हाथियोंके समूहके नाम २—हास्तिक
१ गजता २ ॥

—करिणी धेनुका वशा ॥ ३६ ॥

हथिनीके नाम ३—करिणी १
धेनुका २ वशा ३ ॥ ३६ ॥

गण्डः कटो-
 हाथीके गालके नाम २-गण्ड १
 कट २ ॥
 -मदो दानं-
 हाथीके मदके नाम २- मद १
 दान २ ॥
 -वमथुः करशीकरः
 हाथीकी सूँडसे पानी निकलनेके
 नाम २-वमथु १ करशीकर २ ॥
 कुम्भौ तु पिण्डौ शिरस-
 हाथीके मस्तकके मांसका नाम १-
 कुम्भ १ ॥
 -स्तयोर्मध्ये विदुः पुमान् ॥ ३७ ॥
 दोनों कुम्भोंके मध्यमें जो खाली
 रहता है उसका नाम १-विदु ॥ ३७ ॥
 -अवग्रहो ललाटं स्या-
 हाथीके लिलारका नाम १-अव-
 ग्रह १ ॥
 -दीपिका त्वक्षिकूटकम् ।
 उसके नेत्रोंकी गोलाईके नाम २-
 ईपिका १ अक्षिकूटक २ ॥
 अपाङ्गदेशो निर्याणं-
 उसके निहारनेका नाम १-निर्याण १ ॥
 -कर्णमूलं तु चूलिका ॥ ३८ ॥
 हाथीके जहांसे कान जमते हैं उस
 जगहका नाम १-चूलिका १ ॥ ३८ ॥
 अधः कुम्भस्य वाहित्यं-

हाथीके लिलारके नीचका नाम १-
 वाहित्य १ ॥
 प्रतिमानमधोऽस्य यत् ।
 वाहित्यके नीचेका नाम १-प्रति-
 मान १ ॥
 आसनं स्कन्धदेशः स्यात्-
 हाथीके कन्धेका नाम १-आसन १ ॥
 -पद्मकं बिन्दुकालकम् ३९ ॥
 हाथीके बिंदुओंका नाम १-पद्मक
 १ ॥ ३९ ॥
 पार्श्वभागः पक्षभागो-
 हाथीकी बगलके नाम २-पार्श्व-
 भाग १ पक्षभाग २ ॥
 -दन्तभागस्तु योऽग्रतः ।
 हाथीके आगेके भागका नाम १-
 दन्तभाग १ ॥
 द्वौ पूर्वपश्चाज्जंघादिदेशौ गात्रा-
 वरे क्रमात् ॥ ४० ॥
 हाथीके आगेके जंघादि भागका
 नाम १-गात्र १ ॥ हाथीके पीछेके
 भागका नाम १-अवर १ ॥ ४० ॥
 तोत्रं वैणुक-
 चाबुककी डण्डीके नाम २-तोत्र
 १ वैणुक २ ॥
 -मालानं वन्यस्तम्भे-
 हाथीके खूटेका नाम १-आलान १ ॥

—उथ शृंखले । अन्दुको निग-
डोऽस्त्री स्या—

हाथीकी जंजीरके नाम ३—शृंखल
१ अन्दुक २ निगड ३ ॥

दंकुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥४१॥

अंकुशके नाम २—अंकुश १
सृणि २ ॥ ४१ ॥

दूष्या कक्ष्या वरत्रा च—

हाथीकी कमर बांधनेकी रस्सीके
नाम ३—दूष्या १ कक्ष्या २ वरत्रा ३

—कल्पना सज्जना समे ।

मालिकके चढ़नेके वास्ते हाथीको
तैयार करनेके नाम २—कल्पना १
सज्जना २ ॥

प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः
कुयो द्वयोः ॥ ४२ ॥

गद्दी वा झूलके नाम ५—प्रवेणी
आस्तरण २ वर्ण ३ परिस्तोम ४
कुय ५ ॥ ४२ ॥

—वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं—

हाथी घोडेका नाम १—वीत १ ॥

—वारी तु गजबन्धनी ।

जिस भूमिमें हाथी बांधे जायँ उस-
का नाम १—वारी १ ॥

घोटके वीतितुरगतुरङ्गाश्वतुर-
ङ्गमाः ॥ ४३ ॥ वाजिवाहवर्गन्ध-

र्वहयसैन्धवसप्तयः ।

घोटके नाम १३—घोटक १
वीति २ तुरग ३ तुरङ्ग ४ अश्व ५
तरङ्गम ६ ॥ ४३ ॥ वाजिन् ७ वाह ८
अर्वन् ९ गन्धर्व १० हय ११ सैन्धव
१२ सप्ति १३ ॥

आजानेयाः कुलिनाः स्यु—
कुलीन घोडेका नाम १ आजानेय १—
—र्विनीताः साधुवाहिनः ॥४४॥
सीखे हुए घोडेका नाम १—
विनीत १ ॥ ४४ ॥

वनायुजाः पारसीकाः काम्बो-
जा बाहिका हयाः ।
वनायु देशमें पैदा हुए घोडेका नाम
१—वनायुज १ ॥

पारसदेशोत्पन्न घोडेका नाम १ ।
पारसीक १ ॥

काबुली घोडेका नाम १—बाहिक १
ययुरश्वोऽश्वमेधीयो—
अश्वमेधके श्यामकर्णवाले घोडेका
नाम १—ययु १ ॥

—जवनस्तु जवाधिकः ॥ ४५ ॥
जरुदी चलनेवाले घोडेका नाम १ ॥
जवन १ ॥ ४५ ॥

पृष्ठयः स्थौरी—
लदनेवाले घोडेके नाम २—पृष्ठय १
स्थौरिन् २ ॥

| | |
|---------------------------------|-------------------------------------|
| —सितः कर्को— | वालिगतं प्लुतम् ॥ ४८ ॥ गतयोऽ- |
| उजले घोडेका नाम १—कर्क १ ॥ | मूः पञ्च धारा— |
| रथ्यो वोढा रथस्य यः । | घोडेके पांच प्रकारकी चालोंके |
| रथके घोडेका नाम १—रथ्य १ ॥ | नाम ५—आस्कन्दित १ धौरितक २ |
| बालः किशोरो— | रेचित ३ वलिगत ४ प्लुत ५ ॥ ४८ ॥ |
| घोडेके बच्चेके नाम १—किशोर १ | —घोणा तु प्रोथमास्त्रियाम् । |
| —वाम्यश्वा वडवा— | घोडेकी नाकका नाम १—प्रोथ १ ॥ |
| घोडीके नाम ३—वामी १ अश्वा | कविका तु खलीनोऽस्त्री— |
| २ वडवा ३ ॥ | घोडेकी लगामके नाम २—कविका |
| —वाडवं गणे ॥ ४६ ॥ | १ खलीन २ ॥ |
| घोडीके समूहका नाम १—वाडव १ ॥ ४६ | —शफं क्लीबे खुरः पुमान् ॥ ४९ ॥ |
| त्रिष्वश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन | घाडक खुरके नाम २—शफ १ |
| गम्यते । | खुरर (खुर) ३ ४९ ॥ |
| घोडेके एक दिन चलने योग्य | पुच्छोऽस्त्री लूमलांगूले— |
| मार्गका नाम १—आश्वीन १ ॥ | पूछके नाम ३—पुछ १ लूम २ लांगूल ३ ॥ |
| कश्यं तु मध्यमाश्वानां— | —वालहस्तश्च वालधिः । |
| घोडेके मध्यभागका नाम १—कश्य १ ॥ | वालसहित पूँछक नाम २—वालहस्त |
| —हेषा हेषा च निःस्वनः ॥ ४७ ॥ | १ वालधि २ ॥ |
| घोडेके शब्दका नाम २—हेषा १ | त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहु- |
| हेषा २ ॥ ४७ ॥ | मुवि ॥ ५० ॥ |
| निगालस्तु गलोद्देशे— | पृथ्वीमें लोटनक नाम २—उपा- |
| घोडेके गलका नाम १—निगाल १ ॥ | वृत्त १ लुठित २ ॥ ५० ॥ |
| —वृन्दे त्वश्वयिमाश्ववत् । | याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्गः |
| घोडोंके समूहका नाम २—अश्वीय | स्यन्दनो रथः । |
| १ आश्व २ ॥ | युद्धके रथके नाम ३—शतांग १ |
| आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं | स्यन्दन २ रथ ३ ॥ |

असौ पुण्यरथश्चक्रयानं न सम-
राय यत् ॥ ५१ ॥

सामान्य रथका नाम १-पुण्यरथ
१ ॥ ५१ ॥

कर्णीरथः प्रवहणं डयनं च समं
त्रयम् ।

स्त्रियोंकी गाडीके नाम ३-कर्णीरथ
१ प्रवहण २ डयन ३ ॥

क्रीवेऽनः शकटोऽस्त्री स्या-
छकडेके नाम २-अनस् १ शकट २ ॥

-द्वन्त्री कम्बलिवाहकम् ॥ ५२ ॥

गाडीके नाम २-गन्त्री १ (गान्त्री)
कम्बलिवाहक २ ॥ ५२ ॥

शिविका याप्ययानं स्या-
पालकीके नाम २-शिविका १

याप्ययान २ ॥

-दोला प्रेखादिका स्त्रियाम् ।
दोली वा हिंडोलेके नाम २-दोली

१ प्रेखा २ ॥

उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्विपिचर्मा-
वृते रथे ॥ ५३ ॥

जिसमें बघेरके चमडेका परदा
हो उसके नाम २-द्वैप १ वैयाघ्र

२ ॥ ५३ ॥

पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः
पाण्डुकम्बली ।

पीले रंगवाले परदेके रथका नाम १-
पाण्डुकम्बली १ ॥

रथे काम्बलवस्त्राद्याः कम्बला-
दिभिरावृते ॥ ५४ ॥

कम्बलके परदेवाले रथका नाम १-
काम्बल १ ॥ ५४ ॥

त्रिषु द्वैपादयो-

द्वैप आदि शब्द तीनों लिंगोंमें
होते हैं ॥

-रथ्या रथकट्या रथव्रजे ।
रथके समूहके नाम २-रथ्या १

रथकट्या २ ॥

धूः स्त्री क्रीवे यानमुखं-
धूीके नाम २-धुर १ यानमुख २ ॥

स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥

तांगेके नाम २-रथांग १ अपस्कर

२ ॥ ५५ ॥

चक्रं रथाङ्गं-
पहियेके नाम २-चक्र १ रथाङ्ग २ ॥

-तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः
पुमान् ।

रथकी नेमिक नाम २-नेमि १ प्रधि २

पिण्डिका नाभि-
पुटीके नाम २-पिण्डिका १ नाभि २ ॥

-रक्षाग्रकीलके तु द्वयोरणिः
॥ ५६ ॥

कुलावेका नाम १-अणि १ ॥ ५६ ॥
रथगुप्तिर्वरूथो ना-

लोहे जडे रथके आवरणके नाम २-
रथगुप्ति १ वरूथ २ ॥

कूबरस्तु युगंधरः ।

काठके जुएके बांधनेके स्थानके
नाम २-कूबर १ युगंधर २ ॥

अनुकर्षो दावधःस्थ-

सुगनका नाम १-अनुकर्ष १ ॥

-प्रासङ्गो ना युगाद्युगः ॥५७॥

जुत्के नाम २-प्रासंग १ युग २ ॥५७॥

सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं
च धोरणम् ॥

सवारीके नाम ५-वाहन १ यान
२ युग्य ३ पत्र ४ धोरण ५

परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकम-
स्त्रियाम् ॥ ५८ ॥

कहार आदि वाहनोंका नाम १-
वैनीतक १ ॥ ५८ ॥

आधोरणा हस्तिपका हस्त्या-
रोहा निषादिनः ।

हाथीवान्के नाम ४-आधोरण १
हस्तिपक २ हस्त्यारोह ३ निषादिन ४ ॥

नियंता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता
च सारथिः ॥ ५९ ॥ सव्येष्ठद-
क्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः ।

रथादिके हाँकनेवालेके नाम ८-
नियन्तृ १ प्राजितृ ४ यन्तृ ३ सूत ४

क्षत्तृ ५ सारथि ६ ॥५९॥ सव्येष्ठ ७
दक्षिणस्थ ८ ॥

रथिनः स्यन्दनारोहा-

रथके ऊपर चढके लडनेवालोंके ना-
म २-रथिन् १ स्यन्दनारोह २ ॥

अश्वारोहास्तु सादिनः ॥ ६० ॥

घुडसवारोंके नाम २-अश्वारोह १
सादिन् २ ॥ ६० ॥

भटा योधाश्च योद्धारः-

लडनेवालेके नाम ३-भट १
योध २ योद्धृ ३ ॥

-सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।

पहरा देनेवालेके नाम २-सेनारक्ष १
सैनिक २ ॥

सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते
सैनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥

सम्पूर्ण सेनाके नाम २-सैन्य १
सैनिक २ ॥ ६१ ॥

बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते
सहस्रिणः ॥

हजार सिपाहियोंके मालिकके नाम
२-साहस्र १ सहस्रिन् २ ॥

परिधिस्थः परिचरः-

जो फौज रखानेके अर्थ चारोंतरफ
धूमता है उसके नाम २-परिधिस्थ १
परिचर २ ॥

—सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥

सेनाके मालिकके नाम २—

सेनानी १ वाहिनीपति २ ॥ ६२ ॥

कञ्चुको वारबाणोऽस्त्री—

योद्धाओंको युद्धके समय पहरनेके वस्त्रके नाम २—कञ्चुक १ वारबाण २ ॥

—यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः ।

वध्नंति तत्सारसनमधिकाङ्गो—

इसे पहन कर जो योद्धा पट्टी बांधते हैं उसके नाम २—सारसन १ अधिकांग २ ॥

—य शीर्षकम् ॥ ६३ ॥ शीर्ष—

ण्यं च शिरस्त्रे—

टोपके नाम ३—शीर्षक १ ॥ ६३ ॥

शीर्षण्य २ शिरस्त्र ३ ॥

—ऽथ तनुत्र वर्म दंशनम् । उर—

श्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् ॥ ६४ ॥

कवचके नाम ७—तनुत्र १ वर्मन् २ दंशन ३ उरश्छद ४ कंकटक ५ जगर ६ कवच ७ ॥ ६४ ॥

आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्ध-
श्चापिनद्धवत् ।

पहिरे हुए कवचके नाम ४—आमुक्त १ प्रतिमुक्त २ पिनद्ध ३ अपिनद्ध ४ ॥

संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो
व्यूढकङ्कटः ॥ ६५ ॥

मंत्रादि कवच धारण किये हुएके

नाम ५—संनद्ध १ वर्मित २ सज्ज ३

दंशित ४ व्यूढकंकट ५ ॥ ६५ ॥

त्रिष्वामुक्तादयो—

आमुक्त आदि शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ।

—वर्मभृतां कावचिकं गणे ।

कवच धारण करनेवालोंके समूहका नाम १—कावचिक १ ॥

पदातिपत्तियदगपादातिकपदा-

जयः ॥ ६६ ॥ पद्मश्च पदिकश्चा—

पैदलके नाम ७—पदाति १ पत्ति २ पदग ३ पादातिक ४ पदाजि ५ ॥ ६६ ॥ पद्म ६ पदिक ७ ॥

—ऽथ पादातं पत्तिसंहतिः ॥

पैदलसमूहके नाम २—पादात १ पत्तिसंहति २ ॥

शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायाधुधिया-
युधिकाः समाः ॥ ६७ ॥

जो हथियार बांधकर जीविका करते हैं उनके नाम ४—शस्त्राजीव १ काण्ड-
पृष्ठ २ आयुधीय ३ आयुधिक ४ ॥ ६७ ॥

कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः
कृतपुंखवत् ॥

तीरन्दाजके नाम ३—कृतहस्त १ सुप्रयोगविशिख २ कृतपुंख ३ ॥

अपराद्धपृष्कोऽसौ लक्ष्याद्य-
श्च्युतसायकः ॥ ६८ ॥

जिउका तीर निशानेसे चूक जाय
उसका नाम १—अपराद्धपृष्क १ ॥ ६८

धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निष-
ङ्गचस्त्री धनुर्धरः ।

धनु वा बाण बांधनेवालेके नाम
६ ॥ धन्विन् १ धनुष्मत् २ धानुष्क
निषगिन् ४ अस्त्रिन् ५ धनुर्धर ६ ।

स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः
केवल बाण बांधनेवालेके नाम २—
काण्डवत् १ काण्डीर २ ॥

—शाक्तीकः शक्तिहेतिकः ॥ ६९ ॥

शक्ति आदि शस्त्रधारीके नाम २
शाक्तीक १ शक्तिहेतिक २ ॥ ६९ ॥

याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपार्श्व-
धहेतिकौ ।

लठिया रखनेवालेका नाम १—
याष्टीक १ ॥ फरसा बांधनेवालेका
नाम १ पारश्वधिक १ ॥

नैखिशिकोऽसिहेतिः स्या-
तरवार बांधे हुएके नाम २—नैखि-
शिक १ असिहेति २ ॥

—त्समौ प्रासिककौन्तिकौ ७० ॥

बलमके बांधनेवालेका नाम १—
प्रासिक १ ॥ मालेवालका नाम १
कौन्तिक २ ॥ ७० ॥

चर्मी फलकपाणिः स्या-

ढाल बांधनेवालेके नाम २—चर्मिन्

१ फलकपाणि २ ॥

—त्पताकी वैजयन्तिकः ।

निशान बांधनेवालेके नाम २—
पताकिन् १ वैजयन्तिक २ ॥

अनुप्लवः सहायश्चाऽनुचरोऽ-
भिचरः समाः ॥ ७१ ॥

सहायकके नाम ४—अनुप्लव १
सहाय २ अनुचर ३ अभिचर ४ ॥ ७१ ॥

पुरोगाग्रेसरप्रघाग्रतःसरपुरः-
सराः । पुरोगमः पुरोगामी—

अग्रगामीके नाम ७—पुरोग १
अग्रेसर २ पृष्ठ ३ अग्रतस्सर २ पुर-
स्सर ५ पुरोगम ६ पुरोगामिन् ॥ ७१ ॥

—मन्दगामी तु मन्थरः ॥ ७२ ॥

धीरे चलनेवालेके नाम २—मन्द-
गामिन् १ मन्थर २ ॥ ७२ ॥

जंघालोऽतिजवस्तुल्यो—

जादे चलनेवालेके नाम २—जंघाल
१ अतिजव २ ॥

जंघाकरिकजांधिकौ ।

जो जंघाके बलसे जीता हे उसके
नाम २—जंघाकरिक १ जांधिक २ ॥

तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी
जवनो जवः ॥ ७३ ॥

वेगसे चलनेवालेके नाम ६—तरस्विन्
१ त्वरित २ वेगिन् ३ प्रजविन् ४ जवन
५ जव ६ ॥ ७३ ॥

जय्यो यः शक्यते जेतुं—

जिसे जीत सके उसका नाम १—

जय्य १ ॥

—जेयो जेतव्यमात्रके ।

जीतने लायकका नाम १—जेय १ ॥

जैत्रस्तु जेता—

जो जीतसके उसके नाम २—जैत्र १

जेतृ २ ॥

—यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति

॥ ७४ ॥ सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमि-
त्रीयोऽप्यभ्यमित्रिण इत्यापि ।

सामर्थ्यसे शत्रुओंके समुख जानेवा-

लेके नाम ३—॥ ७४ ॥ अभ्यमित्र्य १

अभ्यमित्रिण २ अभ्यमित्रिण ३ ॥

ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जा-

तिशयान्वितः ॥ ७५ ॥

पहलवानके नाम ३—ऊर्जस्वल १

ऊर्जस्विन् २ ऊर्जातिशय ३ ॥ ७५ ॥

स्यादुरस्वानुसिलो—

बडी छातीवालेके नाम २—उरस्वत्

१ । उरसिल २ ॥

—रथिनो रथिको रथी ।

रथके स्वामीके नाम ३—रथिन ३

रथिक २ रथिन् ३ ॥

कामङ्गाम्यनुकामीनो—

जो अपने मनसे चलता हो उसका

नाम १—अनुकामीन १ ॥

—ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥

वारम्बार चलनेवालेका नाम १ ॥

अत्यन्तीन १ ॥ ७६ ॥

शूरो वीरश्च विक्रान्तो—

शूरके नाम ३—शूर १ वीर २

विक्रान्त ३ ॥

—जेता जिष्णुश्च जित्वरः ।

जीतनेवालेके नाम ३—जेतृ १ जिष्णु

२ जित्वर ३ ॥

सांयुगीनो रण साधु—

युद्धकुशलका नाम १—सांयुगीन १ ।

—शस्त्राजीवादयास्त्रिषु ॥ ७७ ॥

शस्त्राजीव आदि शब्द तीनों

लिङ्गोंमें होते हैं ॥ ७७ ॥

ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतना-

नीकिनी चमूः । वरूथिनी बलं

सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम् ॥ ७८ ॥

सेनाके नाम ११—ध्वजिनी १

वाहिनी २ सेना ३ पृतना ४ अनीकिनी ५

चमू ६ वरूथिनी ७ बल ८ सैन्य ९

चक्र १० अनीक ११ ॥ ७८ ॥

व्यूहस्तु बलविन्यासो—

सेनाकी रचनाके नाम २—व्यूह १
बलविन्यास २ ॥

—भेदा दण्डादयो युधि ।

सेनाकी रचनाके अनेकभेद दण्ड
इत्यादि १ ॥ ये चक्र, मयूर, कमल
आदिक व्यूह हैं ॥

प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः—

व्यूहके पीछेके नाम २—प्रत्यासार १
व्यूहपार्ष्णि २ ॥

सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

फौजके पीछेके नाम २—सैन्यपृष्ठ १
प्रतिग्रह २ ॥ ७९ ॥

एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्च
पदातिका ।

जिसमें हाथी १ रथ २ घोड़े ३ पैदल
५हों उस सेनाका नाम—पत्ति १ ॥

पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादा-
ख्या यथोत्तरम् ॥ ८० ॥ सेना-
मुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना
चमूः । अनीकिनी—

क्रमसे त्रिगुने पत्ति(पैदलों)के नाम
७—॥८०॥ (तीने पत्तिका (पैदलों)का
नाम)—सेनामुख १ (तीन सेनामुखका
नाम) गुल्म १ ॥ (तीन गुल्मका नाम)
गण १ ॥ (तीन गणका नाम)
वाहिनी १ ॥ (तीन वाहिनीका नाम)
पृतना १ ॥ (तीन पृतनाका नाम) चमू
१ ॥ (तीन चमूका नाम) अनीकिनी १ ॥

—दशानीकिन्यक्षौहि—

दश अनीकिनीका नाम १—अक्षौ-
हिणी १ ॥

अक्षौहिणी आदि सेनाका प्रमाण ।

| सेना | पैदल (पत्ति) | सना मुख | गुल्म | गण | वाहि- नी | पृतना | चमू | अनी- किनी | अक्षौ- हिणी |
|----------|-----------------|------------|-------|-----|-------------|-------|------|--------------|----------------|
| हाथी, रथ | १ | ३ | ९ | २७ | ८१ | २४३ | ७२९ | २१८७ | २१८७० |
| घोड़े | ३ | ९ | २७ | ८१ | २४३ | ७२९ | २१८७ | ६५६१ | ६५६१० |
| पैदल | ५ | १५ | ४५ | १३५ | ४०५ | १२१५ | ३६४५ | १०९३५ | १०९३५० |

—ग्यथ संपदि ॥८१॥ संपत्तिः
श्रीश्च लक्ष्मीश्च—

सम्पत्तिके नाम ४—संपद १ ॥८१॥
संपत्ति ३ श्री ३ लक्ष्मी ४ ॥

—विपत्त्यां विपदापदौ ॥

विपत्तिके नाम ३—विपत्ति १ विपद

२ आपद ३ ॥

आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्र—

हथियारके नाम ४-आयुध १ प्रह-
रण २ शस्त्र ३ अस्त्र ४ ॥

-मथास्त्रियौ ॥ ८२ ॥ धनु-
श्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ।
इष्वासोऽ-

धनुषके नाम ७ ॥ ८२ ॥ धनुष
१ चाप २ धन्वन् ३ शरासन ४
कोदण्ड ५ कार्मुक ६ इष्वास ७ ॥

-प्यथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरा-
सनम् ॥ ८३ ॥

राजा कर्णके धनुषका नाम १-
कालपृष्ठ १ ॥ ८३ ॥

कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ
पुनपुंसकौ ।

अर्जुनके धनुषके नाम २-गा-
ण्डीव १ गाण्डिव २ ॥

कोटिरस्याटनी-
धनुषके दोनों कोनोंके नाम २-
कोटि १ अटनी २ ॥

-गोधातले ज्याघातवारणे ॥ ८४ ॥

चमडेके दस्तानोंके नाम २-
गोधा १ तल २ ॥ ८४ ॥

लस्तकस्तु धनुर्मध्यं-

धनुषके मध्यभागका नाम १-
लस्तक १ ॥

-मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ।

धनुषकी प्रत्यञ्चाके नाम ४-मौ-
र्वी १ ज्या २ शिञ्जिनी ३ गुण ४ ॥

स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि-
स्थानपञ्चकम् ॥ ८५ ॥

धनुषधारियोंके आसनविशेषके नाम
२-प्रत्यालीढ १ मालीढ २ ॥ इत्यादि
पांच स्थान ॥ ८५ ॥

लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च-
निशानेके नाम ३-लक्ष १ लक्ष्य
२ शरव्य ३ ॥

-शराभ्यास उपासनम् ।

बाण छोडनेके अभ्यासके नाम २-
शराभ्यास १ उपासन २ ॥

पृषत्कबाणविशिखा अजिह्व-
गखगाशुगाः ॥ ८६ ॥ कलम्बम-
र्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्रयोः ।

बाणके नाम १२-पृषत्क १ बाण
२ विशिख ३ अजिह्व ४ खग ५ आशु-
ग ६ ॥ ८६ ॥ कलम्ब ७ मार्गण ८
शर ९ पत्रिन् १० रोप ११ इषु १२ ॥

प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः-

लोहेके तीरके नाम २-प्रक्ष्वेडन
१ नाराच २ ॥

-पक्षो वाज-

बाणके पक्षके नाम २-पक्ष १ वाज २ ॥

-स्त्रिषूत्तरे ॥ ८७ ॥

—लित्तकपर्यंत सब शब्द तीनों
लिंगोंमें होते हैं ॥ ८७ ॥

निरस्तः प्रहिते बाणे—

छोडे हुये बाणका नाम १—निरस्त १ ।

—विषाक्ते दिग्धलित्तकौ ।

विषयुक्त बाणके नाम ३—विषाक्त
१ दिग्ध २ लित्तक ३ ॥

तूणोपासङ्गतूणीरनिषंगा इषु—
धिद्वयोः ॥ ८८ ॥ तूण्यां—

तरकसके नाम ६—तूण १ उपासंग
२ तूणीर ३ निषंग ४ इषुधि ५
॥ ८८ ॥ तूणी ६ ॥

—खड्गे तु निस्त्रिंशच्चन्द्रहासासि—
रिष्टयः । कौक्षेयको मण्डलाग्रः

करवालः कृपाणवत् ॥ ८९ ॥

तलवारके नाम ९—खड्ग १ निस्त्रिं-
श २ चन्द्रहास ३ असि ४ रिष्टि ५
कौक्षेयक ६ मण्डलाग्र ७ करवाल ८
कृपाण ९ ॥ ८९ ॥

त्सरुः खड्गादिमुष्टौ स्या—

तलवार आदिकी मूठका नाम १—त्सरु १ ॥

—न्मेखला तन्निबन्धनम् ।

तलवारके म्यानका नाम १—मेखला १ ॥

फलकोऽस्त्री फलं चर्म—

ढालके नाम ३—फलक १ फल २
चर्मन् ३ ॥

—संग्राहो मुष्टिरस्य यः ॥ ९० ॥

ढालकी मूठका नाम १—संग्राह १

॥ ९० ॥

द्रुघणो मुद्गरघनौ—

मुद्गरके नाम—३ द्रुघण १ मुद्गर २ घन ३ ॥

—स्यादीली करवालिका ।

गुप्तिके नाम २—ईली १ करवालिका २ ॥

भिन्दिपालः सृगस्तुल्यौ—

गोफनके नाम २—भिन्दिपाल १ सृग २ ॥

—परिधः परिधातिनः ॥ ९१ ॥

परिधके नाम २—परिध १ परि-
धातिन् २ ॥ ९१ ॥

द्रयोः कुठारः स्वधातिः परशुश्च

परश्वधः ।

कुल्हाडीके नाम ४—कुठार १

स्वधाति २ परशु ३ परश्वध ४ ॥

स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च छुरि-

का चासिधेनुका ॥ ९२ ॥

छुरिके नाम ४—शस्त्री १ असि-

पुत्री २ छुरिका ३ असिधेनुका ४ ॥ ९२ ॥

वा पुंसि शल्यं शंकुर्ना—

बर्छीके नाम २—शल्य १ शंकुर २ ॥

—सर्वला तोमरोऽस्त्रियाम्—

गडासके नाम २—सर्वला १ तोमर २ ॥

प्रासस्तु कुन्तः—

भालेके नाम २—प्रास १ कुन्त २ ॥

—कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्रि-

कोटयः ॥ ९३ ॥

खड्गादिकी नौकेते नाम ४—कोण १
पालि २ अश्रि ३ कोटि ४ ॥ ९३ ॥
सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसंन-
हनार्थकः ।

सेनाकी तैयारीके नाम ३—सर्वा-
भिसार १ सर्वौघ २ सर्वसंनहन ३ ॥

लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां राज्ञां
नीराजनाविधिः ॥ ९४ ॥

महानवमीके पहिले लडाईके
निमित्त राजाओंका शस्त्र पूजनेका नाम
१—लोहाभिसार १ ॥ ९४ ॥

यत्सेनयाभिगमनमरौ तदभि-
षेणनम् ॥

शत्रुक ऊपर सेना चढनेका नाम
१—अभिषेणन १ ॥

यात्रा ब्रज्याऽभिनिर्माणं प्रस्था-
नं गमनं गमः ॥ ९५ ॥

चलनेके नाम ६—यात्रा १ ब्रज्या
२ अभिनिर्माण ३ प्रस्थान ४ गमन ५
गम ६ ॥ ९५ ॥

स्यादासारः प्रसरणं—

सेनाके फैलनेके नाम २—आसार
१ प्रसरण २ ॥

—प्रचक्रं चलितार्थकम् ।

चली हुई सेनाके नाम २—प्रचक्र १
चलित २ ॥

११

अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यान-
मभिक्रमः ॥ ९६ ॥

निडर होकर शत्रुपर चढाईका नाम

१—अभिक्रम १ ॥ ९६ ॥

वैतालिका बोधकरा—

प्रातःकालके राजाके जगानेवालोंके

नाम २—वैतालिक १ बोधकर २ ॥

—श्रक्रिका घाण्टिकाऽर्थकाः ।

घडियालीके नाम २—चक्रिक १

घाण्टिक २ ॥

स्युर्मागधास्तु मगधा—

राजाका वंश वर्णन करनेवालेके

नाम २—मागध १ मगध २ ॥

बन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥

भाटके नाम २—बन्दिन् १ स्तुति-

पाठक २ ॥ ९७ ॥

संशतकास्तु समयात्संग्रामा-

दनिवर्तिनः ।

शपथ खाकर युद्धमें पीठ न देने-

वालेका नाम १—संशतक १ ॥

रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांसुर्ना-

न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥

धूलिके नाम ४—रेणु १ धूलि २

पांसु ३ रजस् ४ ॥ ९८ ॥

चूर्णे क्षोदः—

चूनेके नाम २—चूर्ण १ क्षोद २ ॥

समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले ।

अकुलानेके नाम २—समुत्पिञ्ज

१ पिञ्जल २ ॥

पाताका वैजयन्ती स्यात्केतनं
ध्वजमस्त्रियाम् ॥ ९९ ॥

झंडेके नाम ४—पाताका १ वैज-
यन्ती २ केतन ३ ध्वज ४ ॥ ९९ ॥

सा वीराशंसनं युद्धभूमिर्यासति-
भयप्रदा ।

भययुद्धके स्थानका नाम १—
वीराशंसन १ ॥

अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपूर्विका
स्त्रियाम् ॥ १०० ॥

जिसमें वीर कहैं कि, हम पहले
लड़ेंगे हम पहले लड़ेंगे उस लडाईका
नाम १—अहंपूर्विका १ ॥ १०० ॥

आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्सं-
भावनात्मनि ।

जिसमें कहैं कि हम पुरुष हैं हमही
लड़ेंगे उसकानाम १—आहोपुरुषिका १ ॥

अहमहमिका तु सा स्यात्प-
रपरं यो भवत्यहंकारः ॥ १०१ ॥

आपसके इस कहनेको कि, हम
शक्त हैं हम लड़ सकते हैं उसका नाम
१—अहमहमिका १ ॥ १०१ ॥

द्रीवणं तरः सेहाबलशौर्याणि

स्याम शुष्मं च । शक्तिः परा-
क्रमः प्राणो—

पराक्रमके नाम १०—द्रविण १
तरसू २ सहसू ३ बल ४ शौर्य ५
स्थामन् ६ शुष्म ७ शक्ति ८ परा-
क्रम ९ प्राण १० ॥

—विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥

अतिपराक्रमके नाम २—विक्रम
१ अतिशक्तिता २ ॥ १०२ ॥

वीरपानं तु यत्पानं वृत्ते
भाविनि वा रण ।

लडनेके निमित्त पहले या पीछे नसा
खाने पीनेका नाम १—वीरपान १ ॥

युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रवि-
दारणम् ॥ १०३ ॥ मृधमास्क-
न्दनं संख्यं समीकं साम्परा-
यिकम् । अस्त्रियां समरानाक-
रणाः कलहविग्रहौ ॥ १०४ ॥ संप्रहारा-
भिसंपातकालिसंस्फोटसंयुगाः ।

अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमा-
हवाः ॥ १०५ ॥ समुदायः स्त्रियः
संयत्समित्याजिसमिद्युधः ।

युद्धके नाम ३१—युद्ध १ आयोधन २
जन्य ३ प्रधन ४ प्रविदारण ५ ॥ १०३ ॥
मृध ६ आस्कन्दन ७ संख्य ८ समीक ९

सांपरायिक १० समर ११ अनीक
 १२ रण १३ कलह १४ विग्रह १५
 ॥ १०४ ॥ संप्रहार १६ अभिसम्पात
 १७ कलि १८ संस्फोट १९ संयुग २०
 अभ्यामर्द २१ समाघात २२ संग्राम
 २३ अभ्यागम २४ आहव २५ ॥ १०५ ॥
 समुदाय २६ संयत् २७ समिति २८
 आजि २९ समित् ३० युध् ३१ ॥

नियुद्धं बाहुयुद्धे स्यात्—

मुजाके युद्धके नाम २—नियुद्ध १

बाहुयुद्ध २ ॥

तुमुलं रणसंकुले ॥ १०६ ॥

घोर संग्रामका नाम १—तुमुल १ ॥

॥ १०६ ॥

क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात्—

वीरोंके गर्जनेके नाम २—क्ष्वेडा १

सिंहनाद २ ॥

—करिणां घटना घटा ।

हाथियोंके समूहके नाम २—घटना

१ घटा २ ॥

क्रन्दनं योधसंरावो—

युद्धके शब्दका नाम १—क्रन्दन १ ॥

—वृंहितं करिगार्जितम् ॥ १०७ ॥

हाथीके शब्दका नाम १—वृंहित १ ॥

॥ १०७ ॥

विस्फारो धनुषः स्थानः—

धनुषके शब्दका नाम १—विस्फार १

—पटहाडम्बरौ समौ ।

नगाडेके शब्दके नाम २—पटह १

आडंबर २ ॥

प्रसभं तु बलात्कारो हठो—

हठके नाम ३—प्रसभ १ बलात्कार

२ हठ ३ ॥

--5थ स्खलितं छलम् ॥ १०८ ॥

धोखा देनेके नाम २—स्खलित १

छल २ ॥ १०८ ॥

अजन्यं क्लीवमुत्पात उपसर्गः

समं त्रयम् ।

उत्पातके नाम ३—अजन्य १

उत्पात २ उपसर्ग ३ ॥

मूर्च्छा तु कश्मलं मोहो—

मूर्च्छाके नाम ३—मूर्च्छा १ कश्मल

२ मोह ३ ॥

--5प्यवमर्दस्तु पीडनम् ॥ १०९ ॥

देशादिको उपद्रव देनेके नाम २—

अवमर्द १ पीडन २ ॥ १०९ ॥

अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं—

धोकेसे दवा लेनेके नाम २—अभ्यव-

स्कन्दन १ अभ्यासादन २ ॥

—विजयो जयः ।

जीतके नाम २—विजय १ जय २ ॥

वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्या-

तनं च सा ॥ ११० ॥

वैरदूर करनेके नाम ३-वैरशुद्धि १
प्रतीकार २ वैरनिर्यातन ३ ॥ ११० ॥

प्रद्रावोद्रावसन्द्रावसन्दावा वि-
द्रवो द्रवः । अपक्रमोऽपयानं च-
पलायन (भागने) के नाम ८-
प्रद्राव १ उद्राव २ सन्द्राव ३ सन्दाव ४
विद्रव ५ द्रव ६ अपक्रम ७ अपयान ८ ॥

—रणभङ्गः पराजयः ॥ १११ ॥

हारके नाम २-रणभङ्ग १ पराजय
२ ॥ १११ ॥

पराजितपराभूतौ-

हारे हुएके नाम २-पराजित १ परा-
भूत २ ॥

—त्रिषु नष्टतिरोहितौ ।

छिपे हुएके नाम २-नष्ट १ तिरो-
हित २ ॥

प्रमापणं निर्वहणं निकारणं वि-
शारणम् ॥ ११२ ॥ प्रवासनं प-
रासनं निषूदनं निर्हंसनम् । नि-
र्वासनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम्
॥ ११३ ॥ निस्तर्हणं निहननं
क्षणं परिवर्जनम् । निर्वापणं वि-
शसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४ ॥
उद्वासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि च ।
आलम्भापिञ्जविशरघातोन्माथवधा
अपि ॥ ११५ ॥

मारनेके नाम ३०-प्रमापण १
निर्वहण २ निकारण ३ विशारण ४ ॥
॥ ११२ ॥ प्रवासन ५ परासन ६ निषू-
दन ७ निर्हंसन ८ निर्वासन ९ संज्ञ-
पन १० निर्ग्रन्थन ११ अपासन १२ ॥
॥ ११३ ॥ निस्तर्हण १३ निहनन १४
क्षणन १५ परिवर्जन १६ निर्वापण
१७ विशसन १८ मारण १९ प्रति-
घातन २० ॥ ११४ ॥ उद्वासन २१
प्रमथन २२ क्रथन २३ उज्जासन २४
आलम्भ २५ पिञ्ज २६ विशर २७ ॥
घात २८ उन्माथ २९ वध ३० ॥
॥ ११५ ॥

स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः
प्रलयोऽत्ययः । अन्तो नाशो
द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम्
॥ ११६ ॥

मृत्युके नाम १०-पञ्चता १ काल-
धर्म २ दिष्टान्त ३ प्रलय ४ अत्यय ५
अन्त ६ नाश ७ मृत्यु ८ मरण ९
निधन १० ॥ ११६ ॥

परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः ।
मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते-

मृत्युको प्राप्त हुएके नाम ७-परासु
१ प्राप्तपञ्चत्व २ परेत ३ प्रेत ४ संस्थित
५ मृत ६ प्रमीत ७ ॥

—चिता चित्या चितिः स्त्रि-
याम् ॥ ११७ ॥

चिताक नाम ३— चिता १ चित्या
२ चिति ३ ॥ ११७ ॥

कवन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमप-
मूर्धकलेवरम् ।

शिररहित चेष्टा करनेवाले शरीरका
नाम १—कवन्ध १ ॥

श्मशानं स्यात्पितृवनं—
श्मशानके नाम २—श्मशान १
पितृवन २ ॥

—कुणपः शवमस्त्रियाम् ॥ ११८ ॥
मुर्देके नाम २—कुणप १ शव २ ॥
॥ ११८ ॥

प्रग्रहोपग्रहौ बन्धां—
कैदीक नाम ३—प्रग्रह १ उपग्रह २
बन्दी ३ ॥

—कारा स्याद्वन्धनालये ।
जेहल खानेका नाम १—कारा १ ॥
पुंसि भूम्न्यसवः प्राणाश्चैवं—
प्राणके नाम २—असु १ प्राण २ ॥
—जीवोऽसुधारणम् ॥ ११९ ॥
जीवके नाम २—जीव १ असु-
धारण २ ॥ ११९ ॥

आयुर्जीवितकालो—
आयुका नाम १—आयुष् १ ॥

—ना जीवातुर्जीवनौषधम् ।

मृतसंजीवनी बूटीके नाम २—

जीवातु १ जीवनौषध २ ॥

इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

अथ वैश्यवर्गः ९.

ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्य
भूमिस्पृशो विशः ।

वैश्यके नाम ६—ऊरव्य १ ऊरुज २
अर्य ३ वैश्य ४ भूमिस्पृक्ष ५ विश ६ ॥

आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्व-
र्तनजीवने ॥ १ ॥

जीविकाके नाम ६—आजीव १
जीविका २ वार्ता ३ वृत्ति ४ वर्तन
५ जीवन ६ ॥ १ ॥

स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वा-
णिज्यं चेति वृत्तयः ।

जीविकाके भेद ३—(खेती कर-
नेका नाम) कृषि १ ॥ (पशुपालनका
नाम) पाशुपाल्य २ ॥ (व्यापारका
नाम) वाणिज्य ३ ॥ ये तीनों वैश्य-
वृत्ति हैं ॥

सेवा श्ववृत्ति—
परसेवाके नाम २—सेवा १
श्ववृत्ति २ ॥

—रनृतं कृषि—

खेतीके नाम २—अनृत १ कृषि २ ॥
 —रुञ्छाशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥
 उञ्छवृत्तिके नाम ३—उञ्छ १
 शिल २ ऋत ३ ॥ २ ॥

द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं
 मृतामृते ।

मांगनेसे प्राप्त हुई वस्तुका नाम १—
 मृत १ ॥ विना मांगे प्राप्त हुई वस्तुका
 नाम १—अमृत १ ॥

सत्यानृत वणिग्भावः स्या—
 व्यापारके नाम २—सत्यानृत १
 वणिग्भाव २ ॥

—हृणं पर्युदञ्चनम् ॥ ३ ॥ उद्धारो-
 कर्जके नाम ३—ऋण १ पर्युदञ्चन
 २ ॥ ३ ॥ उद्धार ३ ॥

—ऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धि-
 जीविका ।

व्याजके नाम ३—अर्थप्रयोग १
 कुसीद २ वृद्धिजीविका ३ ॥

याञ्जयाप्तं याचितकं—
 मांगनेकी वस्तुका नाम १—याचि-
 तक १ ॥

—निमयादापमित्यकम् ॥ ४ ॥
 वायदेपर ली हुई वस्तुका नाम १—
 आपमित्यक १ ॥ ४ ॥

उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्रा-
 हकौ क्रमात् ।

ऋण देनेवालेका नाम १—उत्तमर्ण १ ॥
 ऋणके लेनेवालेका नाम १—अधमर्ण १ ॥
 कुसीदिको वार्धुषिको वृद्ध्याजी-
 वश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥

व्याजसे जीनेवालेके नाम ४—कुसी-
 दिक १ वार्धुषिक २ वृद्ध्याजीव ३
 वार्धुषि ४ ॥ ५ ॥

क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च
 कृषीवलः ।

किसानके नाम ४—क्षेत्राजीव १
 कर्षक २ कृषिक ३ कृषीवल ४ ॥

क्षेत्रं त्रैहेयशालेयं त्रीहिशाल्यु-
 द्भवोचितम् ॥ ६ ॥

त्रीहि होनेके योग्य खेतका नाम १—
 त्रैहेय १ ॥

धानके खेतका नाम १—शालेय
 १ ॥ ६ ॥

यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवन
 हि यत् ।

जौके खेतके नाम १—यव्य १ ॥ छोटे
 जौके खेतका नाम १—यवक्य १ ॥
 साठीके खेतका नाम १—षष्टिक्य १ ॥

तिल्यं तैलीनवन्माषोमाणुभंगा
 द्विरूपता ॥ ७ ॥

तिलके खेतके नाम २—तिल्य १
 तैलीन २ ॥ उरद होनेवालेके नाम २—
 माष्य १ माषीण २ ॥ अलसी होनेवालेके

नाम २—उम्य १ औमीन २ ॥ अ-
णुके होनेवालेके नाम २—अणव्य १
आणवीन २ ॥ भंग (भांग) होनेवालेका
नाम २—भंग्य १ भंगीन २ ॥ ७ ॥

मौद्गीनकौद्रवीणादिशेषधान्यो-
द्भवक्षमम् ।

मूंग होनेवालेका नाम १—मौद्गीन
१ ॥ कोदों होनेवाले खेतका नाम १—
कौद्रवीण १ ॥ चणे होनेवाले खेतका
नाम १—चाणकीन १ ॥ गेहूं होने-
वालेका नाम १—गौधूमीन १ इत्यादि ॥

बीजाकृतं तूतकृष्टं—

बीज बोनेका नाम १—बीजाकृत १ ॥

—सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥

जोते हुए खेतके नाम ३—सीत्य
१ कृष्ट २ हल्य ३ ॥ ८ ॥

त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं
त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।

तीन बार जुते हुए खेतके नाम ४—
त्रिगुणाकृत १ तृतीयाकृत २ त्रिहल्य
३ त्रिसीत्य ४ ॥

द्विगुणाकृते तु सर्थं पूर्वं शम्बा-
कृतमपीह ॥ ९ ॥

दो बार जुते हुएके नाम ४—द्विगु-
णाकृत १ द्वितीयाकृत २ द्विहल्य ३
द्विसीत्य ४ ॥ ९ ॥

द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढ-
किकाट्यः ।

जिसमें द्रोण (१०२४) तोला
धानआदि बोया जाय उस खेतका ना-
म १—द्रौणिक १ ॥ आढक (२५६)
तोला भरवालेका नाम १—आढकिक
१ ॥ आदि ॥

खारीवापस्तु खारीक—

जिसमें खारी (४ द्रोण अर्थात्
४०९६) तोलाभर अन्न बोया जाय
उसका नाम १—खारीक १ ॥

—उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥

उत्तमर्णादि शब्द तीनों लिंगोंमें
होते हैं ॥ १० ॥

पुनपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्र-
खेतके नाम ३—वप्र १ केदार २ क्षेत्र ३ ॥

—मस्य तु । कैदारकं स्यात्कै-
दार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥

खेतके समूहके नाम ४—कैदारक १
कैदार्य २ क्षेत्र ३ कैदारिक ४ ॥ ११ ॥

लोष्टानि लेष्टवः पुंसि—

ढेलेके नाम २—लोष्ट १ लेष्टु २ ॥

—कोटिशो लोष्टभेदनः ।

मूंगरीके नाम २—कोटिश १
लोष्टभेदन २ ॥

प्राजनं तोदनं तोत्रं—

पैने (लाठी, चाबुक आदि) के
नाम ३—प्राजन १ तोदन २ तोत्र ३ ॥

| | |
|------------------------------|-------------------------------------|
| खनित्रमवदारणे ॥ १२ ॥ | पुंसि मोधिः खलेदारु न्यस्तं |
| कुदालके नाम २-खनित्र १ | यत्पशुबन्धने । |
| अवदारण २ ॥ १२ ॥ | जो धान्यमर्दन करनेक स्थान अ- |
| दात्रं लवित्र- | र्थात् पैरमें गाडे हुए पशु बांधनेके |
| खुरपा फावडा आदिके नाम २- | खूंटे (मेढ) के नाम २-मेधि १ ख- |
| दात्र १ लवित्र २ ॥ | लेदारु २ ॥ |
| -मावन्धो योत्रं योक्त्र- | आशुव्रीहिः पाटलः स्या- |
| नाथके नाम ३-आवन्ध १ योत्र | सट्टी (घान) क नाम ३-आशु |
| २ योक्त्र ३ ॥ | १ व्रीहि २ पाटल ३ ॥ |
| -मथो फलम् । निरीशं कुटकं | -च्छितशूकययौ समौ ॥ १५ ॥ |
| फालः कृषको- | जौके नाम २-शितशूक १ यव २ ॥ १५ ॥ |
| फाल अर्थात् हलके नीचे लग हुए | तोक्मस्तु तत्र हरिते- |
| लोहेके नाम ५-फल १ निरीश २ | हरे जौका नाम १-तोक्म १ ॥ |
| कुटक ३ फाल ४ कृषक ५ ॥ | -कलायस्तु सतीनकः । |
| -लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥ | हरेणुखण्डिकौ चास्मिन्- |
| गोदारणं च सीरो- | मटरके नाम ४-कलाय १ सती- |
| हलके नाम ४-लाङ्गल १ हल | नक २ हरेणु ३ खण्डिक ४ ॥ |
| २ ॥ १३ ॥ गोदारण ३ सीर ४ ॥ | -कोरदूषस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥ |
| -ऽथ शम्या स्त्री युगकीलकः । | कोदोंके नाम २-कोरदूष १ |
| सैले (सिमल) के नाम २- | कोद्रव २ ॥ १६ ॥ |
| शम्या १ युगकीलक २ ॥ | मङ्गल्यका मसूरो- |
| ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात्- | मसूरके नाम २-मङ्गल्यक १ |
| हलस (हाल) के नाम २-ईषा | मसूर २ ॥ |
| १ लाङ्गलदण्ड २ ॥ | -ऽथ मकुष्ठकमयुष्ठकौ । वन- |
| -सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥ | मुद्गे- |
| हलकी रेखा (खूड) के नाम २- | मोठके नाम ३-मकुष्ठक १ |
| सीता १ लाङ्गलपद्धति २ ॥ १४ ॥ | मयुष्ठक २ वनमुद्ग ३ ॥ |

—सर्षपे तु द्वौ तंतुभकदम्बकौ १७॥

सरसौंके नाम ३—सर्षप १ तन्तुभ २
कदम्बक ३ ॥ १७॥

सिद्धार्थस्त्वेष धवलो—

सफेद सरसौंका नाम १—सिद्धार्थ १॥

—गोधूमः सुमनः समौ ।

गेहूँके नाम २—गोधूम १ सुमन २॥

स्याद्यावकस्तु कुलमाष—

कुलथीके नाम २—यावक १ कुलमाष २॥

—श्रणको हरिमन्थकः ॥ १८॥

अरहरे (चने) के नाम २—चणक १

हरिमन्थक २ ॥ १८॥

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपि-

ञ्च निष्फले ।

‘फलहीन’ ‘बांझतिल’ ‘रानतिल’

के नाम २—तिलपेज १ तिलपिज २॥

क्षवः क्षुताभिजननो राजिका

कृष्णिकाऽऽसुरी ॥ १९॥

राईके नाम ५—क्षव १ क्षुताभिज-

नन २ राजिका ३ कृष्णिका ४ आसुरी

५ ॥ १९॥

स्त्रियौ कङ्गुप्रियंगू द्वे—

कंगनीके नाम २—कंगु १ प्रियंगु २॥

—अतसी स्यादुमा शुमा ।

अलसीके नाम ३—अतसी १ उमा

२ शुमा ३ ॥

मातुलानी तु भङ्गायाम्—

भङ्गके नाम २—मातुलानी १

भंगा २ ॥

—व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २०॥

चीना धान्यका नाम १—अणु १॥ २०॥

किंशारुः सस्यशूकं स्यात्—

जौ इत्यादिके तीखे अग्रभाग

(सीकुर) के नाम नाम २—किंशारु १

सस्यशूक २ ॥

—कणिशं सस्यमञ्जरी ।

धान्यकी बालके नाम २—कणिश १

सस्यमञ्जरी २॥

धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः—

धान्यमात्रके नाम ३—धान्य १

व्रीहि २ स्तम्बकरि ३ ॥

—स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥ २१॥

यव आदिकी जडके नाम २—स्तम्ब

१ गुच्छ २ ॥ २१॥

नाडी नालं च काण्डोऽस्य—

नलुआके नाम २—नाडी १ नाल २॥

—पलालोऽस्त्री स निष्फलः ।

प्यालका नाम १—पलाल १ ॥

कडङ्गरो बुसं क्लीवे—

मोटे भुसके नाम २—कडङ्गर १

बुस २ ॥

—धान्यत्वचि तुषः पुमान् ॥ २२॥

भूसीका नाम १—तुष १ ॥ २२॥

शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्र—
यव आदिके चिकने और तीखे
अग्रभागके नाम २—शूक १ श्लक्ष्ण-
तीक्ष्णाग्र २ ॥

—शमी शिम्बा—

मटर आदिकी फलीके नाम २—
शमी १ शिम्बा २ ॥

—त्रिषूतरे ।

आगे कहे हुए सब शब्द तीनों
लिंगोंमें होंगे ॥

—ऋद्धमावसितं धान्यं—

तृण दूर करके पैरेमें इकट्ठे करने योग्य
धान्यके नाम २—ऋद्ध १ आवसित २ ॥

—पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥

साफ करके इकट्ठे किये हुए धान्यके
नाम २—पूत १ बहुलीकृत २ ॥ २३ ॥

भाषादयः शमीधान्ये—

फलीके भीतर होनेवाले धान्य भाष
आदि हैं ॥

—शूकधान्ये यवादयः ।

यव आदि शूक धान्य अर्थात्
बालसे पैदा होनेवाले हैं ॥

शालयः कलमाद्याश्च षष्टिका-
द्याश्च—

यव आदि और शाठी आदि शालि
धान्य कहलाते हैं ॥

—पुंस्यमी ॥ २४ ॥

भाष आदि शब्द पुल्लिङ्गमें होते
हैं ॥ २४ ॥

तृणधान्यानि नीवाराः—

पशाई आदि मुनियोंके धान्यका
नाम १—नीवार १ ॥

स्त्री गवेधुर्गवेधुका ।

जिसको कोकणदेशमें कसाड कसा
कहते हैं उस मुनिअन्नके नाम २—
गवेधु १ गवेधुका २ ॥

अयोग्रं मुसलोऽस्त्री स्या—

मूसलके नाम २—अयोग्र १
मुसल २ ॥

—दुदूखलमुलूखलम् ॥ २५ ॥

ओखलीके नाम २—उदूखल १
उलूखल ॥ २५ ॥

प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री—

छाजके नाम २—प्रस्फोटन १ शूर्प २ ॥

—चालनी तितउः पुमान् ।

चालनीक नाम २—चालनी १
तितउ २ ॥

स्यूतप्रसेवौ—

बख सण आदिसे बने हुए थैलेके
नाम २—स्यूत १ प्रसेव २ ॥

—कण्डोलपिटौ—

टोकरीके नाम २—कण्डोल १ पिट २ ॥

—कटाकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥

चटाईके नाम २—कट १ किलि-
जक २ ॥ २६ ॥

समानौ—

यह समानलिंग हैं ॥

—रसवत्यां तु पाकस्थानमहा-
नसे ।

रसोईके स्थानक नाम ३—रसवती
१ पाकस्थान २ महानस ३ ॥

पौरोगवस्तदध्यक्षः—

रसोईके अधिकारीके नाम २—पौरो-
गव १ तदध्यक्ष (महानसाध्यक्ष) २ ॥

—सूपकारास्तु बह्व्याः ॥ २७ ॥

आरालिका आन्धसिकाः सूदा
औदनिका गुणाः ।

रसोइयेके नाम ७—सूपकार १
बलव २ ॥ २७ ॥ आरालिक ३ आन्ध-
सिक ४ सूद ५ औदनिक ६ गुण ७ ॥

आपूपिकः कान्दविको भक्ष्य-
कार इमे त्रिषु ॥ २८ ॥

पुआ आदि बनानेवालेके नाम ३—
आपूपिक १ कान्दविक २ भक्ष्यकार ३ ॥
ये शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥ २८ ॥

अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी-
चुल्लिरन्तिका ।

चूल्हक नाम ५—अश्मन्त १ उद्धान
२ अधिश्रयणी ३ चुल्लि ४ अन्तिका ५ ॥

अंगारधानिकाऽङ्गारशकट्यपि
हसन्त्यापि ॥ २९ ॥ हसन्य—

बरोसी (सिगडीके) नाम ४—
अंगारधानिका १ अंगारशकटी २
हसन्ती ३ ॥ २९ ॥ हसनी ४ ॥

—प्यथ न स्त्री स्यादंगारो—
अंगारेका नाम १—अंगार १ ॥

—उलातमुलमुकम् ।
जलते हुए काष्ठके नाम २—अलात

१ उलमुक २ ॥
कलीवेऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो—

भाडके नाम २—अम्बरीष १ भ्राष्ट्र २ ॥
—ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रि-

याम् ॥ ३० ॥
कढाईके नाम २—कन्दु १

स्वेदनी २ ॥ ३० ॥
अलिञ्जरः स्यान्माणिकः—

माठ (बडा घडा) क नाम २—
अलिञ्जर १ मणिक २ ॥

—कर्कर्यालुर्गलन्तिका ।
कठौतीक नाम ३—कर्करी १ आलु

२ गलन्तिका ३ ॥
पिठरः स्यालयुखा कुण्डं—

बटलोईके नाम ४—पिठर १ स्थाली
२ उखा ३ कुण्ड ४ ॥

—कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥

घटः कुटानिपा-
 घडेके नाम ४-कलश १ ॥
 ॥ ३१ ॥ घट २ कुट ३ निप ४ ॥
 -वस्त्री शरावो वर्धमानकः ।
 सरवेके नाम २-शराव १-वर्ध-
 मानक २ ॥
 ऋजीषं पिष्टपचनं-
 तवेके नाम २-ऋजीष १ पिष्ट-
 पचन २ ॥
 -कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ॥ ३२ ॥
 कटोरीके नाम २-कंस १ पान-
 भाजन २ ॥ ३२ ॥
 कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं-
 कुप्पेका नाम १-कुतू १ ॥
 -सैवाल्पा कुतुपः पुमान् ।
 कुप्पीका नाम १-कुतुप १ ॥
 सर्वमावपनं भाण्ड पात्रामत्रं
 च भाजनम् ॥ ३३ ॥
 वरतनके नाम ५-आवपन १
 भाण्ड २ पात्र ३ अमत्र ४ भाजन ५ ॥ ३३ ॥
 दर्विः कम्बिः खजाका च-
 कल्लैलीके नाम ३-दर्वि १ कम्बि २
 खजाका ३ ॥
 -स्यात्तर्दुर्दारुहस्तकः ।
 डोईके नाम २-तर्दू १ दारुहस्तक २ ॥
 अस्त्री शाकं हरितकं शिशु-

शाकके नाम ३-शाक १
 हरितक २ शिशु ३ ॥
 -रस्य तु नाडिका ॥ ३४ ॥
 कलम्बश्च कडम्बश्च-
 शाककी डंडीके नाम ३-नाडिका
 १ ॥ ३४ ॥ कलम्ब २ कडम्ब ३ ॥
 -वेसवार उपस्करः ।
 मसालेक नाम २-वेसवार १
 उपस्कर २ ॥
 तित्तिडीक च चुक्रं च वृक्ष-
 म्ल-
 चूख (अमचूरआदि) के नाम ३-
 तित्तिडीक १ चुक्र २ वृक्षाम्ल ३ ॥
 -मथ वेल्लजम् ॥ ३५ ॥
 मरीचं कोलकं कृष्णमूषणं
 धर्मपत्तनम् ।
 मिर्चेके नाम ६-वेल्लज १ ॥ ३५ ॥
 मरीच २ कोलक ३ कृष्ण ४ ऊषण ५
 धर्मपत्तन ६ ॥
 जीरको जरणोऽजाजी कणा-
 जीरेके नाम ४-जीरक १ जरण २
 अजाजी ३ कणा ४ ॥
 -कृष्णे तु जीरके ॥ ३६ ॥
 सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः-
 कालोपकुञ्चिका ।
 कालेजीरेके नाम ६-॥ ३६ ॥ सुषवी

कारवी २ पृथ्वी ३ पृथु ४ काला ५
उपकुञ्चिका ६ ॥

आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्या-

अदरखके नाम २-आर्द्रक १ शृङ्गवेर २ ॥

-दथ च्छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३७ ॥

कुस्तुम्बुरु च धान्याक-

धनियेके नाम ४-छत्रा १ वितुन्नक २

॥ ३७ ॥ कुस्तुम्बुरु ३ धान्याक ४ ॥

-मथ शुण्ठी महौषधम् ।

स्त्रीनपुंसकयोर्वैश्वं नागरं विश्वभे-
षजम् ॥ ३८ ॥

सौंठके नाम ५-शुण्ठी १ महौषध

२ विश्व ३ नागर ४ विश्वभेषज ५ ॥ ३८ ॥

आरनालकसौवीरकुलमाषाभि-

पुत्तानि च । अवन्तिसोमधान्या-
म्लकुञ्जलानि च काञ्जिके ॥ ३९ ॥

कांजीके नाम ७-आरनालक १

सौवीर २ कुलमाषाभिपुत ३ अवन्तिसो-
म ४ धान्याम्ल ५ कुञ्जल ६ कांजिक ७

॥ ३९ ॥

सहस्रवेध जतुकं वाहीकं हिंगु

रामठम् ।

हींगकं नाम ५-सहस्रवेधिन १ जतु-

क २ वाहीक ३ हिंगु ४ रामठ ५ ॥

तत्पत्री कारवी पृथ्वी बाष्पिका

कवरी पृथुः ॥ ४० ॥

हींगके वृक्षके पत्तक नाम ५-

कारवी १ पृथ्वी २ बाष्पिका ३ कवरी

४ पृथु ५ ॥ ४० ॥

निशाख्या काञ्चनी पीता

हरिद्रा वरवर्णिनी ।

हलदीके नाम ५-निशा १ काञ्चनी

२ पीता ३ हरिद्रा ४ वरवर्णिनी ५ ॥

सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं

वशिरं च तत् ॥ ४१ ॥

समुद्रज्ञागके नाम २-अक्षीव १

वशिर २ ॥ ४१ ॥

सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणि-

मन्थश्च सिन्धुजे ।

सैन्धेके नाम ४-सैन्धव १ शीतशिव

२ माणिमन्थ ४ सिन्धुज ४ ॥

रौमकं वसुकं-

सामरके नाम २-रौमक १ वसुक २ ॥

-पाक्यं विडं च कृतके द्वयम् ॥ ४२ ॥

खारीके नाम २-पाक्य १ विड

२ ॥ ४२ ॥

सौवर्चलेऽक्षरुचके-

संचलखारके नाम ३-सौवर्चल १

अक्ष २ रुचक ३ ॥

-तिलकं तत्र भेचके ।

काले संचलखारके नाम २-तिलक

१ भेचक २ ॥

मत्स्यण्डी फाणितं खण्डविकारे-

रावके नाम २-मत्स्यंटी १
फाणित २ ॥

—शर्करा सिता ॥ ४३ ॥

मिश्रीके नाम २-शर्करा १
सिता २ ॥ ४३ ॥

कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्या-
मावेके नाम २-कूर्चिका १ क्षीर-
विकृति २ ॥

—द्रसाला तु मार्जिता ।

श्रीखण्डक नाम २-रसाला १
मार्जिता २ ॥

स्यात्तेमनं तु निष्ठानं—

कटीके नाम २-तेमन १ निष्ठान २ ॥

—त्रिलिङ्गावासितावधेः ॥ ४४ ॥

वासितपर्यन्त शब्द तीनों लिंगोंमें
होते हैं ॥ ४४ ॥

शूलाकृतं भटित्रं च शूल्य—

लोहशलाकासे पकाये हुए मांस-
के नाम ३-शूलाकृत १ भटित्र २ शूल्य ३ ॥

—मुख्यं तु पैठरम् ।

बटलोईमें पकाये हुए अन्नादिके
नाम २-उरुय १ पैठर २ ॥

प्रणीतमुपसंपन्नं—

पकी हुई रसोईके नाम २-प्रणीत
१ उपसम्पन्न २ ॥

—प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥

घृत तैलादिस बनी हुई रसोईके
नाम २-प्रयस्त १ सुसंस्कृत २ ॥ ४५ ॥

स्यात्पिच्छिलं तु विजिलं—

पनीले भोजनके नाम २-पिच्छिल १
विजिल २ ॥

संमृष्टं शोधितं समे ।

बीने हुए अन्नके नाम २-संमृष्ट
१ शोधित २ ॥

चिकणं मसृण स्निग्धं—

चिकनेके नाम ३-चिकण १
मसृण २ स्निग्ध ३ ॥

तुल्ये भावितवासिते ॥ ४६ ॥

छौंकी हुई वस्तुके नाम २-भावित
१ वासित २ ॥ ४६ ॥

आपकं पौलिरभ्यूषो—

घृत आदिमें भुनी हुई वस्तुके नाम
३-आपक १ पौलि २ अभ्यूष ३ ॥

लाजाः पुंभूम्नि चाक्षताः ।

खीलोंका नाम १-लाज १ ॥

पृथुकः स्याच्चिपिटको—

परमलके नाम २-पृथुक १ चिपि-
टक २ ॥

धाना भृष्टयवे स्त्रियः ॥ ४७ ॥

भुने हुए जौके नाम २-धाना १
भृष्टयव २ ॥ ४७ ॥

पूपोऽपूपः पिष्टकः स्यात्—

पुएके नाम ३-पूप १ अपूप २ पिष्टक ३ ॥

—करम्भो दधिसक्तवः ।

दधियुक्त सत्तुओंके नाम २—
करम्भ १ दधिसक्त २ ॥

भिस्सा स्त्री भक्तमन्धोऽन्नमो-
दनोऽस्त्री सदीदिविः ॥ ४८ ॥

भातके नाम ६—भिस्सा १ भक्त
२ अन्धसू ३ अन्न ४ ओदन ५
दीदिवि ६ ॥ ४८ ॥

भिस्सटा दग्विका—

जले अन्नके नाम २—भिस्सटा
दग्विका २ ॥

—सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम् ।

मांडका नाम १—मण्ड १ ॥

मासराचामनिस्त्रावा मण्डे भ-
क्तसमुद्भवे ॥ ४९ ॥

केवल भातके मांडके नाम ३—मास-
रा १ आचाम २ निस्त्राव ३ ॥ ४९ ॥

यवागूहाष्णिका श्राणा विलेपी
तरला च सा ।

पतले भातके नाम ५—यवागू १
उष्णिका २ श्राणा ३ विलेपी ४ तरला ५ ॥

गव्यं त्रिषु गवां सर्व—

गायसे उत्पन्न वस्तुका नाम १—गव्य १

—गोविद् गोमयमस्त्रियाम् ॥ ५० ॥

गौक गोबरके नाम २—गोविशू
१ गोमय २ ॥ ५० ॥

तत्तु शुष्कं करीषोऽस्त्री—

सूखे हुए गोबरका नाम १—करीष १ ॥

—दुग्ध क्षीरं पयः समम् ।

दूधके नाम ३—दुग्ध १ क्षीर २ पयस ३ ॥

पयस्यमाज्यदध्याद—

घृत दही आदिका नाम १—पयस्य १ ॥

—द्रप्सं दधि घनेतरत् ॥ ५१ ॥

पतले दहीका नाम १—द्रप्स १ ॥ ५१ ॥

घृतमाज्यं हविः सर्पि—

धीके नाम ४—घृत १ आज्य २
हविषू ३ सर्पिषू ४ ॥

—नवनीतं नवोद्धृतम् ।

मक्खनके नाम २—नवनीत १
नवोद्धृत २ ॥

तत्तु हैयङ्गवीनं यद्वचोगोदोहो-
द्भवं घृतम् ॥ ५२ ॥

नौनीधीका नाम १—हैयङ्गवीन
१ ॥ ५२ ॥

दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमापि
गोरसः ।

मट्ठेके नाम ४—दण्डाहत १
कालशेय २ अरिष्ट ३ गोरस ४ ॥

तक्रं ह्युदश्चिन्मथितं पादाङ्गव-
र्धाम्बु निर्जलम् ॥ ५३ ॥

मट्ठेके मद ३—तक्र १ उदश्चित
२ मथित ३ ॥ ५३ ॥

मण्डं दधिभवं मस्तु—

दहीके पानीका नाम १—मस्तु १ ॥
 —पीयूषोऽभिनवं पयः ।
 खीसका नाम १—पीयूष १ ॥
 अशनाया बुभुक्षा क्षुइ—
 भूखके नाम ३—अशनाया १
 बुभुक्षा २ क्षुभू ३ ॥
 —ग्रासस्तु कवलः पुमान् ॥ ५४ ॥
 ग्रासके नाम २—ग्रास १
 कवल २ ॥ ५४ ॥
 सपीतिः स्त्री तुल्यपानं—
 साथ पीनेके नाम २—सपीति १
 तुल्यपान २ ॥
 —सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।
 एकसाथ भोजन करनेके नाम २—
 सग्धि १ सहभोजन २ ॥
 उदन्या तु पिपासा तृट् तर्षो—
 प्यासके नाम ४—उदन्या १
 पिपासा २ तृट् ३ तर्ष ४ ॥
 —जग्धिस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥
 जेमनं लेह आहारो निघासो न्याद
 इत्यपि ॥
 भोजनके नाम ७—जग्धि १ भोजन
 २ ॥ ५५ ॥ जेमन ३ लेह ४ आहार
 ५ निघास ६ न्याद ७ ॥
 सौहित्यं तर्पणं तृप्तिः—
 तृप्तिके नाम ३—सौहित्य १ तर्पण
 २ तृप्ति ३

—फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥ ५६ ॥
 भोजन करके त्यागी हुई वस्तुका
 नाम १—फेला १ ॥ ५६ ॥
 कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं
 यथेप्सितम् ।
 इच्छाके नाम ६—काम १ प्रकाम २
 पर्याप्त ३ निकाम ४ इष्ट ५ यथेप्सित ६ ॥
 गाप गोपालगोसंख्यगोधुगा-
 भीरवल्लवाः ॥ ५७ ॥
 अहीरके नाम ६—गोप १ गोपाल
 २ गोसंख्य ३ गोदुह ४ आभीर ५
 बल्लव ६ ॥ ५७ ॥
 गोमहिष्यादिकं पादबन्धनं—
 घरमें बांधने लायक गाय भैंस
 आदिका नाम १—पादबन्धन १ ॥
 —द्वौ गवीश्वरे । गोमान्गोमी—
 गायके मालिकके नाम ३—गवीश्वर
 १ गोमत् २ गोमिन् ३ ॥
 —गोकुलं तु गोधनं स्याद्गवां
 व्रजे ॥ ५८ ॥
 गायोंके समूहके नाम २—गोकुल
 १ गोधन २ ॥ ५८ ॥
 त्रिष्वशितं गवीनं तद्गवो य-
 त्राशिताः पुरा ।
 जहां गैयां आदिको पहिले खिलाया

गया हो उस स्थानका नाम १-आ-
शितंगवीन १ ॥

उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो
वृषभो वृषः ॥५९॥ अनड्डवान्सौ-
रभेयो गो-

बैलके नाम ९-उक्षन् १ भद्र २
बलीवर्द ३ ऋषभ ४ वृषभ ५ वृष ६ ॥५९॥
अनड्डह् ७ सौरभेय ८ गो ९ ॥

-रुक्षणां संहतिरौक्षकम् ।
बैलोंके समूहका नाम १-औक्षक १
गव्या गोत्रा गवाम्-
गावोंके समूहके नाम २-गव्या १
गोत्रा २ ॥

-वत्सधेन्वोर्वात्सकधैनुके ॥६०॥
बछड़ोंके समूहका नाम १-वात्सक
१ धैनुओंके समूहका नाम १-धै-
नुक १ ॥ ६० ॥

वृषो महान्महोक्षः स्याद्-
बड़े बैलका नाम १-महोक्ष १ ॥
-वृद्धोक्षस्तु जरद्वयः ।
बूढ़े बैलके नाम २-वृद्धोक्ष १
जरद्वय २ ॥

उत्पन्न उक्षा जातोक्षः-
जवान बैलका नाम १-जातोक्ष १
-सद्योजातस्तु तर्णकः ॥६१॥
छोटे बछरेका नाम १-तर्णक १ ॥
१ ॥ ६१ ॥

शकृत्करिस्तु वत्सः स्याद्-
बछडेमात्रक नाम २-शकृत्करि १

वत्स २ ॥
-दम्यवत्सतरौ समौ ।
थोड़े जवान बछड़के नाम २-
दम्य १ वत्सतर २ ॥

आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः-
बधिया करने लायकका नाम १-
आर्षभ्य १ ॥
-षण्डो गोपतिरिट्चरः ॥६२॥
सांडके नाम ३-षण्ड १ गोपति २
इट्चर ३ ॥ ६२ ॥

स्कन्धदेशे त्वस्य वहः-
बैलके कन्धेका नाम १-वह १ ॥
सास्ना तु गलकम्बलः ।
गैर्योंके गलेमें जो मांस लटकता है
उस मांसके नाम २-सास्ना १ गल-
कम्बल २ ॥

स्यान्नस्ति तस्तु नस्योतः-
नाथवाले बैलके नाम २-नस्ति १
नस्योत २ ॥

-प्रष्टवाड् युगपार्श्वगः ॥६३॥
जिससे गाड़ीमें जोतनेके अर्थ बैल
सधाये जायँ उस काष्ठके नाम २-
प्रष्टवाड् १ युगपार्श्वग २ ॥ ६३ ॥
युगादीनां तु वोढारो युग्य-
प्रासङ्ग्यशकटाः ।

जुवेके उठानेवालेका नाम १—
युग्य १ ॥ जोडके उठानेवालेका नाम १—
प्रासङ्ग्य १ ॥ छकडेके उठानेवाले वैलका
नाम १—शाकट १ ॥

खनति तेन तद्गोढाऽस्येदं
हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥

हलमें चलनेवालेके नाम २—हालिक
१ सैरिक २ ॥ ६४ ॥

धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधु-
रंधराः ।

बोझा ढोनेवाले वैलके नाम ५—
धूर्वह १ धुर्य २ धौरेय ३ धुरीण ४
धुरन्धर ५ ॥

उभावेकधुरीणैकधुरावेकधुरा-
वहे ॥ ६५ ॥

एक बोझेके ढोनेवालेके नाम ३—एक-
धुरीण १ एकधुर २ एकधुरावह ३ ॥ ६५ ॥

स तु सर्वधुरीणः स्याद्यो वै
सर्वधुरावहः ।

जो सब बोझा ले चलै उसके नाम
२—सर्वधुरीण १ सर्वधुरावह २ ॥

माहेयी सौरभेयी गौरस्त्रा
माता च श्रृंगिणी ॥ ६६ ॥ अर्जु-
न्यध्व्या रोहिणी स्यात्—

गायके नाम ९—माहेयी १ सौर-
भेयी २ गो ३ उस्ता ४ माता ५ श्रृंगिणी

६ ॥ ६६ अर्जुनी ७ अध्व्या ८
रोहिणी ९ ॥

—उत्तमा गोषु नैचिकी ।
अच्छी गायका नाम १—नैचिकी १ ॥
वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः शव-
लीधवलादयः ॥ ६७ ॥

चितकवरीका नाम १—शवली १ ॥
सफेदका नाम १—धवला १ ॥ ६७ ॥

द्विहायनी द्विवर्षा गौ—
दो वर्षकी गायके नाम २—द्विहा-
यनी १ द्विवर्षा २ ॥

—रेकाब्दा त्वेकहायनी ।
एकवर्षकीके नाम २—एकाब्दा १
एकहायनी २ ॥

चतुराब्दा चतुर्हाय—
चार वर्षकीके नाम २—चतुराब्दा १
चतुर्हायणी २ ॥

—ण्येवं त्र्यब्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥
तीन वर्षकीके नाम २—त्र्यब्दा १
त्रिहायणी २ ॥ ६८ ॥

वशा वन्ध्या—
बांझके नाम २—वशा १ वन्ध्या २ ॥
—ऽवताका तु स्ववद्गर्भा—

जिसका अकस्मात् गर्भ गिर गया
हो उस गायके नाम २—अवताका १
स्ववद्गर्भा २ ॥

—थ सन्धिनी ।

आक्रान्ता वृषभेणा—

बैलके साथ लगाई हुई गायका नाम १—संधिनी १ ॥

—ऽय वेहद्रभोपवातिनी ॥ ६९ ॥

बैलके संयोगसे गर्भको गिरा देने-
वाली गायके नाम २—वेहत् १ गर्भो-
पवातिनी २ ॥ ६९ ॥

काल्योपसर्ग्य प्रजने—

जिसको गर्भ धारण करनेका समय
हो उसका नाम १—उपसर्ग्य १ ॥

—प्रष्टौही बालगर्भिणी ।

पहलौनका नाम १—प्रष्टौही १ ॥

स्यादचण्डी तु सुकरा—

सूधी गौके नाम २—अचण्डी १
सुकरा २ ॥

—बहुसूतिः परेष्टुका ॥ ७० ॥

बहुत दूधके व्याई हुईके नाम २—
बहुसूति १ परेष्टुका २ ॥ ७० ॥

चिरप्रसूता बष्कयिणी—

बकेन (बहुत दिनोंमें व्यानेवाली)
गायके नाम २—चिरप्रसूता १ बष्क-
यिणी २ ॥

—धेनुः स्यान्नवसूतिका ॥

नई व्याई हुईके नाम २—धेनु १
नवसूतिका ॥

सुव्रता सुखसन्दोह्या—

जो सरलतासे दुही जाय उस गायके
नाम २—सुव्रता १ सुखसंदोह्या २ ॥

—पीनोधनी पीवरस्तनी ॥ ७१ ॥

बड़े आयनवालीके नाम २—पीनोष्ठी
१ पीवरस्तनी २ ॥ ७१ ॥

द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा—

द्रोण (१२ सेर) दूध देनेवालीके नाम
२—द्रोणक्षीरा १ द्रोणदुग्धा २ ॥

—धेनुष्या बन्धके स्थिता ।

गिरवी रक्खी हुईका नाम १—
धेनुष्या १ ॥

समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं
प्रसूयते ॥ ७२ ॥

—प्रतिवर्षं व्यानेवाली गौका नाम १—
समांसमीना १ ॥ ७२ ॥

ऊधस्तु क्लीवमापीनं—

आयन (औहडी) के नाम २—
ऊधस् १ आपीन २ ॥

—समौ शिवककीलकौ ।

खूंटके नाम २—शिवक १ कीलक २ ॥
न पुंसि दाम सन्दानं—

दुहनेके समय पांव बांधनेकी रस्सीके
नाम २—दामन् १ संदान २ ॥

—पशुरज्जुस्तु दामनी ॥ ७३ ॥

पशु बांधनेकी रस्सीके नाम २—
पशुरज्जु १ दामनी २ ॥ ७३ ॥

वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो
मन्थदण्डके ।

मथनेका दंडा अर्थात् रईके नाम
५—वैशाख १ मन्थ २ मन्थान ३ म-
थिन् ४ मन्थदण्डक ५ ॥

कुठरो दण्डविष्कम्भो—

जिसमें रई बांधी जाय उस काष्ठके
नाम २—कुठर १ दण्डविष्कम्भ २ ॥

मन्थनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥

मथनेके पात्रके नाम २—मन्थनी १
गर्गरी २ ॥ ७४ ॥

उष्ट्रे क्रमेलकमयमहांगाः—

ऊंटके नाम ४—उष्ट्र १ क्रमेलक २
मय ३ महांग ४ ॥

—करभाः शिशुः ।

ऊंटक बच्चेके नाम २—करभ १
शिशु २ ॥

करभाः स्युः शृंखलका दारवैः
पादबंधनैः ॥ ७५ ॥

काठसे पैर बंधे हुए बच्चेका नाम
१—शृंखलक १ ॥ ७५ ॥

अजा छागी—

बकरीके नाम २—अजा १ छागी २ ॥

—शुमच्छागवस्तच्छगलका अजे ।

बकरेके नाम ५—शुभ १ छाग २
वस्त ३ छगलक ४ अज ५ ॥

भेदोरभ्रोरणोर्णायुमेघवृष्णय ए-
डके ॥ ७६ ॥

भेदके नाम ७—भेद १ उरभ्र २
उरण ३ ऊर्णायु ४ मेघ ५ वृष्णि ६
एडक ७ ॥ ७६ ॥

उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे, स्यादौष्ट्रकौ-
रभ्रकाजकम् ।

ऊंटोंके समूहका नाम १—औष्ट्रक
१ ॥ भेदोंके समूहका नाम १—औरभ्रक
१ ॥ अजों (बकरी) के समूहका नाम १—
आजक १ ॥

चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा
गर्दभाः खराः ॥ ७७ ॥

गधेके नाम ५—चक्रीवत् १ बालेय
२ रासभ ३ गर्दभ ४ खर ५ ॥ ७७ ॥

वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणि-
जो वाणिक । पण्याजीवो ह्याप-
णिकः क्रयविक्रयिकश्च सः ॥ ७८ ॥

व्यापारीके नाम ८—वैदेहक १ सार्थ-
वाह २ नैगम—३ वाणिज ४ वाणिज ५
पण्याजीव ६ आपणिक ७ क्रयविक्र-
यिक ८ ॥ ७८ ॥

विक्रेता स्याद्विक्रयिकः—

बेचनेवालेके नाम २—विक्रेत १
विक्रयिक २ ॥

—क्रायिकक्रयिकौ समौ ।
 मोल लेनेवालेके नाम २—क्रायिक
 १ क्रयिक २ ॥
 वाणिज्यं तु वणिज्या स्या—
 व्यापारके नाम २—वाणिज्य १
 वणिज्या २ ॥
 —मूल्यं वस्त्रोऽप्यवक्रयः ॥७९॥
 मोलके नाम ३—मूल्य १ वस्त्र २
 अवक्रय ३ ॥
 नीवी परिपणो मूलधनं—
 मूलधनके नाम ३—नीवी १ परि-
 पण २ मूलधन ३ ॥
 —लाभोऽधिकं फलम् ।
 नफेके नाम ३—लाभ १ अधिक २
 फल ३ ॥
 परिदानं परीवर्तो नैमेयनिम-
 यावपि ॥ ८० ॥
 अदले बदलेके नाम ३—परिदान १
 परीवर्त २ नैमेय ३ निमय ४ ॥८०॥
 पुमानुपनिधिन्यासः—
 धरोहरके नाम २—उपनिधि १ न्यास २ ।
 —प्रतिदानं तदर्पणम् ।
 धरोहर लौटा देनेके नाम २—प्रति-
 दान १ तदर्पण २ ॥
 क्रये प्रसारितं क्रय्यं—
 बेचनेके अर्थ दुकानमें रखी हुई
 वस्तुका नाम १—क्रय्य १ ॥

क्रयं क्रेतव्यमात्रके ॥ ८१ ॥
 दुकानपर रखने योग्य वस्तुका नाम
 १—क्रय १ ॥ ८१ ॥
 विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं—
 बेचने योग्य वस्तुके नाम ३—विक्रेय
 १ पणितव्य २ पण्य ३ ॥
 —क्रय्यादयस्त्रिषु ।
 क्रय्य आदि शब्द तीनों लिंगोंमें
 होते हैं ॥
 क्लीबे सत्यापनं सत्यङ्कारः स-
 त्याकृतिः स्त्रियाम् ॥ ८२ ॥
 साई अर्थात् बयानेक नाम ३—सत्या-
 पन १ सत्यङ्कार २ सत्याकृति ३ ॥ ८२ ॥
 विपणो विक्रयः—
 बेचनेके नाम २—विपण १ विक्रय २ ।
 —संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु ।
 एकसे अष्टादश पर्यंत संख्या गिनने
 योग्य वस्तुमें रहती है और वह संख्या
 शब्द संख्येय शब्दवत् तीनों लिंगोंमें
 होता है ॥
 विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः
 संख्येयसंख्ययोः ॥ ८३ ॥
 विंशति (बीस) आदि संपूर्ण संख्या-
 (गिनती) और संख्येय अर्थात् गिनने
 योग्य वस्तुमें रहती है और विंशति
 आदि शब्द सदा एकवचन होते
 हैं ॥ ८३ ॥
 संख्यार्थे द्विवदुत्वे स्त-

केवल गिनती अर्थवाले विंशति
आदि शब्द द्विवचन और बहुवचनमें
होते हैं ।

—स्तासु चानवतेः स्त्रियः ।

विंशति आदि नवतिपर्यंत शब्द
स्त्रीलिंग होते हैं ॥

पंक्तेः शतसहस्रादि क्रमाद्-
शगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥

दश संख्याका क्रमसे उत्तरोत्तर दश
गुण शत सहस्र आदि संख्याएँ होती
हैं ॥ ८४ ॥

यौतवं द्रुवयं पाय्यमिति मानार्थकं
त्रयम् ।

तोलके नाम ३—यौतव १ द्रुवय
२ पाय्य ३ ॥

मानं तुलाङ्गुलिप्रस्थै-
(तोल तीन प्रकारकी है) तुलामान
१ अंगुलिमान २ प्रस्थमान ३ ॥

—गुञ्जाः पञ्चाद्यमाषकः ॥ ८५ ॥

पांच रतीका शास्त्रोक्त माषा
(मासा) होता है ॥ ८५ ॥

ते षोडशाक्षः कर्पोऽस्त्री-
सोलह मासेका एक अक्ष होता है
उसको ही कर्ष कहते हैं ॥

—पलं कर्षचतुष्टयम् ।

चार कर्षका एक पल होता है ॥

सुवर्णविस्तौ हेम्नोऽक्षे-

कर्षभर सुवर्णके नाम २—सुवर्ण १
विस्त २ ॥

—कुरुविस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥

पलभर सुवर्णका नाम १—कुरु-
विस्त १ ॥ ८६ ॥

तुला स्त्रियां पलशतं-

सौ पलका नाम १—तुला १ ॥

—भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः ।

वीस तुलाका नाम १—भार १ ॥

आचितो दश भाराः स्युः-

दशभारका नाम १—आचित १ ॥

—शाकटो भार आचितः ॥ ८७ ॥

शकटभर भारका नाम १—आचित
१ ॥ ८७ ॥

कार्षापणः कार्षिकः स्यात्-

चांदीके रुपयेके नाम २—कार्षा-
पण १ कार्षिक २ ॥

—कार्षिके ताम्रिके पणः ।

तामेका कार्षापण अर्थात् पैसेका
नाम १—पण १ ॥

आख्रियामाढकद्रोणौ खारी

वाहो निकुञ्चकः ॥ ८८ ॥

कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परि-
माणार्थकाः पृथक् ।

(चार सेरका नाम) आढक १ ॥

(आठ आढकका नाम) द्रोण १ ॥

(तीन द्रोणकानाम) खारी १॥ (आठ द्रोणका नाम) वाह १॥ (सुड्डीभरका नाम) निकुंचक १॥ ८८ ॥ (पावभरका नाम) कुडव १॥ (सेरभरका नाम) प्रस्थ १ ॥ इत्यादि अलग २ तोलके नाम हैं ॥

पादस्तुरीयो भागः स्या-

चौथे भागका नाम १-पाद १ ॥

-दशभागौ तु वण्टके ॥ ८९ ॥

बांट अर्थात् भागके नाम ३-अंश १ भाग २ वंटक ३ ॥ ८९ ॥

द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृ-
क्यं धनं वसु । हिरण्यं द्रविणं
द्युम्नमर्थैर्विभवा अपि ॥ ९० ॥

धनके नाम १३-द्रव्य १ वित्त २
स्वापतेय ३ रिक्थ ४ ऋक्थ ५ धन ६
वसु ७ हिरण्य ८ द्रविण ९ द्युम्न १० अर्थ
११ रै १२ विभव १३ ॥ ९० ॥

स्यात्कोषश्च हिरण्यं च हेमरू-
प्ये कृताकृते ।

गडे वा नहीं गडे हुए सोने वा
चांदीके नाम २-हिरण्य १ कोष २ ॥

ताभ्यां यदन्यतत्कुप्यं-

सोने चांदीसे अन्य ताम्रादि धातु-
का नाम १-कुप्य १ ॥

-रूप्यं तद्वयमाहतम् ॥ ९१ ॥

तांबा और चांदीके मिलाये हुआ का
नाम १-रूप्य १ ॥ ९१ ॥

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो
हरिन्माणेः ।

मरकतमणिके नाम ४-गारुत्मत १
मरकत २ अश्मगर्भ ३ हरिन्मणि ४ ॥

शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागो-
पद्मरागमणिके नाम ३-शोणरत्न १

लोहितक २ पद्मराग ३ ॥

'-ऽथ मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥

मुक्ता-

मोतीके नाम २-मौक्तिक १ ॥ ९२ ॥
मुक्ता २ ॥

-ऽथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं
पुंनपुंसकम् ।

मूंगेके नाम २-विद्रुम १ प्रवाल २ ॥

रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्ता-
दिक्रेऽपि च ॥ ९३ ॥

पद्मराग आदि पाषाण जाति और
मुक्ताफल आदिके नाम २-रत्न १
मणि २ ॥ ९३ ॥

स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम
हाटकम् । तपनीयं शातकुम्भं

गागेयं भर्म कर्बुरम् ॥ ९४ ॥

चामीकरं जातरूपं महारजत-
काश्चने । रुक्मं कार्त्तस्वरं जा-

म्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ॥ ९५ ॥

सुवर्णके नाम १९--स्वर्ण १ सुवर्ण २
कनक ३ हिरण्य ४ हेमन् ५ हाटक ६ तप-
नीय ७ शातकुम्भ ८ गांगेय ९ भर्मन् १०
कर्बुर ११ ॥ ९४ ॥ चामीकर १२
जातरूप १३ महारजत १४ कांचन १५
रुक्म १६ कार्तिस्रवर १७ जांबूनद १८
अष्टापद १९ ॥ ९५ ॥

अलंकारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनक-
भित्त्यदः ।

सुवर्णके गहनेका नाम १--शृङ्गीकनक १
दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतामि-
त्यपि ॥ ९६ ॥

चांदीके नाम ५--दुर्वर्ण १ रजत २
रूप्य ३ खर्जूर ४ श्वेत ५ ॥ ९६ ॥

रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रि-
या-

पीतलके नाम २--रीति १ आरकूट २
-मय ताम्रकम् । शुलवं म्ले-
च्छमुखं द्व्यष्टारिष्टो दुम्बराणि
च ॥ ९७ ॥

तांबेके नाम ६--ताम्रक १ शुल्वर
म्लेच्छमुख १ द्व्यष्ट ४ वरिष्ट ५ उदुंबर
॥ ९७ ॥

लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं
पिण्डं कालायसायसी । अश्मसारो-

लोहेके नाम ७--लोह १ शस्त्रक २
तीक्ष्ण ३ पिण्ड ४ कालायस ५ अयस् ६
अश्मसार ७ ॥

-थ मण्डूरं सिंहाणमपि
तन्मले ॥ ९८ ॥

लोहेके मळ अर्थात् मंडूरके नाम २--
मण्डूर १ सिंहाण २ ॥ ९८ ॥

सर्वं च तैजसं लोहं-
चांदी सोना लोहादि सर्व धातुओंका
नाम १--लोह ॥

विकारस्त्वयसः कुशी ।
लोहेके फालका नाम १--कुशी १ ॥

क्षारः काचो-
कांचके नाम २--क्षार १ काच २ ॥
-स्थ चपलो रसः सुतश्च
पारदे ॥ ९९ ॥

पारेके नाम ४--चपल १ रस २
सूत ३ पारद ४ ॥ ९९ ॥

गवलं माहिषं शृंग-
भैसेके सींगका नाम १--गवल १ ॥
-मभ्रकं गिरिजामले ।

अवरखके नाम ३--अभ्रक १ गिरिज २
अमळ ३ ॥

स्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कापो-
ताञ्जनयामुने ॥ १०० ॥

सुर्माके नाम ४--स्रोतोजन १ सौवीर
२ कापोताञ्जन ३ यामुन ४ ॥ १०० ॥

तुत्याञ्जनं शिखिग्रीवं विवुन्न-
कमयूरके ।

तूतिया (नीलाथोया)के नाम ४-
तुत्याञ्जन १ शिखिग्रीव २ विवुन्नक ३
मयूरक ४ ॥

कर्परी दार्विका काथोद्भवं तुत्यं-
तूतियाके भेद ३-कर्परी १ दार्विका
२ तुत्य ३ ॥

-रसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥

रसगर्भं ताक्ष्यशैलं-

रसोतके नाम ३-रसाञ्जन १ ॥ १०१ ॥
रसगर्भ २ ताक्ष्यशैल ३ ॥

गन्धाश्मनि तु गन्धिकः ।

सौगन्धिकश्च-

गन्धकके नाम ३-गन्धाश्मन् १
गन्धिक २ सौगन्धिक ३ ॥

-चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुल-
त्थिका ॥ १०२ ॥

काले सुर्मेके नाम ३-चक्षुष्या १
कुलाली २ कुलत्थिका ३ ॥ १०२ ॥

रीतिमुष्यं पुष्पकेतु पौष्पकं
कुसुमाञ्जनम् ।

पीतलकोतपाके विसनेसे जो अंजन
बने उसके नाम ४-रीतिपुष्प १ पुष्प-
केतु २ पौष्पक ३ कुसुमाञ्जन ४ ॥

पिञ्जरं पीतनं तालमालं च

हरितालके ॥ १०३ ॥

हरितालके नाम ५-पिञ्जर १
पीतन २ ताल ३ आल ४ हरिता-
लक ५ ॥ १०३ ॥

गैरेयमथर्वं गिरिजमश्मनं च
शिलाजतु ।

शिलाजीतके नाम ५-गैरेय १ अथर्व
२ गिरिज ३ अश्मज ४ शिलाजतु ५ ॥

बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः
समाः ॥ १०४ ॥

गन्धरसके नाम ५-बोल १ गन्धरस
२ प्राण ३ पिण्ड ४ गोपरस ५ ॥ १०४ ॥

डिङ्डीरोऽब्धिककः फेनः-
समुन्दरझागके नाम ३-डिंडीर १

अब्धिकक २ फेन ३ ॥

-सिन्दूरं नागमंभवम् ।

सिन्दूरके नाम २-सिन्दूर १ नाग-
सम्भव २ ॥

नागसीसकयोगेष्टवप्राणि-

सीसेके नाम ४-नाग १ सीसक २
योगेष्ट ३ वप ४ ॥

-त्रपु पिच्छम् ॥ १०५ ॥
रङ्गवङ्गे-

राङ्गक नाम ४-त्रपु १ पिच्छ २
॥ १०५ ॥ रङ्ग ३ वङ्ग ४ ॥

-अथ पिचुत्तूलो-

रईके नाम २-पिचु १ तूल २ ॥
 -५थ कमलोत्तरम् । स्यात्कुसु-
 म्भं वह्निशिखं महारजनाभि-
 त्यापि ॥ १०६ ॥

कुसुम्भक नाम ४-कमलोत्तर १ कु-
 सुम्भ २ वह्निशिख ३ महारजन ४ ॥ १०७ ॥

मेषकम्बल ऊर्णायुः-

ऊनी कम्बलके नाम २-मेषकम्बल
 १ ऊर्णायु २ ॥

-शशोर्ण शशलोमनि ।

खरगोसकी ऊनके नाम २-शशोर्ण
 १ शशलोमन् २ ॥

मधु क्षौद्रं माक्षिकादि-

शहदके नाम ३-मधु १ क्षौद्र २
 माक्षिक ३ ॥

मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् ॥ १०७ ॥

मोमके नाम २-मधूच्छिष्ट १ सिक्थ-
 क २ ॥ १०७ ॥

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्रा
 नागजिह्विका । नैपाली कुनटी
 गोला-

मैनशिलके नाम ७-मनःशिला १
 मनोगुप्ता २ मनोह्रा ३ नागजिह्विका
 ४ नैपाली ५ कुनटी ६ गोला ७ ॥

-यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥

पाकयो-

जवाखारके नाम ३-यवक्षार १
 यवाग्रज २ ॥ १०८ ॥ पाक्य ३ ॥

-५थ सर्जिकाक्षारः कापोतः
 सुखवर्चकः । सौवर्चलं स्या-
 द्बुचकं-

सज्जीके नाम ५-सर्जिकाक्षार १ कापो-
 त २ सुखवर्चक ३ सौवर्चल ४ रुचक ५ ॥

-त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥

वंशरोचनके नाम २-त्वक्क्षीरी १
 वंशरोचना २ ॥ १०९ ॥

शिशुजं श्वेतमरिचं-

सफेदमरिचके नाम २-शिशुज १
 श्वेतमरिच २ ॥

-मोरटं मूलमैश्वरम् ।

ईखकी जडका नाम १-मोरट १ ॥

ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटका-

शिर इत्यपि ॥ ११० ॥

पीपलामूलके नाम ३-ग्रन्थिक १

पिप्पलीमूल २-चटकाशिरस् ३ ॥ ११० ॥

गोलोमी भूतकेशो ना-

जटामांसीके नाम २-गोलोमी १

भूतकेश २ ॥

-पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।

पतंगके नाम २-पत्राङ्ग १

रक्तचन्दन २ ॥

त्रिकटु त्र्यृषणं व्योषं-

सोंठ पीपल मिर्च इन तीनोंके समूहके
नाम ३-त्रिकटु १ व्यूषण २ व्योष ३ ॥

—त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥ १११ ॥

आंवला हरड बहेडा इन तीनोंके
समूहके नाम २-त्रिफला १ फलत्रिक
२ ॥ १११ ॥

इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

अथ शूद्रवर्गः १०.

शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च
जघन्यजाः ।

शूद्रके नाम ४-शूद्र १ अवरवर्ण २
वृषल ३ जघन्यज ४ ॥

आचण्डालात्तु सङ्कीर्णा अम्ब-
करणादयः ॥ १ ॥

(ब्राह्मणीमें शूद्रसे उत्पन्न हो उसका
नाम चण्डाल) चण्डालसे ले अम्बष्ठ
करण आदिकोंका नाम १-सङ्कीर्ण १ ॥

शूद्राविशोस्तु करणो-

शूद्रामें वैश्यसे उत्पन्न हुएका नाम
१-करण १ ॥

—अम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनोः ।

वननीमें ब्राह्मणसे उत्पन्न हो
उसका नाम १-अम्बष्ठ १ ॥

शूद्राक्षत्रिययोरुग्रो-

शूद्रामें क्षत्रियसे उत्पन्न हुएका
नाम १-उग्र १ ॥

—मागधः क्षत्रियाविशोः ॥ २ ॥

क्षत्रियाणीमें वैश्यसे उत्पन्न हुएका

नाम १-मागध १ ॥ २ ॥

माहिष्योर्याक्षत्रिययोः-

वननामें क्षत्रियसे उत्पन्न हुएका

नाम १-माहिष्य १ ॥

—क्षत्ताऽर्याशूद्रयोः सुतः ।

वनैनीमें शूद्रसे उत्पन्न हुएका नाम

१-क्षत्तृ १ ॥

ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूत-

ब्राह्मणीमें क्षत्रियसे उत्पन्न हुएका

नाम १-सूत १ ॥

स्तस्यां वैदेहको विशः ॥ ३ ॥

ब्राह्मणीमें वैश्यसे उत्पन्न हुएका

नाम १-वैदेहक १ ॥ ३ ॥

रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां

यस्य संभवः ।

करणमें माहिष्यसे उत्पन्न हुएका

नाम १-रथकार १ ॥

स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्म-

ण्यां वृषलेन यः ॥ ४ ॥

ब्राह्मणीमें शूद्रसे उत्पन्न हुएका

नाम १-चण्डाल १ ॥ ४ ॥

कारुः शिल्पी-

कारीगरोंके नाम २-कारु १

शिल्पिन् २ ॥

संहतैस्तैर्द्वयोः श्रेणिः सजा-
तिभिः ।

कारीगरोंके समूहका नाम १-श्रेणि १ ॥

कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी-

कारीगरोंके अफसर अर्थात् मिस्त्रीके नाम २-कुलक १ कुलश्रेष्ठी २ ॥

-मालाकारस्तु मालिकः ॥ ५ ॥

मालीके नाम २-मालाकार १
मालिक २ ॥ ५ ॥

कुम्भकारः कुलालः स्यात्

कुम्भारके नाम २-कुम्भकार १
कुलाल २ ॥

-पलगण्डस्तु लेपकः ।

कमंगरके नाम २-पलगण्ड १
लेपक २ ॥

तन्तुवायः कुविन्दः स्यात्

जुलाहेके नाम २-तन्तुवाय १
कुविन्द २ ॥

तुन्नवायस्तु सौचिकः ॥ ६ ॥

दरजीके नाम २-तुन्नवाय १
सौचिक २ ६ ॥

रंगाजीवश्चित्रकरः-

चित्रकारके नाम २-रङ्गाजीव १
चित्रकर २ ॥

-शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ॥

शिकिलीगरके नाम २-शस्त्रमार्ज
असिधावक २ ॥

पादूकुचर्मकारः स्या-

चमारके नाम २-पादूकुत् १ चर्मकार २ ॥

-द्वयोकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥

लोहारके नाम २-व्योकार १
लोहकारक २ ॥ ७ ॥

नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो

रुक्मकारकः ।

सुनारके नाम ४-नाडिन्धम १
स्वर्णकार ३ कलाद ३ रुक्मकारक ४ ॥

स्याच्छाङ्खिकः काम्बविकः-

मनिहारके नाम २-शाङ्खिक १
काम्बविक २ ॥

-शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८ ॥

ठठेके नाम २-शौल्विक १
ताम्रकुट्टक २ ॥ ८ ॥

तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथका-
रस्तु काष्ठतक्षः ।

बढईके नाम ५-तक्षन् १ वर्धकि
२ त्वष्ट ३ रथकार ४ काष्ठतक्ष ५ ॥

ग्रामाधिना ग्रामतक्षः-

गांवके बढईके नाम २-ग्रामा-
धीन २ ग्रामतक्ष २ ॥

-कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ९ ॥

स्वतन्त्र बढईका नाम १-कौटतक्ष
१ ॥ ९ ॥

क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्विनापि-

तान्तावसायिनः ।

नाईके नाम ५-क्षुरिन् १ मुंडिन् २
दिवाकीर्ति ४ नापित ४ अन्तावसायिन् ५।

निर्णेजकः स्याद्रजकः-

धोबीके नाम २-निर्णेजक १
रजक २ ॥

-शौण्डिको मण्डहारकः ॥ १० ॥

कलालके नाम २-शौण्डिक १
मण्डहारक २ ॥ १० ॥

जाबालः स्यादजाजीवो-

गढरियेके नाम २-जाबाल १
अजाजीव २ ॥

-देवाजीवस्तु देवलः ।

पण्डाके नाम २-देवाजीव १
देवल २ ॥

स्यान्माया शाम्बरी-

इन्द्रजालके नाम २-माया १
शाम्बरी २ ॥

-मायाकारस्तु प्रतिहारकः ॥ ११ ॥

इन्द्रजाली अर्थात् बाजीगरके नाम २
मायाकार १ प्रतिहारक २ ॥ ११ ॥

शैलालिनस्तु शैलूषा जाया-
जीवा कृशाश्विनः । भरता इत्यपि
नटा-

नटके नाम ६-शैलालिन् १ शै-
लूष २ जायाजीव ३ कृशाश्विन् ४
भरत ५ नट ६ ॥

-श्चारणास्तु कुशीलवाः ॥ १२ ॥

कथकके नाम २-चारण १ कुशी-
लव २ ॥ १२ ॥

मार्दगिका मौजिकाः ।

मृदंगके बजानेवालेके नाम २-
मार्दगिक १ मौरजिक २ ॥

-पाणिवादास्तु पाणिवाः ।

ताली बजानेवालेके नाम २-
पाणिवाद १ पाणिघ २ ॥

वेणुध्माः स्युर्वेणाविका-

वांसुरी बजानेवालेके नाम २-
वेणुध्म १-वैणविक २ ॥

-वीणावादस्तु वैणिकाः ॥ १३ ॥

वीणा बजानेवालेके नाम २-वीणा-
वाद १ वैणिक २ ॥ १३ ॥

जीवान्तकः शाकुनिको-

चिडीमारके नाम २-जीवान्तक
१ शाकुनिक २ ॥

-द्वौ वागुरिकजालिकौ ।

व्याधके नाम २-वागुरिक १
जालिक २ ॥

वैतंसिकः कौटिकश्च मांसि-

कश्च समं त्रयम् ॥ १४ ॥

कसाईके नाम ३-वैतंसिक १

कौटिक २ मांसिक ३ ॥ १४ ॥

भृतको भृतिभुक्कर्मकरो वैत-

निकोऽपि सः ।

मजूरके नाम ४—भृतक १ भृतिमु-
ज्जू २ कर्मकर ३ वैतनिक ३ ॥

वार्तावहो वैवधिको—

दूतके नाम २—वार्तावह १ वैव-
धिक २ ॥

—भारवाहस्तु भारिकः ॥ १५ ॥

बोझा उठानेवालेके नाम २—
भारवाह १ भारिक २ ॥ १५ ॥

विवर्णः पामरो नीचः प्राकृ-
तस्तु पृथग्जनः । निहीनोऽ-
पसदो जाल्मः । क्षुल्लकश्चतर-
श्च सः ॥ १६ ॥

नीचके नाम १०—विवर्ण १ पामर २
नीच ३ प्राकृत ४ पृथग्जन ५ नि-
हीन ६ अपसद ७ जाल्म ८ क्षुल्लक ९
इतर १० ॥ १६ ॥

भृत्ये दासेरदासेयंदासगो-
प्यकचेटकाः । नियोज्यकिंकर-
प्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ १७ ॥

दास वा टहलुवेकेनाम ११—भृत्य १
दासेर २ दासेय ३ दास ४ गोप्यक ५
चेटक ६ नियोज्य ७ किंकर ८ प्रैष्य ९
भुजिष्य १० परिचारक ११ ॥ १७ ॥

पराचितपरिस्कंदपरजातपरै-
धिताः ।

जो दूसरेसे पाला जाय उसके अर्थात्
रहुआके नाम ४—पराचित १ परिस्कन्द
२ परजात ३ परधित ४ ॥

—मंदस्तुंदपरिमृज आलस्यः
शीतकोऽलसोऽनुष्णः ॥ १८ ॥

आलसीके नाम ६—मंद १ तुन्दप-
रिमृज २ आलस्य ३ शीतक ४ अलस ५
अनुष्ण ६ ॥ १८ ॥

दक्षे तु चतुरपशेलपटवः सू-
त्यान उष्णश्च ।

चतुरके नाम ६—दक्ष १ चतुर २
पेशल ३ पटु ४ सूत्यान ५ उष्ण ६ ॥

चण्डालप्लवमातंगदिवाकीर्ति-
जनंगमाः ॥ १९ ॥ निषादश्चप-
चावंतेवासिचांडालपुकसाः ।

चाण्डालके नाम १०—चण्डाल १
प्लव २ मातङ्ग ३ दिवाकीर्ति ४ जनंगम
५ ॥ १९ ॥ निषाद ६ चपच ७ अन्ते-
वासिन ८ चाण्डाल ९ पुकस १० ॥

भदाः किरातशबरपुलिंदा म्ले-
च्छजातयः ॥ २० ॥

म्लेच्छजातिके भेद जंगली गोमांस
खानेवाले हेबूढेआदिके नाम ३—किरात
१ शबर २ पुलिन्द ३ ॥ २० ॥

व्याधो मृगवधाजीवो मृग-
युर्लब्धकोऽपि सः ।

मृग पकडनेवालेके नाम ४—व्याध १
मृगवधाजीव २ मृगयु ३ लुब्धक ४॥

कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरो
मृगदंशकः ॥ २१ ॥ शुनको
भषकः श्वा स्या—

कुत्तेके नाम ७—कौलेयक १
सारमेय २ कुक्कुर ३ मृगदंशक ४॥ २१ ॥
शुनक ५ भषक ६ श्वन् ७ ॥

दलर्कस्तु स योगितः ।

प्रयोगसे उन्मत्त हुए कुत्तेका नाम
१—अलर्क १ ॥

श्वा विश्वकटुर्मृगयाकुशलः—
शिकारी कुत्तेका नाम १—विश्व-
कटु १ ॥

—सरमा शुनी ॥ २२ ॥

कुत्तियाके नाम २—सरमा १ शुनी
२ ॥ २२ ॥

विट्चरः सूकरो ग्राम्यो—

गांवके सूकरका नाम १—विट्चर १ ॥

—वर्करस्तरुणः पशुः ।

तरुणपशुका नाम १—वर्कर १ ॥

आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो
मृगया स्त्रियाम् ॥ २३ ॥

शिकारके नाम ४—आच्छोदन १
मृगव्य २ आखेट ३ मृगया ४ ॥ २३ ॥

दक्षिणारुर्लब्धयोगादक्षिणेर्मा
कुरङ्गकः ।

व्याधने जिस मृगके दहिने अंगमें
मारा हो उसका नाम १—दक्षिणेर्मन् १ ॥

चौरिकागारिकस्तेनदस्युतस्करमो-
षकाः ॥ २४ ॥ प्रतिरोधिपरास्क-
न्दिपाटच्चरमालिम्बुचाः ।

चोरके नाम १०—चोर १ ऐका-
गारिक २ स्तेन ३ दस्यु ४ तस्कर ५
मोषक ६ ॥ २४ ॥ प्रतिरोधिन् ७ परा
स्कन्दिन् ८ पाटच्चर ९ मलिम्बुच १० ॥

चौरिका स्तैन्यचौर्ये च स्तेयं—
चोरीके नाम ४—चौरिका १
स्तैन्य २ चौर्य ३ स्तेय ४ ॥

लोप्त्रं तु तद्धने ॥ २५ ॥

चोरीके मालका नाम १—लोप्त्रा १ २ ५ ॥

वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृग-
पक्षिणाम् ।

पक्षी वा मृगोंके पकडनेकी सामग्री
अर्थात् जालादिका नाम १—वीतंस १ ॥

उन्माथः कूट्यन्त्रं स्या—

काचकपींजरे आदिके नाम २—
उन्माथ १ कूट्यन्त्र २ ॥

—द्वागुरा मृगबन्धनी ॥ २६ ॥

जालके नाम २—वागुरा १
मृगबन्धनी २ ॥ २६ ॥

शुल्वं वराटकं स्त्री तु रज्जु-
स्त्रिषु वटी गुणः ।

रस्तीके नाम ५-शुल्व १ वरा
टक २ रज्जु ३ वटी ४ गुण ५ ॥

उद्धाटनं घटीयन्त्रं सलिलो-
द्वाहनं प्रहेः ॥ २७ ॥

अरहटके नाम २-उद्धाटन १
घटीयन्त्र २ ॥ २७ ॥

पुंसि वेमा वायदण्डः-

जुलाहेके कपडा बुननेके औजारके
नाम २-वेमन् १ वायदण्ड २ ॥

-सूत्राणि नरि तन्तवः ।

सूतके नाम २-सूत्र १ तन्तु २ ॥

वाणिर्व्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये-

कपडे आदिके बुननेके नाम २-
वाणि १ व्यूति २ ॥

-पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ॥ २८ ॥

मिट्टी आदिसे लीपने पोतनेका
नाम १-पुस्त १ ॥ २८ ॥

पाञ्चालिका पुत्रिका स्याद्व-
खदन्तादिभिः कृता ।

गुडियाँ अर्थात् वल्लकी बनाई
हुई पुत्रालीके नाम २-पाञ्चालिका
१ पुत्रिका २ ॥

जातुषु विकारे तु जातुषं
त्रापुषं त्रिषु ।

लाखके विकारका नाम १-जातुष १
बंगके विकारका नाम १-त्रापुष १ ॥

पिटकः पेटकः पेटा मञ्जूषा-

पिटारेके नाम ४-पिटक १

पेटक २ पेटा ३ मञ्जूषा ४ ॥

-ऽथ विहङ्गिका ॥ २९ ॥

-भारयष्टि-

बहंगी (खूँटी) के नाम २ ॥ विहं-
गिका १ ॥ २९ ॥ भारयष्टि २ ॥

-स्तदालम्बि शिष्यं काचो-

बहंगीके छीकेके नाम २-शिष्य
१ काच २ ॥

-ऽथ पादुका । पादूरूपानखी-

जुतेके नाम ३-पादुका १ पादूर
उपानत् ३ ॥

-सैवानुपदीना पदायता ॥ ३० ॥

मोजेका नाम १-अनुपदीना
१ ॥ ३० ॥

नघ्री वघ्री वरत्रा स्या-

चमडेकी रस्तीके नाम ३-नघ्री १
वघ्री २ वरत्रा ३ ॥

-दश्वादेस्ताडनी कशा ।

कोडेका नाम १-कशा १ ॥

चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा

चण्डालवल्लकी ॥ ३१ ॥

किंगरीबाजोंके नाम ३-चाण्डा-

लिङ्गा १ कण्डोलवीणा २ चण्डाल-
वल्लकी ३ ॥ ३१ ॥

नाराची स्यादेपणिका—
 कांटा अर्थात् सोना आदि तोलनेकी
 तराजूके नाम २—नाराची १ एपणिका २ ॥
 —शाणस्तु निकषः कषः ।
 कसोटीके नाम ३—शाण १
 निकष २ कष ३ ॥
 ब्रश्चना पत्रपरशु—
 रतीके नाम २—ब्रश्चना १ पत्रपरशु २ ॥
 —रीषिका तूलिका समे ॥ ३२ ॥
 सलाईके नाम २—ईषिका १
 तूलिका २ ॥ ३२ ॥
 तैजसा वर्तनी मूषा—
 सुवर्ण इत्यादि धातु गलानेकी घरियाके
 नाम ३—तैजसा १ वर्तनी २ मूषा ३ ॥
 —भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।
 झुकनीके नाम २—भस्त्रा १ चर्म-
 प्रसेविका २ ॥
 आस्फोटनी वेधनिका—
 बमके नाम २—आस्फोटनी १
 वेधनिका २ ॥
 —कृपाणी कर्तरी समे ॥ ३३ ॥
 एक प्रकारकी कैंचीके नाम २—
 कृपाणी १ कर्तरी २ ॥ ३३ ॥
 वृक्षादनी वृक्षभेदी—
 वसूले आदिके नाम २—वृक्षादनी
 १ वृक्षभेदी २ ॥
 —टंकः पाषाणदारणः ।

टांकी अर्थात् पत्थर फोडनेके हथि-
 यारके नाम २—टङ्क १ पाषाणदारण २ ॥
 क्रकचोऽस्त्री करपत्र—
 आरेके नाम २—क्रकच १ करपत्र २ ॥
 —मारा चर्मप्रभेदिका ॥ ३४ ॥
 आरीके नाम २—आरा १ चर्मप्र-
 भेदिका २ ॥ ३४ ॥
 सूर्मि स्थूणाऽयःप्रतिमा—
 लोहेकी मूर्तिके नाम ३—सूर्मी १
 स्थूणा २ अयःप्रतिमा ३ ॥
 —शिल्पं कर्म कलादिकम् ।
 कारीगरीका नाम १—शिल्प १ ॥
 प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रति-
 माप्रतियातना प्रतिच्छाया ॥ ३५ ॥
 प्रतिकृतिरर्चा पुंलि प्रतिनिधि—
 प्रतिमा अर्थात् तसवीरके नाम ८—
 प्रतिमान १ प्रतिबिम्ब २ प्रतिमा ३
 प्रतियातना ४ प्रतिच्छाया ५ ॥ ३५ ॥
 प्रतिकृति ६ अर्चा ७ प्रतिनिधि ८ ॥
 —रूपमोपमानं स्यात् ।
 मिसाल और जिसकी मिसाल दी
 जाय उसके नाम २—उपमा १ उपमान २
 वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः स-
 दृक्षः सदृशः सदृक् ॥ ३६ ॥ साधा-
 रणः समानश्च—
 बराबरके नाम ७—सम १ तुल्य २

सदृश ३ सदृश ४ सदृश ५ ॥ ३६ ॥

साधारण ६ समान ७ ॥

—स्युरुत्तरपदे त्वमी । निभ-
संकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः
॥ ३७ ॥

समानके नाम ५--निभ १ संकाश २
नीकाश ३ प्रतीकाश ४ उपमा ५ ॥ ३७ ॥

कर्मण्या तु विधा भृत्या भृतयो
भर्म वेतनम् । भरण्यं भरण मूल्यं
निर्वेशः पण इत्यपि ॥ ३८ ॥

मजूरीके नाम ११--कर्मण्या १
विधा २ भृत्या ३ भृति ४ भर्मन् वेतन
६ भरण्य ७ भरण ८ मूल्य ९ निर्वेश
१० पण ११ ॥ ३८ ॥

सुरा हलिप्रिया हाला परिस्तु-
द्रुणात्मजा । गन्धोत्तमाप्रसन्ने-
राकादम्बर्यः परिस्तुता ॥ ३९ ॥

मदिरा कश्यमद्ये चा-

मदिरा अर्थात् शराबके नाम १३--
सुरा १ हलिप्रिया २ हाला ३ परिस्तु ४
वरुणात्मजा ५ गन्धोत्तमादि प्रसन्ना ७
इरा ८ कादम्बरी ९ परिस्तुता १० ॥ ३९ ॥
मदिरा ११ कश्य १२ मद्य १३ ॥

—प्यवदंशस्तु भक्षणम् ।

मद्यपानकी रुचि उत्पन्न करनेके
लिये भुंजा चना इत्यादि खानेका नाम
१-अवदंश १ ॥

शुण्डापानं मदस्थानं-

मदिरा पीनेके स्थानके नाम २-

शुण्डापान १ मदस्थान २ ॥

—मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ४० ॥

मदिरा पीनेके समयके नाम २-मधु-
वार १ मधुक्रम २ ॥ ४० ॥

मध्वासवो माधवको मधु-
माध्वीकमदयोः ।

महुवासे उत्पन्न मदिराके नाम ४-
मध्वासव १ माधवक २ मधु ३ माध्वीक ४ ॥

मैरेयमासवः सीधु-
गुडसीराकी मदिराके नाम ३-
मैरेय १ आसव २ सीधु ३ ॥

—मैदको जगलः समौ ॥ ४१ ॥
मदिराके फोकसके नाम २-मैदक १
जगल २ ॥ ४१ ॥

संधानं म्यादभिषवः-
मदिरा करनेके नाम २-संधान १
अभिषव २ ॥

—किण्वं पुंसि तु नग्रहः ।
तंडुलादि द्रव्यसे बने हुए मद्यके
नाम २-किण्व १ नग्रह २ ॥

कारोत्तरः सुरामण्ड-
मदिराके मण्डके नाम २-कारोत्तर
१ सुरामण्ड २ ॥

आपानं पानगोष्ठिका ॥ ४२ ॥
दारुपीनेकी सभाके नाम २-आपान
१ पानगोष्ठिका २ ॥ ४२ ॥

चषकोऽस्त्री पानपात्रं—
दारु पीनेके वर्त्तन (प्याले) के नाम
२—चषक १ पानपात्र २ ॥
—सरकोऽत्यनुतर्षणम् ।

मदिरा पीनेके नाम २—सरक १
अनुतर्षण २ ॥

धूर्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्तो
धूतकृत्समाः ॥ ४३ ॥

जुआरीके नाम ५—धूर्त १ अक्ष-
देविन् २ कितव ३ अक्षधूर्त ४ धूतकृत् ५

स्थुलग्नकाः प्रतिभुवः—

जामिनके नाम २—लग्नक १ प्रतिभू २ ॥

—सभिका धूतकारकाः ।

जुआ खिलानेवालेके नाम २—सभिक
१ धूतकारक २ ॥

धूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण
इत्यपि ॥ ४४ ॥

जूएके नाम ४—धूत १ अक्षवती
२ कैतव ३ पण ४ ॥ ४४ ॥

पणोऽक्षेषु ग्लहो—

बाजी लगानेके नाम २—पण १ ग्लह २ ॥

—ऽक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ।

पासेके नाम ३—अक्ष १ देवन २
पाशक ३ ॥

परिणयस्तु शारीणां समन्ता-
न्नयनेऽस्त्रियाम् ॥ ४५ ॥

सारक इधर उधर फेरनेवालेका नाम

१—परिणय १ ॥ ४५ ॥

अष्टापदं शारिफलं—

विसायती (चौपड) के नाम २—

अष्टापद १ शारिफल २ ॥

—प्राणिधूतं समाह्वयः ।

सुरगा आदि जीवोंकी लड़ाईरूप

धूतके नाम २—प्राणिधूत १ समाह्वय २ ॥

उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मि-

न्नेव यौगिकाः ॥ ४६ ॥ ताद-

र्थादन्यतो वृत्तावृत्त्या लिङ्गा-

न्तरेऽपि ते ।

इस वर्गमें जो यौगिक मालाकार

मार्दंगिक वैणविक आदि शब्द काव्या-

दिकोंके अधिक प्रयोगके अनुसार केवल

पुँल्लिगमें ही कहे हैं वह शब्द व्याकरणके

नियमानुसार स्त्रीलिंग नपुंसकलिंगमें भी

होते हैं जैसे मालाकारकी स्त्री माला-

कारी और मालाकारका कुल मालाकार

इसी प्रकार सर्वत्र जानना ॥ ४६ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानु-

शासने । भूम्यादिकाण्डो द्वितीयः

सांग एव समर्थितः ॥ ४७ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचितामर-

कोशे ज्वालाप्रसादकृतभाषा-

टीकायां द्वितीयः काण्डः

समाप्तः ॥ २ ॥

इति द्वितीयः काण्डः ॥ २ ॥

॥ श्रीः ॥

अथ तृतीय काण्डः ३.

अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः १.

विशेष्यविघ्नैः संकीर्णाना-
थैरव्ययैरपि । लिंगादिसंग्र-
हैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः ॥ १ ॥

इस सामान्य तृतीयकाण्डमें स्वर्गा-
दि वर्गोंके आश्रित शब्द विशेष्यनिघ्न-
वर्ग संकीर्णवर्ग नानार्थवर्ग अव्ययवर्ग
और लिंगादिसंग्रहवर्गके द्वारा कहेंगे १
स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः
प्रस्तुतं पदैः । गुणद्रव्यक्रियाश-
ब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः ॥ २ ॥

स्त्री दार आदि विशेष्यभूत पदों-
में जो लिङ्ग और संख्या हो वही लिंग
और संख्या गुण और द्रव्य तथा क्रिया-
वाचकशब्दोंमें होनेसे दार स्त्री आदि
शब्दोंके गुण द्रव्य क्रियावाचक शब्द
विशेषण हो सकते हैं जैसे 'सुकृतिनी
स्त्री, सुकृतिनी दाराः, सुकृति कलत्रम् ।
दण्डिनी स्त्री, दण्डिनो दाराः, दण्डि
कलत्रम्। पाचिका स्त्री, पाचका दाराः,
पाचकं कलत्रम् ॥ २ ॥

सुकृती पुण्यवान् धन्यो-

भाग्यवान् पुरुषके नाम ३-
सुकृतिन् १ पुण्यवत् २ धन्य ३ ॥
—महेच्छस्तु महाशयः ।
उदारचित्त पुरुषके नाम २—महेच्छ
१ महाशय २ ॥

हृदयालुः सुहृदयो-

शुद्धचित्त पुरुषके नाम २—हृदयालु
१ सुहृदय २ ॥
—महोत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥
बहुत उद्यम करनेवाले पुरुषके नाम
२—महोत्साह १ महोद्यम २ ॥ ३ ॥

प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णात-
शिक्षिताः । वैज्ञानिकः कृतमुखः
कृती कुशल इत्यपि ॥ ४ ॥

चतुर पुरुषके नाम १०—प्रवीण १
निपुण २ अभिज्ञ ३ विज्ञ ४ निष्णात ५
शिक्षित ६ वैज्ञानिक ७ कृतमुख ८
कृतिन् ९ कुशल १० ॥ ४ ॥

पूज्यः प्रतीक्ष्यः-

मान्य पुरुषके नाम २—पूज्य १
प्रतीक्ष्य २ ॥

—सांशयिकः संशयापन्नमानसः ।

संशय करानेवाली वस्तुके नाम २—
सांशयिक १ संशयापन्नमानस २ ॥

दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षि-
ण्य इत्यपि ॥ ५ ॥

दक्षिणाके योग्य पुरुषके नाम—३द-
क्षिणीय १ दक्षिणार्ह २ दक्षिण्य ३ ॥ ५ ॥

स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा
बहुप्रदे ।

अतिदानी पुरुषके नाम ४—वदान्य
१ स्थूललक्ष्य २ दानशौण्ड ३ बहुप्रद ४ ॥

जैवातृकः स्यादायुष्मा—
दीर्घायु पुरुषके नाम २—जैवातृक

१ आयुष्मत् १ ॥

—नन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥ ६ ॥

शास्त्रीके नाम २—अन्तर्वाणि १
शास्त्रविद् २ ॥ ६ ॥

परीक्षकः कारणिको—

परीक्षकके नाम २—परीक्षक १ कारणिक २

—वरदस्तु समर्थकः ।

वरदान देनेवालेके नाम २—वरद १
समर्थक २ ॥

हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना
दृष्टमानसः ॥ ७ ॥

प्रसन्नके नाम ४—हर्षमाण १ विकुर्वा-
ण—२ प्रमनसू ३ दृष्टमानस ४ ॥ ७ ॥

दुर्मना विमना अन्तर्मनाः—

उदास पुरुषके नाम ३—दुर्मनसू १

विमनसू २ अन्तर्मनसू ३ ॥

—स्यादुत्क उन्मनाः ।

उत्कण्ठायुक्त पुरुषके नाम २—

उत्क १ उन्मनसू २ ॥

दक्षिणे सरलोदारौ—

सीधे पुरुषके नाम ३—दक्षिण १

सरल २ उदार ३ ॥

—सुकलो दातृभोक्तारि ॥ ८ ॥

दानी और भोगी पुरुषका नाम १—

सुकल १ ॥ ८ ॥

तत्परे प्रसितासक्ता—

कार्यविशेषमें चित्त लगानेवाले पुरुष-

के नाम ३—तत्पर १ प्रसित २ आसक्त ३ ॥

—विष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः ।

अभीष्टवस्तुके प्राप्त करनेमें तत्पर

पुरुषके नाम २—इष्टार्थोद्युक्त १ उत्सुक २ ।

प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञा-

तविश्रुताः ॥ ९ ॥

प्रसिद्ध पुरुषके नाम ६—प्रतीत १

प्रथित २ ख्यात ३ वित्त ४ विज्ञात ५

विश्रुत ६ ॥ ९ ॥

गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहि-

तलक्षणौ ।

गुणोंसे प्रसिद्ध पुरुषके नाम २—कृत-

लक्षण १ आहितलक्षण २ ॥

इभ्य आढ्यो धनी-

धनी पुरुषके नाम ३-इभ्य १
आढ्य २ धनिन् ३ ॥

-स्वामी त्वीश्वरः पातिरीशिता
॥१०॥ अधिभूर्नायको नेता प्रभुः
परिवृढोऽधिपः ।

स्वामीके नाम १०-स्वामिन् १
ईश्वर २ पति ३ ईशितृ ४ ॥ १० ॥
अभिभूः नायक इनेतृ ६ प्रभु ८ परि-
वृढ ९ अधिप १० ॥

अधिकर्द्धिः समृद्धः स्यात्-
सम्पत्तिमान् पुरुषके नाम २-
अधिकर्धि १ समृद्ध २ ॥

-कुटुम्बव्यापृतस्तु यः ॥११॥
स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च
पुमानयम् ।

कुटुम्बके पालनकरनेमें तत्परपुरुषके
नाम ३-कुटुम्बव्यापृत १ ॥ ११ ॥
अभ्यागारिक २ उपाधि ३ ॥

वराङ्गरूपोपेतो यः सिंहसं-
हननो हि सः ॥ १२ ॥

अंग और रूपसे अतिश्रेष्ठ पुरुषका
नाम १-सिंहसंहनन १ ॥ १२ ॥

निर्वार्यः कार्यकर्ता यः स-
म्पन्नः सत्त्वसम्पदा ।

जो दुःखमें भी प्रसन्नताके साथ कार्य
किया करता है उस पुरुषका नाम १-
निर्वार्य १ ॥

अवाचि मूको-
गूंगे पुरुषके नाम २-अवाच १ मूक १ ॥
-ऽथ मनोजवसः पितृस-
न्निभः ॥ १३ ॥

जो पुरुष पिताके समान माना जाय
उस पुरुषके नाम २-मनोजवस १ पितृ-
सन्निभ २ ॥ १३ ॥

सत्कृत्यालंकृतां कन्यां यो
ददाति स कूकुदः ।

जो बरको आदरपूर्वक वस्त्रभूषण
सहित कन्यादान दे उस पुरुषका नाम
१-कूकुद १ ॥

लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणः श्रीलः
श्रीमान्-

शोभावान्के नाम ४-लक्ष्मीवत् १
लक्ष्मण २ श्रील ३ श्रीमत् ४ ॥

-स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १४ ॥
स्नेही पुरुषके नाम २-स्निग्ध १
वत्सल २ ॥ १४ ॥

स्यादयालुः कारुणिकः कृ-
पालुः सूरतः समाः ।

दयावान् पुरुषके नाम ४-दयालु १
कारुणिक २ कृपालु ३ सूरत ४ ॥

स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्व-
च्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥

स्वतन्त्र पुरुषके नाम ५—स्वतन्त्र १
अपावृत २ स्वैरिन् ३ स्वच्छन्द ४
निरवग्रह ५ ॥ १५ ॥

परतन्त्रः पराधीनः परवान्ना-
थवानपि ।

पराधीन पुरुषके नाम ४—परतन्त्र १
पराधीन २ परवत् ३ नाथवत् ४ ॥

अधीनो निम्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो
गृह्यकोऽप्यसौ ॥ १६ ॥

अधीनके नाम ५—अधीन १ निम्न २
आयत्त ३ अस्वच्छन्द ४ गृह्यक ५ ॥ १६ ॥

खलपूः स्याद्बहुकरो-
वुहारने झारनेवाले मनुष्यके नाम
२—खलपू १ बहुकर २ ॥

दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ।
दीर्घसूत्र (थोड़ी देरके कामको
बहुत देरमें करनेवालों) के नाम २—
दीर्घसूत्र १ चिरक्रिय २ ॥

जालमोऽसमीक्ष्यकारी स्यात्-
बिना विचारे कार्यकरनेवाले पुरुषके
नाम २—जालम १ असमीक्ष्यकारिन् २ ॥

कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ॥ १७ ॥
आलसी वा मूढ पुरुषका नाम १—
कुण्ठ १ ॥ १७ ॥

कर्मक्षमोऽलंकर्मीणः—

कार्य करनेमें समर्थ पुरुषके नाम
२—कर्मक्षम १ अलंकर्मीण २ ॥

—क्रियावान्कर्मसूद्यतः ।
कार्य करनेमें तत्पर पुरुषका नाम
१—क्रियावत् १ ॥

स कर्मः कर्मशीलो यः—
जो नित्यकाममें लगा रहै उस पुरु-
षके नाम २—कर्म १ कर्मशील २ ॥

—कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥
प्रयत्नपूर्वक जो कार्यको समाप्त
करै उस पुरुषके नाम २—कर्मशूर १
कर्मठ २ ॥ १८ ॥

भरण्यभुक्कर्मकरः—
मजदूरके नाम २—भरण्यभुज् १
कर्मकर २ ॥

—कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।
बिना मजूरीके भी जो कार्य करदेय
उस पुरुषका नाम १—कर्मकार १ ॥

अपस्नातो मृतस्नात-
किसीके मरनेके अनन्तर स्नानकिये
हुए पुरुषके नाम २—अपस्नात १
मृतस्नात २ ॥

आमिषाशी तु शौष्कुलः ॥ १९ ॥
मांस खानेवाले पुरुषके नाम २—
आमिषाशिन् १ शौष्कुल २ ॥ १९ ॥

बुभुक्षितः स्यात्बुधितो जिघ-
त्सुरशनायितः ।

भूखे पुरुषके नाम ४-बुभुक्षित १
बुधित २ जिघत्सु २ अशनायित ४ ॥

परान्नः परपिण्डादो-

जो पराये ही अन्नसे जीता हो उस
पुरुषके नाम २-परान्न १ परपि-
ण्डाद २ ॥

-भक्षको घस्मरोऽन्नरः ॥ २० ॥

खानवालेके नाम ३-भक्षक १ घस्मर
२ अन्नर ३ ॥ २० ॥

आद्यूनः स्यादौदरिको वि-
जिगीषाविवर्जितः ।

अत्यन्त ही भूखे पुरुषके नाम २-
आद्यून १ औदरिक २ ॥

उभौ त्वात्मभरिः कुक्षिभरिः
स्वोदरपूरके ॥ २१ ॥

पेटको ही भरनेवाले पुरुषके नाम
२-आत्मभरि १ कुक्षिभरि २ ॥ २१ ॥

सर्वान्नीनस्तु सर्वान्नभोजी-

जो सब वर्णोंका अन्न भोजन कर
लेता हो उस पुरुषके नाम २-सर्वान्नीन
१ सर्वान्नभोजिन् २ ॥

-गृध्रस्तु गर्धनः ।

लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक-

लोभी पुरुषके नाम ५-गृध्र १
गर्धन २ लुब्ध ३ अभिलाषुक ४ तृष्णजू ५ ॥

-समौ लोलुपलोलुभौ ॥ २२ ॥

अतिलोभीके नाम २-लोलुप १
लोलुभ २ ॥ २२ ॥

सोन्मादस्तून्मादिष्णुः स्या-

उन्मत्त पुरुषके नाम २-सोन्माद १
उन्मदिष्णु २ ॥

-दविनीतः समुद्धतः ।

अन्यायी पुरुषके नाम २-अविनी-
त १ समुद्धत २ ॥

मत्ते शौण्डोत्कटक्षीवाः-

मत्तवालेके नाम ४-मत्त १ शौण्ड
२ उत्कट ३ क्षीव ४ ॥

-कामुके कमिताऽनुकः ॥ २३ ॥

कम्पः कामयिताऽभीकः कमनः
कामनोऽभिकः ।

कामीके नाम २-कामुक १ कमितृ २
अनुक ३ ॥ २३ ॥ कम्प ४ कामयितृ ५

अभीक ६ कमन ७ कामन ८ अभिक ९ ॥

विधेयो विनयग्राही वचने-
स्थित आश्रयः ॥ २४ ॥

वचन ग्रहण करनेवाले पुरुषके नाम
४-विधेय १ विनयग्राहिन् २ वचने-
स्थित ३ आश्रय ४ ॥ २४ ॥

वश्यः प्रणयो-

वशीभूतके नाम २-वश्य १ प्रणय २
-निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः ।

नम्र पुरुषके नाम ३-निभृत १
विनीत २ प्रश्रित ३ ॥

धृष्टे धृष्णग्वियातश्च-

धीठ पुरुषके नाम ३-धृष्ट १
धृष्णजू २ वियात ३ ॥

-प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥ २५ ॥

अतिधीठ निर्भर पुरुषके नाम २-
प्रगल्भ १ प्रतिभान्वित २ ॥ २५ ॥

स्यादधृष्टे तु शालीनो-

लज्जावान् पुरुषके नाम २-अधृष्ट
१ शालीन २ ॥

-विलक्षो विस्मयान्विते ।

अचम्भेमें पड़े हुए पुरुषके नाम २-
विलक्ष १ विस्मयान्वित २ ॥

अधीरे कातर-

व्याकुल हुए पुरुषके नाम २-अधीर
१ कातर २ ॥

-स्त्रस्ते भीरुभीरुकभीलुकाः २६ ॥

डरपोकके नाम ४-त्रस्त १ भीरु २
भीरुक ३ भीलुक ४ ॥ २६ ॥

आशंसुराशंसितरि-

इष्ट अर्थप्राप्तिकी ईच्छावाले पुरुषके
नाम २-आशंसु १ आशंसितृ २ ॥

-गृहयालुर्ग्रहीतरि ।

लेनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम २-
गृहयालु १ ग्रहीतृ २ ॥

श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते-

श्रद्धायुक्त स्वभाववाले पुरुषका नाम
१-श्रद्धालु १ ॥

-पतयालुस्तु पातुके ॥ २७ ॥

गिरनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम २-
पतयालु १ पातुक २ ॥ २७ ॥

लज्जाशीलेऽपत्रपिष्ण -

लज्जाशील पुरुषके नाम २-लज्जा-
शील १ अपत्रपिष्णु २ ॥

-वन्दारु भिवादके ।

वन्दना करनेके स्वभाववाले पुरुषके
नाम २-वन्दारु १ अभिवादक २ ॥

शरारुर्घातुको हिंस्रः-

हिंसा करनेके स्वभाववाले पुरुषके
नाम ३-शरारु १ घातुक २ हिंस्र ३ ॥

-स्याद्वर्द्धिष्णुस्तु वयनः ॥ २८ ॥

बढ़नेके स्वभाववाले पुरुषके नाम २-
वर्द्धिष्णु १ वर्धन २ ॥ २८ ॥

उत्पतिष्णुस्त्वृत्पातिता-

कूदनेके स्वभाववालेके नाम २-
उत्पतिष्णु १ उत्पतिवृ २ ॥

-ऽलंकरिष्णुस्तु मण्डनः ।

भूषण आदि पहरनेके स्वभाववालेके
नाम २-अलंकरिष्णु १ मंडन २ ॥

भूष्णुर्भविष्णुर्भविता-

होनेके स्वभाववालेके नाम ३-
भूष्णु १ भविष्णु २ भवितृ ३ ॥

वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ॥ २९ ॥

वर्त्ताव करनेके स्वभाववालेके नाम
२-वर्तिष्णु १ वर्तन २ ॥ २९ ॥

निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्यात्-
तिरस्कार करनेके स्वभाववालेके
नाम २-निराकरिष्णु १ क्षिप्नु २ ॥

-सान्द्रस्निग्धस्तु भेदुरः ।

सघन और चिकनेका नाम १-
भेदुर ॥ १ ॥

ज्ञाता तु विदुरोविन्दु-
जाननेके स्वभाववालेके नाम ३-

ज्ञातृ १ विदुर २ विन्दु ३ ॥

-विकासी तु विकस्वरः ॥ ३० ॥

खिलनेके स्वभाववालेके नाम २ -
विकासिन् १ विकस्वर २ ॥ ३० ॥

विसृत्वरो विसृमरः प्रसारि च
विसारिणि ।

फैलनेके स्वभाववालेके नाम ४-
विसृत्वर १ विसृमर २ प्रसारिन् ३
विसारिन् ४ ॥

सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिशुः
क्षमिता क्षमी ॥ ३१ ॥

सहनशीलवालेके नाम ६-सहिष्णु १
सहन २ क्षन्तु ३ तितिशु ४ क्षमिन् ५
क्षमिन् ६ ॥ ३१ ॥

क्रोधनोऽमर्षणः कोपी-

क्रोधके स्वभाववालेके नाम ३-
क्रोधन १ अमर्षण २ कोपिन् ३ ॥

-चण्डस्त्वत्यन्तकोपनः ।

अत्यन्त क्रोधके स्वभाववालेके नाम
२-चण्ड १ अत्यन्तकोपन २ ॥

जागरूको जागरिता-

जागनेके स्वभाववालेके नाम २-
जागरूक १ जागरितृ २ ॥

-वृर्णितः प्रचलायितः ॥ ३२ ॥

घूरनेवालेके नाम २-वृर्णित १
प्रचलायित २ ॥ ३२ ॥

स्वप्नक्छयालुर्निद्रालु-

निद्रालुके नाम ३-स्वप्नज् १
शयालु २ निद्रालु ३ ॥

-निद्राणशयितौ समौ ।

शयनकरनेवालेके नाम २-निद्राण
१ शयित २ ॥

पराङ्मुखः पराचीनः-

विमुखके नाम २-पराङ्मुख १
पराचीन २ ॥

-स्यादवाङ्म्यधोमुखः ॥ ३३ ॥

नीचेको मुख करनेवालेके नाम २-
अवाच् १ अधोमुख २ ॥ ३३ ॥

देवान्वाति देव्यङ्-

देवताओंकी पूजा करनेवालेका
नाम १-देव्यच् १ ॥

—विष्वद्यद् विष्वगञ्चति ।

सब ओर जानेवालेका नाम १—

विष्वद्यच् १ ॥

यः सहाञ्चति सध्यद् सः—

साथ रहनेवालेका नाम १—सध्यच् १ ॥

—स तिर्यङ् यस्तिरोऽञ्चति ॥ ३४ ॥

टेढे चलनेवालेका नाम १—तिर्यच्

१ ॥ ३४ ॥

वदो वदावदो वक्ता—

वक्ताके नाम ३—वद १ वदावद २ वक्तृ ३ ॥

—वागीशो वाक्पतिः समौ ।

चातुर्ययुक्त बोलनेवालेके नाम २—

वागीश १ वाक्पति २ ॥

वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकोऽ-

तिवक्तरि ॥ ३५ ॥

शास्त्रानुसार अत्यन्त बोलनेवालेके

नाम ४—वाचोयुक्तिपटु १ वाग्मिन् २

वावदूक ३ अतिवक्तृ ४ ॥ ३५ ॥

स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो वाचाटो

बहुगर्हवाक् ।

अतिनिन्दित भाषण करनेवालेके

नाम ४—जल्पाक १ वाचाल २ वाचाट ३

बहुगर्हवाच् ४ ॥ ४ ॥

दुर्मुखे मुखराबद्धमुखौ—

अप्रिय बोलनेवालेके नाम ३—

दुर्मुख १ मुखर २ अबद्धमुख ३ ॥

शक्नुः प्रियंवदे ॥ ३६ ॥

प्रियबोलनेवालेके नाम २—शक्नु १

प्रियंवद २ ॥ ३६ ॥

लोहलः स्यादस्फुटवा—

जो स्फुट न बोलता हो उस पुरुषके

नाम २—लोहल १ अस्फुटवाच् २ ॥

—गर्हवादी तु कद्वदः ।

निन्दित वाक्य बोलनेवाले पुरुषके

नाम २—गर्हवादिन् १ कद्वद २ ॥

समौ कुवादकुचरौ—

बुराई कहनेवालेके नाम २—कुवाद १

कुचर २ ॥

स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः ॥ ३७ ॥

रुखे स्वरवालेके नाम २—असौम्य-

स्वर १ अस्वर २ ॥ ३७ ॥

रवणः शब्दनो—

चिल्लानेवालेके नाम २—रवण १

शब्दन २ ॥

—नान्दीवादी नान्दीकरः समौ ।

नान्दीवादी अर्थात् नाटकके आर-

म्भमें स्तुतिविशेष करनेवालेके नाम २—

नान्दीवादिन् १ नान्दीकर २ ॥

जडोऽज्ञ-

महामूर्खके नाम २—जड १ अज्ञ २ ॥

—एडमूकस्तुः वक्तुं श्रोतुम-

शिक्षिते ॥ ३८ ॥

जो गूंगा बहिरा दोनों हो उसका
नाम १-एडमूक १ ॥ ३८ ॥

तूष्णींशीलस्तु तूष्णीको-
मौन रहनेवाले पुरुषके नाम २-
तूष्णींशील १ तूष्णीक २ ॥

-नम्रोऽवासा दिगम्बरे ।

नम्रपुरुषके नाम ३-नम्र १ अवा-
ससू २ दिगम्बर ३ ॥

निष्कासितोऽवकृष्टः स्या-
निकाले हुएके नाम २-निष्कासित
१ अवकृष्ट २ ॥

-दपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ३९ ॥
धिक्कार दिये हुए पुरुषके नाम २-
अपध्वस्त १ धिक्कृत २ ॥ ३९ ॥

आत्तगर्वोऽभिभूतः स्या-
तिरस्कारको प्राप्त हुए पुरुषके
नाम २-आत्तगर्व १ अभिभूत २ ॥

-दापितः साधितः समौ ।
धनादि दिवाकर वशमें किये हुए
पुरुषके नाम २-दापित १ साधित २ ॥

प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्या-
ख्यातो निराकृतः ॥ ४० ॥

निरादरको प्राप्त हुए पुरुषके नाम
४-प्रत्यादिष्ट १ निरस्त २ प्रत्याख्यात
३ निराकृत ४ ॥ ४० ॥

निकृंतः स्याद्विप्रकृतो-

बुरे रूपवालेके नाम २-निकृत १
विप्रकृत २ ॥

-विप्रलब्धस्तु वञ्चितः ।

उगे हुए पुरुषके नाम २-विप्रलब्ध
वञ्चित २ ॥

मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो
हतश्च सः ॥ ४१ ॥

मनोहत पुरुषके नाम ४-मनोहत १
प्रतिहत २ प्रतिबद्ध ३ हत ४ ॥ ४१ ॥

अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो-
जिसके ऊपर आक्षेप किया गया
हो उस पुरुषके नाम २-अधिक्षिप्त १
प्रतिक्षिप्त २ ॥

-बद्धे कीलितसंयतौ ।
बांधे हुएके नाम ३-बद्ध १ कीलित
२ संयत ३ ॥

आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात्-
आपत्तिको प्राप्त हुए पुरुषके नाम २-
आपन्न १ आपत्प्राप्त २ ॥

कांदिशीको भयद्रुतः ॥ ४२ ॥
भयसे भागे हुएके नाम २-कांदि-
शीक १ भयद्रुत २ ॥ ४२ ॥

आक्षारितः क्षारितोऽभिशस्ते-
मैथुनके निमित्त वृथा दोष लगाये
हुए पुरुषके नाम ३-आक्षारित १
क्षारित २ अभिशस्त ३ ॥

—संकसुकोऽस्थिरे ।
 चंचल स्वभाववाले पुरुषके नाम २—
 संकसुस १ अस्थिर २ ॥
 व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ—
 दैवी और मानुषी पीडासे युक्त पुरु-
 षके नाम ३—व्यसनार्त्त १ उपरक्त २ ॥
 —विहस्तव्याकुलौ समौ ॥ ४३ ॥
 शोकादिसे व्याकुल पुरुषके नाम
 २—विहस्त १ व्याकुल २ ॥ ४३ ॥
 विह्वलो विह्वलः—
 विकलपुरुषके नाम २—विकल १
 विह्वल २ ॥
 —स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ।
 मरणके समीप आनेसे जिसकी
 बुद्धि विपरीत हो जाय उस पुरुषके
 नाम २—विवश १ अरिष्टदुष्टधी ॥ २ ॥
 कश्यः कशार्ह—
 बेतमारने योग्यके नाम २—कश्य
 १ कशार्ह २ ॥
 —सन्नद्धे त्वाततायी वधोद्यते ४४ ॥
 मारनेको उद्यतका नाम १—आत-
 तायिन् १ ॥ ४४ ॥
 द्वेष्ये त्वक्षिगतो—
 द्वेष करने लायकके नाम २—
 द्वेष्य १ अक्षिगत २ ॥
 —वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ ॥

शिरकाटने योग्यके नाम २—वध्य
 १ शीर्षच्छेद्य २ ॥
 विष्यो विषेण यो वध्यो—
 विषकरके मारने योग्यका नाम १—
 विष्य १ ॥
 —मुसल्यो मुसलेन यः ॥ ४५ ॥
 मुसलसे मारने योग्यका नाम १—
 मुसल्य १ ॥ ४५ ॥
 शिश्विदानोऽकृष्णकर्मा—
 पापकर्म न करनेवाले पुरुषके नाम
 २—शिश्विदान १ अकृष्णकर्मन् २ ॥
 चपलश्चिकुरः समौ ।
 विना दोष बिचारे मारनेवालेके
 नाम २—चपल १ चिकुर २ ॥
 दोषैकदृक्पुरोभागी—
 केवल दोषकी ही दृष्टि करनेवालेके
 नाम २—दोषैकदृक् १ पुरोभागिन् २ ॥
 —निकृतस्त्वनृजुः शठः ॥ ४६ ॥
 कुटिलहृदयके नाम ३—निकृत १
 अनृजु २ शठ ३ ॥ ४६ ॥
 कर्णेजपः सूचकः स्यात्—
 चुगलखोरके नाम २—कर्णेजप १
 सूचक २ ॥
 —पिशुनो दुर्जनः खलः ।
 आपसमें भेद करानेवालेके नाम
 ३—पिशुन १ दुर्जन २ खल ३ ॥

नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो-
 घातक अथवा कठोरपुरुषके नाम ४
 -नृशंस १ घातुक २ क्रूर ३ पाप ४ ॥
 -धूर्तस्तु वञ्चकः ॥ ४७ ॥
 ठगके नाम २- धूर्त १ वञ्चक २ ॥ ४७ ॥

अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयवा-
 लिशः ।

मूर्खके नाम ६-अज्ञ १ मूढ २
 यथाजात ३ मूर्ख ४ वैधेय ५ वालिश ६ ॥
 कदर्ये कृपणक्षुद्रकिंपचानमितं-
 पचाः ॥ ४८ ॥

कृपणके नाम ५- कदर्य १ कृपण २
 क्षुद्र ३ किंपचान ४ मितम्पच ५ ॥ ४८ ॥
 निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो
 दुर्गतोऽपि सः ।

दरिद्र पुरुषके नाम ५ निःस्व १-
 दुर्विध २ दीन ३ दरिद्र ४ दुर्गत ५ ॥

वनीयको याचनको मार्गणो
 याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥

मांगनेवालेके नाम ५-वनीयक १
 याचनक २ मार्गण ३ याचक ४ अर्थिन्
 ५ ॥ ४९ ॥

अहंकारवानहंयुः-

अहंकारयुक्त पुरुषके नाम २-अहं-
 कारयुक्त १ अहंयु २ ॥

-शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।

शुभयुक्त पुरुषके नाम २- शुभंयु १
 शुभान्वित २ ॥

दिव्योपपादुका देवा-
 देवताओंका नाम १-दिव्योपपा-
 दुक १ ॥

-नृगवाद्या जरायुजाः ॥ ५० ॥
 मनुष्य, गौ आदि 'जरायुज' कहला-
 ते हैं ॥ ५० ॥

स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः-
 कीड़ा और डांस आदि 'स्वेदज'
 कहलाते हैं ॥

-पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः ।
 पक्षी, सर्पादि 'अण्डज' कह-
 लाते हैं ॥

(इति प्राणिवर्गः)

उद्भिदस्तरुगुलमाद्या-
 वृक्ष, वेल, घास आदि 'उद्भिद'
 कहलाते हैं ॥

उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ ५१ ॥
 उद्भिदके नाम ३- उद्भिद १
 उद्भिज्ज २ उद्भिद ३ ॥ ५१ ॥

सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं सा-
 धु शोभनम् । कान्तं मनोरमं
 रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम्
 ॥ ५२ ॥

सुन्दरके नाम १२-सुन्दर १ रुचिर २

चारु ३ सुषम ४ साधु ५ शोभन ६
कान्त ७ मनोरम ८ रुच्य ९ मनोज्ञ १०
मञ्जु ११ मंजुल १२ ॥ ५२ ॥

तदासेचनकं तृप्तेर्नास्त्यन्तो
यस्य दर्शनात् ।

जिसके देखनेसे तृप्तिके अन्तको
प्राप्त न हो उसका नाम १-आसेच-
नक १ ॥

अभीष्टभीप्सितं हृद्यं दयितं
बल्लभं प्रियम् ॥ ५३ ॥

प्रियके नाम ६-अभीष्ट १ अभी-
प्सित २ हृद्य ३ दयित ४ बल्लभ ५
प्रिय ६ ॥ ५३ ॥

निकृष्टप्रतिकृष्टावरेफयाप्यावमा-
षमाः । कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्हा-
णकाः समाः ॥ ५४ ॥

अधमके नाम १३-निकृष्ट १ प्रत्ति-
कृष्ट २ अर्वन् ३ रेफ ४ याप्य ५ अवम
६ अधम ७ कुपूय ८ कुत्सित ९ अवद्य
१० खेट ११ गर्ह्य १२ अणक १३ ॥ ५४ ॥

मलीमसं तु मलिनं कच्चरं मल-
दूषितम् ।

मलिनके नाम ४-मलीमस १
मलिन २ कच्चर ३ मलदूषित ४ ॥

पूतं पवित्रं मेध्यं च-
पवित्रके नाम ३-पूत १ पवित्र २ मेध्य ३ ॥

-वीथं तु विमलार्थकम् ॥ ५५ ॥

स्वभावसे निर्मलके नाम २-वीथ १

विमलार्थक २ ॥ ५५ ॥

निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशो-
ध्यमनवस्करम् ।

शुद्ध किये हुएके नाम ५-निर्णिक्त १
शोधित २ मृष्ट ३ निःशोध्य ४ अन-
वस्कर ५ ॥

असारं फल्गु-

असार वस्तुके नाम २-असार १ फल्गु २ ।

-शून्यं तु वाशिकं तुच्छरिक्त-
के ॥ ५६ ॥

शून्यके नाम ४-शून्य १ वाशिक २
तुच्छ ३ रिक्तक ४ ॥ ५६ ॥

क्लीबे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्त-
मोत्तमाः । मुख्यवर्यवरेण्याश्च
प्रवर्होऽनवगार्ध्यवत् ॥ ५७ ॥

पराध्याग्रिप्राग्रहरप्राग्र्याग्र्याग्रिय-
मग्रियम् ।

प्रधानके नाम १७-प्रधान १ प्रमुख
२ प्रवेक ३ अनुत्तम ४ उत्तम ५ मुख्य ६
वर्य ७ वरेण्य ८ प्रवर्ह ९ अनवगार्ध्य १०
॥ ५७ ॥ परार्ध्य ११ अग्र १२ प्राग्रहर १३
प्राग्र्य १४ अग्र्य १५ अग्रिय १६
अग्रिय १७ ॥

श्रेयान् श्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्त-
मश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥

अति सुन्दरक नाम ५-श्रेयस् १
श्रेष्ठ २ पुष्कल ३ सत्तम ४ अतिशोभन
५ ॥ ५८ ॥

स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुंगववर्षभकु-
जराः । सिंहशार्दूलनागाद्याः
पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः ॥ ५९ ॥

व्याघ्र, पुंगव, ऋषभ, कुजरा,
सिंह, शार्दूल, नागादि शब्दोंके उत्तर
आनेसे श्रेष्ठ अर्थके वाचक होते हैं जैसे
पुरुषव्याघ्र, द्विजपुङ्गव इत्यादि ॥ ५९ ॥

अप्राग्यं द्वयहीने द्वे अप्रधा-
नोपसर्जने ।

अप्रधानके नाम ३-अप्राग्य १ अप्र-
धान २ उपसर्जन ३ ॥

विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं
महत् ॥ ६० ॥ वडोरुविपुलं-

चौडेके नाम ९-विशङ्कट १ पृथु
२ बृहत् ३ विशाल ४ पृथुल ५ महत् ६
॥ ६० ॥ वडू ७ उरु ८ विपुल ९ ॥

-पीनपीत्री तु स्थूलपीवरे ।

मोटेके नाम ४-पीन १ पीधन् २
स्थूल ३ पीवर ४ ॥

स्तोकाल्पशुल्लकाः सूक्ष्मं श्लक्ष्णं
दध्रं कृशं तनु ॥ ६१ ॥ स्त्रियां
मात्रा त्रुटिः पुंसि लवलेशकणा-
णवः ।

थोडेके नाम १४-स्तोक १ अल्प २
शुल्लक ३ सूक्ष्म ४ श्लक्ष्ण ५ दध्र ६ कृश
७ तनु ८ ॥ ६१ ॥ मात्रा त्रुटि १० लव
११ लेश १२ कण १३ अणु १४ ॥
अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनी-
योऽणीय इत्यपि ॥ ६२ ॥

अतिअल्पके नाम ४-अल्पिष्ठ १
अल्पीयस् २ कनीयस् ३ अणीयस्
४ ॥ ६२ ॥

प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदध्रं बहुलं
वहु । पुरुहूः पुरु भूयिष्ठं स्फारं
भूयश्च भूरि च ॥ ६३ ॥

बहुतके नाम १२-प्रभूत १ प्रचुर २
प्राज्य ३ अदध्र ४ बहुल ५ बहु ६ पुरुहू ७
पुरु ८ भूयिष्ठ ९ स्फार १० भूयस् ११
भूरि १२ ॥ ६३ ॥

परःशताद्यास्ते येषां परा सं-
ख्या शतादिकात् ।

जिनकी संख्या शतसे अर्थात्
सहस्रादिसे अधिक हो वह परःशत
आदि कहलाते हैं ।

गणनीये तु गणये-

गिननेयोग्य वस्तुके नाम २-गण-
नीय १ गणय २ ॥

-संख्याते गणित-

गिने हुएके नाम २-संख्यात १
गणित २ ॥

—मथ समं सर्वम् ॥ ६४ ॥

विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तानि-
खिलाखिलानि निःशेषम् । समग्रं
सकलं पूर्णमखण्डं स्यादन्नूनके ॥ ६५ ॥

सम्पूर्णेके नाम १४—सम १ सर्व २
॥ ६४ ॥ विश्व ३ अशेष ४ कृत्स्न ५
समस्त ६ निखिल ७ अखिल ८ निःशेष
९ समग्र १० सकल ११ पूर्ण १२
अखण्ड १३ अन्नूनक १५ ॥ ६८ ॥

घनं निरन्तरं सान्द्रं—

घनेके नाम ३—घन १ निरन्तर २ सान्द्र ३ ॥

—पेलवं विरलं तनु ।

—छितरे (छीदे)के नाम ३—पेलव
१ विरल २ तनु ३ ॥

समीपे निकटासन्नसन्निकृष्टस-
नीडवत् ॥ ६६ ॥ सदेशाभ्या-
शसविधसमर्यादसवेशवत् । उप-
कण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभि-
तोऽव्ययम् ॥ ६७ ॥

समीपके नाम १५—समीप १
निकट २ आसन्न ३ सन्निकृष्ट ४ सनीड
५ ॥ ६६ ॥ सदेश ६ अभ्याश ७ सविध
८ समर्याद ९ सवेश १० उपकण्ठ ११
अन्तिका १२ अभ्यर्ण १३ अभ्यग्रा १५
अभित १५ ॥ ६७ ॥

संसक्ते त्वव्यवाहितमपदान्तर-
मित्यापि ।

मिले हुएके नाम ३—संसक्त १ अव्य-
वाहित २ अपदान्तर ३ ॥

नेदिष्ठमन्तिकतमं—

अतिसमीपके नाम २—नेदिष्ठ १
अन्तिकतम २ ॥

—स्याद्दूरं विप्रकृष्टकम् ॥ ६८ ॥

दूरके नाम २—दूर १ विप्रकृष्ट २ ॥ ६८ ॥
दवीयश्च दविष्टं च सुदूरं—
अत्यन्तदूरके नाम २—दवीयसु १
दविष्ट २ सुदूर ३ ॥

—दीर्घमायतम् ।

लम्बेके नाम २—दीर्घ १ आयत २ ॥

वर्तुलं निस्तलं वृत्तं—

गोलके नाम ३—वर्तुल १ निस्तल २—
वृत्त ३ ॥

—बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ६९ ॥

ऊँचेनीचेके नाम २—बन्धुर १ उन्न-
तानत २ ॥ ६९ ॥

उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गे—

ऊँचके नाम ६—उच्च १ प्रांशु २
उन्नत ३ उदग्र ४ उच्छ्रित ५ तुङ्ग ६ ॥

—ऽथ वामने ।

न्यङ्नीचखर्वह्रस्वाः स्यु—

बोने पुरुषके नाम ५—वामन १
न्यक् २ नीच ३ खर्व ४ ह्रस्व ५ ॥

—रवाग्रेऽवनतानतम् ॥ ७० ॥

नमे हुण्के नाम ३—अवाग्र १ अव-
नत २ आनत ३ ॥ ७० ॥

अरालं वृजिनं जिह्वमूर्धिमत्कु-
ञ्चितं नतम् । आविद्धं कुटिलं
भुग्नं वेष्टितं वक्रमित्यपि ॥ ७१ ॥

टेढेके नाम ११—अराल १ वृजिन २
जिह्व ३ ऊर्ध्व ४ कुञ्चित ५ नत ६
आविद्ध ७ कुटिल ८ भुग्न ९ वेष्टित
१० वक्र ११ ॥ ७१ ॥

ऋजावजिह्वप्रगुणौ—

सीधेके नाम ३—ऋजु १ अजिह्व
२ प्रगुण ३ ॥

—व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ ।

व्याकुलके नाम ३—व्यस्त १ अप्र-
गुण २ आकुल ३ ॥

शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातन-
सनातनाः ॥ ७२ ॥

नित्यके नाम ५—शाश्वत १ ध्रुव २
नित्य ३ सदातन ४ सनातन ५ ॥ ७२ ॥

स्थास्तुः स्थिरतरः स्थेया-

अतिस्थिरके नाम ३—स्थास्तु १
स्थिरतर २ स्थेयस् ३ ॥

—नेकरूपतया तु यः ।

कालव्यापी स कूटस्थः

निश्चल रहनेवालेका नाम १—कूटस्थ १

—स्थावरो जङ्गमेतरः ॥ ७३ ॥

वृक्षादिके नाम २—स्थावर १ जंग-
मेतर २ ॥ ७३ ॥

चरिष्णु जङ्गमचरं त्रसामिङ्ग
चराचरम् ।

चलनेवालेके नाम ६—चरिष्णु १
जंगम २ चर ३ त्रस ४ इंग ५ चरा-
चर ६ ॥

चलनं कम्पनं कम्पं चलं लोलं
चलाचलम् ॥ ७४ ॥ चञ्चलं तरलं
चैव पारिप्लवपरिप्लवे ।

कांपनेके नाम १०—चलन १ कंपन
२ कम्प ३ चल ४ लोल ५ चला-
चल ६ ॥ ७४ ॥ चञ्चल ७ तरल ८
पारिप्लव ९ परिप्लव १० ॥

अतिरिक्तः समधिको—

अधिकके नाम २—अतिरिक्त १ सम-
धिक २ ॥

—दृढसंधिस्तु संहतः ॥ ७५ ॥

मिलापके नाम २—दृढसंधि १ संहत
२ ॥ ७५ ॥

कर्कशं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं
दृढम् ॥ जठरं मूर्तिमन्मूर्त-

कठिनके नाम ९—कर्कश १ कठिन २
क्रूर ३ कठोर ४ निष्ठुर ५ दृढ ६
जठर ७ मूर्तिमत् ८ मूर्त ९ ॥

—प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥ ७६ ॥

बढे हुएके नाम ३—प्रवृद्ध १ प्रौढ २

एधित ३ ॥ ७६ ॥

पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचि-
रंतनाः ।

पुरानेके नाम ५—पुराण १ प्रतन
२ प्रत्न ३ पुरातन ४ चिरन्तन ५ ॥

प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो
नूतनो नवः ॥ ७७ ॥ नूतनश्च—

नयेके नाम ७—प्रत्यग्र १ अभिनव
२ नव्य ३ नवीन ४ नूतन ५ नव ६
॥ ७७ ॥ नूतन ७ ॥

—सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु ।

सुकुमारके नाम ४—सुकुमार १ को-
मल २ मृदुल ३ मृदु ४ ॥

अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं क्ली-
बमव्ययम् ॥ ७८ ॥

पीछेके नाम ४—अन्वक् १ अन्वक्ष २
अनुग ३ अनुपद ४ ॥ ७८ ॥

प्रत्यक्षं स्यादैन्द्रियक—
प्रत्यक्षके नाम २—प्रत्यक्ष १ ऐन्द्रिय-
क २ ॥

—मप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ।
जो न दीखे उसके नाम २—अप्रत्यक्ष
१ अतीन्द्रिय २ ॥

एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैका-
यनावपि ॥ ७९ ॥ अप्ये-

कसर्गएकाग्र्योऽप्येकायनगतोऽ-
पि सः ॥

एकाग्रके नाम ७—एकतान १ अन-
न्यवृत्ति २ एकाग्र ३ एकायन ४ ॥ ७९ ॥

एकसर्ग ५ एकाग्र्य ६ एकायनगत ७ ॥
पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमा-
द्या—

पहिलेके नाम ५—आदि १ पूर्व २
पौरस्त्य ३ प्रथम ४ आद्य ५ ॥

—अथास्त्रियाम् ॥ ८० ॥
अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चा-
त्यपश्चिमाः ।

पिछलेके नाम ६—॥ ८० ॥ अन्त १
जघन्य २ चरम ३ अन्त्य ४ पाश्चात्य ५
पश्चिम ६ ॥

मोघं निरर्थकं—
व्यर्थके नाम २—मोघ १ निरर्थक २ ॥
—स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्ब-
णम् ॥ ८१ ॥

स्पष्टके नाम ४—स्पष्ट १ स्फुट २
प्रव्यक्त ३ उल्बण ४ ॥ ८१ ॥

साधारणं तु सामान्य—
सामान्यके नाम २—साधारण १
सामान्य २ ॥

—मेकाकी त्वेक एककः ।
अकेलेके नाम ३—एकाकिन् १ एक
२ एकक ३ ॥

भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽ
न्येतरावपि ॥ ८२ ॥

अन्यके नाम ६-भिन्न १ अन्यतर २
एक ३ त्व ४ अन्य ५ इतर ६ ॥ ८२ ॥

उच्चावचं नैकभेद-

अनेक प्रकारके नाम २-उच्चावच १
नैकभेद २ ॥

-मुच्चण्डमविलम्बितम् ।

शीघ्रके नाम २-उच्चण्ड १ अवि-
लम्बित २ ॥

अरुन्तुदस्तु मर्मस्पृ-

मर्मभेदके नाम २-अरुन्तुद १
मर्मस्पृश २ ॥

-गबाधं तु निरगलम् ॥ ८३ ॥

जिसके कोई बाधा न हो उसके
नाम २ अबाध १ निरगल २ ॥ ८३ ॥

प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यम-
पण्टु च ।

विपरीतके नाम ४-प्रसव्य १ प्रति-
कूल २ अपसव्य ३ अपण्टु ४ ॥

वामं शरीरं सव्यं स्या-

बायें अंगका नाम १-सव्य १ ॥

-दपसव्यं तु दक्षिणम् ॥ ८४ ॥

दहिने अंगका नाम १-अपसव्य
१ ॥ ८४ ॥

संकटं ना तु संबाधः-

संकट (भीड मार्गआदि) के ना
म २-संकट १ संबाध २ ॥

-कलिलं गहनं समे ।

जो बड़े ही दुःखसे प्राप्त होनेके योग्य
हो उसके नाम २-कलिल १ गहन २ ॥

संकीर्णं संकुलाकीर्ण-

नाना जातिके लोगोंके एकत्र बै-
ठनेके नाम ३-संकीर्ण १ संकुल २ आकी-
र्ण ३ ॥

-मुण्डितं परिवापितम् ॥ ८५ ॥

मुण्डे हुएके नाम २-मुण्डित १ परि-
वापित २ ॥ ८५ ॥

ग्रन्थितं सन्दिगतं दृब्धं-

गण्टे हुएके नाम ३-ग्रन्थित १
सन्दिगत २ दृब्ध ३ ॥

-विस्मृतं विस्मृतं ततम् ।

फैले हुएके नाम ३-विस्मृत २
विस्मृत २ तत ३ ॥

अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात्-

भूले हुएके नाम २-अन्तर्गत १
विस्मृत २ ॥

-प्राप्तप्रणिहिते समे ॥ ८६ ॥

रक्खे हुएके नाम २-प्राप्त १ प्रणि-
हित २ ॥ ८६ ॥

वेलितप्रैखिताधूतचलिताकम्पि-
ताधूते ।

थोड़ा कांपते हुएके नाम ६-वेलित १

प्रेषित २ आधूत ३ चलित ४ आकं-
पित ५ धुत ६ ॥

नुत्तनुन्नास्तनिष्ठचूताविद्धक्षिप्तेरि-
ताः समाः ॥ ८७ ॥

प्रेरितके नाम ७- नुत्त १ नुन्न २
अस्त ३ निष्ठचूत ४ आविद्ध ५ क्षिप्त ६
ईरित ७ ॥ ८७ ॥

परिक्षिप्तं तु निवृत्तं-

धेरे हुएके नाम २-परिक्षिप्त १
निवृत्त २ ॥

-मूषितं मुषितार्थकम् ।

चुराये हुएके नाम २- मूषित १
मुषित २ ॥

प्रवृद्धप्रसृते-

फैलनेके नाम २-प्रवृद्ध १ प्रसृत २

-न्यस्तानिसृष्टे-

फेंके हुएके नाम २-न्यस्त १
निसृष्ट २ ॥

-गुणिताहते ॥ ८८ ॥

गुणे हुएके नाम २-गुणित १ आहत
२ ॥ ८८ ॥

निदिग्धोपचिते-

बढे हुएके नाम २-निदिग्ध १
उपचित २ ॥

-गूढगुप्ते-

छिपे हुएके नाम २-गूढ १ गुप्त २-

-गुणितरूपिते ।

धूलिसे सने हुएके नाम २-गुणित

१ रूपित २ ॥

द्रुतावदीर्णे-

द्रवीभूतके नाम २-द्रुत १ अव-
दीर्ण २ ॥

-उद्गूर्णोद्यते-

मारनेको उठाये हुए शस्त्रादिके नाम
२- उद्गूर्ण १ उद्यत २ ॥

-काचितशिक्षियते ॥ ८९ ॥

छीकेपै धरी हुई वस्तुके नाम २-
काचित १ शिक्षियत २ ॥ ८९ ॥

-घ्राणघ्राते-

सूंघे हुएके नाम २-घ्राण १ घ्रात २ ॥

-दिग्धलिप्ते-

लीपे हुएके नाम २-दिग्ध १ लिप्त १

-समुदत्तोद्धृते-

कूपादिसे निकाले हुए जलादिके
नाम २-समुदत्त १ उद्धृत २ ॥

-समे ।

उपरोक्त शब्द समानलिंग होतेहैं।

वेष्टितं स्याद्वलयितं संवीतं रु-
द्धमावृतम् ॥ ९० ॥

नदी आदिसे धेरे हुएके नाम ५-

आवेत १ वलयित २ संवीत ३ रुद्ध ४

ष्टिवृत ५ ॥ ९० ॥

रुग्णं भुग्ने—

दूटे हुयेके नाम २—रुग्ण १ भुग्ने २

—स्थः निश्चितक्षुण्णतशातानि तेजिते ।

तेज किये हुयेके नाम ४—निश्चित १ क्षुण्ण २ शात ३ तेजित ४ ॥

स्याद्विनाशोन्मुखं पक्कं—

पके हुए मरने वा काटनेके योग्य वस्तुके नाम २—विनाशोन्मुख १ पक्क २ ।

—हीणहीनौ तु लज्जिते ॥ ९१ ॥

लज्जायुक्तके नाम ३—हीण १ हीन २ लज्जित ३ ॥ ९१ ॥

वृत्ते तु वृत्तव्यावृत्तौ—

वरण किये हुएके नाम ३—वृत्त १ वृत्त २ व्यावृत्त ३ ॥

—संयोजित उपाहितः ।

मिलाये हुएके नाम २ संयोजित १ उपाहित २ ॥

प्राप्यं गम्यं समासाद्यं—

प्राप्त करनेके योग्यके नाम ३—प्राप्य १ गम्य २ समासाद्य ३ ॥

—स्यन्नं रीणं स्नुतं सुतम् ९२ ॥

बहते हुएके नाम ४—स्यन्न १ रीण २ स्नुत ३ सुत ४ ॥ ९२ ॥

संगूढं स्यात्संकलितौ—

जोडे हुए अंकादिके नाम २—संगूढ १ संकलित २ ॥

—ऽवगीतः ख्यातगर्हणः ।

निन्दितके नाम २—अवगीत १

ख्यातगर्हण २ ॥

विविधः स्याद्बहुविधो नाना-

रूपः पृथग्विधः ॥ ९३ ॥

विविध प्रकारके नाम ४—विविध १

बहुविध २ नानारूप ३ पृथग्विध ४ ॥ ९३ ॥

अवरीणो धिक्कृतश्चा—

धिक्कारे हुएके नाम २—अवरीण १ धिक्कृत २ ॥

—प्यवध्वस्तोऽवचूर्णितः ।

चूर्ण किये गयेके नाम २—अवध्वस्त १ अवचूर्णित २ ॥

अनायासकृतं फाण्टं—

अनायाससे किये कायका नाम १—फाण्ट १ ॥

—स्वनितं ध्वनितं समे ॥ ९४ ॥

जिसने शब्द किया हो उसके नाम २—स्वनित १ ध्वनित २ ॥ ९४ ॥

बद्धे संदानितं मूतमुदितं संदि-
तं सितम् ।

बंधे हुएके नाम ६—बद्ध १ संदानित २ मूत ३ मुदित ४ संदित ५ सित ६ ॥

निष्पक्के कथितं—

अच्छी तरह पकाये हुए काढे आदिके नाम २—निष्पक्क १ कथित २ ॥

—पाके क्षीराज्यहविषां शृतम्
॥ ९७ ॥

पके हुए घृत. दुग्धादिका नाम १—
शृत १ ॥ ९५ ॥

निर्वाणो मुनिवह्यादौ—
मुनिअग्नि आदिके मुक्त होने का
नाम १— निर्वाण १ ॥

—निर्वातस्तु गतेऽनिले ।

जब वायु न चलता हो उस समय का
नाम १— निर्वात १ ॥

पक्कं परिणते—

पके हुए के नाम २—पक्क १ परि-
णत २ ॥

—गूढं हन्ने—

हगे हुए के नाम २—गूढ १ हन्न ॥

—मीढं तु मूत्रिते ॥ ९६ ॥

मूत्रे हुए के नाम २—मीढ १ मूत्रित २
॥ ९६ ॥

पुष्टं तु पुषितं—

पोषण किये के नाम २—पुष्ट १
पुषित २ ॥

—सोढे क्षान्त—

सहे हुए के नाम २—सोढ १ क्षान्त २ ॥

—मुद्धान्तमुद्गते ।

डाके हुए अन्नादिके नाम २—उद्धान्त
१ उद्गत २ ॥

दान्तस्तु दमिते—

दमन किये वृषभ आदिके नाम २—
दान्त १ दमित २ ॥

शान्तः शमिते—

शमनको प्राप्त हुए के नाम २—शात
१ शमित २ ॥

—प्रार्थितेऽर्दितः ॥ ९७ ॥

मांगे हुए के नाम २—प्रार्थित १
अर्दित २ ॥ ९७ ॥

ज्ञप्तस्तु ज्ञपिते—

जाने हुए के नाम २—ज्ञप्त १ ज्ञपित २ ॥

—छन्नश्छादिते—

छाये के नाम २—छन्न १ छादित २ ॥

—पूजितेऽश्रितः ।

पूजा किये गये के नाम २—पूजित १
अश्रित २ ॥

पूर्णस्तु पूरिते—

पूरे के नाम २—पूर्ण १ पूरित २ ॥

—क्लिष्टः क्लिशिते—

क्लेशित के नाम २—क्लिष्ट १ क्लिशित २ ॥

—अवसिते सितः ॥ ९८ ॥

समाप्त के नाम २—अवसित १ सित
२ ॥ ९८ ॥

मृष्टप्लुष्टोषिता दग्धे—

जले हुए के नाम ४—मृष्ट १ प्लुष्ट २
उषित ३ दग्ध ४

तष्टत्वष्टौ तनूकृते ।

सूक्ष्म किये गयेके नाम ३-तष्ट १
त्वष्ट २ तनूकृत ३ ॥

वेधितच्छिद्रितौ विद्धे-

छेदे हुएके नाम ३-वेधित १ छिद्रित
२ विद्ध ३ ॥

-विन्नविन्नौ विचारिते ॥ ९९ ॥

विचारे हुएके नाम ३-विन्न १ वित्त
२ विचारित ३ ॥ ९९ ॥

निष्प्रभे विगतारोकौ-

तेजरहितके नाम ३-निष्प्रभ १
विगत २ अरोक ३ ॥

-विलीने विद्रुतद्रुतौ ।

पिघळ जानेके नाम ३-विलीन १
विद्रुत २ द्रुत ३ ॥

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ-

सिद्धके नाम ३-सिद्ध १ निर्वृत्त २
निष्पन्न ३ ॥

-दारिते भिन्नभेदितौ ॥ १०० ॥

चीरे हुएके नाम ३-दारित १ भिन्न
२ भेदित ३ ॥ १०० ॥

ऊतं स्यूतमुतं चोति त्रितयं
तन्तुसंज्ञतेः ।

तंतुके विस्तारके नाम ३-ऊत १
स्यूत २ उत ३ ॥

स्यादर्हिते नमस्यितं नम-
सितमपचायितार्चितापचितम् १०१

पूजितके नाम ६-अर्हित १ नम-
स्यित २ नमयित २ अपचायित ४ अर्चित
५ अपचित ६ ॥ १०१ ॥

वरिवसिते वरिवास्थितमुपासितं
चोपचरितं च ।

सेवा किये गयेक नाम ४-वरिव-
सित १ ।

वरिवस्थित २ उपासित ३ उपचरित ४ ॥

संतापितसंतप्तौ धूपितधूपायि-
तौ च दूनश्च ॥ १०२ ॥

तपाये हुएके नाम ५-सन्तापित १ स-
न्तप्त २ धूपित ३ धूपायित ४ दून ५ ॥ १०२

हृष्टे मत्तस्तृप्तः प्रहन्नः प्रमुदितः
प्रीतः ।

हर्षितके नाम ६-हृष्ट १ मत्त २
तृप्त ३ प्रहन्न ४ प्रमुदित ५ प्रीत ६ ॥

छिन्नं छातं लूनं कृत्तं दातं दितं
छितं वृक्कणम् ॥ १०३ ॥

काटे हुएके नाम ८-छिन्न १ छात २
लून ३ कृत्त ४ दात ५ दित ६ छित
७ वृक्कण ८ ॥ १०३ ॥

स्रस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं
च्युतं गलितम् ।

चुये हुएके नाम ७-स्रस्त १ ध्वस्त २
भ्रष्ट ३ स्कन्न ४ पन्न ५ च्युत ६ गलित ७ ॥

लब्धं प्राप्तं विन्नं भावितमा-
सादितं च भूतं च ॥ १०४ ॥

पाये हुएके नाम—६लब्ध १ प्राप्त
२ विन्न ३ भावित ४ आसादित ५ भूत
६ ॥ १०४ ॥

अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मा-
र्गितं मृगितम् ।

ढूण्डे हुएके नाम ५—अन्वेषित
१ गवेषित २ अन्विष्ट ३ मार्गित १
मृगित ५ ॥

आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्ति-
मितं समुन्नमुत्तं च ॥ १०५ ॥

भीजे हुएके नाम ७—आर्द्र १ सार्द्र
२ क्लिन्न ३ तिमित ४ स्तिमित ५ समुन्न
६ उत्त ७ ॥ १०५ ॥

त्रातं त्राणं रक्षितमावितं गोपा-
यितं च गुप्तं च ।

रक्षा किये गयेके नाम ६—त्रात १
त्राण २ रक्षित ३ आवित ४ गोपायित ५
गुप्त ६ ॥

अवगणितमवमतावज्ञातेऽवमा-
नितं च परिभूते ॥ १०६ ॥

अपमान किये गयेके नाम ५—अव-
गणित १ अवमत २ अवज्ञात ३ अव-
मानित ४ परिभूत ५ ॥ १०६ ॥

त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं
धूतमुत्सृष्टे ।

त्यागे हुएके नाम ६—त्यक्त १ हीन २
विधुत ३ समुज्झित ४ धूत ५ उत्सृष्ट ६ ॥

उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमा-
ख्यातमभिहितं लपितम् ॥ १०७ ॥

कहे हुएके नाम ७—उक्त १ भाषित
२ उदित ३ जल्पित ४ आख्यात ५
अभिहित ६ लपित ७ ॥ १०७ ॥

बुद्धं बुधितं मानितं विदितं
प्रतिपन्नमवसितावगते ।

जाने गयेके नाम ७—बुद्ध १ बुधित
२ मानित ३ विदित ४ प्रतिपन्न ५ अव-
सित ६ अवगत ७ ॥

ऊरीकृतमुररीकृतमंगीकृतमाश्रु-
तं प्रतिज्ञातम् ॥ १०८ ॥

संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रु-
तोपगतम् ।

अंगीकार किये गयेके नाम ११—
ऊरीकृत १ उररीकृत २ अंगीकृत ३
आश्रुत ४ प्रतिज्ञात ५ ॥ १०८ ॥
संकीर्ण ६ विदित ७ संश्रुत ८ समाहित
९ उपश्रुत १० उपगत ११ ॥

ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणु-
तपणितपनितानि ॥ १०९ ॥

अवगीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानि
स्तुतार्थानि ।

स्तुति किये गयेके नाम १२—ईलि-
त १ शस्त २ पणायित ३ पनायित ४
प्रणुत ५ पणित ६ पनित ७ ॥ १०९ ॥
अवगीर्ण ८ वर्णित ९ अभिष्टुत १०
ईडित ११ स्तुत १२ ॥

भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवसितगि-
लितखादितप्सातम् ॥ ११० ॥
अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशितं
भुक्त ।

खाये गयेके नाम १४-भक्षित १
चर्वित ३लीढ २ प्रत्यवसित ४ गिलित
५ खादित ६ प्सात ७ ॥ ११० ॥
अभ्यवहृत ८ अन्न ९ जग्ध १० ग्रस्त
११ ग्लत १२ अशित १३ भुक्त १४ ॥

क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठवं-
हिष्ठाः ॥ १११ ॥ क्षिप्रक्षुद्राभीप्सि-
तपृथुपीवरबहुलप्रकर्षार्थाः ।

(अतिशय करके स्वरितका
नाम) क्षेपिष्ठ १ ॥ (अतिशय क्षुद्रका
नाम) क्षोदिष्ठ १ ॥ (अतिशय अभी-
प्सितका नाम) प्रेष्ठ १ ॥ अतिशय पृथुका
नाम) वरिष्ठ १ ॥ (अतिशय स्थूलका
नाम) स्थविष्ठ १ ॥ अतिशय बहुलका
नाम) बंहिष्ठ १ ॥ १११ ॥

साधिष्ठद्राधिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठहसिष्ठ-
वृन्दिष्ठाः ॥ ११२ ॥

बाढव्यायतबहुगुरुवामन-
वृन्दारकातिशये ।

(अतिशय बाढका नाम)
साधिष्ठ १ ॥ (अतिशय दीर्घका नाम)

द्राधिष्ठ १ ॥ अतिशय स्थिरका नाम)
स्फेष्ठ १ ॥ (अतिशय गुरुका नाम)
गरिष्ठ १ ॥ अतिशय ह्रस्वका नाम) हसिष्ठ
१ ॥ (अतिशय वृन्दारका नाम)
वृन्दिष्ठ १ ॥ ११२ ॥

इति विशेष्यनिन्नवर्गः ॥ १ ॥

अथ संकीर्णवर्गः २.
प्रकृतिप्रत्यार्थाद्यैः संकीर्णै-
लिङ्गमुच्येत ।

—प्रकृतिप्रत्यय आदिके अर्थोंके
द्वारा संकीर्णवर्गम लिंग जानने ॥

कर्म क्रिया—

क्रियाके नाम २—कर्मन् १ क्रिया २ ॥

—तत्सातत्ये गम्ये स्युरपर-
स्पराः ॥ १ ॥

अपरस्पर्शके निरन्तर चलनेका नाम
१—अपरस्पर १ ॥ १ ॥

साकल्यासंगवचने पारायणप-
रायणे ।

साकल्यके वचनका नाम १—पारा-
यण १ ॥ आसंगके वचनका नाम १—
परायण १ ॥

यदृच्छा स्वैरिता—

स्वतन्त्रताके नाम—यदृच्छा २ १
स्वैरिता ॥ २ ॥

—हेतुशून्या त्वास्या विल-
क्षणम् ॥ २ ॥

विना कारणकी स्थितिका नाम १—
विलक्षण १ ॥ २ ॥

शमथस्तु शमः शान्ति—
शांतिके नाम ३—शमथ १ शम २
शान्ति ३ ॥

—दान्तिस्तु दमथो दमः ।
इंद्रियोंके रोकनेके नाम ३—दांति
१ दमथ २ दम ३ ॥

अवदानं कर्मवृत्तं—
अच्छे कर्मके नाम २—अवदान १
कर्मवृत्त २ ॥

—काम्यदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥
कामना करके दान देनेके नाम २—
काम्यदान १ प्रवारण २ ॥ ३ ॥

वशक्रिया संवननं—
वशीकरणके नाम २—वशक्रिया १
संवनन २ ॥

मूलकर्म तु कर्मणम् ।
औषधीकी जड़ आदिसे उच्चाटनके
नाम २—मूलकर्म १ कर्मण २ ॥

विधूननं विधुवनं—
कापनेके नाम २—विधूनन १
विधुवन २ ॥

तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥
तृप्तिके नाम ३—तर्पण १ प्रीणन २
अवन ३ ॥ ४ ॥

पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्त-
धारणमित्यपि ।

कोई किसीको मारता हो उसके रोक
लेनेके अर्थ हाथ पकड़ लेनेके नाम ३—
पर्याप्ति १ परित्राण २ हस्तधारण ३ ॥

सेवनं सीवनं स्यूति—
सीनेके नाम ३—सेवन १ सीवन २
स्यूति ३ ॥

—विंदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥
फूटनेके नाम ३—विंदर १ स्फुटन २
भिदा ३ ॥ ५ ॥

आक्रोशनमभीषङ्गः—
गरियानेके नाम २—आक्रोशन १
अभीषङ्ग २ ॥

—संवेदो वेदना न ना ।
अनुभवज्ञानके नाम २—संवेद १
वेदना २ ॥

संमूर्च्छनमभिव्याप्ति—
सब ओरसे व्याप्तिके नाम २—संमू-
र्च्छन १ अभिव्याप्ति २ ॥

—र्याच्चा भिक्षाऽर्थनार्दना ॥ ६ ॥
भीखके नाम ४—र्याच्चा १ भिक्षा २
अर्थना ३ अर्दना ४ ॥ ६ ॥

वर्धनं छेदने—
काटनेके नाम २ वर्धन १ छेदन २ ॥
—ऽथ द्वे आनन्दनसभाजने ।

आप्रच्छन्न—

कुशल प्रश्न पूछनेसे उत्पन्न हुए
आनन्दके नाम ३—आनन्दन १
सभाजन २ आप्रच्छन्न ३ ॥

—मथाम्नायः संप्रदायः—

गुरुके उत्तम परम्परा उपदेश कर-
नेके नाम २—आम्नाय १ सम्प्रदाय २ ॥

—क्षये क्षिया ॥ ७ ॥

क्षय होनेके नाम २—क्षय १
क्षिया २ ॥ ७ ॥

ग्रहे ग्राहो—

लेनेके नाम २—ग्रह १ ग्राह २ ॥

—वशः कान्तौ—

इच्छाके नाम २—वश १ कान्ति २ ॥

—रक्षणेस्त्राणे—

रक्षाके नाम २—रक्षण १ त्राण २

—रणः कणे ।

शब्द करनेके नाम २—रण १ कण २ ॥

व्यधो वेधे—

छेदनेके नाम २—व्यध १ वेध २ ॥

—पचा पाके—

अन्नादि पकानेके नाम २—पचा १
पाक २ ॥

—हवो हूतौ—

बुलानेके नाम २—हव १ हूति २ ॥

—वरो वृतौ ॥ ८ ॥

वरदानके नाम २—वर १ वृत्ति २ ॥ ८ ॥

ओषः प्लोषे—

जलानेके नाम २—ओष १ प्लोष २ ॥

—नयो नाये—

नीतिके नाम २—नय १ नाय २ ॥

—ज्यानिर्जीर्णौ—

जीर्णताके नाम २—ज्यानि १
जीर्ण २ ॥

भ्रमो भ्रमौ ।

भ्रमके नाम २—भ्रम १ भ्रमि २ ॥

स्फातिर्वृद्धौ—

बढ़तीके नाम २—स्फाति १ वृद्धि २ ॥

—प्रथा ख्यातौ—

प्रसिद्धताके नाम २—प्रथा १
ख्याति २ ॥

स्पृष्टिः पृक्तौ—

छूनेके नाम २—स्पृष्टि १ पृक्ति २ ॥

स्नवः स्त्रवे ॥ ९ ॥

झरनेके नाम २—स्त्रव १ स्नव २ ॥ ९ ॥

एधा समृद्धौ—

वृद्धिके नाम २—एधा १ समृद्धि २ ॥

—स्फुरण स्फुरणा—

फडकनेके नाम २—स्फुरण १ स्फुरणा २ ॥

—प्रमितौ प्रमा ।

यथार्थज्ञानके नाम २—प्रमिति १

प्रमा २ ॥

प्रसूतिः प्रसवे-

जन्म होनेके नाम २-प्रसूति १

प्रसव २ ॥

-च्योते प्राधारः-

घृतादिके चुअनेके नाम २-च्योत १

प्राधार २ ॥

-क्लमथः कलमे ॥ १० ॥

ग्लानिके नाम २-क्लमथ १ कलम

२ ॥ १० ॥

उत्कर्षोऽतिशये-

प्रकर्षके नाम २-उत्कर्ष १ अति-

शय २ ॥

-संधिः श्लेषे-

मिलापके नाम २-संधि १ श्लेष २ ॥

-विषय आश्रये ।

आश्रयके नाम २-विषय १

आश्रय २ ॥

क्षिपायां क्षेपणं-

फेंकने (प्रेरणे) के नाम २-क्षिपा

१ क्षेपण २ ॥

-गीर्णिगिरौ

लीलने (निगलने) के नाम २-

गीर्णि १ गिरि २ ॥

-गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥

उद्यमके नाम २-गुरण १ उद्यम

२ ॥ ११ ॥

उन्नाय उन्नये-

ऊपरको ले जानेके नाम २-उन्नाय

१ उन्नय २ ॥

-श्रायः श्रयण-

सेवाके नाम २-श्राय १ श्रयण २ ॥

जयने जयः ।

जीतके नाम २-जयन १ जय २ ॥

निगादो निगदे-

कहनेके नाम २-निगाद १ निगद २ ॥

-मादो मद-

हर्षके नाम २-माद १ मद २ ॥

-उद्देग उद्गमे ॥ १२ ॥

धवरानेके नाम २-उद्देग १ उद्गम

२ ॥ १२ ॥

विमर्दनं परिमले-

कुंकुम आदि मर्दनके नाम २-

विमर्दन १ परिमल २ ॥

-ऽभ्युपपत्तिरनुग्रहः ।

हित करने अनहित हटानेकी प्र-

वृत्तिके नाम २-अभ्युपपत्ति १ अनु

ग्रह २ ॥

निग्रहस्ताद्विरुद्धः स्या-

अनुग्रहसे विपरीतका नाम १-

निग्रह १ ॥

-दभियोगस्त्वभिग्रहः ॥ १३ ॥

लडाईमें ललकारनेके नाम २-अ-

भियोग १ अभिग्रह ॥ १३ ॥

मुष्टिवन्धस्तु संग्राहो—
 मूठीसे दृढ पकड़नेके नाम २—मुष्टि-
 बन्ध १ संग्राह २ ॥
 —डिम्बे डमरविप्लवौ ।
 मनुष्योंके छूटनेके नाम ३—डिम्ब १
 डमर २ विप्लव ३ ॥
 बन्धनं प्रसितिश्चारः—
 बांधनेके नाम ३—बन्धन १ प्रसिति
 २ चार ३ ॥
 —स्पर्शः स्पष्टोपतत्तरि ॥ १४ ॥
 सन्तापको प्राप्त हुए पुरुषके नाम ३—
 स्पर्श १ स्पष्ट २ उपतप्त ३ ॥ १४ ॥
 निकारो विप्रकारः स्या—
 अपकारके नाम २—निकार १ विप्र-
 कार २ ॥
 —दाकारस्त्विङ्ग इङ्गितम् ।
 अभिप्रायके अनुसार चेषाके नाम
 ३—आकार १ इङ्ग १ इङ्गित ३ ॥
 परिणामो विकारो द्वे समे वि-
 कृतिर्विक्रिये ॥ १५ ॥
 प्रकृति बदल जानेके नाम ४—परि-
 णाम १ विकार २ विकृति ३ विक्रि-
 या ४ ॥ १५ ॥
 अपहारस्त्वपचयः—
 अपहरणके नाम २—अपहार १
 अपचय २ ॥

समाहारः समुच्चयः ।
 बंदोरनेके नाम २—समाहार १ समुच्चय २ ॥
 प्रत्याहार उपादानं—
 इंद्रियोंके खींचनेके नाम २—प्रत्या-
 हार १ उपादान २ ॥
 —विहारस्तु परिक्रमः ॥ १६ ॥
 खेलनेमें पैदल चलनेके नाम २—
 विहार १ परिक्रम २ ॥ १६ ॥
 अभिहारोऽभिग्रहणं—
 चोरी करनेके नाम २—अभिहार १
 अभिग्रहण २ ॥
 निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।
 युक्तिपूर्वक शस्त्रादि निकालनेके ना-
 म २—निर्हार १ अभ्यवकर्षण २ ॥
 अनुहारोऽनुकारः स्या—
 विडम्बना अर्थात् नकल करनेके
 नाम २—अनुहार १ अनुकार २ ॥
 —दर्शस्यापगमे व्ययः ॥ १७ ॥
 खर्च करनेका नाम १—व्यय १ ॥ १७ ॥
 प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात्—
 जलआदिकी निरन्तर गतिके ना-
 म २—प्रवाह १ प्रवृत्ति २ ॥
 —प्रवहो गमनं बाहिः ।
 बाहर जानेका नाम १—प्रवह १ ॥
 वियामो वियमो यामो यमः
 संयामसंयमौ ॥ १८ ॥

संयमके नाम ६-वियाम १ वियम २
याम ३ यम ४ संयाम ५ संयम ६ ॥ १८ ॥

हिंसाकर्माभिचारः स्या-

मार डालनेके नाम २-हिंसाकर्म १
अभिचार २ ॥

-जागर्या जागरा द्वयोः ।

जागनेके नात्र २-जागर्या १ जागरा २ ॥

विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः-

विघ्नके नाम ३-विघ्न १ अन्तराय २
प्रत्यूह ३ ॥

-स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये ॥ १९ ॥

समीपके आश्रयके नाम २-उपघ्न १
अन्तिकाश्रय २ ॥ १९ ॥

निर्वेश उपभोगः स्या-

उपभोगके नाम २-निर्वेश १ उप-
भोग २ ॥

-त्परिसर्पः परिक्रिया ।

परिवारके घेरनेके नाम २-परिसर्प
१ परिक्रिया २ ॥

विधुरं तु प्रविश्लेषो-

अत्यन्त वियोगके नाम २-विधुर
१ प्रविश्लेष २ ॥

-ऽभिप्रायश्छन्द आशयः ॥ २० ॥

अभिप्राय अर्थात् मनकी बातके
नाम ३-अभिप्राय १ छन्द २
आशय ३ ॥ २० ॥

संक्षेपणं समसनं-

संक्षेपके नाम २-संक्षेपण १ सम-
सन २ ॥

-पर्यवस्था विरोधनम् ।

विरोधके नाम २-पर्यवस्था १
विरोधन २ ॥

परिसर्या परीसारः-

सब ओर गमन करनेके नाम २-
परिसर्या परीसार २ ॥

स्यादास्या त्वासना स्थितिः

॥ २१ ॥

आसनस्थितिके नाम ३-आस्या

१ आसना २ स्थिति ३ ॥ २१ ॥

विस्तारो विग्रहो व्यासः-

विस्तारके नाम ३-विस्तार १ विग्रह
२ व्यास ३ ॥

स च शब्दस्य विस्तरः ।

शब्दके विस्तारका नाम १-
विस्तर १ ॥

संवाहनं मर्दनं-

पाँव आदिके दाबनेके नाम २-संवा-
हन १ मर्दन २ ॥

-स्याद्विनाशः स्याददर्शनम् ॥ २२ ॥

न देख पडनेके नाम २-विनाश १
अदर्शन २ ॥ २२ ॥

संस्तवः स्यात्परिचयः-

जान पहिचानके नाम २-संस्तव १
परिचय २ ॥

—प्रसरस्तु विसर्पणम् ।
फसनेके नाम २—प्रसर १ विस-
र्पण २ ॥

नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्—
धन धान्यादिके बटोरनेके नाम २ ॥
नीवाक १ प्रयाम २ ॥

—संनिधिः संनिकर्षणम् ॥ २३ ॥
पडोस (निकट) के नाम २—
संनिधि १ संनिकर्षण २ ॥ २३ ॥

लवोऽभिलावो लवन—
काटनेके नाम ३—लव- १ अमि-
लाव २ लवन ३ ॥

—निष्पावः पवने पवः ।
अन्नादि पछोरने(वरसाने) आदिके
नाम ३—निष्पाव १ पवन २ पव ३ ॥

प्रस्तावः स्यादवसर—
प्रसंगके नाम २—प्रस्ताव १ अवसर २
—स्त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥

जुलाहे लोग जिस तरह सूत्र कोल-
टतेहैं उस क्रियाके नाम २—त्रसर १
सूत्रवेष्टन २ ॥ २४ ॥

प्रजनः स्यादुपसरः—
गार्भणि होनेके नाम २—प्रजन १
उपसर २ ॥

—प्रश्रयप्रणयौ समौ ।
प्रेमके नाम २—प्रस्रय १ प्रणय २ ॥

धीशक्तिर्निष्क्रमा—
धी (बुद्धि) शक्तिके नाम २—
धीशक्ति १ निष्क्रम २ ॥

—ऽस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचर-
॥ २५ ॥
कठिन रस्तेके नाम—२ संक्रम १
दुर्गसंचर २ ॥ २५ ॥

प्रत्युत्क्रमः प्रयोगार्थः—
युद्धके अर्थ तैयारी करनेके नाम २—
प्रत्युत्क्रम १ प्रयोगार्थ २ ॥

—प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।
स्यादभ्यादानमुद्धात आरम्भः
आरम्भमात्रके नाम ५—प्रक्रम १
उपक्रम २ अभ्यादान ३ उद्धात ४
आरम्भ ५ ॥

—संभ्रमस्त्वेरा ॥ २६ ॥
वेगके नाम २—संभ्रम १ स्त्वेरा
२ ॥ २६ ॥

प्रतिबन्धः प्रतिष्ठम्भो—
कार्य रुक जानेके नाम २—प्रतिबन्ध
१ प्रतिष्ठम्भ २ ॥

—ऽवनायस्तु निपातनम् ।
गिरनेके नाम २—अवनाय १ नि-
पातन २ ॥

उपलम्भस्त्वनुभवः—
साक्षात् करनेके नाम २—उपलम्भ १
अनुभव २ ॥

—समालम्भो विलेपनम् ॥ २७ ॥
चन्द्रनादिके लेपनके नाम २—समा-
लम्भ १ विलेपन २ ॥ २७ ॥

विप्रलम्भो विप्रयोगी—
वियोगके नाम २—विप्रलम्भ १
विप्रयोग ॥ २ ॥

—विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ।
दानके नाम २—विलम्भ १ अतिसर्जन २ ॥
विश्रावस्तु प्रतिख्याति—
अतिप्रसिद्धिके नाम २—विश्राव १
प्रतिख्याति २ ॥

—रवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥
वस्तुओंके देखनेके नाम २—अवे-
क्षा प्रतिजागर २ ॥ २८ ॥

निपाठनिषठौ पाठे—
पढनेके नाम ३—निपाठ १ निषठ २
पाठ ३ ॥

—तेमस्तेमौ समुन्दने ।
गीला होनेके नाम ३—तेम १ स्तेम २
समुन्दन ३ ॥

आदीनवास्त्रवौ कुशे—
क्लेशके नाम ३—आदीनव १ आ-
स्त्रव २ क्लेश ३ ॥

—मेलके सङ्गसङ्गमौ ॥ २९ ॥
मेलके नाम ३—मेलक १ संग २
संगम ३ ॥ २९ ॥

संवीक्षणं विचयनं मार्गणं
मृगणा मृगः ।

अच्छे प्रकार ढूँढनेके नाम ५—संवी-
क्षण १ विचयन २ मार्गण ३ मृगणा ४
मृग ५ ॥

परिरम्भः परिष्वगः संश्लेष उप-
गूहनम् ॥ ३० ॥

प्रेमपूर्वक लिपटजानेके नाम ४—
परिरम्भ १ परिष्वग २ संश्लेष ३ उप-
गूहन ४ ॥ ३० ॥

निर्वर्णनं तु निध्यानं दर्शना-
लोकनेक्षणम् ।

देखनेके नाम ५—निर्वर्णन १ नि-
ध्यान २ दर्शन ३ आलोकन ४ ईक्षण ५ ॥

प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्या-
देशो निराकृतिः ॥ ३१ ॥

निराकरणके नाम ४—प्रत्याख्यान १
निरसन २ प्रत्यादेश ३ निराकृति ४ ॥ ३१ ॥

उपशायो विशायश्च पर्याय-
शयनार्थकौ ।

अनुक्रमसे पहरेपर जागने सोनेवा-
लेके नाम २—उपशाय १ विशाय २ ॥

अर्तनं च ऋतीया च हर्णीया
च घृणार्थकाः ॥ ३२ ॥

करुणा वा घिनानेके नाम ४—अर्तन
१ ऋतीया २ हर्णीया ३ घृणा ४ ॥ ३२ ॥

स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो
व्यत्ययश्च विपर्यये ।

विपरीतके नाम ४—व्यत्यास १
विपर्यास २ व्यत्यय ३ विपर्यय ४ ॥
पर्ययोऽतिक्रमस्तस्मिन्नति—
पात उपात्पयः ॥ ३३ ॥
किञ्चित् विपरीतके नाम ४—पर्यय १
अतिक्रम २ अतिपात ३ उपात्पय ४ ॥
॥ ३३ ॥

प्रेषणं यत्समाह्वय तत्र स्या—
त्प्रतिशासनम् ।
टहछ आदिको बुलाकर भेजनेका
नाम १—प्रतिशासन १ ॥

स संस्तावः क्रतुषु या स्तुति—
भूमिर्द्विजन्मनाम् ॥ ३४ ॥

यज्ञमें ब्राह्मणोंके स्तवनभूमिका
नाम १—संस्ताव १ ॥ ३४ ॥

निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे
काष्ठं स उद्धनः ।

बहुटन बठिहा (जिसके ऊपर काष्ठ
धरा जाता है) का नाम १—उद्धन १ ॥

स्तम्बवन्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो
येन निहन्यते ॥ ३५ ॥

खुरपा आदिके नाम २—स्तम्बघन १
स्तम्बघन २ ॥ ३५ ॥

आविधो विध्यते येन ।

वरमेका नाम १—आविध १ ॥

--तत्र विष्वक्समे निघः ।

बराबर जमे हुए वृक्षादिकोंका नाम

१—निघ १ ॥

उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्ये
क्षेपणार्थकौ ॥ ३६ ॥

अनाज आदि निकालनेके नाम २—
उत्कार १ निकार २ ॥ ३६ ॥

निगारोद्धारविक्षावोद्ग्राहास्तु
गरणादिषु ।

(खानेका नाम) निगार १ ॥

(उलटी करनेका नाम) उद्धार १ ॥

(छीकनेका नाम) विक्षाव १ ॥

(डकारनेका नाम) उद्ग्राह १ ॥

आरत्यवरतिविरतय उपरामे—

उपरामके नाम ४—आरति १ अवर-
ति २ विरति ३ उपराम ४ ॥

ऽथास्त्रियां तु निष्ठेवः ॥ ३७ ॥

निष्ठ्यूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमि-
त्यभिन्नानि ।

थूकनेके नाम ४—निष्ठेव १ ॥ ३७ ॥

निष्ठ्यूति २ निष्ठेवन ३ निष्ठीवन ४ ॥

जवने जूतिः—

वेगके नाम २—जवन १ जूति २ ॥

—सातिस्त्ववसाने स्या—

अन्तके नाम २—साति १ अवसान २ ॥

—दथ ज्वरे जूर्तिः ॥ ३८ ॥

ज्वरके नाम २-ज्वर१जूर्ति २॥
॥ ३८ ॥

उदजस्तु पशुप्रेरण-
पशुओंके हांकनेका नाम १-उदज१॥

-मकरणिरित्यादयः शापे ।
शापका नाम १-अकरणि १॥इत्यादि
गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौ-
पगवकादिकम् ॥ ३९ ॥

जिसके समीप गाये हों उसके
समूहका नाम१-औपगवक१॥ ३९॥

आपूपिकं शाष्कुलिकमेवमाद्य-
अर्चैतसाम् ।

(पूओंके समूहका नाम) आपू-
पिक १ ॥ (पूरियोंके समूहका नाम)
शाष्कुलिक १ आदि ॥

माणवानां तु माणव्य-
लडकोंके समूहका नाम१-माणव्य१॥

-सहायानां सहायता ॥ ४० ॥
मित्रोंके समूहका नाम १-सहा-

यता १ ॥ ४० ॥

हल्या हलानां-
हलोंके समूहका नाम १ ॥ हल्या१॥

-ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विज-
न्मनाम् ।

ब्राह्मणोंके समूहके नाम२-ब्राह्मण्य
१ वाडव्य २ ॥

द्वे पशुकानां पृष्ठानां पार्श्व
पृष्ठचमनुक्रमात् ॥ ४१ ॥

पांसलियोंके समूहका नाम१-पार्श्व
१ ॥ पीठके समूहका नाम २ ॥

पृष्ठच१॥४१॥
खलानां खलिनी खल्याऽ-

खलोंके समूहके नाम २-खलिनी१
खल्या २ ॥

-प्यथ मानुष्यकं नृणाम् ।
मनुष्योंके समूहका नाम १-मानु-

ष्यक १ ॥
-ग्रामता जनता धूम्या पाश्या

गल्या पृथक्पृथक् ॥ ४२ ॥
(ग्रामोंके समूहका नाम)ग्रामता१॥

(जनोंके समूहका नाम) जनता १ ॥
(धूमके समूहका नाम) धूम्या१॥(फां-

सियोंके समूहका नाम)पाश्या १॥ बड़े
काशोंके समूहका नाम)गल्या१ ॥४२॥

अपि साहस्रकारीषवार्मणार्थव-
णादिकम् ।

(सहस्रके समूहका नाम)
साहस्र १ ॥(करसीके समूहका नाम)

कारीष१॥ (कवचोंके समूहका नाम)
वार्मण १॥(चमडोंके समूहका नाम)

चार्मण १॥(अथर्वणोंके समूहका नाम)
आथर्वण १ ॥

॥ इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

अथ नानार्थवर्गः ३.

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्ग-
ष्वेवात्र कीर्तिताः । भूरिप्रयोगा
ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥

कोई ककारान्तादि नानार्थके
शब्द पूर्वोक्तवर्गोंमें कहचुके हैं, परन्तु
उनका पूर्वोक्तवर्गोंमें जो प्रयोग किया है
सो जिस अर्थमें जो शब्द अधिक आता
है उस एक ही अर्थमें कहा है, अब
उन ही पूर्वोक्त वर्गोंमें कहेहुए शब्दोंके
यहां अनेक अर्थ वर्णन करते हैं ॥ १ ॥

आकाशे त्रिदिवे नाको-

नाक-आकाश तथा स्वर्ग ॥

-लोकस्तु भुवने जने ।

लोक-स्वर्गादि लोक तथा जन ॥

पद्ये यशसि च श्लोकः-

श्लोक-अनुष्टुपादि पद्य तथा कीर्ति ॥

-शरे खड्गे च सायकः ॥ २ ॥

सायक-तीर तथा तलवार ॥ २ ॥

जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ-

जम्बुक-शृगाल तथा वरुण ॥

-पृथुकौ चिपिटाभकौ ।

पृथुक-चिबड़ा तथा बालक ॥

आलोकौ दर्शनद्योतौ-

आलोक-दर्शन तथा प्रकाश ॥

-भेरी पटहमानकौ ॥ ३ ॥

आनक-भेरी तथा नगाडा ॥ ३ ॥

उत्सङ्गचिह्नयोरङ्कः-

अंक-गोदी तथा चिह्न ॥

-कलंकौऽकापवादयोः ।

कलंक-चिह्न तथा लाञ्छन ॥

तक्षको नागवर्धक्यो-

तक्षक-सर्प तथा बडई ॥

-ऽर्कः स्फटिकसूर्ययोः ॥ ४ ॥

अर्क-स्फटिक मणि तथा सूर्य ॥ ४ ॥

मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः

कं शिरोम्बुनोः ।

क-(पुंलिङ्ग) वायु, ब्रह्मा, सूर्य

क-(नपुं.) शिर तथा जल ॥

स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे

भक्तासिक्क्यके ॥ ५ ॥

पुलाक-धानकी भूसी, संक्षेप तथा

भातका सीत ॥ ५ ॥

उलूके करिणः पुच्छमूलो-

पान्ते च पेचकः ।

पेचक-उल्लूकक्षी तथा हाथीके

पुरीषद्वारका आच्छादक मांस ॥

कमण्डलौ च करकः-

करक-बनौरी(ओला)जो कभी कभी

पानी के संग बरसती है तथा अनारफल ।

-सुगते च विनायकः ॥ ६ ॥

विनायक-बुद्ध, गणेश, तथा गच्छ ॥ ६ ॥

किष्कुर्हस्ते वितस्तौ च-

किष्कु-हाथ तथा वितस्ति ॥

-शूककीटे च वृश्चिकः ।

वृश्चिक-विच्छू तथा आठवीं राशि ॥

प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिष्वेकदेशे

तु पुंस्ययम् ॥ ७ ॥

प्रतीक-प्रतिकूल ॥ ७ ॥

स्याद्भूतिकं तु भूनिम्बे कत्तृणे
भूस्तृणेऽपि च ।

भूतिक-चिरायता-औषधी और
गन्ध तृणविशेष ॥

ज्योत्स्निकायां च घोषे च
कोशातक्य-

कोशातकी-एक प्रकारका फल
परवर, तरकारी तथा चिचिटा वृक्ष ॥

-थ कट्फले ॥ ८ ॥

सिते च खदिरे सोमवलकः

स्या-

सोमवलक-सपेद खैर तथा काय-
फल औषधी ॥ ८ ॥

-दथ सिंहके ।

तिलकल्के च पिण्याको-

पिण्याक-सिंहक तथा तिलकी खरी

-बाहीकं रामठेऽपि च ॥ ९ ॥

बाहीक-रामठहींग तथा बाहीक-
देशमें होनेवाला अश्व ॥ ९ ॥

महेन्द्रगुग्गुलूकव्यालया-

हिषु कौशिकः ।

कौशिक-इन्द्र, गुग्गुल, उल्लपक्षी

तथा सांपका पकड़नेवाला ॥

रुक्तापशङ्कास्वांतकः-

आतंक-रोग, ताप तथा शंका ॥

-स्वल्पेऽपि क्षुल्लकस्त्रिषु ॥ १० ॥

क्षुल्लक-छोटा तथा बीच, कनिष्ठ

और दरिद्र ॥ १० ॥

जैवातृकः शशांकेऽपि-

जैवातृक-चन्द्रमा तथा दीर्घायु पुरुष ॥

-खुरेऽप्यश्वस्य वर्तकः ।

वर्तक-धोडेके खुर तथा पक्षी ॥

व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको ना-

पुण्डरीक-व्याघ्र दिग्गज तथा श्वेत

कमल ॥

-यवान्यामपि दापकः ॥ ११ ॥

दीपक-दीया तथा मोरकी चोटी ॥ ११ ॥

शालावृकाः कपिक्रोष्टुश्चानः-

शालावृक-कुत्ता, बन्दर तथा सियारा ॥

-स्वर्णेऽपि गैरिकम् ।

गैरिक-गेरुधातु तथा सोना ॥

पीडार्थेऽपि व्यलीकं स्या-

व्यलीक-पीडा तथा झूठ ॥

-दलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ १२ ॥

अलीक-अप्रिय तथा झूठ ॥ १२ ॥

शीलान्वयावनूके--

अनूक-स्वभाव तथा वंश ॥

-द्वे शलके शकलवलकले ।

शल - टुकड़ा तथा छुकला ॥

सा - शते सुवर्णानां हेमन्यु-

रोभूषणे पले ॥ १३ ॥ दीना-

रेऽपि च निष्कोऽस्त्री-

निष्क-सोना एक प्रकारका गलेका

भूषण तथा असर्फी ॥ १३ ॥

-कल्कोऽस्त्री शमलैनसोः ।

दम्भे-

कल्क-मलिन तथा पाप और

पाखण्ड ॥

-प्यथ पिनाकोऽस्त्रीशू लश-

कथन्वनोः ॥ १४ ॥

पिनाक-शूल तथा महादेवका

धनुष ॥ १४ ॥

धेनुका तु करेणवां च-

धनुका-हथिनी तथा नई व्याई हुई गौ

-मेघजाले च कालिका ।

कालिका-मेघका समूह तथा देवी ॥

कारिका यातनावृत्योः-

कारिका-नरकपीडा तथा करना ॥

कर्णिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥

करिहस्तेऽङ्गुलौ पञ्चबीज-

कोश्यां-

कर्णिका-कानकी भूषण, ॥ १५ ॥

हाथीकी सूंडका अग्रभाग तथा कमलके

बीज रहनेका कमलका भाग ॥

--त्रिषूक्षरे ।

आगे जो शब्द कहे जायेंगे

वे तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

वृन्दारकौ रूपमुख्या-

वृन्दारक-देवता सुन्दर तथा मुख्य ॥

--वेके मुख्यान्यकेवलाः ॥ १६ ॥

एक-मुख्य अन्य तथा केवल ॥ १६

स्याद्दाम्भिकः कौकुटिको

यश्चादूरेरितक्षणः ॥

कौकुटिक-मायाकरनेवाला तथा

धोरेसे ही देखनेवाला !

लालाटिकः प्रभोर्भालदर्शी

कार्याक्षमश्च यः ॥ १७ ॥

लालाटिक-जो कार्य करनेमें असमर्थ

हो और स्वामीका मुख देखे ॥ १७ ॥

॥ इति कान्ताः ॥

मयूखस्त्विदंकरज्वाला-

मयूख-कान्ति, किरण तथा ज्वाला ॥

--स्वालिवाणौ शिलीमुखौ ।

शिलीमुख-धमर तथा वाण ॥

शंखो निधौ ललाटास्थि

कम्बौ न स्त्री-

शंख-एकनिधि, ललाटकी हड्डी

और शङ्ख ॥

—न्द्रियेऽपि खम् ॥ १८ ॥

ख—शून्य तथा इन्द्रिय ॥ १८ ॥

घृणिज्वाले अपि शिखे-

शिखा—किरण ज्वाला तथा चोटी ॥

॥ इति खान्ताः ॥

—शैलवृक्षौ नगावगौ ।

नग—अग—पर्वत और वृक्ष ॥

आशुगौ वायुविशिखौ—

आशुग—वायु तथा बाण ॥

—शरार्कविहगाः खगाः ॥ १९ ॥

खग—बाण; सूर्यादि ग्रह तथा पक्षी

॥ १९ ॥

पतङ्गौ पक्षिसूर्यौ च—

पतंग—सूर्य तथा पक्षी ॥

—पूगः क्रमुकवृन्दयोः ।

पूग—सुपारी तथा समूह ॥

पशवोऽपि मृगा—

मृग—हरिण, ढंढना, पशु ॥

—वेगः प्रवाहजवयोरपि ॥ २० ॥

वेग—प्रवाह तथा जोरसे चलना २० ॥

परागः कौसुमे रेणौ स्नानी-

यादौ रजस्यपि ।

पराग—पुष्पधूलि स्नान करनेके

योग्य मसाला तथा धूलि ॥

गजेऽपि नागमातङ्गा—

नाग—मातङ्ग—हाथी तथा चण्डाल

वा डोम ॥

—वपाङ्गस्तिलकेऽपि च ॥ २१ ॥

अपांग—नेत्रोंके कोने, अंगहीन तथा

तिलक ॥ २१ ॥

सर्गः स्वभावनिर्मोक्षानिश्चया-

ध्यायसृष्टिषु ।

सर्ग—स्वभाव, त्याग, निश्चय तथा

ग्रंथका अध्याय, सृष्टि ॥

योगः संनहनोपायध्यानसंग-

तियुक्तिषु ॥ २२ ॥

योग—कवच सामदानादि, ध्यान

तथा मेल और युक्ति ॥ २२ ॥

भोगः सुखे रुयादिभृतावहेश्व-

फणकाययोः ।

भोग—सुखदेनेवाला तथा सुख, वेदया

आदिको पालन करना वा मोल लेना

सर्पका फन और शरीर ॥

चातके हरिणे पुंसि सारङ्गः

शबले त्रिषु ॥ २३ ॥

सारंग—चितकबरा रङ्गवाला; चित-

कबरा रङ्ग, मृगपशु, पक्षी, पपीहा पक्षी

तथा मृगी ॥ २३ ॥

कपौ च प्लवगः—

प्लवग—बन्दर, मेढक तथा सारथि ॥

—शापे त्वभिषङ्गः पराभवे ।

अभिषङ्ग—शाप तथा अनादर ॥

यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं

युग्मे कृतादिषु ॥ २४ ॥

युग (पुँलिङ्ग)—जुँआ, युग—(नपुं-
सक) जोडा (दो), सत्ययुगादि तथा
चार हाथ ॥ २४ ॥

स्वर्गेषु पशुवाग्वज्रदिङ्नेत्र घृणि-
भुजले । लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि
गौ—

गौ—(पुँलिङ्ग—स्त्रीलिङ्ग) स्वर्ग,
बाण, पशु—(गाय—बैल,) वाणी, वज्र,
दिशा, नेत्र, किरण, भूमि, तथा जल ॥

—लिङ्गं चिह्नशेफसोः ॥ २५ ॥
लिङ्ग—चिह्न तथा शिश्न इन्द्रिय ॥ २५ ॥

शृङ्गं प्राधान्यसान्वोश्च—
शृङ्ग—प्रभुता अर्थात् प्रधानता
तथा कंगूरा ॥

—वराङ्गं मूर्धगुह्ययोः ।
वराङ्ग—माथा तथा स्त्रीका मूत्रद्वारा ॥
भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्य-
यत्नार्ककीर्तिषु ॥ २६ ॥

भग—लक्ष्मी, इच्छा, ऐश्वर्य, वीर्य,
लषाय, सूर्य, बडाई ॥ २६ ॥

॥ इति गान्ताः ॥

परिघः परिघातेऽस्त्रे—

परिघ—चारों ओरसे मारना तथा
खस्त्र ॥

—ऽप्योघो वृन्देऽम्भसां रये ।

ओघ—समूह तथा जलका वेग ॥

—मूल्ये पूजाविधावर्धो—

अर्ध—मूल्य तथा पूजार्थे जल देना ॥

—ऽहो दुःखव्यसनेष्वधम् ॥ २७ ॥

अध—पाप, दुःख, शिकार, जुआ
खेलना आदि ॥ २७ ॥

त्रिष्विष्टेऽल्पे लघुः—

लघु—इष्ट और थोडा ॥

॥ इति घान्ताः ॥

—काचाः शिष्यमृद्देदद्वयुजः ।

काच—छींका, काचका भेद तथा
नेत्ररोग ॥

विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः—

प्रपञ्च—विपरीत तथा शब्दका
विस्तार और जगत् तथा ठगना ॥

—पावके शुचिः ॥ २८ ॥

भास्यमात्ये चात्युपये पुंसि भेध्ये
सिते त्रिषु ।

शुचि—(पु०) अग्नि ॥ २८ ॥

आषाढमास, राजाका मन्त्री, निष्कपट
(त्रि०) पवित्र तथा श्वेत वस्तु ॥

अभिष्वङ्गे स्पृहायां च गभस्तौ
च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥

रुचि—आलिङ्गन करना, इच्छा तथा
किरण ॥ २९ ॥

॥ इति चान्ताः ॥

केकिताक्षर्यावाहि भुजौ—

अहिभुक्-मोर और गरुड ॥

दन्तविप्राण्डजा द्विजाः ।

द्विज-दांत, पक्षी तथा ब्राह्मण ॥

अजा विष्णुहरच्छागा-

अज-विष्णु, शिव तथा वकरा ॥

-गोष्ठाध्वनिवहा ब्रजाः ॥ ३० ॥

ब्रज-गोशाला, मार्ग और समूह ॥ ३० ॥

धर्मराजौ जिनयमौ-

धर्मराज-जिन (बुद्ध) और यमराज ॥

-कुञ्जो दन्तेऽपि न स्त्रियाम् ।

कुञ्ज-हाथीका दांत और सघन वन ।

वलजे क्षेत्रपूर्दारे वलजा

बलगुदर्शना ॥ ३१ ॥

वलज-(न०) खेत, नरका दर-

वाजा (स्त्री) सुन्दर स्त्री ॥ ३१ ॥

समे क्षमांशे रणेऽप्याजिः-

आजि-पृथ्वीका समान भाग और संग्राम

-प्रजा स्यात्संततौ जने ।

प्रजा-संतान और जनसमूह ॥

अब्जौ शंखशशांकी च-

अब्ज-शंख और चन्द्रमा ॥

-स्वक नित्ये निजं त्रिषु

॥ ३२ ॥

निज-(त्रि०) अपना तथा नित्य ३२

॥ इति जान्ताः ॥

पुंस्यात्मानि प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो

वाच्यालिङ्गकः ।

क्षेत्रज्ञ-आत्मा और चतुर ॥

संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यै-

श्वार्थसूचना ॥ ३३ ॥

संज्ञा-चेतनशक्ति, नाम और हस्त

आदिसे अभिप्रायका प्रगट करना ॥ ३३

॥ इति जान्ताः ॥

काकेभगण्डौ करटौ-

करट-काक और हस्तीका गण्डस्थल ॥

-गजगण्डकटी कटौ ।

कटि-हस्तीका गण्डस्थल और कमर ॥

शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि

महेश्वरे ॥ ३४ ॥

शिपिविष्ट-गङ्गा, खुदरी हुई खाल

और शिवजी ॥ ३४ ॥

देवशिल्लिपन्यपि त्वष्टा-

त्वष्टा-विश्वकर्मा, सूर्य और बढई ॥

-दिष्टं दैवेऽपि न द्वयोः ।

दिष्ट-प्रारब्ध और समय ॥

रसे कटुः कटकार्ये त्रिषु मत्सर-

तीक्ष्णयोः ॥ ३५ ॥

कटु-(पु०) रसविशेष. (न०

अकार्य(त्रि०)अहंकार और तीक्ष्ण ३५

रिष्टं क्षेमाशुभाभावे-

रिष्ट-क्षेम, अशुभ और अभाव ॥

-ष्वरिष्टं तु शुभाशुभे ।

अरिष्ट-शुभ और अशुभ ॥

मायानिश्चलयन्त्रेषु केतवानृत-
राशिषु ॥ ३६ ॥ अयोधने शैल-
शृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ।

कूट-माया, निश्चल, यन्त्र, (मृगफँ-
सानेका जाल) कपट, झूठ, राशि
॥ ३६ ॥ लोहेका घन, पर्वतका कँगूरा
तथा हलका अग्रभाग ॥

सूक्ष्मैलायां वृष्टिः स्त्री स्या-
त्कालेऽल्पे संशयेऽपि सा ॥ ३७ ॥

वृष्टि-छोटी इलायची, काल, [अ-
क्षरका रह जाना] अल्प तथा संशय ३७

आत्युत्कर्षाश्रयः कोट्यो-

कोटि-धनुषकी टोंक, प्रकर्ष,
कोना तथा करोडसंख्या ॥

-मूले लग्नकचे जटा ।

जटा-वृक्षकी जड तथा केशोंकी जटा ॥

व्युष्टिः फले समृद्धौ च-

व्युष्टि-फल तथा सम्पदा ॥

-दृष्टिर्ज्ञानेऽक्षिण दर्शने ॥ ३८ ॥

दृष्टि-ज्ञान नेत्र तथा देखना ॥ ३८ ॥

इष्टिर्यागेच्छयोः-

इष्टि-यज्ञ तथा इच्छा ॥

-सृष्टं निश्चिते बहुानि त्रिषु ।

सृष्ट-बहुत तथा निश्चय किया
गया ॥

कष्टे तु कृच्छ्रगहने-

कष्ट-दुःख तथा गहन ॥

-दक्षामन्दागदेषु च ॥ ३९ ॥

पटु-

पटु-दक्ष, तीक्ष्ण तथा रोगहीन ॥ ३९ ॥

-द्वौ वाच्यलिङ्गौ च-

पटु और कष्ट शब्द वाच्यलिङ्ग हैं ॥

इति टान्ताः ॥

-नीलकण्ठः शिवेऽपि च ।

नीलकण्ठ-मयूर तथा शिव ॥

पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जटं कुसूलो-

न्तर्गृहं तथा ॥ ४० ॥

कोष्ठ-पेटका मध्य भाग, धान्यका
स्थान, गृहके भीतरका भाग ॥ ४० ॥

निष्ठानिष्पात्तिनाशान्ताः-

निष्ठा-निष्पादन, नाश तथा अन्त ॥

-काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि ।

काष्ठा-उत्कर्ष, स्थिति, दिशा
तथा कालविशेष ॥

त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि-

ज्येष्ठ-अत्युत्तम, अतिवृद्ध, बड़ा
भाई तथा वैशाखके उत्तरका मास ॥

-कानिष्ठोऽतियुवाल्पयोः ॥ ४१ ॥

कनिष्ठ-अतिछोटा तथा छोटा भाई ४१

इति टान्ताः ॥

दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्याद्-

दंड-दंडा तथा सजा आदि ॥

-गुडो गोलेशुपाकयोः ।

गुड—गुड तथा मिट्टी आदिका गोला॥

सर्पमांसात्पशू व्याडौ—

व्याड—सर्प तथा मांस खानेवाला पशु
व्याघ्र आदि॥

—गोभूवाचस्त्विडाइलाः॥४२॥

इडा—गैया तथा पृथ्वी, वाणी और
नाडी ॥ ४२ ॥

क्ष्वेडा वंशशलाकाऽपि—

क्ष्वेडा—विष, सिंहनाद तथा बांसकी
खपची ॥

—नाडी नालेऽपि पक्षणे ।

नाडी—नाडी अर्थात् वात पित्तकफ
इत्यादिके विकारको जाननेवाली नस
तथा छः क्षण ॥

काण्डोऽस्त्री दण्डवाणार्धवर्गा-
वसरवाणिषु ॥ ४३ ॥

काण्ड—दण्डा वा लाठी, बाण, खराब
घोडा, परिच्छेद जैसे कि प्रथम कांड,
अवसर तथा जल ॥ ४३ ॥

स्याद्गाण्डमश्वभरणेऽमत्र मूल-
वाणिग्धने ।

भाण्ड—पात्र वा बरतन, घोड़ोंका
गहना, बानियोंका मूल धन वा पूंजी॥

इति ढान्ताः ॥

भृशप्रतिज्ञयोर्वाटि—

बाढ—अत्यर्थ तथा प्रतिज्ञा ॥

—प्रगाढं भृशकृच्छ्रयोः ॥४४॥

प्रगाढ—मजबूत तथा दुःख॥४४॥

शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ—

दृढ—समर्थ तथा मोटा॥

—व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ ।

व्यूढ—विन्यस्त तथा संहत और
पृथुल ॥

इति ढान्ताः ॥

भ्रूणोऽर्धके स्त्रैण गर्भे—

भ्रूण—बालक तथा स्त्रीका गर्भ ॥

—वाणो बलिमुते शरे ॥ ४५ ॥

बाण—बाणासुर तथा तीर ॥ ४५ ॥

कणोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे—

कण—अत्यन्त सूक्ष्म तथा धान्यकण॥

संघाते प्रमथे गणः ।

गण—समूह तथा शिवके अनुचर ॥

पणोऽ्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये
धनेऽपि च ॥ ४६ ॥

पण—जुआ आदिमें लगाया हुआ
धन पैसा तथा मजूर वा तलब ॥ ४६ ॥

मौर्व्या द्रव्याश्रितेः सत्त्वशौर्ये-

सन्ध्यादिके गुणः ।

गुण—प्रत्यञ्चारूप आदि चौबीस
सत्त्वआदि, शुक्ल आदि, संधि आदि ॥

निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषो-
त्सवयोः क्षणः ॥ ४७ ॥

क्षण—तीसकलासमय, उत्सव तथा
वेकामवैठना तथा विश्राम करना १७॥

वर्णों द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ
वर्णं तु वाक्षरे ।

वर्ण—शुक्ल पीतादि रंग तथा वर्ण
(पुं० न०) अक्षर ब्राह्मणादि, स्तुति ॥

अरुणो भास्कोऽपि स्याद्व-
र्णभेदेऽपि च त्रिषु ॥ ४८ ॥

अरुण—सूर्य, सूर्यका सारथि, वर्ण-
भेद ॥ ४८ ॥

स्थाणुः शर्वोऽप्यथ—

स्थाणु—टूठा वृक्ष तथा अत्यन्त
स्थिर और महादेव, खम्भा, वृक्ष, पर्वत ॥

—द्रोणः काक—

द्रोण—काक तथा द्रोणाचार्य ॥

ऽप्याजौ रवे रणः ।

रण—संग्राम तथा शब्द ॥

ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे
ग्रामाधिपे त्रिषु ॥ ४९ ॥

ग्रामणी—नाई, मुख्य ग्रामाधिप
॥ ४९ ॥

ऊर्णा भेषादिलोम्नि स्यादा-
वर्त्ते चान्तरा भ्रुवोः ।

ऊर्णा—मेडका बाल तथा दोनों
भौंके बीचकी भौरी ॥

हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रातिमा
हरिता च या ॥ ५० ॥

हरिणी—मृगी, सोनेकी मूर्ति तथा
हरेरंगकी मूर्ति ॥ ५० ॥

त्रिषु पाण्डौ च हरिणः—

हरिण—मृग तथा पाण्डुर वर्ण ॥

—स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मनः ।

स्थूणा—खम्भा तथा लोहेकी मूर्ति ॥

तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे—

तृष्णा इच्छा (वाञ्छा) तथा प्यास ॥

—जुगुप्साकरुणे घृणे ॥ ५१ ॥

घृणा—जुगुप्सा वा निन्दा तथा
करुणा ॥ ५१ ॥

वणिक्पथे च विपानीः—

विपणी—बाजारकी गली तथा

दुकान ॥

—सुरा प्रत्यक् च वारुणी ।

वारुणी—मदिरा तथा पश्चिमकी दिशा ॥

करेणुरिभ्यां स्त्री नेमे—

करेणु—शथी तथा हथिनी ॥

—द्रविणं तु बलं धनम् ॥ ५२ ॥

द्रविण—बल तथा धन ॥ ५२ ॥

शरणं गृहरक्षित्रोः—

शरण—गृह तथा रक्षा करनेवाला ॥

—श्रीपर्णं कमलेऽपि च ।

श्रीपर्ण—कमल तथा अग्निमन्या ॥

विषाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं क्लीबे

खरं त्रिषु ॥ ५३ ॥

तीक्ष्ण-अत्यन्त गरम वस्तु, अत्यन्त तीक्ष्ण, विष, युद्ध तथा लोहा ॥ ५३ ॥

प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ता-
प्रमातृषु ।

प्रमाण-हेतु, मर्यादा, शास्त्रपरि-
च्छेद तथा ज्ञाता ॥

करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रि-
येष्वपि ॥ ५४ ॥

करण-खेत, करण कारक, शरीर,
इन्द्रिय तथा वैश्य शूद्रा स्त्रीसे उत्पन्न
॥ ५४ ॥

प्राण्युत्पादे संसरणमसंवाधच-
मृगतौ ॥ घण्टापथे-

संसरण-राजमार्ग, प्राणीका जन्म
तथा बेरोक सेनाकी यात्रा ॥

-ऽय वान्तात्रे समुद्रिरणमुन्नये
॥ ५५ ॥

समुद्रिरण-वमन किया हुआ अन्न
तथा उखाड़ना तथा जडादिका निका-
रना ॥ ५५ ॥

अतस्त्रिषु-

यहांसे आगे कहे हुए णकारान्त
शब्द तीनों लिंगोंमें होंगे ॥

-विषाणं स्यात्पशुशृङ्गेभदन्तयोः।

विषाण-पशुओंके सींग तथा
हाथीका दांत ॥

प्रवणं क्रमनिम्नोर्व्यां प्रहे ना
तु चतुष्पथे ॥ ५६ ॥

प्रवण-नम्र, तत्पर, ढाल वा क्रमसे
नीचा स्थान तथा चौराहा ॥ ५६ ॥

संकीर्णा निचिताशुद्धा-
संकीर्ण-अशुद्ध तथा वर्णसङ्कर ॥

-वीरिणं शून्यमूषरम् ।

ईरिण-शून्य और ऊषर ॥

॥ इति णान्ताः ॥

देवसूर्यौ विवस्वन्तौ-

विवस्वत्-देव तथा सूर्य ॥

-सरस्वतौ नदार्णवौ ॥ ५७ ॥

सरस्वत्-नद तथा समुद्र ॥ ५७ ॥

पक्षिताक्षर्यौ गरुत्मन्तौ-

गरुत्मत्-गरुड तथा पक्षी ॥

-शकुन्तौ भासपक्षिणौ ।

शकुन्त-गृध्र और पक्षिमात्र ॥

अग्न्युत्पातौ धूमकेतू-

धूमकेतु-अग्नि और धूममयी तारा

-जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ ५८ ॥

जीमूत-मेघ और पर्वत ॥ ५८ ॥

हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे-

हस्त-हाथ, तेरहवां नक्षत्र ॥

-मरुतौ पवनामरौ ।

मरुत्-वायु तथा देवता ॥

यन्ता हस्तिपके सूते-

यन्तृ-हाथीवान् तथा सूत ॥

-भर्ता धातरि षोष्ठरि ॥ ५९ ॥

भर्तृ-ब्रह्मा और पालन करनेवाला ॥ ५९ ॥

यानपात्रे शिशौ पोतः-

पोत-नौका तथा लडका ॥

-प्रेतः प्राण्यन्तरे मृतः ।

प्रेत-परेत तथा मृतक ॥

ग्रहभेदे ध्वजे केतुः-

केतु-ध्वजा तथा एकग्रहका नाम ॥

-पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥

सुत-राजा तथा पुत्र ॥ ६० ॥

स्थपतिः कारुभेदेऽपि-

स्थपति-कंचुकी तथा कारुभेद, काष्ठ चीरनेवाला ॥

-भूभृद्भूमिधरे नृपे ।

भूभृत्-पर्वत और राजा ॥

मूर्धाभिषिक्तो भूपेऽपि-

मूर्धाभिषिक्त-राजा और मन्त्री ॥

-ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च ॥ ६१ ॥

ऋतु-स्त्रीका मासिक धर्म और वसन्तादि ऋतु ॥ ६१ ॥

विष्णावप्यजिताव्यक्तौ-

अजित, अव्यक्त-विष्णु और महादेव ॥

-सूतस्त्वष्टरि सारथौ ।

सूत-सारथी तथा पारा धातु, त्वष्टा ॥

व्यक्तः प्राज्ञेऽपि-

व्यक्त-पंडित तथा स्फुट ॥

-दृष्टान्तावुभौ शास्त्रनिद-

र्शने ॥ ६२ ॥

दृष्टान्त-तर्कादि शास्त्र तथा उदाहरण ॥ ६२ ॥

क्षत्ता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियायां च शूद्रे जे ।

क्षत्तृ-सारथि, शूद्र और क्षत्रियासे उत्पन्न तथा द्वारपाल ॥

वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारे कात्स्न्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥

वृत्तान्त-प्रकरण, प्रकार सम्पूर्णता तथा वार्ता ॥ ६३ ॥

आनर्तः समरे नृत्यस्थाननी वृद्धिशेषयोः ।

आनर्त-आनर्त देश, संग्राम तथा नृत्यका स्थान ॥

कृतान्तो यमासिद्धान्तदैवा-

कुशलकर्मसु ॥ ६४ ॥

कृतान्त-यमराज, सिद्धान्त, भाग्य तथा पाप ॥ ६४ ॥

श्लेष्मादि रसरक्तादि महा-

भूतानि तद्गुणाः । इन्द्रिया-

ण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः ॥ ६५ ॥

धातु वात, पित्त, कफ, पेटमें अन्न
जायकर जो रस बनता है वह और रक्त
इत्यादि, पंचमहाभूत (पृथ्वी जल इत्या-
दि) पांचों महाभूतोंके गुण, (रूप रस
गन्ध इत्यादि) इन्द्रिय, पत्थरका विकार
(शिलाजीत इत्यादि) वर्णात्मक शब्दों
के कारण, (भू, इत्यादि) ॥ ६५ ॥

कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृप-
स्यासर्वगोचरे ।

शुद्धान्त-राजधानी तथा राजाओंका
जनाना ॥

कासू सामर्थ्ययोः शक्ति-
शक्ति-बरछी तथा सामर्थ्य ॥

-मूर्तिः काठिन्यकाययोः ॥ ६६ ॥
मूर्ति-कठिनता तथा शरीर ॥ ६६ ॥

विस्तारवल्ल्योर्व्रतति-
व्रतति-विस्तार तथा बली ॥

-वसती रात्रीवेश्मनोः ।
वसति-रात्रि तथा घर ॥

क्षयार्चयोरपचितिः-
अपचिति-क्षय तथा पूजा ॥

-सातिर्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥
साति-दान तथा अन्त ॥ ६७ ॥

अर्तिः पीडाधनुष्कोटयो-
अर्ति-पीडा तथा धनुषकी कोटि ॥

-र्जातिः सामान्यजन्मनोः ।

जाति-सामान्यजाति तथा जन्म ।

प्रचारस्यन्दयो रीति-

रीति-लोकाचार तथा पीतल और
लोहेका मल ॥

रीतिर्दिम्बप्रवासयोः ॥ ६८ ॥
ईति (ईति सात प्रकारकी होती है
अतिबुद्धि, सूखा पडना, खेतोंमें मूसोंका
लगना, टीडियोंका उपद्रव, सुगोंसे
हानि और राजाओंसे वैर, इन ७ कों
ईति कहते हैं,) तथा परदेशमें वास ६८ ॥

उदयेऽधिगमे प्राप्ति-

प्राप्ति-लाभ तथा उत्पत्ति ॥

-स्त्रेता त्वग्नित्रये युगे ।

त्रेतायुग तथा अग्नित्रय ॥

वीणाभेदेऽपि महती-

महती-नारदकी वीणा तथा महत्वा
करके युक्त भार्यादि ॥

-भूतिर्भस्मनि संपदि ॥ ६९ ॥

भूति-अणिमामहिमादि आठ
ऐश्वर्य भस्मे तथा सम्पत्ति ॥ ६९ ॥

नदीनगर्योर्नागानां भोगवत्य-
भोगवती-सर्पोंकी नदी तथा नगरी ॥

-थ संगरे ।

सङ्गे सभायां समितिः-

समिति-संग तथा सभा संग्राम ॥

क्षयवासावपि क्षितिः ॥ ७० ॥

क्षिति—निवास, क्षय तथा पृथ्वी ॥ ७० ॥
खेरचिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला
च हेतयः ।

हेति—सूर्यकी प्रभा तथा शस्त्र और
भागकी ज्वाला ॥

जगती जगति छन्दोविशेषेऽपि
क्षितावापि ॥ ७१ ॥

जगती—लोक, एक प्रकारका छन्द
तथा पृथ्वी ॥ ७१ ॥

पंक्तिश्छन्दोऽपि दशमं—
पंक्ति—पाँती तथा दशअक्षरके
पादका छन्द ॥

—स्यात्प्रभावेऽपि चायातिः ।

आयति—आनेवाला समय, प्रभाव
तथा लम्बाई ॥

पत्तिर्गतौ च—

पत्ति—पैदल तथा चलना ॥

—मूले तु पक्षतिः पक्षभे-
दयोः ॥ ७२ ॥

पक्षति—प्रतिपदा तिथि तथा पंखकी
जड़ ॥ ७२ ॥

प्रकृतिर्योनिलिङ्गे च—

प्रकृति—स्वभाव तथा योनिलिङ्ग ॥

—कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः ।

वृत्ति—जीविका, सूत्रोंका अर्थ तथा
कैशिकी ॥

सिकताः स्युर्वालुकापि—

सिकता—वालु और सिकती ॥

—वेदे श्रवसि च श्रुतिः ॥ ७३ ॥

श्रुति—वेद, कान तथा सुनना ॥ ७३ ॥

वनिता जनितान्यर्थानुरागाय

च योषति ।

वनिता—स्त्री तथा अत्यन्त प्यारी स्त्री ॥

गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि—

गुप्ति—रक्षा, भूमिका गड़हा तथा

जेलखाना ॥

धृतिर्धारणधैर्ययोः ॥ ७४ ॥

धृति—धारण और धैर्य ॥ ७४ ॥

वृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदो

महत्यापि ।

वृहती—क्षुद्रवार्ताकी, छन्दविशेष, बड़ी ॥

वासिता स्त्रीकरिण्योश्च—

वासिता—स्त्री तथा हथिनी ॥

—वार्ता वृत्तौ जनश्रुतौ ॥ ७५ ॥

वार्ता—जीविका, समाचार ॥ ७५ ॥

वार्तं फलगुन्यरोगे च त्रि—

वार्त—नीरोग समाचार, जनश्रुति—

जीवनापाय तथा कुशल ॥

ध्वप्सु च घृतामृत ।

घृत—धी जल ॥

अमृत—जल, मोक्ष तथा विना

मांगी भीख ॥

कलधौतं रूप्यहेम्नो-

कलधौत-चांदी तथा सोना ॥

-निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ॥ ७६ ॥

निमित्त-हेतु तथा चिह्न ॥ ७६ ॥

श्रुतं शास्त्रावधृतयो-

श्रुत-शास्त्र तथा सुना गया ॥

-युगपर्याप्तयोः कृतम् ।

कृत-सत्ययुगपर्याप्ति तथा किया हुआ ॥

अत्याहितं महाभीतिः कर्म
जीवानपेक्षि च ॥ ७७ ॥

अत्याहित-महाभय तथा साहस ७७

युक्ते क्षमादावृते भूतं प्राण्यतीते
समे त्रिषु ।

भूत-प्रेत, पृथिवी आदिपांच देवयो-
नि तथा न्याययुक्त कार्य और सत्य तथा
प्राणी ॥

वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढ-

-निस्तले ॥ ७८ ॥

वृत्त-पद्य, श्लोक, चरित्र, अतीत,
भूतकाल, दृढ तथा गोल ॥ ७८ ॥

महद्राज्यं चा-

महत्-राज्य तथा बृहत् ॥

-वगीतं जन्ये स्याद्गहितं

त्रिषु ।

अवगीत-लोकापवाद तथा जिसकी
निंदा की गई ॥

श्वेतं रूप्येऽपि-

श्वेत-सफेद रंग तथा चांदी और

रूपया ॥

-रजतं हेम्नि रूप्ये सिते

त्रिषु ॥ ७९ ॥

रजत-सोना चांदी तथा उज्ज्वल ७९

त्रिष्वतो-

यहांसे लेकर तकारान्त सम्पूर्ण शब्द
तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

-जगदिंगेऽपि-

जगत्-लोक तथा प्राणी ॥

-रक्तं नील्यादिरागि च ।

रक्त-नीलादि रंग तथा रुधिर ॥

अवदातः सिते पीते शुद्धे-

अवदात-शुद्ध, श्वेत पदार्थ तथा
पीला पदार्थ ॥

-बद्धार्जुनौ सितौ ॥ ८० ॥

सित-बँधा हुआ तथा श्वेत ॥ ८० ॥

युक्तेऽपि संस्कृते मर्षिण्यभि-

नीतो-

अभिनीत-युक्त, अत्यन्त प्रशस्त
तथा भूषित और शान्त ॥

-ऽथ संस्कृतम् ।

कृत्रिमे लक्षणोपेतोऽप्य-

संस्कृत-संस्कारयुक्त, लक्षणयुक्त तथा
कृत्रिम ॥

-नन्तोऽनवधावपि ॥ ८१ ॥
 अनन्त—अनवधि, (जिसकी मर्यादा
 न हो) विष्णु तथा शेष नाग ॥ ८१ ॥
 रूपाते हृष्टे प्रतीतो—
 प्रतीत—प्रसिद्ध तथा हर्षित ॥
 -ऽभिजातस्तु कुलजे बुधे ।
 अभिजात—कुलीन और पंडित ॥
 विविक्तौ पूतवेजनौ—
 विविक्त—पवित्र और विजन, वा
 एकान्त ॥
 -मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ ८२ ॥
 मूर्च्छित—मोहित तथा बड़ा ॥ ८२ ॥
 द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ—
 शुक्त—चुक तथा कठोर ॥
 शिती धवलमेचकौ ।
 शिति—धवल (शुक्ल) मेचक तथा
 कृष्णवर्ण ॥
 सत्ये साधौ विद्यमाने प्रश-
 स्तेऽभ्यर्हिते च सत् ॥ ८३ ॥
 सत्—सत्य, साधु, विद्यमान, प्रशस्त
 तथा अभ्यर्हित ॥ ८३ ॥
 पुरस्कृतः पूजितेऽरात्याभियु-
 क्तेऽग्रतः कृते ।
 पुरस्कृत—पूजित, शत्रुसे पीडित और
 आगे किये हुए ॥
 निवातावाश्रयावातौ शस्त्राभेद्यं
 च वर्म यत् ॥ ८४ ॥

निवात—निवास, वायुरहित स्थान
 तथा शस्त्रोंसे अभेद्य कवच ॥ ८४ ॥
 जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युरुच्छ्रिता-
 उच्छ्रित—उत्पन्न, ऊँचा, अहंकार-
 युक्त तथा अत्यन्त बड़ा ॥
 -उत्थितास्त्वमी । वृद्धिमत्प्रो-
 यतोत्पन्ना—
 उत्थित—वृद्धिको प्राप्त होनेवाला
 तथा उदयको प्राप्त होनेवाला और
 उत्पन्न होनेवाला ॥
 -आदृतौ सादराचितौ ॥ ८५ ॥
 आदृत—आदर किया हुआ तथा
 पूजित ॥ ८५ ॥
 इति तान्ताः ।
 अर्थोऽभिधेयैरेवस्तुप्रयोजन-
 निवृत्तिषु ।
 अर्थ—शब्दका अर्थ, धन, यथार्थ,
 निवृत्ति ॥
 निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे ज-
 ले गुरौ ॥ ८६ ॥
 तीर्थ—निपान अर्थात् कूपके पासका
 हौद वा जलाशय, शास्त्र, ऋषिसेवित
 जल तथा गुरु ॥ ८६ ॥
 समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे संबद्धार्थे
 हितेऽपि च ।
 समर्थ—समर्थ वा बलवान् तथा
 सम्बन्धयुक्त पदार्थ तथा हित ॥

दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ—
 दशमीस्थ—रसरहित और अतिवृद्ध
 —वीथी पदव्यपि ॥ ८७ ॥
 वीथी—मार्ग तथा पंक्ति ॥ ८७ ॥
 आस्थानीयत्नयोरास्था—
 आस्था—सभा तथा उपाय ॥
 —प्रस्थोऽग्री सानुमानयोः ।
 प्रस्थ—पर्वतकी चोटी तथा तोल-
 चेका सेर ॥

॥ इति थान्ताः ॥

अभिप्रायवशौ छन्दा—
 छन्द—अभिप्राय तथा अधीन ॥
 —वन्दौ जीमूतवत्सरौ ॥ ८८ ॥
 अन्द—मेघ तथा वर्ष ॥ ८८ ॥
 अपवादौ तु निन्दाज्ञे—
 अपवाद—निन्दा तथा अज्ञ ॥
 —दायादौ सुतवान्धवौ ।
 दायाद—पुत्र तथा ज्ञाति वा विरादरी
 पादा रश्म्यंघ्रितुर्यांशा—
 पाद—किरण, चरण तथा चौथाई ॥
 श्वन्द्वाग्न्यर्कास्तमोनुदः ॥ ८९ ॥

तमोनुद्—चन्द्र, सूय तथा अग्नि ॥ ८९ ॥

निर्वादो जनवादेऽपि—

निर्वाद—लोकापवाद और निश्चित
 वाद ॥

—शादो जम्बालशष्पयोः ।

शाद—वास और कीचड ॥

आरावे रुदिते त्रातयर्पाक्रन्दौ
 दारुणे रणे ॥ ९० ॥

आक्रन्द—आर्तशब्द, रोदन, रक्षण,
 भयंकर तथा युद्ध ॥ ९० ॥

स्यात्प्रसादोऽनुरागेऽपि—
 प्रसाद—अनुग्रह, (प्रसन्नता) और
 काव्यके गुण ॥

—सूदः स्याद्व्यञ्जनेऽपि च ।

सूद—व्यञ्जन और रसोई वरदारका
 नाम ॥

गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दो—
 गोविन्द—कृष्ण तथा विष्णु और
 गोष्ठका स्वामी ॥

—हर्षेऽप्यामोदवन्मदः ॥ ९१ ॥
 आमोद—हर्ष तथा निर्हारि गन्ध ९१
 प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे
 ककुदोऽस्त्रियाम् ।

ककुद—प्रधान, राजचिह्न तथा
 बैलका कन्धा ॥

स्त्री संविज्ज्ञानसंभाषाक्रिया—
 काराजिनामसु ॥ ९२ ॥

संविद्—ज्ञान, सम्भाषण, कर्म,
 नियम, युद्ध और नाम ॥ ९२ ॥

धर्मे रहस्युपनिषत्—
 उपनिषद्—धर्म, एकान्त और वेदान्त

—स्यादतौ वत्सरे शरत् ।

शरद्-कार कार्तिकका समय और
वर्ष ॥

पदं व्यवसितत्राणस्थानलक्षमा-
ङ्गविवस्तुषु ॥ ९३ ॥

पद-व्यवसाय, रक्षास्थान, चिह्न,
चरण तथा वस्तु ॥ ९३ ॥

गोष्पदं सेविते माने-

गोष्पद-सेवितदेश तथा भूमिपर
गायके खुरसे हुआ गद्गा ॥

—प्रतिष्ठा कृत्यमास्पदम् ।

आस्पद-प्रतिष्ठा स्थान तथा कार्य

—त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू-

स्वादु-इष्ट और मधुर ॥

—मृदू चातीक्ष्णकोमलौ ॥ ९४ ॥

मृदु-अतीक्ष्ण तथा कोमल ९४ ॥

मूढाल्पापटुनिर्भाग्या मंदाः

स्यु-

मन्द-मूर्ख, आलसी, अप्रवीण,
अल्प तथा निर्भाग्य ॥

—द्वौ तु शरदौ ।

प्रत्यग्राप्रतिभौ-

शरद-डरपोक, छितिउन(वृक्ष)
जलपीपर औषधी ॥

—विद्वत्सुप्रगल्भौ विशार-
दौ ॥ ९५ ॥

विशारद-विद्वान् चतुर और

ढीठ पुरुष ॥ ९५

इति दान्ताः ॥

व्यामो वटश्च न्यग्रोधा-

न्यग्रोध-वटवृक्ष तथा अङ्कवार ॥

—वृत्सेधः काय उन्नातिः ।

उत्सेध देह तथा उँचाई ॥

पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ

वीवधौ च तौ ॥ ९६ ॥

विवध वीवध-पर्याहार(ध्यानादि)

तथा मार्ग ॥ ९६ ॥

परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामु-
पसूर्यक ।

परिधि-वृत्तकी परिधि वा गोलाइ
सूर्य वा चन्द्रके चारों ओरका मण्डल,
पलाश इत्यादि यज्ञके वृक्षकी शाखा ॥

बन्धकं व्यसनं चेतःपीडा-
धिष्ठानमाधयः ॥ ९७ ॥

आधि-बन्धक, आपत्ति, मनकी
पीडा तथा बैठना ॥ ९७ ॥

स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च
समाधयः ।

समाधि-चित्तके व्यापारका रोकना
अङ्गीकार, चुप रहना, नियमतथा ध्यान

दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृ-
त्यादिविनश्वरे ॥ ९८ ॥

मुख्यानुयायीनि शिशौ प्रकृत-
स्यानुवर्तने ।

अनुबन्ध-दोषका उत्पन्न करना,
प्रकृति प्रत्यय आगम आदेश इत्यादिमें
जिसका नाश हो गया हो वह ॥ ९८ ॥
पिता इत्यादि बड़ोंका अनुसरण करने-
वाला बालक, प्रारम्भ किया वस्तुका
परम्परासे चलना ॥

विधुर्विष्णौ चन्द्रमासि-

विधु-विष्णु, चन्द्रमा, कपूर तथा
राक्षस ॥

-परिच्छेदे विलेऽवधिः ॥ ९९ ॥

अवधि-सीमा व हद्द, गड़ढा और
काल ॥ ९८ ॥

विधिर्विधाने दैवेऽपि-

विधि-करना, भाग्य धर्मशास्त्र तथा
आज्ञा देना ॥

-प्रणिधिः प्रार्थने चरे ।

प्रणिधि-प्रार्थना तथा चलनेवाला ॥
बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि-

बुध-पण्डित तथा एक ग्रह । वृद्ध-
पण्डित तथा वृद्ध पुरुष ॥

-स्कन्धः समुदयेऽपि च १०० ॥

स्कन्ध-समुदय, समूह, काण्ड, राजा
बथा कन्धा ॥ १०० ॥

देशे नदाविशेषेऽधौ सिन्धुर्ना-
सारिति त्रियाम् ।

सिन्धु-समुद्र, एक नद, सिन्धुदेश
तथा नदी ॥

विधा विधौ प्रकारे च-

विधा-विधान प्रकार तथा बड़ाई ॥
साधू रम्येऽपि च त्रिषु ॥ १०१ ॥
साधु-साधु, कुलीन, सुंदर, रोज-
गारी तथा सज्जन ॥ १०१ ॥

वधूर्नाया स्नुषा स्त्री च-

वधू-स्त्री, (विवाहिता स्त्री) पुत्रकी
बहू, सवरग औषधी ॥

-सुधा लेपोऽमृतं स्नुही ।

सुधा-अमृत, चूना, बिजुली, भोजन,
अवरा, सेहुंड ॥

सन्धा प्रतिज्ञा मर्यादा-

संधा-प्रतिज्ञा, अंगिकार, मर्यादा ॥
-श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा ॥ १०२ ॥

श्रद्धा-आदर, आकांक्षा तथा वि-
श्वास ॥ १०२ ॥

मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रे-

मधु-मद्य, पुष्परस, शहद, चैत्र तथा
महुआ ॥

-ऽप्यन्धं तमस्यपि ॥

अन्ध-अन्धा तथा अधिवारा ॥
अतस्त्रिषु-

यहांसे लेकर धातवर्गपर्यंत शब्द
तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

—समुन्नद्धौ पण्डितं मन्यगर्वि-
तौ ॥ १०३ ॥

समुन्नद्ध—अपनेको पंडितमाननेवाला
वा गर्वयुक्त ॥ १०३ ॥

ब्रह्मबन्धुराधिके निदेशे—

ब्रह्मबन्धु—अधिकेप, निन्दा योग्य
ब्राह्मण ॥

—ऽथा विलम्बितः । अविदूरोऽ-
प्यवष्टब्धः—

अवष्टब्ध—आश्रित, पासवाला तथा
बँधा हुआ ॥

—प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ॥ १०४ ॥

प्रसिद्धप्र—सिद्ध वा ख्यात तथा
भूषित ॥ १०४ ॥

इति धान्ताः ॥

सूर्यवह्नी चित्रभानू—

चित्रभानु—सूर्य और अग्नि ॥

—भानू रश्मिदिवाकरौ ।

भानु—किरण और सूर्य ॥

भूतात्मानौ धातृदेहौ—

भूतात्मन्—ब्रह्मा तथा देह ॥

—मूर्खनीचौ पृथग्जनौ ॥ १०५ ॥

पृथग्जन—मूर्ख और नीच ॥ १०५ ॥

ग्रावाणौ शैलपाषाणौ—

ग्राबन्—पर्वत तथा पत्थर ॥

—पत्रिणौ शरपक्षिणौ ।

पत्रिन्—पक्षी, बाज पक्षी तथा बाण ॥

तरुशैलौ शिखरिणौ—

शिखरिन्—वृक्ष तथा शैल ॥

शिखिनौ वह्निवर्हिणौ ॥ १०६ ॥

शिखिन्—अग्नि तथा मोर ॥ १०६ ॥

प्रतियत्नावुभौ लिप्सोपग्रहा—

प्रतियत्न—लाभकी इच्छा तथा

संस्कार ॥

—वथ सादिनौ । द्वौ साराथि—

हयारोहौ—

सादिन्—सारथि और घोडेका सवार ॥

—वाजिनोऽश्वेषु पक्षिणः ॥ १०७ ॥

वाजिन्—घोडा और पक्षी ॥ १०७ ॥

कुलेऽप्यभिजनो जन्मभूम्या—

म—

अभिजन—कुल तथा जन्मभूमि ॥

—प्यथ हायनाः । वर्षाचित्री-
हिमेदाश्च—

हायन—वर्ष, आँच तथा एक तर-
हका धान ॥

चन्द्राग्न्यर्का विरोचनाः ॥ १०८ ॥

विरोचन—चन्द्रमा, अग्नि, सूर्य ॥ १०८ ॥

क्लेशेऽपि वृजिनो—

वृजिन—क्लेश, कुटिल तथा पाप ॥

—विश्वकर्माकसुराशलिपनोः ।

विश्वकर्मन्—सूर्य तथा विश्वकर्मा ॥

आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः
स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च ॥ १०९ ॥

आत्मन्-आत्मा, देहस्वभाव, बुद्धि,
ब्रह्म, उपाय तथा धीरता वा धैर्य १०९
शक्रो घातुकमत्तेभो वर्षुका-
ब्दो घनाघनः ।

घनाघन-वरसनेवाला मेघ, इन्द्र तथा
खूनी मतवाला हाथी ॥

अभिमानोऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रण-
याहिंसयोः ॥ ११० ॥

अभिमान-घनादिका घमंड, ज्ञान,
प्रणय, नम्रता तथा हिंसा ॥ ११० ॥

घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते
निरन्तरे ।

घन-कठोर वस्तु, मेघ, मूर्तिका गुण,
मुद्गर, काँसीका बना हुआ घंटा इत्यादि
बाजा मध्यनृत्य गीतवाद्य ॥

इनः सूर्ये प्रभौ-

इन-सूर्य, प्रभु ॥

--राजा मृगांके क्षत्रिये नृपे १११

राजन्-चन्द्रमा, क्षत्रिय तथा नृप ॥

॥ १११ ॥

वाणिन्यौ नर्तकीदूत्यौ-

वाणिनी-नाचनेवाली स्त्री तथा
दूती वा कुटनी ॥

--स्ववन्त्यामपि वाहिनी ।

वाहिनी-सेना, नदी, वाहिनीपति,
समुद्र तथा सेनापति ॥

हादिन्यौ वज्रतडितौ-

हादिनी-वज्र और बिजली ॥

--वन्दायामपि कामिनी ॥ ११२ ॥

कामिनी-बहुत कामवाली वा

कामकी इच्छा करनेवाली स्त्री, वन्दा
एक वृक्षका रोग तथा स्त्री ॥ ११२ ॥

त्वग्देहयोरपि तनुः-

तनु-खाल, शरीर, थोड़ा और दुर्बल ।

-सूनाऽधोजिह्विकापि च ।

सूना-जिह्वाके तलेका स्थान और

मारनेका स्थान ॥

ऋतुविस्तारयोरस्त्री वितानं

त्रिषु तुच्छके ॥ ११३ ॥ मन्दे-

वितान-ऋतु, विस्तार, तुच्छ । ११३ ।

तथा मन्द ॥

-ऽथ केतनं कृत्ये केतावुपनि-

मन्त्रणे ।

केतन-ध्वजा, घर, कार्य तथा उपनि-

मंत्रण ॥

वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा

विप्रः प्रजापतिः ॥ ११४ ॥

ब्रह्मन्-वेद, चतैन्य, तप, ब्रह्मा

तथा ब्राह्मण और प्रजापति ॥ ११४ ॥

उत्साहने च हिंसायां सूचने

चापि गन्धनम् ।

गंधन-सूचना करना वा चुगलीखाना
हिंसा तथा उत्साह देना वा भरोसा देना

आतञ्जनं प्रतीवापजवनाप्याय-
नार्थकम् ॥ ११५ ॥

आतञ्जन-वेग, तप करना तथा दूधमें
मट्टा डालना ॥ ११५ ॥

व्यञ्जनं लाञ्छनं श्मश्रुनिष्ठा-
नावयवेष्वपि ।

व्यञ्जन-चिह्न, दाढी मूछ, निष्ठान
तथा अङ्ग ॥

स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे
पश्वहिपक्षिणाम् ॥ ११६ ॥

कौलीन-लोकापवाद वा लोकनिंदा
तथा पशु सर्प पक्षीका युद्ध ॥ ११६ ॥

स्यादुद्यानं निःसरणे वनभेदे
प्रयोजने ।

उद्यान-बगीचा, निकलना तथा
प्रयोजन ॥

अवकाशे स्थितौ स्थानं -

स्थान-अवकाश और स्थिति ॥

--क्रीडादावपि देवनम् ॥ ११७ ॥

देवन-क्रीडा व्यवहार तथा जीतनेकी
इच्छा ॥ ११७ ॥

उत्थानं पौरुषे तन्त्रे संनिवि-
शेद्रमेऽपि च ।

उत्थान-उठना वा खड़ा होना

उद्योग, कुटुम्बकार्य, सिद्धान्त तथा
उत्तम औषध ॥

व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधा-
चरणेऽपि च ॥ ११८ ॥

व्युत्थान-तिरस्कार या अनादर
विरोध करना तथा स्वतन्त्रतासे काम
करना ॥ ११८ ॥

भारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्ये
ऽर्थदापने । निर्वर्तनैपकरणानु-
व्रज्यासु च साधनम् ॥ ११९ ॥

साधन-पारा इत्यादि रसायनका
बनाना, चलना, पृथ्वी जल इत्यादि
द्रव्य धन दौलत दिलवाना, धनइत्यादि-
का पैदा करना, उपाय, पीछे पीछे
चलना, पुरुषका मूत्रन्द्रिय; तथा मृतक
वा अग्निसंस्कार ॥ ११९ ॥

निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्या-
सार्पणेऽपि च ।

निर्यातन-वैरशोधन, दान तथा
धरोहर देना ॥

व्यसनं विपाद भ्रंशे दोषे
कामजकोपजे ॥ १२० ॥

व्यसन-विपत्ति, भ्रंश, नाश वा पतन;
कामज दोष तथा कोपज दोष ॥ १२० ॥

पक्ष्माक्षिलोम्नि किंजल्के तृन्त्वा-
द्यंशेऽप्यणीयसि ।

पक्ष्मन्-नेत्रोंके पलक, केसर,
सूतका टुकड़ा, अतिअल्प ॥

तिथिभेदे क्षणे पर्व-

पर्वन्-अष्टमी दर्श आदि तिथि,
उत्सव ॥

--वर्त्मनेत्रच्छदेऽध्वनि ॥ १२१ ॥

वर्त्मन्-मार्ग वा रास्ता तथा
आँखके पलक ॥ १२१ ॥

--अकार्यगृह्ये कौपीन-

कौपीन-अकार्य और गुह्य तथा
कौपीन ॥

-मैथुनं संगतौ रते ।

मैथुन-स्त्री पुरुषका संयोग तथा
रति ॥

प्रधानं परमात्मा धीः-

प्रधान-प्रधान वा मुख्य तथा रा-
क्षाका मुख्य सहाय, परमात्मा, बुद्धि ॥

-प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः ॥ १२२ ॥

प्रज्ञान-बुद्धि और चिह्न ॥ १२२ ॥

प्रसूनं पुष्पफलयो-

प्रसून-फूल तथा फल ॥

-निधनं कुलनाशयोः ।

निधन-कुल और नाश ॥

क्रन्दने रोदनाह्वाने-

क्रन्दन-रोना, पुकारना तथा योद्धा-
ओंका धमकीसे ललकारना ॥

-वर्ष्म देहप्रमाणयोः ॥ १२३ ॥

वर्ष्मन्-शरीर वा देह तथा प्रमाण
वा नाप ॥ १२३ ॥

गृहदेहत्विद्प्रभावा धामा-
धामन्-घर, देह, प्रभा वा प्रकाश
तथा प्रभाव ॥

-न्यय चतुष्पथे । संनिवेशे
च संस्थान-

संस्थान-किसी वस्तुके अवयवों-
का विभाग तथा चौराहा और मरना
वा नाश ॥

-लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः ॥ १२४ ॥
लक्ष्मन्-चिह्न तथा प्रधान वा
मुख्य ॥ १२४ ॥

आच्छादने संपिधानमपवारण-
मित्युभे ।

आच्छादन-ढाकना, छिपना, बख
इत्यादिस वेष्टन, बख तथा गुप्त होना ॥

आराधनं साधने स्यादवाप्तौ
तोषणेऽपि च ॥ १२५ ॥

आराधन-सन्तुष्ट करना, सिद्ध
करना तथा लाभ ॥ १२५ ॥

अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्या-
सनेष्वपि ॥

अधिष्ठान-पहियाँ, नगर, आक्र-
मण वा अमलमें कर लेना ॥

रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि-

रत्न-जवाहिर तथा स्वजातिमें श्रेष्ठ
वा उत्तम ॥

-वने सलिलकानने ॥ १२६ ॥

वन-पानी और वन ॥ १२६ ॥

तलिनं विरले स्तोके-

तलिन-विरल तथा थोडा ॥

-वाच्यलिङ्गं तथोत्तरे ।

यहांसे नांतवर्गकी समाप्ति पर्यन्त
संपूर्ण शब्द वाच्यलिङ्ग होते हैं ॥

समानाः सत्समैके स्युः-

समान-पंडित, सम और एक ॥

-पिशुनौ खलसूचकौ ॥ १२७ ॥

पिशुन-सूत्रक वा चुगलखोर तथा
खल ॥ १२७ ॥

हीनन्यूनान्वनगर्ह्यौ-

हीन-न्यून, थोडा त्याग किया
गया तथा निन्दाकरनेके योग्य और
किसी वस्तुसे रहित ॥

-वेगिशूरौ तरस्विनौ ।

तरस्विन्-वेगवाला तथा शूर ॥

अभिपन्नोऽपराद्धोऽभिग्रस्तव्याप-

द्रतावपि ॥ १२८ ॥

अभिपन्न-अपराधी, जीता गया
तथा विपत्तिको प्राप्त भया ॥ १२८ ॥

॥ इति नान्ताः ॥

कलापो भूषणे बर्हे तूणीरे
संहतावपि ।

कलाप-समूह, मोरकी पूँछ,
कौंवनी तथा गहना और

तरकस ॥

परिच्छदे परीवापः पर्युप्तौ
सलिलस्थितौ ॥ १२९ ॥

परीवाप-तंबू कनात इत्यादि सामग्री
तथा बीजका बोना और थाला १२९ ॥

गोधुग्गोष्ठपती गोपौ-

गोप-अहीर, गन्धरस, अनेकका-
मोंको करनेवाला वा कामदार ॥

-हरविष्णू वृषाकपि ।

वृषाकपि-महादेव तथा विष्णु ॥

वाष्पमूष्माश्रु-

वाष्प-भाफ अर्थात् गरम वस्तुपर
पानी डालनेसे धूआंके सदृश ऊपर
उठती हुई वस्तु, आंसू, गरमी ॥

-कशिपु त्वन्नमाच्छादनं

द्रवम् ॥ १३० ॥

कशिपु-भोजन, अन्न वस्त्र तथा
तकिया ॥ १३० ॥

तल्पं शय्यादृदारेषु-

तल्प-खाट, अटारी तथा दारा ॥

-स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम् ।

विटप-शाखा पत्ता इत्यादिका

समूह घास तृण इत्यादिका गुच्छा
वृक्ष वा पेड ॥

प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुध-
मनोज्ञयोः ॥ १३१ ॥ भेद्यलिङ्गा
अमी-

प्राप्तरूप, स्वरूप, अभिरूप-पंडित
तथा सुन्दर ॥ १३१ ॥

कूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी ।

कच्छपी-कछुही और सारस्वती
वीणा ॥

इति पांताः ॥

स्वर्णे पुंसि रेफः स्यात्कुत्सिते
वाच्यलिङ्गकः ॥ १३२ ॥

रेफ-अधम वा नीच तथा रेफ वा
हल रकार एक वर्ण ॥ १३२ ॥

इति फांताः ॥

अन्तराभावसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो दि-
व्यगायने ।

गन्धर्व-विश्वावसु इत्यादि स्वर्गके
गवैये, घोडा, एक प्रकारका गंधयुक्त
मृग, मनुष्यादि प्राणी ॥

कम्बुर्ना वलये शंखे-

कम्बु-शंख, कंकण वा कंगन ॥

-द्विजिह्वौ सर्पसूचकौ ॥ १३३ ॥

द्विजिह्व-सर्प तथा जुगलखोरा ॥ १३३ ॥

पूर्वोऽन्यालिङ्गः प्रागाह पुंवदुत्वे-
ऽपि पूर्वजान् ॥

पूर्व-पहिला-ली. पूर्वपुरुष, अर्थात्

पुरुखा, ब्रह्मा, पूर्वदिशा तथा पहले ॥

इति बान्ताः ॥

कुम्भौ घटेभमूर्धाशौ-

कुंभ-गूगलका वृक्ष, घडा, हाथीका

मस्तक, अंश. कुम्भराशि ॥

-डिम्भौ तु शिशुवालिशौ

॥ १३४ ॥

डिम्भ-बालक तथा मूर्ख ॥ १३४ ॥

स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ-

स्तम्भ-खंभ, ठगमुरी ॥

-शम्भू ब्रह्मत्रिलोचनौ ।

शंभु-ब्रह्मा और शिव ॥

कुक्षिभ्रूणार्भका गर्भा-

गर्भ-स्त्रीके पेटका गर्भ, पेट, बालक,

नाट्यकी तीसरी संधि ॥

-विस्त्रंभः प्रणयेऽपि च ॥ १३५ ॥

विस्त्रंभ-शृंगारकी प्रार्थना और

विश्वास ॥ १३५ ॥

स्याद्भेद्यां दुन्दुभिः पुंसि स्या-

दक्षे दुन्दुभिः स्त्रियाम् ।

दुन्दुभि-नगाडा तथा लडकोंका

एक प्रकारका खिलौना ॥

स्यान्महारजने, क्लीवं कुसुम्भं

करके पुमान् ॥ १३६ ॥

कुसुंभ-कमण्डल, कुसुंभका फूल

॥ १३६ ॥

क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना-

नाभि-दूडी, क्षत्रिय, मुख्य राजा,
स्थके चक्रका मध्यभाग और कस्तूरी ॥

-सुरभिर्गोवि च स्त्रि रात् ॥

सुरभि-सुन्दर वा मनोहर, सुगंधयुक्त
प्रसिद्ध, चंपा (पुष्पवृक्ष), वसन्तकृत,
जायफल, कामधेनु, सलईवृक्ष, सुवर्ण
वा सोना तथा कमल (पुष्पवृक्ष) ॥

सभा संसदि सभ्ये च-

सभा-सभा तथा घर ॥

-त्रिष्वध्यक्षेऽपि वल्लभः ॥ १३७ ॥

वल्लभ-प्यारा री स्त्रीका पति अध्यक्ष
वा मालिक तथा कुलीन घोडा ॥ १३७ ॥

इति भांताः ॥

किरणप्रग्रहौ रश्मी-

रश्मि-किरण वा प्रकाश तथा लगाम ॥

कापिभेकौ लुवङ्गमौ ।

लुवङ्गम-वानर तथा मेंडके ॥

इच्छामनोभवौ कामौ-

काम-इच्छा और काम ॥

-शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ १३८ ॥

पराक्रम-शूरता तथा उद्योग
॥ १३८ ॥

धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभा-
वाचारसोमपाः ।

धर्म-पुण्य, यमराज, न्याय, स्वभाव,
आचार तथा सोमयज्ञ करके सोमव-
लीका रस पीनेवाला ॥

उपायपूर्व आरम्भ उपधा
चाप्युपक्रमः ॥ १३९ ॥

उपक्रम-उपायपूर्वक प्रारम्भ, प्रारंभ
तथा रिसवत ॥ १३९ ॥

वशिक्रपयः पुरं वेदो निगमो-

निगम-व्यापार, शहर तथा वेद ।

-नागरो वणिक् । नैगमौ द्वौ-

नैगम-वेदसम्बन्धि वस्तु, नग-
रकारहनेवाला तथा बनियां और
उपनिषद् ॥

-वले रामो नीलचारुसिते
त्रिषु ॥ १४० ॥

राम-सुंदर वामनोहर, नीलीवस्तु,
श्वेत वस्तु, तथा परछुराम, रामचन्द्र,
बलराम ॥ १४० ॥

शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः-

ग्राम-(पु०) गांव, (इस शब्दके
पूर्वमें जब "शब्द" इत्यादि शब्द रहते
हैं तब यह समूहवाची होता है जैसा
शब्दग्राम, स्वरग्राम, यह शब्द कहीं
स्वरवाची भी है) ।

-क्रान्तौ च विक्रमः ।

विक्रम-विक्रमण तथा पराक्रम ॥

स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे-

स्तोम-समूह तथा स्तोत्र ॥

-जिह्वस्तु कुटिलेऽलसे ॥ १४१ ॥

जिह्व-कुटिल तथा आलसी और
वक्र ॥ १४१ ॥

गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च-
गुल्म-पिलही रोग, बिना डालीका
वृक्ष तथा एक प्रकारकी सेना ॥

जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।
जामि-बहिन, तथा कुलस्त्री ॥

क्षितिक्षान्त्योः क्षमा युक्ते क्षमं
शक्ते हिते त्रिषु ॥ १४२ ॥

क्षमा-पृथ्वी तथा क्षमा वा सहना
॥ १४२ ॥

त्रिषु श्यामौ हरित्कृष्णौ
श्यामा स्याच्छारिवा निशा ।

श्याम-श्यामा-हरा, कृष्ण, शतावरी
और रात्रि ॥

ललामं पुच्छपुंड्राश्वभूषाप्रा-
धान्यकेतुषु ॥ १४३ ॥

ललाम-पूँछ, घोडा, घोडेके माथेका
एक चिह्न, घोडेका गहना, प्रधान वा
मुख्य, मनोहर, प्रभाव, पुरुष तथा भूषण
और अश्वलिङ्गी ॥ १४३ ॥

सूक्ष्ममध्यात्मम-
सूक्ष्म-छल तथा अध्यात्म ॥

-प्यादौ प्रधाने प्रथम-

प्रथम-पहिला-ली, तथा प्रधान वा
मुख्य ॥

-स्त्रिषु ।

यहांसे लेकर मान्तपर्यन्त सम्पूर्ण
शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

वामौ वल्गुप्रतीपौ द्वा-
वाम--शोभित, उलटा तथा टेढा ॥

वधमौ न्यूनकुत्सितौ ॥ १४४ ॥
अधम--न्यून, तथा निन्दित १४४।

जीर्णं च परिभुक्तं च यात-
यामभिदं द्वयम् ॥

यातयाम--पुराना-नी, (बासी अन्न
इत्यादि) और भोजन करके त्याग किया
गया--ई ॥

॥ इति मान्ताः ॥

तुरंगगरुडौ ताक्ष्यौ-
ताक्ष्य-घोडा तथा गरुड ॥

-निलयापचयौ क्षयौ ॥ १४५ ॥
क्षय-नाश, प्रलय, क्षयरोग तथा

घरं ॥ १४५ ॥
श्वशुर्यौ देवरश्यालौ-

श्वशुर्य-देवर तथा साला ॥
भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विषौ ।

भ्रातृव्य-भतीजा तथा शत्रु ॥
पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ-

पर्जन्य-शब्दित मेघ तथा इन्द्र ॥

-स्यादर्थः स्वामिवैश्ययोः १४६
अर्थ-स्वामि तथा वैश्य ॥ १४६।

तिष्यः पुष्ये कलियुगे—

तिष्य-पुष्य नक्षत्र और कलियुग ॥

—पर्यायोऽवसरे क्रमे ।

पर्याय-अवसर तथा क्रम ॥

प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वासहे-
तुषु ॥ १४७ ॥ रन्ध्रे शब्दे—

प्रत्यय-अधीन, शपथ, ज्ञान, विश्वास
तथा कारण ॥ १४७ ॥ छिद्र और शब्द ॥

स्थानुशयो दीर्घद्वेषानुतापयोः ।

अनुशय-बड़ा वैर तथा पश्चात्ताप ॥

स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये गजा-

नां मध्यमे गते ॥ १४८ ॥

स्थूलोच्चय-पर्वतका बड़ा ढाँका असं-
पूर्णता, हाथियोंकी मध्यम गति अ-
र्थात् न जल्दी न धीरे ॥ १४८ ॥

समयाः शपथाचारकाल-
सिद्धान्तसंविदः ।

समय-काल वा समय, शपथ व
किरिया, आचार वा अपने मतके सह-
श व्यवहार, सिद्धान्त अर्थात् निर्णय
किया हुआ पदार्थ तथा बातचीत
करना ॥

व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्य-
नयास्त्रयः ॥ १४९ ॥

अनय-दुर्व्यसन, जुआ इत्यादि दुष्ट
भाग्य तथा विपत्ति और अनीति ॥ १४९ ॥

अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रदोषे
दण्डे—

अत्यय-मरना, उल्लंघन, क्लेशदोष
तथा दण्ड और नाश ॥

ऽप्यथापाद ।

युद्धायत्योः संपरायः—

सम्पराय-आपत्ति युद्ध तथा उत्तर-
काल या अगाडीका समय ॥

—पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च ॥ १५० ॥

पूज्य-पूजा वा आदर करनेके योग्य
और ससुर ॥ १५० ॥

पश्चादवस्थायि बलं समवा-
यश्च संनयौ ।

सन्नय-अच्छा न्याय करनेवाला
सेनाके पीछकी सेना तथा समूह ॥

संघात संनिवेशे च संस्त्यायः—
संस्त्याय-समूह, बैठक तथा विस्तार ॥

—प्रणयास्त्वमी ॥ १५१ ॥

विस्त्रम्भयाच्चाप्रेमाणः—

प्रणय-प्रेम वा प्रीति, मांगना तथा
विश्वास ॥ १५१ ॥

—विरोधेऽपि समुच्छ्रयः ॥

समुच्छ्रय-उंचाई तथा विरोध ॥

विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र

शब्दादिकेष्वपि ॥ १५२ ॥

विषय-जानी हुई वस्तु, रूपः

रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द, ये प्रत्येक
विषय कहलाते हैं; देश, स्थान और
आश्रय ॥ १५२ ॥

निर्यासेऽपि कषायोऽस्त्री-

कषाय-कषेला रङ्गवाला-ली, कसे-
लारङ्ग, काढा, विलेपन तथा नया अंग-
राग अर्थात् टटका चन्दनादिक ॥

-सभायां च प्रतिश्रयः ।

प्रतिश्रय-सभा, आश्रय वा अवल-
म्बन तथा अंगीकार ॥

प्रायो भूमन्यन्वगमने-

प्राय-संन्यासपूर्वक भोजनका त्याग,
मृत्यु वा मरण और तुल्य ॥

-मन्युर्देन्ये क्रतौ क्रुधि १५३ ॥

मन्यु-क्रोध, दीनता वा गरीबी
तथा चिन्ता वा शोक ॥ १५३ ॥

रहस्योपस्थयोर्गुह्यं-

गुह्य-छिपानेके योग्य तथा स्त्री वा
पुरुषका सूत्रेन्द्रिय ॥

-सत्यं शपथतथ्ययोः ।

सत्य-सच्चा-ची, सत्यभामा सत्यता
कसम तथा सत्युग ॥

वीर्यं बले प्रभावे च-

वीर्य-बल और प्रभाव ॥

-द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये ॥ १५४ ॥

द्रव्य-धन, भव्य अर्थात् सुन्दर
और स्थिर ॥ १५४ ॥

धिष्ण्यं स्थाने गृहे भेऽग्नौ-
धिष्ण्य-स्थान, गृह, नक्षत्र तथा
अग्नि ॥

-भाग्यं कर्म शुभाशुभम् ।

भाग्य-भाग्य वा पूर्वजन्मके किये
हुए अच्छे वा बुरे कर्म ॥

कशेरुहेम्नोर्गाङ्गेयं-

गाङ्गेय-गंगासम्बन्धी वस्तु, भीष्म
कौरवके पितामह, सुवर्ण वा सोना, कसे-
रुफल वा कन्द ॥

-विशल्या दन्तिकाऽपि च ॥ १५५ ॥

विशल्या-गुडूची औषधी, इन्द्रपुष्पी
औषधी, अग्निकी शिखा वा आगकी
लपट तथा दन्तिका औषधी ॥ १५५ ॥

वृषाकपायी श्रीगौर्यो-

वृषाकपायी-लक्ष्मी तथा पार्वती ॥

-रभिरुया नामशोभयोः ॥

अभिरुया-नाम तथा शोभा ॥

आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा

पूजनं संप्रधारणम् ॥ १५६ ॥

उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा

च नव क्रियाः ।

क्रिया-क्रिया वा कर्म, आरंभ, प्राय-

श्चित्त, शिक्षा, पूजन, विचार, उपाय,
कर्म, चेष्टा तथा दवाई करना ॥ १५६ ॥

छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्राति-
विम्बमनातपः ॥ १५७ ॥

छाया-छाया, सूर्यकी स्त्री वा शनै-
श्वरकी माता तथा शोभा और प्रति-
विम्ब ॥ १५७ ॥

कक्ष्या प्रकोष्ठे हर्म्यादेः का-
ञ्च्यां मध्येभवन्धने ।

कक्ष्या-राजाकी डेउढी, स्त्रियोंके
कमरका गहना, हाथीके मध्य शरी-
रका बन्धन ॥

कृत्या क्रियोदेवतयोस्त्रिषु भेदे
धनादिभिः ॥ १५८ ॥

कृत्या-धन, स्त्री, भूमि इत्यादि, फोड-
नेके योग्य शत्रुका पुरुष इत्यादि तामसी
देवता जिसको लोग शत्रुपर चलाते हैं
तथा क्रिया वा कर्म ॥ १५८ ॥

जन्यं स्याज्जनवादेऽपि-

जन्य-जो पैदा होता है, निन्दित
वचन धरके अर्थात् दामादके पक्षवाले
मित्र इत्यादि, बाजार तथा युद्ध ॥

-जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च ।

जघन्य-सबसे पिछला-ली, अधम
वा नीच तथा मृत्रेन्द्रिय ॥

गर्ह्याहीनौ च वक्तव्यौ-

वक्तव्य-बोलनेके योग्य, निन्दा कर-
नेके योग्य, हीन अर्थात् किसी वस्तुसे
रहित तथा अधीन वा परतन्त्र ॥

-कल्यौ सज्जनिरामयौ ॥ १५९ ॥

कल्य-कवच धारण करनेवाला

योद्धा तथा नीरोग ॥ १५९ ॥

आत्मज्ञाननपेतोऽर्थार्थो-

अर्थ-अर्थसे च्युत वा दूर न भया-

ई, बुद्धिमान्-मती, और शिलाजीत ॥

पुण्य तु चार्वापि ।

पुण्य-पुण्यवान् मनोहर तथा धर्म ।

-रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि-

रूप्य-रमणीय वा सुन्दर, रुपया

वा चांदी; छपी हुई चांदी वा सोना

अर्थात् चांदी वा सोनेका रुपया ॥

-वदान्यो वल्गुवागपि ॥ १६० ॥

वदान्य-दाता वा देनेवाला-ली,

मीठा बोलनेवाला-ली ॥ १६० ॥

न्याय्येपि मध्यं-

मध्य-विचला-ली वा बीचवाला-

ली, अधम वा नीच, न्याययुक्त वा

न्यायके सदृश, कमर तथा बीच ॥

-सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते ।

सौम्य-सूधा-धी, सुन्दर, चन्द्रको

निवेदन करनेके योग्य वस्तु, बुध

(एक ग्रह) ॥

॥ इति यांताः ॥

निवहावसरौ वारौ-

वार-सोम, मंगल, बुध इत्यादि ७

सात वार, अवसर, समूह ॥

—संस्तरौ प्रस्तराऽध्वरौ ॥ १६१ ॥

संस्तर—कुशका बिछौना; बिछौना
तथा यज्ञ ॥ १६१ ॥

गुरु गीष्पतिपित्राद्यौ—

गुरु—भारी, बृहस्पति, बड़े लोग (पिता इत्यादि) ॥

द्वापरौ युगसंशयौ ।

द्वापर—संशय (सन्देह), 'द्वापर'
युग ॥

प्रकारौ भेदसादृश्ये—

प्रकार—भेद (तरह) तथा तुल्यता ॥

—आकाराविद्धिताकृती ॥ १६२ ॥

आकार—चेष्टा तथा सूरत ॥ १६२ ॥

किंशारू सस्यशूकेषु—

किंशारू—यव इत्यादिका ढूँडा
(सुईके तुल्य अग्रभाग) तथा बाण
और कंक पक्षी ॥

—मरू धन्वधराधरौ ।

मरू—निर्जलदेश और पर्वत ॥

अद्रयो द्रुमशैलार्काः—

अद्रि—वृक्ष, पर्वत तथा सूर्य ॥

—स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ १६३

पयोधर—स्तन और मेघ ॥ १६३ ॥

ध्वान्तरिदानवा वृत्रा—

वृत्र—वृत्रासुर, (एक दैत्य) अन्धकार
तथा शत्रु ॥

—बलिहस्तांशवः कराः ।

कर—हाथ, हाथीकी सूंड, किरण
तथा महसूल वा कर ॥

प्रदरा भङ्गनारिरुग्वाणा—

प्रदर—स्त्रियोंका एक रोग (जिसके
होनेसे मूत्रद्वारसे लोहू बह जाता है)
भग (भग्नता) तथा बाण ॥

—अस्त्राः कचा अपि ॥ १६४ ॥

अस्त्र—केश कोना, आंसू तथा
लोहू ॥ १६४ ॥

अजातशत्रुगो गौः काले-

ऽप्यश्मश्रुर्ना च तूवरौ ।

तूवर—समयपर जिसके सींग न
जमें हों ऐसा बैल, समयपर जिसके
मूँछें न जमी हों ऐसा पुरुष ॥

स्वर्णेऽपि राः—

रै—धन तथा सुवर्ण (सोना) ॥

—परिकरः पर्यंकपविारयाः

॥ १६५ ॥

परिकर—पलंग और कुटुम्बा ॥ १६५ ॥

मुक्ताशुद्धौ च तारः स्या—

तार—ऊँचा शब्द, नक्षत्र, आंखकी
पुतली, मोती, सफाई, गोल मोती, गोल
और निर्मल मोतीसे बना हार, जलसे
पार उतरना, एक वानरका नाम तथा
चांदी धातु ॥

—च्छारो वायौ स तु त्रिषु ।
कबुरे—

शार—धितकवरा—री, चौपड इत्या-
दिके खेलनेकी गुट्टी, तथा वायु ॥

—ऽथ प्रतिज्ञाजिसंविदापत्सु
संगरः ॥ १६६ ॥

संगर—संग्रामका युद्ध, प्रतिज्ञा,
सलाह तथा आपत्ति वा विपत्ति १६६ ॥

वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रो—

मन्त्र—मन्त्र वा सलाह, एक वेदका
भेद, तथा गुप्त बोलना ॥

मित्रो रवावपि ।

मित्र—सूर्य, मित्र (दोस्त) तथा अपने
समीपके राजासे व्यवहित राजा ॥

मखेषु यूपखण्डेऽपि स्वरु—

स्वरु—इन्द्रका वज्र तथा यज्ञमें
खम्भके छीलनेके समय उसमेंसे गिरा
पहिला टुकड़ा ॥

गुह्येऽप्यवस्करः ॥ १६७ ॥

अवस्कर—विष्ठा तथा स्त्री वा पुरु-
षका मूत्रेन्द्रिय (उपस्थ) ॥ १६७ ॥

आडम्बरस्वर्यवे गजेन्द्राणां
च गर्जिते ।

आडम्बर—तैयारी, बाजेका शब्द,
तथा बड़े हाथियोंका शब्द ॥

अभिहारोऽभियोगे च चौयं
संहनेऽपि च ॥ १६८ ॥

अभिहार—चौराना, कवच इत्यादि-
का धारण तथा नालिश इत्यादि शत्रुके
नाशका उपाय ॥ १६८ ॥

स्याज्जङ्गमे परीवारः खड्गकोषे
परिच्छेदे ।

परीवार—कुटुम्ब, तरवार इत्यादिका
म्यान तथा लाव लश्कर ॥

विष्ट्रो विटपी दर्भमुष्टिः
पीठाद्यमासनम् ॥ १६९ ॥

विष्ट्र—बैठनेका आसन, वृक्ष, दर्भ-
मुष्टि (एक प्रकारका परिमाण) वा
नाप ॥ १६९ ॥

द्वारि द्वाःस्थे प्रतीहारः प्रती-
हार्यप्यनन्तरे ।

प्रतीहार—प्रतीहारि-द्वार तथा द्वारपाल ॥

विपुले नकुले विष्णौ बभ्रुर्ना
पिंगले त्रिषु ॥ १७० ॥

बभ्रु—पीले रंगवाली वस्तु, पीला रंग,
बड़ा नौला, विष्णु तथा एक यादव
॥ १७० ॥

सारो बले स्थिरांशे च न्या-
ये क्लीवं वरे त्रिषु ।

सार—श्रेष्ठ वा प्रधान, बल, वस्तुका
स्थिर भाग, बाहीर, मज्जा व चरबी,
पानी घन तथा उचित वा न्यायके
अनुसार ॥

दुरोदरो द्यूतकारे पणे द्यूते
दुरोदरम् ॥ १७१ ॥

दुरोदर—जुआरी; दाव (जो द्रव्य जु-
चेमें लगाया जाता है) जुआ ॥ १७१ ॥

महारण्ये दुर्गपये कान्तारं
पुनपुंसकम् ।

कान्तार—दुर्गम वा टेढा मार्ग, बड़ा
बन एक प्रकारका ऊँच ॥

मत्सरोऽन्यशुभदेवे तद्वत्कृपणयो-
स्त्रिषु ॥ १७२ ॥

मत्सर—ईर्ष्या वा डाह करनेवाला—ली
कृपण वा सूँ, तथा ईर्ष्या वा डाह १७२

देवाद्रवृते वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीबं
अनाविप्रये ।

वर—श्रेष्ठ वा प्रधान वा मुख्य,
देवताने जो प्रसन्न होकर दिया, दूल्हा
वा वर, केशर ॥

वंशांकुरे करीरोऽस्त्री तरुभेदे
घटे च ना ॥ १७३ ॥

करीर—बाँसका छकड़ा, करील वा
टुंटी वृक्ष, एक प्रकारका काँटेदार वृक्ष
वा कोकर तथा घटना वा मेल ॥ १७३ ॥

ना चमूजघने हस्ते सूत्रे प्राति-
सरो स्त्रियाम् ।

प्रतिसर—सेनाका पिछला हिस्सा,
तथा मन्त्रतन्त्रका डोरा ॥

यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहां-
शुवाजिषु ॥ १७४ ॥

शुकाहिकपिभेकेषु हरिर्ना
कपिले त्रिषु ।

हरि—यम, वायु, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य,
विष्णु, सिंह, किरण, घोड़ा ॥ १७४ ॥

तोता, साँप, बन्दर, मेढक और हरा
रङ्ग तथा कपिल रङ्ग और कुछ पीली
वस्तु ॥

शर्करा कर्परांशेऽपि—
शर्करा—ठिकड़ी, कंकड़ी, खाँड़, रेत

तथा बहुत किड़ियोंकी जमीन ॥
—यात्रास्याद्यापने गतौ ॥ १७५ ॥

यात्रा गमन वा चलना तथा चालना
॥ १७५ ॥

इरा भूवाक्सुराऽप्सु स्या—
इरा—मद्य, भूमि, वाणी तथा जला

—तन्द्नी निद्राप्रमीलयोः ।
तन्द्नी—निद्रा तथा आलस्य ॥

धात्री स्यादुपमाताऽपि क्षिति-
रप्यामलक्यापि ॥ १७६ ॥

धात्री—माता, आमला, पृथ्वी तथा
उपमाता अर्थात् दूध पिलानेवाली

धाय ॥ १७६ ॥
क्षुद्रा व्यङ्गा नदी वेश्या सरथा

कण्टकरिका । त्रिषु क्रूरेऽधमे
ऽल्पेऽपि क्षुद्रं—

क्षुद्र—क्रूर, अधम, अल्प वा थोड़ा-
ही, सूँ, मधुमाछी, भटकटैया, हीन
अंगवाली स्त्री, नदी, वेश्या ॥

—मात्रा परिच्छदे ॥ १७७ ॥
अल्पे च परिमाणे सा मात्रं
कात्स्न्येऽवधारणे ।

मात्रा—परिच्छद वा सामग्री १७७ ॥
परिमाण, सूक्ष्म वा पतला, सम्पू-
र्णता, तथा अवधारण वा निश्चय ॥

आलेख्याश्चर्ययोश्चित्रं—

चित्र—चित्रविचित्ररंगवाला ली, आ-
श्चर्ययुक्त, कई एक मिश्रितरङ्ग, एक नक्ष-
त्र, मूसाकर्णी औषधी, एक तरहकी कक-
दी, अद्भुतरस, तसबीर तथा आश्चर्य ॥

—कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ॥ १७८ ॥

कलत्र—कमर तथा स्त्री ॥ १७८ ॥

योग्यभाजनयोः पात्रं—

पात्र—लायक तथा वर्तन ॥

—पत्रं वाहनपक्षयोः ।

पत्र—सवारी और पंख ॥

निदेशग्रन्थयोः शास्त्रं—

शास्त्र—आज्ञा और ग्रन्थ ॥

—शस्त्रमायुधलोहयोः ॥ १७९ ॥

शस्त्र—हथियार और लोहा ॥ १७९ ॥

स्याज्जटांशुकयोर्नेत्रं—

नेत्र—जटा और वस्त्र तथा नेत्र ॥

—क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः ।

क्षेत्र—स्त्री तथा शरीर, खेत ॥

सुखाग्रे क्रोडहलयोः पोत्रं—

पोत्र—सूकरके मुखका अग्रभाग
तथा हलका अग्रभाग ॥

—गोत्रं तु नाम्नि च ॥ १८० ॥

गोत्र—नाम, पृथ्वी, पर्वत तथा
कुल ॥ १८० ॥

सत्रमाच्छादने यज्ञे सदादाने
वनेऽपि च ।

सत्र—ढक्कन, यज्ञ, सदादान, (सदा-
वर्त) धन, वन तथा धूर्तता ॥

अजिरं विषये काये—

अजिर—विषय, शरीर, वायु, तथा
आंगन ॥

—ऽप्यम्बरं व्योम्नि वासासि ॥ १८१ ॥

अम्बर—आकाश तथा वस्त्र ॥ १८१ ॥

चक्रं राष्ट्रे—

चक्र—राज्य, चक्रवा पक्षी, समूह,
रथका पहिया, कुम्हारका चाक तथा
जलका भँवर ॥

—ऽप्यक्षरं तु मोक्षेऽपि—

अक्षर—मोक्ष, हरफ, ब्रह्म तथा
ओंकार ॥

क्षीरमप्सु च ।

क्षीर—दुग्ध तथा जल ॥

स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ—

भूरि तथा चन्द्र—सुवर्ण और सुन्दर ॥

—द्वारमात्रेऽपि गोपुरम् ॥ १८२ ॥

गोपुर-नगरका द्वार तथा द्वारमात्र
१८२ ॥

सुहादम्भौ गह्वरे द्वे-

गह्वर-गुफा और पाखण्ड ॥

-रहोऽन्तिकमुपह्वरे ।

उपह्वर-एकान्त तथा समीप ॥

पुरोऽधिकमुपर्यग्रा-

अग्र-पुर, अधिक तथा ऊपर ॥

-पयगारे नगरे पुरम् ॥ १८३ ॥

मन्दिरं चा-

पुर-मन्दिर-स्थान और नगर ॥ १८३

-ऽथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्या-

उपद्रवे ।

राष्ट्र-देश तथा उपद्रव ॥

द्वरोऽस्त्रियां भये श्वभ्रे-

द्वर-भय, गड्ढा तथा थोडा वा सूक्ष्म

-वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ १८४ ॥

वज्र-इन्द्रका वज्र, सेहुंडवृक्ष तथा

हीरा ॥ १८४ ॥

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये

परिच्छदे ।

तन्त्र-कुटुम्बका कार्य, सिद्धान्त,

उत्तम औषध, प्रधान वा मुख्य, जुलाहा,

एकप्रकारका शास्त्र, सामग्री, एकप्रका-

रकी वेदकी शाखा, ऐसा हेतु जो पदा-

र्थोंको सिद्ध करता हो ॥

औशीरश्चामरे दण्डेऽप्यौशीरं

शयनासने ॥ १८५

औशीर-चँवरका दण्ड, शयन और

आसन किसीके मतमें यह शब्द पृथक्कर

शयन और आसनका वाचक है १८५।

पुष्करं करिहस्ताये वाद्यभाण्डमुखे

जले । व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थो-

षाधिविशेषयोः ॥ १८६ ॥

पुष्कर-तलाव, कमल, आकाश,

जल, पुष्कमूल, हाथीके सूंडका अग्र-

भाग, बाजेका मुख ॥ १८६ ॥

अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्त-

र्धिभेदतादर्थ्यं । छिद्रात्मीयविना

बहिरवसरमध्येऽन्तरात्मनि च ॥

॥ १८७ ॥

अन्तर-पहरनेके वस्त्रादि, आत्म-

सम्बन्धी वा अपनी वस्तु, बाह्य वस्तु,

अदृश्य वस्तु, अवकाश, अवधि, अदृश्य

होना, भेद, तादर्थ्य, छिद्र, बिना अवसर,

मध्य, अन्तरात्मा ॥ १८७ ॥

मुस्तेऽपि पिठरं-

पिठर-मोथा, घास तथा मथनदंड

वा मथनिया ॥

-राजकशेरुण्यपि नागरम् ।

नागर-चतुर, नगरवासी, सोंठ

तथा नारमोथा ॥

शार्वरं त्वन्यतमसे घातुके भेद्य-
लिङ्गकम् ॥ १८८ ॥

शार्वर-मारनेवाला-ली, घन वा
बडा अन्धकार ॥ १८८ ॥

गौरोऽरुणे सिते पीते-

गौर-श्वेत वा पीत वा लालरंगवाली
वस्तु, श्वेत रंग, पीला रंग, काल रंग,
तथा रजोधर्मसे पहिली अवस्थावाली स्त्री
-व्रणकार्येऽप्यरुष्करः ।

अरुष्कर-घावकरनेवाला-ली, भेलावा ॥

जठरः कठिनेऽपि स्या-

जठर-कठोरवस्तु, वृद्ध वा बुद्धा
तथा पेट ॥

दधस्तादपि चाधरः ॥ १८९ ॥

अधर-नीचे, नीचेका ओष्ठ, हीन
तथा नीच ॥ १८९ ॥

अनाकुलेऽपि चैकाग्रो-

एकाग्र-एकाग्र वा तत्पर तथा
स्वस्थचित्त ॥

-व्यग्रो व्यासक्त आकुले ।

व्यग्र-व्याकुल वा धवडाया-यी,
दुश्चित्त ॥

उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वप्युत्तरः स्या-

उत्तर-उत्तर देशमें उत्पन्न भया-यी,
श्रेष्ठ वा मुख्य, उत्तरदिशा, विराटका
पुत्र, ऊपर, विराटकी पुत्री, तथा उत्तर
का जवाब ॥

-दनुत्तरः ॥ १९० ॥

एषां विपर्यये श्रेष्ठे-

अनुत्तर-श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ ॥ १९० ॥

-दूरानात्मोत्तमाः पराः ।

पर-पराया-यी (वस्तु)-अन्य

दूसरा-री, दूर, उत्तम वा श्रेष्ठ, शत्रु
केवल तथा अनन्तर ॥

स्वादुप्रियौ तु मधुरौ-

मधुर-स्वादु और प्रिय ॥

-क्रूरौ कठिननिर्दयौ ॥ १९१ ॥

क्रूर-कठिन और दयाहीन ॥ १९१ ॥

उदारो दातृमहतो-

उदार-दाता, बडा, सरल वा सूधा ॥

-रितरस्त्वन्यनीचयोः ।

इतर-अन्य तथा नीच ॥

मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरः-

स्वैर-मन्द वा ढीला-ली तथा
स्वच्छन्द अपने मनका काम करनेवाला

-शुभ्रमुद्दीप्तशुक्लयोः ॥ १९२ ॥

शुभ्र-श्वेत वर्णकी वस्तु, उद्दीप्त वा
प्रकाशमान तथा श्वेत रंग ॥ १९२ ॥

इति रान्ताः ॥

चूडा किरीटं केशाश्च संयतं
मौलयस्त्रयः ।

मौलि-मस्तक, चोटी, मुकुट
बंधे हुए बाल ॥

दुमप्रभेदमातंगकाण्डपुष्पाणि
पीलवः ॥ १९३ ॥

पीलु-वृक्षभेद, हस्ती, बाण तथा
पुष्प ॥ १९३ ॥

कृतान्तानेहसोः काल-
काल-यमराज, मृत्यु तथा समय ॥
-श्रुतुर्थेऽपिऽयुगे कलिः ।
कलि-चौथा युग, पुष्पकी कली,
युद्ध तथा कलह ॥

स्यात्कुरंगेऽपि कमलः-
कमल-हिरन, जल, तांबा, कमल
तथा आकाश ॥

-प्रावारेऽपि च कम्बलः ॥ १९४ ॥
कम्बल-सर्पराज, गौके गलेका सासना
तथा कम्बलवस्त्र ॥ १९४ ॥

करोपहारयोः पुंसि बलिः
प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम् ।

बलि-महसूल तथा बुढापेमें पुरुष-
के शरीरपै पडनेवाली सुकडन ॥

स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं
ना काकसीरिणोः ॥ १९५ ॥

बल-मोटाई, सामर्थ्य, सेना, काक
पक्षी तथा बलदेव ॥ १९५ ॥

वातूलः पुंसि वात्यायामपि
वातासहे त्रिषु ।

वातूल-आंधी, बावला, तथा
वायुको न सहनेवाला ॥

भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः पुंसि
श्वापदसर्पयोः ॥ १९६ ॥

व्याल-सर्प, दगावाज तथा हिंसक
पशु ॥ १९६ ॥

मलोऽस्त्री पापविट्किट्टा-
मल-मैल, पाप तथा विष्टा ॥
-न्यस्त्री शूलं रुगायुधम् ।
शूलरोग (जो पेटमें होता है)
तथा शूल एक शस्त्र ॥

शंकावापि द्वयोः कीलः-
कील-अग्निकी ज्वाला वा लपट
तथा लोहे आदिकी कील ॥

-पालिः स्वयं श्रयंकपंक्तिषु १९७ ॥
पालि-खड्ग इत्यादिका टोंका
'कोना' धारा, चिह्न तथा पंक्ति ॥ १९७ ॥

कला शिल्पे कालभेदे-
कला-तीस काष्ठा, एकसमय,
कारीगरी मूलधन वृद्धि टुकडा तथा
चन्द्रका सोलहवाँ भाग ॥

-ऽप्याली सख्यावली अपि ।
आलि-सखी तथा पंक्ति ॥

अब्ध्यम्बुविकृतौ वेला काल-
मर्यादयोरपि ॥ १९८ ॥

वेला-समुद्रका तीर, काल वा समय
तथा मर्यादा वा हद्द ॥ १९८ ॥

बहुलाः कृत्तिका गावो बहुलो-
ऽग्नौऽशितौ त्रिषु ।

बहुल-बहुल, काले रंगवाला-ली, अग्निवा
आग-कृष्णपक्ष, काला रंग, नेवारीपुष्प
गैथा, स्त्री, बडी इलायची और आकाश
लीला विलासक्रिययो—

लीला-विलास या क्रीडा क्रिया
तथा खेलना ॥

—रूपला शर्करापि च ॥ १९९ ॥

उपला-पत्थर, रत्न तथा सिटकी
॥ १९९ ॥

शोणितेभ्योऽसि कीलालं—

कीलाल-जल तथा रुधिर ॥

—मूलमाद्ये शिफाभयोः ।

मूल-जड, पहिला, वृक्षकी जटा
तथा आभा और आदिकारण ॥

जालं समूह आनायगवाक्ष-
क्षारकेष्वपि ॥ २०० ॥

जाल-मत्स्यादि पकडनेका जाल,
समूह झरौखा तथा न फूली हुई कली
॥ २०० ॥

शीलं स्वभावे सदृत्ते—

शील-शुद्ध कर्म वा पवित्र काम
तथा स्वभाव ॥

—सस्ये हेतुकृते फलम् ।

फल वृक्ष इत्यादिका फल, जायफल,
ढाल, हलके नीचेका काष्ठ जिसका अग्र
भाग लोहेसे बना रहता है, हेतु सिद्ध

किया गया बाणका अग्रभाग, त्रिफला,
परिणाम तथा लाभ वा नफा ॥

छादिर्नेत्ररुजोः क्लीवं समूहे
पटलं न ना ॥ २०१ ॥

पटल-समूह, खपडा तथा एक
नेत्ररोग ॥ २०१ ॥

अधःस्वरूपयोरस्त्री तलं—

तल-किसी वस्तुके नीचेका भाग
तथा स्वरूप ॥

स्याच्चाभिषे पलम् ।

पल-एकदण्ड (२४ मिनट काल)
का साठवां हिस्सा, ६४ मासा, मांस,
तथा उंचाईका नाप ॥

और्वानलेऽपि पातालं—

पाताल-पाताल तथा बडवानल ॥

—चैलं वल्लेऽधमे त्रिषु ॥ २०२ ॥

चल-नीच वा अधम तथा वल्ल
॥ २०२ ॥

कुक्कूलं शंकुभिः कीर्णं श्वश्रे
ना तु तुषानले ॥

कुक्कूल-झरसीकी आग, कील वा
खूंटियोंसे भरा हुआ गड्ढा ॥

निर्णीते केवलमिति त्रिलिंगं
त्वेककृत्स्नयोः ॥ २०३ ॥

केवल-निर्णय किया गया, 'एक'
संख्या तथा संपूर्ण ॥ २०३ ॥

पर्वातिकेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते
त्रिषु ।

कुशल—चतुर, सामर्थ्ययुक्त, कल्याण
वाला—ली, सामर्थ्य, क्षेम, पुण्य तथा
कल्याण ॥

प्रवालमंकुरेऽप्यस्त्री—

प्रवाल—मूंगा, नया पत्ता, अंकुर
तथा वीणाका दण्ड ॥

—त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च ॥ २०४ ॥

स्थूल—मोटा—टी, निर्बुद्धि वा
बुद्धिरहित तथा समूह ॥ २०४ ॥

करालो दन्तुरे तुङ्गे—

कराल—भयंकर, ऊँचे दांतवाला—ली
तथा उंचा—ची ॥

—चारौ दक्षे च पेशलः ।

पेशल—चतुर तथा मनोहर ॥

मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्या—

बाल—लड़का, केश, बाल, मूर्ख तथा
नेत्रवाला औषधी ॥

—लोलश्चलसत्तृणयोः ॥ २०५ ॥

लोल—चञ्चल तथा लालची ॥ २०५ ॥

इति लान्ताः ॥

दवदावौ वनारण्यवह्नी—

दव—दाव—वन तथा वनकी आग ॥

—जन्महरौ भवौ ।

भव—संसार, जन्म, शंकर ॥

मन्त्री सहायसचिवौ—

मन्त्रिन्—राजाका मंत्री वा राजाको

सलाह देनेवाला तथा सहायक ॥

—पतिशाखिनरा धवाः ॥ २०६ ॥

धव—स्त्रीका पति, एक वृक्ष तथा

पुरुष ॥ २०६ ॥

अवयः शैलमेषार्का—

अवि—मेंढा, पर्वत, सूर्य तथा रज-
स्वला स्त्री ॥

—आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः ।

हव—पुकारना, आज्ञा वा हुक्म तथा
यज्ञ वा याग ॥

भावः सत्तास्वभावाभिप्रायचे—
ष्टात्मजन्मसु ॥ २०७ ॥

भाव—अभिप्राय वा तात्पर्य, विद्वान्
वा पंडित, सत्ता वा रहनेवालेका धर्म-
स्वभाव, आत्मा, जन्म वा उत्पत्ति, चेष्टा
तथा मनका विकार ॥ २०७ ॥

स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो
गर्भमोचने ।

प्रसव—जनना, उत्पत्ति, फल तथा
पुष्प वा फूल ॥

अविश्वासेऽपह्वेऽपि निकृता-
वपि निहवः ॥ २०८ ॥

निहव—अविश्वास, झूठ बोलना
तथा धूर्तपन ॥ २०८ ॥

उत्सेकामर्षयोरिच्छाप्रसवे मह
उत्सवः ॥

उत्सव-उत्सव वा मंगलकार्य, औ-
द्धत्य वा गर्व वा बडाई कोप, इच्छाका
वेग तथा आनन्दका समय ॥

अनुभावः प्रभावे च सतां च
मतिनिश्चये ॥ २०९ ॥

अनुभाव-प्रभाव, सत्पुरुषोंकी
बुद्धिका निश्चय ॥ २०९ ॥

स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं
चाद्योपलब्धये ।

प्रभव-उत्पत्तिका स्थान, कारण,
पराक्रम तथा ज्ञानका प्रथम स्थान ॥

शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे पार-
श्वो मतः ॥ २१० ॥

पारश्व-शूद्रकी स्त्रीमें ब्राह्मणसे
हुआ पुत्र तथा शस्त्र ॥ २१० ॥

ध्रुवो भभेदे कृविं तु निश्चिते
शाश्वते त्रिषु ।

ध्रुव-स्थिर, नक्षत्रविशेष, निश्चय
तथा शाश्वत ॥

स्वो ज्ञातावात्मनि स्वं त्रिष्वा-
र्त्माये स्वोऽस्त्रियां धने ॥ २११ ॥

स्व-जातिके पुरुष, आत्मा, अपना
तथा धन ॥ २११ ॥

स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेऽपि नीवी परि-
ष्णोऽपि च ॥

नीवी-स्त्रीके वस्त्रका बन्धन जो
नाभिके समीप बांधा जाता है तथा
मूलधन ॥

शिवा गौरीफेरवयो-

शिवा-पार्वती, सियार, शमीका
वृक्ष हरं तथा आँवला ॥

-द्वन्द्वं कलहयुग्मयोः ॥ २१२ ॥

द्वन्द्व-कलह तथा स्त्री पुरुषका
जोडा ॥ २१२ ॥

द्रव्यासुव्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री
तु जन्तुषु ।

सत्त्व-द्रव्य, प्राण अत्यन्त उद्योग
जन्तु, सत्त्वगुण तथा बल ॥

कृविं नपुंसके षण्डे वाच्यलिंग-
मविक्रमे ॥ २१३ ॥

कृब-नपुंसकलिङ्ग, नपुंसक पुरुष
तथा पराक्रमहीन ॥ २१३ ॥

इति वान्ताः ॥

-द्वौ विद्वौ वैश्यमनुजौ-

विद्-वैश्य, मनुष्य तथा प्रवेश ॥

द्वौ चराभिमरौ स्पशौ ।

स्पश-दूत तथा संग्राम ॥

द्वौ राशी पुञ्जमेषाद्यौ-

राशि-समूह तथामेषवृषादिराशि ॥

-द्वौ वंशौ कुलमस्करौ ॥ २१४ ॥

वंश-कुटुम्ब तथा बांस ॥ २१४ ॥

रहः प्रकाशौ वीकाशौ—
 वीकाश—एकान्त तथा प्रकाश ॥
 —निर्वेशो भृतिभोगयोः ।
 निर्वेश—नौकरी, भोग तथा मृच्छा ।
 कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्र—
 कर्षकयोस्त्रिषु ॥ २१५ ॥
 कीनाश—यमराज तथा किसान २१५
 पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः
 स्यात्—
 अपदेश—बहाना, निशाना वा
 लक्ष्य तथा निमित्त वा हेतु ॥
 —कुशमप्सु च ।
 कुश—कुश एकतरहकी घास तथा
 जल ॥
 दशाऽवस्थानेकविधा—
 दशा—अवस्था (लडकई जवानी
 इत्यादि) ॥
 —प्याशातृष्णापि चायता २१६
 आशा—बडी तृष्णा तथा दिशा ॥
 ॥ २१६ ॥
 वशा स्त्री करिणी च स्याद्—
 वशा—स्त्री, वांझ, गाय तथा
 हाथिनी और बेटी ॥
 —दृग्ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु ।
 स्यात्कर्कशः साहसिकः कठो-
 रामसृणावपि ॥ २१७ ॥
 कर्कश—कठोर, दुःस्पर्श, साहसी

तथा झगडाहू स्त्री और कवील
 औषधि ॥ २१७ ॥
 प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेऽपि—
 प्रकाश—अतिप्रसिद्ध, धूप, उजाला ॥
 —शिशवज्ञे च बालिशः ।
 बालिश—बालक तथा मूर्ख ॥
 ॥ इति शान्ताः ॥
 सुरमत्स्यावनिमिषौ—
 अनिमिष—देवता तथा मत्स्य वा
 मछली ॥
 —पुरुषावात्ममानवौ ॥ २१८ ॥
 पुरुष—पुरुष वा नर; आत्मा, नागके-
 शर वृक्ष तथा मनुष्य ॥ २१८ ॥
 काकमत्स्यात्खगौ ध्वाक्षौ—
 ध्वाङ्क्ष—कौवा तथा मत्स्य पकड-
 नेवाला पक्षी (बगुला) इत्यादि ॥
 —कक्षौ तु तृणवीरुधौ ।
 कक्ष—काख वा बगला तथा तृण
 वा घासकी गंजी और लता ॥
 अभीषुः प्रग्रहे रश्मौ—
 अभीषु—किरण, डोरी तथा पगह
 लगाम इत्यादि ॥
 —प्रैषः प्रेषणमर्दने ॥ २१९ ॥
 प्रैष—भोजना, मर्दन करना तथा
 आज्ञा देना ॥ २१९ ॥
 पक्षः सहाये—

पक्ष-पक्षियोंका पंख, वा आधा
सहीना, सहाय, वैर, बल, मित्र, घर,
शरीरकी अगलबगलकी, पँसली तथा
बड़ा हाथी और निकट ॥

-ऽप्युष्णीषः शिरोवेष्टकिरी-
टयोः ।

उष्णीष-पगडी तथा किरीट व
मुकुट ॥

शुकले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते
वृषभे वृषः ॥ २२० ॥

वृष-मूसा, जन्तु, श्रेष्ठ वा मुख्य,
अड्डसा एक झाड, वृषभनामक औषध,
बैल, अण्डकोष, धर्म, मेषआदि १२ राशि-
योंमेंसे दूसरा राशि, सिंगिया (एक विष)
तथा एक सुगन्ध चूर्ण ॥ २२० ॥

कोषोऽस्त्री कुड्मले खड्गापि-
धानेऽर्थोवादिव्ययोः ॥

कोष (श)-पुष्पकी कली, तल-
बारका घर व म्यान, खजाना तथा
शपथ (सौगंध वा कसम) ॥

द्युतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षो-

आकर्ष-जूआ, गुट्टियोंके रखनेके
लिये बस्त्रादिसे बना घर तथा पासा ॥

-ऽथाक्षमिन्द्रिये ॥ २२१ ॥
ना सुताङ्गे कर्पचक्रे व्यवहारे
कलिद्रुमे ।

अक्ष-इन्द्रिय ॥ २२१ ॥ पासा;
सोलह मासा, बहेडा, सोंचरनोन ॥

कर्षूर्वातो करीषाग्निः कर्षूः
कुल्याभिघायिनि ॥ २२२ ॥

कर्षू-पासा, एक प्रकारकी तोल,
पहिया, बहेडाफल, व्यवहार, करसीकी
आग, जीविका तथा नदी ॥ २२२ ॥

पुंभावे तत्क्रियायां च पौरुषं-
पौरुष-पोरसामर गहिरा-री, पौरुष,
पुरुषका धर्म ॥

-विषमप्सु च ।

विष-विष वा जहर तथा पानी ॥

उपादानेऽप्यामिषं स्या-

आमिष-मांस तथा दूध ॥

दपराधेऽपि किलिवषम् ॥ २२३ ॥

किलिवष-पाप अपराध तथा प्रीति
॥ २२३ ॥

स्याद्वृष्टौ लोकधात्वंशे वत्सरे
वर्षमाखियाम् ।

वर्ष-वरस वा देवतोंका एक दिन;
वृष्टि वा वर्षा, जम्बूद्वीप तथा स्नान ॥

प्रेक्षा नृत्येक्षणं प्रज्ञा-

प्रेक्षा-बुद्धि तथा देखना ॥

भिक्षा सेवार्थना भृतिः ॥ २२४ ॥

भिक्षा-भीख, सेवा, प्रार्थना वा
मजूरी ॥ २२४ ॥

त्विट् शोभापि-

त्विष्-शोभा तथा वाणी ॥

—त्रिषु परे—

न्यक्ष—अध्यक्ष और रुक्ष यह तीनों
शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

—न्यक्षं कात्स्न्यनिकृष्टयोः ॥

न्यक्ष—निकृष्ट वा नीच तथा सं-
पूर्णता ॥

प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षो—

अध्यक्ष—प्रत्यक्ष तथा अधिकारी ॥

—रुक्षस्त्वप्रेम्ण्यचिक्कणे ॥ २२५ ॥

रुक्ष—प्रेमरहित रूखा ॥ २२५ ॥

॥ इति षांताः ॥

राविश्वेतच्छदौ हंसौ—

हंस—सूर्य और हंसपक्षी ॥

—सूर्यवह्नी विभावसू ।

विभावसु—सूर्य तथा अग्नि ॥

वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ—

वत्स—बछवा, बच्चा वा लडका

छाती तथा वर्ष वा वरिस ॥

—सारंगाश्च दिवौकसः ॥ २२६ ॥

दिवौकसू—देवता तथा पक्षी ॥ २२६ ॥

शृंगारादौ विषे वीर्ये गुणे

रागे द्रवे रसः ।

रस—खट्टा मीठा इत्यादि रस, पारा

धातु, गन्धरस, शृङ्गार, वीर, करुणा

इत्यादि साहित्यके रस, वीर्य वा धातु

प्रीति वा प्रेम, जहर, स्वाद, पतली वस्तु
(जैसा पानी शरबत आदि)

पुंस्युत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूर
च शेखरे ॥ २२७ ॥

उत्तंस, अवतंस—कर्णफूल वा कानका

भूषण तथा शिरपेज ॥ २२७ ॥

देवभेदेऽनले रश्मौ वसु रत्ने
धने वसु ।

वसु—किरण वा प्रकाश, अग्नि वा
आग, कुबेर, गुम्माभाजी, पानी, धन,
तथा मणि ॥

विष्णौ च वेधाः—

वेधसू—ब्रह्मा, विष्णु तथा पंडित ॥

—स्त्री त्वाशीर्हिताशसाहिदं-

ष्ट्रयोः ॥ २२८ ॥

आशिसू—दूसरेके हितका चाहना
और सपकी दंष्ट्रा ॥ २२८ ॥

लालसे प्रार्थनौत्सुक्ये—

लालसा—प्रार्थना तथा उत्कंठा वा
बडी चाह ॥

—हिंसा चौर्यादिकर्म च ।

हिंसा—चोरीआदि बुरा कर्म तथा
वध करना ॥

प्रसूरश्चापि—

प्रसू—माता तथा घोडी ॥

—भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी

च ते ॥ २२९ ॥

रोदसी—द्विवचनांत, भूमि तथा
आकाश ॥ २२९ ॥

ज्वालाभासौ न पुंस्पर्वाच—

आर्चिस्—ज्वाला तथा प्रकाश ॥

—ज्योतिर्भद्योतद्दृष्टिषु ।

ज्योतिस्—ज्योतिर्विद्या तारा

प्रकाश तथा दृष्टि ॥

पापापराधयोरागः—

आगस्—पाप तथा अपराध ॥

—खगवाल्यादिनोर्वयः ॥ २३० ॥

वयस्—पक्षी और बाल्य आदि

अवस्था ॥ २३० ॥

तेजःपुगीषयोर्वचो—

वर्चस्—तेज या प्रकाश वा चमक

तथा विष्टा ॥

—महस्तृत्सवतेजसोः ।

महस्—उत्सव तथा तेज ॥

रजो गुणे च स्त्रीपुष्पे—

रजस्—बूली व धर रजोगुण तथा
स्त्रीका हर महीनेका रुधिर ॥

—राहौ ध्वान्तेऽगुणे तमः ॥ २३१ ॥

तमस्—अन्धकार राहुग्रह तमोगुण

अज्ञान तथा क्रोध ॥ २३१ ॥

छन्दः पद्येऽभिलाषे च—

छन्दस्—पद्य और अभिलाष तथा वेद ॥

—तपःकृच्छादिकर्म च ।

तपस्—कृच्छादिव्रत तथा लोकांतर
अर्थात् कोई लोक ॥

सहो बलं सहा मार्गो—

सहस्—अगहन महीना तथा बल

वा सामर्थ्य ॥

—नभःखं श्रावणो नभाः ॥ २३२ ॥

नभस्—श्रावणमहीना तथा आकाश २३२

ओकः सज्ञाश्रयश्चोकाः—

ओकस्—आश्रय वा अवलंबन तथा घर

—पयः क्षीरं पयोऽम्बु च ।

—पयस्—पानी तथा दूध ॥

ओजो दीप्तौ बले—

ओजस्—बल तथा प्रकाश ॥

—स्रोत इन्द्रिये निम्नगारये २३३

स्रोतस्—स्रोत वा आपसे जलका बहना

इन्द्रिय तथा नदीका वेग ॥ २३३ ॥

तेजःप्रभावे दीप्तौ च बले

शुक्ले—

तेजस्—प्रभाव, प्रकाश, वीर्य तथा काम ॥

—ऽप्यतास्त्रिषु ।

बहांसे भागे सान्तवर्गकी समाप्तिप-

र्यत सब शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं ॥

विद्वान्विदंश्च—

विद्वान्—पंडित वा जानकार तथा पत्र ॥

—बीभत्सो हिंस्रो—

बीभत्स—जिसको देखकर धिन्न उत्पन्न हो

घात करनेवाला, क्रूर वा कठोर
तथा बीभत्स रस ॥

—ऽप्यतिशये त्वमी ॥ २३४॥

वृद्धप्रशस्ययोज्यायान्—

ज्यायसू—बहुत बुढ़ा—डूढ़ो तथा
अत्यन्त प्रशंसा करनेके योग्य ॥ २३४॥

—कनीयांस्तु युवाल्पयोः—

कनीयसू—अत्यन्त जवान अत्यन्त
छोटा तथा छोटा भाई ॥

वरीयांस्तूरुवरयोः—

वरीयसू—अत्यन्त बडा तथा अत्यन्त
श्रेष्ठ ॥

--साधीयान्साधुबाढयोः ॥ २३५॥

साधीयसू—अत्यन्त साधु वा भला-
स्त्री तथा अत्यन्त बहुत ॥ २३५ ॥

॥ इति सान्ताः ॥

दलेऽपि बर्ह—

बर्ह—मोरके पंख वा पूछ, पत्ता
तथा कर्कोदा वृक्ष ॥

—निर्वन्धोपरागार्कादयो ग्रहाः ।

ग्रह—सूर्य इत्यादि ९ ग्रह, ग्रहण क-
रना, यज्ञके पात्र, ग्रहण जो सूर्य च-
न्द्रको लगता है तथा आग्रह वा हठ ॥

द्वार्यापीडे काथरसे निर्व्यूहो

नागदन्तके ॥ २३६ ॥

निर्व्यूह—खूँटी, शिरोधेष्टन (पगडी

सिरपेंच इत्यादि) तथा द्वार और
काढा ॥ २३६ ॥

तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्राहः
प्रग्रहोऽपि च ।

प्रग्राह—प्रग्रह—कैदी जो चोर इत्या-
दि अपराधीका दण्ड है, पगहा वा
पशु बांधनेकी डोरी, तराजू तथा धो-
डा इत्यादिकी लगाम ॥

पत्नीपरिजनादानमूलशापाः परि-
ग्रहाः ॥ २३७ ॥

परिग्रह—पत्नी वा स्त्री, परिवार,
अंगीकार तथा वृक्षादिकी जड और
शाप ॥ २३७ ॥

दारेषु च गृहाः—

गृह—पत्नी तथा घर ॥

—श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः ।

आरोह—चढ़ना, श्रेष्ठ स्त्रीका कटि-
भाग वा श्रेष्ठ स्त्रीकी कमर तथा वृक्ष
इत्यादिकी उँचाई ॥

व्यूहो वृन्दे—

व्यूह—समूह तथा एक प्रकारकी
सेनाकी रचना ॥

ऽप्यहिर्वृत्रो—

अहि—सर्प तथा वृत्रनामा दैत्य ॥

—ऽप्यग्नीन्द्रार्कास्तमोऽपहाः ॥ २३८ ॥

तमोपहा—चन्द्र, सूर्य तथा अग्नि २८॥

परिच्छदे नृपाहं ऽर्थे परिवर्हो—

परिवर्ह—राजाका छत्र चमर इत्यादि
चिह्न तथा सामग्री ॥

॥ इति हान्ताः ॥

—ऽव्ययाः परे ।

अव—इसके उपरांत अव्ययोंका
वर्णन करते हैं जो कि तीनों लिंग, सा-
तों विभक्ति और एकवचन द्विवचन
बहुवचनमें समान बने रहते हैं और
उनमें कुछ विकार नहीं होता ॥

आडीषदर्थे ऽभिव्याप्तौ सीमार्थे
धातुयोगजे ॥ २३९ ॥

आङ्—ईषत्, अभिव्याप्ति, सीमार्थ
और धातुके योगार्थमें होता है ॥ २३९ ॥

आ—प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्ये—

आ—स्मरण, वाक्यपूरणमें ॥

—ऽप्यास्तु स्यात्कोपपीडयोः ।

आः—कोपमें पीडामें ॥

पापकुत्सेषदर्थे कु—

कु—पाप, निन्दा तथा थोड़े अर्थमें ॥

धिङ् निर्भर्त्सननिन्दयोः ॥ २४० ॥

धिक्—ग्लानि देना वा धिक्कारना
तथा निन्दा ॥ २४० ॥

चान्वाचयसमाहारेतरेतरसमुच्चये

च—अन्वाचय, समाहार, इतरेतर
और समुच्चयमें ॥

स्वस्त्याशीः क्षेमपुण्यादौ—

स्वस्ति—आशीर्वाद, कल्याण, पुण्य
और मंगलमें ॥

—प्रकर्षे लंघने ऽप्यति ॥ २४१ ॥

अति—अतिशय, बड़ाई, प्रकर्ष
और लंघन अर्थमें ॥ २४१ ॥

स्वित्प्रश्ने च वितर्के च—

स्वित्—प्रश्न वा पूछना तथा तर्क
करनेमें ॥

—तु स्याद्भेदे ऽवधारणे ।

तु—किन्तु, फेर, पादपूरणमें तथा
अवधारणमें ॥

सकृत्सहैकवारे चा—

सकृत्—साथ वा संग तथा एकवारमें ॥

—प्याराद्दूरसमीपयोः ॥ २४२ ॥

आरात्—दूर तथा समीपमें २४२ ॥

प्रतीच्यां चरमे पश्चा—

पश्चात्—पीछे पिछला तथा
पश्चिमदिशामें ॥

—दुताप्यर्थविकल्पयोः ।

उत—समुच्चय और विकल्पमें ॥

पुनः सहार्थयोः शश्व—

शश्वत्—सदा वा सर्वदा तथा
निरन्तर वा हरदम और फिरमें ॥

—साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः ॥ २४३ ॥
साक्षात्—प्रत्यक्ष और तुल्यमें ॥ २४३ ॥

खेदानुकम्पासंतोषविस्मया—
मन्त्रणे वत ।

वत—खेद, दया, संतोष, आश्चर्य जैसी
इच्छा होय वैसा करो ऐसी आज्ञा देना ॥

हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यार-
म्भविषादयोः ॥ २४४ ॥

हन्त—हर्ष दया वाक्यारंभ तथा
विषाद ॥ २४४ ॥

प्रति प्रतिनिधौ वीप्सालक्ष-
णादौ प्रयोगतः ।

प्रति—मुख्यके समान व्याप्त करनेकी
इच्छा चिह्न तथा विपरीत ॥

इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिस-
माप्तिषु ॥ २४५ ॥

इति—हेतु प्रकरण प्रकाश आदि
तथा समाप्ति ॥ २४५ ॥

प्राच्यां पुरस्तात्प्रथमे पुरार्ये-
ऽग्रत इत्यपि ।

पुरस्तात्—पूर्वदिशा प्रथम पूर्वकाल
तथा आगे ॥

यावत्तावच्च साकल्येऽवधौ मा-
नेऽवधारणे ॥ २४६ ॥

यावत्—तावत्—संपूर्ण हृद् तोळ
तथा निश्चय ॥ २४६ ॥

मंगलानन्तरारम्भप्रश्नकात्स्न्ये-
ष्वथो अथ ।

अथो—अथ—मंगल, अनन्तर, आरंभ,
प्रश्न तथा संपूर्णता ॥

वृथा निरर्थकाविध्यो—

वृथा—निरर्थक विधिहीन ॥

—नानानेकोभयार्थयोः ॥ २४७ ॥

नाना—अनेक तथा उभयार्थक ॥ २४७ ॥

नु पृच्छायां विकल्पे च—

नु—प्रश्न तथा विकल्प ॥

पश्चात्सादृश्योरेणु ।

अनु—पीछे तथा सदृशता ॥

प्रश्नावधारणानुज्ञानुनयाम-
न्त्रणे ननु ॥ २४८ ॥

ननु—प्रश्न, निश्चय, आज्ञा, शान्त
करना तथा संबोधन ॥ २४८ ॥

गर्हासमुच्चयप्रश्नशंकासंभावना-
स्वपि ।

अपि—निन्दा, समुच्चय, प्रश्न, शंका
तथा संभावना ॥

उपमायां विकल्पे वा—

वा—उपमा तथा विकल्प ॥

—सामि त्वर्थे जुगुप्सिते ॥ २४९ ॥

सामि—आघा तथा निन्दित ॥ २४९ ॥

अमा सह समीपे च—

अमा—साथ तथा समीप ॥

-कं वारिणि च मूर्धानि ।

कम्-जल तथा मस्तक ॥

इवेत्यर्थयोरिव-

एवम्-इवार्थक तथा प्रकारार्थक ॥

-नूनं तर्कैऽर्थनिश्चये ॥ २५० ॥

नूनम्-तर्कणा तथा अर्थनिश्चय ॥

॥ २५० ॥

तूष्णीमर्थे सुखे जोषं-

जोषम्-बुध होना तथा सुख ॥

-किं पृच्छायां जुगुप्सने ।

किम्-प्रश्न तथा निन्दा करना ॥

नाम प्राकाश्यसंभाव्यक्रोधो-

पगमकुत्सने ॥ २५१ ॥

नाम-प्रसिद्धि, संभावना, क्रोध,
सुन्दर वेष धारण करना तथा ललका-

रना ॥ २५१ ॥

अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारण-
वाचकम् ।

अलम्-अलंकार, परिपूर्णता,
सामर्थ्य तथा मना करना ॥

हुं वितर्के परिप्रश्ने-

हुम्-तर्कणा करना तथा प्रश्न करना ॥

-समयान्तिकमध्ययोः ॥ २५२ ॥

समया-समीप तथा मध्य ॥ २५२ ॥

पुनरप्रथमे भेदे-

पुनर्-प्रथमके अनन्तर तथा भेद ॥

-निर्निश्चयनिषेधयोः ।

निर्-निश्चय तथा निषेध ॥

स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निक-

टागामिके पुरा ॥ २५३ ॥

पुरा-प्रबन्ध अर्थात् निरन्तर, प्राचीन

समीप तथा होनेवाला ॥ २५३ ॥

ऊर्युरी चोररी च विस्तारे-

ऽङ्गीकृतौ त्रयम् ।

ऊररी-ऊरी-उररी-विस्तार तथा
अङ्गीकार करना ॥

स्वर्गे परे च लोके स्व-

स्वर्-स्वर्ग तथा परलोक ॥

-वार्तासंभाव्ययोः किल ॥ २५४ ॥

किल-वार्ता तथा संभावन ॥ २५४ ॥

निषेधवाक्यालंकारजिज्ञा-

सानुनये खलु ।

खलु-निषेध, वाक्यालंकार, जिज्ञासा
तथा अनुनय ॥

समीपोभयतः शीघ्रसाकल्या-
भिमुखेऽभितः ॥ २५५ ॥

अभितः-समीप, दोनों ओर, शीघ्र,
चारों ओर तथा संमुख ॥ २५५ ॥

नामप्राकाश्ययोः प्रादु-

प्रादुस्-नाम तथा प्रकट ॥

-मिथोऽन्योन्यं रहस्यपि ।

मिथू-परस्पर तथा एकांत ॥

तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगेथ-

तिरस्-अन्तर्धान तथा टेढा ॥

-हा विषादशुगर्तिषु ॥ २५६ ॥

हा-विषाद, शोक तथा पीडा ॥ २५६ ॥

अहहेत्यद्भुते खेदे-

अहह-अद्भुत तथा खेद ॥

-हि हेतावधारणे ।

हि-हेतु तथा निश्चय ॥

इत्यनेकार्थवर्गविवरणम् ॥ ३ ॥

अथाव्ययवर्गः ४.

चिराय चिररात्राय चिरस्या-
द्याश्चिरार्थकाः ।

बहुत कालवाचक अव्ययशब्द ६-

चिराय १ चिररात्राय, २ चिरस्य, ३

आदि शब्दके चिरम्, ४, चिरेण, ५

चिरात्, चिरे ६ ॥

मुहुः पुनःपुनः शश्वदभोक्षण-

मसकृत्सभाः ॥ १ ॥

बारम्बार अर्थवाचक अव्यय शब्द ५-

मुहुः १ पुनःपुनः २ शश्वत् ३

अभोक्षणम् ४ असकृत् ॥ ५ ॥ १ ॥

स्वाग्ज्ञादित्यञ्जसाहाय द्राङ्मंशु

सपदि हुते ।

शीघ्रतावाचक अव्यय शब्द ८-

साकू १ ज्ञादिति २ अञ्जसा ३ अहाय ४

द्राक् ५ मंशु ६ सपदि ७ हुतम् ८ ॥

बलवत्सुष्ठु किमुत स्वत्यति
च निर्भरे ॥ २ ॥

अतिशयवाचक अव्यय शब्द ६ ॥

बलवत् १ सुष्ठु २ किमुत ३ सु ४ अति

५ अतीव ६ ॥ २ ॥

पृथग्विनान्तरेणेतै हिरुङ्गाना

च वर्जने ।

वर्जन वाचक वर्जनवाले अव्यय

शब्द ६-पृथक् १ विना २ अंतरेण

इकते ४ हिरुक ५ नाना ६ ॥

यत्तद्यतस्ततो हेता-

कारणवाचक अव्यय शब्द ४ यत् १

तत् २ यतः ३ ततः ४ ॥

-वसाकल्ये तु चिञ्चन ॥ ३ ॥

अपूर्णतावाचक अव्यय शब्द २-

चित् १ चन २ ॥ ३ ॥

कदाचिज्जातु-

किसी कालवाचक अव्यय शब्द २-

कदाचित् १ जातु २ ॥

-सार्धं तु साकं सत्रा समं सह ।

साथवाचक अव्यय शब्द ५-साकम्

१ सार्धम् २ सत्रा ३ समम् ४ सह ५ ॥

आनुकूल्यार्थकं प्राध्वं-

अनुकूलतावाचक अव्यय शब्द १-

प्राध्वम् १ ॥

-व्यर्थके तु वृथा मुया ॥ ४ ॥

व्यर्थवाचक अव्यय शब्द २—
पृथा १ मुधा २ ॥ ४ ॥

आहो उताहो किमुत विकल्पे
कै किमुत च ।

विकल्पार्थवाचक अव्यय शब्द ६—
आहो १ उताहो २ किमुत ३ किमु ४
किमु ५ उत ६ ॥

तु हि च स्म ह वै पादपूरणे—
श्लोककी पादपूर्णता बतानेवाले
अव्यय शब्द ६—तु १ हि २ च ३
स्म ४ ह ५ वै ६ ॥

—पूजने स्वती ॥ ५ ॥

पूजावाचक अव्यय शब्द २—पु १
अति २ ॥ ५ ॥

दिवाद्भि—

दिनके अर्थवाचक अव्ययशब्द १—
दिवा १ ॥

—त्यय दोषा च नक्तं च रजना-
वेति ।

रात्रिके अर्थवाचक अव्यय शब्द २—
दोषा १ नक्तम् २ ॥

तिर्यगर्थे साचि तिरौ—

टेटे अर्थवाचक अव्यय शब्द २—
साचि १ तिरस् २ ॥

—ऽप्यय संबोधनार्थकाः ॥ ६ ॥

स्युः प्याद् पाडङ्ग हे है भोः—

सम्बोधनार्थवाचक अव्यय शब्द ६—
प्याद् १ पाट् अंग ३ हे ४ है ५ भोः ६ ॥

—समया निकषा हिरक् ।

समीपवाचक अव्यय शब्द ३—
समया १ निकषा २ हिरक् ३ ॥

अतर्किते तु सहसा—

अकस्मात्के अर्थवाचक अव्यय
शब्द १ सहसा १ ॥

—स्यात्पुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ७ ॥

आगेके अर्थवाचक अव्यय शब्द ३—
पुरः १ पुरतः २ अग्रतः ३ ॥ ७ ॥

स्वाहा देवहविर्दाने श्रौषट्
वौषट् वषट् स्वधा ।

देवताओंके हव्य देनेके उपयोगी
वाचक अव्यय शब्द ५—स्वाहा १ श्रौषट्
२ वौषट् ३ वषट् ४ स्वधा ५ पित-
रोंके उपयोगी प्रसिद्ध हैं ॥

किंचिदीषन्मनागलेपे—

अल्पके वाचक अव्यय शब्द ३—
किंचित् १ ईषत् २ मनाक् ॥ ३ ॥

—प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ ८ ॥

जन्मान्तरवाचक अव्यय शब्द २—
प्रेत्य १ अमुत्र २ ॥ ८ ॥

व वा यथा तथैवैव साम्ये—

समता वाचक अव्ययशब्द ६—व १
वा २ यथा ३ तथा ४ इव ५ एवम् ६

—ऽहो ही च विस्मये ।

विस्मयवाचक अव्ययशब्द २—

अहो १ ही २ ॥

मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां—

मौनार्थवाचक अव्ययशब्द २—

तूष्णीम् १ तूष्णीकाम् ॥

—सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥ ९ ॥

तत्कालवाचक अव्ययशब्द २—

सद्यस् १ सपदि २ ॥ ९ ॥

दिष्ट्या समुपजोषं चेत्या-

नन्दे—

आनन्दवाचक अव्ययशब्द २—दि-

ष्ट्या १ समुपजोषम् २ ॥

—ऽथान्तरेऽन्तरा ।

अन्तरेण च मध्ये स्युः—

मध्यवाचक अव्ययशब्द ३—अन्तरे

१ अन्तरा २ अन्तरेण ३ ॥

—प्रसह्य तु हठार्थकम् ॥ १० ॥

हठार्थवाचक अव्ययशब्द १—प्रसह्य

१ ॥ १० ॥

युक्ते द्वे सांप्रतं स्थाने—

युक्तार्थवाचक अव्ययशब्द २—सां-

प्रतम् १ स्थाने २ ॥

—ऽभीक्ष्णं शश्वदनारते ।

निरंतरवाचक अव्ययशब्द २—

अभीक्ष्णम् १ शश्वत् २ ॥

अभावे नह्य नो नापि—

अभाववाचक अव्ययशब्द ४—नहि

१ अ २ नो ३ न ४ ॥

—मास्म मालं च वारणे ॥ ११ ॥

निषेधवाचक अव्ययशब्द ३—

मास्म १ मा २ अलम्—३ ॥ ११ ॥

पक्षान्तरे चेद्यदि च—

पक्षान्तरवाचक अव्ययशब्द २—

चेत् १ यदि २ ॥

—तत्त्वे त्वद्वाञ्जसा द्वयम् ।

तत्त्वार्थवाचक अव्ययशब्द २—

अद्वा १ अञ्जसा २ ॥

प्राकाशये प्रादुराविः स्या—

प्रकटवाचक अव्ययशब्द २—

प्रादुस् १ आविस् २ ॥

—दोमेवं परमं मते ॥ १२ ॥

अङ्गीकारवाचक अव्ययशब्द ३—

ओम् १ एवम् २ परमम् ३ ॥ १२ ॥

समन्ततस्तु परितः सर्वतो

विष्वगित्यपि ।

सबओरवाचक अव्ययशब्द ४—

समन्ततः १ परितः २ सर्वतः ३

विष्वक् ४ ॥

अकामानुमतौ काम—

बिना इच्छाके सलाह देनेमें १—

कामम् १ ॥

-मस्योपगमेऽस्तु च ॥१३॥
 ईर्षापूर्वक अङ्गीकारवाचक १-
 अस्तु १ ॥ १३ ॥
 ननु च स्याद्विरोधोक्तौ-
 विरुद्धउक्तिवाचक १-ननु १ ॥
 -कञ्चित्कामप्रवेदने ।
 इच्छित प्रश्नवाचक १-कञ्चित् १ ॥
 निःषमं दुःषमं गह्वे-
 निन्दितवाचक २-निःषमम् १
 दुःषमम् २ ॥
 -यथास्वं तु यथायथम् ॥१४॥
 यथायोग्यवाचक २-यथास्वम् १
 यथायथम् २ ॥ १४ ॥
 मृषा मिथ्या च वितथे-
 मिथ्यावाचक २-मृषा १ मिथ्या २ ॥
 -यथार्थं तु यथातथम् ।
 सत्यवाचक २-यथार्थम् १
 यथातथम् २ ॥
 स्युरेवं तु पुनर्वैवेत्यवधारण-
 वाचकाः ॥ १५ ॥
 निश्चयवाचक ५-एवम् १ तु २
 पुनर् ३ वै ४ वा ५ ॥ १५ ॥
 प्रागतीतार्थकं-
 भूतकालवाचक १-प्राक् १ ॥
 -नूनमवश्यं निश्चये द्वयम् ।
 अवश्यवाचक २-नूनम् १ अव-
 श्यम् २ ॥

संवद्वर्षे-
 वर्षवाचक १-संवत् १ ॥
 -ऽवरे त्वर्वा-
 प्रथमवाचक १-अर्वाक् १ ॥
 -गामेवं-
 निश्चित अङ्गीकारवाचक २-आम्
 १ एवम् २ ॥
 -स्वयमात्मना ॥ १६ ॥
 आत्मवाचक १-स्वयम् १ ॥ १६ ॥
 अल्पे नीचै-
 अल्पवाचक अव्यय शब्द १-
 नीचैस् १ ॥
 -महत्युच्चैः-
 ऊँचावाचक १-उच्चैस् १ ॥
 -प्रायो भू-
 बाहुल्य (अकसर) वाचक १-
 प्रायः १ ॥
 -मन्यद्रुते शनैः ।
 मन्दवाचक अव्ययशब्द १-शनैस् १ ॥
 सना नित्ये-
 नित्यवाचक १-सना १ ॥
 -बाहिर्बाह्ये-
 बाहरवाचक १-बाहिस् १ ॥
 -स्मातीते-
 भूतकालवाचक १-स्म १ ॥
 -ऽस्तमदर्शने ॥ १७ ॥
 अदर्शनवाचक १-अस्तम् १ ॥ १७ ॥

अस्ति सत्त्वे-
 भावार्थक अव्यय १-अस्ति १ ॥
 -रुषोक्ताबु-
 कोपवचनवाचक १-उ १ ॥
 -ऊं प्रश्ने-
 प्रश्नवाचक १-ऊम् १ ॥
 -ऽनुनये त्वयि ।
 शान्त करनेमें १-अयि १ ॥
 हुं तर्के स्या-
 तर्कवाचक १-हुम् १ ॥
 -दुषा रात्रेरवसाने-
 प्रातःकालवाचक १-उषसू १ ॥
 -नमो नतौ ॥ १८ ॥
 नमस्कारवाचक अव्ययशब्द १-
 नमसू १ ॥ १८ ॥
 पुनरर्थेऽङ्ग-
 पुनर्वाचक १-अङ्ग १ ॥
 -निन्दायां दुष्टु-
 निन्दावाचक १-दुष्टु १ ॥
 -सुष्टु प्रशंसने ।
 प्रशंसावाचक १-सुष्टु १ ॥
 सायं साये-
 सायंकालवाचक १-सायम् १ ॥
 -प्रगे प्रातः प्रभाते
 प्रातःकालवाचक २-प्रगे १
 प्रातर् २ ॥

-निकषाऽन्तिके ॥ १९ ॥
 समीपवाचक १-निकषा १ ॥ १९ ॥
 परुत्परार्येषमोन्दे पूर्वे पूर्व-
 तरे यति ।
 गतवर्षवाचक १-परुत् १-गत-
 वर्षसे पहले वर्षका वाचक अव्यय १-
 परारि १ ॥ वर्त्तमान वर्षवाचक अव्यय
 १-ऐषमसू १ ॥
 अद्यात्राह्व-
 इस दिनका वाचक अव्यय १ ॥
 अद्य १ ॥
 -थ पूर्वेऽहीत्यादौ पूर्वो-
 त्तरापरात् ॥ २० ॥ तथाधरान्या-
 न्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः ।
 'प्रथमदिन' इत्यादिअर्थमेंपूर्वआदि
 शब्दसे "एद्युसू" प्रत्यय होकर पूर्व
 दिनका वाचक 'पूर्वेद्युः' उत्तर दिनका
 वाचक 'उत्तरेद्युः' अपरदिनका वाचक
 'अपरेद्युः' इत्यादि शब्द बनते हैं जैसे
 'अधरेद्युः' अन्येद्युः, अन्यतरेद्युः
 इतरेद्युः ॥ २० ॥
 उभयद्युश्चोभयेद्युः-
 दोनों दिनके वाचक अव्यय २-
 उभयद्युः उभयेद्युः २ ॥
 -परे त्वाहि परेद्यवि ॥ २१ ॥
 परदिनकावाचक १-परेद्यवि १ ॥ २१ ॥
 ह्यो गते-

व्यतीतदिनका वाचक अव्यय
शब्द १—ह्यस् १॥

—ऽनागतेहि श्वः—

कलदिनका १—श्वस् १ ॥

—परश्वस्तु परेऽहनि ।

आनेवाले परसों दिनका वाचक १-
परश्वः १ ॥

तदा तदानीं—

तिसकालके वाचक अव्यय २—
तदा १ तदानीम् २ ॥

युगपदेकदा—

एकसमयके वाचक अव्यय २—युग-
पत् १ एकदा २ ॥

सर्वदा सदा ॥ २२ ॥

सदाकालवाचक अव्यय २—सर्वदा १
सदा २ ॥ २२ ॥

एतर्हि संप्रतीदानीमधुना
सांप्रतं तथा ।

‘इसी समय’ इस अर्थके वाचक
अव्यय शब्द ५—एतर्हि १ सम्प्रति २
इदानीम् ३ अधुना ४ सांप्रतम् ५ ॥

दिग्देशकाले पूर्वार्धौ प्रागु-
दक्प्रत्यगादयः ॥ २३ ॥

पूर्वदिशा पूर्वदेश और पूर्वकालमें ‘प्राक्’
शब्द है । उत्तर दिशा उत्तरदेश और
उत्तरकालवाचक अव्ययशब्द, ‘उदक्’

पश्चिमदिशा पश्चिम देश और पश्चिम-
कालका वाचक अव्यय शब्द ‘प्रत्यक्’
इत्यादि ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ५.

सलिंगशास्त्रैः सन्नादिकृत्ताद्धि-
तसमासजैः । अनुक्तैः संग्रहे लि-
गैः संकीर्णवदिहोन्नयेत् ॥ १ ॥

पाणिनिके कहे हुए लिङ्गानुशासन-
सहित(अर्थात् उनके अनुसार)सन्आ-
दिप्रत्ययोंसे उत्पन्न चिकीर्षा आदि श-
ब्दोंसे कृदन्तसे उत्पन्न श्वपाक आदिको
तद्धित प्रत्यय अण् आदिसे उत्पन्न,
“समासजैः” “अदन्तोत्तर पदो द्विगुः”
इस आदिसे और बाहुव्यसे पहिले अ-
नुक्त शब्दोंसे संग्रह किये जाते हैं, यहां
वर्गसंग्रह लिङ्गका ज्ञान किस प्रकार
करें इस पर कहते हैं, ‘संकीर्णवत्’ यह
जैसे, संकीर्णवर्गमें प्रकृति आदिसे जाने
जाते हैं, इसी प्रकार यहां भी जानने,
तिनमें प्रकृत्यर्थसे जैसे ‘अर्द्धर्चाः पुंसि-
च’ यहां प्रत्ययार्थसे ‘जैसे स्त्रियां क्तिन्’
‘प्रकृतिप्रत्ययार्थाच्चैः’ इस आद्यशब्दसे
क्रियाविशेषणोंको नपुंसकत्व और एक-
वचनत्व होता है, जैसे, ‘शोभनं पचति’
इत्यादि ॥ १ ॥

लिङ्गशेषविधिव्यापी विशेषै-
र्यद्यबाधितः ।

सन्नादि-कृत्-तद्धित-समाससे उत्पन्न विषय पूर्वोक्त शब्दके लिंगसे अन्यलिंग होना लिंगशेष है, उसका विधि उत्सर्ग होनेसे काण्डत्रयका व्यापक है, जो पूर्वोक्त और यहांके कहे विशेष विधियोंसे बाधित न होवे, तभी व्यापक होता है क्योंकि अपवादविषय छोड़कर उत्सर्ग सर्वत्र प्रवृत्त होता है इस कहनेसे लिंग विशेषविधिको जो उत्सर्गभूतका स्वर्ग आदि वर्ग अपवाद हैं तिनमें पहिलेके कहेहुए विशेषोंको फिर कहनेके दोष और विस्तारके डरसे फिर यहां विधान नहीं है, स्वर्गपर्याय-यहां पुल्लिङ्ग कहेंगे उसका “द्योदिबौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम्” यह पूर्वोक्त-अपवाद है और नीप्रभृतिकोंके तो ‘कृतः कर्तरि’ इत्यादिसे कहेंगे, यद्यपि पहिले लिंग कहा है तथापि अप्राप्तके प्रापणार्थकतासे लिंगानुशासन यहां भी प्रधान ही है ॥

स्त्रियामीदूद्विरामैकाच् सयोन-
प्राणिनाम च ॥ २ ॥

‘स्त्रियाम्’ यह अधिकार ‘मसी’ [श्लो० १० के] शब्दपर्यंत जानना चाहिये ‘ईदूतौ’ ईकार और ऊकार ‘विराम’ अर्थात् अवसानस्थ हैं इजिनके वे दूद्विराम

हैं वे और एकाच् ये दोनों ईदूद्विरामैकाच् हैं ईदन्त ऊदन्त वा जो एकस्वर शब्द-स्वरूप हैं वे स्त्रीलिंग हैं यह अर्थ है, जैसे, धीः, श्रीः, भूः, मूः, नयतीति नीः, इन आदिमें ‘कृतः कर्तरि’ इसके बाध होनेसे वाच्यलिंगत्व है, योनि भग है इनके सहित प्राणियों के नाम ‘स्त्रियाम्’ स्त्रीलिंग हैं जैसे माता-दुहिता-धेनु-आदि. दार शब्द आदिमें तो ‘दाराः पुंभूमीति’ यह बाधक पहिले कह चुके हैं कलत्रं और गृहं शब्दको ‘कलत्रं श्रोणिभार्ययोः’ यहांका क्लीब-पाठ बाधक है, इसी प्रकार अन्यत्र भी विचार कर लेना चाहिये ॥ २ ॥

नाम विद्युन्निशावल्लीवीणा-
दिग्भूनदीहियाम् ।

विद्युत् आदिही शब्द पर्यंत आठ शब्दोंके जो नाम अर्थात् संज्ञा हैं, वे स्त्रीलिंग हैं, जैसे, -विद्युत्, -तद्धित, निशा-रात्रि रजनिः, बल्ली, -प्रततिः, वीरुधू, वीणा, -विपञ्ची इत्यादि ॥

अदन्तैर्द्विगुरेकार्थं-

अकारान्त आदि शब्दोंस जो एकार्थ द्विगुसमास है, वह स्त्रीलिंग है, जैसे ‘पंचानां मूलानां समाहारः पंचमूली’ इसी प्रकार त्रिलोकी षडध्यायी इत्यादि ॥

—न स पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

च पुनः पात्र, युग आदि उत्तर-
पद अदन्तशब्दोंके साथ एकार्थ द्विगु
समासको स्त्रीलिंगत्व नहीं है जैसे पंच-
पात्रं, चतुर्युगं, त्रिभुवनम् ॥ ३ ॥

तल्ल वृन्दे योनिकटयत्रा वैर-
मैथुनिकादिवुन् । स्त्रीभावा-
दावानीक्तिः ण्वुल्णच् ण्वुच् क्यव्युजि-
ञ्जुनिशाः ॥ ४ ॥

उणादिषु निरुत्तराश्च ड्याबू-
डन्तं चलं स्थिरम् ।

भाव आदि अर्थमें विहित तल्लप्र-
त्यय स्त्रीलिंगमें होता है तथा भाव अ-
र्थमें जैसे शुकृता, कर्म अर्थमें ब्राह्मणता,
समूह अर्थमें ग्रामता, स्वार्थमें देवता, वृन्दे
समूह अर्थमें य—इनि—कटयच्—त्र—ये
४ चार प्रत्यय स्त्रीलिंगमें होते हैं, जैसे
'पाशादिभ्यो यः' पाशानां समूहः पा-
श्या, वात्या, 'खलादिभ्य इनिः' ख-
लिनी, पद्मिनी, 'रथादिभ्यः कटयच्'
रथकटया, इसी रीतिसे गोत्रा, वैर,
मैथुन आदि अर्थमें जो वुन् प्रत्यय है
सो स्त्रीलिंग है, तिनमें वैर विरोधार्थमें
जैसे, अश्वमहिषिका अश्व और महि-
षीका यह वैर है, इस भांति काकोल्ल-
किका, मैथुनिक अर्थमें जैसे, अत्रिभरद्वा-
जिका, अत्रिभरद्वाजिकी, यह मैथुनिक

विवाहरूपसम्बन्ध, इसी प्रकार 'कुत्सश्च
कुशिका च तयोर्मैथुनिका कुत्सकुशि-
किका' वुन् ग्रहण वुञ् वुण् वावुच्—अक्
इक् आदिका उपलक्षण है, जैसे काशि-
का गार्गिकया श्लाघते, कहीं वु भी पा-
ठ है, आदिपदसे वीप्ता आदिमें वुन्-
का ग्रहण है 'स्त्रियां भावादिः स्त्रीभावा-
दिस्तस्मिन्' स्त्रियाम् इसका अधिकार
कर भावआदि अर्थमें जो विहित प्रत्यय
अनि—क्तिन् (ति) आदि हैं वे स्त्री-
लिंग अर्थमें होते हैं, आन जैसे 'आ-
कोशे नञ्यनिः' इस सूत्रसे, 'अनि'
प्रत्यय होनेसे 'अकरणिः', 'अजोवनिः'
'क्तिन्' से स्मृतिः, कृतः, पतिः,
'ण्वुल्' से जीविका, प्रच्छदिका, प्रवा-
हिका, आसिका, 'णच्' से व्यावक्रोशी
स्वार्थिका, दाक्षा, 'ण्वुच्' से शायिका,
इक्षुभक्षिका, 'क्यप्' से ब्रह्महत्या, व्रज्या,
इज्या, 'स्त्रीभावादौ' क्यो कहा 'मृषो-
द्यं, ब्रह्मभूयं, यहां दोष आवेगा, 'युच्'
से कारणा, आसना, मंडना, -इन्से 'वा-
'पिः वासिः, कां कारिमकार्पीः 'इञ्'
यह इणइक्का उपलक्षणार्थक है जैसे
आजिः, कृषिः, 'अ' से पचा, त्रपा, भिदा
'नि' से 'ग्लानिः, म्लानिः, हानिः' 'श' प्र-
त्ययसे क्रिया, इच्छा ॥ ४ ॥ उणादिकोंमें
'निः—ऊः—इः'—ये ३ तीन प्रत्यय

स्त्री लिंगमें हैं, तिनमें 'नि' प्रत्ययान्तसे, श्रेणिः, श्रोणिः, द्रोणिः, उणादिष्वनिः, इस पाठमें. अनिः, जैसे अवनिः, धरणिः, धमनिः, सरणिः, ऊदन्त' जैसे, चमूः, कर्षूः, ईदन्त जैसे, 'तन्त्रीः, तरीः, लक्ष्मीः, ड्यन्तम् आबन्तम्, (डी आप् वा आङ्) ऊडन्त और जो 'चलं' जंगम हैं वा जो 'स्थिरं' स्थावर हैं वे स्त्रीलिंग हैं, जंगम जैसे, नारी, शिवा, ब्रह्मवधूः । स्थावर जैसे, कदली, नाला, कर्कन्धूः ॥

तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्ट्या पालवाणादिक ॥ ५ ॥

“तत् क्रीडायां” यहांके तत्शब्दसे यहां मौष्ट्यादिकका निर्देश है तिससे यह अर्थ है, वह मुष्ट्यादिक प्रहरण अर्थात् मारना जो क्रीडा वा खेलमें होय तो उस अर्थमें विहित 'ण' प्रत्यय स्त्रीलिंगमें है, दिक् इस शब्दसे उक्तोदाहरणकी अभिलाषा है, जिससे दाण्डा, मौसला ये उदाहरणके योग्य हैं, मुष्टिसे प्रहार करना जिस क्रीडामें है उसे 'मौष्ट्या वा मौष्ट्या' और पलव हाथ वा पत्तेसे मारना जिस क्रीडामें है उसे “पालवा” कहते हैं ॥ ५ ॥

घञो जः सा क्रियाऽस्यां चेद्दाण्डपाता हि फाल्गुनी श्येनपाता च मृगया तैलपाता स्वधेतिदिक् ॥ ६ ॥

वह घञन्तवाच्य दण्डपात आदिके आदिक्रिया इस फाल्गुनी आदिके अर्थमें घञन्तसे विहित जो ज प्रत्यय है सो स्त्रीलिंगमें ही है, उदाहरण 'दण्डपातो' अस्यां फाल्गुन्यां दाण्डपाता फाल्गुनी' इसीप्रकार 'श्येनपातोऽस्यां' 'श्येनपाता' मृगया 'तैलपातोऽस्यां' स्वधाक्रियायां तैलपाता' इति शब्दसे 'मौसलपातोऽस्यां' मौसलपाता भूमिः ये इत्यादि सिद्ध होते हैं, दिक्शब्दसे किसी देशमें फाल्गुन महीनेकी पूर्णिमाको दण्डसे वा लाठीसे क्रीडा होती है इस लिये 'दाण्डपाता' आदि उदाहरण भी होते हैं ॥ ६ ॥

स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्या-
दिर्विवक्षापचये यदि ।

यदि 'अपचये' अर्थात् अल्पत्वके कहनेकी इच्छा होय तो मृणाली, आदि शब्द स्त्रीलिंग हैं जैसे अल्पं मृणालं मृणाली, आदिशब्दसे जैसे, 'ह्रस्वो वंशो वशी' गौरादि मानकर डीप् प्रत्यय होता है, इसी भांति कुम्भी-प्रणाली-छत्रीपटी-मठो-आदि ये भी हैं 'ह्रस्वार्थे' कन् प्रत्ययः स्त्रियां जैसे पेटिका, 'काचित्' यह क्यों कहा यहां दोष पडता है जैसे, 'अल्पो वृक्षो वृक्षकः' इत्यादि स्त्रीलिंग नहीं हैं ॥

लङ्का शोफालिका टीका धा-
तकी पञ्जिकाऽऽदिकी ॥ ७ ॥

अब डयाबूडन्तं इत्यादिसे कहे
लिंगवालोंमेंसे किसी शब्दके सुखसे
लिंगज्ञानके हेतु, भिन्न कान्तादि क्रमसे
कहते हैं १ लंका राक्षसपुरी, २ शेषालिका
शूलका भेद वा वृक्षभेद-निर्गुडी-निरसा
यह प्रसिद्ध है ३ टीका-कठिन पदकी
व्याख्या-४ घातकी-वृक्षभेद-(आंवरा)
यह प्रसिद्ध है ५ पंजिका (निःशेष
पदकी व्याख्या) ६ आढकी-तुरई
प्रसिद्ध है ॥ ७ ॥

सिधिका सारिका हिक्रा

प्राचिकोलका पिपीलिका ।

तिन्दुकी कणिका भङ्गिः

सुरङ्गासूचिमाढयः ॥ ८ ॥

१ सिधिका वृक्षभेद, २ सारिका
वृक्षभेद-वा मयना, ३ हिक्रा स्वरभेद
वा हिचकी, ४ प्राचिका पाचिका भी
बनकी मक्खी वा 'पक्षिभेद' इति स्वामी
५ उरुका तेजका समूह, ६ पिपीलिका
कीड़ेका भेद-(चीटी-वा चीटा भी)
'शनैर्यातीति पिपीलिका, यह स्वामीके
मतसे पुल्लिंग भी है, ७ तिन्दुकी वृ-
क्षभेद वा (तिन्दुआ यह प्रसिद्ध है), ८
'कणिका' परमाणु, ९ भङ्गिः कुटि-
लताका भेद वा टेढाई १० 'सुरंगा'
बिल वा 'सुरंग' यह प्रसिद्ध है, ११
सूचिः, सूई-वा व्याघ्रनी, १२ माढिः
पत्तेकी सिरा ॥ ८ ॥

पिच्छावितण्डाकाकिण्य-

श्चूर्णिः शानीद्रुणदिरत् ।

सातिः कन्था तथाऽऽसन्दी

नाभी राजसभापि च ॥ ९ ॥

१ 'पिच्छा' शेमर यह प्रसिद्ध है २
'वितण्डा' वादभेद, ३ 'काकिण्यः वा
काकिणी' पणका चौथा भाग वा कौडी,
४ 'चूर्णिः वा चूर्णिचूर्णिका' ५ शानी शण
पटविशेष, है ६ 'द्रुणा' कर्णजलौका वा
कछही, ७ द्रुत म्लेच्छजातिः ॥ १ 'साति'
दान और अवसानको कहते हैं २ 'क-
न्था' प्रावरणान्तर वा दूसरा विछौना
३ 'आसन्दी' आसनका भेद-वा वेंतका
आसन वा कुर्सी, ४ नाभी वा नाभिः,
शरीरका अंगविशेष-वा टोंडी, ५ रा-
जसभा राजां सभा राजोंकी सभा वा
कचहरी यह प्रसिद्ध है ॥ ९ ॥

शलरी चर्चरी पारी होरा

लट्ठा च सिधमला । लाक्षा

लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी

चमसी मसी ॥ १० ॥

१ 'शलरी' बाजाका भेद-वा शालर
यह प्रसिद्ध है २ 'चर्चरी' करशब्द वा
हाथका शब्द-वा हर्षक्रीडा, कईएक
बाजे पढते हैं 'कर्कटी' छोटा घड़ा,
३ 'पारी वा वारी' हाथीके पांवकी रस्सी

४ 'होरा' लग्नका आधा वा लग्न, ५ लट्वा ग्रामचटकः, चिडावा चिडी (वागरैया) ६ 'सिध्मला' मत्स्यविकार, ७ 'लाक्षा' जतु वा लाख-लाह प्रसिद्ध है. ८ 'लिक्षा यकांड'-अर्थात् लीख प्रसिद्ध वा परिमाणभेद, ९ 'गंडूषा' जल आदिसे मुखपूर्ण कुला प्रसिद्ध है, १० 'गृध्रसी' वातरोगभेद यह ऊरुकी सन्धीमें होता है ११ 'चमसी' यज्ञपात्रभेद १२ 'मसी' और भी पुं- 'मसि' (कज्जल) ॥ १० ॥

इति स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ॥

पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः मुरामुराः । स्वर्गयागाद्रिमेवाब्धिद्रुकालासिशराः रयः ॥ ११ ॥

अब पुँल्लिंग संग्रह कहते हैं, 'पुंस्त्वे' इसका [श्लोक ०२१ के] 'पतद्ग्रह' शब्द पर्यन्त अधिकार है भेदाः 'तु षितसाध्य आदि' 'अनुचराः' सुनन्द आदि-इनके सहित सुर-असुर-देव-और दैत्यके यह पर्यायके पुँल्लिंग हैं, सुरपर्याय जैसे अमरा निर्जरा देवा मरुतः इत्यादयः इनके भेद जैसे, 'तु षिताः'-साध्या, 'इन्द्रो मरुत्वान्मघवा'-सूरः सूर्यः अर्यमा-हाहा ह्रहः तुम्बुरुः इत्यादि, अनुचराः जैसे विष्णुके अनुचर, जयविजयप्रभृति रुद्र-के अनुचर, नन्दिकेश्वर आदि इसी

प्रकार-असुरपर्याय दैत्य दानव इत्यादि इनके भेद बलि नमुचि आदि असुरके अनुचर कूष्माण्ड मुण्ड-आदि इस भाँति सब स्थानमें जानना इनके भी 'दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम्' आदि बाधकको स्मरण करावेगे 'अबाधिताः' इस वक्ष्यमाणसे स्वर्ग आदि १९ अपने भेद और पर्याय के सहित पुँल्लिंग हैं, १ स्वर्गपर्याय जैसे, 'स्वर्ग-नाक, त्रिदिव' इत्यादिक 'द्यौदि-वौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम्' यह बड़ा बलवान् बाधक है इनके बिना पुँल्लिंग हैं २ यागो यज्ञः वा मखः क्रतुः इनके भेद-अग्निष्टोम-वाजपेय आदि इनको बाधकत्व कहेंगे, ३ अद्रिः गिरिः वापर्वत इनके भेद जैसे मेरु सद्याद्रे आदि इनके मध्यमें अपवाद है सोशैलवर्गमें कह चुके हैं, ४ 'मेघ' घन वा बादल ये इत्यादि पर्याय हैं, भेद आवर्त आदि अभ्रस्य तु अभ्र मेघ, यह क्लीब पाठ बाधक है, ५ अब्धिः समुद्रका पर्यायभेद क्षीरोद आदि ६ वृक्षः शाखी आदि पर्याय और वट पीपल आदि भेद हैं, यहां भी कहीं रूप भेद आदिसे 'पाटला, शिंशपा' आदि में अपवाद कहा है ७ 'कालः दिष्टः समय' इस प्रकार पर्याय हैं और मास आदि भेद हैं ८

असिः खड्ग-नन्दक आदिभेद, (इत्यादौ बाधः) १ 'शरः' बाणभेद नाराच आदि इषुभिर्द्वयोरिति विशेषो दर्शितः १० 'अरिः' शत्रुभेद आततायी आदि ११

करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्ठकेश—

नखस्तनाः । अद्वाहान्ताः
क्षेडभेदाः रात्रान्ताः प्राग-
संख्यकाः ॥ १२ ॥

१ 'कर' राजग्रहणके योग्य भाग 'रश्मि' और 'पाणि' 'दीधिति' ५ आदिको तो पुंस्त्व बाधित है, २ 'गण्डः' कपोल वा गाल, 'ओष्ठ' वा दंतच्छद दशनवसन आदि तो रूपभेदसे बाधित है, ३ दो प्रवेष्ट 'मुनवाहोस्तु द्वयोरिति विशेषः, दंतः दण्डः भेद जंभ 'कंठः' गलः 'समीपगलभेदेषु कंठ त्रिषु विदुर्बुधाः' इति शाश्वत 'केशः कचः वा बार, (वाल), 'नखः' कररुहः नखोऽस्त्री इत्यादिना बाधितं स्तनः कुचः ये सव यथा सम्भव सभेद और पर्याय पुंलिङ्ग हैं, १ 'अहः अहश्च' ये हैं अन्तमें जिनके वे पुंलिङ्ग हैं जैसे अह पूर्व पूर्वाह्नः अहः परं पराह्न द्वे अहनी समाहते द्वयहः २ क्षेडभेदाः विषविशेष पुंस्त्व है जैसे सौराष्ट्रिकः यहां गरल विष पुंनि और क्लीबमें काकोल है इत्यादिसे बाधित है ३

रात्रान्ताः यह समासान्तके एकदेशका अनुकरण है, इसी प्रकार आगे भी रात्र शब्द हैं अन्तमें जिनके वे जो प्राक् असंख्यावाचक शब्द हों तो पुंसि हैं, जैसे अहश्च रात्रिश्चाहोरात्रः सर्वरात्रः पूर्वरात्रः वर्षरात्रः अपररात्रः प्राक् असंख्यका यह क्यों कहा पंचरात्रं गणरात्रं इनमें दोष होगा पुण्यरात्रको अर्ध-चादि पाठसे क्लीबत्व भी है ॥ १२ ॥

श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा अ-
सन्नन्ता अबाधिताः । कशेरुज-
तुवस्तूनि हित्वा तुरुवि-
रामकाः ॥ १३ ॥

१ 'श्रीवेष्ट' आदि ये निर्यास हैं अर्थात् द्रव वा गोन्द वा सारवाचक हैं वे पुंलिङ्ग है श्रीवेष्ट 'सरल' वा धूपकाण्ठ श्रीपिष्ठ भी कही पाठ हैं, आद्यशब्दसे श्रीवास वृक्षधूप आदि, च शब्दस गुगुलुआदि २ 'असन्त, अन्नंत' पुंलिङ्ग हैं असन्त जैसे, अंगिरा वेधा-चंद्रमा, अन्नंत जैसे 'कृष्णवर्त्मा मधवा' आदि 'अबाधिता' क्यों कहा अपसरसः, जलौकसः सुमनसः, इदं वयः, 'इदं लोम, 'तुश्च रुश्च तुरु' ये दोनो विराम अर्थात् अंतमें हैं जिनके वे तुरु-विरामका कहलाते हैं, कशेरु जतु-मस्तु, इनको छोड़कर

‘तु’ शब्दान्त और ‘रु’ शब्दान्त पुँल्लि-
ग हैं, जैसे हेतुः सेतुः—धातुः मन्तुः—
तन्तुः इत्यादि—कुरुः—मेरुः किंशारुः—
इत्यादि, कशेरु आदि उपलक्षण हैं,—
दारु, इमंशु प्रभृतिका तिनमें कशेरुः
अस्थिविशेष वा तृणविशेष, जतु ला-
क्षा वा लाही १३ ॥

कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता
अमी अथ । पथनयसटोपान्ता
गोत्राख्याश्रणाद्वयाः ॥ १४ ॥

क-ष-ण आदि ६ वर्ण उपान्ते
अन्यके समीपमें हैं जिनके वे तैसे
यदि ये क आदि वर्णषट्क उपान्त
अदन्त हों तो पुँल्लिगमें होते हैं जैसे
अकः, लोकः, स्फटिकः, शुल्कः, वल्कः
आदि तो पहिले ही बाधित हैं और
प्लोष माष प्लक्ष आदि षोपान्त हैं वर्षा
आदि शब्द तो पहिले ही बाधित हैं
षाषाण गुण किरण आदि णोपान्त श-
ब्द विषाण आदिसे बाधित हैं, कौस्तुभ-
दर्भ—शुलभ—आदि भोपान्त हैं,
कुसुम्भ आदिसे बाधित हैं होम ग्राम
व्यायाम—गुल्म, आदि सोपान्त, ‘पद्मा-
देर्वा पुंसि’ इत्यादिसे बाधित हैं, झर्झर-
सीकर—सीर—प्रभृति रोपान्त हैं अजिर
आदिक बाधित हैं, रादिवर्णषट्क
उपान्त शब्द अबाधित हैं, तौ पुँल्लिग
हैं यहां ‘यद्यदन्ता’ : इस पूर्वोक्तका

सम्बन्ध नहीं है अथादित्वसे पकारो-
पान्त जैसे यूष—बाष्प—कृष्ण आदि
बाधित हैं थकारोपान्त—वेपथु—रोमन्थ-
आदि, नोपान्त—इन—घन—मानु—आदि
वनादि तो बाधित हैं, योपान्त
आय—व्यय—जायु—मन्तुवाय आदि
मृगया आदि तौ बाधित हैं, सोपान्त
रस—हास—आदि, विस आदि बाधित
हैं, टोपान्त घट—पट—आदि, किरिट
आदिको बाधितत्व कहा है, गोत्र
वंशमें आख्या संज्ञा है जिनकी वे
गोत्राख्य ऋक्संज्ञक हैं गोत्रके आदि
पुरुष ये ये प्रवराध्यायमें पढ़े हैं और
ये अन्य अपत्यप्रत्ययके विना गोत्र-
वाचित्वसे लोकमें प्रसिद्ध हैं वे पुँल्लिग
हैं जैसे ‘भरद्वाजः गोत्रमस्माकम्’ इस
प्रकार कश्यप वत्स प्रभृति, चरणके और
वेदशाखाकी नामवाली संज्ञा पुँल्लिग हैं,
जैसे कठ, बह्वृच इत्यादि ॥ १४ ॥

नामन्यकर्तरि भावे च घञजवन्-
ङ्णघाथुचः । ल्युः कर्तरीमनि-
ज्भावे को घोः किः प्रादितोऽ-
न्यतः ॥ १५ ॥

नाम संज्ञामें और अकर्तरि च कारके
भावभात्रमें भी विहित घञ् आदि
सात प्रत्ययान्त पुँल्लिग हैं, भावे च इस
चकारसे असंख्यामें भी घञ् गृहीत है

अजन्त जैसे, 'प्रसीदन्ति मनांस्यस्मिन् प्रासादः, प्रास्यत इति प्रासः, विदन्ति अनेन वेदः, प्रपतति अस्मादिति प्रपातः, भावमें जैसे 'पाकः त्यागः' अच् जैसे 'जयः, चयः, नयः' अप् जैसे 'करः, गरः, लवः, प्लवः' नङ् जैसे 'यज्ञः, प्रश्नः, याच्ना' यहां पुंस्त्व बाधित है, नङ् उपलक्षण है 'स्वपो नन्' स्वप्नः, णप्रत्यय जैसे, 'न्यादः, घप्रत्यय जैसे 'उरच्छदः' अथुच् जैसे- 'वेपथुः' ल्युः प्रत्यय कर्तामें नंघादित्वसे पुँल्लिंगमें होता है, जैसे नन्दनः, रमणः, मधुसूदनः, भावमें पृथु आदिसे जो इमनिच् है, सो पुँल्लिंग है, जैसे पृथोर्भावः प्रथिमा, अदिमा, भाव एसा क्यों कहा, 'वृणोतीति वरिमा पृथ्वी' यहांका भावे यह शब्द देहलीदीपकन्यायसे पूर्व और परमें सम्बद्ध होता है, भावमें क प्रत्यय जैसे आखूत्यः, प्रस्थः, प्रादितः और अन्यतः से पर जो घुसंज्ञक धातु है उससे विहित जो क्प्रत्यय है सो पुँल्लिंग है 'दापृदौ विना' दारूप और धारूप भी धातु घुसंज्ञक हैं, प्रादितः, जैसे 'प्रधिः निधिः, आदि, अन्यतः जैसे 'जलधिः' इषुधिस्तु द्वयोरिति बाधितत्व है ॥ १५ ॥

इन्द्रेश्ववडवावश्ववडवा न समाहते । कान्तः सूर्येन्दु-

पर्यायः पूर्वोऽयः पूर्वकोऽपि च ॥ १६ ॥
इन्द्रे-समाहारसंज्ञकसे अन्यत्र समास इन्द्रसंज्ञकमें, 'अश्ववडवौ' पुंसि है, आप उदाहरण देते हैं 'अश्वश्च वडवाश्च अश्ववडवाः, इसी रीतिसे अश्ववडवान्, अश्व-वडवैः इत्यादि प्रयोगसे, समाहारे तु 'अश्ववडवम्' यह क्लीब है, सूर्य, चन्द्रके पर्यायपूर्वक कान्तशब्द-पुंसि हैं, जैसे 'सूर्यकान्तः, अर्ककान्तः, चंद्रकान्तः, इन्दुकान्तः, सोमकान्तः, अयस् वा अयोवाचक अर्थात् लोहवाचक पूर्वक भी कान्त शब्द पुंसि है, जैसे 'अयस्कान्तः लोहकान्तः' ॥ १७ ॥

वटकश्चानुवाकश्च रल्लकश्च कुडङ्गकः । पुंखो न्यूंखः समुद्रश्च विटपट्टघटाः खटाः ॥ १७ ॥

अव पुँल्लिंग विशेष पर्यन्त अनुक्त और अकारान्तादि क्रमसे कहा है, १ वटकः-पिष्टकभेद वा (वरा) २ अनुवाकः-वेदका अवयव वा भाग, ३ रल्लकः कम्बल वा कमरा प्रसिद्ध है, ४ कुडङ्गकः कुटंगकः वृक्षलताका समूहः, ५ पुंखः बाणका अवयव, ६ पुंखः न्यूंखः भी सामवेदमें घरा ओंकार, ७ समुद्रः-सम्पुट धा डिब्बा, ८ विटः धूर्त वा ठग, ९ पट्टः काष्ठ आदिका बना आसनविशेष ब-

पाटा पीठा, १० घटः तुला वा तराजू,
११ खटः अन्धकूप आदि-वा कफ-
वा तृण ॥ १७ ॥

कोट्टारघट्टहटाश्च पिण्डगो-
ण्डपिचण्डवत् । गडुः कर-
ण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो
घुणः ॥ १८ ॥

१ कोट्टः-दुर्ग-पुर-किला-गढ़ वा
कोट्टारः, २ अरघट्टः-कूपभेद-महाकूप
वा उसके ऊपर बँधा जलकेनिकालनेका
काष्ठ वा अरहट-पुरवट, तवघट्ट. घाटा-
इ यहाँ प्रसिद्ध है, ३ हट्टः-कयविक्र-
यका स्थान वा हंटिया बाजार यह प्रसि-
द्ध है, ४ पिण्डः-मिट्टी आदिका समूह,
५ गोंडाः--नाभिः वा नीचजातिभेद, ६
पिचण्डः-वापिचिण्डः उदर वा पेट,
पिचण्ड वत् यहाँके वत् शब्दसे गड्वादि
शब्दभी पुंलिंग हैं यह बोधित होता है,
७ गडुः-गलगंडः, ८ कारण्डः-बांस आ-
दिका बना भाण्डका भेद वा पिटारी वा
पुष्पभाजन, ९ लगुडः-बांस आदिका
दण्ड वा लाठी, १० वरण्डः-मुखका
रोग वा वदनकी व्यथा, ११ किणः-
मांसकी गांठिका भेद-वह भी जो
फावड़ा, लाठी आदिके चलानेसे

हाथ आदिमें (घट्टा) स्पष्ट है वण
और चिह्नको भी "किण" कहते हैं,
१२ घुणः-काठका कीड़ा वा घुन यह
प्रसिद्ध है ॥ १८ ॥

द्वतिसीमन्तहरितो रोमन्योद्री-
यबुद्बुदाः । कासमर्दोऽर्बुदः
कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ १९ ॥

१ द्वति, चामका दोना वा मसक
(भिस्तीका), २ सीमन्त, केशवेश व
चूड़ा गुँथाहुआ, ३ हरित, पलाशवर्ण
वा हरियर प्रसिद्ध है, ४ रोमन्य, पशु
जो जुगालिया चर्वण करते हैं (वा
वागुर,) ५ उद्री, सामवेद, ६
बुद्बुद, जलका विकार, ७ कासमर्द
वा काशमर्दः गुल्मभेद वा रोगभेद, ८
अर्बुद, दशकोटि-९ कुन्द, पुष्पविशेष
वा औजार रखनेका पात्र वा शिल्पभांड
१० फेन जलविकार, ११ स्तूप,
वटक आदि, ये ये और यूप यूपक
वा "यूप" भी वरा पूआ आदिके
नाम हैं ॥ १९ ॥

आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणप-
क्षुरकेदराः । पूरक्षुरप्रक्षुकाश्च
गोलाहंशुलपुट्टलाः ॥ २० ॥

१ आतपः, सूर्यका प्रकाश वा उजियाला, २ नाभि, राजाविशेष—वा क्षत्रिये क्षत्रियवाचि नाभिश्च पुंल्लिङ्ग है, ३ कुणपः—उसी प्रकार कुणपःशवभेदः त्यक्तप्राण, ४ क्षुरः—केशवपनद्रव्य—नाईका शस्त्र—(छुरा) वा पशुकी खुरी, ५ केदर, व्यवहारका द्रव्य वा पदार्थ, ६ पूर, जलप्रवाह, ७ भुरप्र, बाणका भेद, 'खुरप्रः' भी, ८ चुक्र, शाकका भेद, ९ गोलः वर्तुलपिंड वा गोल, १० हिंगुल—रागद्रव्यका भेद वा रक्तवर्ण, ११ पुद्गलः वा पुद्गल आत्मा ॥ २० ॥

वेतालभल्लमल्लाश्च पुरोडाशोऽपि पट्टिशः । कुलमाषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥

वेतालः, भूवाधिष्ठितशव—२ मल्ला विशेष—३ शिवका अनुचर—४ द्वारपाल २ भल्ल, भाल्ल, ४ पुरोडाशः वा पुरोडाः ३ मल्लः बाहुयुद्धकुशल वा माल प्रसिद्ध (सू) हविष्भेद, ५ पट्टिशः अस्त्रभेद, ६ कुलमाषः वा कुलमासः अर्द्धस्विन्न यव वा कुत्तिसत माष, ७ रभसः—१ हर्ष—२ वेग—३ उत्सुकता—४ वा पूर्वापर—विचार, ८ सकटाहः, कटाहके सहित कटाह शब्द भी पुंल्लिङ्ग है, कराही यह

प्रसिद्ध है, ९ पतद्ग्रहः निष्ठीवनपात्र वा पीकदान ॥ २१ ॥

॥ इति पुंल्लिङ्गसंग्रहः ॥

द्विहीनेऽन्पञ्च खारण्यपर्ण-
श्वभ्रहिमोदकम् । शीतोष्णमां-
सरुधिरमुखाक्षिद्रविणं
बलम् ॥ २२ ॥

द्विहीने स्त्री औरः पुरुषसे हीन नपुंसकका अधिकार है बाह्यिकशब्द पर्यन्त, श्लोकद्वयसे प्रधानकरके निर्दिष्ट खादि शब्द २६—अपने पर्यायोंके सहित नपुंसक हैं, यहां अन्यत् इस बाधितसे जो भिन्न हैं वे क्लीब हैं यह सावधानका अर्थ कहा. चकारसे वस्त्र आभूषणका संग्रह है २ खम् इंद्रिय, २ व्योम वा देह—३ शून्य—४ अन्न—विन्दु, ५ पुर, ६ स्वर्ग, ७ सुखभी जैसे, छिद्र, नमः वियत् इत्यादि. २ अरण्यं—विपिनं—काननं—इस इत्यादि, ३ पर्ण पत्रं वा पत्ता दलं इस इत्यादि, ४ श्वभं तु पातालं ५ हिमं—प्रालेय, ठण्ड, ६ उदकं जलं—नीरं—पानी इस इत्यादि, ७ शीतं शीतलं, इस इत्यादि, ८ उष्णं—तिग्णं इस इत्यादि, शीतोष्णं गुणे क्लीबं तद्वति त्रिषु, ९ मांस, पिशितं तरसं ये

इत्यादि, १० रुधिरं, शोणितं रक्तं, ११ सुखं, वदनं वक्त्रं, १२ अक्षि-नयनं, नेत्रं १३ द्रविणं, धनं, इस इत्यादि, १४ बलं शक्ति सैन्य आदि, शक्तिमें जैसे बलं शुष्मे-त्यादि सैन्य चक्रमित्यादि ॥ २२ ॥

फलहेमशुल्वलोहसुखदुःखशुभा-
शुभम् । जलपुष्पाणि लवणं
व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥ २३ ॥

१ फलं फलमात्रं—कपित्थं, इस इत्या-
दि, हलं भी' २ हेम, सुवर्ण, कनकं,
इस इत्यादि, ३ शुल्वं, ताम्र इस इत्यादि,
४ लोहं, कालायसं, इस इत्यादि, ५ सुखं
शर्म, शातं, इस इत्यादि, ६ दुःखं तु
कुच्छं, कष्टं, ७ शुभं, —कल्याणं, कुशलं
इस इत्यादि, अशुभं, अकल्याणं, ८
जलपुष्पाणि—कुमुद—कमल—कहार—
उत्पलानि आदि, ९ लवणं, सैन्धवं, इस
इत्यादि. व्यञ्जनविशेषसे दधि—तक्र—
आदिका ग्रहण है १२ अनुलेपनं, कुंकुम
आदि, यहां बाधितादन्यत ऐसा क्यों
कहा. आकाशो, विहायाः द्यौः, अटवी
अरण्यानी इस इत्यादि इसी प्रकार अ-
न्यत्र भी विचारना चाहिये ॥ २३ ॥

कोट्याः शतादिसंख्याऽन्या
वा लक्षा नियुतं च तत् ।
द्व्यच्चकमसिसुसन्नन्तं यदना-
न्तमकर्तरि ॥ २४ ॥

कोट्याः कोटिशब्दके विना जो
शत आदि संख्या है वह क्लीबमें होती है
लक्षशब्द वा विकल्पसे क्लीबमें है
पक्षमें स्त्रीलिंग है, तत्शब्दसे लक्षका
पर्याय नियुतं यह अर्थ है, उदाहरण
जैसे, 'नियुतं-शतं-सहस्रं-अयुतमित्यादि
असन्त इसन्त-उसन्त—और-अन्नन्त जो
द्व्यच्चक वा द्विस्वर हैं वे क्लीबमें हैं, असन्त
जैसे, पयः, मनः, इसन्त जैसे, सर्पिः
ज्योतिः, उसन्त जैसे, वपुः, यजुः,
अन्नन्त जैसे, चर्म शर्म साम नाम, इत्यादि
इसीसे क्लीबत्व सिद्ध था आगे जो मर्मश-
ब्दका उपादान है सो इसके अनित्यत्व
ज्ञापनके अर्थ है, तिससे, '(गुणान्ध-
कारशोकेषु तमो राहौ पुमानयमित्यादि
सिद्धम्) अकर्तरि अर्थमें कर्तासे अन्यत्र
जो अनांत अन यह अंतमें जिसके हैं
वे क्लीब हैं, जैसे, गमनं, मरणं, दानं,
करणं, वरणं, अकर्तरि क्यों कहा,
इध्मव्रश्चनः कुठारः नन्दयतीति
नन्दनः ॥ २४ ॥

त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं
प्राक्संख्ययान्वितम् । पात्राद्यदन्तै-
रेकार्थो द्विगुलक्ष्यानुसारतः ॥ २५ ॥

त्रांतं क्लीबमें है जैसे पात्रं—वहित्रं
मित्रं—वस्त्रं—गात्रं—यन्त्रम् ये इत्यादि
सकार और लकार उपधा अन्त्यसे
पूर्ववर्ण हैं जिनके वे क्लीबमें हैं सोपधं
जैसे, बुसं विसं, अन्धतमसं, लोपधं
जैसे, कुलं, मूलं इस इत्यादि, शिष्टं यह
जो प्रागुक्तसे भिन्न है वह और वह
प्रागुक्त भी जो अबाधित है सो भी
त्रांतादिक क्लीबमें है, शिष्टं क्यों कहा
पुत्रः—वृत्रः—हंसः—कंसः—पनसः—शालः
कालः—गलः—संख्यापूर्वक रात्रशब्द
क्लीब है (रात्राहाहाः पुंसि) : इस-
सूत्रसे पुंस्त्व प्राप्त था उसका यह अप-
वाद है, त्रिरात्रं, पंचरात्रं, संख्यायायहक्यों
कहा, अर्द्धरात्रः मध्यरात्रः पात्र आदि
अदन्तशब्दोंसे जो एकार्थ द्विगु समास
है वह क्लीब है, पंचरात्रं आदि पदसे
चतुर्युगं, लक्ष्यानुसारतः—अर्थात् शिष्ट
प्रयोगके अनुसार, इससे पंचमूली,
त्रिलोकी इत्यादि अपवाद ह, एकार्थ
क्यों कहा, पंचकपालः पुरोडाशः
द्विगु यह तद्वितार्थ है ॥ २५ ॥

द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथः—
संख्याव्ययात्परः । षष्ठ्याश्छा-
यावहूनां चेद्विच्छायं संहतौ
सभा ॥ २६ ॥

१ द्वन्द्वसमासका एकत्व और अ-
व्ययीभाव समास क्लीबमें है द्वन्द्वैक्यं
जैसे पाणिपादं, शिरोग्रीवं, मार्दगिक-
पाणविकम्, अव्ययीभाव जैसे, अधिश्रि,
यथाशक्ति, उपगंगं, संख्या और अव्य-
यसे परे जैसे, विपथं, कापथं, संख्या-
व्ययादिति किं, धर्मपथः योगपथः यह
समासांतका अनुकरण है, समासमें
षष्ठी विभक्त्यन्तसे परे जो छाया—वद है
सो क्लीब है, वह भी बहुतो की सम्बन्धिनी
होय तौ जैसे, 'वीनाम् पक्षिणां छाया
विच्छायम्, इक्षूणां छाया इक्षुच्छायम्,
वहूनां ऐसा क्यों कहा, कुड्यस्य छाया
कुड्यच्छाया, वा स्त्रियां यह तौ कहेंगे,
संहतौ समूहविषयमें सब शब्द क्लीब हैं
यहां भी षष्ठ्याः इसका अनुवर्तन करते
हैं, जैसे दासीनां सभा, दासीसमं, नृप-
समं, रक्षःसमं, स्त्रीसभमित्यादि, संहतौ
ऐसा क्यों कहा, दासीनां सभा दासी-
सभा, दासीगृहं, यह अर्थ है ॥ २६ ॥
शालार्थापि परा राजामनु-
प्यार्थादराजकात् । दासीः

सभं नृपसभं रक्षःसभामिमः
दिशः ॥ २७ ॥

शालात् अर्थात् गृहात् अपिशब्दसे समुदायात् भी जो सभा शब्द है वो अराजकात् राजशब्दसे वर्जित और राजा मनुष्य अर्थात् राजार्थक राजपर्याय और अमनुष्यार्थक रक्षःआदि शब्दसे और षष्ठ्यन्तसे परे होय तो क्लीबमें है (शाला गृहमर्थोऽभिधेयो यस्याः सा शालार्था) राजपर्यायसे जैसे, इनसभं, प्रभुसभं अमनुष्यार्थसे, जैसे रक्षःसभं, पिशाचसभं, अराजकात् क्यों कहा, राजसभा राजपर्यायके ग्रहणसे यहां नहीं हुआ, चन्द्रगुप्तसभा, राजविशेष यह है, षष्ठ्याः यह क्यों कहा, नृपतिविषयसभा नृपतिसभा नृणां पतिर्यस्यां सा चासौ सभा चेति वा नृपतिसभा, अमनुष्यार्थात् यह क्यों कहा-दासीसभा । दासीनां शाला इत्यर्थः इमा दिशः, यह दासीसभं इस आदि क्रमसे उदाहरण हैं, तिनमें दासीसभं यह समुदाय ही अर्थमें है, शेष दो शाला और संहति अर्थमें है ॥ २७ ॥

उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्व-
प्रकाशने । कोपज्ञकोपक्रमादि
कन्योशीनरनामसु ॥ २८ ॥

१ उपज्ञा और उपक्रमान्तके आ-
दित्वके प्रकाशनमें उपज्ञान्त और उ-
पक्रमान्त यह समास क्लीबमें होता है
(‘उपज्ञायते इति उपज्ञ ॥ को ब्रह्मा तस्य
उपज्ञा कोपज्ञा प्रजा ॥ कस्योपक्रमः
कोपक्रमं लोकः), प्रजापतिने प्रथम
बनाया था इससे उसीने आदिमें प्र-
जाको जाना था, यह अर्थ है, उन्हीं
नरोंके मध्यमें षष्ठ्यन्तसे पर कन्या क्ली-
बमें है, जैसे सौशमीनां कन्या सौश-
मिकन्यम्, उशीनरदेशवाचीसे अन्यत्र
दाक्षिकन्यानामसु यह क्यों कहा, वी-
रणकथा ॥ २८ ॥

भावे नणकचिद्भ्योऽन्ये समूहे
भावकर्मणोः । अदन्तप्रत्ययाः
पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः ॥ २९ ॥

चकार इत्संज्ञक है जिसका वह
चित् है, ‘नश्च णश्च कश्च चिच्च नणक-
चितः तेभ्योऽन्ये’ अर्थात् इनसे भिन्न
जो ‘तव्य, क्त, आदि अदन्तधातुप्रत्यय
भावमें विहित हैं वे क्लीबमें हैं तिनमें
धातुप्रत्यय जैसे, भवितव्यं, भाव्यं,
सहितं, भुक्तं, नणकचित् क्यों कहा,
प्रश्नः न्यादः, आखूत्यः, वेपथुः नणक
यह घञ्का उपलक्षण है, पाकः, भावे क्यों
कहा, कर्ममें दोष होगा, जैसे ‘कर्तव्यो
धर्मसंग्रहः, समूह अर्थमें, जैसे भिक्षा-

णां समूहो भैक्षं, गार्भिणं, औपगवं, काकं, भावमें अदन्त जैसे, गोर्भावः गो-
त्वं, शुचेर्भावः शौचं, कर्मणि जैसे, शुक्लस्य
कर्म शौक्यम्, राज्ञः कर्म राज्यं, चौ-
र्यं, तत्प्रत्ययको तो स्त्रीत्व कहा है,
पुण्य और सुदिनशब्दसे परः, वि-
हितसमासान्त अहन् शब्द क्लीबमें है,
अहाहान्त इस पुंस्त्वका अपवाद है.
पुण्याहं, सुदिनाहं, सुदिन शब्द प्रश-
स्तार्थक है ॥ २९ ॥

क्रियाव्ययानां भेदकान्ये-
कत्वेऽप्युक्त्यतोऽटके । चोचं पिच्छं
गृहस्थूणं तिरीटं मर्म योज-
नम् ॥ ३० ॥

क्रिया और अव्ययोंका भेदक वा
विशेषण क्लीब और एकवचनमें होते
हैं, क्रियाविशेषण जैसे, मन्दं पचन्ति,
सुखं तिष्ठन्ति योगिनः, सलीलं नृत्य-
न्ति बालाः, अव्यय विशेषण जैसे, र-
म्यं स्वः सुखदं प्रातः, अब कितने कं-
ठस्वरसे कहा है, उक्तं सामभेद, तो-
टकं वृत्तभेदः- चोचं, खाये फलका शे-
ष, वा तालफल केला आदिके फलको
भी कोई कहते हैं मोचं और खेटं भी,
२ पिच्छं गुच्छा-वामोरकी पोंछ-
वा चूडा-वा लांगूला वा शालमलीवृ-

क्ष-वा परम्परा आदि, उक्त उक्तं औ-
र मुक्तं, ३ गृहस्थूणं, घरका खम्भा वा
थून्ही, ४ तिरीटं, बैठन वा शिरोभू-
षण, ५ मर्म, सन्धिस्थान वा हड्डियों-
के जोड़का स्थान, ६ योजनं क्रोशचतु-
ष्टयं वा चार कोश ॥ ३० ॥

राजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये
कृतौ कवेः । माणिक्यमा-
ष्यसिन्दूरचीरचीवरपिञ्जरम् ॥ ३१ ॥

१ राजसूयं और २ वाजपेयं ये २
यज्ञके भेद हैं, (राज्ञा लतात्मकः सोमः
सूयतेऽत्र राजसूयं वाजं पैष्टी सुरा पी-
यते वा पेयमत्र वाजपेयम्), ३ गद्यं, ४
पद्यं ये कवेः कृतौ अर्थात् कविकी नि-
श्छन्द रचनाको गद्यं, और पादसमूहकी
रचनाको पद्यं, कवेः कृतौ ऐसा क्यों
कहा, गद्या वाक्, पद्या पद्धतिः, ५ मा-
णिक्यं, रत्नका भेद, (मणिके मणिपू-
राख्ये नगरे भवं माणिक्यं), ६ भाष्यं
पदार्थविवृति वा विवरण, (सूत्रार्थो
वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः ॥
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो
विदुरिति) ७ सिन्दूरं, रक्त वा लालचू-
र्ण, ८ चीरं वस्त्रभेद, ९ चीवरं मुनिवासः
वा वस्त्र, १० पिञ्जरं वा पिंजरम्, पक्ष्या-
दि बन्धनागार वा पिंजरा ॥ ३१ ॥

लोकायतं हरितालं विदलं
स्थालवाहिकम् ।

१ लोकायतं, चार्वाकशास्त्रं, २ हरि-
तालं, धातुभेद, ३ विदलं वांसका बना
पात्रभेद, ४ स्थालं, पात्रभेद वा थार वा
हांडी अन्नपात्र पाकपात्र आदि, ५ वाहि-
कं, कुंकुम वा देशभेद उस देशका उत्पन्न
कुंकुम बाह्यवम् भी, 'बहदेशे भवं बाह्यं
इति नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ॥

पुत्रपुंसकयोः शेषोऽर्धचपि-
ण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥

अब चिक्रस शब्दपर्यन्त पुंसि और
क्लीबमें हैं। उससे भिन्नशेष है जैसे
शंख और पद्म ये २ दो निधिवाचक,
पुँल्लिङ्ग हैं, कम्बु नलिनका वाची तौ पुत्र-
पुंसकलिङ्ग हैं तैसे अत्रत्य शब्दभी पर्याय-
वाधित है उसके पर्यायसे भिन्न है तो
पुत्रपुंसक लिङ्ग होते हैं, १ अर्द्धचः अर्द्धचं
आधी ऋचा वेदभाग २ पिण्याकं, तिलकी
खल, ३ कंटक रोमहर्ष वा रोमांच ॥ ३२ ॥

मोदकस्तण्डकष्टकः शाटकः
कंपटोऽर्बुदः । पातकोद्योगच-
रकतमालामलका नडः ॥ ३३ ॥

१ मोदकः, भक्ष्यभेद वा (लड्डू)
२ तण्डकः उपतापविशेष वा रोगविशेष
३ टंकः वा तङ्कः, अश्मदारणः वा
पत्थर गढनेकी टांकी, ४ शाटकः पट-

भेदः वा शाडी प्रसिद्ध है, ५ कर्वटः
वा कर्पटः "वाजे पढते हैं खर्वटः"
स्थानभेद वा वस्त्रभेद, ६ अर्बुदः, संख्या-
भेद वा दशकोटि, ७ पातक ब्रह्महत्यादि
८ उद्योग उत्साह, ९ चरकः वा
वरकः वैद्यशास्त्र भेद, "करकः यह भी
पाठ है इसका स्यूतवस्त्र अर्थ है," १०
तमालः वृक्षभेद (तमाखू) प्रसिद्ध है
११ आमलकः वा आमालकः धात्रीफल
वा आँवला प्रसिद्ध है, १२ नडः भीतरी
विल-वा तृणभेद ॥ ३३ ॥

कुष्ठं मुण्डं शीघ्रं बुस्तं क्ष्वे-
डितं क्षेम कुट्टिमम् । संगमं
शतमानार्मशम्बलाव्ययताण्डवम् ॥
३४ ॥

१ कुष्ठं-रोगभेद, २ पुष्कर वा
कमल, ३ मुण्डं शिरः, ४ शीघ्र, मद्य,
५ बुस्तं भूँजा मांस वा कटहल आदिके
फलका सार भाग- 'कहीं पुस्तं वा
शस्तं पाठ है कहीं बुस्तं वा तुस्तं
भी पाठ है' ६ क्ष्वेडितं, बीरकाकियसिं-
हनाद-क्षेमकुशल-क्षेमोऽस्त्रीलब्धरक्षणे
मोक्षको भी, ८ कुट्टिमं गचका भेद
संगमं संयोग, ९ शतमानं मानभेद,
१० अर्भ अक्षिरोग, ११ शम्बलं वा
सम्बलं-वर्णका भेद, १२ अव्ययं-स्व-
रादिनिपात वा विकाररहितं, १३ ता-
ण्डवं वा ताण्डव्यं-नाचका भेद ॥ ३४ ॥

कवियं कन्दकार्पासं पारावारं
युगंधरम् । यूपं प्रग्रीवपात्रीवे यूपं
चमसचिक्कसौ ॥ ३५ ॥

१ कवियं—तोबडालगाम वा बाग-
डोर २ कन्दं कमलिनीकी जड़ वा मूल
कहीं कर्म यह पाठ है, ३ कार्पास, वा
कपास वा रुई बख्क का कारण आदि,
४ “पारावार,” वारं नदी आदिके दोनों
पारको क्रमसे पार और वारं कहते हैं,
५ युगन्धरं—कूवरं रथके जूआके
काठको पुष्ट करनेवाला काष्ठ वा पर्वत
भेद आदि, ६ यूपं, वा पूय यज्ञाङ्गभेद,
अथवा यज्ञपशु बाँधनेका काष्ठभेद, ७
प्रग्रीव द्रुमशीर्षम् वा झरोखा—मुख-
शाला खिडकी आदि, ८ पात्रीवं वा पा-
त्रीवं वा यज्ञपात्रका भेद, ९ यूपं वा
यूपं—माण यह प्रसिद्ध है, (मुद्रामल-
कयूषस्तु ग्राही पित्तकफे हित इति उ-
क्तं वैद्यके) १०—चमसचिक्कसौ ये २ दो
पात्रभेद हैं ॥ ३५ ॥

अर्धर्चादौ धृतादीनां पुंस्त्वाद्यं
वैदिकं ध्रुवम् । तन्नोक्तमिह लोके-
पि तच्चेदस्त्यस्तु शेषवत् ॥ ३६ ॥

अर्धर्चादौ इस पुंनपुंसकाधिकारव-
र्गमें धृतादिकोंको पाणिनि आदिकोंने
पुंस्त्व आदि कहा है, वे तो वेदमें
प्रसिद्ध वैदिक हैं इस हेतु उन्हें यहां

नहीं कहा और लोकमें हैं तो वे शेषवत्
अर्थात् उक्तसे भिन्नशेष हैं उनके समान
शिष्टप्रयोगके अनुसार ग्राह्य है ॥ ३६ ॥

इति पुंनपुंसकसंग्रहः ॥

अथ स्त्रीपुंशेषसंग्रहः ॥

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःषट्-
पदोरगाः । जातिभेदाः पुमाख्याश्च
स्त्रीयोगैः सह मल्लकः ॥ ३७ ॥

अपत्यप्रत्यय अन्तमें है जिनके
वे शब्द स्त्री पुंल्लिंगमें होते हैं जैसे ‘उ-
पगोः, अपत्य पुमान् औपगवः उपगोः
अपत्यं स्त्री औपगवी, वैदेहः, वैदेही
गार्ग्यः, गार्गी, ‘द्विचतुःषट्पदोरगाः’
द्विपद-चतुष्पद—और षट्पदवाची और
भुजगवाची जातिभेद स्त्रीपुंस हैं तिनमें
द्विपदजातिभेद जैसे, ‘मानुषः पुमान् मा-
नुषी, स्त्री गोपः पुमान् स्त्री गोपी, ब्रह्मणः
ब्राह्मणी, शूद्रः शूद्रा, अजादि मानकर
टापू है, चतुष्पदभेद जैसे, ‘मृगः, मृगी,
हयः, हयी, षट्पद भेद जैसे, भृंगः भृंगी
मक्षिका, मक्खी, शिवा, सिंआरी, लृता,
मकरी, पिपीलिका चिउंटी उरग जैसे,
उरगः, उरगी, नागः, नागी,
‘स्त्रीयोगैः सह पुमाख्याः’ अर्थात् स्त्री-
वाचकशब्दके योगसे पुंवाचक शब्द
स्त्री और पुंल्लिंगमें होते हैं, जैसे इन्द्र
इन्द्रायणी, ‘मातुर्भाता मातुलः
तस्य स्त्री मातुली. ’ पुंसिमें वर्त-

मान मातुलः स्त्रीयोगसे स्त्रीत्वमे-
भी हैं 'शूद्रस्य स्त्री शूद्री' 'मल्लक, आ-
दि भी स्त्री पुंसमें हैं मल्लकः स्त्रीमें तो
मल्लिकापुष्प वल्लिका भेद है ॥ ३७ ॥

ऊर्मिवराटकः स्वातिर्वर्णको झा-
टलिर्मनुः । मूषासृपाटी कर्कन्धूर्य-
ष्टिः शाटी कटी कुटी ॥ ३८ ॥

मुनिः यती इंगुदी-बुद्ध पिहालवृ-
क्षभेद, पलाश आदि ऊर्मि; तरंग, य-
हभी पाठ है, २ वराटक कौडी स्त्री-
लिंगमें वराटिका, ३ स्वातिः नक्षत्र, ४
वर्णक चन्दन-विलेपन ५ जाटलि,
झाटलिः वा पाटलिः' भी पाठ है,
पलाशवृक्षके सदृश है, ६ मनुः स्वायं-
भुव आदि-वा मन्त्र ७ मूषा, घातु
गलानेका पात्र-वा घरिआ, ८ सृपा-
टी, परिमाणभेद सृपाटः वा स्त्री, सृ-
पाटी वा असृपाटी, रुधिरकी नदी, ९
कर्कन्धूः वेरवृक्षः १० यष्टिः, लाठी-११
शाटी, पटभेद-वा शाडी, १२ कटिः
और कट. स्त्री कटिः वा कटी, देहका
अवयव वा कमर, १३ पुं० कुटिः, स्त्री
कुटिः वा कुटी, गृहविशेष वा पत्तो-
का घर, यहां मूषा नकारान्त है ॥ ३८ ॥

इति स्त्रीपुंशेषसंग्रहः ॥

अथ स्त्रीनपुंसकशेषः ॥

स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः ष्य-
ञ्क्वचिच्च वुञ् ॥ औचित्यमौचात्
मैत्री मैत्र्यं वुञ् प्रागुदाहृतः ॥ ३९ ॥

भावक्रिययोः अर्थात् भाव और
कर्म अर्थमें वर्तमान ष्यञ् प्रत्यय और
वुञ् कही स्त्री और नपुंसकमें वर्तते
हैं, तिनके मध्य ष्यञ् प्रत्ययका उदा-
हरण जैसे, औचित्यं यह, 'उचितस्य
भाव औचित्यं' और 'औचित्ता भी'
मित्रस्य कर्ममैत्र्यं मैत्री वा 'इसी प्रकार
वार्द्धकं, वार्द्धका, सामग्रं सामग्री, आ-
र्हत्यं, आर्हन्ती वुञ् प्रत्यय तौ वैरमै-
थुनिकादि-वुन् इस भाँति पहिले कहा
है, जैसे मिथुनस्य भावः कर्म वा मैथु-
निका मैथुनिकं भी ॥ ३९ ॥

षष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाछाया-
शालासुरानिशाः ॥ स्याद्वा
नृसेनं श्वनिशं गोशालीमतेर च
दिक् ॥ ४० ॥

तत्पुरुषसमाससे षष्ठ्यन्त षष्ठी वि-
भक्त्यन्त प्राक्पद है जिनके ऐसे ष-
ष्ठ्यन्त प्राक्पद सेना आदि शब्द स्त्री
और नपुंसकमें होंवें उदाहरण जैसे नृ-
णां सेना नृसेनं वेति विकल्पसे नृसेना
भी इतरे भिन्न पद भी इसी प्रकार
उदाहरण करना चाहिये, श्वनिशं गो-
शालं यवसुरं यवसुराः, कुड्यस्य छाया

कुडचच्छायं कुडचच्छाया वा षष्ठीव-
हुवचनान्तसे पूर्वपदकी छाया हो
तो क्लीबमें ही होवे ऐसा पहिले
दिखाया है ॥ ४० ॥

आवन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चा-
पुंसि नश्च लुप् । त्रिखट्वं च
त्रिखटी च त्रितक्षं च त्रित-
क्ष्यपि ॥ ४१ ॥

आवन्त उत्तरपद और अवन्नन्त उ-
त्तरपद द्विगुसमास पुल्लिङ्गमें नहीं है,
किन्तु स्त्री नपुंसकमें होते हैं, अवन्नन्त
उत्तरपदका जो अन्त नकार है उसका
लुप् अर्थात् लोप भी होता है, (आप्-
आ-अन्) आवन्तपदका उदाहरण
जैसे, त्रिखट्वं यह तिसःखट्वयः समाहृताः
त्रिखट त्रिखटी भी, अवन्नन्तोत्तरपद,
जैसे त्रयस्तक्षणाः समाहृतास्त्रितक्षं, त्रि-
तक्षी च तक्षन् शब्दका अन्त्य नकार
लुप्त है ॥ ४१ ॥

॥ इति स्त्रीनपुंसकशेषः ॥

अथ त्रिलिङ्गशेषसंग्रहः ॥

त्रिषु पात्री पुटी वाटी पेटी
कुवलदाडिमौ ।

पात्र आदि और दाडिम शब्दांत
त्रिलिङ्ग हैं, पात्रः, पात्री पात्रं आदि
पुटी पुटः पुटं, वा पटः-टी-टं, पुटः
महीका बना डब्बा वा औषध पकाने-
का पात्रभेद दूध आदिके पीनेका पात्र
दोना आदिवाटी, 'वाटः-टी-टं' रास्ता

वा मार्ग, पेट टी वा टा-टं, पेटा-टा
पेटी-टी यह पेटारा वा पेटारीका ना-
म है, कुवलः-ली-लं उत्पल कमल
मोती-आदि, दाडिमः- मी-मं, दा-
डिम्ब वृक्ष वा अनार ॥

इति त्रिलिङ्गशेषसंग्रहः ॥

परं लिङ्गे स्वप्रधाने द्वन्द्वे
तत्पुरुषेऽपि तत् ॥ ४२ ॥

द्वन्द्वैकत्वका और अव्ययीभाव स-
मासका लिङ्ग पहिले कह चुके हैं स्व-
प्रधाने अर्थात् उभयपदप्रधानइतरेतरा-
ख्य द्वन्द्व समासमें और तत्पुरुष समा-
समें भी जो (परं) परपदस्थलिङ्ग है
वही लिङ्ग होता है, तहां द्वन्द्वसमासमें
जैसे कुक्कुटमयूर्याविमौ, मयूरीकुक्कु-
टाविमौ, तत्पुरुषसमासमें जैसे धान्ये-
नार्थो धान्यार्थः सर्पाद्धीतिः सर्पभीतिः
सर्पभयं, वाप्यधः कुलविप्रः कुलीनविप्रः
पूज्यकुलं विप्रकुलं, ब्राह्मणका कुल,
इत्याद ॥ ४२ ॥

अर्थाताः प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः

परोपगः । तद्धितार्थो द्विगुः
संख्यासर्वनामतदन्तकाः ॥ ४३ ॥

उक्त तत्पुरुषके लिङ्गका अपवादकहा
है, अर्थ इस पदसे, अर्थाताः अर्थात्
अर्थशब्दहै अन्तमें जिनके वे परोपगाः
परगामी वाच्यलिङ्ग हैं, अर्थ जैसे
द्विजायायं द्विजार्थः सूपः द्विजार्थावागूः
द्विजार्थं पयः ब्राह्मणार्थः-थार्थ-र्थ, 'अर्थेन'
नित्यसमासोविशेष्यलिङ्गताचेतिवक्तव्य-

यह वार्तिक भी है (प्राचलंप्राप्ता-
पन्नपूर्वाः परोपगाः,) पर विशेष्य-
को जाते हैं यह अर्थ है, प्रादि पू-
र्व जैसे, अतिक्रान्तो माला मतिमालो
हारः अतिक्रान्ता माला मतिमालेय-
म्, अतिमालमिदं, अवक्रुष्टः कोकिल-
या अवकोकिलः अलंपूर्वपद जैसे,
अलं कुमार्यै इत्यलंकुमारिरियं, अलं-
कुमारिरियम् अलंकुमारि इदं. अल-
ब्धजीविकः का-कं, प्राप्तजीविको द्वि-
जः प्राप्तजीविका स्त्री प्राप्तजीविक-
मिदं, इसी प्रकार, आपन्नजीविक,
'तद्वितार्थो द्विगुः' अर्थात्तद्वित अ-
र्थमें द्विगुसंज्ञक समास वाच्यलिंग
है, पंचकपालः-लं-ला, पुरोडाशः
संख्याशब्द सर्वनामसंज्ञक और तद-
न्तर्भी परलिंगभाजी है, संख्या जैसे
एकः पुमान्, एकं कुलं, द्वौ पुमांसौ,
द्वे स्त्रियौ कुले च त्रयः पुरुषाः ति-
स्रः स्त्रियः त्रीणि कुलानि, एवं चत्वारः
चतस्रः चत्वारि' षट्संज्ञकोंको कहते हैं,
विंशति आदिकोंका लिंग द्वितीय कां
डमें कह चुके हैं, और शत आदिकों-
का तौ नपुंसकके संग्रहमें कह चुके हैं,
सर्वनाम जैसे सर्वो देशः सर्वा नदी सर्वं
जलं इसी प्रकार परः पुमान् 'संख्यान्त
क जैसे ऊनत्रयः । ऊनतिस्रः ऊनत्री-
णि' सर्वनामान्त जैसे परमसर्वः परमस-
र्वा परमसर्वम् ॥ ४३ ॥

बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नासुत्रेयं तदु-
दाहृतम् । गुणद्रव्यक्रियायोगोप-
भ्यः परगामिनः ॥ ४४ ॥

अदिङ्नाम्नामर्थ्यादिशावाचकशब्दसे
भिन्न नामवालोंका बहुव्रीहि समासमें
अन्यलिंग होता है इसके उदा-
हरण आपसे आप विचारना चाहिये
जैसे, 'वृद्धा भार्या यस्य स वृद्धभार्यः बहु-
धनः बहुधना बहुधनं आदङ्नाम्नां ऐसा
क्यों कहा, दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दि-
शो-रन्तरालं दक्षिणपूर्वा गुणयोगसे द्र-
व्ययो गसे और क्रियायोगसे जो उपा-
धि अर्थात् विशेषण है उनके धर्ममें-
जो प्रवृत्त शब्द हैं वे धर्मके लिंगयो-
ग होवें गुणयोगसे जैसे शुक्लः पटः शु-
क्ला-शुक्लं, गन्धवती पृथ्वी गन्धवान्
अश्मा गन्धवत् कुसुमं, द्रव्यके योगसे
जैसे दण्डी दण्डिनी स्त्री, दण्डि कुलं
क्रियायोगसे जैसे याचक याचिका या-
चकम् आदि ॥ ४४ ॥

कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याः कर्तारि
कर्मणि । अणाद्यन्तास्तेन रक्ता-
द्यर्थे नानार्थभेदकाः ॥ ४५ ॥

असंज्ञामें जहां कर्ता अर्थमें कृतसं-
ज्ञक प्रत्यय हैं वे वाच्यलिंग हैं जैसे
करोतीति कर्ता पुमान्, कर्त्री स्त्री,
कर्तुं कलत्रं कुर्वन्, ती-त्, असंज्ञादयः
क्यों कहा प्रजा हरिः कर्तरि क्यो क-
हा कृतिः, कर्म अर्थमें और कर्ता-
अर्थमें वर्तमान कृत्य प्रत्यय परगामी
होते हैं कर्ममें जैसे भव्यः तरुः)-
व्या-व्यं, गन्तव्यः (ग्रामः)-व्या-व्यं,
कर्तव्या भक्तिः, कर्तामि जैसे वसतीति
वास्तव्योऽयं वास्तव्या सा वास्तव्यं त-

त्त, कर्त्तरि कर्मणि क्यों कहा भाव-
अर्थमें तो एधितव्य त्वया तेन रक्तं
इस इत्यादि अर्थमें अणू आदि तद्धि-
त्तप्रत्ययान्त और नाना अर्थके कहने-
वाले वा अनेकार्थके विशेषभूत विशि-
ष्ट होनेसे वाच्यलिङ्ग हैं जैसे कुसुम्भेन
रक्ता शाटी कौसुम्भो कौसुम्भः पटः
कौसुम्भं वामः हैमः—हैमी—मं, ऐन्द्रः—
न्द्री—न्द्रं 'तेन रक्तं रागात्' इससे अणू
होता है और रक्तार्थ इसके आदि श-
ब्दसे मथुराया आगतोद्य माथुरोऽयं
वा माथुरीयं आदि अणाद्यन्ता इस
इत्यादि पदसे ग्रामे भवः ग्राम्यः पुमान्
ग्रामे भवा ग्राम्या स्त्री आदि, यहां यत्
प्रत्यय होता है ॥ ४५ ॥

षट्संज्ञकास्त्रिषु समा युष्मदस्म-
त्तिङव्ययम् । परं विरोधे शेषं तु
ज्ञेयं शिष्टप्रयोगतः ॥ ४६ ॥

षट्संज्ञक अर्थात् षान्त और ना-
न्त वा संख्या, तथा कतिशब्दभी त्रिषु
समा वा तीनों लिङ्गोंमें तुल्य होते हैं
और नित्य ही बहुत्व अर्थमें वर्तमान
हैं इस कारणसे बहुवचनान्त हैं,
जैसे षडिमे, षडिमाः, षडिमानि, पञ्च-
भिरेताभिः कति पुमांसः कति स्त्रियः
कति कुलानि, युष्मद् और अस्मद्
शब्द तथा तिङन्तपद और अव्यय-
वाचक शब्द—ये सब त्रिलिङ्ग और
समान हैं, युष्मद् शब्द जैसे, त्वं स्त्री त्वं
पुमान्त्वं कलत्रं, अस्मद् शब्द जैसे आवां

पुमांसौ आवां स्त्रियौ, आवांकलत्रं, तिङ्
जैसे, स्थाली भवति; घटो भवति, पात्रं
भवति इसी प्रकार दाराः भवन्तीत्यादि
अव्यय जैसे, उच्चैः दाराः उच्चैः स्त्री
उच्चैः कलत्रं उच्चैः प्रासादः इत्यादि परवि-
रोधे विप्रतिषेधे वा विधियोंके परस्परवि-
रोधमें परलिङ्गानुशासन होता है, जैसे-
मानुष शब्द क-ष-ण-भ-म-र इस प्रागु-
क्तविधिसे पुंस्त्वही प्राप्त था द्वि-
चतुःषट्पदइस उत्तरोक्त स्त्रीपुंसवि-
धिका निश्चय किया है जैसे
मानुषोऽयं, मानुषीयं, शेष जो नहीं
कहा गया नाम आदि वह शिष्टमहाक-
विप्रयोग और भाष्यकार आदिके प्रयो-
गसे जानना चाहिये, यद्वा अनुक्तश-
ब्दोंके लिङ्ग शिष्टप्रयोगसे जानने
योग्य हैं, लिङ्गविधायक शास्त्र न
करना चाहिये क्यों कि लिङ्गज्ञान
लोक वा संसारसे जान पड़ता है यह
भाष्यकारका मत है ॥ ४६ ॥

इति लिङादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥

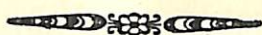
इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशा-
सने । सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग
एव समर्थितः ॥ ४७ ॥

इसप्रकार अमरसिंहकृतनामलिङ्गानुशा-
सनमें सामान्य तृतीयकांड सांग
निरूपण करा ॥ ४७ ॥

इति श्रीमुरादाबादवास्तव्यपंडितराम-
स्वरूपकृतभाषाटीकासहितः नामलिङ्गा-
नुशासने सामान्यकाण्डस्तृतीयः समाप्तः ॥

इत्यमरकोशः संपूर्णः ॥

क्रय्य पुस्तकें ।



नाम.

की० रु० आ०

| | |
|---|----------|
| अमरकोश-मूल-सटिप्पण छोटे अक्षरका गुटका. |०-८ |
| अमरकोश-सटीक. | १-० |
| अमरकोश-भाषाटीकासमेत शब्दानुक्रमणिकासमेत ग्लेज | ३-३ |
| ” तथा रफ कागज | २-८ |
| अनेकार्थध्वनिमञ्जरी-भाषामें सुगमहै. | ०-४ |
| भावीनाममाला-(छन्दबद्ध भाषाकोष.) इसको जोधपुर- निवासी रामसनेही साधु भावनदासजी महाराजने विशेष कर अमरकोष तथा हैम-विश्व-व्याडि-धराणि-भेदिनी आदि अनेक कोषोंका सार लेके अपूर्व ग्रंथ बनायाहै । इसमें संस्कृत तथा भाषामें प्रचलित प्रायः सभी शब्द आयेहैं १-४ शब्दार्थचिन्तामणि-यह कोषग्रन्थ बहुतही उत्तम और बृहत् है, इसमें अकारादि क्रमसे शब्द लिखे हैं व पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग लिखनेके उत्तर शब्दोंकी व्युत्पत्ति व सिद्धिके लिये पाणिनि व्याकरणके सूत्र तथा शब्दोंके अर्थ व उनकेलिये अनेक कोषोंके प्रमाण तथा विशिष्ट शब्दोंमें अनेक ग्रन्थोंसे उदाहरण भी दिये गयेहैं, यह ग्रंथ ४ जिल्द व ३१९३ पृष्ठोंमें है । हरएक विषयके विद्वानोंको अवश्य अपने पास रखने योग्य है २५-० | |

| नाम. | की० | रु० | आ० |
|---|------|-----|----|
| अमरुशतक-शृंगार और वेदान्तपर काव्य दो टीकासहित | ०-१० | | |
| अश्वघाटीकाव्य-भाषाटीकासमेत. | ०-४ | | |
| ऋतुसंहारकाव्य-कालिदासकृत और चौरकविकृत चारपञ्चाशिकाकाव्य । इसमें षड्ऋतुवर्णनादि राज-कुमार बाबू देवनन्दनसिंहकृत छन्दोबद्ध भाषाटीकाहै. | ०-१० | | |
| कामाक्षिस्तुतिशतक-मूककविविरचित | ०-४ | | |
| कलिविडम्बन-भाषाटीकासमेत । तथा कलिप्रभाव भाषा-टीकासमेत । इसमें-कलियुगप्रभाव वर्णनहै. | ०-४ | | |
| किरातार्जुनीयकाव्य-सटीक । ग्लेज कागजका दाम | २-८ | | |
| " तथा रफ कागजका. | २-० | | |
| कुमारसम्भव-महाकवि कालिदासकृत और मल्लिनाथकृत संजीवनीटीकासमेत । इसमें-पार्वतीजीकी उत्पत्ति, ब्रह्मा-जीकी तारकासुरसे क्लेशित देवोंकी शिक्षा, मदनदहन, रति-विलाप, पार्वतीके तपका उदय, पार्वतीका शिवजीसे विवाह करनेके निमित्त हिमवान्के पास सप्तऋषियोंको भेजकर विवाहका निश्चय, और शिव-पार्वतीजीका विवाह वि-धिपूर्वक वर्णित है. | १-१२ | | |
| कृष्णलीलामृतकाव्य. | ०-५ | | |
| कृष्णकर्णामृतकाव्य-(बडाही भक्तिमयहै) | ०-६ | | |
| कार्ष्णिगण्ठाभरण-कार्ष्णिगोपालदास विरचित । नरोत्तमा-यटीका तथा अमरेश्वरीयटिप्पणीसहित । इसमें भुजङ्गप्रयात रत्नदशक, तोटकरत्न दशक आदि दश दशकहैं । और श्रीकृष्णभगवान्की स्तुतिके साथ २ ऐसी उत्तम कविताहै कि पण्डितोंका मन मुग्ध होजाताहै । | ०-८ | | |
| गीतगोविन्द-राधाविनोदसमेत-भाषाटीकासहित । इसमें जयदेवगोस्वामिकृत अतिउल्लित संस्कृतमें रागमय राधा-कृष्णकी प्रेममयभक्तिकी गानेकी चीजें विद्यमानहैं । गान- | | | |

नाम.

की० रु० आ०

| | | | | |
|--|------|------|------|------|
| विद्या जाननेवालोंको अवश्य संग्रह करना चाहिये यह भग- वान्को अत्यन्त प्रिय है. | | | | १-८ |
| गीतगोविन्द-मूलमात्र. | | | | ०-३ |
| गुरुपीयूषलहरी-गुरुनानकसाहबका वर्णन | | | | ०-६ |
| घटकर्पूरकाव्य-भाषाटीकासमेत. | | | | ०-२ |
| दशकुमारचरित्र-(संस्कृत) | | | | १-८ |
| दशकुमारचरित्र-भाषाग्रन्थ-राजकुमारादि दश कुमारोंकी अपूर्वक रोचक देशाटनीय विचित्र कथा वर्णित है, | | | | ०-१ |
| दृष्टान्तशतक-दोहा-भा० टी० इसके श्लोक, दोहोंमें यह विचित्रता है कि पूर्वार्द्धमें दृष्टान्त और उत्तरार्द्धमें दार्ष्टान्त क्रमसे कहेगयेहैं. | | | | १) |
| नलोदयकाव्य-सटीक-इसमें-महाराजा नल और दमयं- तीका रोचक चरित्र वर्णित है. | | | | १-० |
| षड्यमुक्तावली-इसके श्लोकोंके आदिसे क्रमसे स्वर व्यंजनोंके अक्षर आतेहैं । यद्यपि छोटाहै किन्तु देखने योग्यहै. | | | | ०-१॥ |
| पञ्चतन्त्र-मूलमात्र । विष्णुशर्माकृत नीतिशास्त्र. | | | | २-० |
| पञ्चतन्त्र-विष्णुशर्माकृत और पुं० ज्वालाप्रसादजीमिश्रकृत सुबोध भाषाटीकासमेत । यह मित्रभेद, मित्रसंप्राप्ति, का- कोलूकीय, लब्धप्रणाश, अपरीक्षितकारक इन पांचतन्त्रों- में नीतियुक्त सर्वोत्कृष्ट है. | | | | ३-० |
| भर्तृहरिशतक-नीति, शृंगार तथा वैराग्य भाषाटीकासमेत। इसके नीतिशतकमें निन्दाप्रशंसा, विद्वत्प्रशंसा, मानशौर्य- प्रशंसा, दुर्जननिन्दा, सुजनप्रशंसा, धैर्यप्रशंसा दैवप्रशंसा, कर्मप्रशंसा और शृंगारशतकमें-षड्भूतवर्णन, दुर्विरक्त- वर्णन, स्त्रीपरित्यागप्रशंसा, यौवनप्रशंसा, कामिनीग्रहण- सुविरक्त और वैराग्यशतकमें-तृष्णाधिकार, मदनविडं- | | | | |

नाम,

की० रु० आ०

वन विनयोंका रूपातिरस्कार, दुर्जनपुरुषोंकी निन्दा,
हास्यका वर्णन, भोगपद्धति, कामनिर्वृत्ताका स्वरूप
इत्यादिका वर्णन देखनेही योग्य.

भक्तिरत्नावली-श्रीमद्भागवतोद्धृत स्तुतिसंग्रह. ०-४

भामिनीविलास -पं० महावीरप्रसाद द्विवेदिकृत भाषाटी-
कासहित । इसमें-प्रास्ताविकविलास, शृङ्गारविलास,
करुणाविलास, तथा शान्तिविलासादि अत्यन्त रोचक-
विषय हैं पंडितोंके देखनेयोग्य है. १-४

भोजप्रबन्ध-मूल । कविवल्लालकृत । इसमें भोजराजाका
चरित्र राजनीतिसंबंधी भली भाँति वर्णितहै. ०-१२

भोजप्रबन्ध-पं० श्यामसुन्दरलाल त्रिपाठीकृत भाषाटीकास- १-८

मेत भोज और कालिदास-भाषाटीकासमेत । राजाभोज और
कासिदासके चातुर्यकी उत्तमोत्तम कथाका संग्रह है..... १-८

भंगाभङ्गनिषेध-भाषाटीकासमेत । इसमें भांगकी निंदाका
खंडन भलीभाँति कियाहै ०-२

मारुतिस्तव-सटीक । जोधपुरनिवासी नित्यानन्दशास्त्री-
जीने हनुमान्जीकी लोकोत्तरमहिमाको ललितपद्योंमें व-
र्णन कियाहै । कवितामें यह विचित्रताहै कि, पद्योंके अ-
अक्षरोंमें रामरक्षा स्तोत्र सम्पूर्ण आगयाहै जो कि विद्वानोंके
देखनेही योग्यहै । साथही जोधपुर वैदिक पाठशालाके
प्रधानाध्यापक पंडित भगवतीलालजीने इसकी ऐसी सरल
टीका की है, कि कविता स्पष्ट समझमें आजातीहै. ०-५

पुस्तक मिलनेका ठिकाना--

खेमराज श्रीकृष्णदास, गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्प्रेस-बम्बई. "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" प्रेस
कल्याण-बम्बई.

